# जिनवाणी



जुलाई, १९८३

आषाढ़ २०४०



धर्म उत्कृष्ट मंगल है। वह अहिंसा, संयम और तप रूप है। धर्म के चार द्वार हैं— क्षमा, सन्तोष, सरलता और नम्रता। सभी प्राणियों के प्रति आत्मतुल्य भाव रखो। सदा सत्य में दृढ़ रहो। सदा समभाव में विचरो।

तपों में श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य है। धीर पुरुष कर्त्तव्य में निष्ठा रखें। सदा स्वाध्याय में रमण करे। ज्ञान और चारित्र से मोक्ष मिलता है। कर्म कर्त्ता का ही अनुगमन करता है। दानों में

# आपके लिये उपयोगी साहित्य जो उपलब्ध है

| क्र.सं. | नाम पुस्तक | लेखक, सम्पादक, अनुवादक | मू. प्र. पुस्तक |
|---|---|---|---|
| १. | श्री वृहत्कल्प सूत्र (संस्कृत टीका सहित) | आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० | ३-०० |
| २. | सिरी अन्तगडदसाओ (संस्कृत छाया व हिन्दी अर्थ) | ,, ,, | १०-०० |
| ३. | उत्तराध्ययन सूत्र | ,, ,, | १०-०० |
| ४. | गजेन्द्र व्याख्यानमाला भाग–१ | ,, ,, | ४ ५० |
| ५. | ,, ,, भाग–२ | ,, ,, | ५-०० |
| ६. | ,, ,, भाग–४ | ,, ,, | ६-०० |
| ७. | ,, ,, भाग–६ | ,, ,, | ७-०० |
| ८. | Concept of Prayer | ,, ,, | ११-०० |
| ९. | भक्तामर, रत्नाकर पच्चीसी, सामायिक पाठ | प्रेमराज बोगावत | ८-०० |
| १०. | जैन संस्कृति और राजस्थान | डॉ० नरेन्द्र भानावत | १५-०० |
| ११. | स्वाध्याय स्तवनमाला | सम्पतराज डोसी | ११-०० |
| १२. | सप्त चरित्र संग्रह | ,, | २-५० |
| १३. | धार्मिक कहानियाँ | आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० | ५-०० |
| १४. | आनुपूर्वी | — | ०-२५ |
| १५. | सामायिक सूत्र (मूल पाठ) | — | ०-४० |
| १६. | सामायिक सूत्र एवं प्रवेशिका पाठ्यक्रम | प्रेमराज बोगावत | १-०० |
| १७. | प्रतिक्रमण सूत्र (मूल पाठ) | ,, | ०-५० |
| १८. | साधना | डॉ० नरेन्द्र भानावत | ३-०० |
| १९. | आध्यात्मिक पाठावली | पं० शशिकान्त झा | १-०० |
| २०. | दीक्षा कुमारी का प्रवास | अनु० लालचन्द जैन | १०-०० |
| २१. | गणधरवाद | सं० विनय सागर | १५-०० |
| २२. | प्रथमापाठ्यक्रम | पार्श्वकुमार मेहता | १-०० |
| २३. | सुजान पद सुमन वाटिका | पं. लक्ष्मीचन्दजी म. सा. | १-२५ |
| २४. | जय श्री शोभाचन्द्र | श्री हीरा मुनि | १-०० |
| २५. | दो बात | | ०-२५ |
| २६. | श्रमणावश्यक सूत्र | | ०-५० |
| २७. | षड्द्रव्य विचार पंचास्तिका | | ०-४० |
| २८. | सुभाषित सौरभ | श्री हीरा मुनि | ३-०० |
| २९. | श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र | | १-०० |

सूचना :– सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि क्रम संख्या १४, १५, १६, १७, २५ में दर्शायी गई पुस्तकों पर ५० या ज्यादा खरीदने पर नियमानुसार २०% (बीस प्रतिशत) कमीशन दिया जा रहा है। आर्डर भेजें।

व्यवस्थापक,
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-३**

# जिनवाणी

□

अणोहंतरा एए नोय ओहं तरित्तए
अतीरंगमा एए नोय तीरं गमित्तए
अपारंगमा एए नोय पारं गमित्तए

—आचारांग १।२।३

जो वासना के प्रवाह को नहीं तैर पाए हैं, वे संसार के प्रवाह को नहीं तैर सकते।

जो इन्द्रियजन्य काम भोगों को पार कर तट पर नहीं पहुँचते हैं, वे संसार-सागर के तट पर नहीं पहुँच सकते।

जो राग-द्वेष को पार नहीं कर पाए हैं, वे संसार-सागर से पार नहीं हो सकते।

□

जुलाई, १९८३
वीर निर्वाण सं० २५०९
आषाढ़, २०४०

**वर्ष : ४० • अंक : ७**

मानद सम्पादक :
**डॉ० नरेन्द्र भानावत,** एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
**डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,**
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
**प्रेमराज बोगावत**

संस्थापक :
**श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़**

प्रकाशक :
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक सदस्यता | : | १५ रु० |
| त्रिवर्षीय सदस्यता | : | ४० रु० |
| आजीवन सदस्यता | : | देश में २०१ रु० |
| आजीवन सदस्यता | : | विदेश में ७०१ रु० |
| संरक्षक सदस्यता | : | ५०१ रु० |
| स्तम्भ सदस्यता | : | १००१ रु० |

मुद्रक :
**फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
जयपुर–३०२००३

**नोट :** यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

# ❋ अनुक्रमणिका ❋

## ☐ प्रवचन / निबन्ध ☐



## ☐ कथा / प्रसंग ☐



## ☐ कविता ☐



## ☐ प्रतिवेदन ☐



## ☐ स्तम्भ ☐

प्रवचनामृत :

# धर्म की मर्यादा में ही जीवन का सुख है*

☐ आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा०

**कल्याण मार्ग का निरूपण :**

मुमुक्षु बन्धुओ ! संसार के समस्त मानवों पर परम करुणा करके वीतराग जिनेश्वर ने कल्याण का मार्ग बतलाया है ।

उनको यह ध्यान है कि संसार के सभी मानव सामर्थ्य वाले नहीं होते । उनके मानसिक सामर्थ्य और उनके शारीरिक बल दोनों में कम-बेशीपना होता है । यदि सामर्थ्य कम-बेशी है तो धर्म की साधना एक सी कैसे होगी, यह उन्होंने अपने ज्ञान में समझा । फिर भी उनको यह इष्ट था कि संसार के सभी जीवों को कल्याण मार्ग पर लगाया जाये ।

**समझदार माँ की नजीर :**

माँ को यह इष्ट होता है कि मेरे घर के सारे सदस्य अपनी-अपनी खुराक पावें । कोई दुर्बल नहीं रहे । ऐसी स्थिति में यह तो उसको ध्यान है कि कोई भूखा न रहे । किन्तु सब एक-सी खुराक पाने में सक्षम नहीं हैं तब क्या वह सबको एक समान खुराक प्रस्तुत करेगी ? उसके घर में बच्चे भी हैं जिनके सामने हलवा, खिचड़ी, रोटी और साग प्रस्तुत करें तो क्या छोटे दूधमुँहे बच्चे हलवा चाटकर पचा सकेंगे ? उनके दाँत नहीं, पाचन शक्ति बराबर नहीं । माँ क्या करेगी ? वह दूध पीने वाले बच्चे को दूध देगी । घर में जो बूढ़े हैं उनको कठोर और रूक्ष पदार्थ नहीं देगी क्योंकि उनके दाँत बराबर काम नहीं करते हैं । घर में बाटे बने हैं, दाल-बाटे मौसम देखकर बनाये हैं । उनमें काफी घी डाला गया है । ऐसे बाटे यदि बूढ़े व्यक्ति के सामने रखें तो क्या वह उस बुड्ढे भैया के लिये अनुकूल रहेगा ? उसकी पाचन शक्ति कमजोर हो रही है । अब

*जलगाँव में १६ जुलाई, १६७६ को दिया गया सम्पादित प्रवचन ।

घी खाना भी काम का नहीं रहा। बूढ़े लालाजी के आधे दाँत टूट गये, आधे इधर-उधर रहे। फिर दाँत टूटने की बधाई लेनी पड़ेगी।

यदि समझदार माँ है तो जवानों को बाटे परोसेगी। उनके लिये दूध, मिठाई भी लेने लायक है। जवानों के लिये किसी वस्तु का परहेज करने की जरूरत नहीं। कठोर से कठोर चीज जवानों के सामने रख सकती है। यदि किसी जवान ने नाराजी बताई कि मेरे सामने कठोर चीज रखी, बूढ़े भैया और बच्चों के सामने नहीं रखी, यह पक्षपात कर दिया तो क्या उसका नाराज होना ठीक है ? नहीं। आप समझ गये कि बूढ़े और बच्चे इस चीज को लेने लायक और पचाने लायक नहीं हैं।

यह एक छोटी सी नजीर है। माँ किसी को भूखा रखना नहीं चाहती और सबको उनकी अनुकूलता के माफिक खुराक देती है।

इसी तह भगवान् ने कहा संसार के प्राणियों को, ज्ञान से और आचरण से भूखा नहीं रहना है। भगवान् ने कहा कि मेरी सारी संतान धर्म की खुराक पावे, धर्म का भोजन उनको मिले। ऐसा नहीं हो कि कोई इससे भूखा रह जाये।

**समदृष्टि रखें :**

जो व्रत पालन करने की क्षमता वाले नहीं हैं उनको सम्यक्त्व धर्म बताया। मतलब कहने का यह है कि जिसमें सही श्रद्धा है और जो धर्म का पालन नहीं कर सकते तो उनको चाहिये कि सत्य, शील, अहिंसा आदि धर्म को पुण्य और पाप कार्य को धर्म नहीं माने किन्तु जो जैसा है उसको वैसा ही मानें। धर्म को धर्म मानें, पाप को पाप मानें और पुण्य को पुण्य अवश्य मानें।

भूख लगी है तो भोजन तो करना ही है और भोजन करने के लिये धन्धा, करना है। धन्धा करके ही पैसा मिलायेगा। पैसा मिलायेगा तभी बाल बच्चों और परिवार का पालन करेगा। साधु संन्यासी आयेगा तो उसको दान देगा। पैसा पास में नहीं होगा तो घर में चीज नहीं होगी। चीज नहीं होगी तो दान कैसे देगा ? इसलिये इसमें पाप नहीं है यह मानकर वह अपने धन्धा बाड़ी को आँख मूँद कर चलाता है।

लेकिन एक तो यह मानकर चले कि पाप होता है क्या करूँ, मेरी आवश्यकता अभी इतनी है कि मुझे यह करना पड़ता है, नहीं करना चाहिये, लेकिन करना पड़ता है।

**यथासंभव संभल कर चलें :**

किसी रास्ते में आप चल रहे हैं। रास्ता वर्षा के कारण साफ नहीं है, कीचड़ है। कीचड़ में पैर देकर जाना पड़ता है, पैरों में कीचड़ लग जाता है, कुछ उछल कर पेन्ट या धोती के भी लग जाता है। किन्तु रास्ता दूसरा नहीं है इसलिये जाना पड़ता है। वहाँ भला आदमी संभल कर जायेगा। यथासंभव वह कीचड़ से बचने की कोशिश करेगा। फिर भी जाते हुए कीचड़ के छींटे पड़ गये तो सहन करेगा। लेकिन जाना पड़ता है।

इसी तरह जो गृहस्थ में रहता है उसको आरम्भ करना पड़ता है, परिग्रह रखना पड़ता है। देवियों को कभी स्वयं को खाना नहीं हुआ तो भी घर के बाल बच्चों के लिये भोजन बनाना पड़ता है। वह देखे कि मेरा उपवास है, आज भैया भी १२ बजे या २ बजे खायगा, बाद में भोजन बना लूंगी। यदि वह बाल बच्चों के लिए भोजन बनाने की व्यवस्था नहीं करे तो अव्यवस्था हो जायेगी, घर में शोर मचेगा। बच्चे चिल्लायेंगे और घरवाला आयेगा तो कहेगा कि वाह–वाह तुमने उपवास कर लिया, तेरे को करना है तो कर ले लेकिन सबको भूखे क्यों मारती है?

**कर्तव्य का तकाजा :**

बाई ने स्वत: उपवास किया है लेकिन चूल्हा जलाना चाहिये, इसलिये जलाती है और भोजन बनाना पड़ेगा, यह समझकर जलाती है। यहाँ कर्त्तव्य का तकाजा है, ड्यूटी या जिम्मेदारी है, इसलिये उसको भोजन बनाना पड़ता है। यदि घर में बहू हो या जिम्मेदारी संभालने वाली और कोई हो तो वह पौषध लेकर बैठ सकती है। घर की जिम्मेदारी संभालने वाली और कोई नहीं है तो पौषध करना आवश्यक है यह मानती हुई, ऐसी भावना करती हुई भी क्या वह पौषध लेकर या सामायिक लेकर बैठ जायेगी? मन कहता है कि पौषध करना लेकिन ५-१० जनों की समस्या सामने है, दायित्व या जिम्मेदारी है इसलिये नहीं कर सकेगी। इसलिये मेरे कहने का मतलब यह है कि यदि व्रत नहीं बने तो ख्याल रखो कि कम से कम दृष्टि सम रहे। सम दृष्टि बन जाने पर मिथ्यात्व नहीं रहता। पाप को पाप तो मानना चाहिये। चाहे नहीं भी छोड़ सको तो कोई बात नहीं।

**गलती को गलती समझो :**

एक आदमी अफीम खा रहा है। छोड़ नहीं सकता। बार-बार संतों ने भी कहा लेकिन छूटा नहीं किन्तु वह अफीम को जहर मानता है। बच्चों को अलग करके लेता है। समय-समय पर बच्चों से कहता है कि भाई बहुत बुरी

आदत लग गई । शरीर से खराब होता हूं, पैसा खर्च होता है लेकिन क्या करूँ मजबूर हूं । खाता है लेकिन कहता है कि मजबूर हूँ । और एक आदमी कहता है कि अफीम तो मेवा है । कुछ नशा करने वाले कहते हैं—"जिसने नहीं पी गांजे की कली, उस लड़के से लड़की भली" तम्बाखू खाने वाले कहते हैं कि स्वर्ग में इन्द्र को तम्बाखू नहीं मिलने से वे भी उदास हो गये । वहाँ तम्बाखू नहीं मिलती है । किसी भाई ने कहा, कि तम्बाकू ऐसी चीज है जिसको गधा भी नहीं खाता है । तो तम्बाखू खाने वाला कहने लगा कि—हाँ ठीक है, जो गधा होता है वही नहीं खाता है । वाह भाई, उपदेश देने वाले ने कहा कि गाँव के बाहर खेत होते हैं तम्बाखू के । घूमता घूमता गधा वहां चला गया और तम्बाखू की गन्ध पाकर वापिस लौट आया, क्योंकि गधा तम्बाखू नहीं खाता । खाने वाला कहने लगा कि हाँ भाई तुम्हारा कहना ठीक है, जो गधा होता है वही तम्बाखू नहीं खाता । अब ऐसे आदमी को क्या समझाया जाय । जो शराबी और कबाबी हैं उनका भी यही हाल है, वे गलती को गलती नहीं मानते ।

इसलिये महावीर जिनेश्वर कहते हैं कि तुमसे त्याग नहीं होता है, आदत नहीं छूटती है तो बुरे को बुरा मानो, गलती को गलती कबूल करो । दिल में अफसोस रखोगे तो एक दिन गलती दूर हो जायेगी ।

**मर्यादा में रहें :**

महावीर देव ने धर्म कार्य में साधारण आदमी को पहले पहल क्या उपदेश दिया ? यदि व्रत नहीं हो तो कम से कम सम्यक्त्व स्वीकार करो । फिर जो कुछ मनोबल वाला है, व्रत की भावना रखता है उससे कहा कि देखो सबसे उत्तम तो यह है कि तुम श्रमण धर्म ग्रहण करो, साधु वृत्ति अंगीकार करो । संपूर्ण अहिंसा का पालन करो, संपूर्ण अचौर्य अंगीकार करो और संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करो और संपूर्ण परिग्रह का त्याग करो । यदि तुमसे व्रत नहीं किया जाता तो भूखे मत रहो, सर्वथा क्रिया शून्य मत रहो । यदि तुम महाव्रत नहीं ले सकते हो तो अणुव्रत लो, अणुव्रत में सीमा है, मर्यादा है । लेकिन तुम गृहस्थी में सद्गृहस्थ रहना चाहो तो बिना मर्यादा के मत रहो । बिना मर्यादा के रहने वाले पशु होते हैं । सहज में कहना हो तो पशु के पीछे कोई जाति की मर्यादा या राज्य का कानून नहीं है । किसी धर्म की या मर्यादा की सीमा पशु के साथ नहीं है ।

**मानव के लिए नियम आवश्यक :**

लेकिन मानव तीनों तरह से बँधा हुआ है । समाज के नियम भी उनको मानने पड़ते हैं । आप अपने मातृ पक्ष के मामा-मामी के परिवार की संतान के साथ शादी करना चाहो तो नहीं कर सकते । लड़की सुन्दर है, आपको पसन्द

आई, लेकिन उसका कुल तुम्हारे नानाणा दादाणा का है तो उसके साथ शादी नहीं कर सकते। किसी जाति में तीन कुल टालते हैं, किसी में चार टालते हैं। लड़की पसन्द है तो भी सम्बन्ध नहीं हो सकता क्योंकि समाज का ऐसा नियम है। इस नियम से आप बंधे हुए हो। तो मानव पर पहले तो समाज का नियम रहा। फिर राज्य के नियम। आपको दुकान खोलनी है तो धन्धा कब से कब तक करना, कितनी इन्कम से अधिक पर टैक्स देना, कितनी जमीन जायदाद रखना, इनसे संबंधित कानूनों को मानना होगा। महावीर के आदेश कदाचित् नहीं मानें लेकिन राज्य के आदेश मजबूरन मानने पड़ते हैं। यदि इस नगर के सम्बन्ध में विधान कर दिया कि एक व्यक्ति इतनी सीमा से अधिक जमीन नहीं रख सकता, इतने मकानों से ज्यादा मकान नहीं रखने हैं तो क्या आप सीमा से अधिक रख पाओगे? चाहे छल बल से कुछ भी करो, यह अलग बात है। जब तक छल बल चलता है, राज्य के अधिकारियों में भाई भतीजे का सम्बन्ध है, खाना-पीना चलता है तब तक यह व्यवस्था रह सकती है। या तो उनमें निखालसपना आ जावे या नागरिकों में ईमानदारी आ जाये तो यह छल बल नहीं रहेगा।

मैं यह कह रहा था कि मानव के पीछे मर्यादा और नियम हैं।

यदि तुम्हारे किसी पशु ने किसी के खेत में जाकर नुकसान कर दिया तो दण्ड किसको दिया जायेगा, पशु को दिया जायेगा या मालिक को? मालिक को दिया जायेगा। क्यों क्या बात हुई? ताँगे वाले का घोड़ा चलता हुआ अगल-बगल चला और किसी के साथ एक्सीडेन्ट कर दिया तो घोड़े पर जुर्माना होगा या उसके मालिक पर? मालिक पर जुर्माना होगा। क्योंकि घोड़ा कायदे से मुक्त है। आप भी ऐसे कायदों से मुक्त रहना चाहते हैं क्या? आप ऐसा चाहते हो लेकिन मौका पड़ेगा तो अपने व्यापार या उद्योग में मैनेजर और नौकर चाकरों को नियम के बाहर कदम नहीं रखने दोगे, यदि वे ऐसा करेंगे तो आपको सहन नहीं होगा।

आप तेजी से कहीं जाना चाहते हो, आपकी गाड़ी की रफ्तार तेज है और कानून ने आपको बाध्य किया कि शहर में १५-२० मील से अधिक तेज रफ्तार से गाड़ी मत चलाओ। कभी आप सीधा निकलना चाहते हो, भारी गाड़ी आपके पास है और नगर का नियम है कि भारी गाड़ी नगर में नहीं आ सकती। आपका मन है या नहीं, आपको गाड़ी मोड़कर वापिस जाना पड़ेगा। आपके घर का सीधा रास्ता है लेकिन ट्रक लेकर आये हो, उसमें माल भरा है तो सीधे नियम से चलना पड़ेगा और नियम का पालन करना पड़ेगा।

**राज्य नियम की तरह धर्म के नियम भी पालें :**

जब आप समाज और राज्य के नियम पालन करने को तैयार रहते हो

तो धर्म के नियमों का भी पालन करना चाहिये या नहीं ? अरिहन्त देव ने और शास्त्रकारों ने पहले से ही आपके सामने नियम प्रस्तुत किये कि गृहस्थ को कैसे धर्म का पालन करना चाहिये। गृहस्थ के लिये जो धार्मिक नियम या व्यवस्था है उसको स्वीकार करना चाहिये। चाहे गृहस्थ यह कह दे कि बात तो अच्छी है लेकिन मैं नियमों का पालन नहीं कर सकता।

राज्य ने सोना-चांदी पर या मकान अथवा बिल्डिंग पर टैक्स लगा दिया तो आप उसको हँसते-हँसते वहन करते हो। कभी यह नहीं कहते कि कायदा तो अच्छा है पर मैं जितना दे सकूँगा उतना दूँगा लेकिन इसके बंधन में नहीं आना चाहता, तो क्या आपकी बात चलेगी ? नहीं, फिर हमारे पास आकर क्यों कहते हो कि मैं इस धार्मिक नियम का पालन नहीं कर सकता ? इसलिये कहते हो कि आप हमसे डरते नहीं हो। तो क्या डराने के लिये हमें हाथ में डंडा लेना चाहिये ?

**धार्मिक व्यवस्था से हृदय परिवर्तन :**

बात यह है कि धार्मिक क्षेत्र और राज्य व्यवस्था में अन्तर इतना ही है कि राज्य व्यवस्था डंडे के बल पर चलती है, उसमें मन बदला नहीं जाता। लेकिन धार्मिक व्यवस्था आदमी के दिल और दिमाग को बदलती है। वह प्रेम से चलती है।

आप भगवान् महावीर के भक्त अनुयायी हो। सच्चे शिष्य और सच्चे सपूत हो तो गुरु की आज्ञा या उपदेश सुनकर उसको तुरन्त स्वीकार करो। गुरुदेव आज से मैं ऐसा ही करूँगा। यह तो है अनुमोदन करने लायक चीज, और एक हम आदेश चलावें कि ऐसा करना पड़ेगा तब आप वैसा करो, उसमें आपकी तारीफ होगी क्या ?

**मधुकरी वृत्ति ही श्रेष्ठ वृत्ति :**

मैं आपसे दशवैकालिक सूत्र की बात कह रहा हूँ। उसमें महावीर देव ने कहा कि धर्म अहिंसा, संयम और तप का मिला-जुला रूप है। उसके नियम, मर्यादा और सिद्धान्त का पालन करने के लिये धर्मी को भोजन कैसे प्राप्त करना चाहिये, दृष्टि कैसी रखनी चाहिये ताकि किसी को कष्ट न हो। ऐसी दृष्टि किस प्रकार की जाय, शिष्य ने गुरु से पूछा। गुरु ने उसको समझाते हुए कहा कि जिज्ञासु शिष्य ! यदि तुमको शरीर चलाना है तो चला सकते हो लेकिन इस तरह चलाओ जैसे भँवरा चलाता है। भँवरा बड़े बगीचे में जाकर सैंकड़ों फूलों पर घूमता है और उन फूलों से रस या मकरंद लेता है, अपने शरीर का पोषण करता है किन्तु फूलों को कष्ट नहीं होने देता। मनुष्य शरीर का

निर्वाह करना है तो भोजन ग्रहण करो लेकिन इस तरह से भोजन करो कि जिससे दूसरे को कष्ट न हो।

जिस तरह मुनि जीवन के लिये यह बात है उसी तरह से वही बात गृहस्थ के लिये भी समझना है। मुनिजन के लिये मधुकरी है, इसलिये वे घर-घर में भिक्षा लेते हैं। वैसे गृहस्थ भी ग्राहक और व्यापारी के रूप में, स्वामी और सेवक के रूप में कुछ अपने साधन प्राप्त करते हैं। पशुओं से भी मनुष्य कुछ लेता है, आदमियों से भी फायदा उठाता है और मनुष्य का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान करता है। पशु को कुछ देता है और कुछ लेता है। ग्राहकों से भी लेता है और देता है।

**आदान-प्रदान उचित हो :**

एक तो यह वृत्ति है कि उचित रूप में देना चाहिये उतना दे और बदले में जितना लेना चाहिये उतना ले।

गाय को चारा दिया जाता है, खली दी जाती है। जिस प्रमाण में उसे दिया उसी प्रमाण में वापिस दूध लेकर उसके बछड़ा-बछड़ी के लिये भी छोड़ना चाहिये। इससे अपना काम भी बना और बछड़ा-बछड़ी के लिये भी दूध छोड़ दिया जिससे वे तड़फते नहीं रहें। गाय का दूध निकालते समय स्तनों को दबा-दबा कर निकालते हैं, रगड़ आकर खून आ जाये तो घी लगाना पड़े। जो गृहस्थ ऐसा करके दूध निकालते हैं वे अहिंसा धर्म का पालन नहीं करते।

इसी तरह नौकरों से कुछ लेना है और कुछ देना है। उनके साथ आदान-प्रदान करना है। एक गृहस्थ चाहता है कि नौकर से काम तो ज्यादा लेऊँ और उसको वेतन कम देऊँ तो क्या वह उचित सोच रहा है? साधारण मानव की अधिकांशत: ऐसी वृत्ति रहती है। लेकिन जो धर्मी गृहस्थ हैं, जैन हैं, भगवान् के भक्त हैं वे कभी ऐसी नजर नहीं रखेंगे। यदि किसी को नौकर रखना है तो नौकर रखने वाले चालाकी किया करते हैं। वे सोचते हैं कि बड़े आदमी को नौकर रखेंगे तो वह पैसा ज्यादा लेगा और काम थोड़ा करेगा और हुकम मानेगा नहीं, इसलिये छोटे बच्चे को नौकर रखा जाय जो कम पढ़ा-लिखा हो और छोटे कुल का हो। वह आपकी हुकूमत भी मानेगा और पगार भी थोड़ी लेगा। कभी ऐसा भी नौकर मिल जाता है जिसको कह दिया जाता है कि तुझे रोटी दूंगा, कपड़े दूंगा—रोटी, कपड़ा ले और काम हो सो कर। घर में १० आदमी आ गये तो उस नौकर से कहेंगे कि आज तुझे बरतन भी रगड़ने पड़ेंगे। फिर कहेंगे कि आज झाड़ू भी लगादो। तीसरे दिन कहा कि आज पानी भरने वाली नहीं है, तू नल पर से पानी ले आ। वह पानी भी लायेगा। २५ रु०

या ४०–५० रुपये वेतन पर रखा होगा या रोटी कपड़े पर रखा है, उससे कपड़े भी धुला लेंगे। बच्चे को रखने का काम भी दे देंगे। कभी बच्चा टट्टी फिर गया उसे भी वह साफ करेगा। इतना काम उससे लिया जाता है। तो जितना काम लिया है उतना ही ईमानदारी से देना चाहिये। उससे अधिक काम लिया है तो वेतन के अलावा उसको अनुदान भी मिलना चाहिये।

**जिसमें न किसी को पीड़ा हो :**

मेरी बात समझ में आई या नहीं ? समझ में आई लेकिन दिल हिल गया कि हम चाहते हैं उससे उल्टी बात महाराज कह रहे हैं। लेकिन बात यह है कि सही मार्ग बताना, समझाना शास्त्र का काम है। इसलिये शास्त्रकार आपके सामने रखते हैं कि अरे गृहस्थ ! तू सद्गृहस्थ रहना चाहता है, संयम का पालन करना चाहता है तो इस प्रकार की वृत्ति रख कि दूसरे को कष्ट न हो–नुकसान न हो। यदि लेगा ज्यादा और देगा कम तो इससे क्या कभी नौकर का मन नाराज तो नहीं होगा, कभी वह धोखा तो नहीं देगा, कभी सामान में से कुछ चुरायेगा तो नहीं ? यदि भोजन और वेतन की अच्छी व्यवस्था करेंगे तो सामान चुराने का मौका नहीं आयेगा। कभी ऐसा भी किया जाता है कि भोजन वह बना दे, बरतन वह साफ करे और चौका उठने के बाद अपने घर जाकर खाना खावे तो क्या वह अपने मालिक के रसोड़े पर हाथ साफ तो नहीं करेगा ? आप कहाँ तक नजर रखेंगे कि इतना आटा था, इतना घी था। कटोरी में घी भरकर पाटिये के नीचे रख देगा। बड़ी हवेली में देखा सेठ-सेठानी उधर गये हैं, पीछे से घी का कटोरा लेकर चट कर गया–साफ कर गया। यह उसका बेईमानी का रास्ता क्या शुभ आदान और प्रदान है ? जैसा आदान करते हो वैसा प्रदान करने की सभी गृहस्थों में वृत्ति रहेगी तो सेवकों में अनाचार नहीं फैलेगा। तो शिष्य कहता है :—

> भगवान् हम वृत्ति चलायेंगे, जिसमें न किसी को हो पीड़ा।
> सहज भाव कृत भोजन में, जाते जैसे मधुकर कीड़ा।

गुरु की शिक्षा सुनकर शिष्य तत्काल बोलता है कि भगवन् आज से ऐसा ही जीवन चलायेंगे।

**जीव निर्माण के लिये मूल व्रतों का ग्रहण :**

भगवान् महावीर के अनुयायी, आज भी जो धार्मिक सभा के पक्के सदस्य होंगे वे मन से खड़े होंगे, उनको हाथ पकड़ कर खड़ा नहीं करना पड़ेगा। धर्म का उपदेश अन्तःकरण में जगा नहीं कि फिर सामने वाले को खड़ा होते देर नहीं लगेगी। जैसे आप और बहिनें तप के लिये जल्दी खड़ी हो जाती हैं।

उसी तरह आचार धर्म और चारित्र धर्म में भी जल्दी खड़ा होना चाहिये। हम झूठ नहीं बोलेंगे, सदाचार का पालन करेंगे इसलिये मन से खड़े हैं। इस तरह भाई-बहिन और जवानों की प्रवृत्ति बनती है तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी और आपका जीवन हल्का होगा। जीवन बनाने के लिये मूल व्रत पकड़ने चाहिये।

दो, चार या दस दिन का उपवास कर लिया, जब तक नहीं खाया तब तक ठीक है। लेकिन जैसे ही पारणा हुआ, खाने लगे, वैसे ही कई चीजें खाने पर मन गया। उकाली है, हलुआ है, साग में अमुक-अमुक है, न मालूम कितनी तरह की चीजें व्यक्ति को याद आयेंगी। एक दो चीज से मन बराबर नहीं मानता। तप है तब तक खाने की मन में नहीं आयेगी। अभी कुछ खाया ही नहीं। थोड़ा सा हलवा लेलें, उकाली पी लें, मुनक्का खा लें, काली मिर्च, सौंफ, दाल-सेव ले लिया जाय। साग ले लिया जाय। न मालूम कितनी तरह की चीजें बनाई जाती हैं। फिर देवियाँ तो खाद्य भंडार की मालकिन हैं और पोटलियाँ चीजों से भरी हुई हैं, तो पारणे के लिये क्या कमी है? बात यह है कि जब आप अहिंसा, सदाचार के मूल गुणों को अंगीकार करेंगे तो आपका जीवन भी निखरेगा और इन व्रतों के साथ तपस्या करेंगे तो ज्यादा चमकेंगे, ज्यादा तेजस्वी होंगे, ज्यादा ताकत या बल आयेगा। भगवान् महावीर ने यही शिक्षा दी थी।

**किसी को कष्ट न पहुंचायें :**

शिष्य कहता है कि भगवन् हम आज से ऐसी वृत्ति चलायेंगे जिससे किसी को पीड़ा न हो। नाना घरों में जायेंगे, पाँच घर ज्यादा घूमना पड़े तो घूमेंगे। गृहस्थ ने सहज भाव से अपने खाने-पीने के लिये जो बनाया है उसमें से थोड़ा-थोड़ा बिना उसको कष्ट पहुँचाये लेकर अपने शरीर का पोषण करेंगे और किसी को पीड़ा नहीं होने देंगे।

जैसे अहिंसा वृत्ति का शिष्य गुरु से प्रतिज्ञा करता है, उसी तरह गृहस्थ को भी प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि अनीति और परेशानी से पैसा नहीं मिलायेंगे। आपको पैसा मिलाने के लिये आरम्भ, परिग्रह करना पड़ता है, लेकिन किसी को दुःख या तकलीफ न हो ऐसा करेंगे। सामने वाला जो वस्तु देगा उससे उसका मन राजी है, मेरा भी राजी है, ऐसा नहीं हो कि कपड़े की दुकान लगाई है, ग्राहक को माल दिखाते समय कुछ और दिया, देते समय कुछ और माल दे दिया तो घर जाने पर वह पछतायेगा और कहेगा कि मुझे अमुक व्यापारी ने धोखा दे दिया।

**विदेशी वस्तु की मोहकता :**

विदेशी लोग चीजों की कीमत ज्यादा रखते हैं, लेकिन मोहकता या

सुन्दरता ऐसी रखते हैं कि सामने वाले का दिल खरीदने के लिये मचलता है। चाकलेट की गोली वे लोग बनाते हैं तो ऊपर के रेपर को सुन्दर बनाते हैं। खाँसी की गोलियाँ छोटी सी शीशी में बन्द है। उसकी कीमत पूछो तो चार या छह रुपये बताई। उसमें थोड़ी सी गिनती की गोलियाँ थीं। मेडिकल स्टोर में जाकर कीमत के बारे में हां, ना नहीं करेंगे। किसी कपड़े की दुकान में जाकर कपड़े देखते हैं तो मन मचल जाता है। दुकान वाला कहता है कि इस साड़ी के २५ रु० या ५० रु० लगेंगे। कीमत सुनकर आप हाँ, ना कहेंगे या पैसे देकर साड़ी और कपड़े ले लेंगे? उन विदेशी लोगों में सत्य नहीं है, धर्म नहीं है लेकिन वे व्यावहारिक नीति का इतना खयाल रखते हैं कि सामने वाला राजी होकर माल ले जाय।

महावीर कहते हैं कि ऐ गृहस्थों, तुम्हारा धंधा पैसे मिलाने का है, लेकिन उसमें भी अहिंसा का ध्यान रखकर चलोगे तो आज नहीं कल क्या हो सकता है। इस तरह श्रावक धर्म की शिक्षा से, मानव जीवन शान्ति की ओर बढ़ सकता है।

**महावीर का समवसरण :**

भगवान् महावीर के केवलज्ञान के दूसरे दिन समोसरण लगा, धर्म देशना दी गई और चार तीर्थों की स्थापना की गई। प्रभु को वैशाख शुक्ला १० को केवलज्ञान हुआ। वैशाख शुक्ला दशमी को समवसरण में मानव उपस्थित नहीं थे इसलिये उनका उपदेश खाली चला गया। दूसरे दिन—

इन्द्रभूति आदि भू–सुर की शंक मिटाते हैं,
दूजे दिन पावापुर में प्रभु धर्म सुनाते हैं।
शासन नायक वीर जिनेश्वर की हम कथा सुनाते हैं।
विद्वानों को त्रिपदी से, श्रुत बीज दिखाते हैं,
पूर्वों की रचना कर, गणधर पद वे पाते हैं।
शासन नायक वीर जिनेश्वर की हम कथा सुनाते हैं।

**समवसरण का अर्थ :**

वैशाख शुक्ला एकादशी को भगवान् की दूसरी धर्म सभा का आयोजन हुआ। धर्म सभा को समवसरण कहते हैं। समवसरण का मतलब है, धर्मीजनों का एकत्र होकर एक जगह बैठना। यह नहीं समझना चाहिये कि जहाँ स्वर्ण,

रत्न और रजत के कोट हों, ऊँचा सिंहासन हो वहीं समवसरण है। साधु-साध्वी, श्रावक श्राविका एकत्रित होकर जहाँ धर्म सुनने आते हैं उसका नाम है समवसरण।

**इन्द्रभूति की विचार-धारा :**

दूसरे दिन महावीर देव का समवसरण हुआ। उस समय हजारों मानव उपस्थित हुए। सबसे पहले कुछ बुद्धिवादी मानव आये—भगवान् की परीक्षा करने के लिये, उनकी व्यवस्था समझने के लिये। उनके मुखिया थे इन्द्रभूति। जैसे ही इन्द्रभूति आया, उसका उद्देश्य था कि मैं इन्द्रजालिये का मान भंग करूंगा, प्रश्न पूछूंगा, जवाब नहीं दे सकेगा तब उस पर विजय प्राप्त करूंगा। वे आये, सामने की सीढ़ियों पर चढ़े। महावीर ने कहा हे इन्द्रभूति ! नाम लेकर सम्बोधन किया, तब इन्द्रभूति के मन में विचार हुआ कि मैंने आज तक इसको देखा नहीं फिर इसने मेरा नाम कैसे जाना ? हो सकता है कि मैं देश में इधर-उधर प्रसिद्ध हूं, मेरे साथ सैंकड़ों शिष्य हैं. इससे मुझे इसने जान लिया होगा, लेकिन मैं महावीर को सर्वज्ञ तभी मानूंगा तब ये मेरे मन की शंका बतायेंगे।

महावीर देव में बनावटीपन नहीं था। बनावटीपन हो तो, पहले प्रचार-प्रसार करने के लिये पुजारियों की जरूरत पड़ती है। सिद्ध-साधक का जोड़ होता है। सिद्ध की पूजा तभी होती है जबकि उसको पुजाने वाले साधक अच्छे हों।

**कृत्रिम भगवान :**

आज व्यापारी के भी एजेन्ट होते हैं। उसी तरह कच्चे त्यागियों को पुजाने के लिये एजेन्ट होते हैं। थोड़ा सा ज्ञान बताया और भगवान कहलाने लगे। यह नहीं सोचा कि भगवान् बनने के लिये पहले राग-द्वेष को छोड़ना पड़ता है। आज हिन्दुस्तान में अपने आपको भगवान् कहने वाले बीसों होंगे। मैं बीसों कहता हूं लेकिन एक बार पत्रों में ८० की संख्या आई थी। हमारे जैन संप्रदाय का एक व्यक्ति जो कॉलेज में लेक्चरार था वह भी आजकल आचार्य भगवान कहलाता है। कभी शिविर लगाता है तब लोगों को नंगा करके योग विद्या सिखाता है और संभोग में समाधि मानता है। यह बुद्धि एवं विद्वत्ता का सदुपयोग नहीं है।

**इन्द्रभूति की शंका का समाधान :**

महावीर कृत्रिम प्रचारकों से पूजा नहीं कराते थे। महावीर की सर्वज्ञता स्वाभाविक थी, बनावटी नहीं थी।

इन्द्रभूति अपने मन में शंका लेकर आया और भगवान् ने कहा कि हे इन्द्रभूति ! तुम्हारे मन में आत्मा के संबंध में शंका है लेकिन तुम नहीं जानते हो कि वेद क्या कहते हैं ? वेद के प्रमाणों से इन्द्रभूति की शंका का समाधान किया। यदि विशेष जानकारी करना चाहो तो "इन्द्रभूति गणधर संवाद पढ़ें" तो आपको मालूम होगा।

जब इन्द्रभूति ने देखा कि महावीर ने मेरे मन की बात कह दी है और मेरी शंका का समाधान भी कर दिया है, तो मुझे इनको गुरु मानना चाहिये।

**पहले के आदमी बात के धनी थे :**

पहले के आदमी आन-बान के पक्के हुआ करते थे। मन में कह देते थे कि मेरी शंका मिटेगी तो शिष्य बन जाऊँगा, तो वही बात निभाते थे आज के भक्त कभी ऐसे भी होते हैं, जो कहते हैं कि बापजी आप पधारो, चातुर्मास करो तो मैं आप कहोगे सो करूंगा, आप कहो तो मैं घर भी छोड़ दूं। बापजी सरल थे, कहा कि घर छोड़ देगा, तो आ गये लेकिन भक्त ने इस ओर कोई जिज्ञासा नहीं दिखाई। एक महीना बीत गया, दो महीने बीत गये, तीन महीने बीत गये, अब एक महीना बाद चलें जायेंगे तब संत ने भक्त को उसकी कही हुई बात याद दिलाई तो उसने कहा कि बापजी आपको मालूम नहीं कि मैं जिस घर में पहले रहता था उसे तो कभी का छोड़ दिया। पहले पीपली बाजार में रहता था, अब सुभाष चौक में आ गया हूं—मैंने अपना घर कभी का छोड़ दिया। उसकी बात सुनकर संत भी चक्कर में पड़ गये और सोचने लगे कि भक्त जोरदार मिला, महाराज को भी ठग लिया। आज के समय में वास्तव में ईमानदारी रखने वाले मनुष्य थोड़े होते हैं।

**धर्म की प्रभावना :**

लेकिन इन्द्रभूति ने सोचा कि जो मेरी शंका का समाधान कर देंगे उनको गुरु मान लूंगा। वह ५०० छात्रों को लेकर आया था। जब महावीर से समाधान पाया तो बिना घर लौटे ही दिन में छात्रों के संग भगवान् के चेले हो गये। एक ही दिन में ४४०० साधु हो गये। यह है धर्म की प्रभावना।

**चतुर्विध संघों की स्थापना :**

इतना संघ बन गया तो भगवान् को चार संघों की स्थापना करने में देर नहीं लगी। पहले साधु संघ बना। फिर राजकुमारी चन्दनबाला आई और कहने लगी कि महाराज मेरी यह प्रतिज्ञा थी कि आपको केवल ज्ञान हो तो आपकी शिष्या बन जाऊँ। राजकुमारी होकर वह शादी या विवाह से विरक्त

थी। एक तरफ राजा की लड़की, दूसरी तरफ राजघराने से संबंध होते हुए भी वह अपने जीवन को त्याग, वैराग्य की शिक्षा की भावना से श्रोत-प्रोत कर भगवान् के चरणों में अपनी सहेलियों के साथ साध्वी बन गई।

इस तरह से चारों संघों की स्थापना हुई और महावीर तीर्थंकर घोषित हो गये। देव-देवियों और मानव सबने कहा, जय हो तीर्थंकर भगवान् महावीर की। भगवान् महावीर चार संघों की स्थापना करके भाव तीर्थंकर बन गये।

आज भगवान् हमारे सामने नहीं हैं लेकिन उनकी वाणी हमारे सामने है। उस वाणी का चिन्तन-मनन करेंगे, आराधना करेंगे तो आनन्द और कल्याण होगा।

□□

## दो कविताएँ

### विश्व बन्धुत्व

केवल खाना पीना
ऐश मौज मारना
सच्चा-जीवन नहीं है—
इन सब में
सच्चे जीवन की
झलक नहीं है।
अपने तक ही सीमित,
तुच्छ स्वार्थ में आनन्दित,
विराट विश्व में आशंकित,
ये ही तो लघु बनाती है।
विराट बनने के लिए,
सच्चे जीवन के लिए,
जरूरी है इनका त्यागना,
अपने को
विश्व बन्धुत्व में ढालना।

### आँखें होते अन्धा

ज्ञानी कहलाने मात्र से
क्या होता है,
जब तक नहीं, शास्त्र का
ज्ञान होता है।
शास्त्र-ज्ञान से
संशयों का निराकरण,
परोक्ष विषयों से
हटकर आवरण,
सच्ची ज्योति पाता है।
इसीलिए तो
शास्त्रों से अनजाना
आँखें होते भी
अन्धा कहलाता है।

**—पवन पहाड़िया "डेह"**
C/o पहाड़िया फ्लोर मिल,
डेह—३४१ ०२२
जिला—नागौर (राज०)

उद्‌बोधन :
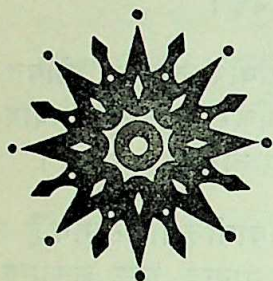
# स्वाध्याय : स्वरूप-विश्लेषण*

□ पं० र० श्री हीरा मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के विद्वान् शिष्य]

### स्वाध्याय का स्वरूप :

अध्ययनमध्यायः सु सुन्दरो-ध्यायः स्वाध्यायः । याने सुन्दर-अध्ययन-सत्-शास्त्र को मर्यादापूर्वक पढ़ना स्वाध्याय कहा जाता है। केवल अध्ययन-पठन-स्वाध्याय नहीं कहा जा सकता। क्योंकि आज कितने ही कामोत्तेजक जासूसी उपन्यास और अश्लील पुस्तकें तथा कथा, कहानियां, विकारवर्द्धक साज-सज्जों से सुसज्जित अध्ययन सामग्री के रूप में उपलब्ध होते हैं तो क्या इनका अध्ययन भी स्वाध्याय कहायेगा ? कभी नहीं। वस्तुतः जिस अध्ययन से आत्मस्वरूप की उपलब्धि एवं आत्मकल्याण सम्भव हो, ऐसे श्रेष्ठ ग्रंथों का ध्यानपूर्वक पढ़ना ही स्वाध्याय शब्द का अभीष्ट अर्थ है। गन्दी पुस्तकों का अध्ययन मन को गन्दा करके लक्ष्य भ्रष्ट बना देता है। जिनके पढ़ने से आचार-विचारों में उत्तेजना तथा कालिमा आती हो, भूलकर भी ऐसी पुस्तकों के हाथ नहीं लगाना चाहिये। स्वाध्याय के रूप में तो उसके पढ़ने की बात ही क्या ? अन्य दृष्टि से ऐसी पुस्तकें चाहे कितनी भी उपयोगी हों स्वाध्याय की दृष्टि से सर्वथा हेय हैं। हमारे पूर्वजनों ने जो कुछ भी किया, सोचा और पाया वे सभी सद्‌ग्रंथों के स्वर्णिम पृष्ठों पर हमारी थाती के रूप में युग-युग से सुरक्षित पड़े हैं। वस्तुतः उन्हीं आदर्शों की प्राप्ति को लक्ष्य मानकर हमें उनका स्वाध्याय करना चाहिये।

### स्वाध्याय का एक विशिष्ट रूप :

स्वाध्याय का एक दूसरा भी रूप प्रचलित है। पाठकों को अध्ययन के लिए किसी भी सद्‌ग्रंथ का अध्ययन उतना आवश्यक नहीं जितना कि आत्मा का अध्ययन। इस दृष्टि में "स्वस्यः आत्मनः अध्ययनम् स्वाध्यायः।" याने अपनी आत्मा का अध्ययन ही स्वाध्याय है। आत्मा कोई ग्रंथ या शास्त्र नहीं

*अजमेर चातुर्मास में दिया गया प्रवचन। पं० शशिकान्त झा द्वारा सम्पादित।

जिसका कि अध्ययन किया जाय। ऐसी शंका का स्पष्ट समाधान यह है कि किसी भी अध्ययन का कुछ न कुछ विषय होता है और अध्येता उस विषय-वस्तु को हृदयंगम करने के लिए उसका पुनः-पुनः निरीक्षण एवं परीक्षण करता है जो कि अध्ययन या अध्याय कहा जाता है। आत्मा के बारे में भी यह ज्ञातव्य है कि आत्मा क्या है? कहां से आया है? कहां जायेगा? देह से उसका क्या सम्बन्ध है? मन और इन्द्रियों से क्या नाता है? क्या देह, इन्द्रिय और मन का समुच्चय रूप ही तो आत्मा नहीं है? इस जागतिक जाल में गुड़ में मक्खी की तरह इस आत्मा के उलझने का रहस्य क्या है? क्या देह के साथ आत्मा का भी विनाश नहीं होता? क्या वास्तव में वह अजर और अमर है? आत्मा का आकार कैसा है? वह अमूर्त है तो इस तरह मूर्त रूप का आश्रय ग्रहण क्यों करता? आदि विविध प्रश्न हैं, जिन पर पूर्वाचार्यों ने, तत्त्ववेत्ता महर्षियों ने भांति-भांति के विचार व्यक्त किये हैं।

पूर्वश्रुत उस शास्त्र वाणी के आधार पर चिन्तन, मनन और निदिध्यासन के द्वारा उन गूढ़ पहेलियों को सुलझाने का प्रयत्न करना चाहिये। आत्मिक तत्व का यह उद्घाटन भी स्वाध्याय के अन्तर्गत ही आता है।

**स्वाध्याय वाणी का तप।**

स्वाध्याय एक प्रकार से वाणी का तप है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा हैं—"स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते" याने स्वाध्याय एवं अभ्यास को वाङ्मय का तप कहा जाता है। तप के द्वारा जैसे राग द्वेष आदि कर्म बन्धन आत्मा से अलग हो जाते हैं वैसे स्वाध्याय रूप तप के द्वारा भी वचन सिद्धि प्राप्त हो जाती है और व्यक्ति के मुख मण्डल पर एक अलौकिक दिव्य आभा दिखाई देने लगती है। स्वाध्यायी अपनी निरन्तर स्वाध्याय साधना से अमोघ वचनी हो जाता है। इस तरह स्वाध्याय से वाणी में निखार तथा बल आने लगता है। एक सच्चे स्वाध्यायी के निर्मल मन से निकलने वाले वचन कभी खाली नहीं जाते।

**स्वाध्याय एक ज्ञान यज्ञ :**

यज्ञ कई प्रकार के होते हैं जैसा कि गीता का वचन है—"द्रव्य यज्ञा स्तपोयज्ञा, योग यज्ञा स्तथा परे। स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च यतयः संशित व्रताः।" अर्थात् द्रव्य यज्ञ, तपोयज्ञ तथा स्वाध्याय रूप ज्ञान यज्ञ की व्रतनिष्ठ यति जन उपासना करते हैं।

इन यज्ञों में ज्ञानमूलक स्वाध्याय यज्ञ की महिमा बताते हुए कहा है—"श्रेयान् द्रव्य मयाद्-यज्ञात् ज्ञानयज्ञं परं तपः। सर्व कर्माखिलं पार्थ, ज्ञाने परिस माप्यते।" अर्थात् द्रव्ययज्ञ से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है क्योंकि बन्धन के हेतु सभी कर्म,

ज्ञान यज्ञ में समाप्त हो जाते हैं। द्रव्य यज्ञ में जहां साधन सामग्री की अपेक्षा रहती है, स्वाध्याय में उनका कोई प्रयोजन नहीं। स्वाध्याय अन्त: में छिपे ज्ञान को प्रकाशित करता है, जिससे कि अज्ञानता जन्य सारे संशय और विपर्यास मन से दूर हो जाते हैं। संशयों के मिटते ही व्यक्ति देहवान की जगह आत्मवान बन जाता है और "आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति" और आत्मवान् को कर्म बांध नहीं सकता। कर्मबन्ध को काटना ही मोक्ष है। संसार के समस्त जप-तप कर्मबन्ध को छुड़ाने के लिए ही विहित माने गये हैं। जो कि स्वाध्याय से सहज सुलभता से प्राप्त होते हैं।

**स्वाध्याय अज्ञानता का नाशक :**

जालबद्ध मकड़ी की तरह यह आत्मा स्वीकृत अज्ञानता के द्वारा सांसारिक उलझनों में उलझी हुई है। इसी अज्ञानता या अविद्या के वश आत्मज्योति जगमगा नहीं पाती। जैसे सूर्य घन पटल में छिपकर जगत पर अपना प्रकाश नहीं फैला पाता वैसे अज्ञानता से ज्ञान-धन विभु की दिव्य ज्योति भीतर ही भीतर कौंध कर रह जाती, वह बाहर नहीं आ पाती है। मगर स्वाध्याय के द्वारा निरन्तर ज्ञानवृद्धि होने से एक दिन यह आत्मा अज्ञानता को विनष्ट कर ज्ञानालोक से आलोकित हो उठता है और इस पर छाई अविद्या का आवरण भी दूर हो जाता है। कहा भी है—"मथैद्धांसि समिद्धोऽग्नि, भस्मसात कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्नि: सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा।" अर्थात् जैसे प्रज्वलित अग्नि समस्त ईंधन को अपनी ज्वाला से राख बना देती है, वैसे सतत स्वाध्याय से प्रदीप्त यह ज्ञानाग्नि अज्ञानता को जड़ मूल से भस्म बना डालती है।

**स्वाध्याय–आत्मबोध का उत्स :**

स्वाध्याय आत्मबोध का उत्स—उद्गम स्थान है। क्योंकि स्वाध्याय से ज्ञान और ज्ञान से आत्मबोध होता है। स्वाध्याय के द्वारा सरलता से साक्षात्कार होता है। जिससे पुन: उसको कुछ करना शेष नहीं रहता। उसके मन की सारी सांसारिक तृष्णा या लालसा मिट जाती है और वह परमानन्द निमग्न हो जाता है। इस दशा को प्राप्त करने वाला जीव स्व-पर के भेद को भूल जाता है। संसार के समस्त प्राणियों के प्रति उसमें समता का भाव आ जाता है। वह सब में अपने को तथा सबको अपने में समाया हुआ समझता है। राग और द्वेष से उसका सर्वथा सम्बन्ध टूट जाता है।

दो तट बन्धों के बीच बहने वाली सरिता जैसे सागर में मिलकर अपनी क्षुद्रता खोकर सागर की महानता को धारण कर लेती है। वैसे ही स्वाध्याय के बल पर साधक व्यक्ति से समष्टि का बड़ा रूप धारण कर लेता है। सुख-दु:ख,

हानि-लाभ, स्वर्ग-नरक और भले-बुरे का विचार उसके मन में नहीं रहता। वह द्वन्द्व से परे द्वन्द्वातीत बन जाता है।

**स्वाध्याय—आत्मचिन्तन की कसौटी :**

स्वाध्याय को यदि आत्मचिन्तन की कसौटी कहें तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी। स्वाध्यायी साधक इस कसौटी पर—"किं मे कडं किं च में किच्च सेसं, किं सक्कणिज्जं न समायरामि।" अर्थात् मैंने क्या शुभ कर्म किया, क्या नहीं किया? क्या एवं कौन से कार्य करने शेष हैं, जिसे मैं करने की स्थिति में हूं आदि विषयों को स्वाध्याय के ज्ञानलोक में वर्गीकरण करते हुए अकृत-कर्त्तव्य कर्मों के करने में स्वाध्याय से सम्बल प्राप्त कर पुनः प्राणपन से जुट जाता तथा जीवन को गरिमा मण्डित और उजागर बना लेता है। कसौटी पर कसने से जैसे स्वर्ण की परख होती है, वैसे स्वाध्याय की कसौटी पर आत्मिक गुणों की परख होती है।

**स्वाध्याय—वक्तृत्व का कल्प द्रुम :**

निरन्तर पढ़े गये सद्ग्रन्थों या शास्त्रों से वाणी निखरती है। शास्त्र—जिसके लिए कहा है कि—"यस्मात् राग द्वेषोद्वत-चितान्, समनुशास्ति सद्धर्मे, संत्रायते च दुःखाच्छा स्त्रमिति निरुच्यते सम्हिः।" अर्थात् जिसके द्वारा राग, से उद्धत मन को सद्धर्म में अनुशासित किया जाता है और दुःखों से संरक्षण होता है, उसे सज्जनों ने शास्त्र कहा है। उसके अध्ययन या स्वाध्याय से व्यक्ति का ज्ञान विकसित होता है। इस सद्ध्ययन से उसकी वाणी ओजस्विनी और बलवती बन जाती है। वह इस स्वाध्याय के बल पर प्राप्त ज्ञान के द्वारा जिस किसी विषय को पूर्ण प्रामाणिकता और प्रखर पाण्डित्य से जन-गण के आगे प्रस्तुत करता तथा उसे अकाट्य प्रमाणों द्वारा लोक मानस पर खचित कर देता है।

उसकी वाणी में यथार्थवादिता के संग-संग ऐसी माधुरी भरी होती है कि जिससे लोग उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। हर व्यक्ति उसकी वचन सुधा का पान करना चाहता है। वह जो कुछ भी बोलता है पूर्ण प्रभावकारी होता है।

एक सच्चे स्वाध्यायी की वक्तृत्व कला इतनी निखर जाती है कि उसकी बातों पर लोग मंत्र मुग्ध से बन जाते हैं तथा तन-मन-धन सब उस पर न्यौछावर करने को तत्पर हो जाते हैं। ऐसा संमोहक गुण निसर्ग से तो मिलता ही है मगर स्वाध्याय से वह कुसुम-कोडक की तरह प्रफुल्लित एवं विकसित हो जाता है।

**स्वाध्याय एक अनमोल चिन्तन :**

स्वाध्याय के रूप में किया गया आत्मचिन्तन एक अनमोल चिन्तन है। किसी बाजीगर के जादू की तरह यह मन को अनेक स्थितियों में उपस्थित कर देता है। इस चिन्तन में कभी चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश तो कभी सघन अन्धकार फैला रहता है। मन कभी परम पुलकित और स्फूर्ति से भर उठता है तो कभी मोह और आलस्य के क्षणिक झटके भी लगते रहते हैं। मगर चल-चित्र की तरह ये अशुभ भाव क्षणिक होते हैं स्थायी नहीं। स्वाध्याय से अज्ञान गुहा में अन्तर्निहित वस्तु भी ज्ञानालोक से प्रगट हो उठती है। कहा भी है—

"सज्झाय सज्झाण रयस्स ताइणोअपाव भावस्स तवे रयस्स ।
वि सुज्झइ जंसि मलं पुरे कडं, समीरियं रुप्पमलं व जोरणा ।।
।। दशवै० ।।

अर्थात् जिस प्रकार अग्नि में तपाने से चांदी का मैल दूर हो जाता है, वैसे ही स्वाध्याय रूप सद् ध्यान में लीन शुद्ध अन्तःकरण व तपस्यारत साधक का पूर्व संचित कर्म-मैल नष्ट हो जाता है और कर्म मैल के दूर होते ही कस्तूरी मृग की सुरभि की तरह आत्मतल्लीन ज्योतिर्धर जीव, हृदय-क्षितिज पर बाल रवि की तरह अनूठी लालिमा से भरा दिखाई देता है।

**स्वाध्याय दिव्य जीवन का मूल :**

जीवन केवल जीना भर नहीं, श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया चलाना भर नहीं किन्तु पारिजात प्रसून की तरह सुरभित होकर घर, समाज और राष्ट्र के आसपास के वातावरण को मधुर बनाना है। मानव, सृष्टि में, जिस दृष्टि से ज्येष्ठ और श्रेष्ठ समझा जाता है, उस दिव्यता का निखार यदि उसके द्वारा नहीं होता है तथा उसके सहवास या सान्निध्य का फल वातावरण को उजागर नहीं बनाता है तो मानना होगा कि वह पूर्ण मानव नहीं है। पूर्ण मानवता के लिए जीवन का दिव्य होना पहली शर्त है और वह अविकल याने निरन्तर स्वाध्याय के द्वारा ही सम्भव है।

जैसे अंगूरी पेय पान करने वालों को मधुर भी लगता है और धीरे-धीरे मन पर एक मीठा गुलाबी नशा भी छोड़ जाता है, वैसे ही अन्तर्मन को शुद्ध भाव से पूर्ण किया जाने वाला स्वाध्याय भी मन को एक अपूर्व मस्ती से भर देता है। उसके हृद् वीणा के तार अलौकिक भावों के झंकार से अपने आपको स्वर लहरी के माधुर्य में ओतप्रोत कर देते हैं। स्वाध्याय का राग जब एक बार रंग पकड़ लेता है तो उससे छुटकारा पाना सम्भव नहीं होता। नशे की तरह स्वाध्याय भी मन को अपने से अलग नहीं होने देता, जिससे कि जीवन में दिव्यता आती तथा मानवता निखर-निखर उठती है।

**स्वाध्याय एक चिन्ताहरण बूँटी :**

जीवन यात्रा में अक्सर ऐसी भी स्थिति आती है कि जब मन उदास और विषण्ण बन जाता है। कुछ भी करने का उत्साह मन में नहीं होता। विषमताओं की उस घड़ी में जबकि चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई देता हो, उद्विग्नता और आकुलता मन को कचोटती हो, सब ओर विघ्नों और विपदाओं का विषम जाल फैला हो, फूल के दर्शन नहीं सर्वत्र शूल ही शूल बिछे हों, अकाल मेघ की तरह मन घुटन और क्षोभ का अनुभव करता हो, तब सब ओर से मन को हटाकर स्वाध्याय की बांसुरी बजाने लग जाइये। टेर ऐसी हो कि आप अपनी याद को भी भूल जांय और स्वाध्याय की मस्ती में तन्मय और बेसुध बन जांय। स्वाध्याय वीणा का स्वर आपके जीवन स्तर के संग में समरस या एकमेक हो जाय। वहां क्या होता है, कुछ भी पता न चले। ऐसी स्थिति बनने पर चिन्ता का अतापता भी नहीं रहेगा। जैसे तूफान में सूखे पत्ते उड़ जाते हैं वैसे स्वाध्याय की आंधी आपके मन की समस्त चिन्ताओं को आपसे दूर कर देगी। कदाचित् आंधी के वेग सहने में आप अपने को असमर्थ समझते हों तो स्वाध्याय को संजीवनी बूँटी की तरह ही धीरे-धीरे घिसकर पीजिये और देखिये कि कैसे चिन्ताएं आपको छोड़कर दूर भाग खड़ी होती हैं। चिन्ताओं का आक्रमण तो तब होता है जब मस्तिष्क में किसी सद् विचार का चिन्तन नहीं चलता हो। सुचिन्तन की घड़ी में चिन्ता का क्या काम ?

**स्वाध्याय एक अलौकिक साधन :**

जप, तप की तरह स्वाध्याय भी एक अलौकिक साधन है। कहा भी है— "न वि अत्थि नवि य होई, सज्झाएण समं तवो कम्मं।" अर्थात् स्वाध्याय के समान नतो कोई तप है और न हो सकता है। क्योंकि "बहुभवे सचियं खलु, सज्झाएण खणो खवेई।" याने स्वाध्याय के द्वारा अनेक भवों के संचित कर्मों को मनुष्य क्षण में नष्ट कर देता है।

ऐसी अलौकिक साधना के लिए साधक को मन को निश्छल और निश्चल बनाये रखना परमावश्यक है। अगर स्वाध्याय के काल में उद्विग्नता और चंचलता से मनःस्थिति शुद्ध नहीं हो तो दिन क्या मास और वर्षों तक स्वाध्याय करने का भी कुछ परिणाम हाथ में आने वाला नहीं है। जो स्वाध्याय को भार समझकर पाठ करते हैं उनके लिए स्वाध्याय भार रूप हो जाता है। और उनकी स्थिति भी किसी भारवाही पशु से अच्छी नहीं होती।

जब तक चित्त में एकाग्रता, निस्पृहता: अनुद्विग्नता और शांति नहीं आयेगी, तब तक स्वाध्याय के नाम पर लगाया गया समय और श्रम सफल नहीं हो सकता। जैसे सर्वथा शान्त जल में आतम प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगता

है, वैसे ही शान्त हृदय में स्वाध्याय की देवमूर्ति दृष्टिगोचर होती है। स्वाध्याय की गहरी अभिरुचि एवं श्रद्धा के बिना शुभ फल प्राप्ति सर्वथा दुश्शक्य है।

प्राचीन काल में गाँव के बाहर किसी निर्जन प्राकृतिक स्थान में गुरुकुल बसाकर गुरुमुख या ग्रंथगत वाणी का जो स्वाध्याय चलता था। "आत्मा एव द्रष्टव्य:, मन्तव्य:, श्रेतव्य: निदिध्यासितव्य:" का जो चिन्तन मनन चलता था, वह तन, मन और वातावरण की विशुद्धता से मन पर गहरी छाप डालने वाला होता था। जिसके लिये—"वसे गुरुकुले निच्चं" की छाप सबके मन पर अंकित थी।

यों भी स्वाध्याय साधना सर्वथा निष्फल नहीं जाती। जैसे रस्सी की रगड़ से कूप के पत्थर घिस जाते हैं, वैसे सतत स्वाध्याय के अभ्यास से विषय, कषाय और मोह का पर्वत टूटता ही है। किन्तु स्थान और मन की शुद्धता की अधिक अपेक्षा रहती है, क्योंकि "तपो हि स्वाध्याय:" स्वाध्याय स्वयं एक तप है और तपाचरण के वास्ते स्थान की तथा साधना की निर्मलता अत्यावश्यक है।

**स्वाध्याय विवेक एवं बुद्धि सापेक्ष्य :**

यों तो जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां बुद्धि और विवेक के बिना काम चलता हो मगर स्वाध्याय के क्षेत्र में बिना इसके कभी काम चलने वाला नहीं है। कुम्हार को जैसे अन्य सब साधन के होते हुए भी मिट्टी का पिण्ड नहीं हो तो वह कुछ भी बनाने में समर्थ नहीं है, वैसे स्वाध्याय को सद्ग्रंथ, सुअवसर और सुसंस्कृत शान्त स्थान के होते हुए भी बुद्धि के बिना सब व्यर्थ है। बुद्धि और विवेक के अभाव में स्वाध्याय का फल क्या निकलेगा? कहा भी है—"यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा-शास्त्रं तस्य करोतिकिम्। लोचनाभ्यांविहीनस्य दर्पणै: किं प्रयोजनम्"। बुद्धि के अभाव में शास्त्र से क्या लाभ? दोनों आंखों से हीन को दर्पण से क्या प्रयोजन अर्थात् प्रज्ञाचक्षु दर्पण में क्या देखेगा?

अतएव स्वाध्याय बुद्धि और विवेक की सत्ता में ही श्रेयस्कर होता है। जो बुद्धि और विवेक रहित होता है, उसका तोता रटन्त किस काम का? ऐसे स्वाध्याय को विडम्बना और छलावा कहें तो कुछ हानि नहीं। विवेक बुद्धि विहीन स्वाध्याय चलनी में पानी निकालने जैसे निरर्थक है। कहा भी है—"जं अन्नाणो कम्मं खवेइ बहु याहिवास कोडिहिं। तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ उसास मित्तेणं।" अर्थात् जिन कलुषों को ज्ञानहीन साधक करोड़ों वर्षों की कठोर साधना के द्वारा नष्ट करता है, उसको ज्ञानी (बुद्धिमान) अपने ज्ञान बल से क्षण भर में नष्ट कर देता है। कहां तो साधना का करोड़ों वर्ष का काल और कहां एक क्षण भर। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्वाध्याय सर्वथा

बुद्धि और विवेक सापेक्ष्य है। इनके साथ ही स्वाध्याय शीघ्र फलदायी होता है, नहीं तो नहीं।

**स्वाध्याय एक अनिवार्य कर्म :**

जीवन यात्रा में भोजन और पानी की तरह स्वाध्याय भी एक अनिवार्य कर्म माना जाता है। क्योंकि सद्ग्रंथ के स्वाध्याय के बिना आँखों के होते हुए भी हमारी गणना अंधों में होती है। जैसे कहा भी है कि—"अनेक संशयोच्छेदि परीक्षार्थस्य दर्शकम्। सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः।" अर्थात् अनेक संशयों, भ्रान्तियों की जड़ काटने वाला और छिपे अर्थ को दिखाने वाला शास्त्र रूप नयन जिसको नहीं है, वास्तत में वह अन्धा ही है और सद्ग्रंथ का बोध स्वाध्याय से सम्भव है। पंच महाव्रतधारी तो साधु है ही किन्तु स्वाध्याय की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा है—"सज्झायरए स भिचरन।" अर्थात् जो स्वाध्याय में अनुरक्त है वह भी साधु है।

स्वाध्याय श्वासोच्छ्वास की तरह एक अतिस्मरणीय महानता और मानवता की थाती है। इसमें ऐसी अलौकिक शक्ति भरी हुई है कि जिसका कोई वर्णन नहीं। "सज्झाए वा....सव्व दुक्ख विमोक्खणो।" याने स्वाध्याय सब दुःखों से मुक्त करने वाला है।

पूर्वकाल से गुरुकुल में ज्ञानार्जन के बाद जाने वाले स्नातकों को विदा के अवसर पर गुरुजनों के द्वारा जो विदाई सन्देश दिये जाते थे उनमें एक यह स्मरणीय सन्देश भी होता था कि—"स्वाध्यान्माप्रमदः" अर्थात् घर जाकर भी तुम्हें स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना है। सोचने की बात है कि सर्व शिक्षा विशारद और संस्कार संस्कृत जन को भी यह स्मरण दिलाया जाता था कि पाण्डित्य के हर्ष में सच्छास्ता पठन-पाठन में अपने को कभी भी प्रमाद में मत डालना।

**स्वाध्याय एक स्वावलम्बन :**

स्वाध्याय से विद्वत्ता बढ़ती और विद्वान् सर्वत्र पूजा जाता है। कहा भी है—"स्वदेशे पूज्यते राजा-विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।"

जीवन के लिए रोटी और सत्-शास्त्र दोनों आवश्यक होते हैं। बल्कि कहना यह ठीक है कि रोटी से भी बढ़कर शास्त्र की आवश्यकता है। क्योंकि रोटी जीवन देती है और शास्त्र रोटी के साथ-साथ जीवन जीने की कला।

जीवन में काम देने वाले व्यावहारिक पुस्तकों का अध्ययन भी स्वाध्याय में वर्जित नहीं है। मगर गन्दी पुस्तकें जो कि विष तुल्य हैं उनका अध्ययन कभी

नहीं करना चाहिये। सदा व्यवहारोपयोग्य अच्छी-अच्छी पुस्तकों का ही उपयोग करना चाहिये। अच्छी पुस्तक की जानकारी के लिये यह पर्याप्त है कि अच्छी पुस्तक वही है जो बड़ी आशा से स्वाध्याय के लिये खोली जाय और यथेष्ट लाभ के बाद बन्द की जाय। प्रायः अधिक विचारने को बाध्य करने वाली पुस्तक ही अधिक लाभकारी होती है। लैला-मजनू और तोता-मैना की कहानियों के लिए न तो मस्तिष्क को कुछ आयाम करना पड़ता है और न उनसे कुछ लाभ।

इस तरह जीवन में स्वाध्याय की आदत डालने से दोनों लोकों में लाभ मिलता है। स्वाध्यायी कहाना कुछ और है और स्वाध्यायी बनना कुछ और। जो शुद्ध हृदय से स्वाध्यायी बनता है तथा शास्त्रों को हृदय से पढ़ता है तो उस काल में उसको उस शास्त्र के रचयिता साक्षात् बातें करते प्रतीत होते हैं। यही सच्ची स्वाध्याय की भूमिका है।

## काल पर विजय

□ श्री राजकुमार जैन

बात महाभारत काल की है। धर्मराज युधिष्ठिर किसी कार्य में व्यस्त थे कि एक भिखारी उनके पास आया। काम में उलझे हुए होने के कारण धर्मराज ने उससे सहज स्वर में कहा—"बाबा, आप कल आयें। जो चाहेंगे, मिल जायेगा।"

भिखारी चला गया। भीम उस समय वहीं मौजूद थे। उन्होंने भी धर्मराज का भिखारी को दिया गया जवाब सुना था। वह उठकर दुन्दुभि बजाने लगा और सेवकों को भी वाद्ययंत्र बजाने को कहा।

धर्मराज ने जब दुन्दुभि और बाजों की आवाज सुनी तो चौंककर भीम की ओर देखा, पूछा—"आज किस खुशी में बाजे बजाये जा रहे हैं?"

"इसलिये कि आपने काल पर विजय पा ली है।" भीम ने उत्तर दिया।

चकित स्वर धर्मराज बोले—"मैंने काल को जीत लिया? किसने कह दिया?"

"महाराज! अभी-अभी आपने भिखारी को कल दान देने के लिए कहा। इसका सीधा सा मतलब है कि कल तक के लिए तो आपने काल पर विजय पा ही ली है"—भीम ने कहा।

धर्मराज यह सुन शर्मिन्दा हुए और उन्होंने फौरन उस भिखारी को वापस बुलाकर भिक्षा दी।

—३४, बन्दा रोड, भवानीमण्डी (राज०)

छह किस्तों में समाप्य धारावाही लेख माला

# भारतीय शाकाहार [२]

□ डॉ ताराचन्द गंगवाल

## मूल आवश्यकताएँ

हमारे जीवन के लिये निम्नलिखित मूल आवश्यकताएँ हैं :—

1. हवा (ऑक्सीजन)
2. ऊर्जा–जिसका मापदण्ड 'कैलोरी' कहलाता है।

भोजन से सम्बन्धित एक कैलोरी, एक लीटर या 1000 मिलीलीटर पानी का तापमान 15° सेंटीग्रेड से 16° से. अर्थात् 1° से. बढ़ाने में सक्षम है। यह कैलोरी शरीर की आवश्यकताओं के लिये भोजन की सामग्री व ऑक्सीजन के संयोग से प्राप्त होती है, जो निम्न प्रकार से मिलती है :—

| | |
|---|---|
| (क) कार्बोहाइड्रेट | 1 ग्राम से 4 कैलोरी |
| (ख) वसा (घी, तेल, चरबी इत्यादि) | 1 ग्राम से 9 कैलोरी |
| (ग) प्रोटीन | 1 ग्राम से 4 कैलोरी |

3. खनिज पदार्थ
4. विटामिन
5. पानी
6. कम आवश्यक वस्तुएँ—मसाले, उत्तेजक पेय-पदार्थ इत्यादि।

### ऊर्जा (कैलोरी) की आवश्यकताएँ

1. आधारी चयापचय दर (Basal Metabolic Rate)—पूर्ण विश्राम की स्थिति में केवल जीवनयापन के लिये (जिससे श्वास, रक्त-प्रवाह इत्यादि कार्य हो सकें):—

यह शरीर के क्षेत्रफल और वायुमण्डल के तापमान पर निर्भर है। इसकी आवश्यकता नींद में 5 प्रतिशत कम रहती है। यह बुखार (ताप) 1° 'एफ' (F) में 1 प्रतिशत और 105° 'एफ' में 50 प्रतिशत अधिक व्यय होती है।

औसत रूप में एक सामान्य वयस्क 24 घण्टे में आधारिक चयापचय के लिये 1700 कैलोरी (70 कैलोरी प्रति घण्टा के हिसाब से) व्यय करता है।

2. एक वयस्क के लिये निम्नांकित कार्य-कलाप हेतु अतिरिक्त कैलोरी का व्यय :—

| | | | प्रति घण्टा |
|---|---|---|---|
| (क) | हल्का काम | — | 75 तक |
| (ख) | साधारण काम | — | 75 से 150 |
| (ग) | भारी काम | — | 105 से 300 |
| (घ) | अत्यधिक भारी काम | — | 300 से ऊपर |
| (ङ) | विविध :— | | |
| | सोने में | — | 0 |
| | बैठने में | — | 15 |
| | खड़े रहने में | — | 20 |
| | कपड़े पहनने-खोलने इत्यादि में | — | 33 |

चलने-फिरने में :—

| | | |
|---|---|---|
| हल्की गति | — | 115 |
| साधारण गति | — | 215 |
| सीढ़ी उतरना | — | 290 |
| सीढ़ी चढ़ना | — | 1000 |

आठ घण्टे के घर के भाँति-भाँति के काम-काज में :—

| | | |
|---|---|---|
| पुरुष | — | 360 |
| नारी | — | 215 |

मानसिक कार्य के लिए कोई विशेष कैलोरी का व्यय नहीं होता। एक वयस्क पुरुष के लिए (साधारण काम-काज) : 2400 प्रतिदिन नारी :—

| | | |
|---|---|---|
| साधारण काम-काज | — | 2200 |
| गर्भवती | — | 2500 |
| बच्चे को दूध पिलाने वाली | — | 2900 |
| बच्चा | — | 1200 से 2200 |

## ऊर्जा (कैलोरी) का स्रोत

### कार्बोहाइड्रेट (Carbohydrate)

कार्बोहाइड्रेट कैलोरी का सबसे सस्ता स्रोत है। इसमें शक्कर, अन्न (अधिक भाग), स्टार्च इत्यादि सम्मिलित हैं। शहद भी इस वर्ग में आता है। ये आसानी से पच कर ग्लूकोज़-शक्कर (Glucose) के रूप में रक्त में पहुँच जाते हैं।

जो प्रकृति से भोजन-सामग्री प्राप्त होती है (जैसे अन्न इत्यादि), वह शुद्ध कार्बोहाइड्रेट नहीं होती। उसमें कई अन्य प्रकार के भोजन के अंश मिश्रित होते हैं, जिनका अनुपात न्यूनाधिक रहता है; जैसे—दालें। यद्यपि इनमें भी कार्बोहाइड्रेट का अंश तो होता ही है, किन्तु प्रोटीन भी होता है, जिसका अनुपात चावल, गेहूं आदि से अधिक होता है।

हमारे देश के निवासियों के लिए तो इस कार्बोहाइड्रेट का भोजन-सामग्री में विशेष महत्त्व है। इससे हमारी दैनिक आवश्यकताओं की 50 से 80 प्रतिशत कैलोरी प्राप्त होती है। जितनी अधिक देश में निर्धनता होगी, उतना ही इस स्रोत का भोजन में अनुपात अधिक होगा और इसी कारण कैलोरी भी इस स्रोत से अधिक प्राप्त होगी।

जितने निर्धन वर्ग के लोग हैं उनको समृद्ध लोगों की तुलना में अन्न सस्ता होने से अत्यधिक मात्रा में भोजन में प्रयोग में लाना पड़ता है, क्योंकि कार्बोहाइड्रेट अंश इसमें अधिक होता है। इससे स्वयमेव काफी मात्रा में प्रोटीन भी प्राप्त हो जाता है, यद्यपि अन्न में प्रोटीन का अनुपात कम ही होता है। इसका परिणाम यह होता है कि निर्धन वर्ग को भी, जिनको अधिक अन्न प्रयोग में लाना पड़ता है, प्रोटीन की कोई विशेष कमी नहीं रह जाती। समृद्ध वर्ग भी प्राय: 40 प्रतिशत कैलोरी तो इस स्रोत से ही प्राप्त करता है।

जब किसी व्यक्ति को केवल अन्न पर ही निर्भर रहना पड़ता है तो स्वाभाविक है कि उसको ऊर्जा के लिए भोजन में अन्न की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। इसके परिणामस्वरूप प्रोटीन भी स्वयमेव उसकी आवश्यकता के अनुरूप मिल ही जाता है। कहावत है कि 'Take care of Calories and Proteins will take care of themselves' अर्थात् यदि कैलोरीज पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाती हैं तो प्राय: प्रोटीन की मात्रा भी स्वयमेव प्राप्त हो ही जावेगी।

कार्बोहाइड्रेट से वसा के पाचन व अंगीकरण में भी सहायता मिलती है। कहा जाता है कि वसा कार्बोहाइड्रेट की लौ या आँच से शरीर में जलती है।

अगर पूर्ण रूप से नहीं जलती है तो धुआँ, ऐसीटोन (acetone) और एसीटो एसैटिक एसिड (aceto acetic acid) के रूप में पैदा होती है, जिसके विषैले प्रभाव से मूर्छा (coma) तक हो सकती है, जो प्राय: मधुमेह के रोग में विशेष तौर पर होती देखी गई है। कार्बोहाइड्रेट भेजे (brain) के कार्य के लिए भी आवश्यक है।

अन्न के कार्बोहाइड्रेट का भाग जब पचता है तो उससे नाना प्रकार की शर्करा बनती है; जैसे—माल्टोज, ग्लूकोज़ (maltose, glucose)। इस तरह की शर्करा में और शुद्ध या निरी चीनी के खाने में अन्तर है—क्योंकि निरी चीनी तो खाने के बाद तुरन्त ही रक्त में अधिक से अधिक मात्रा में प्रवेश कर जाती है जिससे मधुमेह के रोगियों को हानि होती है। इन रोगियों का अत्यधिक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट का खाना अथवा उस मात्रा में जो उनकी सहनशक्ति से अधिक हो, हानिकर ही है। यद्यपि फ्रकटोज़ (fructose) यानी फ्रूटशुगर (fruitsugar) को मधुमेह के रोगी किसी प्रकार की दिक्कत के बगैर भी पचा सकते हैं।

आटा कई प्रकार के रासायनिक प्रयोगों द्वारा अच्छा दीखने के लिये सफेद एवं चमकदार बनाया जाता है। इसी प्रकार चावल भी पालिश किया जाता है (जो पहिले भूरे रंग का होता है), इससे चावल की पौष्टिक शक्ति क्षीण हो जाती है।

वनस्पति तत्त्वों का एक अत्यन्त उपयोगी कार्बोहाइड्रेट अंश सैलुलोज़ (cellulose) है। यद्यपि इससे केवल पशुओं का ही पोषण होता है, क्योंकि उनमें ही इसको पचाने के रस होते हैं- जो मनुष्यों में नहीं होते, फिर भी इससे भोजन का परिमाण बढ़ जाता है, जिससे आंतों को कार्य करने व उनके अन्दर के अंशों को आगे सरकाने की क्षमता बढ़ती है। स्पष्ट ही है इससे क़ब्ज (कोष्ठबद्धता) को लाभ होता है।

अगर अधिक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट का प्रयोग किया जावे तो यह शरीर में ग्लाइकोजन (glycogen) के रूप में संचित हो जाता है और अगर इससे भी अधिक मात्रा में हो तो 58 प्रतिशत तक की मात्रा में वसा में परिवर्तित हो जाता है, जो शरीर में एकत्रित हो जाता है।

कार्बोहाइड्रेट व शक्कर न केवल आँतों के कीटाणुओं पर ही प्रभाव डालती है वरन् इससे रक्त में कोलैस्ट्रोल (cholesterol) की मात्रा भी बढ़ जाती है, जिसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कोलैस्ट्रोल वनस्पति से प्राप्त भोजन में नहीं होता है।

ब्रिटेन इत्यादि विकसित देशों में भी निर्धन वर्ग के लोग, जैसे निम्न मध्यम वर्ग (working class) की महिलायें आवश्यकता से अधिक मात्रा में भोजन के रूप में कार्बोहाइड्रेट का प्रयोग करती हैं। उनको अधिक भोजन करने से मानसिक आनन्द प्राप्त होता है, जिसका भेजे (brain) के एक हाइपोथैलैमस (hypothalamus) नाम के भाग से सम्बन्ध है। वजन तो उनका बढ़ ही जाता है।

मोटापा शरीर में अधिक वजन (तोल) की वह स्थिति कही जाती है जब औसत से 20 प्रतिशत से अधिक वजन हो। 10 प्रतिशत से अधिक होने पर भी मोटापा मान लिया जाता है, यदि यह बढ़ोतरी शरीर में इकट्ठे हुए जल के कारण न हो।

अफ्रीका में महिलाओं के मोटापे का बहुत महत्त्व है। वहाँ वजन लगभग 802 पौंड तक भी होता देखा गया है।

**वसा (Fats) (घी, तेल, चरबी इत्यादि)**

यह वनस्पति व पशु दोनों से प्राप्त होती है। प्राय: वनस्पति से प्राप्त तेल मामूली तापमान (temperature) पर तरल अवस्था में रहते हैं (सिवाय खोपरे के तेल के) पशुओं से प्राप्त वसा अधिक गाढ़ी या जमी हुई रहती है। वनस्पति तेलों में आवश्यक असंतृप्त वसीय अम्लों (essential unsaturated fatty acids) की मात्रा अधिक रहती है, जिनमें से कम से कम तीन स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक हैं—लीनोलिक, लीनोलैनिक व आर्कीडोनिक एसिड (linoleic, linolenic and archidonic acids)। मोम भी इस जमने वाले वर्ग (category) में शामिल है। यद्यपि कोलैस्ट्रोल भी शारीरिक प्रकिया के लिये आवश्यक तो है ही, परन्तु अधिक मात्रा में हानिकारक भी है, क्योंकि इससे मस्तिष्क व दिल के दौरे और रक्त-धमनियों की कठोरता हो सकती है। अरगोस्टैरोल (ergosterol) पर अल्ट्रावाइलेट (ultra-violet) की किरणों के प्रभाव से विटामिन 'डी' पैदा हो जाती है, जो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

• तेल से वनस्पति घी बनाने की प्रक्रिया को हाइड्रोजेनेसिस (hydrogenesis) कहते हैं, इसमें निकल (nickel) धातु का प्रयोग होता है। इस प्रकिया से तेल, घी जैसा जमा हुआ लगने लगता है, परन्तु ऐसी जमी हुई वसा का प्रयोग हानिकारक ही है।

वनस्पति से प्राप्त प्राकृतिक वसा में विटामिन 'ए', 'डी', 'के', जो वसा में घुलनशील हैं, नहीं होते व पशु से प्राप्त वसा में ही होते हैं। इस कारण पशु

से प्राप्त वसा (घी) की भी कुछ मात्रा भोजन में सम्मिलित करना उपयुक्त है, विशेषकर तब जब स्वयं के शरीर में बनने से प्राप्त ये विटामिन अपर्याप्त मात्रा में हों ।

भोजन में प्रोटीन की तरह वसा का भी महंगी होने के कारण निर्धन देशों में प्रयोग कम होता है । इसमें सन्देह नहीं कि वसा से तृप्ति होती है, परन्तु अधिक मात्रा में इसका प्रयोग हानिकारक भी है (विशेषकर पशुओं से प्राप्त वसा का) । इसलिये यह परामर्श है कि वनस्पति व पशुओं से प्राप्त वसा का भोजन में अनुपात 2 : 1 का होना उपयुक्त है । अगर भोजन में वसा की मात्रा पर्याप्त हो तथा साथ-साथ प्रोटीन भी उपयुक्त मात्रा में हो तो मनुष्य को जल्दी भूख नहीं सतायेगी ।

समृद्ध देश भोजन की 40 प्रतिशत तक कैलोरी वसा से प्राप्त करते हैं, जो अधिक है । प्राय: 10 से 20 प्रतिशत तक कैलोरी वसा से प्राप्त करना उपयुक्त है । निर्धन लोग 15 प्रतिशत कैलोरी अथवा इससे भी कम वसा से प्राप्त कर पाते हैं । ब्रिटेन देश के भोजन में 33 प्रतिशत कैलोरी वसा से प्राप्त करने का सुझाव है ।

वनस्पति से प्राप्त तेलों में आवश्यक असंतृप्त वसा के बहुअम्लों (essential poly unsaturated fatty acids) का अनुपात अधिक रहता है; जैसे कि—सूरजमुखी, तिल, बिनौला, सरसों, मूंगफली इत्यादि से प्राप्त तेलों में ।

## प्रोटीन (Proteins)

यह शब्द यूनानी भाषा का है जिसका अर्थ है—पहला स्थान । इससे स्पष्ट है कि भोजन के इस अंश का कितना महत्त्व है । प्रोटीन से ऊर्जा या कैलोरी तो मिलती ही है, लेकिन यह कार्य तो इसका गौण-सा ही है । मुख्य कार्य तो शरीर की वृद्धि (growth) और टूट-फूट सुधारना एवं संवारना (repair) है । इसके अतिरिक्त शारीरिक प्रक्रिया के लिये आवश्यक पदार्थ जैसे हारमोन (hormones), एन्जाइम (enzymes), हीमोग्लोबिन (haemoglobin), प्रतिरक्षी पदार्थ (antibodies or immunoglobulins) इत्यादि के बनाने के लिये प्रोटीन का प्रमुख स्थान है । प्रोटीन कितना आवश्यक है यह इससे भी विदित हो जाता है कि कुछ पौधे अपने भोजन के लिए कीड़े-मकोड़ों को फंसाकर अपने पाचन रस से पचा जाते हैं । उदाहरण के तौर पर ऐसे पौधे नेपन्थीस और ड्रोसेरा (nepenthes & drosera) इत्यादि हैं । ये पौधे मांसाहारी कहलाते हैं ।

प्रोटीन केवल कार्बन, हाइड्रोजन तथा ऑक्सीजन (carbon, hydrogen and oxygen) से ही नहीं बने हैं (जैसे भोजन के और तत्त्व), वरन् इनके

अतिरिक्त इनमें नाइट्रोजन (nitrogen) का मुख्य अंश है। कभी-कभी प्रोटीन में गंधक भी होती है। प्रोटीन का स्कन्ध (molecule) कई अमीनोएसिडों (aminoacids) से बना होता है। प्रकृति में 22 अलग-अलग अमीनोएसिड हैं। इनमें से युवा मनुष्यों के लिये केवल 8 ही आवश्यक हैं। इनके अतिरिक्त 2 और भी छोटी आयु के बच्चों के लिये चाहिए। कई अमोनोएसिड एक दूसरे से जुड़े हुए रहते हैं। कुछ अमीनोएसिडों को तो स्वयं शरीर भी अपने आप निर्माण कर लेता है। परन्तु 8 तो अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि इनको शरीर अपने आप बनाने में अक्षम है।

शरीर अपने लिये विशेष प्रकार का प्रोटीन, आहार के इन आठ अमीनोएसिडों से निर्माण करता है, जिसके लिए ये आठों ही अमीनोएसिड एक साथ प्राप्त होना आवश्यक हैं। अगर इनमें से एक भी कम पड़ जावे तो प्रोटीन अपना मुख्य कार्य (टूट-फूट सुधारने इत्यादि का) निभाने में अक्षम है। ऐसी स्थिति में ये सारे बचे हुए अमीनोएसिड नाइट्रोजनमुक्त (deaminise) कर दिये जाते हैं—जिसका अर्थ है इनके अन्दर के नाइट्रोजन अंश को निकाल फेंकना। शेष भाग केवल ऊर्जा ही प्रदान करता है—जो कार्बोहाइड्रेट व वसा से भी प्राप्त होती है। ऐसी स्थिति में लाभदायक एवं महंगा प्रोटीन बेकार बर्बाद होता है। अपने शरीर के लिये जो पदार्थ भोजन के रूप में मिलता है उसमें के प्रोटीन में से विशेष प्रोटीन 'डी. एन. ए.' जो कोशिकाओं के न्यूक्लियस (cell nucleus) और 'आर. एन. ए.' जो कोशिकाओं के प्रोटो प्लाज्म (cell cytoplasm) के माध्यम से शरीर स्वयं ही अपने लिए बनाता रहता है। इसकी रचना में आनुवंशिक नियम (genetic code) का भी योगदान है। शरीर में प्रोटीन का बनना और टूट-फूट की मरम्मत निरन्तर चलती रहती है। (जलने पर, चोट लगने पर, ऑपरेशन के बाद व मधुमेह इत्यादि में टूट-फूट अधिक होती है)।

• प्रोटीन प्रत्येक शरीर में अपने ही विशेष प्रकार का होता है। इसका अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि अगर एक कुत्ते को दूसरे कुत्ते का मांस खिलाया जावे तो भी मांस खाने वाला कुत्ता अपनी शारीरिक प्रक्रिया द्वारा खाये हुये मांस को पहिले तो साधारण मांस की तरह पचावेगा और फिर अपने विशेष प्रकार का मांस (प्रोटीन) अपने शरीर के लिये बनावेगा। इस प्रोटीन की मात्रा भी साधारण आवश्यकता जैसी ही होगी न कि अपनी जाति (species) का मांस होने से कुछ कम। दूसरे कुत्ते का मांस होने से खाने वाले कुत्ते के शरीर में माँस सीधा न तो एकत्रित हो सकता है और न ही सीधा उपयोग में लिया जा सकता है।

दूध, अण्डे, माँस के प्रोटीन आवश्यक अमीनोएसिडों से परिपूर्ण हैं, परन्तु कुछ प्रोटीन जैसे जैलेटिन (gelatine) अथवा ज़ेन (zein) में कुछ प्रकार के अमीनोएसिड नहीं हैं। जैलेटिन चमड़े (पशु की खाल), कार्टीलेज (cartilage), हड्डी, सींग, खुर इत्यादि से बनाई जाती है और इसमें उन 8 अमीनोएसिडों में से ट्रिप्टोफेन (tryptophan) और सिस्टीन (cystine) की कमी रहती है। जैन (zein) मक्का का प्रोटीन है। उसमें ट्रिप्टोफेन की कमी है।

**प्रोटीन की मात्रा की आवश्यकता**

प्रोटीन भी वसा की तरह ही महंगे होते हैं। इसलिये विकसित देशों के भोजन में इनकी मात्रा अविकसित देशों की अपेक्षा अधिक होती है। धनवान देश 20 से 25 प्रतिशत कैलोरी भोजन के प्रोटीन से प्राप्त करते हैं। वास्तविक आवश्यकता की इससे कम में भी पूर्ति हो सकती है। कितनी वास्तविक आवश्यकता है—इसका निर्णय नाइट्रोजन के संतुलन से लगाया जाता है। जितना भोजन में नाइट्रोजन का अंश हो, उतना ही नाइट्रोजन शरीर में से निष्कासित होना चाहिए, जो पेशाब, पाखाना व अन्य स्राव (discharges) के माध्यम से होता है। कम से कम 7 प्रतिशत कैलोरी तक ही वयस्क के लिए प्रोटीन के रूप में मिलने पर पर्याप्त हो सकती है। इससे अधिक प्रोटीन भोजन में प्रयोग करना अनावश्यक व्यय समझना चाहिए, क्योंकि जो अंश अनावश्यक है, वह नाइट्रोजनमुक्त अथवा डिअमीनाइज्ड (deaminised) होकर केवल ऊर्जा ही प्रदान करता है। तब भी यह परामर्श है कि 10 से 20 प्रतिशत कैलोरी प्रोटीन के माध्यम से मिल जावे तो सुरक्षा अधिक रहे। इसका तात्पर्य है कि वयस्क को अपने तोल के हिसाब से एक ग्राम प्रोटीन प्रति किलोग्राम पर्याप्त होगा। बच्चों को प्रोटीन की अधिक मात्रा की आवश्यकता है, क्योंकि उनका तो विकास होना है। उनके लिये 5 वर्ष की आयु तक 2 ग्राम प्रति किलोग्राम तोल के हिसाब से भोजन में होना उचित है। गर्भवती व दूध पिलाने वाली महिलाओं को तो स्पष्ट ही है कि वयस्क पुरुष की तुलना में अधिक प्रोटीन की आवश्यकता होती है।

आठ आवश्यक अमीनोएसिड व उनकी भोजन में प्रतिदिन की आवश्यक मात्रा मि०ग्रा०/कि०ग्रा०/दिन अगले पृष्ठ पर तालिका में दी गई है।

शिशु व बच्चों के लिये हिस्टीडीन (histidine) नाम का अमीनोएसिड 16 कि०ग्रा० प्रति किलोग्राम तोल के अनुपात से आवश्यक है। इसके अतिरिक्त एक और अमीनोएसिड आरगीनीन (arganine) भी अगर भोजन में न हो तो बच्चा कम बढ़ता है।

नाइट्रोजन की मात्रा प्रोटीन में 14 से 20 प्रतिशत होती है(प्राय: 16 प्रतिशत)। यदि उचित मात्रा में कई वनस्पतिक स्रोत से प्राप्त प्रोटीन का सम्मिश्रण हो

| | पुरुष | स्त्री | |
|---|---|---|---|
| 1. आइसो-ल्यूसीन (Iso-leucine) | 10.4 | 5.4 | |
| 2. ल्यूसीन (Leucine) | 9.9 | 7.1 | |
| 3. लाईसीन (दाल में विशेष) (Lysin–rich in *dal*) | 8.8 | 3.3 | (अन्न में कम) (less in cereals) |
| 4. मिथियोनीन (सिस्टीन की मौजूदगी में) (Methionine-in presence of cystine) | — | 3.9 | |
| 5. फिनिल एलैनीन (टाइरोसिन की मौजूदगी में) (Phenyl-alanine–in presence of tyrosine) | 4.3 | 3.1 | |
| 6. थ्रियोनिन (दाल में विशेष) (Threonin–rich in *dal*) | 6.5 | 3.5 | (अन्न में कम) (less in cereals) |
| 7. ट्रिप्टौफेन (Tryptophan) | 2.9 | 2.1 | |
| 8. वैलीन (Valine) | 8.8 | 9.2 | |

**नोट** :–दालें व चावल पौष्टिकता में एक दूसरे के सहायक हैं।

तो सब ग्रावश्यक अमीनोएसिड प्राप्त हो जाते हैं (दाल, ग्रन्न–पूरा भाग या मींगी का मिश्रण पर्याप्त है)। वयस्कों के लिये अन्न व दाल दोनों का भोजन में एक साथ होना पोषण के लिये आवश्यक है। मक्का व सूखे दलहन के बीज यदि अलग-ग्रलग उपयोग में लावें तो असन्तुलित हैं।। अतः इनका प्रयोग भी एक साथ ही करना चाहिए।

• ग्रत्यधिक गरम करने से कुछ ग्रमीनोएसिडों का बन्धन बहुत ही कड़ा (सख्त) हो जाता है, जो ग्रासानी से नहीं पचता।

शरीर में प्रोटीन का भण्डारण नहीं होता।

• वनस्पतिक प्रोटीन का पर्याप्त सम्मिश्रण पशुग्रों के प्रोटीन की तरह 'प्रथम श्रेणी' का ही है। कुछ वनस्पतिक प्रोटीन जैसे चावल का प्रोटीन–पशुग्रों के प्रोटीन से कुछ भी हीन श्रेणी का नहीं है।

मक्का में ट्रिप्टोफेन (tryptophan) नहीं है। गेहूं में लाइसोन (lysine) नहीं है। गौ-माँस (beef) में सिस्टीनीन (cystenine) व मिथियोनीन (methionine) है, जो पेड़-पौधों में भी है।

प्रोटीन मूंगफली से भी प्राप्त हो सकता है एवम् बादाम, काजू, अखरोट इत्यादि से एवम् वसा रहित दुग्ध-चूर्ण से भी।

यदि वसा रहित दुग्ध चूर्ण न मिले तो वसा रहित तरल दूध भी उपयोग में ले सकते हैं। एक औंस वसा रहित दुग्ध-चूर्ण प्रायः 10 औंस वसा रहित दूध के बराबर है। अगर वसा रहित दूध भी अलभ्य हो तो वह भी साधारण दूध को उबाल कर 2 घण्टे (सम्भव हो तो रेफ्रीजरेटर में) रखकर प्राप्त किया जा सकता है। ऊपर से 1/3 भाग धीरे से नितारने से सारी वसा हल्की होने के कारण ऊपर के हिस्से में से नितारने पर अलग की जा सकती है। इस वसा रहित दूध को नींबू, छाछ अथवा छैने के पानी (whey) से फाड़ने से प्रथम श्रेणी का पशु-स्रोत का प्रोटीन उपलब्ध हो जाता है जिसमें सारे आवश्यक अमीनोएसिड मौजूद हैं। यह बाजार के बन्द डिब्बों में उपलब्ध प्रोटीन से अत्यधिक सस्ता और अच्छा है, क्योंकि उनमें प्रोटीन का अंश कम है और जो है वह भी हल्के किस्म का है।

वसा रहित दूध की तरह छाछ में भी सारे आवश्यक अमीनोएसिड मौजूद हैं। रसगुल्ला पशु से प्राप्त प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। यदि चीनी नहीं चाहिए तो चाशनी निचोड़ दी जा सकती है।

कुछ वनस्पतिक पौधे (दलहन के प्रकार के) नाइट्रोजन संग्रह करने वाले कीटाणुओं से सम्बन्धित होते हैं जो उनकी जड़ में रहकर प्रोटीन प्राप्त करने में सहायक होते हैं। इसलिये दालों में प्रोटीन अधिक होता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि प्रोटीन मनुष्यों के भोजन का अत्यन्त आवश्यक अंश है। फिर भी इसकी प्राप्ति के लिए पशुओं के स्रोत की कतई आवश्यकता नहीं है विशेषकर–जब दुग्धयुक्त शाकाहार हो, क्योंकि दुग्ध में निःसन्देह कोई हिंसा नहीं होती और इस कारण यह शाकाहार जैसा ही है।

प्रोटीन की किस्म व मात्रा – भोजन के सम्बन्ध में विचार का विषय है। "वनस्पतिक प्रोटीन के उचित मिश्रण से पशुओं से प्राप्त ऊंची किस्म के प्रोटीन के बराबर ही यह सम्मिश्रण पोषण की क्षमता रखता है। भोजन में अन्न व दाल के सम्मिश्रण से सारे संसार में लोगों की तन्दुरुस्ती अत्यन्त बढ़िया रह रही है और एक प्रकार के शाकाहार का दूसरे प्रकार के शाकाहार पर स्वस्थ प्रभाव सर्वमान्य है।"

दिन में दो बार दाल अथवा गिरी (nuts) की मात्रा भोजन में माँस के स्थान पर लेने का सुझाव है। [क्रमशः]

—१, अस्पताल मार्ग, जयपुर–४

**पंचशती के अवसर पर विशेष लेख :**

# नवजागरण के सन्देशवाहक मार्टिन लूथर

□ डॉ० भँवर सुराणा
विशेष संवाददाता
हिन्दुस्तान, जयपुर

[मध्य युग में हमारे देश में धार्मिक जड़ता, विकृति व बाह्य आडम्बरों के विरुद्ध वीर लोंकाशाह ने क्रान्ति की थी। कुछ इसी प्रकार की क्रान्ति उस समय जर्मनी में मार्टिन लूथर ने की। पाठकों की सामान्य जानकारी के लिये मार्टिन लूथर की पंचशती के अवसर पर अनुभवी पत्रकार विद्वान् डॉ० भँवर सुराणा का यह विशेष लेख यहां प्रकाशित किया जा रहा है। —**सम्पादक**]

पाँच सौ वर्ष पूर्व जर्मनी के सेक्सोनी प्रदेश के ऐसलबेन कस्बे में मार्टिन लूथर जन्मे थे। धार्मिक प्रवृत्ति के माता-पिता जीवन और व्यवहार में भी भले थे। उन्होंने कड़ी मेहनत कर, पेट काट-काट कर मार्टिन लूथर का पालन-पोषण किया और तब ही अठारह वर्ष की आयु में वे एवफर्ट विश्वविद्यालय में क़ानून की पढ़ाई के लिये प्रविष्ट हो सके।

तीन वर्ष के कठोर परिश्रम तथा निरन्तर अध्ययन से उन्होंने कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इस अध्ययनकाल में ही स्वर्ग और नरक की अनेक ग्रंथों में विशद व्याख्याओं से प्रभावित होकर मार्टिन लूथर कानून छोड़कर धर्मशास्त्र की ओर आकर्षित हुए।

मार्टिन लूथर ने माता-पिता को बिना बताये ही विश्वविद्यालय त्याग दिया और संत अगस्तस की परम्परावाले धार्मिक सम्प्रदाय में प्रविष्ट हो गये। इस सम्प्रदाय में आकर मार्टिन लूथर ने जीव, जगत, आत्मा, परमात्मा, लोक, परलोक, तप, संयम तथा स्वयंपीड़ा आदि का अध्ययन एवं अनुभव किया।

इसी अध्ययन का परिणाम यह हुआ कि उनका मृत्यु व नरक से भय कम हो गया।

धर्मशास्त्रों तथा कला के अध्ययन ने मार्टिन लूथर को एक नई दिशा दी। १५०७ में उनको संत अगस्तस सम्प्रदाय में विधिवत पादरी अभिषेकित किया गया। उनके उपदेशों में मानवीय संवेदना और श्रेष्ठ जीवन की ओर उन्मुख होने के आदर्श प्रमुख रूप से उभर कर आते थे। उनकी सहज सरल भाषा, शैली और स्पष्टोक्तियों से जन समुदाय उस गिरजाघर की ओर स्वतः आकर्षित हुआ।

## प्राध्यापक

एक वर्ष बाद ही, १५०८ ई० में वे (मार्टिन लूथर) विटनबर्ग के नव-स्थापित विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए। विश्वविद्यालय के गिरजाघर में भी वे प्रवचन करने लगे। एक प्राध्यापक व एक उपदेशक के रूप में उनकी प्रतिभा की ख्याति सारे यूरोप में फैलने लगी। उनको सुनने के लिये सैंकड़ों लोग एकत्रित होने लगे। परिणाम यह हुआ कि विटनबर्ग का नवस्थापित विश्वविद्यालय सभी स्थानों पर सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा और मार्टिन लूथर के अधिकारी-सहयोगी प्रसन्नता से उनका सम्मान करने लगे।

## पवित्र स्थलों की ओर

उनकी श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास व लगन के कारण १५११ ई० में मार्टिन लूथर को अधिक अध्ययन व ज्ञान प्राप्ति के लिये रोम भेजा गया। उन्होंने पोप के दरबार तथा वहाँ की स्थितियों का बहुत बारीकी से अध्ययन किया। धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर फैले व फैलाये गये अन्धविश्वास, कर्मकांड, धांधलियों और कुरूढ़ियों ने उनके कोमल मन को झकझोर दिया। उनके चिन्तन का प्रवाह तीव्र होना स्वाभाविक था। साल भर की पवित्र स्थलों की यात्रा के बाद हताश, निराश, दुःखो होकर मार्टिन लूथर वापस विटनबर्ग लौटे।

सारे धर्म संघ के सुधार के सम्बन्ध में उनके मन में विचार उठने लगे। अपने अध्ययन-अध्यापन में रत मार्टिन लूथर को "डाक्टर आफ डिविनिटी" की उपाधि प्रदान की गई। उन्होंने विशेष रूप से बाइबल व संत अगस्तस के उपदेशों का गंभीर अध्ययन पूरा किया।

## धर्मक्रांति का श्रीगणेश

सन् १५१७ ई० मार्टिन लूथर के जीवन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ का वर्ष था। पोप के शिष्य अपने व्यय के लिये, नये गिरजाघरों के निर्माण के लिये,

अपने राजसी ठाठबाट के लिये नाना प्रकार से धन एकत्रित करने लगे। दान के बदले स्वर्ग के परवाने बांटने और रुपयों के बदले पाप को क्षमा करने की रसीदें दी जाने लगीं। यह सब पापाचार मार्टिन लूथर के मन को सहन नहीं हुआ। उनके अनुसार यह सब बाइबल तथा सन्तों के उपदेशों के विपरीत आचरण था।

नवम्बर मास में एक दिन मार्टिन लूथर ने विटनबर्ग वि० वि० के ही गिरजाघर पर अपने ९५ सिद्धान्त लिख कर टांगे और यही धर्मक्रान्ति का श्री गणेश था। उनके ये सिद्धान्त बाइबल व अन्य धर्म ग्रंथों की कसौटी पर खरे थे। एक आलोक था वह जिससे अब तक दिग् दिगन्त भू प्रकाशित है।

पोप व उसके धर्म संघ के प्रति उनकी मान्यताएं एक खुला विद्रोह थी। वह एक इतना भयंकर विस्फोट था जिसने धर्म के नाम पर पाखण्ड की जड़ें हिला दीं। मार्टिन लूथर ने पोप तथा उनके अधिकारियों से कहा कि वे ढोंग, अन्धविश्वास, पापाचार की निन्दा करें, भर्त्सना करें तथा सभी कुप्रथाओं को धर्मविरोधी घोषित करें पर उनके इस विनम्र निवेदन पर उनके कानों पर जूं तक नहीं रेंगी। तब उन्होंने यह कदम उठाया। तब भी वे धर्म संघ से अलग नहीं हुए। हाँ, एक नई व्याख्या उन्होंने बाइबल व धर्मशास्त्रों को अवश्य दी।

लोगों पर उनके विचारों का प्रभाव पड़ने लगा। स्वयं लोगों ने पादरियों के कदाचार का विरोध करना आरम्भ किया, उनका अपमान होने लगा, दान देना बन्द होने लगा तब वे पादरी लोग चेते पर तब तक बहुत पानी सागर तक पहुँच गया था।

## शास्त्रार्थ व बहिष्कार

पोप व पादरियों ने जून १५१९ में लाइपजिग में डॉ० जान मयक इक को अपने प्रतिनिधि के रूप में मार्टिन लूथर से शास्त्रार्थ करने भेजा। वे वाद-विवाद में निरन्तर तर्क की, ज्ञान की कसौटी पर हारते गये पर धर्मसंघ की सत्ता उनके साथ थी। पादरियों के सर्वोच्च सत्तामंडल ने तभी मार्टिन लूथर को धर्मसंघ से निकाल देने का निश्चय कर निर्णय घोषित कर दिया।

## अडिग निश्चय : अहिंसक प्रतिरोध

धर्मसंघ से बहिष्कार की घोषणा से भी वे तनिक भी विचलित नहीं हुए, निर्भय और दृढ़ निश्चय से वे अपनी बात पर अडिग रहे। अपनी मान्यताओं पर उनका इतना दृढ़ विश्वास था कि उन्होंने पोप की धर्म संघ से उन्हें निकालने वाली आज्ञा के आदेशों की विटनबर्ग के बाजार में होली जला दी। उन्होंने न

अपने शरीर की चिन्ता की और न अपने स्वास्थ्य की। सुधार के समवेत युद्ध का शंख बजाकर उन्होंने धर्मसंघ को झकझोर दिया। शास्त्रसम्मत साहित्य व प्रचार सामग्री से यह धर्मयुद्ध विस्तृत होता गया।

मार्टिन लूथर ने तीन मोर्चों पर साहित्य की रचना की। उनके तीन प्रमुख आलेखों ने जनता की आंखें खोल दीं। जर्मन राष्ट्र के भद्रजनों के नाम, ईसाइयों की स्वतन्त्रता पर बेबीलोनी शिकंजा व गिरजाघरों पर बेबीलोनी प्रभुत्व, ये तीनों आलेख उनकी ज्वालामयी लेखनी से प्रसूत अद्‌भुत रचनाएं हैं जिन्होंने शताब्दियों से उनके संदेश को आज तक जीवित रखा है। सारी जर्मनी ही नहीं, सारे संसार के ईसाई जगत् में यह एक जलजला था, एक क्रांति का श्रीगणेश था।

## प्राणों की बाजी

धर्मसत्ता व राजसत्ता ने मिलकर मार्टिन लूथर के विरुद्ध षडयन्त्र रचना आरम्भ किया। उन पर धर्मद्रोह, राजद्रोह, जनता को गुमराह करने, भ्रमित करने के आरोप लगाये गये। मार्टिन लूथर से कहा गया कि वे वार्मस् में संसद के समक्ष उपस्थित हों और अपना स्पष्टीकरण दें। लूथर भी धर्मान्ध राज-दरबारियों व सामन्तों के षडयन्त्रों से अनजान न थे पर वे निर्भय होकर, अपने सिद्धान्तों के लिये प्राणों की बाजी लगाने को तत्कालीन सम्राट् चार्ल्स पंचम व उसके सामन्तों के बीच पहुंचे। वे अपनी मान्यताओं के लिये अपना बलिदान तक कर देने की तैयारी कर गये थे। उनसे वहां अपनी मान्यताएँ बदलने व घोषणाएँ वापस लेने के लिए बार-बार कहा गया पर न वे झुकने वाले थे और न वे झुके।

मार्टिन लूथर ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा, "जब तक मैं धर्मशास्त्रों और तर्क से पूरी तरह आश्वस्त नहीं हो जाऊँ तब तक मैं अपनी घोषित मान्यताओं से पीछे नहीं हट सकता और न मैं उनको वापस ही ले सकता हूं क्योंकि मेरी आत्मा ईश्वर के शब्दों की चेरी है। यह न तो उचित ही है और न सुरक्षित ही कि मैं अपनी आत्मा के विरुद्ध जाऊँ। यहाँ मैं स्वयं अपना निर्णायक हूं और मैं इस मामले में अन्य प्रकार से कुछ भी नहीं कर सकता। इसलिये ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह मेरी सहायता करे। आमीन।"

## हड़कम्प

उनकी इस घोषणा से सारी संसद में हड़कम्प मच गया। सम्राट् व संसद ने उनके निश्चय से नहीं डिगने के निर्णय को बड़ी गम्भीरता से लिया। संसद व सम्राट् दोनों ही मार्टिन लूथर के पोप द्वारा बहिष्कार की घोषणा का अनु-

मोदन करते हुए उन पर देश से बाहर नहीं जाने का प्रतिबन्ध लगा दिया। उनकी लोकप्रियता के कारण संसद व सम्राट् मार्टिन लूथर को जान हेस्स की तरह जलाकर मारने से डरते थे।

उन दरबारियों में कुछ लोग भले भी थे। सेक्सोनी के सामन्त फ्रेडरिक के मन में मार्टिन लूथर के प्रति स्नेह और सम्मान छिपा था। उन्होंने मार्टिन लूथर को अपने वार्टबर्ग दुर्ग में रखने का निर्णय किया तथा एक वर्ष तक उनको वहाँ रख कर पूरी तरह से देखभाल की।

वार्टबर्ग दुर्ग में रह कर लूथर ने बाइबल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया, अपनी मान्यताओं को शास्त्रोक्त प्रमाणों से पुष्ट करते हुए साहित्य की रचना की और निर्भीकता से अपनी मान्यताओं को प्रतिपादित करते रहे। जर्मन भाषा के संस्कारित स्वरूप के वे "पाणिनी" थे। उन्होंने न अपने प्राणों की चिन्ता की और न परिवार की।

### संघर्ष आरम्भ

जर्मनी उस समय इतिहास के संक्रमण काल से गुजर रहा था। चारों ओर संघर्ष का श्रीगणेश हो गया था। धार्मिक मान्यताओं को लेकर कैथोलिकों व लूथरवादियों में संघर्ष होना तो अवश्यम्भावी था ही। राजनीतिक झगड़े भी जम कर सामने आ रहे थे। विटनबर्ग में साम्प्रदायिक संघर्ष की सर्वनाशी ज्वाला सब कुछ लीलने को थी तभी लूथर वार्टबर्ग से वहाँ पहुंचे व उन्होंने शान्ति स्थापना की।

लगभग उस समय ही जर्मनी में राष्ट्रीय स्वाधीनता का संघर्ष भी आरंभ हो गया। पोप व स्पेनी साम्राज्यवाद के विरुद्ध लोग उलरूष वान हटन आदि के नेतृत्व में उठ खड़े हुए। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक रूपान्तरण की एक नई धारा जर्मनी में बहने लगी। सर्वहारा किसान सदियों से सामन्तों, जागीरदारों के अत्याचारों व उत्पीड़न के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। शोषण के विरुद्ध प्रत्येक क्षेत्र में जिहाद छिड़ गया।

मार्टिन लूथर ने स्वयं भी यह कल्पना नहीं की थी कि उनका धर्म सुधार आन्दोलन सारे देश को इतना आलोड़ित कर देगा और उसके परिणाम इतनी तेजी से चारों ओर दिखाई पड़ेंगे।

१५२२ से १५२९ तक जर्मनी में न राजा था, न राज्यपरिषदें ही सक्रिय रहीं। लूथर के विरुद्ध लगाये गये प्रतिबन्धों का पालन कौन कराता? इसी बीच चार्ल्स व पोप में झगड़ा हो गया। चार्ल्स की सेनाएँ रोम में घुस गईं और

क्लिमेंट सप्तम को कैद कर लिया गया । तुर्क हंगरी में घुस गये थे और वे किसी भी क्षण जर्मनी में घुस सकते थे । फ्रांस में लड़ाई जारी थी । सारे देश में अराजकता का बोलबाला था ।

## समझौता

देश के तत्कालीन नेतृत्व के समक्ष और कोई चारा ही नहीं था कि वे मार्टिन लूथर व लूथरवादियों से समझौता करते । जून १५२६ में स्पेइयर की प्रतिनिधि सभा ने बीच का मध्यम मार्ग अपनाया तथा लूथर की अनेक घोषणाएँ स्वीकार कीं । इन घोषणाओं में जर्मनी के विभिन्न प्रान्तों के शासकों को यह स्वतन्त्रता दी गई कि वे जैसा चाहें उस धर्म स्वरूप को स्वीकार करें । चाहें तो वे रूढ़िवादी कैथोलिक स्वरूप को अंगीकार करें, चाहे वे लूथर के अनुयायी बनें । इस घोषणा का व्यापक प्रभाव पड़ा ।

अनेक प्रदेशों के शासकों ने लूथर को अपना त्राता माना और सेक्सोनी, ब्रांडनबर्ग, हेस्स, ब्रुन्सविक तथा अनेक नगरों व छोटे राज्यों ने लूथरवाद की उपयोगिता स्वीकार की । इन राज्यों में पुरातनपंथी पादरी संस्थाओं का रूपान्तरण किया गया और लूथरवादी गिरजों की स्थापना की गई । रूढ़िवाद के विरुद्ध एक सतत संघर्ष-जिहाद छिड़ गया ।

पुरातनपंथी पादरी व गिरजाघरों के अनुयायी भी कम नहीं थे । उन्होंने प्रत्येक स्तर पर लूथरवादियों का विरोध करना आरम्भ कर दिया । बवेरिया उनका खास अड्डा था । वे लोग वहाँ अवसर की ताक में थे । अगस्त १५२९ में उनके षडयन्त्र फिर रंग लाये । स्पेइयर में दूसरी प्रतिनिधि सभा में बहुमत बना कर पहली प्रतिनिधि सभा के निर्णय उन्होंने उलट दिये । लूथर के १५२१ के बहिष्कार के निर्णय को वे फिर लागू करना चाहते थे । सेक्सोनी के शासक जान फ्रेडरिक व हेस्स के शासक फिलिप ने इन पुरातनपथियों का जम कर विरोध किया ।

१५३० में चार्ल्स जर्मनी में आया और आग्सबर्ग में पुन: एक प्रतिनिधि सभा उसने बुलाई । लूथरवादियों ने शांति की कामना करते हुए एक घोषणा-पत्र तैयार किया पर पोंगापंथी पुरातनवादी चाहते थे कि लूथर के अनुयायी सम्पूर्ण रूप से समर्पण कर दें । लूथरवादियों ने जमकर षडयन्त्रों का प्रतिरोध किया पर शोषक सत्ता में बैठे साम्राज्यवादियों ने लूथर की शिक्षा के प्रसार पर पाबंदी लगाने की घोषणा कर दी ।

## चुनौती स्वीकार

लूथर के अनुयायियों ने विवश होकर पुरातनपंथियों का मुकाबला करने

के लिये चुनौती स्वीकार करते हुए एक संगठन की विधिवत स्थापना की। फिलिप व फ्रेडरिक के सेनापतित्व में एक सशस्त्र सेना गठित की गई।

सशस्त्र संग्राम की तैयारी होने लगी और लूथर के अनुयायी शासकों तथा जनता के लोगों ने सुदृढ़ हरावल का निर्माण किया। देश अन्तर्रविरोधमयी गृहयुद्ध की ज्वाला में धधक उठा। दूसरे देशों की गिद्ध दृष्टि भी जर्मनी पर लगी हुई थी।

लूथर का धर्मसुधार आन्दोलन अपनी सीमाएँ लांघ कर राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्रों में भी छा गया। उत्तरी जर्मनी के सारे प्रांत व प्रांतीय शासक लूथरवादी हो गये थे। वे सब मिल कर एक चट्टान की तरह तुर्क आक्रमण, फ्रांसिस प्रथम से युद्ध आदि में अडिग खड़े रहे। लूथर को जनजागरण का जयघोष करने वाला मसीहा माना गया। उनका उदारमना, क्रांतिद्रष्टा, शिक्षक और आध्यात्मिक नेता का रूप लोकप्रियता के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।

कैथोलिक पुरातनपंथियों के पैने आक्रमणों का पग-पग पर लूथरवादियों को सामना करना पड़ा। संघर्ष की कसौटी पर खरे उतरे लूथरवादियों की संख्या बढ़ने लगी। जितना अधिक उनका विरोध होता, उतना ही अधिक दृढ़ता से वे उसका प्रतिरोध करते। सम्राट् चार्ल्स पादरियों की परिषद् के आयोजन का उपक्रम करते ही रह गये। पोप पाल तृतीय ने उसकी एक भी न सुनी। पुरातन पंथियों के चंगुल में फंसा पोप किसी भी मूल्य पर लूथर के अनुयायियों के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करना चाहता था। न वह कोई सुविधा ही देना चाहता था और न कोई अधिकार ही।

लूथरवादी भी कड़ा रुख अपनाने लगे। उन्होंने पोप की आज्ञा मानने तथा पुरातनपंथियों को मान्यता देने से इन्कार कर दिया। चार्ल्स व फ्रांसिस के बीच युद्ध जारी रहा और १५४४ तक वे उसमें ही उलझे रहे। बाद में चार्ल्स ने जर्मनी की समस्याओं पर ध्यान देना आरम्भ किया। उसने लूथरवादियों पर आक्रमण करना आरम्भ किया। दमन, उत्पीड़न और अत्याचारों का एक दौर चल पड़ा।

इसी बीच मार्टिन लूथर का १८ फरवरी, १५४६ को अपने जन्म स्थान ऐसलबेन कस्बे में निधन हो गया।

निस्सन्देह, मार्टिन लूथर के निधन से उनके अनुयायियों को जबरदस्त धक्का लगना ही था पर उन्होंने अधिक दृढ़ता से उनके बताये मार्ग पर चलने का निश्चय किया। चार्ल्स ने फ्रैडरिक को मुहलत के निर्णायक युद्ध में बंदी बनाया। फिलिप भी घेर लिया गया। दोनों को आजीवन कारावास मिलना ही था। उनके क्षेत्रों की मनमाने ढंग से बंदरबांट की गई। उनकी सम्पत्ति नष्ट

कर दी गई, परिजनों को पीड़ित किया गया। संघर्ष फिर भी जारी रहा और १५४८ में प्रतिनिधि सभा को लूथरवादियों का अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ा। उनको कुछ अधिकार भी मिले, अपनी मान्यता के अनुसार पूजा करना, पादरियों का विवाह करना, उपदेश देने की आजादी भी उनमें थे। चार-पाँच वर्ष जर्मनी में शांति रही। इसी बीच पोप पाल तृतीय मर गये और चार्ल्स अपनी जान बचाने भाग निकला। स्थितियाँ बदतर होती गईं तथा अगस्त १५५२ में फ्रेडरिक व फिलिप को जेल से मुक्त कर लूथरवादियों को सम्मान दिया गया। पर वह संघर्ष का अंत न था।

लगभग तीन दशक तक जारी इस संघर्ष में सितम्बर १५५५ में एक ठहराव आया। आग्सबर्ग शान्ति समझौते से शासकों को अपनी धार्मिक प्रतिबद्धता की घोषणा का अधिकार मिला। सम्पत्ति, सम्प्रदाय परिवर्तन के नियम निश्चित किये गये व केन्द्रीय शासक परिषद् में लूथरवादियों को पुरातन-पंथियों के बराबर प्रतिनिधित्व मिला। तब से अब तक मामले यों ही उलझते रहे, सुलगते रहे, सुलझते रहे।

—दैनिक हिन्दुस्तान
डी-४१, पत्रकार कॉलोनी
जयपुर—३०२ ००४

## सत्य

□ डॉ० सियाराम सक्सेना 'प्रवर'

सत्य है दिव्य, सत्य है भव्य।
सत्य की लीला पल-पल नव्य।
सत्य है दिव्य, सत्य है भव्य ॥१॥

सत्य की सप्त भंगियाँ।
बोध की तथ्य दीप्तियाँ।
सत्य है श्रेय, सत्य है चेय।
सत्य ही हितकर सम्यक् श्रव्य।
सत्य है दिव्य, सत्य है भव्य ॥२॥

सत्य ही परम तत्त्व है।
सत्य ही परम सत्त्व है।
सत्य है श्रेय, सत्य अभिप्रेय।
सत्य सम्यग्दर्शन प्राप्तव्य।
सत्य है दिव्य, सत्य है भव्य ॥३॥

सत्य ही परंब्रह्म है।
अहिंसा का प्रक्रम है।
सत्य है ध्येय, सत्य है गेय।
सत्य ही सम्यग्-आचरितव्य।
सत्य है दिव्य, सत्य है भव्य ॥४॥

—प्राचार्य, बिड़ला कॉलेज, भवानीमंडी
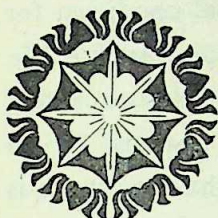
# How to enjoy an ideal happy life? Be happy when things are amiss.

☐ **Shri Punam Chand Munot**

The following are the factors :—

**(1) Prayer :**

It purifies the soul. It pleaseth him who prays and who hears, his sorrow goes away.

**(2) Optimism :**

One loses nothing as long as he can smile.

**(3) Cheerful Surroundings :**

(i) Good Books reading (स्वाध्याय) to acquire knowledge to which persons owe some of their best and happiest hours.

(ii) Good companious, which are better than big estates.

**(4) Contenment :**

There are many who would be perfectly happy when placed in our position and there is no reason why we should not be so.

**(5) Busy life :**

The busy have no time to pine. Mind employed is mind enjoyed.

**(6) Determination :**

One should make it a rule never to trouble troubles till the troubles actually trouble him.

**(7) Wisdom :**

Unhappiness is in on way commendable. It makes one all the

more unhappy and spoils health. One shouldtherefore, be wise and live like the 'Swan' who sings till death.

Such a life as already stated, is the only natural condition for human-beings, and all people rightly aspire to it, Leading such a life shows that one is living in confirmity with the laws of Nature, and is thus performing the most sacred duty which is so very essential for his own good. He does more work when he is happy than when he is not so.

Wisely it is said that a cheerful disposition has a creative faculty, but a sorrowful one destroys even if one has it A happy life is a guarantee for long life and success, whereas an unhappy one leads to an early grave. Every one likes to deal with an optmist, for whereever he goes he takes happiness with him·

Of all duties the principle is to acquire the knowledge of soul, that is the most exalted of all sciences, for it alone can ensure real happiness. Happiness is within one self or nowhere. It may be difficult to find it there, but it is impossible to find it anywhere else.

Greatness of soul makes a man really great, and he is the greatest conqueror who conquers himself. Eternal bliss is our own soul : weapons can not cleave it, fire can not burn it, water can not drown it, air can not fly it nor can sorrow have any influence on it.

Bhagvat Gita has described the grandeur of the Soal :

"Nainam Chhindanti Shastrani,
"Nainan dahti Pavka,
"Na Chainam Klaidayantyapo,
"Na Shoshayati maruta."

To give practical examples, "Mahabeer Swami" for instance. He was a prince born and never thought of being a king. He found the world full of "Sorrows and Hinsa." He changed his ideas and became Sadhu.

After doing 'Bhagvat Sadhna' for 12 years, he began preacheng and aimed to get the human-beings and creatures free from ailments and Hinsa' and devoted his whole life in doing good to others who came in touching, Thus in the long run he became a great 'Tirthanker'.

He preached that the fear of 'God' is the beginning of wisdom and happiness, he who trusts in 'God' knows not what defeat and unhappiness is. Kingdom of God is within your Soul and not elsewhere.

The principle of Mahaveer Swami was that who believe in God, see him in truth feel him in 'Ahinsa'. Some others find him in patriotic spirit while others experience him in three principal qualities of Soul ie. Right faith, Right knowledge, and Right conduct are in fact the real face of 'God' who controls our conduct.

In fact "Such persons" are nearer to 'God' and always happy

—Munot House, Nasirabad Road, Ajmer

**प्रेरक लघु कथा :**

## मोह जाल

□ राज सौगानी

विश्व विजेता सिकन्दर जब मृत्यु शय्या पर पड़ा छटपटा रहा था, तब उसकी मां ने रुंधे हुए कण्ठ से पूछा—

"मेरे लाड़ले लाल ! अब मैं तुझे कहाँ पाऊंगी ?"

सिकन्दर ने बूढ़ी मां को सान्त्वना देने की नीयत से कहा—

"अम्मीजान ! सत्रहवीं वाले रोज मेरी कब्र पर जाना, वहां मैं तुझे अवश्य मिलूँगा ।"

माँ की मोहब्बत बड़ी मुश्किल से सत्रह रोज कलेजा थाम कर बैठी रही । आखिर सत्रहवीं वाले दिन, रात के समय वह कब्र पर गई । कुछ पांवों की आहट पाकर बोली—

'कौन ? बेटा सिकन्दर ।'

आवाज आई—'कौनसे सिकन्दर को तलाश करती है ?'

माँ ने कहा—'दुनिया के शहंशाह, अपने लख्ते जिगर सिकन्दर को । उसके सिवाय और दूसरा सिकन्दर है कौन ?'

अट्टहास हुआ और वह पथरीली राहों को तय करता हुआ, भयानक जगलों को चीरता हुआ, पर्वतों से टकराकर विलीन हो गया ।

धीमे से किसी ने कहा—'अरी बावली, कैसा सिकन्दर ? किसका सिकन्दर ? कौन सा सिकन्दर ? यहाँ तो जर्रे-जर्रे में हजारों सिकन्दर मौजूद हैं !'

यह सुनकर वृद्धा माँ की मोह निद्रा भंग हुई । तात्पर्य समझ कर वह घर लौट आई ।

—द्वारा पी. सी. सौगानी, स्टेशन रोड, भवानीमंडी (राज.)

## बाल कथामृत [ १६ ]

**१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।**

—**सम्पादक**

# मुखिया की हँसी

☐ **श्री राजकुमार जैन**

बहुत दिन हुए, एक वृद्ध राहगीर अपनी मंजिल की ओर जा रहा था। रास्ते में सांझ हो चुकी थी और बारिश का मौसम होने से बादल घिर आए थे। अचानक मूसलाधार बरसात होने लगी। बूढ़ा राहगीर घबराता हुआ आसपास रात गुजारने के लिए जगह ढूंढ़ने लगा। भीगता हुआ वह एक मकान के सामने रुका और दरवाजा खटखटाया। वह गांव के मुखिया का मकान था। झल्लाते हुए मुखिया ने दरवाजा खोला और गुस्से में उस बूढ़े यात्री पर बरस पड़ा—"क्यों ? क्या बात है ?"

बूढ़े राहगीर का सारा शरीर गीला हो चुका था और वह कांप रहा था। बड़ी मुश्किल से वह बोला—"मैं एक राहगीर हूं। बरसात और अंधेरे के कारण आगे नहीं जा सकता। क्या आप मुझे रात भर अपने यहाँ ठहरा सकते हैं ?"

मुखिया आपे से बाहर होकर बोला—"महाशय, क्या आपने इस मकान को सराय समझ लिया है ? कहीं तुम चोर-उचक्के हो तो……।" यह कहते-कहते मुखिया ने भड़ाक से दरवाजा बंद कर लिया।

मुखिया का यह रूखा व्यवहार देखकर बूढ़ा अवाक् रह गया। फिर उसने कांपते हुए पास वाले मकान का द्वार खटखटाया। दरवाजा खुला तो एक

मजदूर ने उसे कुछ हैरानी से देखा और बूढ़े यात्री के कुछ कहने से पहले ही वह बोला—"तुम तो बुरी तरह भीग गये हो। अन्दर आ जाओ। कहीं सर्दी न लग जाए।"

बूढ़े के अन्दर आने पर मजदूर ने उसे तौलिया और अपने कपड़े देते हुए कहा—"लो, जल्दी से इस तौलिये से अपना भीगा बदन पौंछकर मेरे कपड़े पहन लो। फिर चूल्हे के पास बैठकर कुछ देर गर्म हो लो। इससे तुम्हारी कंपकंपी बंद हो जाएगी।"

बूढ़े ने फौरन तौलिये से शरीर पौंछकर कपड़े पहन लिये और चूल्हे के पास बैठकर तापने लगा। कुछ गर्मी पाकर उसने चैन की सांस ली। इतनी देर में मजदूर की पत्नी ने बूढ़े के लिए खाना बना दिया था। मजदूर ने रूखा-सूखा भोजन बड़े प्रेम से परोसा। खाना खा चुकने के बाद मजदूर ने बूढ़े के लिए अपने पास ही बिस्तर कर दिये।

मजदूर से बातचीत के दौरान राहगीर को पता चला कि वह पास वाले गांव के मुखिया के यहां मजदूरी करता है। मुखिया उसे नाम मात्र की मजदूरी देता है और कसकर काम लेता है।

सवेरे तक बरसात थम चुकी थी। बूढ़े ने तैयार होकर मजदूर से विदा लेते हुए कहा—"रात भर अपने यहां आश्रय देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद ! आज सुबह तुम जो भी कार्य करोगे, उसे रात तक करते ही रहोगे।"

मजदूर बूढ़े राहगीर की इस बात का कोई अर्थ लगा पाता, इससे पहले राहगीर तेज कदमों से चलता हुआ उसकी आँखों से ओझल हो गया।

मजदूर कुछ समय तक असमंजस में पड़ा सोचता रहा, फिर उसने कहा—"....होगा कुछ भी मतलब....मैं तो अपना काम करूं।" घर में आटा खत्म हो चुका था, इसलिए मजदूर ने सोचा कि बोरी में बचा थोड़ा-सा गेहूं चक्की पर पिसा लाऊँ।

वह बोरी में से गेहूँ निकालकर एक पीपे में डालने लगा। पीपा आधे से ज्यादा भर गया था और बोरी अभी खाली नहीं हुयी थी। उसने हैरानी से बोरी को उलटा। इससे पीपा पूरी तरह भर गया और गेहूँ उसके बाहर बिखरने लगे। मजदूर हैरान था। बोरी में अब भी उतने ही गेहूँ थे। वह बोरी पकड़े रहा और बोरी में से गेहूँ गिरते रहे। कुछ ही समय में मजदूर का सारा घर गेहूँ से भर गया। रात तक उसके घर के बाहर भी गेहूँ का खासा बड़ा ढेर लग चुका था।

अब इतने सारे गेहूँ का क्या किया जावे ? आखिरकार उसने इस गेहूँ को बेचने का निश्चय किया ।

अगले दिन खबर मिलते ही शहर से व्यापारी आये और अच्छे दामों में सारा गेहूँ खरीदकर ले गये । कुछ गेहूँ मजदूर ने अपने लिए रख लिया था । उसके पास अब गांव के मुखिया से भी अधिक धन था ।

सारी बात जब गांव वालों को पता चली तो उन्होंने मजदूर के भाग्य की सराहना की । गांव का मखिया अब पछता रहा था । वह उसी वक्त घोड़े पर सवार हो उस बूढ़े की खोज में निकल पड़ा । बूढ़ा राहगीर अधिक दूर नहीं गया था । अतः वह मुखिया को मिल गया । मुखिया ने उसके पैरों में पड़कर किसी तरह राहगीर को एक दिन के लिए अपना मेहमान बनने को राजी कर लिया ।

घर पहुँचने पर उसने बूढ़े की अच्छी आव-भगत की । उसकी आव-भगत से प्रसन्न होकर बूढ़ा अगले दिन भी नहीं गया । उसने बूढ़े की और अधिक सेवा की । पर जब वह अगले दिन भी नहीं गया तो मुखिया चिंतित हो गया कि कहीं यह बूढ़ा हमेशा के लिए यहीं न टिक जाए । इस प्रकार कई दिन बीत गये । मुखिया मन-ही-मन खीझता रहता ।

आखिर एक दिन सवेरे बूढ़ा जाने को राजी हुआ । बूढ़ा उससे विदा लेकर जाने लगा तो मुखिया ने बड़ी अधीरता से कहा—"आज सुबह मैं जो भी काम शुरू करूँगा, उसे रात तक करता रहूँगा न ?" मुखिया की बात सुनकर बूढ़ा मुस्करा दिया, बोला--"हाँ" ।

बूढ़ा अपनी राह चला गया ।

मुखिया शुरू से ही सोचे हुए था कि उसे क्या करना है । उसने मन-ही-मन सोचा कि बूढ़ा तो दफा हो गया, अब तिजोरी खोलकर उसमें से रुपये निकालना शुरू करता हूँ । शाम तक पूरे मकान में रुपयों के ढेर लग जाएँगे— यह सोचकर मुखिया हँसने लगा ।

हँसते हुए उसने तिजोरी वाले कमरे में प्रवेश किया । तिजोरी खोलते समय वह अपने आपको संभाल नहीं पा रहा था । वह अपना पेट पकड़कर बेहताशा हँसे जा रहा था । मुखिया की हँसी एक क्षण के लिए भी नहीं रुक रही थी । आखिरकार वह हँसता हुआ फर्श पर गिर पड़ा । अब उसकी हँसी की आवाज सारे घर में गूँज रही थी । देखते-देखते गाँव के लोग मुखिया के घर जमा हो गये ।

भीड़ में से किसी ने कहा—"कहीं यह खुशी से पागल तो नहीं हो गया ?"

गाँव के साहूकार ने भी कहा—"हाँ सचमुच यह तो पागल ही हो गया है। इसे बाँधकर पागल-खाने भेज देते हैं। कहीं किसी को काट न खाये ?"

मुखिया यह सब सुन रहा था। लेकिन उसके लिए यह सम्भव नहीं था कि अपनी हँसी रोककर वह लोगों को बताये कि वह पागल नहीं हुआ है।

तब सब लोगों ने मिलकर मुखिया को पकड़ लिया। साहूकार ने मुखिया के हाथ-पैर मजबूत रस्से से बाँध दिये। बेचारे मुखिया ने बहुतेरी कोशिश की कि वह लोगों को उसे पागल-खाने भेजने से रोके लेकिन वह सफल नहीं हो सका। बहुत दयनीय हालत थी उसकी। उसकी हँसी अब भी जारी थी। लोगों को डर लग रहा था कि पागल हुआ मुखिया उन्हें काट न खाये।

लोगों ने मुखिया को बैलगाड़ी पर लादा और शहर के पागल-खाने तक पहुँचा दिया।

—३४, बँधा रोड, भवानीमण्डी (राज०)

## अभ्यासार्थ प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :—

१. "मुखिया का रूखा व्यवहार देखकर बूढ़ा अवाक् रह गया।" यह रूखा व्यवहार क्या था ?

२. मजदूर ने बूढ़े राहगीर के साथ कैसा व्यवहार किया ?

३. मुखिया और मजदूर के व्यवहार को ध्यान में रखकर दोनों के चरित्र की दो-दो विशेषताएँ बताइये।

४. "जो जैसा करता है वैसा भरता है।" इस कथन की पुष्टि प्रस्तुत कहानी के आधार पर कीजिए।

५. आप अपने घर आये अतिथि के साथ कैसा व्यवहार करते हैं ? संक्षेप में लिखिये।

६. आपकी दृष्टि में मुखिया में किन गुणों का होना आवश्यक है ?

७. इस कहानी को पढ़ने से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

## उत्तरदाताओं के नाम

**"जिनवाणी"** के मई, १९८३ के अंक में प्रकाशित श्री कमल सौगाणी की कहानी **"हिरणी के आँसू"** के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सबको धन्यवाद।

**मद्रास** से कमल चौरड़िया, किरणकुमार, **कंजोली** से राजेश कुमारी जैन, **जयपुर** से सीमा ललवाणी, संजय ललवाणी, संदीप लोढ़ा, मीना बोहरा, **रणसीगाँव** से पारसमल गुन्देचा, **पाली** से राजेन्द्रकुमार धारीवाल, **भोपालगढ़** से बी. अभयकुमार कांकरिया, **भेडोला** से दिनेशचन्द शर्मा, **सुमेरगंज मण्डी** से त्रिलोकचन्द जैन, **आगरा** से अनीता जैन, **अजमेर** से आलोक कोठारी, **अलवर** से क्षिप्रा जैन, **नीमच** से चेतना आंचलिया, संजयकुमार जैन, **भवानी मण्डी** से अनिता जैन, जाकिर हुसैन, **ढहरा** से योगेन्द्रकुमार जैन, **महावीर जैन धार्मिक पाठशाला, स्टेशन बजरिया, सवाईमाधोपुर** से कु० प्रतिभा जैन, कु० अनिता जैन (सुपुत्री श्री रामकरण जैन), कु० मन्जूबाला जैन, कु० सावित्री जैन, कु० अनिता जैन (सुपुत्री श्री धन्नालाल जैन), कु० सुनिता जैन, सुरेन्द्र जैन, विमल जैन, अनिल जैन, कु० सरोज जैन, कु० उर्मिला जैन, कु० बीना जैन व कु० ममता जैन।

## पुरस्कृत उत्तरदाता

**प्रथम** :—दिलीपकुमार सिंघवी, द्वारा नेमीचन्द सिंघवी, गब्बाजी का मकान, **झालरापाटन** (राज०)।

**द्वितीय** :—मनोजकुमार जैन, सुपुत्र श्री जीवनलाल शास्त्री, संघ भवन, चौरासी, **मथुरा–२८१ ००४**।

**तृतीय** :—प्रकाशचन्द दुगड़, द्वारा रिखबचन्द महावीरचन्द दुगड़, जैन स्थानक के पास, **जसनगर**, तहसील–मेड़ता सिटी, जिला–नागौर (राज०)।

• • •
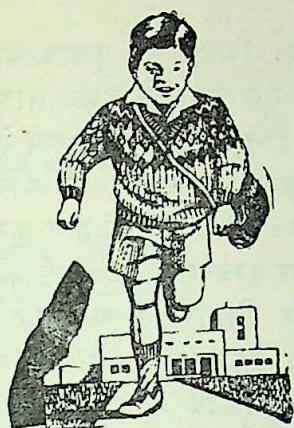
# प्रेरणादायी पद-यात्रा

☐ श्री सागर भंडारी

संसार के मोह-माया के जाल में फंसे हुए प्राणी को इस पंचम आरे में सच्चे सुख का मार्ग बताने वाले सन्त मुनिराज ही हैं जिनके दर्शन, वन्दन और प्रवचन-श्रवण कर हम अपने आपको धन्य मानते हैं और कुछ-न-कुछ प्रयास उस अनुरूप अपना-अपना जीवन बनाने का भी करते हैं। सन्त मुनिराज हमारी श्रद्धा के केन्द्र हैं और हम शायद इस बात की कल्पना ही कर सकते हैं कि साध्वाचार का पालन करते हुए, ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए उन्हें कितने अधिक परिषह सहन करने होते हैं। कहीं मार्ग में कांटे, तो कहीं पथरीली भूमि, ऊपर से पड़ती हुई सूर्य की चमचमाती किरणें, मार्ग में भूख-प्यास से सूखता हुआ गला, गाँव में विश्राम की ऊबड़-खाबड़ भूमि, खुली हवा के अभाव से शरीर पर पसीने का मैल जमना तो केवल एक झाँकी मात्र है। इन परिषहों को समभावपूर्वक सहन करते हुए, अपने शरीर को तपाते हुए ये सन्त न केवल मानव जाति पर अपितु सम्पूर्ण जीव राशि पर अपूर्व-अपूर्व उपकार करते हैं।

सौभाग्य से हमको महान् अध्यात्मयोगी, अखण्ड बाल-ब्रह्मचारी ६३ वर्ष से संयम धर्म के परिषहों को समभावपूर्वक सहन करते हुए, सामायिक-स्वाध्याय के द्वारा समाज को नई चेतना देने वाले आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० आदि ठाणा ५ का सान्निध्य मिला। श्री पारसजी डागा, श्री जतनजी कोठारी तथा श्री कैलाशजी डागा ३ मई को प्रातः जयपुर से रवाना होकर लगभग १२ बजे गुरु चरणों में पहुँचे। गुरुदेव उस समय कोटा से लगभग ६० कि० मी० दूर **लबान** ग्राम में उच्च प्राथमिक विद्यालय में विराज रहे थे। प्रातःकाल की थकावट के बाद अनुकूल भोजन न मिलने से मन में क्षुब्धता हुई, पर शाम के भोजन से उस सम्बन्ध की शिकायत तो दूर हो गई; किन्तु अनुभव होने लगा कि साधु-साध्वियाँ किस प्रकार ऐसे आहार से क्षुधा-तृप्ति करते होंगे।

४ मई को १४ कि० मी० का विहार कर **लाखेरी** आए तो पैर जवाब

देने लगे। पसीने के कारण शरीर चिपचिपाने लगा था, किन्तु इस वृद्धावस्था में इतने उग्र विहार के पश्चात् भी गुरुदेव की शान्त मुख मुद्रा के दर्शन मात्र से सारी थकान उतर गई। श्री रामचन्द्रजी सिंधी होते हुए भी पूर्ण रूप से निर्व्यसनी थे। जिन्हें देखकर हमारे समाज के नवयुवकों के व्यसन की ओर आकर्षित होने का दुःख हुआ। ५ मई को १० कि० मी० का विहार कर **सुमेरगंज मण्डी**, ६ मई को ५ कि० मी० का विहार कर **इन्दरगढ़** व ७ मई को १० कि० मी० का विहार कर **बाबई** पहुँचे। बाद के विहारों में थकान का अनुभव नहीं हुआ। गुरु-चरणों में रहने से स्वाध्याय, सामायिक, प्रवचन व सेवा का प्रत्यक्ष अधिकाधिक लाभ मिला और साथ में गुरुदेव से काफी समय मार्ग-दर्शन प्राप्त हुआ। ग्रामवासियों का प्रेम और अतिथि-सत्कार का अद्भुत रूप देखकर ऐसा विचार होने लगा कि हमारे शहरों को क्या हो गया है ? 'अथिति देवो भवः' की हमारी महान् संस्कृति आज भी गाँवों में विद्यमान है।

हमने इस प्रवास के दौरान ग्रामवासियों से सम्पर्क का विशेष लक्ष्य रखा। अनेक ग्रामवासियों को व्यसन मुक्ति, जैन बालकों को जैन धर्म की शिक्षा व अन्य नियम दिलवाकर इस छोटी-सी दलाली से ही दिल को अजीब शान्ति प्राप्त हुई। मन में उमंगें उठने लगीं कि क्या ही अच्छा हो कि हम इससे भी अधिक सच्ची दलाली का लाभ ले सकें। स्थान-स्थान पर साहित्य व अन्य आवश्यकताओं की जानकारी कर वहाँ उस सामग्री की पूर्ति का संकल्प लेते हुए ग्रामवासियों से सम्पर्क में उनकी सरलता से अत्यन्त ही प्रभावित हुए। हमने सोचा कि यदि हम सतत दौरों के द्वारा इन ग्रामों में सम्पर्क करने का प्रयास करें तभी गुरुदेव के स्वप्न को साकार रूप दे सकते हैं। ८ मई की रात्रि जयपुर लौटने से पूर्व ६ दिन के आचार्य श्री के सान्निध्य से मन अत्यधिक प्रसन्न था, तथा यह अनुभव होने लगा कि रास्ते में विहार के समय ही सन्त-सेवा व उनके जीवन को समझने का वास्तविक अवसर प्राप्त हो सकता है। □

## हार्दिक बधाई

श्री सुबोध जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय जयपुर के छात्र श्री विमल जैन ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर की हायर सैकण्डरी वाणिज्य परीक्षा १९८३ में योग्यता–सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। एतदर्थ हार्दिक बधाई !

—सम्पादक
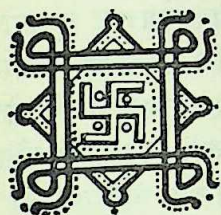
# आचार्य श्री की विहार-चर्या

□ श्री नवरत्नमल जैन

प्रात: स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म० सा०, मधुर व्याख्यानी श्री हीरामुनि जी म० सा०, सुमधुर वक्तृत्वकला के धनी श्री शुभेन्द्र मुनि जी म० सा०, सेवाभावी श्री बसन्तमुनि जी म० सा०, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म० सा०, सतत अध्ययनरत श्री गौतम मुनिजी म० सा०, सेवाभावी श्री नन्दीषेण मुनिजी म० सा०, विद्यानुरागी श्री धन्ना मुनि जी म० सा० ठाणा आठ तथा महासती श्री शान्तिकँवर जी म० सा० ठाणा ४ चौथ का बरवाड़ा में २ जून को पूज्याचार्य श्री कुशलचन्द जी म० सा० का द्विशताब्दी स्मृति समारोह सानन्द सम्पन्न कर दिनांक ३ जून को **चोरू** पधारे। ४ जून को प्रात: आचार्य श्री का **जैनपुरी** में पदार्पण हुआ। यहाँ जैनमीणा जाति के तीस परिवार स्था० उपासना पद्धत्ति को मानने वाले हैं। आचार्य श्री के आगमन पर ग्राम में धर्म-लहर फैल गई। आबाल वृद्ध लगभग ३० लोगों ने शान्ति भवन में आकर नित्य सामायिक करने की प्रतिज्ञा की। ३० भाई-बहिनों ने अर्हत धर्म की सागारी दीक्षा अंगीकार की, तथा कइयों ने धूम्रपान के त्याग किए। यहां मीना बन्धुओं की धर्माभिरुचि सराहनीय है। अलीगढ़, मद्रास, जयपुर, चोरू, सवाईमाधोपुर, उखलाना आदि स्थानों से आये हुए बन्धुओं ने उनका आतिथ्य स्वीकार किया।

दिनांक ५ जून को प्रात: ही **उखलाना** के मीना बन्धुओं की अच्छी खासी संख्या जैनपुरी मार्ग पर शनै: शनै: अपने आराध्य आचार्य श्री की अगवानी में उपस्थिति होती गई और भ० महावीर स्वामी की जय आदि के जय नारों से क्रमश: जुलूस बनता गया। श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा बोले जा रहे उच्च स्वरीय जय नारों से गगन को गुँजाता हुआ भव्य जुलूस माणक चौक पहुँचा। पण्डित रत्न श्री हीरामुनि जी ने सरल सुबोध ग्रामीण भाषा में अर्हत्वाणी का विशद विवेचन श्रोताओं के समक्ष सुमधुर शैली में प्रस्तुत किया जिसे सभी ने एकाग्रचित्त से श्रवण किया।

परमाराध्य आचार्य श्री के उखलाना आगमन पर ३० भाई-बहिनों ने स्थानक में आकर नित्य सामायिक करने का संकल्प लिया। कई बहिनों ने आयम्बिल के नियम लिये। यहाँ श्री शुभेन्द्र मुनि जी के प्रवचन ग्रामीण भाषा में हुये तथा श्री गौतम मुनिजी एवं धन्ना मुनिजी ने प्रेरणास्पद स्तवन प्रस्तुत किए। उखलाना में मीना जाति के ८० घर व ३ घर पोरवाल जैन समाज के हैं जो स्थानकवासी जैन धर्मानुयायी हैं। आचार्य श्री के पदार्पण पर धूम्रपान आदि व्यसनों के त्याग के साथ-साथ आयम्बिल, एकासन आदि अनेक प्रत्याख्यान ग्रहण किये। यहाँ श्री जतनराज जी मेहता मेड़ता वालों की सामायिक के क्षेत्र में प्रचार-सेवा सराहनीय रही। अलीगढ़, नागौर, कलकत्ता, नारू, बिलौता पाटोली, बलरिया, जैनपुरी के सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रवचन श्रवण किए। आगन्तुक अतिथियों का आदर-सत्कार श्री ब्रजमोहन जैन ने साधर्मी वत्सलता पूर्वक किया। श्री ब्रजमोहन जैन ने सवाईमाधोपुर क्षेत्र में नित्य प्रात: सेवा का लाभ लिया।

६ जून को सायं ६ बजे दशमी की मौन साधना में यहाँ से विहार कर आचार्य श्री **अलीगढ़ रामपुरा** पधारे। यहाँ चार दिनों तक आचार्य श्री एवं पं० रत्न श्री हीरा मुनिजी की पातक प्रक्षालिनी वाणी का लाभ मिला। अनेक भव्यों ने बोध प्राप्त किया। यहाँ के ५८ भाई-बहिनों ने सागारी जिनदीक्षा स्वीकार की एवम् सामायिक व्रत के नियम लिये। श्री गजानन्द जी मीणा उखलाना वालों ने आजीवन शीलव्रत सजोड़े अंगींकार किया। यहाँ स्था० जैन घर ४० हैं। संघ में अच्छा सौहार्दमय वातावरण है तथा २५ घर दिगम्बर जैन समाज के हैं। ३० युवकों ने पर्युषण में बाहर जाकर स्वाध्यायी सेवाएँ देने की प्रतिज्ञा की। गुरुदेव के पदार्पण से सामायिक, उपवास, तेले आदि तप भी यहाँ हुए। विद्यालय की व्यवस्था का निरीक्षण श्री तेजराज जी भण्डारी निवाई तथा श्री केशरीचन्द जी नवलखा जयपुर ने किया।

दि० १० जून को आचार्य श्री **उनियारा** पधारे। यहाँ श्री शुभेन्द्र मुनि जी ने ओजस्वी वाणी में प्रवचन फरमाया। यहाँ स्था० जैन घरों की संख्या ११ है। आचार्य श्री की प्रेरणा से ११ भाई-बहनों ने नित्य प्रति स्थानक में आकर सामायिक करने की प्रतिज्ञा ग्रहण की। श्री हीरा मुनिजी की सुमधुर वाणी के प्रभाव से यहाँ का वर्षों पुराना वैमनस्य समाप्त होकर संघ में एकता की लहर व्याप्त हो गई। श्री इन्द्रचन्द जी हीरावत संघ अध्यक्ष जयपुर, अपने साथियों के साथ सेवा में उपस्थित हुए।

११ जून को आचार्य श्री **दिकोलिया** पधारे। यहाँ विजयवर्गीय समाज के ७ घर हैं। श्री स्वरूपनारायण जी विजयवर्गीय की सेवा सराहनीय रही।

आप अच्छे समाजसेवी कार्यकर्ता हैं। इनके सत्प्रयत्नों से पूरे गाँव में एक भी मांसाहारी एवम् मद्यपेयी नहीं है तथा गाँव का एक भी केस कोर्ट-कचहरी में नहीं है। ग्रामीण लोग आपसी विवाद आपस में बैठकर ही निपटा लेते हैं। इस युग में इस गाँव की यह उल्लेखनीय विशेषता है।

१२ जून को **ककोड़** पधारे। यहाँ स्थानकवासी जैन समाज का १ घर श्री प्रभुलाल जी का है अन्य जैन भाइयों की भक्ति ठीक है एवम् समाज का उपाश्रय तथा दि० मन्दिर है। गाँव में गुरुदेव के पदार्पण से टोंक आदि स्थानों से पधारे हुए दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा। आचार्य श्री का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ।

**घास, चंदलाई** आदि गाँवों को फरसते हुए आचार्य श्री **१५ जून को टोंक** पधारे। नई टोंक के प्रमुख बाजारों के मध्य गुजरते हुए पुरानी टोंक स्थित–जैन स्थानक महावीर भवन में पधारे। यहाँ धर्मध्यान का अच्छा ठाठ रहा। जयपुर से श्री गुमानमल जी चौरड़िया, संघ मंत्री, श्री उग्रसिंह जी बोथरा, श्री उमरावमल जी ढड्ढा, व श्री श्रीचन्द जी गोलेछा सपरिवार दर्शनार्थ पधारे। टोंक में ३ स्थानक भवन हैं। यहाँ स्थानकवासी २० घर हैं तथा मन्दिरमार्गी समाज के १०० घर हैं। श्री सुगनमल जी बम्ब, श्री रतललाल जी बम्ब, श्री जसकरण जी डागा, श्री सौभाग्यमल जी लोढ़ा, श्री उम्मेद जी मेहता आदि की भक्ति व शासन सेवा की लगन सराहनीय है। श्री गम्भीरमल जी बम्ब ध्यान, सेवा और शिक्षण में विशेष दिलचस्पी रखते हैं। उन्होंने ध्यान के बारे में गुरुदेव से पृच्छा की।

श्री तेजराज जी भण्डारी निवाई वालों ने यहाँ पधारकर पुरजोर शब्दों में साग्रह विनती की कि पूज्याचार्य श्री रत्नचन्द जी म० सा० का १३८ वाँ स्मृति दिवस २४ जून को निवाई में मनाया जाय। परमाराध्य आचार्य श्री ने सुखे समाधे निवाई पधारने की स्वीकृति साधुभाषा में फरमाई। श्री जसकरण जी डागा ने सजोड़े १८ मासीय शीलव्रत के नियम लिए।

२० जून को आचार्य श्री १४ कि० मी० का विहार कर **सोयला** पधारे। यहाँ दि० जैन समाज के ७ घर हैं। भक्ति भावना अच्छी है। श्री पूनमचन्द जी बडेर जयपुर से दर्शनार्थ उपस्थित हुए। २१ जून को ११ कि० मी० के बिहारोपरान्त आचार्य श्री **पहाड़ी** पधारे और स्कूल में विराजे। यहाँ टोंक निवासी श्री अजितकुमार जी ने दर्शन व सेवा का लाभ लिया।

२२ जून को ८ कि० मी० का विहार कर आचार्य श्री **निवाई** पधारे। यहाँ श्री शान्तिनाथ जैन दि० भवन में विराजे। २३ जून को प्रातः वहां से

विहार कर आप जलधारा कण्डक्टर्स प्रा० लि० के प्रांगण में पधारे जहाँ औद्योगिक फर्मों में कार्यरत पचासों श्रमिकों ने आपकी ओजस्वी वाणी का रसास्वादन किया, तथा कइयों ने धूम्रपान के त्याग किए ।

२४ जून को उखलाना से आये हुए जैन मीणा बन्धुओं की भारी संख्या तथा जयपुर, अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा व सवाईमाधोपुर क्षेत्र के दर्शनार्थी बन्धुओं की अच्छी उपस्थिति में दिगम्बर जैन नसिया मन्दिर में **पूज्याचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म० सा० का १३८ वाँ स्मृति दिवस समारोह मनाया गया।** नवरत्नमल जैन के मंगलाचरण पश्चात् श्री महावीरप्रसाद जी विधायक तथा पण्डित श्री राजकुमार जी जैन ने आचार्य श्री के निवाई पधारने पर अभिवन्दन एवम् आभार व्यक्त किया व गुरुदेव की सुदीर्घ चरित्र पर्याय की भूरि-भूरि प्रशंसा की। तदनन्तर प्रसिद्ध वक्ता पं० रत्न श्री हीरा मुनिजी ने क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द जी म० सा० के त्याग एवम् साधनाशील जीवन पर अन्तस्तल-स्पर्शी प्रकाश डाला तथा उन्हीं के जीवन से सम्बन्धित सुमधुर शैली में श्री गौतम मुनि जी व धन्ना मुनिजी ने भजन प्रस्तुत कर जन-मन हर्षित कर दिया। डॉ० नरेन्द्र भानावत ने आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म० सा० की काव्य-साधना पर प्रकाश डालते हुए उनकी शिथिलाचार उन्मूलक क्रिया का उल्लेख किया। श्रीमती सुमन कमलेश भण्डारी ने एक स्तुतियुक्त गायन प्रस्तुत किया। आचार्य प्रवर ने अपने प्रवचन में स्व० आचार्य श्री की क्रियोद्धारक क्रान्ति का हृदयग्राही विवेचन किया। इस अवसर पर उखलाना से आये हुए श्री भँवरसिंह जी मीणा ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया तथा श्री तेजराज जी भण्डारी निवाई ने सजोड़े वार्षिक शीलव्रत अंगीकार किया तथा उखलाना के ५८ मीना जैनों ने नित्य प्रति स्थानक में जाकर सामायिक करने का सामूहिक नियम लिया। इस प्रकार पुण्य तिथि समारोह त्याग, तपमय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

दोपहर को **"जैन धर्म की आधुनिक प्रासंगिकता"** विषय पर विचार गोष्ठी हुई जिसमें सर्वश्री डॉ० लक्ष्मीलाल ओड, प्रिंसिपल बनस्थली विद्यापीठ, डॉ० नरेन्द्र भानावत, प० कन्हैयालाल जी दक ने अपने विचार प्रस्तुत किये। गोष्ठी के कुछ ही समय के अन्तराल में अ० भा० सामायिक संघ की मिटिंग हुई जिसमें श्री राजेन्द्रकुमार जी पटवा, श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी, श्री प्रमोद मेहता आदि ने सामायिक संघ की गतिविधियों को प्रभावशाली ढंग से आगे बढ़ाने पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रम का संचालन किया श्री केशरीचंद जी नवलखा जयपुर ने।

निवाई में अग्रवाल जैन समाज के १८० घर तथा ७० घर सरावगी बन्धुओं के हैं। दोनों ही वर्गों में अटूट वत्सलता है। दोनों वर्ग एक ही मन्दिर

में उपासना करते हैं तथा व्यावहारिक कार्य भी मिलजुल कर करते हैं। यह यहाँ की विशेषता है। स्था० वासी जैनों के ५ घर हैं जिनमें श्री तेजराजजी भण्डारी प्रमुख हैं। समस्त जैन समाज धार्मिक प्रसंगों पर एकजुट होकर एक दूसरे का साथ देते हैं। यहाँ जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, उखलाना, चौथ का बरवाड़ा, टोंक आदि अनेक ग्रामों से पधारे हुए आगन्तुकों का भण्डारी परिवार ने वात्सल्यपूर्वक सत्कार किया। श्री माणकमल जी भण्डारी, श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफणा मंत्री, अ० भा० जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ सेवा में उपस्थित हुए। यहाँ सामूहिक रूप से पन्द्रह मिनट के स्वाध्याय का दर्शनार्थियों ने नियम लिया।

निवाई से २५ जून को विहार कर आचार्य श्री **मूण्डिया** पधारे। यहाँ श्री विमलचन्द जी गोलेछा भिनाय वालों का एक घर स्थानकवासी है। ७ घर विजयर्गीय समाज के हैं। श्री सिरेहमल जी नवलखा जयपुर से बस लेकर दर्शनार्थ उपस्थित हुए। २६ जून को आचार्य श्री **कौथून** पधारे। यहाँ श्री चन्द्रराज जी सिंघवी जयपुर से दर्शनार्थ पधारे। इनके अतिरिक्त जयपुर से सैंकड़ों दर्शनार्थियों का तांता नित्य प्रति लगा रहा। जयपुर का श्री संघ सेवा का अच्छा लाभ ले रहा है। २७ जून को आचार्य श्री **चाकसू** पधारे। यहाँ श्री भँवरलाल जी मिलापचन्द जी जामड़ की भक्ति सराहनीय है। २८ को **शिवदासपुरा** पधारे। यहाँ श्री बादलचन्द जी मेहता इन्दौर वाले दर्शनार्थ पधारे।

२९ को **बीलवा** पधारे। यहाँ श्री सुमेरसिंह जी बोथरा जयपुर से दर्शनार्थ पधारे। ३० जून को **साँगानेर** पधारे जहां जयपुर के श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति नित्य प्रति दर्शन व सेवा का लाभ ले रही है। जयपुर के श्रावकों का दर्शनार्थ तांता लगा हुआ है। आचार्य श्री द्वारा जयपुर के उपनगरों में धर्मोद्योत का महान् कार्य हो रहा है।

चौथ का बरवाड़ा से श्री सूरजमलजी नवलखा, श्रीमती प्रेमबाई नवलखा जयपुर, श्री पारसमल जी डागा जयपुर ने सेवा का लाभ लिया, जो सराहनीय है। श्री प्रेमचन्द जी हीरावत व डॉ० सुशीलकुमार जी वैद्य की सेवायें प्रशंसनीय हैं। श्री पूनमचन्द जी बडेर, जयपुर तथा श्री ब्रजमोहन जी जैन उखलाना वाले भी सेवा का लाभ लेते रहे।

☐ ☐ ☐

## सन्त-सतियों के विहार समाचार

- जोधपुर से विहार कर ग्रामानुग्राम धर्मोपदेश की पावन गंगा बहाते हुए **पं० र० श्री मान मुनिजी** ठाणा ३ जयपुर पधार गये हैं।

- पल्लीवाल क्षेत्र में धर्मोपदेश करते हुए कुशल सेवामूर्ति **श्री शीतल मुनिजी** ठाणा २ जयपुर पधार गये हैं।

- साध्वी प्रमुखा **प्रवर्तिनी श्री सुन्दरकँवर जी म० सा०** ठाणा ६ पावटा जोधपुर विराज रही हैं।

- उप प्रवर्तिनी **महासती श्री वदनकँवर जी म० सा०, महासती श्री लाड़-कँवर जी म० सा०** ठाणा ६ घोड़ों के चौक जोधपुर में विराजमान हैं।

- महासती श्री **सायरकँवर जी आदि** ठाणा ५ दक्षिण प्रदेश की लम्बी दूरी से उग्र विहार करती हुई २२ जून को जोधपुर पधार गई हैं तथा सुखसातापूर्वक विराजमान हैं।

- **महासती श्री शान्ताकँवर जी** ठाणा ४ जयपुर के उपनगरों में पधार गई हैं।

## मद्रास (सूले) में पुण्य तिथि समारोह

परम विदुषी मधुर व्याख्यानी **महासती श्री मैनासुन्दरी जी म० सा०, महासती श्री रतनकँवर जी म० सा०, महासती श्री चन्द्रावती जी म० सा०** ठाणा ३ सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। २४ जून को यहाँ पूज्याचार्य प्रवर महान् क्रियोद्धारक **श्री रत्नचन्द्र जी म० सा० का १३८ वाँ पुण्य तिथि समारोह** तप-त्याग के साथ मनाया गया। जिसमें करीबन २०८ उपवास, १०१ एकासन, बड़ी संख्या में आयम्बिल एवम् १०० के लगभग दया हुई। महासती मैना-सुन्दरी जी ने स्व० आचार्य श्री की जीवन-साधना पर हृदयस्पर्शी प्रवचन दिया। आपके उपदेश से धर्मध्यान की प्रभावना अच्छे ढंग से हो रही है।

□ □ □
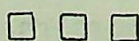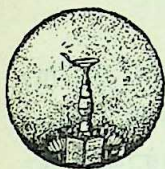
# साहित्य-समीक्षा

१–३. **रात और दिन, बदलती हवाएँ, प्रकाश की किरणें :** मुनि श्री विनयकुमार 'भीम', सं०—श्रीचन्द सुराणा 'सरस' प्र०—मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, पीपलिया बाजार, ब्यावर, पृ०—क्रमशः १९०, १४४, ११६, मूल्य—५.०० रु० प्रत्येक ।

मुनि श्री विनयकुमारजी 'भीम' युवा लेखक कवि और ओजस्वी वक्ता हैं । उनकी साहित्य-साधना निरन्तर गतिमान है । **'रात और दिन'** प्राचीन कथानक पर आधारित प्रेरक उपन्यास है । इसमें राजा वीर धवल और महारानी पद्मावती के दो पुत्रों वीरभान और उदयभान के सुख-दुःख और साहसपूर्ण कार्यों की रोमांचक कथा है । उपन्यास में बेमेल विवाह, कामासक्ति के दुष् परिणाम, मोहान्धता और विमाता के अत्याचारों का यथार्थ चित्रण रोंगटे खड़ा कर देने वाला है । **'बदलती हवाएँ'** नारी जीवन को नया संस्कार व नयी शक्ति प्रदान करने वाला प्रेरणादायी उपन्यास है । ग्रामीण वातावरण में पालित-पोषित मध्यमवर्गीय परिवार की जसुमती अपनी, श्रमशीलता, पतिव्रत धर्म, सेवा-भावना और निराभिमानता के कारण अपने पति सुनन्द के जीवन में नयी बहार ला देती है । **'प्रकाश की किरणें'** महासती मदन रेखा के चरित्र को लेकर लिखा गया अभिनेय नाटक है । इसमें मदन रेखा के पातिव्रत एवं शीलधर्म की सुन्दर व्यंजना हुई है । यह नाटक तीन अंकों का है । प्रथम अंक में १० दूसरे अंक में ५ व तीसरे अंक में ६ दृश्य हैं । भाव, भाषा एवं शैली की दृष्टि से तीनों पुस्तकें सरस और प्रभावपूर्ण बन पड़ी हैं ।

४. **निशीथ के नक्षत्र**—श्री केवल मुनि; सं०—श्रीचन्द सुराणा 'सरस', प्र०—श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय, ब्यावर; पृ०—२०८, मू०—५.०० ।

इसमें जन-जीवन में नया आलोक भरने वाली १२ कहानियाँ संकलित हैं । इन कहानियों का आधार पूज्य आचार्य एवं जैन मुनियों के जीवन में घटित प्रेरक प्रसंग रहे हैं । कुछ कहानियाँ प्राचीन कथा एवं सुनी हुई घटनाओं को आधार बना कर लिखी गई हैं । अतः इनको पढ़ते समय ऐतिहासिक संस्मरण पढ़ने का भी आनन्द मिलता है । जिस प्रकार अन्धकार में चमकते नक्षत्र हमारा

पथ आलोकित करते हैं, उसी प्रकार इन कहानियों में निहित क्षमा, धैर्य, दया, उदारता, त्याग, विवेक, सेवा, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे मानवीय मूल्य हमारा जीवन-पथ आलोकित करते हैं।

५. **मगध के चाँद सूरज :** स्व० श्री अशोक मुनि, सं०—श्रीचन्द सुराणा 'सरस'; प्र०—गुरु गणेश जैन निवृत्ति आश्रम, अनकाई, जिला नासिक (महाराष्ट्र); पृ०—४१०; मू०—नौ आयम्बिल या ग्यारह एकासना का संकल्प।

तपस्वी श्री बसन्तलालजी म० की प्रेरणा से स्वर्गीय श्री अशोक मुनिजी की यह अन्तिम रचना प्रकाश में आ सकी है। इस उपन्यास में मगध राज्य का २५०० वर्ष पुराना गौरवशाली इतिहास साकार हो उठा है। मगध के चाँद-सूरज के रूप में महाराजा श्रेणिक और महामात्य अभयकुमार का चित्रण किया गया है। अन्य पात्रों में प्रमुख हैं महारानी चेलना, चण्डप्रद्योत, नन्दा, सुभद्र सेठ, अनाथी मुनि आदि। ३२ अध्यायों का यह उपन्यास भगवान महावीर एवं तथागत बुद्ध के समय के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक वातावरण को प्रस्तुत करने में सफल बन पड़ा है।

६–७. **'मनन और मूल्यांकन' 'अनेकांत है तीसरा नेत्र' :** युवाचार्य महाप्रज्ञ; सं०—मुनि दुलहराज; प्र०—क्रमशः आदर्श साहित्य संघ, चूरू (राजस्थान) व तुलसी अध्यात्म नीड़म्, जैन विश्व भारती, लाडनूं, (राजस्थान); पृ०—क्रमशः १३० व १३४; मू०—क्रमशः १२.०० व ८.०० रु०।

**'मनन और मूल्यांकन'** में महाप्रज्ञ जी के विविध विषयक १७ प्रवचन संकलित हैं। इसमें एक ओर आचारांग, सूत्रकृतांग व पातंजल योग दर्शन के आधार पर अहिंसा, अनेकान्त और ध्यान-योग का धर्म-दर्शन व आधुनिक विज्ञान-मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में गम्भीर विवेचन किया गया है तो दूसरी ओर 'नमस्कार महामन्त्र के मूल स्रोत और कर्त्ता', 'जैन साहित्य के आलोक में गीता का अध्ययन' जैसे शोध निबन्ध भी हैं जो ज्ञान और चिन्तन के क्षेत्र को आगे बढ़ाने में सहायक हैं।

**'अनेकान्त है तीसरा नेत्र'** में मुनि श्री के अनेकान्त के स्वरूप, सिद्धान्त और प्रक्रिया को व्याख्यायित करने वाले १० प्रवचन संकलित हैं। इसमें सहअस्तित्व, समन्वय, सापेक्षता, स्वतन्त्रता, सन्तुलन, परिवर्तन आदि बिन्दुओं के आधार पर अनेकान्त की सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक विवेचना की गई है। दोनों पुस्तकें चिन्तन को नई दृष्टि और विचार को गाम्भीर्य प्रदान करती हैं।

**—डॉ० नरेन्द्र भानावत**

# समाज-दर्शन

## अखिल भारतीय सामायिक संघ

आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. की प्रेरणा से प्रभावित होकर दिनांक १ जून को चौथ का बरवाड़ा में अखिल भारतीय सामायिक संघ की बैठक हुई। सामायिक संघ के कार्यों को गति देने एवं समाज में सामायिक और स्वाध्याय की साधना का प्रचार-प्रसार करने हेतु एक समिति का गठन किया गया है, जिसमें पुरुष एवं महिलाओं सहित ५१ सदस्यों की समिति बनाई गई है।

**मुख्य रूप से :**

१. **मुख्य संचालक** : (१) श्री उमरावमलजी ढढ्ढा, अजमेर
(२) श्री शंकरलालजी ललवानी, जलगांव

२. **संचालक** : (१) श्री टीकमचन्दजी हीरावत, जयपुर
(२) श्री जालमचन्दजी बाफना, आगरा

३. **संयोजक** : श्री जतनराजजी मेहता, मेड़ता

४. **मुख्य कार्यवाहक** : श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा, जयपुर

५. **कार्यवाहक** : (१) प्रो. संजीव भानावत, जयपुर
(२) प्रो. धर्मचन्द जैन, झालावाड़

इसके अतिरिक्त साधना निर्देशक, साधक शिक्षक, प्रान्तीय प्रचारक, क्षेत्रीय प्रचारक आदि अन्य कार्यकर्ताओं को मनोनीत किया गया।

सम्पर्क सूत्र : राजेन्द्रकुमार पटवा,
३/१०१, जवाहर नगर, जयपुर–४
फोन : 40185

## स्वाध्यायी एवं धार्मिक शिक्षण शिविरों के विविध आयोजन

**जयपुर**—सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल की ओर से श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान बजाज नगर, जयपुर में ११ जून से १६ जून तक आयोजित शिविर में ११० स्वाध्यायियों एवं छात्रों ने भाग लिया। संभागियों को चार वर्गों में विभक्त कर धार्मिक एवं तात्त्विक शिक्षण प्रदान किया गया। अध्यापन कार्य में सर्व श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा, सम्पतराजजी डोसी, केवलमलजी लोढ़ा एवं

फूलचन्दजी मेहता का उल्लेखनीय योगदान रहा। शिविर काल में श्री डी. आर. मेहता, डॉ. नरेन्द्र भानावत, श्री नथमलजी हीरावत, श्री श्रीचन्दजी गोलेछा, श्री मेहताबचन्दजी मेहता, श्री रणजीतसिंह कूमट, श्री टीकमचन्दजी हीरावत, श्री संजीव भानावत आदि ने शिविरार्थियों को सम्बोधित किया। लाल भवन में विद्यालयीय बालक-बालिकाओं का स्थानीय शिविर आयोजित किया गया। जिसका संचालन श्रीमती मंजुला बम्ब ने किया।

**जलगांव**—महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ की ओर से मई माह में जलगांव जिले के चार गांवों में धार्मिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन चार शिविरों में २२८ शिविरार्थियों ने भाग लिया जिसमें जामनेर १०५, चोपड़ा ४६, फत्तेपुर ३०, पाचोरा ४६ विद्यार्थी थे। शिविर में सामायिक, प्रतिक्रमण, कर्म प्रकृति, समिति-गुप्ति, दशवैकालिक सूत्र, भक्तामर, मेरी भावना आदि का अध्ययन करवाया गया।

अध्ययन करवाने वाले थे सर्वश्री अमृतलालजी मेहता, प्रकाश चन्द जैन, प्रकाश चन्दजी कांकरिया, पारसमलजी बांठिया, माणकचन्दजी गादीया, अरविन्दजी कटारिया आदि। सभी संघों की ओर से विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

—**प्रकाशचन्द जैन**

**इन्दौर**—म. प्र. जैन स्वाध्याय संघ इन्दौर एवं श्री म. प्र. स्थानकवासी जैन धार्मिक शिक्षण शिविर समिति बदनावर के संयुक्त तत्वावधान में एक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर दिनांक २९-५-८३ से १२-६-८३ तक लगाया गया। वह शिविर तपस्वीराज श्री लालचन्द्रजी म. सा. की पावन निश्रा में लगा। इस शिविर में लगभग ३१ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में २० नये स्वाध्यायी तैयार किये गये जिन्होंने आगामी पर्युषणपर्व में सेवा देने के लिये स्वीकृति प्रदान की। इसमें सामायिक ७५८७, दया ८७, संवर ११२, एकासन ५ आदि धर्म ध्यान हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती मन्जुला बोटदरा इन्दौर ने की एवं पुरस्कार वितरण श्रीमती भुनेश्वरी देवी भण्डारी ने किया। इस अवसर पर अ. भा. गजेन्द्र जैन स्वाध्याय ध्यान पीठ की ओर से नये प्रतिक्रमण सीखने वाले ४ छात्रों को १२५) रु. प्रत्येक को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया एवं साथ ही ध्यान में भाग लेने वाले तीन छात्रों को ७१, ५१ एवं ३१ रु. का पुरस्कार प्रदान किया। इस शिविर में मुख्य रूप से शिक्षण का कार्य श्री कान मुनिजी म. सा. ने किया एवं सहयोगी शिक्षक के रूप में श्री गणेश धारीवाल रायचूर, श्री जिनेश्वर जैन समाधीपुर एवं श्री शांतिलाल नागौरी प्रतापगढ़ ने कार्य किया। उक्त कार्यक्रम का संचालन श्री अशोकजी मांडलिक ने किया। शिविर के संयोजक पद पर श्री शिरोमणिचन्दजी जैन ने कार्य किया। शिविर में

मोतीलालजी सुराना, शांतिलालजी सुराना और नेमनाथजी जैन का सहयोग रहा।

—गणेशमल धारीवाल

**रायपुर**—आचार्य श्री नानालालजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी श्री कस्तूर कुंवरजी म. सा. श्री चन्दनबालाजी म. सा. आदि ठा. ६ के सान्निध्य में श्री जैन संघ भिलाई द्वारा छत्तीसगढ़ स्तरीय १३ दिवसीय श्री जैन धार्मिक शिविर का समापन समारोह श्री मोतीलालजी बोरा उच्च शिक्षा राज्य मंत्री म. प्र. के मुख्य आतिथ्य एवं श्री फूलचन्दजी वाफना विधायक भिलाई की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर में २५ गांव एवं शहरों की बालिकाओं ने भाग लिया। श्री लूनकरणजी सोनी की व्यवस्था आदि में अनुकरणीय सहयोग रहा। महाकौशल स्थानकवासी साधुमार्गी श्वे. जैन धार्मिक शिक्षण शिविर ट्रस्ट की ओर से श्री लूनकरणजी सोनी को अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। शिविर का संचालन श्री अमृतलालजी मेहता ने किया। संघ की ओर से उनका भी अभिनन्द किया गया। श्रीमती चन्दनबाला जैन, श्रीमती श्यामा बहिन, सुश्री अर्चना बरला, सुश्री शारदा भंसाली, श्री दिनेश नाहटा एवं श्री महेश नाहटा ने अध्यापन सेवाएं दीं। प्रीति धाड़ीवाल को आदर्श छात्रा घोषित कर चल वैजयन्ती प्रदान की गई।

**गुलाबपुरा**—श्री स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा द्वारा श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रावक संघ अजमेर के तत्वावधान में १७वां स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर महावीर भवन अजमेर में दि. ८-६-८३ बुधवार से दि. १७-६-८३ शुक्रवार तक आयोजित किया गया। इसमें २८ ग्रामों-नगरों से ४३ स्वाध्यायियों व ४५ बालकों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन श्री जतनसिंहजी संचेती की अध्यक्षता में श्री हरिश्चन्द्रजी पारख (स. आयकर आयुक्त) द्वारा किया गया। मध्याह्न में आयोजित भाषणमाला में श्री आनन्दीलालजी मेहता, प्रो. चन्द्रसिंह जी चौधरी, मदनसिंहजी कूमट, डॉ. नरेन्द्र भानावत एवं चांदमलजी बाबेल प्रभृत्ति महानुभावों के संयम, तप, ध्यान, महावीर के सिद्धान्त, दान आदि विषयों पर ज्ञानवर्द्धक भाषण हुए। १५ जून को एक विचार गोष्ठी भी हुई, जिसमें 'आज के नव-युवक धर्म से विमुख क्यों?' विषय पर स्वाध्यायियों ने विचार रखे एवं सभी शिविरार्थियों के मध्य भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस शिविर में कुल ७६९४ सामायिकें, ८९ दयाव्रत, ३ आयंबिल व १ बेला की तपस्यायें हुईं। विशेष उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर परमश्रेष्ठ, ज्योतिषाचार्य, गुरुवर्य श्री कुन्दनमलजी म. सा. आदि सभी संतों का आशीर्वाद-मय सान्निध्य रहा एवं शास्त्रवाचन, प्रश्नोत्तर आदि में पूर्ण सहयोग रहा। शिविर का समापन-समारोह उद्योगपति श्री एम. आर. चौधरी के प्रमुख आतिथ्य

व श्री विमलचन्दजी लोढा (इन्जीनियर) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री सुगनचन्दजी रतनलालजी रांका की ओर से सभी को पुरस्कृत किया गया।

**—रतनलाल जैन**

**अजमेर**— श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति के तत्त्वावधान में अजमेर शाखा द्वारा ७ जून से १३ जून तक समीर शुभ कार्यालय में आयोजित बालिका धार्मिक नैतिक शिक्षण शिविर में विभिन्न क्षेत्रों की लगभग १४० बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर काल में सर्व श्री गुमानमलजी चौरड़िया, जयपुर, डॉ. सुषमा गांग, जोधपुर, चुन्नीलालजी मेहता, बम्बई, दीपचन्दजी भूरा देशनोक, डॉ. नरेन्द्र भानावत, जयपुर, भंवरलालजी कोठारी, बीकानेर व अजमेर के सर्वश्री रामनारायणजी चौधरी, गजेन्द्रकुमारजी जैन, माणकचन्दजी सोगाणी, प्रकाशजी जैन, श्रीमती मनमोहिनी जैन, श्री अनिलजी लोढा, उमरावमलजी ढड्ढा, लक्ष्मणजी भटनागर आदि ने जैन धर्म व दर्शन के विविध सिद्धान्तों पर विशेष व्याख्यान दिये। व्याख्यान माला का संयोजन डॉ. हीरादेवी बोरदिया इन्दौर ने किया और शिविर का संचालन किया महिला समिति की मन्त्री श्रीमती प्रेमलता जैन ने। समिति की अध्यक्षा श्रीमती सूरज देवी चौरड़िया जयपुर ने भी छात्राओं को सम्बोधित किया।

**आखी**— श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ अहमदनगर की ओर से महासती श्री विनय कंवरजी, इन्द्र कंवरजी, प्रमोदसुधाजी आदि ठाणा १४ के सान्निध्य में ३ मई से ५ मई तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ६५ छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन डॉ. कोठारी ने किया व समापन समारोह की अध्यक्षता श्री अमोलकचन्दजी पारख ने की।

## सुधर्म प्रचार मण्डल की विविध प्रवृत्तियाँ

**जोधपुर**—मण्डल के अन्तर्गत सुधर्म प्रशिक्षण संस्थान का नया सत्र १ जुलाई, १९८३ से आरम्भ हो रहा है। १८ से २० वर्ष के धार्मिक रुचि रखने वाले हायर सैकेण्डरी उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश देने की व्यवस्था है। आवास-भोजन, पढ़ाई आदि की निःशुल्क व्यवस्था के अतिरिक्त २००) रु. मासिक छात्रवृत्ति का भी प्रावधान किया गया है। आवेदन व नियमावली के लिये सम्पर्क करें—प्राचार्य, श्री सुधर्म प्रशिक्षण संस्थान, सिटी पुलिस, जोधपुर-३४२००१।

सुधर्म मण्डल की ओर से पर्युषण पर्वाराधना के लिये विभिन्न क्षेत्रों में स्वाध्यायी बन्धु भेजे जाते हैं। जो स्वाध्यायी बन्धु सेवा देना चाहें वे अपना नाम, योग्यता, पता व सेवा-क्षेत्र का उल्लेख करते हुए सम्पर्क करें। जो श्री संघ

अपने यहाँ पर्युषण काल में स्वाध्यायियों को आमन्त्रित करना चाहें वे भी स्थानकवासी जैन घरों की संख्या, पहुँचने का मार्ग इत्यादि का उल्लेख करते हुए अपने आवेदन-पत्र भेजें—संयोजक, श्री सुधर्म प्रचार मण्डल, सिटी पुलिस, जोधपुर–३४२ ००१।

श्री पारसमल मिलापचन्द जन सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित छात्रावास में कक्षा ९ से महाविद्यालय स्तर तक के स्था. जैन छात्रों को प्रवेश देने की व्यवस्था है। भोजन शुल्क १००) रु. मासिक रखा गया है। जरूरतमन्द मेधावी छात्रों के लिये छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था है। इच्छुक छात्र नियमावली व आवेदन-पत्र निम्न पते से मंगवाकर भरकर भेजें—संचालक, श्री पारसमल मिलापचन्द जैन, सेवा ट्रस्ट, छात्रावास, चाँदी हाल, जोधपुर–३४२००१।

## सेवा निवृत्त स्था. जैन अध्यापक एवं प्रौढ़ बन्धुओं के लिए स्वर्ण अवसर

धार्मिक जैन अध्यापकों की समाज में सर्वत्र कमी है उसकी पूर्ति के लिए नूतन योजना जुलाई, १९८३ से क्रियान्वित करने का निश्चय किया है। इसके अन्तर्गत रूचि रखने वाले, श्रद्धा सम्पन्न, सेवानिवृत्त अध्यापक और प्रौढ़ बन्धुओं को जैन दर्शन, तत्त्व ज्ञान, इतिहास, व्याकरणादि का प्रशिक्षण प्रदान कर धार्मिक शिक्षण देने के लिए जगह-जगह भेजा जा सकेगा। प्राय: यह देखा गया है कि सभी श्रीसंघ प्रौढ़ एवं अनुभवी धार्मिक अध्यापकों की मांग करते हैं ताकि उनका उपयोग बालक, बालिकाओं, पुरुषों व महिलाओं को ज्ञान सिखाने में हो सकता है। साथ में अपने अनुभव द्वारा सामाजिक प्रवृत्तियों का सुचारू संचालन भी किया जा सकता है।

इस योजना के अन्तर्गत जो सज्जन धार्मिक शिक्षण प्राप्त कर समाज सेवा का लक्ष्य रखते हों, उन्हें प्रवेश दिया जाएगा। प्रशिक्षण काल में आवास, निवास, भोजनादि की सुविधा के साथ ३००) रु० मासिक प्रदान किये जाएँगे। प्रशिक्षण काल तीन मास से छ: मास तक रहेगा। नियत पाठ्यक्रम पूर्ण होने पर जहाँ संस्था उपयुक्त समझेगी, वहाँ नियुक्त कर भेजेगी। मासिक पारिश्रमिक न्यूनतम ६००) रु० होगा। योग्यतानुसार अधिक दिलाने का लक्ष्य भी रहेगा। इच्छुक महानुभाव निम्न पते से पत्र व्यवाहर करें—

संयोजक,
**श्री सुधर्म प्रचार मण्डल**
सिटी पुलिस, जोधपुर–३४२ ००१ (राज.)

## श्री जिनदत्तसूरि मंडल (पंजीकृत) दादावाड़ी, अजमेर

### ऋण छात्रवृत्तियाँ

सदैव की भाँति इस वर्ष १९८३-८४ में भी श्वेताम्बर जैन छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा (मुख्यतः मेडीकल, इंजीनियरिंग व अन्य टेकनीकल विषय) हेतु ऋण छात्रवृत्तियाँ दी जावेंगी। दो रुपये धनादेश (मनीआर्डर) से भेजकर आवेदन-पत्र मंगवा लें। दिनांक १५-८-८३ के बाद प्राप्त होने वाले आवेदन-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा। जिन्हें ऋण छात्रवृत्तियाँ मिल रही हैं उन्हें भी दो रुपये भेजकर आवेदन-पत्र मंगवाकर उसे पूर्ण कर १५-८-८३ से पहले मंत्री के पास भेजना आवश्यक है। अधूरे आवेदन-पत्रों पर विचार नहीं किया जावेगा।

—**चाँदमल सीपाणी**
मानद मंत्री
श्री जिनदत्तसूरि मण्डल, दादावाड़ी, अजमेर (राज.) ३०५ ००१

## महावीर इन्टरनेशनल जयपुर का पुतली-प्रत्यारोपण कार्यक्रम

**जयपुर**—महावीर इन्टरनेशनल जयपुर द्वारा नेत्र विशेषज्ञ सेवाभावी डॉक्टरों के माध्यम से करीब दो सौ व्यक्तियों को निःशुल्क मृत इन्सान की आँखों से कोर्निया निकाल कर, उनके खराब कोर्निया की जगह लगाया गया। इसे कोर्निया प्रत्यारोपण या पुतली-प्रत्यारोपण कहा जाता है। जब व्यक्ति की आँख का कोर्निया खराब हो जाता है तब उसे दिखाई नहीं देता है। उस खराब कोर्निया को हटाकर उसकी जगह नया पारदर्शक कोर्निया लगाने पर ज्योति आ जाती है। कोर्निया प्राप्त करने का उपर्युक्त तरीका यह है कि मनुष्य के मरने के तुरन्त बाद याने २-४ घंटे के भीतर ही उसकी आँखों को निकाल कर नेत्र कोष में रेफ्रिजरेटर में निश्चित तापमान पर सुरक्षित रखा जाता है। डॉक्टरों का मत है कि कई महीनों तक विशेष तरीके से नेत्र कोष में इसे रखा जा सकता है। महावीर इन्टरनेशनल जयपुर का यह पुतली-प्रत्यारोपण का सफल प्रयोग काफी सराहनीय व प्रशंसनीय है। मरीज को निवास, भोजन, दवाओं आदि निःशुल्क दी जाती हैं।

—**मानव मुनि**

## श्री जैन महिला उद्योग केन्द्र में प्रशिक्षण शिविर

**जयपुर**—श्री आत्मानन्द सभा सवन, घीवालों का रास्ता, जयपुर में संचालित श्री जैन महिला उद्योग केन्द्र के तत्वावधान में २ जून से १२ जून तक

ग्यारह दिवसीय विशेष प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का संचालन श्रीमती पारसदेवी कर्णावट की अध्यक्षता में हुआ जिसमें विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री तैयार करने का प्रशिक्षण जैन समाज की महिलाओं को दिया गया। केन्द्र की अध्यक्षा श्रीमती डॉ० शान्ता भानावत एवं सचिव श्रीमती शान्तिदेवी टांक ने बताया कि गत वर्ष भर केन्द्र की व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित होती रही है और जैन महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने में यह संस्था कार्य कर रही है। शिविर का उद्‌घाटन श्री गुमानमलजी चौरड़िया ने किया एवं मुख्य अतिथि श्री कपिलभाई शाह थे। अध्यक्षता श्री रणजीतसिंहजी कूमट ने की। केन्द्र की अभिनव सेवाओं के लिए श्री राजरूपजी टांक एवं श्री मोतीलालजो भडकतिया का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया एवं स्व० श्री हरिश्चन्द्रजी गोलेछा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शिविर का समापन समारोह श्री हीराचन्दजी चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री पी० सी० सिंघवी थे। महान् तपस्विनी श्रीमती इचरजबाई लूनावत ने आशीर्वाद प्रदान किया। केन्द्र के वरिष्ठ सदस्य श्री शांतिकुमार सिंघी ने भावी योजना पर प्रकाश डाला।

## संक्षिप्त समाचार

**सिरोही** :—जैन रिलीफ सोसायटी, अजीत बिहार, शान्ति नगर द्वारा इस क्षेत्र के वीरवाड़ा, कालन्द्री, तंवरी आदि केन्द्रों पर अकाल राहत कार्यक्रम के अन्तर्गत पशुओं को चारा एवं हरी ज्वार वितरण, कुपोषित बच्चों को गुड़-चने का वितरण तथा आदिवासी एवं अनुसूचित जाति बहुल गाँवों में जरुरतमन्द परिवारों को मासिक अन्न वितरण का कार्य बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। सोसायटी के मैनेजिंग ट्रस्ट्री डॉ० सोहनलाल पटनी ने समाजसेवी कार्यकर्ताओं से इस क्षेत्र में आकर सहयोग देने की अपील की है।

**नई दिल्ली** :—राष्ट्र संघ मुनि श्री नगराजजी के सान्निध्य में बैसाख शुक्ला दशमी को भ० महावीर का कैवल्य दिवस मनाया गया। २८ मई को मुनि श्री के सान्निध्य में ही "जैन संस्कृति और जैन समाज" विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता थे—भू० पू० सांसद श्री ओंकारलालजी बोहरा।

**लन्दन** :—जैन एसोसियेशन ऑफ यूनाईटेड के अध्यक्ष डॉ० सुरेन्द्र के० धारीवाल ने अपने परिपत्र में बताया है कि दिनांक १ एवं २ अक्टूबर, ८३ को द्वितीय विश्व जैन कॉंफ्रेन्स लन्दन में आयोजित की जा रही है। अनेक जैन विद्वान्, कार्यकर्ता एवं उद्योगपति इस कॉन्फ्रेन्स में भाग लेंगे। कॉन्फ्रेन्स में

भाग लेने वाले विशेष सम्पर्क कॉन्फ्रेन्स ऑफिस के इस पते पर करें—६८८, रॉमफर्ड रोड, लन्दन-ई, १२५ एजे।

**रतलाम** :—यहाँ पर आचार्य प्रवर श्री जयमलजी म० का स्मृति-दिवस बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुनि श्री विनयकुमारजी "भीम" द्वारा लिखित दो नाटकों का विमोचन भी हुआ। रतलाम श्री संघ की ओर से मुनि श्री विनयकुमारजी "भीम" को **व्याख्यान वाचस्पति** तथा श्री महेन्द्र मुनिजी दिनकर को **"युवा धर्म प्रचारक"** पद से अलंकृत किया गया।

## शोक–संवेदना

### उप प्रवर्तक स्वामी श्री ब्रजलालजी म० सा० के प्रति आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की श्रद्धांजलि

**जयपुर** :—इन्दौर से प्रकाश दाल मिल द्वारा तार-टेलीफोन से श्री उगरसिंहजी सा० बोथरा के मार्फत सूचना पाकर कि उप प्रवर्तक स्वामी श्री ब्रजलालजी म० सा० का २ जुलाई, १९८३ को धूलिया में ८२ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया, व्याख्यान बंद रखा गया और दिनांक ३ जुलाई को जयपुर में आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के सान्निध्य में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें संवेदना प्रकट करते हुए श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने निम्न भाव फरमाये।

स्वामी श्री ब्रजलालजी म० सा० आचार्य श्री जयमलजी म० की परम्परा के वयोवृद्ध स्थविर संत थे। आपने ६९ वर्ष पूर्व स्वामी श्री जोरावरमलजी म० के पास दीक्षा अंगीकार की थी। आप सरलता, सात्विकता सेवा और आगम रसिकता की प्रतिमूर्ति थे। युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी के आप ज्येष्ठ गुरु भ्राता थे। शास्त्रानुकूल प्राचीन परम्परा के आप सदैव हामी रहे। आचार्य श्री ने कहा कि जैन परम्परा में मृत्यु शोक का कारण नहीं। आज ब्रजलालजी म० सा० पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है पर उनका गुणनिष्पन्न जीवन और संयम साधना हमारे लिये प्रेरणादायी है।

आचार्य श्री ने युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० सा० आदि मुनियों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि पूज्य श्री जयमलजी म०

सा० की त्याग-तप-प्रधान परम्परा में युवाचार्य श्री ने संघ सेवा का विशिष्ट दायित्व प्राप्त किया है। वे जब जयमलजी म० सा० की परम्परा के ही साधुओं के नायक नहीं रहकर श्रमण संघ के नायक हैं अतः स्थानकवासी समाज की परम्परा के अनुसार श्रमण वर्ग में शास्त्रानुकूल आचार धर्म की ज्योति सम्यक् चमकती रहे, शिथिलाचार का प्रवेश न हो, इस बाबत अपने साहसिक कदमों को बढ़ाते हुए आचार्य श्री जयमलजी म० के विशिष्ट साधना के तेज को जाग्रत रखेंगे तो स्वर्गीय जोरावरमलजी म० एवं श्री ब्रजलालजी म० की कीर्ति कौमुदी को अधिक चमका सकेंगे, जो हम सब के लिये प्रमोद का कारण होगा।

तत्पश्चात् चतुर्विध संघ ने चार-चार लोगस्स का काउसग्ग कर दिवंगत आत्मा के लिये चिर शान्ति की कामना की। भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

## आदर्श श्राविका श्रीमती नैनोकँवर का निधन

**मद्रास** :—समाज के अग्रणी सेवाभावी पद्मश्री मोहनमलजी चौरड़िया की धर्मपत्नी श्रीमती नैनीकँवर का एक जून को ८० वर्ष की आयु में आकस्मिक दुःखद निधन हो गया। आप सेवा, करुणा और स्नेह की साक्षात् मूर्ति थीं। दूसरों के दुःखों से द्रवित होकर आप सदैव उनकी सेवा के लिये तत्पर रहती थीं। वैभव सम्पन्न परिवार में जन्म लेकर भी आपका जीवन सादगीपूर्ण और विनम्रता से ओतप्रोत था। धर्म के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। साधु-सन्तों की सेवा में भी आप आगे रहती थीं। आपकी वाणी में माधुर्य और व्यवहार में आत्मीयता थी। आपकी इच्छानुसार आपके नेत्र दान दे दिये गये। आपके निधन से महिला समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। मद्रास जैन संघ ने शोक सभा आयोजित कर आपके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है।

## पूज्य श्री रूपचन्दजी म० का स्वर्गवास

**भवाऊ ( कच्छ )** :—लींबड़ी सम्प्रदाय के स्था० जैनाचार्य पूज्य श्री रूपचन्दजी म० का १० जून, १९८३ को ९६ वर्ष की आयु में समाधि पूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपने ८१ वर्ष तक संयमी जीवन का पालन किया। आपकी जन्म एवं दीक्षा भूमि भी भवाऊ ही थी। आपकी स्मृति में जैन पाठशाला बनाने का निर्णय लिया गया। गुजरात के विभिन्न जैन संघों ने आपके प्रति हार्दिक

श्रद्धांजलि अर्पित की है। आपका जन्म सं० १६४४ में हुआ। १४ वर्ष की अवस्था में आपने आचार्य गुलाबचन्दजी स्वामी एवं कविवर पूज्य श्री वीरजी स्वामी के पास दीक्षा अंगीकृत की। सं० २०२८ में आप लींबड़ी सम्प्रदाय के आचार्य बने। आपकी आज्ञा में १७ मुनि और १७८ महासतियाँजी वर्तमान में हैं। आप प्राकृत-संस्कृत एवं आगम शास्त्रों के गम्भीर अध्येता और व्याख्याता थे। आपके निधन से भारतीय सन्त समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

## श्री जिनेन्द्रवर्णी का स्वर्गवास

सुप्रसिद्ध जैन संत जिनेन्द्रवर्णी का २४ मई को ईशरी बाजार (गिरिडीह) में संलेखनापूर्वक स्वर्गवास हो गया। हाल ही में आपने आचार्य श्री विद्यासागरजी से क्षुल्लक दीक्षा अंगीकृत की थी और आपका नाम सिद्धान्तसागर रखा गया। आप जैन तत्त्व दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान् थे। "जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश" ४ भाग व "सम्मण सुत्तं" आपकी उल्लेखनीय देन है। "सम्मण सुत्तं" की रचना आपने आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा से की थी।

**जयपुर** :—२१ जून की रात्रि को आमेर के पास जीप-ट्रक की भिड़न्त में श्री सरदारसिंह जैन का २६ वर्ष की अल्पायु में असामयिक दुःखद निधन हो गया। श्री जैन ने जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान में रहकर जैनधर्म दर्शन व प्राकृत का अध्ययन करने के साथ-साथ संस्कृत में प्रथम श्रेणी में एम० ए० किया था। वे सेवाभावी, कर्मठ कार्यकर्त्ता थे और धार्मिक सामाजिक प्रवृत्तियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। अभी १५ माह पूर्व ही उनका विवाह हुआ था। वे राजस्थान खादी ग्रामोद्योग संघ में पर्यवेक्षक के पद पर कार्यरत थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक विह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

—सम्पादक

# साभार प्राप्ति स्वीकार

## जिनवाणी आजीवन सदस्यता रु. २०१

१. श्री नेमीचन्दजी सुराणा–तिनसुकिया (आसाम)
२. श्री भूटाजी मिश्रीलालजी–बम्बई
३. श्री जौहरीलालजी बरड़िया–विशाखापटनम

## भेंट एवं सहायता

१०१) श्री जीतमलजी कोठारी, जयपुर, अपने पुत्र राजेशजी कोठारी के शुभ विवाह के उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

१००) श्री गौतमचन्दजी ज्ञानचन्दजी गेलरा, मद्रास, चिरु संगीता का शुभ विवाह श्री विजयकुमारजी दुगड़ के साथ दि. २१-५-८३ को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

५१) श्री सम्पतलालजी बागमार, जबलपुर, धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी बागमार के वर्षीतप के पारणा के उपलक्ष में भेंट ।

५१) श्री चाणोदिया एण्ड सन्स, इन्दौर, श्री सुनिलकुमार सुपुत्र श्री वर्धमान जी चाणोदिया उम्र २५ वर्ष में देहावसान होने की स्मृति में भेंट ।

२१) श्री जशकरणजी सुरेन्द्रकुमारजी डागा, टोंक, परम पूजनीय आचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के एवं महासती मंडल सहित टोंक पधारने की खुशी में भेंट ।

११) श्री जगन्नाथजी जैन, बम्बई, सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया जिसकी खुशी में सप्रेम भेंट ।

११) श्री किशोरीलालजी जैन, अलवर, सुपुत्र अजितकुमार की शादी के उपलक्ष में सप्रेम भेंट ।

११) श्री गौतमचन्दजी सकलेचा, मद्रास, भाई नरेशकुमार सकलेचा, जोधपुर की शादी की खुशी में भेंट ।

११) श्री गौतमचन्दजी सकलेचा, मद्रास, आचार्य श्री के दर्शन चौथ के बरवाड़े में करने की खुशी में सप्रेम भेंट ।

११) श्री जानकीलालजी मिश्रीलालजी बोहरा, भवानीमंडी, श्री मिश्रीलाल जी के सुपुत्र अशोककुमार का सौ. कां. लाडकुंवर सुपुत्री रतनलालजी लोढ़ा, इन्दौर के साथ विवाह सम्पन्न की खुशी में भेंट।

## स्वाध्याय संघ को सहायता

५१) श्री हंसराजजी डिगोप्रसादजी जैन, सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय संघ को सहायतार्थ भेंट।

२१) श्री श्वेताम्बर जैन स्थानक वासी संघ, खेरली (अलवर), स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

### साहित्य प्रकाशन–आजीवन सदस्यता रु. ५०१

१. श्री सूरजमलजी मेहता, अलवर

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल सहायता

२०१) श्री उमरावसिंहजी नाहर, जयपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. कान्ता कुमारी के विवाहोपलक्ष में मण्डल को सप्रेम भेंट।

—मंत्री

# आवश्यक निवेदन

**जयपुर**—परम पूज्य आचार्य प्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. का संवत २०४० के चातुर्मास हेतु जयपुर नगर-सीमा में पदार्पण हो गया है। कोटा के पश्चात् सवाईमाधोपुर, टोंक, निवाई आदि क्षेत्रों में साधक वर्ग को वीरवाणी से आप्लावित करते हुये आप पधार रहे हैं। जहां-जहां आपका पदार्पण होता है, साधक वर्ग में एक नई चेतना का संचार होता है।

जयपुर संघ यहां इस वर्ष बाहर से पधारने वाले स्वधर्मी बन्धुओं की आवास एवं भोजन व्यवस्था के लिये पूर्ण उत्साहित है वहां आध्यात्मिक क्षेत्र में भी पीछे नहीं रहना चाहता। सभी वर्ग में ऐसे योगीराज चातुर्मास का पूर्ण लाभ उठाने की भावना दृष्टिगोचर हों रही है।

बाहर के विभिन्न संघों के भाई-बहिनों से निवेदन है कि चातुर्मास में यहां पधार कर विशेष धर्म ध्यान का लाभ लेवें और हमें सेवा का अवसर दे।

**गुमानमल चौरड़िया**
संघ मंत्री
लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर

# जिनवाणी

□
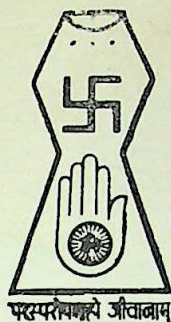
**जह मम ण पियं दुक्खं,**
**जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं ।**
**न हणइ न हणावेइ अ,**
**सम्मणइ तेण सो समणो ।।**

अनु० १२६

जिस प्रकार मुझे दुःख प्रिय नहीं है, उसी प्रकार अन्य सभी प्राणियों को दुःख प्रिय नहीं है। जो ऐसा जानकर न खुद हिंसा करता है, न किसी से हिंसा करवाता है वह समत्वयोगी साधक ही सच्चा श्रमण—साधु है।

□

**अगस्त, १९८३**
वीर निर्वाण सं० २५०९
आषाढ़, २०४०

**वर्ष : ४० • अंक : ८**

मानद सम्पादक :
**डॉ० नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.**

सम्पादन :
**डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,**
**एम. ए., पी-एच. डी.**

प्रबन्ध सम्पादक :
**प्रेमराज बोगावत**

संस्थापक :
**श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़**

प्रकाशक :
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर—३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
**फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
जयपुर—३०२००३

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

# ❋ अनुक्रमणिका ❋

## ☐ प्रवचन / निबन्ध ☐



## ☐ कथा / प्रसंग ☐



## ☐ कविता ☐



## ☐ प्रतिवेदन ☐



## ☐ स्तम्भ ☐

**प्रवचनामृत :**

# शिक्षा के साथ संस्कार बढ़ें !*

□ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

**प्रार्थना :**

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं, परंपरगयाणं ।
लोअगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ।।
जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ।
तं देवदेव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ।।

भगवान् महावीर के चरणों में नमन किया गया है । संसार के प्राणी मात्र का कल्याण चाहने वाले और कल्याण का सन्देश देने वाले तथा स्वयं संसार का कल्याण करने में कदम-कदम चलने वाले ऐसे यदि संसार में कोई सिद्ध पुरुष हो सकते हैं तो जिनेन्द्र देव के अलावा कोई इस पद को पाने वाला, इस पद पर चलने वाला और इस पद पर सही रूप से अधिकार करने वाला नहीं हो सकता है और यही कारण है कि हम सर्वाधिक उनको वंदन करते हैं। वन्दन इसलिये कर रहे हैं कि अपने जीवन में और अपने आचरण में तथा अपने जीवन के व्यवहार में धर्म को अमली रूप दे सकें । इसलिये जिन्होंने अमली रूप दे दिया उनको प्रणाम करते हैं ।

**पंडित वही जो ज्ञान को आचरण में उतारे :**

उन्होंने कह के अपनी जिन्दगी पूरी नहीं की—महावीर ने कह के जिन्दगी पूरी नहीं की, लेकिन करके पूरी की । अपने जीवन के पवित्र आचार से देव, देवेन्द्र, मानवेन्द्र सबको उन्होंने चकित कर दिया । विश्व में बड़ा वही है, पंडित वही है, चतुर वही है जो ज्ञान को आचरण में परिणत कर सके । यदि आज किसी ज्ञान को जोड़ने की आवश्यकता है तो ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है । भौतिक ज्ञान की ज्ञान शालाएँ, शिक्षण संस्थान, हाई स्कूलों से युनिवर्सिटी तक

---

*जलगांव चातुर्मास में २६ सितम्बर, १६८२ को दिया गया सम्पादित प्रवचन ।

सैकड़ों की तादाद में हैं, ऐसा कहूं तो संभवतः अपनी भाषा में दोष लगने जैसी बात नहीं है। अलग-अलग कृषि विद्यालय, अलग-अलग साइंस कालेज, अलग-अलग इंजीनियरिंग कालेज, वाणिज्य कालेज, अलग-अलग आर्ट्स कालेज कई हैं। इस तरह हर विषय को लेकर देश में ऐसी शिक्षण शालाएँ हैं और देश की प्रजा को दूसरे देशों के मुकाबले में अपने आपको खड़ा रखने के लिए शिक्षण के क्षेत्र में कम प्रगति की हो, ऐसी बात नहीं है। प्रगति चल रही है।

लेकिन इतनी प्रगति होने पर भी देश और देशवासी शक्ति पाकर बुद्धि में बढ़ सकें, शील में बढ़ सकें, नैतिकता की ज्योति जगा सकें यदि इस सवाल का जवाब मांगे तो उत्तर क्या मिलेगा ? इसलिये केवल जैन समाज ही नहीं, सरकार को भी यह आवश्यक लग रहा है कि शिक्षा पद्धति में परिवर्तन किया जाय। शिक्षा शास्त्री हर साल इसका चिन्तन करते हैं। वर्धा में एक योजना भी तैयार हुई वर्षों पहले, लेकिन उसको कार्य रूप में लाना टेढ़ी बात है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में करोड़ों रुपये प्रति वर्ष शिक्षण में खर्च होते हैं।

अकेला एक सेठ क्या कर सकता है, एक व्यक्ति अकेला क्या कर सकता है, राज्य जितना कर सकता है, उतना नहीं कर पाता है इसलिये समाज के सामने, व्यक्तियों के सामने, देश के हित चिन्तकों के सामने सवाल आया कि शिक्षण में पवित्रता लाने के लिये और संस्कार की ज्योति जगाने के लिए कोई काम हो।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुछ पुस्तकें पढ़ने का मौका आया। रवीन्द्रनाथ टैगोर देश के एक महान् व्यक्ति माने जाते हैं। देश में ही नहीं, विदेशों में भी उनकी ख्याति है। उन्होंने बंगाल में शान्ति निकेतन नाम की शिक्षण संस्था खोली। शिक्षण कैसे देना इस सम्बन्ध में उनकी पद्धति निराली समझी गई। उन्होंने कहा कि बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्ज की आवश्यकता नहीं है। पेड़ों के नीचे, प्रकृति के खुले मैदान में बच्चे-बच्चियों को शिक्षण देना चाहिये। प्रकृति की गोद में बैठकर ही राम और कृष्ण ने शिक्षा पाई, उसी तरह से शिक्षा देनी चाहिये। उनका तो स्वप्न ही निराला है। मैं समझता हूं कि रवीन्द्रनाथ टैगोर की शान्ति निकेतन शिक्षा पद्धति अनूठी रही है, लेकिन उसके अनुसार चलना मुश्किल है।

हिन्दुस्तान के नेताओं में शिक्षण पर विचार चलता रहा। फिर मालवीयजी के मन में संकल्प आया कि देश की संस्कृति में ढली हुई शिक्षा देनी चाहिये। बनारस जैसे विद्या के केन्द्र स्थान में उन्होंने एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। उसके लिए बजट बना। खर्च की पूर्ति के लिए उन्होंने भिक्षा मांगी। बड़े-बड़े राजाओं के पास गये, राणाओं के पास गये। देश के धनी-मानी

व्यक्तियों के पास गये। वह एक प्रकार से अच्छा टाइम था। सबने अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार सहयोग दिया। मालवीयजी ने सोचा कि मुझे अपने लिए काम नहीं करना है, देश के लिए करना है। देश की अन्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा बनारस विश्वविद्यालय को आज भी गौरव का पद प्राप्त है। लेकिन इस समय की हवा ने इस विश्वविद्यालय के वातावरण को गुदला बनाने में कसर नहीं रखी, वह भी अछूता नहीं रहा।

जैन समाज के विद्यार्थियों को हमारा धार्मिक शिक्षण कैसे दिया जाय, जैन समाज की संस्कृति कैसी है, इस सम्बन्ध में कुछ थोड़े शब्दों में कहूंगा। बहुत महीनों से बोलता आया हूं, लम्बा बोलने की इच्छा नहीं है। सोचा आज रविवार है, नहीं बोलूंगा तो लोग समझेंगे कि महाराज बीमार हो गये। बीमारों में नम्बर नहीं आवे, इसलिये बोल रहा हूं।

**जैन संस्कृति की विशेषता :**

जैन संस्कृति की दो धाराएँ हैं एक तो आरम्भ-परिग्रह को घटाने वाली और दूसरी विषय-कषाय को घटाने वाली। हमारी शिक्षा में, हमारे उपदेश में, हमारे आदेश में, हमारे संदेश में, हमारी प्रेरणा में जैन संस्कृति की यह खूबी आनी चाहिये और इसको काबू में लाने के लिए इस प्रकार का शिक्षण दिया जाय जो इस संस्कृति को बढ़ावा दे सके, इसे सुरक्षित रख सके। ऐसे संस्कार देने के लिये समाज को बड़ी ताकत के साथ काम करने की आवश्यकता है।

मुझे याद आता है, राजस्थान के राजनीतिक क्षेत्र के नेता गोकुलभाई भट्ट एक दिन उपस्थित हुए और कहने लगे कि महाराज, देश के शिक्षण में सुधार करने की आवश्यकता है। लेकिन आपके जैन समाज की सामाजिक संस्थाएँ यदि चाहें तो कुछ काम कर सकती हैं क्योंकि जैन समाज के बीच में कुछ बुराइयाँ जन्म से नहीं हैं। ध्यान देना, वास्तविक बात कह रहा हूं। जैन समाज में जन्मा हुआ बालक बहुत सी बुराइयों से ही बचा हुआ रहता है।

**मानसिक बुराइयाँ :**

अब रही मानसिक बुराइयाँ जैसे क्रोधी होना, ममताभाव ज्यादा होना, लालच ज्यादा होना, घमण्ड ज्यादा होना। ये सब मानसिक दोष हैं। ये केवल जन्म मात्र से सम्बन्धित नहीं हैं। जन्म हो गया लेकिन यह दोष नहीं रहे, आपके शरीर का रक्त मांस से सम्बन्ध नहीं रहे, यह सम्भव नहीं। मोटे-मोटे दोष जैसे नशा वगैरा खुले रूप में नहीं करें, किसी को खुले रूप में गाली नहीं दें, चोरी नहीं करें, किसी को मार देना, शूट कर देना, किसी के घर में आग लगा देना वगैरा-वगैरा मोटे-मोटे दोषों से इस जाति में, कुल में जन्म लेने वाला

बच जाता है। मोटे-दोषों से तो बच गया, लेकिन अब बचना किससे है? कुछ मानसिक दोष आपके रग-रग में घर कर गये हैं। जैसे आरम्भ-परिग्रह घटाने की दृष्टि चाहिये पर उसकी जगह आरम्भ-परिग्रह बढ़ाने की वृत्ति होगी।

एक हिन्दू परिवार में जन्मा हुआ, ईश्वर भक्त कहलाने वाला कहेगा कि यह जमींदारी, इण्डस्ट्री, करोड़ों की सम्पत्ति किसकी है, यह सब भगवान की है या कहेगा कि महाराज सब आपरो है। ओ टाबर किणरो है तो कहेगा कि ओ टाबर आपरो है। ऐसा कहने वाले हिन्दू परिवार के हजारों भाई-बहिन हैं। वे समझते हैं कि म्हारो तो कुछ नहीं है म्हें तो भगवान-रे अर्पण हो चुक्याहां। ऐसा समझने के कारण उन्होंने बताया कि ६०-७० वर्ष का हो गया, वह चाहता है कि अब तो हरिद्वार में या गंगा के किनारे जाकर बैठने की इच्छा है। राजस्थान के भाई कहेंगे कि पोकरजी (पुष्करजी) जाकर बैठने की इच्छा है। गले में एक कण्ठी डाली और छोटी-मोटी कुटिया बनाकर हजारों लोग बाल बच्चों को छोड़कर कहां जाते मिलेंगे? उन हजारों लोगों में से कई लोग श्रीमंत घराने के होंगे, कई अवकाश प्राप्त छोटे-मोटे अधिकारी, पोस्ट मास्टर वगैरा होंगे। पूर्व में हजारों का वेतन पाने वाले ऐसे कई धर्मी लोग हैं जो वहां जाकर हरि का नाम स्मरण करते हैं।

**बढ़ती हुई ममता :**

हम थोड़ी नजर उठाकर देखें हमारे भक्त मण्डल की तरफ, जैन कहलाने वाले बेकार बैठने वाले भाइयों की तरफ। वे कहेंगे—बापजी, अब तक तो करण रो मौको हो, अब कठे जाकर बैठां, म्हारी सेवा कुण करसी, बीमार हो जावां तो सेवा कुण करेला? जहाँ ममता कम होनी चाहिये, उस समाज के सदस्यों की ममता और बढ़ गई। उनसे पूछा जाय कि रेल में चलते-चलते बीमार हो गये, एक्सीडेन्ट हो गया, या हार्ट में दौरा पड़ गया और रेल में मर गये तो कौन सम्भालेगा? ऐसे किस्से नहीं हुए हैं क्या? ममता बढ़ने से हमारी स्थिति कैसी बन गई है? आज कौन किसको सम्भालता है? समाज माता है, समाज पिता है। दूसरे सम्भालेंगे तो क्या भाई-बन्धु नहीं सम्भालेंगे?

इसलिये नतीजा यह है कि सामाजिक संस्थाएँ खड़ी हो जाती हैं। लेकिन संस्थाओं में काम करने वाले मिलते नहीं, इसलिये पगारदार रखने पड़ते हैं। वे टाइम पर काम करें न करें, पगारदार की तरह काम करेंगे लेकिन घर समझ कर या अपना ही काम समझ कर करने वाले थोड़े ही लोग मिलेंगे। सभी ऐसे मिलें जरूरी नहीं। पगारदार रखेंगे वह अपने बाल बच्चों और कुटुम्ब परिवार की भी सेवा करता है। समाज के लोग पैसा देकर छुट्टी पा लेते हैं। स्वयं को टाइम देने का मौका नहीं। तब संस्थाएँ कैसे चलेंगी? संस्कार देने का प्रण

कर आयेंगे लेकिन संस्कार कैसे आयेंगे और बच्चे और मास्टर कैसे तैयार होंगे ? खास करके लौकिक शिक्षा देने के लिये तो दूसरे प्रदेशों से या विलायत से भी शिक्षक मंगा लेंगे लेकिन धार्मिक शिक्षा देने के लिये कहां से आयेंगे ?

**शिक्षा बढ़ी पर संस्कार नहीं :**

जैन धर्म के संस्कार विषय-कषाय को घटाने वाले हैं लेकिन आज की स्थिति में विषय-कषाय बढ़ रहे हैं। विषय का मतलब है शब्द में, रूप में, गंध, स्पर्श आदि पांच इन्द्रियों की तरफ आकर्षण बढ़ रहा है। गांव में पढ़े हुए लड़कों में विषय के प्रति आकर्षण ज्यादा होगा या शहर के पढ़े लिखे में ज्यादा होगा ? शहर वाले में ज्यादा होगा।

अच्छा पहनना, अच्छा खाना-पीना, रंग-बिरंगे कपड़े धारण करना, बढ़िया महल, कोठी या बंगला सजाना, यह रोग गांव के पढ़े-लिखे में ज्यादा होगा या शहर के पढ़े लिखे में ज्यादा होगा ? यह निर्णय आपसे ही पूछूंगा। तो क्या तरक्की हुई विषय घटाने की ?

दूसरा नम्बर लें कषाय का। गांव के मिडिल स्कूलों में, हाई स्कूलों में पढ़ने वाले लड़के-लड़कियों में आपसी झगड़ा, किसी को मारना, छुरा भौंकना आदि की घटनाएं अधिक होती हैं या शहर में पढ़ने वाले लड़कों में अधिक होती हैं ? इसका क्या कारण है, क्या कभी आपने सोचा ? तब भी शिक्षा बढ़ी है और इस पर होने वाला खर्चा भी लाखों-करोड़ों में बढ़ा है, विज्ञान की लाइट में भी शिक्षा बढ़ी है और बढ़ रही है। लेकिन साथ ही साथ अनाचार, लालच, मारपीट की भावना क्यों बढ़ रही है ? तो कहना होगा कि शिक्षा बढ़ी लेकिन संस्कारहीन बढ़ी।

**शिक्षा के साथ संस्कार बढ़ें :**

आज क्या जैन समाज और क्या वैदिक समाज, हर संस्था के लिये जरूरी हो गया है कि शिक्षा के साथ संस्कार नहीं बढ़ाओगे तो गहराई के साथ सोचना होगा कि शिक्षा वरदान के बजाय अभिशाप हो जायगी।

मेरा कहना विचारणीय लगेगा और आपके दिमाग में यह बात चक्कर काटेगी कि शिक्षा अभिशाप कैसे है क्योंकि शिक्षा तो वरदान होनी चाहिये। लेकिन गहराई से सोचेंगे तो मालूम होगा कि अभिशाप कैसे है। क्योंकि आज के विज्ञान में, शिक्षा में जीवन निर्माण करने के तत्त्व कम हैं और ध्वंस अथवा विनाश करने के तत्त्व अधिक हैं। शिक्षा पद्धति का कुछ रूपान्तरण करना होगा।

धार्मिक शिक्षा भी बुजुर्ग शिक्षकों द्वारा दी जानी चाहिये जिनके क्रोध

और मान शान्त हों, वासना शान्त हो। ऐसे चुने हुए शिक्षक और शिक्षिकाओं को धार्मिक संस्थाओं के साथ जोड़ना पड़ेगा। जैसे हाई स्कूलों के शिक्षक जवान होते हैं परन्तु बाल मन्दिरों के शिक्षक वृद्ध होते हैं। वृद्ध होने के कारण शान्त स्वभाव के होते हैं और बच्चों-बच्चियों को धीरज के साथ इशारा करके एक नई दिशा देते हैं। मुझे याद आती है उस युग की बात जहाँ मैंने देखा कि सैंकड़ों बालक-बालिकाएं एक क्लास से दूसरी क्लास में जा रहे थे, जूतों की आहट नहीं हो, इस ढंग से चल रहे थे। जरासी भी आवाज हो तो इशारे से समझाते थे, बोलने का काम नहीं। मुझे ताज्जुब हुआ कि जहां भारतीय जैन समाज की संस्था में छुट्टी होने पर शोर शुरू हो जाता है। मैं सोचने लगा कि भारतवर्ष की संस्कृति में और धार्मिक शिक्षण जगत् में इस प्रकार के संस्कार देने की बात सोची जाय तो हमारा बहुत कुछ काम हो जाता है। शिक्षक लोग उपदेश देते हैं कि उनको क्रोध और मान कैसे आता है, क्रोध का क्या फल होता है, रात्रि भोजन से क्या हानि है, यह प्रेक्टिकल ट्रेनिंग शिक्षण के माध्यम से मिल सकती है।

आज के समय में संस्कार सम्पन्न शिक्षा देने से ज्ञान मिलने के साथ-साथ मन लगेगा, तन लगेगा, धन का योग मिलेगा। रिटायर्ड लाइफ वाले भाई सोचलें कि हमको घर में नहीं बैठना है। वे भी बच्चे-बच्चियों के बीच में जीवन बिताना शुरू करदें तब क्या हो सकता है।

आज हमारे संघ के हजारों युवक देश की सार्वजनिक संस्थाओं में काम करते हैं। जैन समाज के युवक बाहर काम करते हैं लेकिन संघ में काम करने का अवसर नहीं मिला। उन लोगों को संघ और संस्था के प्रति प्रेम दिखाकर उसमें लगना चाहिये।

**सच्ची सेवा :**

जनसेवा किस तरह से करेंगे? किसी को आँख देंगे क्या? भगवान महावीर भी आँख देते थे। उनका विशेषण है 'चक्खुदयाणं'। एक सन्त चक्षु दान करें तो ५०० अंधों को आँख दिलादें। किसी को आंख दिला देना, यह द्रव्य सेवा है। भाव सेवा आगे बताई है। द्रव्य सेवा से पुण्य कमा सकते हैं, लेकिन शासन सेवा से सबसे पहले पुण्य के साथ निर्जरा होती है। कर्म हलके होंगे और अशुभ कर्मों का आवागमन रुकेगा, संवर होगा तो पुण्य जरूर होगा। स्वयं तिरेंगे और दूसरों को भी तारेंगे। इसलिये इस सच्ची सेवा को तन से, मन से, धन से करें। सच्ची सेवा करनी है तो यह समझिये कि समाज मेरा घर है, ये लोग मेरे भाई हैं और स्त्रियाँ मेरी बहिनें हैं।

वास्तव में यह तत्त्व, ये विचार और संस्कार अमली रूप में आ जायं

तो जैन समाज खुद शिक्षण देने वाला बनेगा। आप अपने मन से शासन सेवा के लिये आगे बढ़ें। शासन सेवा किसी व्यक्ति की नहीं, कौम की नहीं, छोटे-मोटे प्रदेश की नहीं, सारे विश्व के प्राणीमात्र की सेवा है। क्योंकि हमारा जैन धर्म सर्वोदय तीर्थ है। सबका उदय चाहता है। गरीब झोंपड़ी वाले का भी, पक्के मकान वाले का भी, पैसे वाले का भी और सेठ और गरीब का भी। सेठ और गरीब दोनों का उदय चाहने वाला ऐसा कोई है तो जैन समाज है। सही रूप में सच्चा स्वरूप संसार के सामने जागृत करें तो आपके सामने समाज और राष्ट्र का गौरव बढ़ेगा। जो भाई, खास करके युवा वर्ग चिन्तन करके आगे बढ़ेगा तो लोक एवं परलोक में, आनन्द और शान्ति पायेंगे।

---

# समय-सम्पत्ति

□ श्री हरिकृष्णदास गुप्त 'हरि'

समय अमूल्य सम्पत्ति है। जितनी मिल जाए, गनीमत है। इसमें बढ़ोतरी असम्भव है। न ही इसे तिजोरी में बन्द करके रखा जा सकता है। कृपणता से इसे चिढ़ है। सतत व्यय होते रहना—हमारे न चाहते हुए भी स्वयं, स्वतः इसका स्वभाव है।

मितव्ययता का सिद्धान्त भी समय-सम्पत्ति पर लागू नहीं होता। वैसे ही तेजी से भी इसे व्यय नहीं कर डाला जा सकता। यह तो अपनी ही गति से एवं समगति से व्यय होती रहती है। गति-साम्य इसका कभी भंग नहीं होता—हाँ, हमारे मन की स्थितिवश हमें भास भले ही जाये।

मितामित व्ययता तो समय-सम्पत्ति की हमारे वश में नहीं—यह सुनिश्चित है. किन्तु हम चाहें तो व्यर्थ व्यय एवं अपव्यय से बचे रह सकते हैं। यह सहज हमारे हाथ में है। बस, किंचित् सजग-सतर्क रहने की आवश्यकता है।

ऐसे ही समय-सम्पत्ति को व्यय तो होना ही है। इस पर रोक नहीं लगाई जा सकती। परन्तु इसके व्यय को युक्तता एवं सम्यक् सदुपयोगिता प्रदान कर, इसे जीवन साफल्य-सम्पत्ति में रूपान्तरित किया जा सकता है। और जीवन-साफल्य-सम्पत्ति का स्थायित्व निर्विवाद है। मति-भिन्नता के लिए यहां न अवसर ही है, न अवकाश ही।

काश ! समय-सम्पत्ति का युक्त एवं सम्यक् सदुपयोग करके हम उसे स्थायित्व से और स्वयं को जीवन-साफल्य से सम्पन्न कर पायें।

—८८२, गली बेरी वाली, कूचा पातीराम,
दिल्ली-११०००६

उद्‌बोधन :
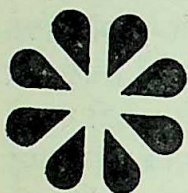
# रूप, शील और पराक्रम*

□ पं० र० श्री हीरा मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के विद्वान् शिष्य]

संसार की अनन्त निधि के सागर, अनन्त ज्ञान के धनी और अनन्त सुख में विराजमान वीतराग भगवन्त, उन तीर्थेश प्रभु ने जिस जगह, जिस स्थान पर और जहाँ-जहाँ विचरण किया, वे भूमियाँ पवित्र हो गईं, वह काल मंगलमय हो गया और उस वीर वाणी का आघोष जिन्होंने श्रवण किया, वे हृदय पवित्र हो गये। पाप का कलिमल और उसके भीतर रहा हुआ जितना पाप का कचरा था, वह कचरा वाणी का पानी बहा कर ले गया। इसीलिये शास्त्रों में वह ग्राम, वह नगर और वह समय भी अनुमोदन लायक माना जाता है, श्रेष्ठ कहा जाता है और श्रेष्ठ माना जाता है। जहाँ तीर्थंकर भगवन्त विचरण करते हैं वहाँ के प्राणी भाग्यशाली माने जाते हैं। वे प्राणी अधिक भाग्यशाली हैं जिनको तीर्थंकर भगवन्तों का साक्षात्कार प्राप्त हुआ, सहयोग प्राप्त हुआ।

वर्तमान के पंचम काल में वह संयोग हमें प्राप्त नहीं है लेकिन ग्राम और वाणी की बात वही है, भले ही तीर्थंकर विराजमान नहीं रहे हैं लेकिन ग्राम और वाणी की बात वही है, भले ही तीर्थंकर विराजमान नहीं रहे हैं फिर भी उनकी वाणी और उनके प्रतिनिधि आचार्य भगवन्त विराजमान हैं। जो उनकी वाणी के माध्यम से कलिमल धोने को प्रेरित करते रहते हैं, उनकी ज्ञान की बातों का समर्थन करते रहते हैं।

**अच्छा बीज, अच्छी धरती :**

बीज अच्छा है, धरती अच्छी है तो बोनेवाला मेरे जैसा बालक ही क्यों न हो, फिर भी बीज से अंकुर उत्पन्न हो जायेंगे। धरती साफ चाहिये, बीज शक्तिशाली होना चाहिये, बोनेवाला किसान कभी चतुर हुआ और कभी चतुर न होकर बालक बोता जाय, तब भी बीज जगह पर पहुँचा और धरती उपजाऊ है तो अंकुर पैदा होंगे। बीज के लिये धरती चाहिये और धरती के लिये बीज चाहिये। बोनेवाला निमित्त है।

*२४-६-८२ को जलगाँव में दिया गया सम्पादित प्रवचन।

इस तरह तीर्थेश भगवन्त की वाणी का बीज आज भी वही है और ग्रहण करनेवाले, आर्य भूमि पर उत्तम कुल में जन्म लेने वाले, कुलींन व्यक्ति आप हैं। उनमें श्रद्धा भी वही है, भक्ति भी वही है लेकिन जिस भव्य आत्मा ने, जिस प्राणी ने बीज को धारण किया, वह लहलहा गया। उसमें फूल खिले, फल आये, छाया आई, सौंदर्य आया।

**चार प्रकार के वस्त्र, चार प्रकार के पुरुष :**

धर्म करने वाले चार तरह के होते हैं यह बात 'स्थानांग सूत्र' के माध्यम से रखी गई। वीरवाणी के अंग शास्त्र 'स्थानांग सूत्र' के चौथे ठाणे में चार तरह के प्राणियों की बात कही गई है। यह भी ध्यान देने लायक है और मन में चिन्तन करके शंका का निवारण करके धारण करने लायक है। 'स्थानांग सूत्र' में चार प्रकार के वस्त्र कहे गये हैं—

सुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, सुद्धे णामं एगे असुद्ध रूवे।
असुद्धे णामं एगे सुद्धरूवे, असुद्धे णामं एगे असुद्ध रूवे॥

१. कोई वस्त्र प्रकृति से शुद्ध और शुद्ध रूप वाला होता है।

२. कोई वस्त्र प्रकृति से शुद्ध किन्तु अशुद्ध रूप वाला होता है।

३. कोई वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध किन्तु शुद्ध रूप वाला होता है।

४. कोई वस्त्र प्रकृति से अशुद्ध और अशुद्ध रूप वाला होता है।

आज मुझे कहना है कि जिस प्रकार वस्त्र और धागे चार प्रकार के होते हैं। उसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं—

सुद्धे णामं एगे सुद्ध परक्कमे, सुद्धे णामं एगे असुद्ध परकम्मे।
असुद्धे णामं एगे सुद्ध परकम्मे, असुद्धे णामं एगे असुद्ध परकम्मे॥

अर्थात् कोई पुरुष जाति से शुद्ध और शुद्ध पराक्रम वाला, कोई जाति से शुद्ध किन्तु अशुद्ध पराक्रम वाला, कोई जाति से अशुद्ध किन्तु शुद्ध पराक्रम वाला और कोई जाति से अशुद्ध और अशुद्ध पराक्रम वाला होता है।

चार प्रकार के वस्त्रों से पुरुष पराक्रम की तुलना की गई। कहा गया कि एक वस्त्र ऐसा होता है जो शुद्ध होकर भी शुद्ध पराक्रम वाला होता है। शुद्ध रहता है उसको अच्छे उपयोग में लिया जाता है। एक-एक धागा मिलकर जब रस्सी का रूप लेता है तब गजेन्द्र को भी बांध लेता है।

मैं अभी सूत की बात कह रहा हूँ। मैंने सूत के लिहाज से कहा कि धागा इकट्ठा करके बट लिया जाय, रस्सी बनाली जाय तो वह हाथी को भी

बांध लेता है तो प्रेम और प्यार का धागा गजेन्द्राचार्य को बांधले तो कोई आश्चर्य की बात नहीं ! लेकिन धागा शुद्ध पराक्रम वाला होना चाहिये । वह सूत क्रमबद्ध होता है, एक के साथ एक जुड़ता है, एक धारा में बढ़ता है तो वस्त्र का रूप ले लेता है । और वस्त्र कितना पराक्रम करता है, किस रूप में काम आता है । एक वस्त्र है जो शुद्ध पराक्रम वाला है, लज्जा निवारण करने वाला है । एक वस्त्र है जो शुद्ध पराक्रम वाला है, सर्दी, गर्मी, और बरसात से बचाव करता है और मानव को झंझावातों से बचाता है । एक वस्त्र शुद्ध पराक्रम वाला है धारण कर लिया जाय तो उसकी लज्जा को ढक सकता है और उससे विकार उत्पन्न नहीं होते हैं । वस्त्र ऐसा कर सकता है तो पुरुष क्यों नहीं कर सकते ?

वस्त्र की बात जिस रूप में आई, उसी तरह से पुरुष भी चार प्रकार के होते हैं । उन्हीं पुरुषों में से एक प्राणी का वर्णन चार दिन से किया जा रहा है । समय की सीमा ही रखूं । मेरी बात छूटे नहीं, अधूरी नहीं रहे । कल कहा था कि एक शीलव्रत वाला आदमी मिल जाय तो क्या करदे । लेकिन एक नारी भी क्या कर सकती है, इस दृष्टि से कल रखा था कि एक सती नारी ने अपने जीवन का भोग देकर अपने पति का अंतिम काल किस तरह से सुधार दिया ।

**तीन प्रकार की पत्नियाँ :**

पत्नियाँ तीन प्रकार की होती हैं : एक भोग पत्नी, एक कर्म पत्नी, और तीसरी धर्म पत्नी । कुछ पत्नियां हैं जिनका स्वभाव है कि सामने वाले पुरुष को राजी करना, प्रसन्न करना । यदि वह प्रसन्न रहता है तो हमारी झोली भरता रहेगा, हमें अच्छे वस्त्र मिलते रहेंगे, अच्छे दागीने मिलते रहेंगे । प्रेम सुख मिलता रहेगा, हमारी इच्छाएँ पूरी होंगी । वह चाहे जो करता हो, चाहे दो नम्बर से कमाता हो, बदमाशियां करता हो या और जो चाहे सो करता हो, हमें तो उसको खुश रखकर अपना मतलब साधना है । ऐसी भी कुछ पत्नियां हैं जो भोग के पीछे दीवानी बनकर पति को बरबाद कर देती हैं । एक नहीं, हजारों ऐसे दृष्टान्त हैं ।

दूसरी पत्नियां वे हैं जो कर्मवीर होती हैं । उनका काम होता है बच्चों को संभालना, पति की वंश वृद्धि करना, घर बार संभालना आदि । वे सिर्फ अपना कर्तव्य करती हैं लेकिन उनका सम्बन्ध आत्मा के साथ नहीं होता, मात्र कर्म करना रह जाता है ।

लेकिन शास्त्रों में कुछ ऐसी पत्नियों का वर्णन है जिन्होंने अपना सब कुछ न्यौछावर कर, पति के जीवन का निर्माण किया । आप सब यहां बैठी हुई

माताओं के पीछे कौन सा शब्द लगाऊं ? एक ही शब्द रहता है धर्मपत्नी। लेकिन धर्म कहते किसे हैं, धर्म का रूप कैसा होता है, पति को धर्म में स्थापित करने के लिये कैसा बलिदान करती हैं, यह सोचने की बात है। कहने के लिये नाम लगा देना दूसरी बात है और सर्वस्व न्यौछावर करना दूसरी बात है। कहलाने के लिये धर्म पत्नी कहलाना, लेकिन किसके हृदय में धर्म की बात है, कौन धर्मी है, इसका पता तब लगता है, जब संकट सामने आता है।

महाकवि तुलसीदास जी के कहने के अनुसार चार बातों में परीक्षा होती है :—

"धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी, आपत काल परखिये चारी।"

इकट्ठे में कह दिया कि धैर्य, धर्म, मित्र और नारी इन चारों को परीक्षा तब होती है जब कि आपत्ति आती है। सब धर्म पत्नियाँ दर्जे वाली हैं, क्षमा की अवतार हैं, धर्म को छोड़ा नहीं है। इस तरह सब नारियां धर्म पत्नी हैं। धर्म पत्नी कौन हैं ? पति को सुख देने वाली होती हैं या पतिदेव का नाश करनेवाली होती हैं या सही मार्ग में लगाने वाली हैं, कौन धर्म पत्नी है जरा निचोड़ निकालना ! आप अपने मन में चिंतन कर रही हैं।

मैं पत्नी की बात कह रहा हूँ इसीलिये यह खयाल नहीं करलें कि पति मुक्त हुए। शास्त्र पत्नी के लिये कहता है कि पति सर्वस्व हैं, सदेह ईश्वर है। इसलिये उसके लिये क्या नियम, मर्यादा और क्या धर्म। वह जो करे सो ठीक है, पर ऐसा मत समझिये।

लेकिन प्रस्तुत प्रसंग एक नारी का है, इसलिये मैंने आपके सामने पत्नी की बात कहदी। धर्मपत्नी कैसी होती है ? पतिदेव धर्म संकट में हैं, मणिरथ सतित्व लूटने को तैयार है। आज उसने पतिदेव पर हमला किया, कल पुत्र पर करेगा। परसों आक्रमण शील पर होने वाला है। सारा संकट सामने है लेकिन सब कुछ होते हुए भी मदनरेखा सोचती है कि मेरा विचार बाद में करूंगी। मेरे पतिदेव का समय क्षणिक है। पहले इनको पार लगाऊं।

'भगवती सूत्र' में कहा गया है कि माता-पिता का फर्ज, स्वामी का फर्ज, और गुरु का फर्ज तब पूरा होगा जब कि वह उनको धर्म में लगावे। माता-पिता की सेवा के लिये कहा है कि उनको नहलाया जाय, उनको खिलाया जाय, हथेली पर रखा जाय, आवश्यकता पड़ जाय तो अपनी चमड़ी उतरवाकर उसके जूते बनाकर उनको पहनाये जायं तब भी फर्ज से मुक्ति नहीं होती। एक पुत्र का फर्ज तब पूरा होता है जब माता-पिता को धर्म की राह लगाता है। सहयोग देकर उनको धर्मी बनाता है। तब पुत्र फर्ज से मुक्त होता है।

पुत्र इस प्रकार मुक्त होता है तो पत्नी कब फर्ज से मुक्त होगी ? वह पत्नी धर्म पत्नी कहलाने योग्य है जो जीवन के अंतिम क्षणों में पति को धर्म मार्ग पर लगावे। कइयों को इस बात का खयाल नहीं है कि पति का क्या हो रहा है। वे तो यह कहने लगती हैं कि 'लंका जाइये और सोना लाइये।' आगे की बात का आपको पता होगा, मैं क्या कहूँ ? कोई-कोई पत्नी यह कहने लगती है कि मेरे तो एक ही लड़का है या एक ही लड़की है। उसकी शादी इतनी अच्छी होनी चाहिये कि लोग वाहवाही करने लगें। उसके लिये चाहे आप एक नम्बर का काम करें या दो नम्बर का काम करें, नीति से करें या अनीति से करें, इससे मुझे मतलब नहीं। मेरी इच्छा के अनुसार शादी करो तब समझूं कि मैंने आपके पीछे घर छोड़ा है। नहीं तो मैंने बाप का घर छोड़कर तकलीफ ही पाई है। बाप छूटे, मां छूटी, आपका पल्ला पकड़ा लेकिन कुछ भी सुख नहीं पाया।

स्वार्थ कहता है कि मानव-स्वार्थ की गति तिरछी चलती है। यदि धर्म और वीतराग वाणी को सुनकर तेरे मन को और कानों को अच्छा नहीं लगता है तो तू धर्मी है या क्या है ? यह मन में सोचना। हम मानव तन को पाकर क्या कर रहे हैं और मदनरेखा ने क्या किया ? उसने अपने पतिदेव का जीवन सफल कर दिया। जिनके पीछे वह आई थी, वे नरक गति के मेहमान बनने जा रहे थे लेकिन अंतिम समय में उसने ऐसा सहयोग दिया कि वे स्वर्ग में चले गये। मुझे कहना है कि आपने किस-किस को देवलोक में भेजा है ? आपके संयोग में आनेवाले कितने व्यक्तियों को धर्म में जोड़ा है ? किसने अपने बेटे को धर्म सिखाया है या हुनर सिखाकर माहिर किया है ?

सेठ साहब के मुनीम जी सारा कारोबार चला रहे हैं। सेठजी का लड़का चाहे सामायिक करे या नहीं करे, लेकिन दुकान संभाल ले तो लड़का अच्छा है। अपना उत्तरदायित्व नहीं समझे तो अच्छा नहीं है। जौहरी का लड़का यदि जवाहरात की परख करना नहीं जानता है तो कहेंगे कि यह हमारे घर को बदनाम करनेवाला है। यदि लड़का अच्छी संगति में नहीं बैठता है तो वह सपूत नहीं है। एक दृष्टि से कपूत है। लड़का कपूत है या समझने वाला, कौन कैसा है, परिभाषा खुद कर कर सकते हैं !

**आदर्श पत्नी मदनरेखा :**

पत्नी ने अपने पति युगबाहु के अंतिम परिणाम बदल डाले। वह बोली कि आप शान्ति से जाइये, आपको कौन मारनेवाला है ? यहां पर जो प्राणी जितनी आयु लेकर आता है, उतनी ही भोगता है। आयु न एक पल घटती है न एक पल बढ़ती है। मारने वाला निमित्त मात्र है। मारनेवाला कोई भी

हो सकता है। पत्नी भी हो सकती है, पति भी हो सकता है, पुत्र भी हो सकता है, भाई भी हो सकता है। यदि आप बीमारी में मर जाते, ठोकर खाकर मर जाते तो मारने वाला कौन होता ? इसलिये इन भावनाओं को निकाल दीजिये कि यह मेरा दुश्मन है और यह मेरा मित्र है। मित्र और दुश्मन बाहर में कोई नहीं है। अपना मित्र और शत्रु भीतर बैठा है। इसलिये इस बात को याद रखिये।

प्राचीन काल के पुरुष और बुजुर्गों की यही बात याद आती है कि जब कोई बुजुर्ग बीमार होता और उसके बचने की आशा कम होती तो उसको संथारा करा दिया जाता था, यह जीवन रहे या न रहे। दस साल के बच्चे को भी नाना कहते थे कि अधिक बीमार हो जाओ और बचने की आशा नहीं रहे तो अंतिम काल में संथारा कर लेना। आज के नाना क्या कहते हैं, मुझे पता नहीं। संस्कारशील धर्मवाले लोग १८ पापों का त्याग करते हैं, मर जाऊँ तो वोसरे।

मदनरेखा ने कहा—पतिदेव, निमित्त की बात छोड़ दीजिये, आपका जीवन चंद क्षणों का है। पल-पल कीमती है जीवन में आपने जो कुछ किया है, युद्धों में जिनको समाप्त किया है, उनको भूल जाइये। मारने वाले के प्रति, डराने वाले के प्रति, मन में जो कोई राग-रोष है, उसको मन से निकाल दीजिये। किसी के प्रति राग-रोष नहीं हो, जीवन भर के लिये वोसरे। अरिहन्त का शरणा है, सिद्धों का शरणा है, केवली का शरणा है, धर्म का शरणा है, अंतिम परिणाम शुद्ध हों, आपके जीवन का यही पाथेय है।

मैंने युद्ध में जाते समय कई बार आपके साथ भाता बांधा है। एक शील-व्रती पत्नी का यह कर्तव्य है कि पति परदेश जाते हैं तो साथ में खाने-पीने की सामग्री दी जाती है। आगे के खर्च के लिये पैसे दिये जाते हैं, लेकिन अब मेरा भाता काम नहीं आयेगा। वीर वाणी का भाता है। आप महा प्रयाण करने वाले हैं, इसलिये दूसरे प्रपंच को छोड़कर इसे स्वीकार करें। महासती मदनरेखा ने पति को ऐसा भाता दिया जिससे यह जन्म तो सुधरा ही, आगेवाला जन्म भी अनेक विभूतिवाला बना। इस तरह पति को सहायता देकर वह आगे बढ़ी।

मदनरेखा ने सोचा कि पति के प्रति जो मेरा कर्तव्य था उसका तो पालन हो गया। अब मेरा क्या होगा, मुझे क्या करना है ? मेरे पीछे जो दानव लगा है, जिसने मेरा शील हरण करने का प्रयत्न किया है, वह मुझे छोड़ेगा नहीं, मुझे क्या करना चाहिये। कल तक राजमहल में रहनेवाली नारी ने अपने शील को बचाने के लिये क्या उपाय किया ? उसने सोचा कि नगर में रहते हुए मेरा

शील बचेगा नहीं । मदनरेखा यह बात सोच रही है लेकिन आज की नारियाँ क्या सोचती हैं ?

**धर्मस्थान की मर्यादा :**

आज की नारियां सोचती हैं कि नगर में नहीं जायेंगे तो हमारे रूप की कीमत नहीं होगी । इसलिये जितना संभव हो, उतना शृंगार करना है, दिखावा करना है, जितने लोगों को बता सकें, उतना करना है ।

मैंने अभी वस्त्र के संबंध में कहा था । एक वस्त्र वह है जो प्राणी की लज्जा बचाता है, लेकिन आज के प्राणी को लज्जा रोकनेवाले वस्त्र पसन्द नहीं है । आज ऐसे वस्त्र चाहिये जो अंग-अंग को निखार सकें, बाल-बाल गिना सकें। यदि अच्छा गाढ़ा कपड़ा लाकर दिया जाय तो कहेंगी कि 'मने कंई जाटनी समझ राखी है जो घाबलियो लाकर दियो है ।' अच्छी बारीक मलमल, रेशम, नाइलोन आदि के वस्त्र लाने की बजाय खादी के जाड़े वस्त्र लाये हैं, यह मेरा मान नहीं अपमान है, किसका अपमान है ? रूप का या शील का ? कुछ लोग राजी होते हैं जब शील लुटता है, लुटाया जाता है, बेचते हैं तो सुख आता है । ऐसे कपड़े पहनकर महाराज के व्याख्यान में कैसे जावें । शादी विवाह में जाना हो तो भले ही आधा कपड़ा पहन कर जाओ या अपने को खूब सजाकर जाओ । लेकिन यह धर्म स्थान है । क्या धर्म स्थान में ऐसे कपड़े पहनकर आने की मर्यादा है ? क्या धर्म स्थान में जाने का भी कोई नियम होता है ? मुझे लगता है कि आपको मालूम नहीं । नियम होते होंगे तो महाराज के लिये होते होंगे, आपके लिये नहीं हैं । इस धर्म स्थान में आकर कोई रूप का प्रदर्शन नहीं कर सकते । इन बातों का इस धर्म स्थान से कोई मतलब नहीं है । सोचने की बात है कि हम शील बेचना चाहते हैं या लुटाना चाहते हैं ? धर्म बेचना है या नहीं ? उनके माध्यम से सोचना है जिनका चरित्र चल रहा है ।

उस महासती ने अपने शील की सुरक्षा नहीं देख कर नगर छोड़ कर जंगल का रास्ता लिया । जंगल में उस नारी पर कैसे संकट आये हैं, कितनी विपदाएं आई हैं, किस तरह वह अपना प्राण देकर भी धर्म की रक्षा करने का विचार रखती है, यदि आप श्रवण करेंगे तो पता चलेगा । अभी समय आ गया है, साढ़े दस से ऊपर का समय हो गया है । मैं जल्दी ही समाप्त करूंगा ।

मैं कह रहा था कि सूत-सूत मिलाकर जो रस्सी बनाई जाती है वह गजेन्द्र को बाँधने की ताकत रखती है तो क्या एक भक्त दूसरे से मिलकर, एक संघ दूसरे संघ से मिलकर, श्रावक-श्रावक मिलकर अधर्म को नहीं ढक सकते ? लेकिन फुर्सत किसको है ? अपने शरीर को सजाने के लिये समय मिल जाता है,

पेट में बादाम की कतली भरने के लिये फुरसत मिल जाती है, लेकिन गाँव में संत आते हैं तो उनके पास जाने की फुरसत नहीं है।

**धर्म संघ का कर्तव्य :**

बाहर संतों के दर्शन के लिये जाते हैं तो संघ बनाकर जाते हैं। यहाँ आये हैं आप धर्म संघ बनाकर। धर्म की प्रगति के लिये आपने क्या किया? यहाँ के संघ ने आपको क्या दिया और आपसे क्या लिया? कुछ अच्छी बातों का आदान-प्रदान नहीं हुआ, दिया-लिया नहीं तो मैं मानूंगा कि धर्म स्थान में नहीं आये, मौज करने आये हैं। अभी यहाँ हैं, दोपहर में बाजार में होंगे और शाम को सिनेमाघर में होंगे। यह स्थिति है तो कहना पड़ेगा कि धर्म का दिखावा करते हैं। यही दिखावा चलता रहा तो क्या आपके गाँव में या शहर में साधु-साध्वियों का चौमासा नहीं है? साधु-साध्वी हैं फिर भी वहाँ जाने की फुरसत नहीं है। यदि आप समाज के लिये चिन्तन नहीं करते, अपने लिये चिन्तन नहीं करते तो कहना पड़ेगा कि अभी आप लक्ष्य पर नहीं पहुँचे हैं। धर्म की रक्षा करने वाले चरित्रों से आप कुछ शिक्षा लें, उनके बारे में सोचें, समझें और समाज के उत्थान के लिये योगदान दें। यदि ऐसा करेंगे तो आप अपने जीवन में सुख, शान्ति और आनन्द प्राप्त करेंगे।

# गलती

□ कल्पना आंचलिया

एक बार गाँधीजी दक्षिण भारत के दौरे में चर्खा [चरख] दंगल देखने गये। दंगल देखने में बड़ी रात हो गयी। वहाँ से जब वे लौटे, तब इतने थक गये थे कि चारपाई पर लेटते ही उन्हें नींद आ गई। दो बजे उनकी नींद खुली तो स्मरण आया कि सोने से पूर्व प्रार्थना नहीं की। फिर तो वे सारी रात नहीं सोये। उनके मन पर बड़ा आघात पहुँचा, शरीर थर-थर काँपने लगा। सारा बदन पसीने से लथपथ हो गया। प्रातःकाल लोगों ने जब पूछा तब सारी बात बतलाते हुए उन्होंने कहा, जिसकी कृपा से मैं जीता हूँ, उस भगवान को भूल गया। इससे बढ़कर गलती और क्या होगी?

—११६, देवाली, उदयपुर

स्वाध्यायियों के लिए विशेष लेख

# सत्य : महत्त्व और स्वरूप

☐ श्री पी० एम० चौरड़िया

सत्य जीवन की गति है, तेज है, उष्मा है। सत्य जीवन का सार है। बिना सत्य के जीवन निरर्थक है। सत्य बिना मनुष्य जीव-रहित शरीर जैसा है, इसलिये जोन्सन ने कहा—'तमाम कमाल का आधार सत्य है।' जिस तरह तिलहन से तेल निकाल दिया जाए, गन्ने की ईख से रस निकाल दिया जाए, तो वे सारहीन हो जाते हैं, उसी प्रकार मानव जीवन से सत्य निकाल दिया जाए तो वह सारहीन हो जाएगा। इसीलिए सत्य में असीम शक्ति होती है। सत्यनिष्ठ व्यक्ति निर्भीक एवं निडर होता है। सत्यवादी पुरुष माता-पिता की तरह लोगों का विश्वासपात्र होता है एवं गुरु की तरह पूज्य होता है। स्वजन की तरह वह सबको प्रिय लगता है।

आज के भौतिक युग की चकाचौंध में मानव के नैतिक मूल्यों का अत्यधिक ह्रास हुआ है। आज के युग में केवल अर्थ की ही पूजा होने लगी है एवं सत्य वचन कड़वा लगता है। कबीर ने कहा है :—

"सत्त नाम कड़वा लगे, मीठा लागे दाम ।
दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम ।।"

अत: स्पष्ट है कि बिना सत्य के जीवन रूखा है। यद्यपि सत्य सरल व सहज होता है लेकिन फिर भी वह अत्यन्त कठिन है। इसका कारण यह है कि सत्य के चारों ओर सौ-सौ झूठ का पहरा होता है। इतना होते हुए भी सत्य प्रकट हो जाता है क्योंकि सत्य हवा की तरह हर क्षण के लिए जरूरी है। सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है, जन्म-मरण संसार समुद्र से पार करने की नाव समान है। सारा जगत् सचाई की चादर में लिपटा हुआ है। यह सृष्टि सत्य पर ही टिकी है। सत्य ही उसका आधार है। धर्म, नीति, राज्य और व्यवहार ये सत्य द्वारा चल रहे हैं।

**सत्य क्या है ?**

जो बात जैसी हो, उसको वैसा ही कह देना 'सत्य' है। जिसे प्रकट करने में भय व संकोच होता है, वह सत्य नहीं है। जो वस्तु जिस रूप से हो, उसको उस रूप से जानना, व्यवहार करना और कहना, इसी को सत्य कहा गया है।

यदि बोलने वाला चाहता है कि हम समझते कुछ हैं और यह समझे कुछ, तो वह सत्य नहीं। वक्ता के मन में यह बात होनी चाहिए कि जैसा अनुभव मेरा है, वैसा ही इसके हृदय में प्रकाशित हो जाए। ऐसी इच्छा से बोला जानेवाला शब्द 'सत्य' है।

सत्य दानव को मानव बनाता है तथा मानव को भगवान्। चन्दन मुनिजी ने क्या ही सुन्दर सत्य के सम्बन्ध में कहा है—

"दानव को मानव करे, मानव को भगवान्।
'सत्य' उसी ही वस्तु को, कहते हैं विद्वान्॥"

**सत्य और धर्म :**

सत्य ही धर्म है और धर्म ही सत्य है। धर्म की इस सीधी साधी परिभाषा में सब कुछ समा जाता है। सत्य के बिना किसी बात की खोज नहीं की जा सकती। धर्म के साथ सत्य का गहरा सम्बन्ध है। जो काम सत्य करता है, धर्म भी वही करता है और जो धर्म करता है, सत्य का भी वह लक्ष्य है। सत्य को छोड़कर धर्म कभी भी पुष्ट नहीं हो सकता। वस्तुतः धर्म की महिमा एवं गरिमा सत्य के बल पर है।

सत्य सर्व धर्म सम्मत धर्म है। सभी धर्म सत्य की महत्ता को केन्द्रस्थ मानते हैं क्योंकि सत्य ही यश का मूल, विश्वास का कारण, स्वर्ग का द्वार तथा सिद्धि का सोपान है।

"धर्मः सत्यं प्रतिष्ठितः"

सत्य ही महान् धर्म है अतः सब धर्म उसी के अंग हैं।

**सत्य का महत्त्व एवं स्वरूप :**

सत्य को सभी धर्मों ने बिना किसी विरोध के स्वीकार किया है तथा उसके गुणों का बखान किया है।

उपनिषद् में कहा गया है कि जो निश्चय रूप से धर्म है, वही सत्य है, इसलिये धर्म और सत्य दोनों एक समान हैं।

श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

"सत्य ते जायते धर्म"

धर्म का जन्म ही सत्य से होता है और उसकी मृत्यु क्रोध और लोभ से होती है।

'पातंजल योग दर्शन' में कहा गया है कि सत्य की पूर्ण साधना हो जाने पर वचन सिद्धि प्राप्त हो जाती हैं।

'महाभारत' में कहा गया है—

"सत्यं धर्म स्तपो योगः, सत्य ब्रह्म सनातनम् ।
सत्यं यज्ञः परः प्रोक्तः, सर्व सत्यं प्रतिष्ठितम् ।।"

अर्थात् सत्य धर्म है, तप है, योग है, सनातन ब्रह्म और उत्कृष्ट यज्ञ है। सब कुछ सत्य पर टिका हुआ है।

'मनु स्मृति' में कहा गया है—"मनः सत्येन शुद्धयति' अर्थात् मन सत्य से ही शुद्ध होता है।

सिक्खों के धर्म शास्त्र में भी लिखा है—

"कहे नानक जिन सच तजिया ।
कूड़े लागे उनी जन्म जूए हारिया ।।"

गुरु नानक के कथनानुसार जिन लोगों ने सत्य को त्याग कर झूठ की शरण ली, उन्होंने अपना जन्म जुए में हार दिया है।

इस्लाम दर्शन में कहा गया है।

'वला तस बिसुल हक्का विल्बातले व तक मतुल हक्का।'

अर्थात् सत्य को मत छिपाओ। सत्य महा पराक्रमी और प्रचंड शक्तिमान होता है। सूर्य के सामने जिस तरह अन्धकार विलीन हो जाता है, उसी तरह सत्य के सामने असत्य गायब हो जाता है।

ईसाइयों की धर्म पुस्तक 'इंजील' में सत्य के विषय में कहा है—

The lip of truth shall be established for ever but a lying tongue is but for moment.

अर्थात् सत्य की जिह्वा अटल रहेगी, किन्तु झूठ की जिह्वा केवल क्षण भर के लिये होगी।

जैन धर्म में 'प्रश्न व्याकरण सूत्र' में कहा है—

"सच्चं खु भगवं"

सत्य ही भगवान् है।

इसी सूत्र में कहा गया है कि सत्य लोक में सारभूत है। वह महा समुद्र से भी अधिक गम्भीर है, सुमेरू पर्वत से भी अधिक स्थिर है, चन्द्र मण्डल से भी अधिक सौम्य है और सूर्य मण्डल से भी अधिक दैदीप्यमान है। सत्य शरद-कालीन आकाश से भी निर्मल है और गंधमादन पर्वत से भी अधिक सौरभ-युक्त है।

सभी धर्मों ने सत्य को धर्म का प्रवेश द्वार कहा है और वही परमात्मा तक पहुँचने का परम साधन है।

**सत्य एक कसौटी :**

सत्य एक कसौटी है। वह खुद खोटे-खरे सोने पर न निन्दा करती है और न सराहना करती है। यदि हम उस पर सोना कसने लगे तो वह साफ बोल उठेगी कि सोना खोटा है अथवा खरा है। सत्य एक आग है। वह सूखे को नहीं जलाती, उसमें गीले को भी जलाने की ताकत है। वह लकड़ी की नहीं, लोहे को भी भस्म कर सकती है। पर वह आग किसी को भस्म करने की नहीं सोचती और न किसी को तपाकर चमकाने या काला करने की सोचती है। हाँ, मनुष्य जिस नीयत से यानी भस्म करने या परखने की नीयत से जिस चीज में आग रखेगा, वह भस्म कर लेगी या परख लेगी। ठीक उसी तरह सत्य की शक्ति कर्त्ता के उपयोग पर निर्भर करती है।

**सत्य सहज होता है :**

सत्य में शक्ति है, तेज है, असत्य में इन दोनों का अभाव है। असत्य स्वयं में चल नहीं सकता, वह पंगु है, इसलिये वह सदा सत्य का सहारा चाहता है।

सत्य बिल्कुल बांझ है। जब हम एक सत्य बोलते हैं, तो बात खत्म हो जाती है, पूर्ण विराम आ जाता है। लेकिन झूठ के सिलसिले का अंत नहीं होता। सत्य के लिये याददाश्त की आवश्यकता नहीं लेकिन झूठ के लिए बड़ी याददाश्त चाहिए। झूठ खिसकता है क्योंकि झूठ की कोई जगह ठहरने की नहीं होती। सत्य को याद रखने की जरूरत नहीं। सत्य बोलने वाले आदमी का मन निर्भार होता है। जो निर्भार होता है, वह आकाश में उड़ सकता है।

झूठ बोलने वाला आदमी अपने गले में पत्थर लटकाये चलता है। फिर

वह ऊपर उड़ना चाहे तो कैसे उड़े ? ये पत्थर जान ले लेते हैं। एक झूठ बोल-कर आत्म रूपी मन्दिर को गंदा कर दिया जाता है जिससे हृदय में खिलने वाले सद्गुण रूपी फूल खिलने के पहले ही मुरदा हो जाते हैं लेकिन जहाँ सत्य का आचरण होता है, उसके हृदय-मन्दिर में प्रभु स्वयं आकर निवास करते हैं। इसलिये संत तुलसीदास ने कहा—

"सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप।।"

**सत्यं शिवं सुन्दरम् :**

सत्य ही शिव है तथा सत्य और शिव के संयोग से ही सौन्दर्य की सृष्टि होती है। सत्य ही सुख और आनन्द का मूल है तथा इन दोनों के संयोग में ही आत्मा का सौन्दर्य बसता है। चलते रहना ही जीवन का नाम है। चलते रहना ही सत्य है। गंगा का प्रवाह बनकर चलना। कठिनाइयों के पहाड़ों को चूर-चूर कर चलते रहना। यही जीवन है, यही सत्य है, यही शिव का रूप है और यही सौन्दर्य।

सत्य आत्मा का गुण है। वह आत्मा में बसता है। अतः आत्मा से सुन्दर चीज तीन लोक में नहीं है। अनन्त और समग्र सौन्दर्य को जानने की शक्ति आत्मा में है। अतः उस सौन्दर्य को प्रकट करने के लिए सत्य की जरूरत है। सत्य को उजागर कर आत्मा शिव बन जाती है।

**सत्य का सिंगार न हो :**

सत्य को सजाने से उसकी सुन्दरता कम हो जाती है। उसको सजाने की आवश्यकता नहीं है। झूठ न सुन्दर होता है, न हो सकता है। जो वस्तुएँ हल्की एवं कम टिकाऊ होती हैं, उन्हें दुकानदार बड़ी खूबसूरती से सजाकर रखता है। झूठ बाजार में बिना सजधज के नहीं आ सकता।

झूठ को यश की चाह होती है। उसे अच्छी वर्दी पहनकर व सजधज कर सामने आना पड़ता है। झूठ ऐसा न करे तो दुनिया में जगह नहीं बना सकता। आजकल कुछ लोग सत्य को सजाने लगे हैं। इससे सत्य को फायदा न होकर, नुकसान हुआ है। सजधज कर आने की वजह से, अब कोई यों ही सत्य को सत्य मानने के लिए तैयार नहीं होता, बल्कि कसौटी पर कसकर देखता है। इसका मतलब है, सत्य के सजावट की वजह से आदमी की पहली निगाह में झूठ जँचता है। सजने की झूठ को जरूरत है। सजे सत्य को परीक्षा की आग में होकर निकलना पड़ता है।

सत्य में घुमाव फिराव की आवश्यकता नहीं रहती। उसमें अर्थ का मिठास नहीं, हृदय का मिठास, माधुर्य एवं पवित्रता होनी चाहिए। जो विचार शुद्ध हृदय से प्रस्फुरित होता है, वही सत्य है, वही तथ्य है और वही कथ्य है।

**सत्य दबाना बुरा है :**

झूठ बोलने से दुनिया का बुरा होता है, यह सही है, पर इतना बुरा नहीं होता जितना सत्य विचारों को दबा देने से, क्योंकि सत्य के दब जाने से ईमानदारी उठ जाती है। ईमानदारी न रहने से झूठ अपनी जड़ जमा लेता है और कभी-कभी समाज में झूठ इतना आदर पा जाता है कि उसकी पूजा होने लगती है। पूजा के कारण समाज को झूठ-विचार से ममता हो जाती है। फिर समाज उसे इतना पवित्र मानने लगता है कि किसी आदमी को उस विचार के बारे में बोलने देना नहीं चाहता। इससे समाज की प्रगति रुक जाती है। यह तो ऐसी बात है जो कोई पीतल को सोना कहे और दूसरा कोई मोल ले ले, तो कसौटी पर भी न कसने दे। सत्य पवित्र है और समाज सत्य विचार सुनना नहीं चाहता तब यह कैसे कहा जा सकता है कि उस समाज को पवित्रता से प्रेम है।

सत्य को स्वतन्त्र रूप से प्रकट किया जाए। इसका यह तात्पर्य नहीं कि ऐसा सत्य वचन बोला जाए जो हित, मित और ग्राह्य न हो। सत्य भी यदि संयम की हानि करने वाला हो तो वह किंचिन्मात्र भी नहीं बोलना चाहिये।

सत्य का दूसरा पहलू बोलने की स्वतंत्रता है क्योंकि बोलकर ही वह दूसरों तक पहुँचता है और तभी लोग उसे कसौटी पर कसकर और उसकी चमक देखकर अपनाते हैं। सत्य हमेशा यही चाहता है कि लोग उसे पहले परखें, पीछे अपनायें। सत्य को खुली हवा पसन्द है, इसीलिए लोगों के मन पर यह जल्दी चढ़ जाता है।

महात्मा भगवानदीन ने सत्य के विषय में क्या ही सुन्दर कहा है—

"आदमी की भलाई इसी में है कि वह किसी की न सुनकर सत्य की सुने क्योंकि सत्य उसे सही सुना देगा और ठीक-ठीक सुना देगा।

आदमी की भलाई इसी में है कि वह किसी से न डरकर सत्य को निकाले, क्योंकि सत्य उसके लिए सब कुछ निकालेगा।

आदमी की भलाई इसी में हैं कि वह 'क्यों, किसलिए, कैसे, कहाँ' कहना सीखे—क्योंकि यही वह जगह है, जहाँ सत्य छिपा रहता है।

आदमी की भलाई इसी में है कि वह अपने मन को ईमानदार और उदार बनाये, क्योंकि सत्य को ईमानदारी और उदारता का आसन पसन्द है। वह और आसनों पर नहीं बैठता।

आदमी की भलाई इसी में है कि वह स्वाधीन होकर ईमानदारी के साथ अपने विचारों को जाहिर करना सीखे, क्योंकि सत्य बन्द कोठरी में जरा देर में घुटकर मर जाता है। उसे यह पसन्द नहीं जिसमें अच्छे-अच्छे विचार दम घुट-घुटकर जान तोड़ रहे हों।"

**सत्य का प्रभाव :**

सत्य का मार्ग सीधा है। उस पर चलने वाले का भाग्य भी सहायता करता है। झूठ का मार्ग कुटिल है, उस पर चलने वाले अपने कर्मों से मर जाते हैं। 'सत्यमेव जयते नानृतम' दुनिया में सत्य की विजय होती है। राम, रावण, कृष्ण, कंस आदि की कथाएँ सत्यासत्य को लक्ष्य करके बतलाई गई हैं।

आत्मा ही पूर्ण सत्य है तथा वही यथार्थ बुद्धि का प्रदाता है। संसार में माया का जाल सर्वत्र फैला हुआ है। किसी-न-किसी अंश में मनुष्य की बुद्धि उससे आक्रान्त रहती है। संसार में जितने महान् पुरुष हुए हैं, सबने इसी एक महान् सत्य को आचरण में लाकर ही महत्त्व प्राप्त किया है। सत्यवादी हरिश्चन्द्र को आज भी सत्यवादिता के कारण याद किया जाता है। धर्मराज युधिष्ठिर ने सत्य को आचरण में उतारा जिससे आज भी उनका नाम इतिहास में स्वर्णाअक्षरों में लिखा जाता है।

महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के प्रयोग राजनीति में किये। गाँधीजी ने सत्य को परमेश्वर कहा। उन्होंने कहा :—

"मैं सत्य की बार-बार रट लगाता हूँ जिससे कि यह दिमाग से छनकर हृदय तक पहुँच जाए। जब वह दिमाग में आता है, उसे तत्काल हृदय तक पहुँचा दिया जाना चाहिए। जब ऐसा नहीं किया जाता है, तब वह विकृत हो जाता है और दिमाग में एक विषैली वस्तु के समान पड़ा रहता है।"

**सत्य जीवन के आचरण में प्रकट हो :**

सत्य को केवल वाणी द्वारा प्रकट कर देना ही उसका अंत नहीं है, बल्कि यह तो जीवन विकास की प्रारम्भिक भूमिका है। जब सत्य जीवन के धरातल पर प्रकट होता है, तो जीवन महक उठता है। सुकरात का कहना है कि चेतना को सत्य के साथ जोड़ दीजिये, फिर तुम्हारा प्रत्येक कर्म आत्म-शुद्धि का प्रयत्न

होगा। आत्म-साक्षात्कार की भूमिका होगी। आत्म-शुद्धि की प्रयोगशाला में कहीं विफलता या पराजय नहीं होती। सत्य का स्वर्ण तो ऐसा है कि वह हर आंच में दमकता है, निर्भय बनता है।

डिजरायली ने कहा है—'समय मूल्यवान अवश्य है, किन्तु सत्य समय से भी अधिक मूल्यवान है।' अतः सत्य का दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जो सत्य बोलना नहीं जानता, वह तो खोटा सिक्का है, उसकी कीमत ही नहीं होती। इसीलिये सत्य को आचरण में उतारो। कवि श्री अमर मुनिजी ने क्या ही सुन्दर लिखा है—

"सत्य श्रवण की चीज नहीं है,
वह तो जीवन में उतरे।
तभी वस्तुतः उपयोगी हो,
जीवन 'अथ' से 'इति' सुधरे॥

सत्य को केवल पोथी और वाणी में नहीं, जीवन के धरातल पर देखो। आकाश के चमकीले तारों की अपेक्षा धरती के महकते फूलों को अधिक प्यार करो।

सत्यनिष्ठ पुरुष सत्य की आग में तप कर सोने सा खरा बन जाता है। वह अपने जीवन में जितना सत्यता का समावेश करता जाता है, उतनी ही अधिक उसे विराट् पुरुष की अनुभूति होने लगती है।

**उपसंहार :**

सत्य को न तो छुपाया जा सकता है और न उसकी अवहेलना की जा सकती है। वह तो स्थान, काल की परिधियों को लांघ कर प्रकट हो जाता है। जिस प्रकार अंधकार को दीपक की छोटी-सी लौ नष्ट कर देती है, रुई के ढेर को आग की छोटी-सी चिनगारी समाप्त कर देती है, उसी प्रकार झूठ का जहाँ अम्बार खड़ा हो, वहाँ सत्य की एक चिनगारी प्रकट होते ही, झूठ धराशायी हो जाता है और सत्य की ज्योति प्रकट हो जाती है। भगवान् महावीर ने गौतम से कहा—

"सत्यान्नस्ति परमो धर्मः।
ना सत्यात् पातकं परम्॥"

सत्य से महान् कोई धर्म नहीं और असत्य से बड़ा कोई पाप नहीं।

सत्य तो एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों-ज्यों सेवा की जाती है, उसमें अनेक फल आते नजर आते हैं, उनका कभी अन्त नहीं आता।

सत्य रोजमर्रा के जीवन का अंग बने। प्रारम्भ में अभ्यास के रूप में घंटा, दो घंटा सत्य का ईमानदारी से पालन किया जाए, फिर उसे बढ़ाया जाए। जीवन को उदात्त व उच्च बनाने वाले सद्गुणों की बहार स्वयं दौड़ती चली आएगी। आवश्यकता है दृढ़ संकल्प एवं सही पुरुषार्थ की।

आशा है, पाठक सत्य का विवेचन पढ़, आध्यात्मिक उत्थान व प्रगति की ओर अग्रसर होंगे।

—89, Audiappa Naicken Street
Ist Floor, Sowcarpet, Madras–600 009

---

# किस जात का ?

□ श्री मनोज आंचलिया 'टोनी'

एक बार रेल यात्रा के दौरान एक यात्री ने यात्रा कर रहे स्व. आचार्य जे. बी. कृपलानी से पूछा, "नेताजी, आप किस जात के हैं ?"

कृपलानीजी समझ गये कि यह व्यक्ति अपनी उच्च जात का होने से अभिमान कर रहा है।

कुछ सोचकर आचार्यजी मुस्कुराकर बोले, "बंधु, मैं किसी एक जात का होऊँ तो बताऊँ। प्रातः उठकर जब मैं शौच के लिए जाता हूँ, उस वक्त मैं भंगी हूँ, जब अपने जूते साफ करता हूँ तो मोची और जब कॉलेज में छात्रों को पढ़ाने जाता हूँ तो ब्राह्मण और जब वेतन का हिसाब करता हूँ तो मैं वैश्य (बनिया) कहलाता हूँ। अब आप ही बताइये मैं किस जात का हूँ ?"

आचार्य का उत्तर सुनकर डिब्बे में बैठे यात्रियों का ठहाका गूँज उठा और प्रश्न पूछने वाले यात्री ने तो अगले स्टेशन पर उतर जाने में ही अपनी भलाई समझी।

—११६, देवाली, उदयपुर (राज०)

छह किश्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला
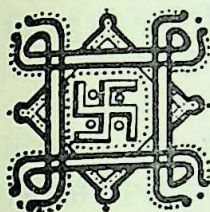
# भारतीय शाकाहार [३]

☐ डॉ० ताराचन्द गंगवाल

### अण्डे का प्रश्न–प्रोटीन का स्रोत

अण्डा अपने आप में संपूर्ण आहार गिना जाता है, इसका अर्थ है कि इसमें सारे आवश्यक प्रोटीन के अंश (अमीनोएसिड) हैं। इन अमीनोएसिडों का ही इसमें होना इसको सम्पूर्ण आहार की श्रेणी में लाता है।

इस सम्बन्ध में दुग्ध भी ऐसा दूसरा खाद्य पदार्थ है, जिसमें अण्डे ही की तरह सारे अमीनोएसिड मौजूद हैं।

अगर वाँछित अमीनोएसिड अन्य किसी भी स्रोत से प्राप्त हो जावें तो वही उद्देश्य पूर्ण हो जाता है और फिर अण्डे जैसे अन्य किसी भी सम्पूर्ण आहार को लेने का प्रश्न ही नहीं उठता। वास्तव में जब ये सब अमीनोएसिड चाहे वनस्पति स्रोत से अथवा पशु से या अण्डे से या किसी भी अन्य प्रकार से प्राप्त हो जावें तो हमारे ध्येय में रत्ती भर भी अन्तर नहीं पड़ता। इमारती सामान, ईंट, पत्थर इत्यादि किसी भी स्रोत से प्राप्त हों, मकान तो एक-सा ही बनेगा।

इसके विपरीत अण्डे की जरदी कोलैस्ट्रोल (cholesterol) अधिक होने के लिए बदनाम है, जिससे रक्तवाहिनी नाड़ियों की कठोरता (arteriosclerosis), दिल का दौरा (heart attack) व मस्तिष्क के लकवा या बेहोशी जैसा रोग (stroke) होने का डर रहता है। आजकल की वैज्ञानिक धारणा है कि उन सब पदार्थों का जिनमें कोलैस्ट्रोल अधिक हो, प्रयोग कम से कम अथवा नहीं ही करना चाहिये।

अण्डे में विटामिन 'सी' नहीं होती। अतः इसको अन्य स्रोतों से प्राप्त करना पड़ता है। इस सम्बन्ध में दूध इससे भिन्न है।

यद्यपि पाश्चात्य देशों में अण्डा अथवा इससे बने हुए खाद्य पदार्थ शाकाहारी भोजन-गृहों में भी धड़ल्ले से परोसे जाते हैं, तब भी अण्डे को अन्य कुछ न मानकर सामिष भोजन की श्रेणी में ही मानना पड़ेगा।

संयोग से शाकाहारी कहलाने वाला पन्थ पश्चिम में बहुत ही प्रगति कर रहा है। इसके विपरीत हमारे देश में अहिंसा के संस्कारों के होते हुए भी 'मांसाहार', विशेषकर इस युग में, अपनी जड़ें गहरी जमा रहा है।

हमारे देश में उन संस्थाओं द्वारा भी, जहाँ मांसाहार वर्जित है, मैंने स्वयं मुर्गीखाना चलाये जाते देखा है। जब अण्डे के सेये जाने के बाद उसमें से चूजा फड़फड़ाता हुआ निकलता है तो उसको कैसे अनदेखा किया जा सकता है? पश्चिम में सर बनार्ड शा (Sir Bernard Shaw) और सर स्टैफोर्ड क्रिप्स (Sir Stafford Cripps) जैसे शाकाहार के घोर पक्षपाती भी अण्डे का प्रयोग करते थे।

भारत में तो कुछ ब्राह्मण जाति वालों में भी, जैसे कान्यकुब्जों में मांसाहार के संस्कार होते हुए भी, अण्डे का प्रयोग वर्जित है।

वैज्ञानिकों ने अण्डे के भ्रूण (embryo) की दिल की धड़कन का अभिलेखन (recording) करने में सफलता प्राप्त की है। (रीडर्स डाइजेस्ट, अगस्त १९६३, पृष्ठ ४२)।

**शाकाहारी कहलाने वाला अण्डा – अनिषेचित (Unfertilised)**

नये संवर्ग (category) का शाकाहारी संज्ञक अण्डा—लगता है स्वार्थी लोगों का आविष्कार है। सम्भवतः इन लोगों का अन्तःकरण सामान्य अण्डे का प्रयोग करने में कचोटता है और इसी कारण मुर्गीखाने में मुर्गा नहीं रखा जाता; जो अण्डा मुर्गी देती है उसके ऊपर मुर्गे के शुक्र का सम्पर्क हो ही नहीं पाता; तथापि अण्डे का स्रोत तो निःसन्देह मुर्गी ही है, जो पशु की श्रेणी में है, न कि वनस्पति की में। स्पष्ट ही है कि यह अण्डा किसी पेड़ से प्राप्त नहीं होता, तो फिर इसका नाम शाकाहारी क्यों?

पेड़-पौधों को भी जीवित प्राणी की संज्ञा दी जाती है, परन्तु ये पृथ्वी में से उगकर अपना पोषक तत्त्व मिट्टी में से एकत्र करने में सक्षम हैं। ये सूर्य की किरणों, मिट्टी, हवा, कार्बनडायक्साइड इत्यादि का उपयोग करके अपनी शरीर रचना करते हैं। इनमें प्रायः हरे रंग की क्लोरोफिल (chlorophyl) भी होती है। इन सब तत्त्वों का अण्डे में सर्वथा अभाव है।

अनिषेचित (infertile) अण्डे का स्रोत भी तो निषेचित (fertile) अण्डे से कोई भिन्न नहीं है अर्थात् दोनों ही मुर्गी से उत्पन्न होते हैं, जो पशु संवर्ग के हैं, न कि वनस्पति संवर्ग के। इसके अतिरिक्त निषेचित अथवा अनिषेचित अण्डे की रासायनिक रचना भी तो भिन्न नहीं है। अतः अनिषेचित अण्डे को वनस्पति के अन्तर्गत मानना नितान्त हठधर्मी है, जो सत्य से परे और भ्रामक है। कितनी भी विचारों की खींचतान क्यों न कर लें, वास्तविकता तो वास्तविकता ही रहेगी। अगर अलग से इस अनिषेचित अण्डे को कोई संज्ञा देना अत्यन्त अनिवार्य ही हो तो इसको चाहे अविकसित (immature), मृत (dead) अथवा निर्जीव-उत्पत्ति (still-born) जैसा कुछ कह दें। यद्यपि इनमें से भी कोई भी संज्ञा पूरी तरह से सही नहीं है, तथापि उसे शाकाहारी कहने से तो अधिक उपयुक्त है ही।

अगर गर्भाधान की प्रक्रिया का ठीक-ठीक विश्लेषण किया जावे तो पाया जावेगा कि गर्भाधान अण्डे का केवल शरीर विकास करने में सहायक होता है। यह विदित है कि अनिषेक-जनन (Parthenogenesis) की प्रक्रिया से भी अण्डा कहीं-कहीं बढ़ता रहता है। इसके लिये शुक्र की आवश्यकता नहीं होती। यह शब्द यूनानी भाषा के पार्थनोस (Parthenos) से बना है, जिसका अर्थ है कुंवारी। अफीडस (Aphides) एक कीट – प्लांट लाईस (plant lice) जिसको एन्ट काऊ (ant cow) भी कहते हैं, अनिषेक-जनन का ही उदाहरण है। इसी प्रकार पपीता भी बगीचे में फूलककड़ी के अभाव में केवल मादा पेड़ों से भी प्राप्त हो जाता है (यद्यपि ऐसे फलों में अधिक बीज नहीं होते)। यह फल खाने में साधारण फल के ही समान है। अतः अनिषेचित अण्डे को भी निषेचित अण्डे जैसा ही समझना उपयुक्त होगा, न कि भिन्न।

एक समय कुछ प्रयोग अनिषेचित अण्डों पर भी किये गये थे। उनकी भावनाओं का अभिलेखन (recording) अलग-अलग प्रकार से उनको उत्तेजित (stimulate) करके किया गया था। उससे इन अण्डों में भी साधारण अण्डे अथवा जीवित प्राणियों जैसी ही भावनायें पाई गईं। देखिये – "दी फ्रांटियर्स ऑफ सायंस एण्ड मेडिसिन" नामक पुस्तक – लेखक कार्लसन, १९७५, वाइल्डवुड हाउस, लन्दन (The Frontiers of Science & Medicine by Carlson, 1975, Wildwood House, London)। इसमें "अण्डे और मैं" संदर्भ में लिखा है कि पोलीग्रॉफ (polygraph) (जो मशीन भावनायें अंकित करती है) में अनिषेचित अण्डे को भी तोड़ने पर उसकी प्रतिक्रिया तथा भावना अंकित हो गई।

सारांश है कि अण्डे को खाने के लिये चाहे वह अनिषेचित ही क्यों न हो, अपने आपको धोखा देने का कोई भी औचित्य नहीं है। यह केवल बहाना है

कि अनिषेचित अण्डे में जीव नहीं होता और वह शाकाहार की श्रेणी में ही है।

**मांसाहार और इसके आर्थिक व राष्ट्रीय पहलू**

इसमें कोई विवाद नहीं कि मांसाहार अत्यधिक महँगा है, जैसा कि आगे की तालिका के द्वारा बताया गया है (६० पैसे प्रति यूनिट भाव के आधार पर विशेषकर प्रोटीन व कैलोरी की दृष्टि से)। विशेषकर प्रोटीन के लिये ही मांस के प्रयोग पर प्रायः बल दिया जाता रहा है।

हमारे देश में विशेषकर निर्धन वर्ग के लिए रुपये के मूल्य की उचित खाद्य सामग्री उपलब्ध होना आवश्यक है। जब पोषण का प्रश्न हो तो स्वास्थ्य के लिए उचित और सस्ती खाद्य सामग्री का और भी अधिक महत्त्व है।

सारे संसार में इसको स्वीकार करने में कोई भी विवाद नहीं है कि शाकाहार अत्यन्त सस्ता और स्वास्थ्यप्रद है।

यह कहा जाता है कि जर्मनी ने पहली बड़ी लड़ाई घेराबंदी हो जाने से भोजन की कमी के कारण हारी, क्योंकि जर्मनी के निवासी मांसाहार के अभ्यस्त थे। अगर वे शाकाहार करने लगते और अपनी जमीन (खेत) आलू, अन्न, दाल इत्यादि की उपज के लिये प्रयोग में लाने लगते और उस जमीन को मांस प्राप्त करने के लिए पशुओं को पालने के उपयोग में लाना बन्द कर देते तो सम्भवतः लड़ाई का परिणाम कुछ और ही होता। यह हिसाब लगाया गया है कि भोजन के लिये मांस के अनुपात में ६ गुणी अधिक आबादी का पालन उतनी ही जमीन में अन्न इत्यादि उगा कर किया जा सकता है। इस सिद्धान्त का लाभ अंग्रेजों ने दूसरी बड़ी लड़ाई (१९३९–४५) में उठाया।

अमेरिका में अपनी खेती-बाड़ी से अधिकतर उन पशुओं के पालन-पोषण के लिए ही अन्न उपजाते हैं, जो भोजन में प्रयोग किये जाते हैं।

एक बछड़े का तोल जन्म के समय १०० पौंड होता है और १४ महीने बाद जब वह कसाईखाने में भेजा जाता है तो उसका तोल ११०० पौंड हो जाता है। उसको इस अवधि में पालने में १४०० पौंड दाना, २५०० पौंड घास, २५०० पौंड साइलेज और ६००० पौंड पास्चर खर्च करना पड़ता है। ११०० पौंड के तोल में से केवल ४६० पौंड ही मांस उपलब्ध होता है, क्योंकि उसका ३० प्रतिशत मुर्दा शरीर तो अखाद्य ही है।

इसके विपरीत जमीन का वही भाग मांस की जगह ५ गुणा अधिक अन्न के प्रोटीन को उपलब्ध करा सकता है। यदि दूसरे प्रकार से हिसाब लगाया जावे

तो पाया गया है कि १६ पौंड अन्न से केवल एक पौंड गाय का मांस (beef) और ७ या ८ पौंड अन्न से केवल एक पौंड सुअर का मांस (pork) ही उपलब्ध होता है।

इन दिनों सारे संसार में एक वर्ष में १३०० मिलियन टन अन्न या खाद्य पदार्थों का उत्पादन हुआ जिसका विकसित देशों ने, जिनकी आबादी संसार की आबादी की केवल १/४ है, १/२ पैदावार का उपयोग कर डाला। उनके मांस के लिए पाले जाने वाले पशु संसार में प्रयोग में लाने वाले अन्न का पूरा १/४ भाग खा गये। इसके विपरीत अविकसित देशों में प्रति व्यक्ति ५०६ पौंड अन्न प्रति वर्ष उपयोग में आया जबकि १९६९-७१ में अमेरिका में प्रति व्यक्ति अन्न की खपत १७६० पौंड प्रति वर्ष हुई, जिसका ९/१० भाग मांस, मुरगी अथवा डेयरी उपज (dairy products) पर काम आया।

अत: प्रत्यक्ष ही है कि शाकाहार सस्ते से सस्ता व स्वास्थ्यप्रद है। इसके विपरीत मांसाहार से दिल की बीमारी व केन्सर इत्यादि भी होते बताये गये हैं।

### दूध (प्राकृतिक)

दूध हमारे भोजन का अत्यन्त आवश्यक अंग है, विशेषकर शिशुओं के लिए। इसका महत्त्व वयस्कों के भोजन में भी है, क्योंकि इसमें सारे पौष्टिक तत्त्व एवं प्रोटीन (अमीनोएसिड) मौजूद हैं।

निश्चय ही दूध पशुओं से प्राप्त होता है, परन्तु हिंसात्मक साधनों से नहीं। दूध प्राप्त करने की प्रक्रिया की जीवित कारखाने अथवा फैक्ट्री की प्रक्रिया से तुलना की जा सकती है, जिसमें कच्चा माल चारे-दाने के रूप में दिया जाता है और तैयार माल दूध के रूप में प्राप्त होता है।

जब तक अत्यधिक शोषण न किया जावे दूध दोहना पशु अथवा उसके बछड़े-बछड़ी के हित के विपरीत भी नहीं होता। शारीरिक क्रिया के वैज्ञानिकों ने जानकारी दी है कि मनुष्य में भी माँ के स्तन से दूध शिशु की आवश्यकता से ६ गुणा तक अधिक भी प्राप्त हो सकता है। अतः पशुओं के संबंध में भी यदि उसकी खिलाई-पिलाई ठीक हो तो यह सिद्धान्त कुछ कम सत्य नहीं होना चाहिये। इस प्रकार यह प्रणाली पशु और उसके मालिक दोनों के लिए ही लाभदायक है।

यद्यपि हमारा देश मुख्यत: खेती-बाड़ी वाला है, तथापि दूध का उत्पादन प्रति व्यक्ति मुश्किल से हमारी न्यूनतम आवश्यकता से आधा भी नहीं है। कीमत तो अत्यधिक है ही। ३५ साल स्वराज्य प्राप्ति के उपरान्त भी दूध की

उपलब्धि में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ा, जिसका यह भी कारण अवश्य है कि हमारी आबादी निरन्तर अत्यधिक बढ़ती जा रही है। अच्छे स्वास्थ्य के लिये पूरी मात्रा में दूध का उपलब्ध होना अत्यन्त आवश्यक है।

**नकली दूध अथवा दूध की एवज में अन्य पदार्थ**

जब तक हम लोग दूध की उपलब्धि के सम्बन्ध में पर्याप्त रूप से स्वतन्त्र न होवें, हमको अन्य सहारा लेना ही पड़ेगा। भले ही वह सहारा तुलना में कितना ही हीन प्रकार का क्यों न हो। यह विदित है कि चीन देश ने इस समस्या को सैकड़ों वर्ष पहले से ही सोयाबीन से बने हुए (वनस्पति स्रोत) नकली दूध से हल कर ली है। हम लोग नकली दूध सोयाबीन के अतिरिक्त मूंगफली से भी प्राप्त कर सकते हैं। यह नकली दूध अपने पौष्टिक अंश व कैलोरी की दृष्टि से साधारण दूध से मिलता-जुलता ही है। इसमें प्रोटीन (अमीनोएसिड) भी यथेष्ट हैं

यह नकली दूध सोयाबीन अथवा मूंगफली से तैयार करने के लिये इनको थोड़े पानी में एक चुटकी खाने का सोडा (culinary soda) डालकर भिगो दिया जाता है। फिर थोड़े समय बाद इस पानी को फैंक कर नये पानी के साथ बारीक पीसकर, महीन कपड़े से छान लिया जाता है। छने हुये रस में नितरा हुआ थोड़ा-सा चूने का पानी मिला कर और उबाल कर रुचि के माफिक शक्कर मिला कर उपयोग में लाया जा सकता है। इस नकली दूध का दही बनाने के लिये थोड़ी ग्लूकोज (glucose) मिला कर साधारण दही बनाने की प्रक्रिया की तरह जामन लगाकर (seeding) जमाया जाता है।

**खनिज तत्त्व**

शरीर में १६ खनिज तत्त्व है। इनमें से मुख्य-मुख्य नीचे लिखे हैं-—

१. **कैल्सियम (Calcium)** : यह मुख्य रूप से शरीर के फास्फोरस (phosphorus) से सम्बन्धित है और हड्डी का अंग है। इसके अंगीकरण के लिये विटामिन 'डी' की आवश्यकता है। हड्डी का कैल्सियम भण्डार का काम देता है, जिसमें से आवश्यकता के समय उपयोग में लिया जा सके; जैसे कि गर्भावस्था में अथवा बच्चे को दूध पिलाने की अवस्था में। यह कार्य प्रकृति ने शरीर की आवश्यकताओं में सर्वोपरि रखा हुआ है। अगर इस अवस्था में कैल्सियम की कमी हो तो इसके लिए कैल्सियम हड्डियों से सोख तो लिया ही जाता है, भले ही हड्डियाँ मुलायम ही क्यों न हो जावें।

पराथाइरायड (Parathyroid) ग्रंथी इसके चयापचय (metabolism) से संबंधित है। फाइटिक एसिड (Phytic acid) कैल्सियम के अवशोषण

(absorption) में अवरोध करता है। यह एसिड गेहूँ के बाहर के भाग में होता है।

दूध कैल्सियम का अच्छा स्रोत है। अधिक प्रोटीनयुक्त पदार्थ कैल्सियम के अवशोषण में सहायक होते हैं।

२. **फास्फोरस (Phosphorus)** : यह भी हड्डी व दाँत का अंश है और इसी प्रकार न्यूक्लियोप्रोटीन (nucleoproteins) व न्यूक्लिक एसिड (nucleic acid) का भी। कैल्सियम व फास्फोरस शरीर में व्युत्क्रमानुपात (inversely proportional) में रहते हैं।

३. **मैग्नीशियम (Magnesium)** : यह एन्जाइमों (शरीर के कार्य के लिए आवश्यक रसायन) के लिए आवश्यक है और शरीर में चीनी अथवा कार्बोहाइड्रेट से बने हुए ग्लाइकोजन नाम के पदार्थ के कार्य से सम्बन्धित है। इसकी कमी चक्कर आने व कमजोरी लगने का कारण भी होती है।

४. **सोडियम (Sodium)** : यह सोडियम क्लोराइड की शक्ल में रहता है, जिसको नमक अथवा टेबिल साल्ट अथवा NaCl भी कहते हैं। यह कोशिकाओं के बीच की जगह (इन्टरसेल्यूलर स्पेस—intercellular space) में रहता है जबकि पोटेशियम कोशिकाओं के अन्दर के घोल में पाया जाता है। इसकी दैनिक आवश्यकता ६ से १२ ग्राम (अथवा कुछ अन्य लोगों के अनुमान से १० से १५ ग्राम) है।

जब गुर्दा ठीक काम करता हो तो सोडियम की अनावश्यक मात्रा शरीर के बाहर गुर्दे के माध्यम से मूत्र में निकल जाती है। इस कार्य को नमक की प्रचुर मात्रा होने पर भी स्वस्थ गुर्दे सुचारु रूप से करने में सक्षम होते हैं। (दूध में सोडियम की मात्रा अधिक है—२४० ग्राम दूध में १२० मि० ग्रा० सोडियम की दर से)।

पानी का जहरीला प्रभाव (water intoxication)—जो शरीर में पानी के इकट्ठा होने अथवा सोडियम की कमी से होता है। यह स्थिति सोडियम की कमी के साथ-साथ दिल (heart) की शक्ति क्षीण होने पर और गुर्दा भी ठीक से काम करने में अक्षम होने पर होती है।

बीमारी अधिक उग्र नहीं होने पर ५ ग्राम सोडियम क्लोराइड प्रतिदिन के हिसाब से ही काम चलाया जा सकता है अर्थात् केवल २ ग्राम सोडियम आयन (sodium ion)। जिनका गुर्दा खराब हो चुका हो उनको यूरेमिया (uremia) नामक रोग की जोखिम है। अगर सोडियम की मात्रा कम करने

का ध्येय हो तो दूध भी प्रतिदिन १/२ पाइन्ट अर्थात् १० आउंस से अधिक उपयोग में नहीं लेना चाहिए। प्राय: प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थों में सोडियम की मात्रा अधिक रहती है (जैसे—दूध, अण्डा, लाल मांस इत्यादि में)।

पसीने में (जैसे—खानों में अधिक परिश्रम करने वाले श्रमिकों में) सोडियम नमक के रूप में शरीर से निकलता है। यदि अत्यधिक मात्रा में पसीना आवे तो मांसपेशियों में सोडियम के बहुत कम हो जाने से शरीर में बांयटे आने लगते हैं। इन श्रमिकों के पसीने से २५-३० ग्राम तक भी नमक एक दिन में निकल जाता है। उस स्थिति में अधिक नमक का उपयोग आवश्यक हो जाता है।

५. **पोटेशियम (Potassium)** : यह कोशिकाओं का आवश्यक अंश है। पेशाब लाने वाली दवाइयों से भी इसकी शरीर में कमी हो जाती है, जिससे मांसपेशियों में कमजोरी और दिल के कार्य में भी शिथिलता आ जाती है। इसके उपचार के लिए फलों का रस, सूखे मेवे, गुड़—जिनमें पोटेशियम अधिक मात्रा में है—उपयोगी हैं। [क्रमशः]

१, अस्पताल मार्ग, जयपुर—३०२ ००४

# सबसे गरीब

☐ श्री राजकुमार जैन

इब्राहीम आदम बलख के बादशाह थे। उनकी जिन्दगी में कुछ ऐसी घटनाएँ हुई कि उनका मन राजपाट से हट गया और वह राजपाट छोड़कर फकीर बन गये।

एक बार एक अमीर उनके पास एक हजार अशर्फियों की थैली लेकर आया और बोला—"यह थैली मैं आपके लिए लाया हूं। मेहरबानी करके इसे स्वीकार करें।"

"नहीं, भाई मेरे, मैं गरीब आदमी की फूटी कौड़ी लेना भी पसन्द नहीं करता हूं।"—इब्राहीम बोले।

अमीर ने कहा—"लेकिन मैं गरीब नहीं हूं। मेरे पास काफी धन है।"

इब्राहीम ने कहा—"यह माना कि तुम्हारे पास काफी धन है लेकिन तुम्हारे मन में अभी और धन पाने की लालसा बनी हुई है न ?"

अमीर ने कहा—"जी हाँ, लेकिन मेरे ही क्या सभी के दिल में पैसों की लालसा होती है।"

इब्राहीम ने कहा—"भाई, धनी होते हुए भी जिसकी धन की इच्छा दूर नहीं हुई, उसे मैं सबसे गरीब मानता हूँ।"

यह सुन अमीर की आँखें खुल गईं।

—३४, बंधा रोड, भवानीमंडी (राज.)

# प्रस्तावित महावीर जैन विश्वविद्यालय (जलगांव) सम्बन्धी प्रथम अध्ययन-दल-यात्रा प्रतिवेदन

☐ प्रस्तोता–डॉ० नरेन्द्र भानावत

## पृष्ठ भूमि

परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के सन् १९८२ के जलगांव चातुर्मास में जैन विद्या के संरक्षण, संवर्द्धन, अध्ययन-अनुशीलन व प्रचार-प्रसार विषयक सदुपदेशों से प्रेरित व प्रभावित होकर वहां के युवा विधायक व प्रमुख उद्योगपति समाजचिन्तामणि श्री सुरेश कुमार जैन ने जलगांव में **'भगवान् महावीर जैन विश्वविद्यालय'** स्थापित करने का शुभ संकल्प किया।

विश्वविद्यालय की प्रकल्पना को साकार रूप देने की दिशा में अध्ययन-यात्रा का प्रथम कार्यक्रम पूर्वी भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों की कार्य-पद्धति को निकट से देखने व समझने के लिये निश्चित किया गया।

## अध्ययन-यात्रा का उद्देश्य

इस अध्ययन-यात्रा के निम्नलिखित उद्देश्य थे :—

१. प्रस्तावित भगवान् महावीर जैन विश्वविद्यालय जलगांव के स्वरूप, पाठ्यक्रम, संचालन आदि विविध प्रकार के प्रकल्पों को मूर्तरूप देने के लिये पूर्वी भारत के प्राच्यविद्या व धर्म-दर्शन सम्बन्धी विभिन्न विश्वविद्यालयों व संस्थानों की कार्य-पद्धति का प्रत्यक्ष अध्ययन व अनुशीलन करना।

२. इस सम्बन्ध में अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ विद्वानों से साक्षात्कार कर उनके विचारों व अनुभवों से लाभान्वित होना।

३. संबंधित विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों के संस्थापकों की मूलभूत कल्पनाओं से परिचित होना व तत्सम्बन्धी आवश्यक सामग्री एकत्रित करना।

४. विश्वविद्यालयों के संकायगत विभागों के पाठ्यक्रम, नियम-उपनियम प्रतिवेदन आदि प्राप्त करना।

अध्ययन-यात्रा का कार्यक्रम दिनांक २१ अप्रैल, १९८३ से ३० अप्रैल, १९८३ तक आयोजित किया गया, जिसमें निम्नलिखित सदस्य सम्मिलित हुए :—

(१) श्री सुरेशकुमार जैन : प्रस्तावक—भगवान महावीर जैन, विश्वविद्यालय, जलगांव ।

(२) श्री भंवरलाल जैन : प्रमुख उद्योगपति, जलगांव ।

(३) डॉ. नरेन्द्र भानावत : हिन्दी प्राध्यापक, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।

(४) डॉ. उदय जैन : मनोविज्ञान प्राध्यापक, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।

(५) श्री कन्हैयालाल दक : जैन पंडित, जलगांव ।

(६) श्री बी. एल. परमार : सीनियर असिस्टेन्ट—राजस्थान विश्वविद्यालय, कालेज विकास परिषद्, जयपुर ।

अध्ययन दल ने दिनांक २२-२३ अप्रैल को वाराणसी व सारनाथ, २४-२५ अप्रैल को कलकत्ता, २६ अप्रैल को शान्ति निकेतन, २७ अप्रैल को वैशाली, २८ अप्रैल को राजगृह व नालन्दा तथा २९-३० अप्रैल को दिल्ली स्थित विभिन्न विश्वविद्यालयों व शोध-संस्थानों का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन एवं प्रतिष्ठित विशेषज्ञ विद्वानों व संस्था-संचालकों से प्रत्यक्ष सम्पर्क कर आवश्यक विचार-विमर्श किया ।

## देखे गये विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों का विवरण

इस अध्ययन-यात्रा में जिन प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थाओं को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ, उनका विवरण इस प्रकार है :—

**(१) श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रय शोध संस्थान, वाराणसी :**

सन् १९३५ में अमृतसर में पूज्य श्री सोहनलालजी म. सा. की पावन स्मृति में 'श्री सोहनलाल जैन धर्म प्रसारक समिति' का स्थापना हुई । सन् १९३६ में समिति के कार्य-क्षेत्र के सम्बन्ध में मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये सर्वश्री लाला त्रिभुवन नाथ, लाला मस्तराम व लाला हरजसराय जैन, धर्म-दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान्, प्रज्ञाचक्षु पं. सुखलाल संघवी के पास वाराणसी पहुंचे । पंडित जी के निर्देशन के आधार पर समिति ने जैनविद्या के विकास एवं प्रचार-प्रसार को अपना मुख्य लक्ष्य बनाकर सन् १९३७ में भगवान् पार्श्वनाथ की जन्मस्थली व विद्यानगरी वाराणसी में उन्हीं के नाम पर उक्त संस्थान की स्थापना की । प्रारम्भ में किराये के मकान में संस्था का कार्य चलता रहा । पर

अब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निकट ही संस्था का अपना भवन है। इस संस्थान के निदेशक को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध-निर्देशन की मान्यता व सुविधा प्राप्त है। संस्थान की ओर से जैन-धर्म दर्शन में शोध कार्य करने वाले छात्रों एवं विद्वानों को छात्रवृत्तियां एवं आवासीय सुविधा प्रदान की जाती है। अब तक लगभग २५ शोध छात्रों ने यहाँ रह कर जैन विद्या के विभिन्न क्षेत्रों में पी-एच. डी. की उपाधियां प्राप्त की हैं। डॉ. नथमल टाटिया, डॉ. इन्द्र चन्द्र शास्त्री, डॉ. मोहन लाल मेहता आदि जैनविद्या के अधिकृत विद्वान् इसी संस्थान की देन हैं। संस्थान के 'शतावधानी रत्न चन्द्र पुस्तकालय' में जैन विद्या व अन्य दर्शनों से सम्बन्धित दुर्लभ व महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ उपलब्ध हैं। संस्थान की ओर से अब तक छोटे-बड़े लगभग ५० ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनका जैन विद्या के क्षेत्र में विशिष्ट अनुसंधानात्मक मूल्य है। यहां से 'श्रमण' मासिक पत्र का प्रकाशन गत ३४ वर्षों से हो रहा है। इस संस्थान का लाभ जैन-जनेतर सभी छात्रों को समान रूप से मिलता है।

### (२) स्याद्वाद महाविद्यालय, भदेनी, वाराणसी :

इस महाविद्यालय की स्थापना १२ जून, १९०५ को हुई। आरा के श्री देवकुमार ने अपने पूज्य पितामह पं. प्रभुदास द्वारा निर्मित प्रभुघाट, भदेनी, गंगा किनारे स्थित विशाल धर्मशाला को इस विद्यालय एवं छात्रावास के उपयोग के लिये प्रदान किया। इसके विकास में श्री गणेश प्रसाद वर्णी का विशेष योगदान रहा। आज जैन समाज में—विशेषतः दिगम्बर जैन समाज में जितने भी उच्चकोटि के विद्वान् हैं, लगभग सभी इसी संस्थान की देन हैं। जिनमें प्रमुख हैं—पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, डॉ. दरबारी लाल कोठिया, पं. चैनसुखदास, डॉ. नेमीचन्द शास्त्री, डॉ. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य, डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, पं. फूलचन्द शास्त्री, पं. सुमेरुचन्द्र दिवाकर आदि। यहाँ जैन धर्म, न्याय, साहित्य, व्याकरण की उच्च शिक्षा के साथ-साथ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमानुसार शिक्षण की व्यवस्था है। यहाँ छात्रावास भी है।

### (३) काशी विद्यापीठ, वाराणसी :

इस संस्थान की स्थापना भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अन्तर्गत असहयोग आन्दोलन के दौरान महात्मा गांधी की प्रेरणा से सन् १९२१ में हुई। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य—राष्ट्र भाषा हिन्दी के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत शिक्षा देते हुए स्वदेश भक्ति व स्वाभिमान की भावना को सदा जागृत रखना था। देश के अनेक उच्चकोटि के विद्वान्, शिक्षाशास्त्री, राजनीतिज्ञ इसी संस्थान के छात्र रहे हैं। इस समय इस विद्यापीठ में लगभग ५००० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अन्य विश्वविद्यालयों की तरह यहाँ

कला व सामाजिक विज्ञान संकायों से सम्बन्धित विषयों के अध्ययन-अनुसंधान की व्यवस्था है।

**(४) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी :**

शिक्षा के कार्य क्षेत्र में रत देश की यह सबसे पुरानी संस्था है। इसकी स्थापना सन् १७९१ में एक छोटी-सी संस्कृत पाठशाला के रूप में हुई थी। संस्कृत भाषा के गौरव को अक्षुण्ण बनाये रखना इसका मुख्य उद्देश्य है। यहाँ ५ संकाय हैं, जिनमें श्रमण संकाय का अपना विशिष्ट स्थान है। इस संकाय के अन्तर्गत जैन और बौद्ध दर्शन के दो प्रमुख विभाग हैं। जैन विद्या में जैन आगम और जैन दर्शन के अलग-अलग विभाग हैं। यह संस्थान प्राच्य विद्याओं के अध्ययन व शोध का एक प्रमुख केन्द्र है। इस संस्था द्वारा मध्यमा, शास्त्री व आचार्य की उपाधियाँ विविध विषयों में दी जाती हैं।

**(५) बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी :**

इस संस्था की स्थापना महामना पं. मदन मोहन मालवीय के सत्प्रयत्नों द्वारा लगभग ६० वर्ष पूर्व हुई। देश के सैंकड़ों राजा, महाराजाओं एवं उदार हृदय दानदाताओं ने भारतीय संस्कृति को पुनरुज्जीवित करने की दृष्टि से व प्राच्य विद्या के प्रचार में सहयोगी बनने की उत्कट भावना से उदारतापूर्वक इस संस्थान को दान दिया। यह विश्वविद्यालय क्षेत्र—विस्तार व शिक्षण सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से देश के प्रमुख व प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है। यहाँ सभी प्रमुख संकाय व विभाग हैं। भारतीय धर्मों व दर्शनों के अध्ययन व शोध के लिये एक पृथक् महाविद्यालय भी है।

**(६) केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ :**

यह संस्था मुख्य रूप से तिब्बत से भारत में अध्ययनार्थ आने वाले तिब्बती शरणार्थी छात्रों के लिये स्थापित की गई है। यह संस्था एक आवासीय संस्था है। यहाँ पढ़ने वाले छात्रों को छात्रावास में रहकर, अध्ययन करना अनिवार्य है। वर्तमान में यहाँ २०० छात्र हैं। इसके संचालक श्री एस. रिम्पोचे हैं। यहाँ तिब्बती, पाली, संस्कृत तथा हिन्दी भाषाओं के अध्ययन की मुख्य व्यवस्था है। बौद्ध दर्शन व अंग्रेजी भाषा का अध्ययन भी विशेष रूप से कराया जाता है। यह संस्था सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। यहां के पुस्तकालय में बौद्ध धर्म-दर्शन से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं के प्रमुख ग्रन्थ उपलब्ध हैं। यहां के अधिकांश स्नातक विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रचार-कार्य में अपनी सेवायें देते हैं। यह संस्था भारत सरकार के सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा प्रदत्त अनुदान से संचालित होती है।

**(७) राष्ट्रीय पुस्तकालय (National Library) कलकत्ता :**

यह देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। यहाँ विविध विषयों व भाषाओं

की अनेक विभागों में वर्गीकृत लगभग १८ लाख पुस्तकें उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय में अध्येताओं व शोधार्थियों के लिये सन्दर्भ पुस्तकों को देखने व अध्ययन करने की विशेष व्यवस्था है। विभिन्न भाषाओं के विशिष्ट साहित्यकारों के कर्तृत्व से सम्बन्धित सन्दर्भ कक्ष भी हैं। पुस्तकालय का भवन भी बहुत पुराना व ऐतिहासिक है। भारत सरकार के नियमानुसार प्रत्येक प्रकाशक को अपने प्रकाशन की ३ प्रतियाँ इस पुस्तकालय को निःशुल्क भेजनी होती हैं। यहां दुर्लभ ग्रन्थ भी आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। देश की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित प्राचीन एवं दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण संग्रह भी यहाँ एक अलग भवन में है जो शोधार्थियों के लिये बहुत ही उपयोगी है।

**(८) विश्व भारती, शान्ति निकेतन :**

यह केवल भारत का ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय है। इसकी स्थापना के पीछे प्रेरणादायी इतिहास है। केवल ५ विद्यार्थियों से एक ब्रह्मचर्याश्रम के रूप में सन् १९०१ में विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसकी स्थापना की। सन् १९२१ में इसे 'विश्व भारती' नाम दिया गया तथा सन् १९६१ में इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का स्वरूप प्रदान किया गया। इस संस्था की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य कला, संस्कृति व साहित्य का सर्वांगीण विकास तथा शिक्षा के साथ-साथ कृषि एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में अध्ययन एवं अनुसंधान करना है। इस संस्था में देश-विदेश की २२ भाषाओं के अध्ययन की सुविधा है। यहां संगीत, नृत्य, चित्र व नाट्य कला के शिक्षण की विशेष व्यवस्था है। इस संस्था का परिसर १३०० एकड़ भूमि में है। यहां शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या लगभग ३५०० है। यहां प्राथमिक स्तर से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षण दिया जाता है।

**(९) प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली :**

इस संस्थान की स्थापना साहू शान्ति प्रसाद जैन के आर्थिक सहयोग से बिहार सरकार द्वारा सन् १९५५ में की गई। इसका प्रारम्भ मुजफ्फरपुर में एक किराये के मकान में हुआ। सन् १९६५ में भगवान् महावीर के जन्म स्थान वासोकुण्ड (वैशाली) में अपने निजी भवन में इसका स्थानान्तरण हुआ। इस संस्थान में एक समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें प्राच्य भाषाओं व विषयों की विशेषकर प्राकृत साहित्य, जैन दर्शन व बौद्ध-दर्शन की १४००० पुस्तकें हैं। शोधार्थी छात्रों के लिए एक छोटा सा छात्रावास है। पुस्तकालय की बहुत सी पुस्तकें दान में प्राप्त हुई हैं। इस संस्था में स्नातकोत्तर अध्ययन तथा शोध की सुविधा है। १० स्नातकोत्तर छात्रों को ५०) रुपये प्रतिमास की छात्रवृत्ति दी जाती है तथा ४ शोधार्थी छात्रों को १५०) रुपये मासिक की छात्रवृत्तियां बिहार सरकार द्वारा दी जाती हैं। यह संस्थान बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर द्वारा

मान्यता प्राप्त है। अब तक ३५ विद्वानों ने यहां रहकर पी-एच. डी. की उपाधियां प्राप्त की हैं। प्रकाशक विभाग द्वारा प्राकृत तथा जैन विद्या से सम्बन्धित स्तरीय पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं।

**(१०) नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा :**

भारतीय संस्कृति के विकास व विस्तार में प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अभी भी उसके अवशेष विद्यमान हैं। बिहार सरकार ने प्राचीन विश्वविद्यालय के समीप ही सन् १९५६ में नव नालन्दा महाविहार के नाम से नवीन शोध संस्थान व शिक्षण केन्द्र की स्थापना की है। यहाँ स्नातकोत्तर स्तर तक पाली साहित्य एवं बौद्ध धर्म-दर्शन के अध्ययन व अनुसंधान की विशेष व्यवस्था है। यह संस्थान मगध विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है और अब निकट भविष्य में स्वतंत्र विश्वविद्यालय का स्वरूप धारण करने वाला है। यहां पर बौद्ध दर्शन का अध्ययन करने के लिये विदेशों से बौद्ध भिक्षु व शोध छात्र आते रहते हैं, जो संस्कृत, पाली, प्राचीन भारतीय इतिहास व संस्कृति के अतिरिक्त तिब्बती, चीनी, मंगोलिया, जापानी व अन्य कई एशियाई भाषाओं का अध्ययन करते हैं। छात्रावास में १०० छात्रों के आवास की व्यवस्था है। उच्च स्तरीय समीक्षात्मक बौद्ध साहित्य का विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन भी यहां से किया जाता है। यहां के पुस्तकालय में ३० हजार ग्रन्थ व कई भाषाओं की हस्तलिखित पुस्तकें व पाण्डुलिपियां हैं। यहां छात्रों को विभिन्न छातवृत्तियां देने का भी प्रावधान है।

**(११) वीरायतन, राजगृह :**

इस संस्था की स्थापना आज से लगभग ११ वर्ष पूर्व हुई। राजगृह का प्राचीन काल से ही अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व रहा है। भगवान् महवीर की यह प्रमुख विहार स्थली है। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म व वैदिक संस्कृति का भी यह केन्द्र रहा है। इसके इसी प्राचीन महत्त्व को देखकर विद्वद्वर्य कवि श्री अमर मुनि जी की प्रेरणा से यहाँ पर 'वीरायतन' की स्थापना की गई। इस संस्था की महत्त्वपूर्ण विशेषता जैन धर्म को समाज-सेवा से जोड़ने में है। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य महावीर की अहिंसा को समाज स्तर से प्रसारित करके उसे व्यावहारिक रूप देना है। यहाँ का 'ब्राह्मी कला मन्दिर' दर्शनार्थियों के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ भगवान् महावीर का जीवन तथा उनसे संबंधित अनेक महापुरुषों की जीवन चित्रावलियां अंकित हैं। यहाँ का पुस्तकालय बड़ा समृद्ध है। यहाँ से 'श्री अमर भारती' मासिक पत्रिका और जीवन्नोयक सत् साहित्य का प्रकाशन होता है। पीड़ित मानवता की सेवा के लिये औषधालय एवं चल-चिकित्सालय का भी संचालन किया जाता है। वर्ष भर में दो-तीन नेत्र शिविर भी आयोजित किये जाते हैं। इस प्रकार यह संस्था अपने सेवा कार्यों से इस क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय है। इस संस्था की योजनाओं को कार्यान्वित

करने में विदुषी महासती श्री चन्दनाजी विशेष सक्रिय हैं।

उपर्युक्त संस्थाओं के सामान्य अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ये संस्थायें प्रमुख रूप से भारतीय प्राचीन भाषाओं, धर्म एवं दर्शन के अध्ययन-अनुसंधान से सम्बन्धित हैं। अपने उद्देश्यों की संपूर्ति में ये आंशिक रूप से ही सफल हो पाई हैं। इसके अनेक कारणों में से प्रतिबद्ध योग्य विद्वानों का अभाव, सरकारी जटिल नियम एवं आर्थिक कारण विशिष्ट हैं। अन्य शिक्षण संस्थाओं की तरह ये संस्थायें भी परीक्षोन्मुख हो रही हैं और उनमें दर्शन, चरित्र की प्रवृत्ति गौण लक्ष्य के रूप में हो चुकी है। शोध कार्य भी उच्च स्तरीय नहीं हो पा रहा है एवं पुस्तकालयों की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है।

अतः यह आवश्यक है कि सुयोग्य, निष्ठावान प्रतिबद्ध व सेवा भावी विद्वानों को इन संस्थानों से जोड़ा जाय और समाज इनकी आर्थिक कठिनाइयों को उदारता पूर्वक दूर करे।

## अध्ययन दल का विद्वानों से सम्पर्क एवं विचार-विमर्श

इन १० दिनों की यात्रा में अध्ययन दल ने निम्नलिखित विद्वानों, अनुभवी विचारकों तथा शिक्षा-शास्त्रियों से सम्पर्क किया :—

(१) **डॉ० दरबारीलाल कोठिया** : भू. पू. अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(२) **डॉ० गोकुलचन्द्र जैन** : अध्यक्ष, जैन आगम विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(३) **डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'** : अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(४) **डॉ० जगन्नाथ उपाध्याय** : भू. पू. अध्यक्ष, श्रमण संकाय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(५) **डॉ० रघुनाथ गिरि** : अध्यक्ष, दर्शन विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

(६) **डॉ० वशिष्ठ नारायण सिन्हा** : प्राध्यापक, दर्शन विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

(७) **डॉ० इकबाल नारायण** : कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(८) **डॉ० एन० समतानी** : अध्यक्ष, बौद्ध दर्शन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(९) **डॉ० सुदर्शनलाल जैन** : प्राध्यापक, संस्कृत विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(१०) **पं० खुशालचन्द गोरावाला** : प्रबुद्ध जैन विद्वान्, वाराणसी।

(११) श्री **एस. रिम्पोचे** : निदेशक, तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ।

(१२) **डॉ० कल्याणमल लोढ़ा** : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्व-विद्यालय, कलकत्ता।

(१३) **श्री सरदारमल कांकरिया** : प्रमुख उद्योगपति व समाज-सेवी, कलकत्ता।

(१४) **श्री माणकचन्द रामपुरिया** : अध्यक्ष, स्था. जैन सभा, कलकत्ता।

(१५) **डॉ० रामसिंह तोमर** : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विश्वभारती, शान्ति निकेतन।

(१६) **डॉ० सी. बी. सिरकार** : निदेशक, ग्रामीण पुनर्निर्माण विभाग, श्री निकेतन, विश्वभारती, शान्ति निकेतन।

(१७) **श्री शिवकुमार मिश्र** : प्राध्यापक, इतिहास विभाग, प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली।

(१८) **डॉ० शिव बहादुरसिंह** : प्राध्यापक, इतिहास विभाग, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा।

(१९) **कवि श्री अमर मुनिजी** : प्रबुद्ध विचारक व प्रसिद्ध जैन सन्त, वीरायतन, राजगृह।

(२०) **विदुषी महासती श्री चन्दनाजी**: वीरायतन, राजगृह।

(२१) **पं० रत्न श्री केवल मुनिजी** : कवि तथा लेखक, वीरायतन, राजगृह।

(२२) **श्री लक्ष्मीचन्द जैन** : निदेशक, भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली।

(२३) **श्री यशपाल जैन** : प्रबुद्ध विचारक व प्रसिद्ध लेखक, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।

(२४) **श्री डी० आर० मेहता** : संयुक्त वित्त सचिव, भारत सरकार, नई दिल्ली।

## विचारक-विमर्श से निष्पन्न महत्त्वपूर्ण बिन्दु

विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अधिकृत विद्वानों से विचार-विमर्श करते समय जो बिन्दु उभर कर सामने आये, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

### (१) विश्वविद्यालय का नाम

विचार-विमर्श में विद्वानों ने प्रस्तावित विश्वविद्यालय के लिये निम्न-लिखित नाम सुझाये :—

(१) भगवान् महावीर जैन विश्वविद्यालय
(२) महावीर विश्वविद्यालय
(३) महावीर अजन्ता विद्यापीठ
(४) जैन विद्याध्ययन केन्द्र।

## (२) विश्वविद्यालय के उद्देश्य

प्रस्तावित विश्वविद्यालय के मुख्य रूप से निम्नलिखित उद्देश्य हों—

(१) जैन विद्या का अध्ययन-अनुसंधान, प्रचार-प्रसार, संरक्षण एवं संवर्द्धन करना।

(२) महावीर के अहिंसा के सन्देश का देश-विदेश में व्यापक प्रचार करना।

(३) भारतीय धर्म एवं दर्शन तथा जैन विद्या के विशिष्ट विद्वान्, विचारक, शोधकर्ता एवं स्वाध्यायी तैयार करना।

(४) सच्चरित्र व सेवाभावी व्यक्तित्व का निर्माण करना।

(५) जैन साहित्य का देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं में उच्चस्तरीय व प्रामाणिक प्रकाशन करना।

## (३) विश्वविद्यालय का स्वरूप

(१) विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रथम चरण में एक कॉलेज अथवा संस्थान आरम्भ किया जाय, जिसमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, जैन दर्शन, प्राचीन इतिहास व मनोविज्ञान आदि विषयों के अध्ययन के लिये पूना विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त की जाय।

(२) यह भी विचार आया कि प्रारंभ से ही पूर्ण विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिये महाराष्ट्र सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुमति प्राप्त की जाय और उसमें सभी प्रमुख संकायों से संबंधित विभाग खोले जायं।

(३) विश्वविद्यालय के अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान में पुस्तकालय का सर्वाधिक महत्त्व होने से जैन साहित्य संबंधी एक राष्ट्रीय स्तर के पुस्तकालय का प्रारम्भ एवं विकास कार्य अभी से किया जाय। पुस्तकालय के एक अंग के रूप में हस्तलिखित ग्रन्थागार का विकास भी किया जाय।

(४) जैन विद्या से सम्बन्धित एक म्यूजियम स्थापित किया जाय।

(५) विश्वविद्यालय को साम्प्रदायिकता व संकीर्णता से मुक्त रखा जाय। इसके लिये छात्रों के प्रवेश में कोई जाति, सम्प्रदाय या धर्मगत भेदभाव न रखा जाय।

(६) प्रारम्भ में विश्वविद्यालय का आकार अधिक वृहद् न हो और केवल आवासीय छात्रों को ही प्रवेश दिया जाय।

(७) विश्वविद्यालय को आर्थिक सहायता देने वाले ट्रस्ट का पंजीकरण स्वतंत्र और पृथक् हो।

(८) विश्वविद्यालय का संचालन करने के लिये एक शिक्षा समिति का गठन कर उसका पंजीयन कराया जाय।

(९) सम्पूर्ण विश्वविद्यालय की योजना का प्रारूप तैयार किया जाय और उसे आवश्यकतानुसार विभिन्न चरणों में विकसित किया जाय

## (४) विश्वविद्यालय में संकाय एवं विभाग

प्रस्तावित विश्वविद्यालय में निम्नलिखित संकाय एवं विभाग गठित किये जायें—

(१) **भाषा संकाय :**

इस संकाय के अन्तर्गत प्राच्य भाषाओं—संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, आधुनिक भाषाओं—हिन्दी, अंग्रेजी, दक्षिणी भाषाओं—तमिल, तैलगू, मराठी, कन्नड़, विदेशी भाषाओं—तिब्बती, जर्मन, फ्रेन्च, चीनी, जापानी आदि के विभाग स्थापित किये जायें।

(२) **दर्शन एवं धर्म संकाय :**

इस संकाय के अन्तर्गत देश-विदेश के विभिन्न धर्म एवं दर्शनों के यथा—जैन, बौद्ध व वैदिक दर्शन के विभाग स्थापित किये जायें और पाठ्यक्रम में भारतीय एवं पाश्चात्य धर्म दर्शनों के तुलनात्मक अध्ययन का विशेष प्रावधान रखा जाय। राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का विभाग भी इस संकाय में रखा जा सकता है।

(३) **सामाजिक विज्ञान संकाय :**

इस संकाय के अन्तर्गत इतिहास, मनोविज्ञान, अर्थ शास्त्र, समाज शास्त्र, राजनीति विज्ञान आदि विषयों के विभाग स्थापित किये जायें।

(४) **ग्रामीण विकास एवं सामाजिक सेवा संकाय :**

इस संकाय के अन्तर्गत कृषि, लघु उद्योग, आयुर्वेद, सामाजिक नव निर्माण जैसे विभाग स्थापित किये जायें।

(५) **ललित कला संकाय :**

इस संकाय के अन्तर्गत संगीत, नाट्य शास्त्र, चित्रकला, वास्तुकला जैसे विभाग स्थापित किये जायें।

(६) **विज्ञान एवं तकनीकी संकाय :**

इस संकाय के अन्तर्गत भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, ज्योतिष, जीव-विज्ञान, वनस्पति शास्त्र तथा मेडिकल व इंजीनियरिंग विषयों से संबंधित विभाग स्थापित किये जायें।

यह भी विचार आया कि उपर्युक्त संकायों का नामकरण ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के रूप में किया जाय। ज्ञान संकाय में मुख्यतः सामाजिक विज्ञान, दर्शन संकाय में भाषा और साहित्य, धर्म और दर्शन, चारित्र संकाय में नैतिक संस्कार, ग्रामीण विकास और सामाजिक नव-निर्माण तथा तप संकाय

में योग, ध्यान, समाज सेवा से सम्बन्धित विभागों का समावेश किया जा सकता है। शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक शक्तियों के समन्वित विकास का विशेष विभाग भी रखा जा सकता है।

जैन धर्म व दर्शन के व्यापक प्रसार-प्रचार के लिये एवं स्वाध्यायियों के प्रशिक्षण के लिये पत्राचार पाठ्यक्रम, डिप्लोमा एवं सर्टीफिकेट कोर्स भी चालू किये जा सकते हैं।

बी. ए. तथा एम. ए, के पाठ्यक्रम के साथ-साथ शास्त्री व आचार्य का पाठ्यक्रम भी चालू रखा जाय ताकि परम्परागत व आधुनिक दोनों प्रकार की शिक्षण पद्धतियों का लाभ मिल सके।

संस्कार निर्माण व चरित्र-गठन की दृष्टि से यह उपयोगी होगा कि प्रस्तावित विश्वविद्यालय में प्राथमिक स्तर से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक के शिक्षण की व्यवस्था की जाय।

विभिन्न प्रादेशिक एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवाओं से संबंधित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिये शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था भी यहां रहे।

इस बात का ध्यान रखा जाये कि आधुनिक उपयोगितावादी दृष्टिकोण इतना प्रमुख न बन जाय कि प्राच्य विद्या एवं धर्म-दर्शन का अध्ययन-अध्यापन गौण हो जाय।

## (५) प्राध्यापक

(१) प्राध्यापकों के चयन में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि वे अपने विषय के अधिकारी विद्वान् होने के साथ-साथ सच्चरित्र, सेवा-भावी, निष्ठावान एवं प्रतिबद्ध हों।

(२) विभिन्न स्रोतों से निष्ठावान, सेवा-भावी विशिष्ट विद्वानों की एक विस्तृत सूची तैयार की जाय और उनमें से योग्यतम व्यक्तियों को विश्व-विद्यालय की सेवाओं के लिये निवेदन किया जाय।

(३) विशिष्ट साधु-साध्वियों से निवेदन कर समय-समय पर उनके प्रवचनों का लाभ लिया जाय।

(४) देश-विदेश के प्रख्यात विद्वानों को विजिटिंग प्रोफेसर्स के रूप में आमंत्रित किया जाय।

## (६) छात्र

(१) प्रारम्भ में छात्रों की संख्या पर अधिक बल न दिया जाय।

(२) योग्य एवं जिज्ञासु छात्रों को आकर्षित करने के लिये व्यापक छात्रवृत्तियों का प्रावधान रखा जाय।

(३) छात्रों के लिये छात्रावासों की समुचित व्यवस्था हो।

## (७) प्रकाशन विभाग

(१) प्रस्तावित विश्वविद्यालय में अध्ययन और अनुसंधान को विशेष प्रोत्साहन देने एवं गतिशील बनाने के लिये एक स्वतन्त्र प्रकाशन विभाग को

स्थापना की जाय। इसके लिये विश्वविद्यालय का अपना आधुनिकतम मशीनों व साधनों से युक्त एक प्रेस भी हो।

(२) जैन आगमों एवं जैन दार्शनिक ग्रंथों के प्रामणिक संस्करण मूल पाठ के साथ हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सहित प्रकाशित किये जायें।

(३) दक्षिण भारतीय भाषाओं के जैन विद्या से संबंधित विशिष्ट साहित्य को हिन्दी व अंग्रेजी में प्रकाशित किया जाय।

## (८) अन्य सुझाव

(१) देश-विदेश के विश्वविद्यालयों की विस्तृत सूची तैयार की जाय।

(२) देश-विदेश के प्राच्य विद्या एवं धर्म व दर्शन से सम्बन्धित विश्वविद्यालयों से एवं शोध संस्थानों से उनके पाठ्यक्रम आदि मंगाये जायें।

(३) देश-विदेश में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों द्वारा प्राच्य विद्या एवं धर्म-दर्शन के क्षेत्र में जो शोध कार्य हुआ है, उसकी यथासंभव पूर्ण जानकारी प्राप्त की जाय।

(४) विश्वविद्यालय की प्रकल्पना को मूर्त रूप देने के लिये अर्थ विशेषज्ञों व वास्तुकला के विशेषज्ञों की समितियां गठित कर भवन निर्माण आदि के कार्य प्रारम्भ किये जायें। प्रस्तावित विश्वविद्यालय के लिये जो भूमि निश्चित की गई है, उसके विकास के लिये वृक्षारोपण का कार्य प्रारम्भ किया जाय और समय-समय पर उस भूमि पर धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किये जायें, जिससे वह भूमि मांगलिक बने और वहां विश्वविद्यालय का वातावरण बनता दिखाई दे।

(५) विश्वविद्यालय की सम्पूर्ण प्रकल्पना को मूर्त रूप देने के लिये देश-विदेश के प्रमुख विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थाओं की प्रवृत्तियों एवं कार्य पद्धति को देखने के लिये और भी अध्ययन यात्राओं का आयोजन किया जाना आवश्यक है। जिनमें मुख्य हैं—जामियामिलिया दिल्ली, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, गुरुनानक विश्वविद्यालय, अमृतसर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, एल. डी. इन्स्टीट्यूट आफ इन्डोलोजी, अहमदाबाद, महावीर जैन विद्यालय, बम्बई, पूना विश्वविद्यालय, पूना, विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्यूट, उदयपुर, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना, श्री सत्य सांई बाल विकास एजूकेशन ट्रस्ट, प्रशान्ति निलयम्, (आंध्र प्रदेश) अरविन्दाश्रम, पाण्डीचेरी आदि। थाईलैण्ड, लंका व जापान में स्थित बौद्ध विश्वविद्यालय भी देखे जायें।

(६) प्रस्तावित विश्वविद्यालय के स्वरूप, पाठ्यक्रम व अन्य पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिये दिल्ली एवं बम्बई में अधिकृत विद्वानों की एक संगोष्ठी आयोजित की जाय।□

पुण्य स्मरण
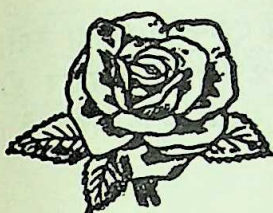
# वज्र संकल्प के धनी स्वामी श्री व्रजलालजी महाराज

☐ युवाचार्य श्री मधुकर मुनि

कुछ होते हैं विकल्प, जो पानी के बुलबुले की तरह मन में उठते हैं, विलीन हो जाते हैं।

कुछ होते हैं विचार, जो तरंगों की तरह मन के सरोवर में लहराते हैं, कुछ दूर तक प्रवाह में कम्पन पैदा करते हैं और फिर जल में समा जाते हैं।

कुछ होते हैं संकल्प, जो प्रचण्ड पवन की तरह आगे-से-आगे बढ़ते रहते हैं। अवरोधों-प्रतिरोधों को लांघकर विघ्न-बाधाओं से जूझते हुए अपने लक्ष्य की ओर गतिशील बने रहते हैं।

विकल्प वाले मनुष्य — अति साधारण कोटि के हैं।

विचार वाले मनुष्य — सामान्य कोटि के हैं।

संकल्पशील मनुष्य — उत्तम कोटि के हैं।

दुबली-पतली कृश काया में प्रचण्ड और सुदृढ़ संकल्पों का असीम बल, धीमी और मीठी वाणी में अनन्त आत्म-ऊर्जा की बुलन्दी–देखकर यह विश्वास नहीं होता था कि ८२ वर्ष के महास्थविर स्वामी श्री व्रजलालजी म० अचानक विहार करते-करते यात्रा के बीच पड़ाव में ही हमें छोड़कर चले जायेंगे।

नोखा में जब पद्मश्री सुश्रावक सेठ मोहनमलजी चोरड़िया ने स्वामीजी महाराज से एवं मुझसे आग्रह भरी विनती की कि—आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी महाराज की सेवा में आपको अवश्य पहुँचना है तो मेरा मन विकल्प और विचार में उलझ गया था।

स्वामीजी महाराज की ८२ वर्ष की वृद्ध अवस्था! कमजोर व जर्जर शरीर, बार-बार ज्वर आदि के कारण शक्ति की क्षीणता तथा अत्यन्त अल्प

आहार, चलने-फिरने, घूमने में भी अशक्तता—और इतना लम्बा कठिन विहार ! यह कैसे सम्भव हो सकेगा ? असम्भव को सम्भव बना देता है -संकल्प बल ! पंगु को भी सुमेरु पर चढ़ा देता है—सुदृढ़ मनोबल !

पता नहीं, कैसे, क्यों ? स्वामी महाराज के मन में एक तीव्र प्रेरणा जगी, एक प्रचण्ड भावना-शक्ति ने उद्वेलन किया, और फरमाया—"शरीर की परवाह नहीं, चलना है तो चलो ! संघ हित के लिए—सब कुछ अर्पण है । शरीर तो एक दिन छोड़ना ही है ।"

स्वामीजी की अद्भुत संकल्प शक्ति के समक्ष श्रावक व भक्त लोग तो चकित थे, मैं स्वयं भी चकित था । इस अस्वस्थ अशक्त शरीर से इतनी लम्बी यात्रा कैसे होगी, स्वयं मुझे भी अनबूझा प्रश्न-सा लग रहा था ।

स्वामीजी ने एक बार दृढ़ निर्णय कर लिया तो कर लिया, फिर उससे इधर-उधर हटने का विकल्प भी उनके मन में नहीं उठता । "कार्य वा साधयामि देहं वा पातयामि"—या तो कार्य सिद्ध कर लो, या शरीर छोड़ दो, "करो या मरो" का वज्र संकल्प उनके जीवन का मूल मंत्र था ।

भीषण व असह्य गर्मी, यात्रा के अनेक परीषह ! विविध प्रतिकूलताएँ, लम्बा विहार, स्वस्थ व युवक सन्त भी घबरा जाते हैं, किन्तु स्वामीजी महाराज कभी नहीं घबराये, कई बार बीच-बीच में बुखार आ गया, घबराहट हुई, गर्मी के कारण खून भी गिरा, अशक्तता बढ़ती गई, पर कुछ विश्राम किया और आगे बढ़े, लक्ष्य की तरफ प्रचण्ड पवन वेग से बढ़ते जाना—बस यही है संकल्प शक्ति !

धूलिया आते-आते स्वामीजी का स्वास्थ्य बहुत कमजोर हो गया, फिर भी आपश्री ने रुकने का विचार नहीं किया, मनोबल वैसा ही मजबूत था, पर शरीर बुरी तरह क्षीण हो चला था और देखते-देखते संकल्प-बल के समक्ष शरीर बल कमजोर पड़कर दगा दे गया ।

स्वामीजी का जीवन एक चित्र की भाँति आँखों के समक्ष आ रहा है । कितना प्रगाढ़ था उनका आत्म-बल ! जीवन में अनेक भीषण लम्बी बीमारियाँ आईं, शरीर के कष्ट आये । साधु जीवन के कठिन परीषह सहे, किन्तु स्वामीजी कभी हारे नहीं, टूटे नहीं ! अस्वस्थता व रुग्णता में भी प्रसन्न चित्त नवकार मंत्र का जाप करते रहते, मन-ही-मन स्वाध्याय करते रहते और पीड़ा की अनुभूति चेहरे पर शिकन नहीं डाल सकी ।

स्वामीजी की एक अद्वितीय विशेषता थी—सेवा भावना ! सेवा में सर्वात्मना समर्पण। अग्लान भाव से छोटे-बड़े सभी की सेवा करना—उनका जीवन धर्म जैसा बन गया था। गुरुदेव स्वामी श्री जोरावरमलजी महाराज की अन्तिम समय की सेवा उनकी उल्लखनीय व आदर्श थी। गुरुदेव श्री के चित्त को उनकी सेवा भावना से परम समाधि अनुभव हुई। शिष्य का शिष्यत्व इसी में सार्थक है कि वह गुरु के चित्त को समाधि व शान्ति प्रदान कर सके।

ज्येष्ठ गुरुभ्राता परम श्रद्धेय स्वामी श्री हजारीमलजी महाराज की सेवा में तो उन्होंने अपना तन-मन ही अर्पित कर दिया था। आप उनके लघु भ्राता थे, पर सेवा के समय ऐसा लगता था कि एक शिष्य गुरु की सेवा कर रहा है। मैं आपसे बहुत छोटा था, मेरे विद्याध्ययन का ध्यान रखना, अस्वस्थ होने पर औषधि पथ्य सेवा आदि की सब देख-भाल रखना—आपका ही कार्य था। उनकी छत्रछाया में रहने वालों को पिता-सा स्नेह और माता-सा वात्सल्य मिलता था। छोटे-से-छोटे संत व सतियों के प्रति भी उनके मन में बड़ा स्नेह व वात्सल्य था, और एक खास बात, उनका स्नेह भाव आभिजात्य था, छोटे-से-छोटे संत-सती को वात्सल्य देते थे, और बड़े आदर व सम्मान के साथ। कभी किसी का अनादर या अपमान किया हो, कठोर शब्द कहे हों, ऐसा याद नहीं आता। सेवा में स्नेह, मधुरता और आदर भावना, ऐसा लगता था, गाय के शुद्ध दूध में मिश्री मिली हो।

मन की सरलता और स्वाध्यायशीलता—स्वामीजी की आदर्श थी। बातचीत में, व्यवहार में कहीं कभी छल-कपट की झलक नहीं, कुटिलता का नामोनिशान नहीं, जो भी बात होती, साफ-सुथरी, चादर-सी उजली और सीधी। वृद्धावस्था में तो उनका हृदय बालक जैसा सीधा, मोहक (इंनोसैंट) था ही, किन्तु जवानी में भी उनका हृदय बालक-सा सरल, निष्कपट और निर्द्वन्द्व था।

स्वामीजी को जब कभी देखते, उपांशु जप तो चलता ही रहता था, रात्रि में २-३ घंटा नियमित ध्यान-साधना करते थे, हाथ में माला हर समय रहती, जब अकेले होते, मौन भाव से माला-जप करते रहते थे। दिन में भी १२ बजे से १ बजे तक नियमित ध्यान करते थे।

स्वामीजी की हस्तलिपि बहुत ही सुन्दर थी। उन्होंने अपनी सुन्दर लिपि में आगमों आदि का विशाल परिमाण में लेखन किया। आपका कहना था—लेखन से मानसिक एकाग्रता और शारीरिक स्थिरता का विशेष अभ्यास बढ़ता है।

आपका स्वर बहुत ही मधुर व बुलन्द था। पुराने भजन, स्तवन, चौपी आदि की राग आपको अच्छी आती थी और जब भी कभी गाते तो स्वयं उसमें डूब जाते, श्रोता भी झूमने लग जाते थे।

श्रमण संघ की एकता व अभिवृद्धि के लिए आपके मन में बहुत गहरी लगन थी, जीवन के अन्तिम क्षणों में भी आप श्रमण संघ के हित-वर्धन के लिए ही इतना उग्र विहार कर आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी महाराज के मिलन हेतु यात्रा करने को कृत संकल्प हुए।

धूलिया में आपका शरीर बहुत अधिक अस्वस्थ हो गया। डॉक्टरों ने तुरन्त नासिक या बम्बई अस्पताल जाने को कहा, किन्तु साधनाशील श्रमण को शरीर से मोह नहीं होता, वह तो जीवन को व्रत-नियम, संलेखना-संथारा से कृतार्थ करना ही परम धर्म समझता है। स्वामीजी ने भी अन्तिम समय जप करते हुए समाधिपूर्वक संथारा ग्रहण किया और २ जुलाई के १२ बजे देह त्याग दी।

आज स्वामीजी की स्मृतियाँ शेष रह गई हैं किन्तु उनके जीवन के उदात्त गुण हमें प्रतिपल, प्रतिक्षण प्रेरणा तथा मार्ग-दर्शन करते रहेंगे।

—प्रेषक—श्रीचन्द सुराना, १९ नेहरू नगर, आगरा—२८२ ००२

---

**दो कविताएँ**

## धन

□ डॉ० नरेन्द्र भानावत

[ १ ]

उजलो मन
तिजोर्‌याँ में बंध्योड़ो
अर
कालो धन
दिसावां नापै।

[ २ ]

जरूरत सूं वत्तो
धन बढणो
आंधरा कूवा मांय
कूद पड़णो,
मिरजादा री गैल छोड़,
ऊपरवाड़े हलणो।
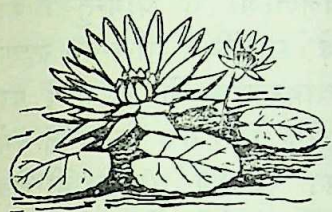
# आचार्यश्री की विहार-चर्या

☐ प्रस्तोता – **श्री ब्रजमोहन जैन**

प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० आदि ठाणा १३ तथा महासती श्री शान्तिकंवरजी म० सा० आदि ठाणा ४ पूर्वी राजस्थान के ढूंढाड़ आंचल में बसे, सवाई-माधोपुर, चौथ का बरवाड़ा, उखलाना, अलीगढ़, उनियारा, टोंक, निवाई आदि ग्राम नगरों में धर्म ध्यान की लहर एवं स्वाध्याय–सामायिक की दुन्दुभि बजाते हुए दि० १ जुलाई, ८३ को राजस्थान की राजधानी जयपुर के उपनगर **महावीरनगर** में श्री चंद्रराजजी सिंघवी के बंगले पधारे जहाँ जयपुर के आबाल-वृद्धजनों का सुविशाल समूह आपके दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। श्री सिंघवी ने वात्सल्यपूर्वक सत्कार किया एवं सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। इसी अवसर पर श्री सिंघवीजी के सद्प्रयासों से महावीरनगर में स्थानक भवन के लिये श्री धर्मचन्दजी जैन ने अढ़ाई हजार वर्गगज जमीन सहर्ष भेंट की तथा उस पर निर्माण कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया है। श्री धर्मचन्दजी में उनकी मातुश्री के धार्मिक संस्कार कूट-कूट कर भरे हुए हैं। उन्होंने समाज के कमजोर वर्ग के छात्रों के अध्ययन स्तर को ऊँचा उठाने के लिये जैन छात्रावास की आवश्यकता अनुभव करते हुए कोई पाँच हजार वर्गगज जमीन का प्लाट छात्रावास हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर को भेंट किया तथा मण्डल के अधिकारियों को निवेदन किया कि वे इस पर निर्माण कार्य प्रारम्भ कर देवें।

दि० ३ जुलाई को आचार्यश्री का साधना भवन, **बजाजनगर** में पदार्पण हुआ। यहाँ धूलिया में दिवंगत स्वामीजी व्रजलालजी म० को श्रद्धांजलि हेतु व्याख्यान स्थगित कर शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें चार-चार लोगस्स का काऊसग्ग कर दिवंगतात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शोक प्रस्ताव पारित कर युवाचार्यश्री की सेवा में नासिक भेजा गया। यहाँ धर्मा-

राधना ठीक हुई। श्री बलवन्तराजजी सिंघवी ने सजोड़े आजीवन शील व्रत अंगीकार किया।

दि० ४ जुलाई को साधना भवन से विहार कर आचार्यश्री **गणेश कॉलोनी** (मोती डूंगरी रोड) में श्री सिरेहमलजी नवलखा के बंगले पधारे। यहाँ पाँच दिन तक धर्मध्यान का ठाठ लगा रहा। श्री नवलखाजी ने आगन्तुकों का स्वागत-सत्कार प्रेमोत्साहपूर्वक किया तथा सजोड़े आजीवन शील व्रत ग्रहण किये। दि० ८ जुलाई को आचार्य श्री जवाहरलाल नेहरू मार्ग पर श्री गुमानमलजी चौरड़िया के बंगले पधारे। यहाँ तीन दिन तक अनवरत धर्म प्रभावना होती रहीं। दि० १० जुलाई को आपका पदार्पण तखतेशाही रोड पर श्री पूनमचन्दजी हरिश्चन्द्रजी बडेर के बंगले हुआ। यहाँ से श्री चुन्नीलालजी ललवाणी, श्री टीकमचन्दजी हीरावत, श्री कुशलचन्दजी बडेर व श्री राजेन्द्रजी पटवा ने अ० भा० सामायिक संघ के अन्तर्गत घर-घर जाकर सामूहिक-प्रार्थना-सामायिक करने-कराने का अभियान चलाया जिसमें उन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई।

दि० १६ जुलाई को जैन दर्शन के अधिकारी विद्वान् डॉ० डी० एस० कोठारी (भूतपूर्व अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) ने आचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित विचार-गोष्ठी में 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैन धर्म की देन' विषय पर महत्त्वपूर्ण विचार व नवीन चिन्तन जयपुर के अनेक विद्वद्जनों एवं श्रेष्ठिवर्यों के समक्ष प्रस्तुत किया। यहाँ बडेर परिवार ने सेवा का भारी लाभ लिया।

दि० १८ जुलाई को प्रातः आस-पास के ग्राम-नगरों से आये दर्शनार्थियों, स्थानीय भाई-बहिनों तथा श्री सुबोध जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं की भारी संख्या से ओत-प्रोत सुविशाल भव्य जुलूस जयघोष के नारों के साथ आगे बढ़ता हुआ, मोती डूंगरी रोड, जौहरी बाजार, गोपालजी का रास्ता के मध्य गुजरता हुआ, लाल भवन, चौड़ा रास्ता पहुँच कर व्याख्यान सभा के रूप में परिणत हो गया। मंगल प्रवेश पर हर्षातिरेक से पुलकित हो संघमंत्री श्री गुमानमलजी चौरड़िया ने आचार्यश्री एवं शिष्य समुदाय का भावभीना सत्कार करते हुए अभिनन्दन स्वरूप कुछ शब्द व्यक्त किये। तदनंतर श्री केशरीमलजी नवलखा ने आचार्यश्री की जीवन गरिमा का संक्षित परिचय प्रस्तुत किया। पं० र० श्री मानमुनिजी म० सा०, पं० र० श्री हीरामुनिजी म० सा० के संक्षिप्त व्याख्यानोपरान्त विद्यारसिक श्री गौतममुनिजी म० सा०, भजनरसिक श्री धन्नामुनिजी म० सा०, ने सुमधुर शैली में भजन प्रस्तुत किये।

तत्पश्चात् परमाराध्य आचार्यश्री ने मंगल-प्रवेश पर सारभूत प्रवचन का शुभारम्भ करते हुए फरमाया कि जयपुर श्री संघ और स्थानकवासी परम्परा का सम्बन्ध अवरुद्धता से कब मुक्त हुआ, इस ऐतिहासिक तथ्य की ओर मैं आपका ध्यान आर्कषित करना चाहूँगा। विक्रम की १८वीं शती के अन्त में जयपुर स्टेट के दीवान श्री टोडरमलजी थे। उस समय किसी स्थानकवासी तपस्वी संत का अकस्मात् जयपुर आगमन हुआ। उनके ब्रह्मतेज व तपस्या के प्रभाव से दीवान सा० विशेष प्रभावित हुए और तब से इस क्षेत्र में स्थानकवासी सन्तों का गमनागमन प्रारम्भ हुआ। हमारी परम्परा के पूज्य आचार्यों, मुनिराजों एवं हमारा आवागमन यहाँ विशेष तौर से होता रहा। हम जयपुर के लिये नये नहीं हैं। फिर भी जब कभी शेष काल में सन्तों का आना होता है, तब भी भक्तों के मन में प्रसन्नता की लहर उमड़ जाती है। तब आज तो पूरे वर्षाकाल के लिये समागम हो रहा है। तो हर व्यक्ति के मन में प्रसन्नता की आनन्द की लहर रहेगी, इसमें नई बात नहीं है। सन्तों के प्रति आपके मन में प्रेम है इसलिये उनका स्वागत करते समय आपके मन में प्रसन्नता हो रही है।

आचार्यश्री ने फरमाया कि जयपुर संघ में यह खूबी थी कि वह गुणों की कद्र करता था। तपस्वियों और गुणियों का सम्मान करता था और किसी एक के साथ चिपका नहीं रहता था। आज भी गुणियों का आदर करता एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। इसी गुण के कारण इसे सम्प्रदायातीत कहते हैं।

इस धरा पर पूज्याचार्य श्री विनयचन्दजी म० सा० ने चातुर्मास ही नहीं किये, अपितु १४ वर्ष तक लगातार यहाँ विराज कर जैन संघ को मजबूत किया। वे एक सम्प्रदाय के आचार्य थे, पर उनका जीवन सम्प्रदाय से परे था। उनकी सेवामें, पंजाब, मालवा की सम्प्रदायों के सन्तों के साथ, पं० र० श्री समर्थमलजी म० की परम्परा, बाबा पूर्णचन्दजी म०, इन्द्रमलजी म० आदि विभिन्न परम्परा के विशिष्ट सन्त महिनों तक उनकी सेवामें बैठकर ज्ञान-ध्यान की आराधना कर चुके हैं।

पूज्य श्री माधवमुनि जी म० एक भिन्न सम्प्रदाय के आचार्य थे। वे फरमाया करते थे कि जयपुर में चातुर्मास करके आचार्य श्री विनयचन्दजी म० की सेवामें रह कर ज्ञान-ध्यान की आराधना करूँगा। दोनों पूज्य यहाँ एक साथ विराजे। दोनों की काया भिन्न थी पर मन एक था।

इसी भाँति जयपुर संघ का आपसी प्रेम नारंगी की तरह नहीं होकर,

खरबूजे की भाँति होना चाहिए। किसी भी परम्परा, किसी भी आचार्य के अनुयायी हों, बाहरी रूप नारंगी की भाँति होकर आन्तरिक रूप खरबूजे की तरह होना चाहिए। इस तरह एक रूप, एकरस रहेंगे तो शासन की जिम्मेदारी की भूमिका निभा सकते हैं।

व्याख्यानोपरान्त श्रोताओं को मांगलिक प्रदान कर आचार्यश्री गणेश कॉलोनी (मोती डूंगरी रोड) पर श्री सिरेहमलजी नवलखा के बंगले पधार गये। यहाँ श्री पूनमचन्दजी बडेर ने विगत वर्षों की भाँति संवर-ध्यान-साधना के साथ अखंड मौन साधना प्रारम्भ कर दी। यहाँ पर १६ जुलाई को प्रातः ६ बजे श्रद्धेय आचार्यश्री के मोतियाबिंद का ऑपरेशन, डॉ० एस० आर० मेहता, अधीक्षक, सवाईमानसिंह अस्पताल, जयपुर के नेतृत्व में वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ, डॉ० कुलश्रेष्ठ ने उनके छः अन्य सहयोगी डॉक्टरों के साथ सफलतापूर्वक कर दिया है। अब गुरुदेव के स्वास्थ्य में समाधि है।

दि० २१ जुलाई को महासती श्री शान्तिकंवरजी म० सा० ठाणा ४ का बारह गणगौर जैन स्थानक में मंगल-प्रवेश हुआ। दि० २४ जुलाई को चातुर्मासी के पुण्य पर्व पर धर्म ध्यान के रंगारंग वातावरण में चातुर्मास प्रारम्भ हुआ। यहाँ के धर्म-प्रेमी श्रावक-श्राविकाओं ने १५, २१, ३१ आदि तपस्या की झड़ी लगा दी है। □□

---

# बाल-कथामृत [१७]

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

## सौन्दर्य की कसौटी

☐ श्री राजीव भानावत

एक दिन देवसभा में प्रसंग छिड़ने पर इन्द्र ने कहा कि—भरत क्षेत्र का चक्रवर्ती राजा सनत्कुमार धर्मप्रेमी और कुशल शासक तो है ही, उसका शारीरिक सौन्दर्य भी अद्वितीय है। उसके जैसा स्वस्थ व सुन्दर शरीर किसी मनुष्य तो क्या, देव के पास भी नहीं है।

इन्द्र की इस बात ने देवों के मन में राजा सनत्कुमार के प्रति ईर्ष्या पैदा कर दी। एक देव ने इन्द्र को संबोधित करते हुए कहा—हमें शक है कि कोई मनुष्य देवों से भी अधिक सुन्दर हो सकता है। अतः हम उस राजा की परीक्षा लेना चाहते हैं। इन्द्र ने उस देव को सनत्कुमार की परीक्षा लेने की अनुमति दे दी।

देव ब्राह्मण का वेश धारण कर अगली सुबह राजा के पास पहुंच गया। वह भी राजा के सौन्दर्य को देख प्रभावित हुए बिना न रह सका। उसने राजा के रूप की भूरि-भूरि प्रशंसा करनी शुरू कर दी। अपनी प्रशंसा सुन राजा गर्वित होकर बोला– हे द्विज ! यह रूप तो कुछ भी नहीं है। जब मैं आभूषण, मुकुट इत्यादि से सजधज कर राजसिंहासन पर बैठूँगा, तब देखना मेरा सौन्दर्य कितना खिल उठेगा ?

ब्राह्मण दरबार में पहुँच कर राजा के आने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर पश्चात् आभूषणों एवं राज मुकुट से सुसज्जित राजा ने दरबार में प्रवेश कर सिंहासन ग्रहण किया। राजा स्वयं अपने निखरे रूप पर प्रसन्न हो रहा था। अपने रूप की प्रशंसा ब्राह्मण के मुख से सुनने की इच्छा से राजा ने उसकी ओर गर्व से देखा।

ब्राह्मण बोला—राजन् ! अब तुम्हारे सौन्दर्य में पहले जैसी बात नहीं रही। पहले तुम्हारा शरीर सुन्दर और स्वस्थ दोनों था। लेकिन अब तुम्हारे शरीर की केवल ऊपरी सुन्दरता ही शेष रही है। भीतर से तो तुम्हारा शरीर रोग ग्रस्त हो गया है। बीमार शरीर के सौन्दर्य का कोई महत्त्व नहीं है। बहुत

सी भयंकर व्याधियों के कीटाणुओं ने तुम्हारे शरीर को ग्रस लिया है। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो अपने थूंक का परीक्षण कर सकते हो।

ब्राह्मण की बात सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन उसकी बात सही थी। अब राजा को बहुत से असाध्य रोग लग गये थे। जो शरीर अभी तक एकदम स्वस्थ था, क्षण भर में ही वह व्याधि-ग्रस्त हो गया था।

इस घटना से राजा को जीवन की सत्यता का भान हो गया। उसने सोचा—ऐसे शरीर के लिये जीने से क्या फायदा जो नाशवान है, जिसे कभी भी रोग लग सकते हैं। अगर जीना ही है तो उस आत्मा के लिये जीना चाहिये जो अजर और अमर है। उसने निश्चय किया कि वह अब शेष जीवन शरीर की चिन्ता किये बिना, आत्मा को स्वस्थ व सुन्दर बनाने में लगा देगा। यह निश्चय कर राजा ने सभी भौतिक सुखों को तिलांजली दे दी और मुनि वेश धारण कर लिया।

मुनि ने घने जंगलों में जाकर तपस्या प्रारम्भ कर दी। समय के साथ-साथ रोग विकराल रूप धारण करते गये। लेकिन मुनि को न तो रोगों की पीड़ा महसूस होती थी न ही उन्हें शरीर के सुख से कोई सरोकार था। वे अब सिर्फ आत्मा के उत्कर्ष के लिये जी रहे थे।

जब उस देव को राजा सनत्कुमार के इस साधक रूप का पता चला तो उसने मुनि सनत्कुमार की पुनः परीक्षा लेने का निश्चय किया। वैद्य का रूप धारण करके वह मुनि के पास पहुँचा। उसने मुनि से कहा—आपका शरीर विभिन्न कष्टदायक रोगों से पीड़ित है। यदि आप चाहें तो मैं बहुत जल्द ही आपके शरीर को नीरोगी बना सकता हूँ।

वैद्य की बात सुनकर मुनि शान्त रहे। काफी अनुनय विनय के बाद भी जब मुनि कुछ न बोले तब वैद्य हारकर बोला—मुनि श्रेष्ठ ! क्या कारण है कि आप अपने रोगों का इलाज नहीं करवाना चाहते ?

वैद्य की बात सुनकर मुनि ने अपनी अंगुली पर थूंका। यह देखकर वैद्य के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि मुनि की अंगुली रोग मुक्त हो गयी। फिर मुनि बोले—मैंने तपस्या के बल पर इतनी शक्ति प्राप्त करली है कि यदि चाहूँ तो मैं अपने शरीर के रोगों को क्षण भर में दूर कर सकता हूँ। लेकिन ऐसे शरीर को स्वस्थ क्या करना जिसे एक दिन तो मिट्टी में मिलना ही है।

देव निरुत्तर होकर लौट गया। मुनि वर्षों तक तपस्या करते रहे और अन्त में नश्वर शरीर से मुक्त होकर अनश्वर परमात्म पद को प्राप्त हुए।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

१. इन्द्र की किस बात ने देवों के मन में ईर्ष्या पैदा कर दी ?

२. किस घटना से राजा को जीवन की सत्यता का भान हो गया ?

३. जीवन की यह सत्यता क्या है ? उसे प्राप्त करने के लिये राजा ने क्या किया ?

४. 'मुनि को न रोगों की पीड़ा महसूस होती थी न ही उन्हें शरीर के सुख से कोई सरोकार था ?' ऐसा क्यों ? कारण बताइये ।

५. आत्मा को स्वस्थ व सुन्दर बनाने से क्या अभिप्राय है ?

६. आपकी दृष्टि में सौन्दर्य की कसौटी क्या है ?

७. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

—सी, २३५-ए, तिलक नगर, जयपुर३०२ ००१

## उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के जून ८३ के अंक में '**मुनि हरिकेश बल**' कहानी के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं । सबको धन्यवाद ।

**जयपुर** से संगीता लोढ़ा, संदीप लोढ़ा, **कोसाना** से बी. ओमप्रकाश सैन, **आवर** से विनोद कुमार जैन और मानमल जैन, **अलीगढ़ (टोंक)** से विनोद कुमार जैन, **अलीगढ़ (रामपुरा)** से घेवरचन्द जैन, **कानोड़** से नरेश कुदाल, **बावड़ी** से अशोक कुमार कटारिया, **तिरूवनामलै (तमिलनाडू)** से प्रकाशचन्द लूणावत, **भवानीमंडी** से कु. हेमलता जैन, **अरनी (तमिलनाडू)** से नवरतन सिंघवी, **इचलकंरजी (महाराष्ट्र)** से प्रभाकुमार स्वरूपचन्द जैन, **जलगांव (महाराष्ट्र)** से मनिष ईश्वरचन्द्र भंडारी और **देवगढ़ मदारिया** से पृथ्वीराज उपाध्याय ।

## पुरस्कृत उत्तरदाता के नाम

**प्रथम**—दिलीप कुमार सिंघवी S/o श्री नेमीचन्दजी सिंघवी, गब्बाजी का मकान, पुरानी धानमन्डी, **झालरापाटन** (राज.)

**द्वितीय**—राखी दासोत C/o श्री रतनचन्द जी दासोत, दासोत ब्रादर्स, **टोंक** (राज.)

**तृतीय**—सीमा बोहरा D/o श्री त्रिलोकचन्दजी बोहरा, २१६४, निरखी हाउस, चाकसू का चौक, हल्दियों का रास्ता, जौहरी बाजार, **जयपुर-३**

# साहित्य-समीक्षा

☐ डॉ० नरेन्द्र भानावत

**डॉ. दरबारीलाल कोठिया अभिनन्दन ग्रंथ**--डॉ. दरबारीलाल कोठिया अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन समिति, महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी-१०, पृ० ५२०, मू. ५१.०० ।

डॉ. कोठिया जैन धर्म-दर्शन-न्याय और साहित्य के उद्भट विद्वान्, गम्भीर दार्शनिक और मौलिक अनुसंधाता हैं। आपके विचारों में शास्त्रीयता और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय है। आपने समाज और साहित्य की निःस्वार्थ भाव से जो अनवरत सेवा की है, उसी के गुणाभिनन्दन के रूप में यह वृहद्ग्रंथ उन्हें समर्पित किया गया है। ग्रंथ के प्रारम्भिक दो खण्ड उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं और कर्तृत्व के मूल्यांकन से सम्बन्धित हैं। शेष तीन खंडों में उनके धर्म, दर्शन, न्याय, इतिहास, साहित्य, संस्मरण, प्रवास यात्रा आदि से सम्बन्धित लगभग ६० निबन्ध संकलित हैं जो उनकी सूक्ष्म मेधा, विवेचन-क्षमता, शोधात्मक दृष्टि और अगाध पांडित्य के सूचक हैं। डॉ० कोठिया को समर्पित यह ग्रंथ अभिनन्दन ग्रंथों की परम्परा में अपनी अलग से पहचान रखता है। ग्रंथ पठनीय, संग्रहणीय और प्रेरणादायक है।

**२-३ अप्पाणं सरणं गच्छामि, एकला चलोरे**--युवाचार्य महाप्रज्ञ, प्र० आदर्श साहित्य संघ, चूरू, पृ० ४०० व २८०, मू० २५.०० व २०.०० ।

युवाचार्य महाप्रज्ञ प्रबुद्ध विचारक, दार्शनिक सन्त और विशिष्ट ध्यान साधक हैं। ध्यान और योग के सम्बन्ध में उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रेक्षा ध्यान के सम्बन्ध में सैद्धान्तिक और प्रायोगिक दोनों तरह का गम्भीर साहित्य उनकी विशिष्ट देन हैं। **'अप्पाणं सरणं गच्छामि'** में दिल्ली और लुधियाना में सन् १९७९ में आयोजित प्रेक्षा शिविरों में दिये गये उनके ३५ प्रवचन संकलित हैं। ये प्रवचन समाधि की दिशा में प्रस्थान, समाधि की खोज, समाधि की निष्पत्ति और अप्पाणं सरणं गच्छामि इन ४ खण्डों में विभक्त हैं। इन प्रवचनों का मूलस्वर यही है कि शान्ति और समाधि की राह अपनी शरण में जाने से ही खुल सकती है।

**'एकला चलोरे'** में सन् १९८१ म पुलिस एकेडेमी जयपुर में आयोजित प्रेक्षा शिविर में दिये गये २८ प्रवचन संकलित हैं जो अध्यात्म की पगडंडियां, मनोबल के सूत्र और ध्यान के सोपान इन तीन खंडों में वर्गीकृत हैं। युवाचार्य श्री के लेखन में दर्शन, मनोविज्ञान, शरीर-विज्ञान, धर्म, नैतिकता का समन्वित

पुट रहता है। प्रसंगानुसार शास्त्रीय, लौकिक और समसामायिक जीवन व्यवहार के कथा-प्रसंगों और घटनाओं का उल्लेख कर वे गूढ़ से गूढ़ कथ्य को भी सरल बनाकर प्रस्तुत कर देते हैं। संवादात्मक एवं प्रश्नोत्तर शैली के प्रयोग से दार्शनिक लेखन में भी सरसता का संचार हो उठता है। दोनों पुस्तकें ध्यान-साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

**४-५ आशीर्वाद, अपना धर्म**--श्री गणेश मुनि शास्त्री, प्र० अमर जैन साहित्य संस्थान, कोलपोल, बड़ा बाजार, उदयपुर, पृ० १२० व १५०, मू० ५.०० प्रत्येक।

श्री गणेश मुनिजी कवि और विचारक के रूप में तो प्रसिद्ध हैं ही, इन दोनों कृतियों में वे एक सफल कथाकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने अपनी कथा सामग्री प्राचीन शास्त्रों से न लेकर लोक जीवन और समसामयिक परिस्थितियों से ग्रहण की है। इसीलिये वह हमारे मर्म को तीव्रता से छूती है और पाठक को रसमग्न किये रहती है। **'आशीर्वाद'** में ११ कहानियां हैं जो साधारण जन से लेकर सेठ साहूकारों और न्यूटन, जार, राकफेलर जैसे विशिष्ट व्यक्तियों के जीवन-प्रसंगों का स्पर्श करती है। सभी कहानियों में धर्म, विवेक, कर्त्तव्य परायणता, प्रेम, श्रम, सेवा, परोपकार, निष्कपटता जैसे जीवन मूल्य बिखरे पड़े हैं जो पाठक को जीवन के उत्कर्ष के लिये आशीर्वाद देते रहते हैं। **'अपना धर्म'** में भी ११ कहानियां हैं जो आदर्श और यथार्थ के मिलेजुले अनुभवों को व्यक्त करती हैं। इनमें कहीं सामायिक यथार्थ का चित्रण है तो कहीं धार्मिक विश्वास का प्रभाव रेखांकित है। कहीं शहराती जीवन की विसंगतियां हैं तो कहीं ग्रामीण जीवन की आत्मीयता। कहानियों का मूल स्वर है विषम परिस्थितियों में भी अपने धर्म की पहचान और उस पर दृढ़ रहने का पुरुषार्थ। कहानियों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और शैली रोचक तथा सरस है।

**६. महावीर जयन्ती स्मारिका, १९८३**--प्र० सं० ज्ञानचन्द जैन बिल्टीवाला, प्र० राजस्थान जैन सभा, जयपुर।

महावीर जयन्ती पर प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली स्मारिका का यह २०वां अंक है। प्रारम्भ में राजस्थान जैन सभा की प्रवृत्तियों का सचित्र परिचय दिया गया है। बाद में प्रथम खण्ड में महावीर के जीवन, सिद्धान्त और व्यवहार से सम्बन्धित २७, द्वितीय खण्ड में साहित्य मीमांसा और सिद्धान्त-चर्चा से सम्बन्धित २१ और तृतीय खण्ड में इतिहास-पुरातत्व सम्बन्धित ७ निबन्ध संकलित हैं। नये लेखकों व अंग्रेजी निबन्धों को भी स्थान दिया है। सभी स्तर के पाठकों के लिये विशिष्ट सामग्री जुटाने का सम्पादकों का लक्ष्य रहा है। कतिपय लेख विचारोत्तेजक और शोध-क्षेत्र में नवीन प्रकाश डालने वाले हैं। □

# समाज-दर्शन

## पर्युषण पर्व में स्वाध्यायियों को बुलाइये

स्वाध्याय संघ, जोधपुर सन्त एवं महासतियाँ जी के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में शास्त्रवाचन, चौपाई, प्रतिक्रमण आदि विभिन्न प्रवृत्तियाँ करवाने हेतु विगत ३९ वर्षों से योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायी बंधुओं को भेज कर शासन एवं समाज सेवा के कार्य में रत है।

इस वर्ष भी जिन क्षेत्रों में सन्त-मुनिराजों के चातुर्मास न हो सके हैं, वे निम्न जानकारी के साथ अपना आवेदन-पत्र निम्न पते पर शीघ्र भेजें :

१. शहर अथवा गाँव का नाम जिला-प्रान्त सहित
२. समस्त जैन घरों की संख्या
३. स्थानकवासी जैन घरों की संख्या
४. संघ के अध्यक्ष व मंत्री का नाम व डाक पता
५. संबंधित जगह पर पहुँचने का रेल अथवा बस-मोटर मार्ग

**सम्पतराज डोसी**
संयोजक
स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१

## दर्शनार्थियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ

१. आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० जयपुर के उपनगर गणेश कालोनी में श्री सिरेहमलजी नवलखा के बंगले मोती डूँगरी रोड पर विराज रहे हैं।

२. पं. र. श्रीमान मुनिजी म० सा०, पं. र. श्री हीरामुनिजी म० सा० आदि सन्त मण्डल चौड़ा रास्ता स्थित लाल भवन विराज रहे हैं। व्याख्यान नित्य प्रति लाल भवन में हो रहा है।

३. दर्शनार्थियों के ठहरने आवास आदि की व्यवस्था हेतु आवास व्यवस्था उपसमिति लाल भवन में हर समय सेवारत है।

**नोट :** दर्शनार्थी बंधु अपने साथ जोखिम न लावें तथा बिस्तर आदि अपने साथ लावें ।

—**गुमानमल चौरड़िया**
मन्त्री
श्री व० स्था० जैन श्रावक संघ,
लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३

## धार्मिक शिक्षण शिविरों के विविध आयोजन

**जयपुर**—आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के सान्निध्य में दिनांक १८-७-८३ को ध्यान एवं मौन सामायिक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ४५ साधकों ने भाग लिया। प्रातः ७.३० बजे ध्यान साधना द्वारा शिविर का प्रारम्भ हुआ। दोपहर में श्री श्रीचन्दजी गोलेछा, डॉ. दौलतसिंहजी कोठारी, वैद्य श्री सुशीलकुमारजी, प्रमुख समाज सेवी श्री दुलीचन्दजी दूगड़, श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा, पं० श्री दयाशंकरजी त्रिपाठी आदि विद्वानों ने भाषण दिये। उसके पश्चात् ध्यान पर एक गोष्ठी एवं विचार-विमर्श हुआ जिसमें श्री नथमलजी हीरावत, अध्यक्ष, श्री रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा आदि विद्वानों ने विचार व्यक्त किये। रात्रिकालीन ज्ञान चर्चा में आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० ने प्रश्नों के युक्तिपूर्वक उत्तर दिये जिससे सभी साधकों को बहुत सन्तोष एवं प्रमोद हुआ।—**राजेन्द्रकुमार पटवा**

**गुलाबपुरा**—श्री श्वे० स्था० जैन स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा द्वारा ग्रीष्मावकाश में निम्नांकित सात स्थानों पर छात्र-छात्राओं के लिए धार्मिक शिक्षण-शिविरों का आयोजन किया गया। धनोप (१५), सरेरी (३५), राताकोट (३५), भिनाय (४६), अंटाली (१६), मसूदा (५७) व गुलाबपुरा (७७)। इस प्रकार इन शिविरों से कुल २८४ बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल, प्रार्थनाओं व कथाओं के शिक्षण के साथ-साथ, सत्य भाषण, बड़ों को प्रणाम, धूम्रपान का त्याग, गाली नहीं देना आदि का नियम दिलाकर बालकों के दैनिक जीवन में नैतिकता लाने का प्रयास किया गया। प्रतिदिन नवकार मंत्र गिनना, सप्त कुव्यसनों का त्याग, रात्रि-भोजन का त्याग करना, विवेकपूर्वक पानी का उपयोग करना, जयजिनेन्द्र के द्वारा अभिवादन करना आदि के द्वारा जैनत्व के संस्कार देने की ओर विशेष लक्ष्य रखा गया। इन शिविरों में सर्वश्री चांदमलजी बाबेल, गजराजजी कोठारी, लालचन्दजी पीपाड़ा, ताराचन्दजी नाहर, आनन्दीलालजी मेहता, जयसिंहजी छाजेड़, कन्हैयालालजी शेठ व श्रीमती मैनादेवी एवं श्रीमती पुष्पकला ने अध्यापन कार्य में पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया तथा समस्त स्थानीय संघों ने भी

उत्तम व्यवस्था कर व पुरस्कार आदि प्रदान कर शिविरार्थियों का उत्साहवर्द्धन किया, तदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार ! यह स्मरणीय है कि इन शिविरार्थियों की प्रति दो माह में परीक्षा ली जायगी ।

—मंत्री श्री स्वाध्यायी संघ, गुलाबपुरा

**धामणगाँव**—यहाँ धार्मिक सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता के पंच दिवसीय शिविर को श्री रतन मुनिजी ने सम्बोधित किया । संघ अध्यक्ष श्री सुगनचन्दजी लुनावत ने पुरस्कार बांटे । नवकार मंत्र का नो दिवसीय अखण्ड शांति जाप व कई तपस्याएँ भी सम्पन्न हुई ।—**लालचन्द कटारिया**

**इन्दौर**—उपनगर महावीर नगर में तपस्वीराज श्री लालचन्द्रजी म० सा० आदि ठाणा ३ की पावन निश्रा में एवं श्री अखिल भारतीय गजेन्द्र जैन स्वाध्याय ध्यान पीठ (सेठ सुगनमलजी गजेन्द्रसिंहजी भण्डारी ट्रस्ट द्वारा संचालित) के तत्त्वावधान में दिनांक १३–६–८३ से १९–६–८३ तक एक साप्ताहिक धार्मिक शिक्षण सत्र प्रथम बार लगाया गया । मुख्य रूप से मधुर व्याख्यानी श्री कान मुनिजी म० सा० ने शिक्षण देने का कार्य किया । इस शिक्षण सत्र में कुल सामायिक ११०७, दया ८२ हुई । इस शिक्षण-सत्र में ३९ छात्र एवं ४५ छात्राओं ने भाग लिया । इस शिक्षण सत्र में ५ नये छात्रों ने प्रतिक्रमण पूर्ण किया । इस शिक्षण सत्र की मुख्य विशेषता यह रही कि छात्रों को मन को एकाग्रचित करने का अभ्यास "ध्यान" के द्वारा कराया गया जिसमें कई छात्रों ने ४५ से ५० मिनिट तक ध्यान करने में सफलता प्राप्त की । शिविर का समापन समारोह दिनांक १९–६–८३ को श्रीमती डॉ० हीराबहन बोर्दिया की अध्यक्षता में एवं श्री भूपराजजी नलवाया के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ । २१ जून से ३० जून तक जानकी नगर में भी मंजुला सालेचा के संयोजन में बालिकाओं का शिविर आयोजित किया गया ।—**जम्बू कुमार भण्डारी**

**डूंगला**—श्री जैन विद्यालय संचालन समिति डूँगला के अन्तर्गत चल रही चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भीलवाड़ा, मंदसौर की विभिन्न जैन पाठशालाओं का पंद्रहवाँ जैन धार्मिक शिक्षण शिविर डूँगला में दि० २०–६–८३ से २७–६–८३ तक लगा जिसमें ८५ छात्र-छात्राओं एवं अध्यापक अध्यापिकाओं ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन श्री मोहनलाल जी बाफना मेनार ने किया । मुख्य अतिथि श्री गोपीलालजी खटवड़ वाना वाले थे । शिविर काल में शिविरार्थियों को सामायिक, प्रतिक्रमण, २५ बोल, ६७ बोल, तत्त्व ज्ञानादि का वर्गानुसार अध्ययन कराया गया । शिविर के समापन समारोह के अध्यक्ष श्री भगवतीलालजी तातेड़ डूँगला थे । शिविर काल में परम विदुषी प्रखर वक्ता श्री सज्जन कंवर जी म० सा० की सुशिष्या घोर तपस्विनी श्री सूरज कंवरजी म० सा० आदि ठाणा ४ का सान्निध्य व प्रवचन का लाभ मिला ।—**विजयकुमार मेहता**

## जैन विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति

हाई स्कूल से आगे की उच्च शिक्षा हेतु इच्छुक योग्य विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए पूर्ण विवरण सहित आवेदन करें। आवेदन के साथ समाज के अध्यक्ष, मंत्री एवं प्रधानाध्यापक द्वारा सत्यापित योग्यता का प्रमाण-पत्र, आय का प्रमाण-पत्र व अंक-तालिका की सत्यापित प्रति भेजें। स्थान सीमित है। पत्र-व्यवहार का पता—

**बाफना जालमचन्द पताशीदेवी ट्रस्ट**
C/o प्रमोद दाल मिल, ७४/४७, धनभुट्टी, कानपुर (उ.प्र.)

## ऋण छात्रवृत्तियाँ

सदैव की भाँति इस वर्ष १९८३-८४ के लिए भी जैन छात्र-छात्राओं को शिक्षा हेतु ऋण-छात्रवृत्तियाँ दी जावेंगी। आवेदन-पत्र तारीख १५-८-८३ तक निम्न पते से मँगवा लेवें —

**श्री ताराचन्दजी मुणोत**
अध्यक्ष—अ० भा० सुवर्ण सेवा फंड
जुना कॉटन मार्केट रोड, अमरावती (महाराष्ट्र) ४४४६०१

## हृदयरोग एवं मधुमेह परीक्षण व निदान शिविर सम्पन्न

**इन्दौर**—महावीर स्वास्थ्य केन्द्र एवं श्री हस्तीमल सुन्दरबाई पारमार्थिक न्यास के तत्वावधान में १९ जून को केन्द्र स्थल चन्दनबाला भवन मोरसली गली में हृदयरोग एवं मधुमेह परीक्षण व निदान शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें नगर के १८ विशेषज्ञ चिकित्सकों ने २११ रोगियों का निशुल्क परीक्षण व निदान किया। शिविर में रोगियों का कार्डियोग्राम व ब्लड एवं शुगर की निःशुल्क जांच की गई। शिविर का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी मित्तल ने किया। श्री बाबूलालजी सोमानी समारोह के अध्यक्ष के रूप में पधारे। विशेष अतिथि श्री धन्नालालजी चोपड़ा ने ब्लड शुगर की जांच हेतु ४५०० रुपये मूल्य का डेक्स्ट्रो मीटर यंत्र केन्द्र को भेंट किया। केन्द्र के अध्यक्ष श्री फकीरचन्द मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया तथा सचिव श्री हस्तीमल झेलावत ने केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। संयोजक डॉ. अशोक जैन के नेतृत्व में शिविर सफल रहा। महावीर स्वास्थ्य केन्द्र को आयकर मुक्ति प्रमाण-पत्र भी प्राप्त हो गया है। अतः केन्द्र को दिया जाने वाला दान आयकर से मुक्त

होगा। दानदाताओं, संस्थाओं एवं ट्रस्टों से अनुरोध है कि रोगियों की चिकित्सा-सेवा हेतु अधिक से अधिक धनराशि भेजकर योगदान प्रदान करें।

**हस्तीमल झेलावत**

## अ० भा० जैन युवा कार्यकर्त्ता सम्मेलन

भारत के समस्त युवा संघ, नवयुवक मंडल, युवक दल आदि युवा शक्ति द्वारा संचालित समस्त जैन संस्थाओं से एवं सभी युवा (युवक-युवतियाँ) कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि वे अपना परिचय/अपनी संस्था का परिचय (अपने स्थायी पते सहित) निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करावें। जिससे संभवतः चातुर्मास में बुलाये जाने वाले 'अ० भा० जैन युवा कार्यकर्त्ता सम्मेलन' की सूचना आपको समय पर प्रेषित की जा सके। पत्र-व्यवहार का पता—

**दिलीपकुमार बया 'अमित'**
संचालक, श्री स्वाध्याय संघ
वर्धमान स्थानक, बर्तन बाजार, अमरावती (महा०) ४४४६०१

## पाण्डुलिपि एवं मुद्रणकला प्रशिक्षण शिविर

**श्री महावीरजी**:—राजस्थान संस्कृत अकादमी एवं जैन विद्या संस्थान श्री महावीरजी के संयुक्त तत्त्वावधान में केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय के सहयोग से २६ जून से १० जुलाई तक 'पाण्डुलिपि एवं मुद्रण कला प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया। जिसमें ३५ प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन न्यायमूर्ति श्री गुमानमल लोढ़ा ने किया। अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के उप-सलाहकार डॉ० सी० आर० स्वामी नाथन ने की। शिविर काल में **जयपुर** के डॉ० रामचन्द्र द्विवेदी, डॉ० प्रभाकर शास्त्री, डॉ० नरेन्द्र भानावत, डॉ० कस्तूरचन्द कासलीवाल, डॉ० सुधीरकुमार गुप्त, डॉ० प्रेमचन्द रांवका, डॉ० प्रेमचन्द जैन, डॉ० गंगाधर भट्ट, डॉ० रत्नचन्द्र अग्रवाल, श्री विजयशंकर श्रीवास्तव, श्री विनयसागर, श्री रामबल्लभ सोमानी, श्री रूपनारायण त्रिपाठी, श्री जवाहरलाल जैन, **दिल्ली** के डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी, श्री चन्द्रप्रकाश माथुर, **होशियारपुर** के डॉ० के० बी० शर्मा, **उदयपुर** के डॉ० कमलचन्द सोगानी, **इन्दौर** के डॉ० नेमिचन्द जैन आदि के पाण्डुलिपियों के महत्त्व, उपयोगिता, रख-रखाव, पठन-विधि, पाठालोचन की समस्याएँ, शोध और आलोचना, सम्पादन-सम्बन्धी समस्याएँ, सम्पादन कला, मुद्रण-कला : सिद्धान्त और प्रयोग, हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डार और उनकी व्यवस्था आदि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विशेष व्याख्यान हुए। शिविर का संचालन प्रो० प्रवीणचन्द

जैन ने किया। प्रबन्ध समिति के मन्त्री श्री कपूरचन्द पाटनी ने संस्थान की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला।

# संक्षिप्त समाचार

**राजनांद गाँवः**—यहां १३ सितम्बर को दोपहर छत्तीसगढ़ अंचल एवं उड़ीसा प्रदेश में पर्युषण पर्व पर सेवा देने वाले स्वाध्यायियों का संघ की ओर से अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया है। सम्पर्क सूत्र—

**श्री गौतम पारख,** अध्यक्ष
समता मंच, गौतम भवन, गंज लाइन, राजनांद गाँव (म० प्र०)।

**मेड़ता सिटीः**—यहाँ मरुधर केशरीजी के सान्निध्य में २२-८-८३ को प्रातः राजस्थान प्रान्तीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स का अधिवेशन आयोजित किया गया है। २१-८-८३ को सायंकाल कार्यकारिणी की बैठक रखी गयी है।

**रिखबराज कर्णावट,** अध्यक्ष

**ब्यावरः**—श्री जैन सेवा समिति औषधालय ब्यावर के चुनाव में श्री शंकरलालजी मुणोत अध्यक्ष, श्री धनराजजी विनायका उपाध्यक्ष, श्री घीसूलालजी बोहरा मन्त्री, श्री ज्ञानचन्दजी कांकरिया सहमन्त्री व श्री भँवरलालजी बोहरा कोषाध्यक्ष चुने गये हैं।

**जयपुरः**—विवाह संस्कार में सुविधा और सुधार को लक्ष्य में रखकर दैनिक **"जैन समाज"** व दैनिक **"यंग लीडर"** ने **"जैन मेरिज ब्यूरो"** की स्थापना कर निःशुल्क सेवा आरम्भ की है। सम्पर्क सूत्रः—दैनिक 'जैन समाज' कार्यालय, यंग लीडर प्रेस, २०७३, घी वालों का रास्ता, जयपुर–३०२ ००३।

**चित्तौड़गढ़ः**—यहाँ १७ जून, ८३ को किले पर स्थित श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम की वार्षिक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री फकीरचन्द मेहता ने की। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित डॉ० नरेन्द्र भानावत ने सुझाव दिया कि वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों की भोजन-आवास चिकित्सा आदि की दृष्टि से देखभाल ही पर्याप्त नहीं है। वे धर्माराधना और ध्यान-साधना में अधिकाधिक निमग्न होकर अपना अन्तिम क्षण सार्थक बना सकें, यह व्यवस्था करना भी हमारा कर्त्तव्य है। उनके सुझाव पर स्वाध्याय एवं धर्म साधना में सहयोग देने के लिए उपयुक्त व्यक्ति की नियुक्ति करने का निश्चय किया गया।

**अहिंसा नगरः**—वीर वाल प्रवृत्ति को विशेष प्रोत्साहित और विकसित करने के लिए १७ जून को आयोजित विशेष बैठक में विचार किया गया। इस अवसर पर कमला माताजी विशेष रूप से उपस्थित थीं। यहाँ वीर वाल छात्रों के लिये छात्रावास भी चलता है। प्रसिद्ध समाजसेवी श्री महेश भंसाली, से डॉ० नरेन्द्र भानावत एवं डॉ० शान्ता भानावत ने उनके द्वारा की जा रही विविध लोककल्याणकारी सेवाओं की जानकारी प्राप्त की।

**कानोड़**:—२२ जून को पं० उदय जैन द्वारा संस्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के छात्रों को सम्बोधित करते हुए डॉ० नरेन्द्र भानावत एवं डॉ० शान्ता भानावत ने उन्हें अध्ययन के साथ स्वाध्याय करते हुए संस्कारशील बनने की प्रेरणा दी। संचालक श्री नाथूलाल जारोली ने संस्था की विविध प्रवृत्तियों का परिचय दिया। प्रधानाध्यापक श्री सनाढ्य ने अतिथियों का स्वागत किया।

**बम्बईः**—भारत जैन महामण्डल के तत्त्वावधान में श्री महावीर हैल्थ फाउण्डेशन, श्री ऑल इण्डिया जैन श्वे. कॉन्फ्रेंस, श्री ऑल इण्डिया स्था. जैन श्वेताम्बर कॉन्फ्रेन्स, श्री ऑल इण्डिया दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, श्री जैन श्वे. तेरापंथी सभा की ओर से जैन समाज के सुप्रसिद्ध नेता एवं उद्योगपति साहू श्री श्रेयांसप्रसादजी का बम्बई में दि. ७ जुलाई, ८३ को भव्य अमृत महोत्सव आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री बसंतदादा पाटिल ने की और स्वागत प्रमुख भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री दीपचन्द एस. गार्डी थे। मंडल के प्रधानमंत्री श्री चन्दनमल 'चाँद' ने अभिनन्दन पत्र का वाचन किया।

**धारः**—श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के चुनाव में श्री सूरजमल संघवी अध्यक्ष, श्री रमेश गांधी उपाध्यक्ष, श्री पारसमल जैन सचिव एवं श्री समरथमल कोषाध्यक्ष चुने गये।

**उदयपुरः**—यहाँ २४ जुलाई को कानोड़ मित्र मण्डल के सदस्यों का स्नेह-सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें लगभग ३०० सदस्य सम्मिलित हुए। मण्डल के अध्यक्ष डॉ० महेन्द्र भानावत एवं सचिव मदन मोदी ने मण्डल की विविध प्रवृत्तियों का परिचय दिया। डॉ० नरेन्द्र भानावत, सोहनलाल बाबेल, हरिश्चन्द्र दक, सन्तोष व्यास, शीलव्रत शर्मा आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

□ □ □

# पूज्याचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० के आज्ञानुवर्ती संत-सतियों की चातुर्मास सूची

## सन्त-वर्ग

जयपुर (राजस्थान)

(१) प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा.
(२) सेवाभावी व्याख्यानी पं. र. श्री मान मुनिजी म. सा.
(३) मधुर व्याख्यानी पं. र. श्री हीरा मुनिजी म. सा.
(४) कुशल सेवामूर्ति श्री शीतल मुनिजी म. सा.
(५) प्रिय व्याख्यानी श्री शुभेन्द्र मुनिजी म. सा.
(६) तपस्वी श्री बसन्त मुनिजी म. सा.
(७) तत्त्व जिज्ञासु श्री चम्पक मुनिजी म. सा.
(८) व्याख्यान रसिक श्री ज्ञान मुनिजी म. सा.
(९) महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म. सा.
(१०) विद्याभिलाषी श्री गौतम मुनिजी म. सा.
(११) सेवाभावी श्री नन्दिषेण मुनिजी म. सा.
(१२) घोर तपस्वी श्री प्रकाश मुनिजी म. सा.
(१३) भजन-रसिक श्री धन्नामुनिजी म. सा.

## सती-वर्ग

(i) पावटा—जोधपुर राजस्थान

साध्वी प्रमुखा प्रवर्तनी महासती श्री सुन्दर कँवरजी म. सा.
महासती श्री सन्तोष कँवरजी म. सा.
महासती श्री इचरज कँवरजी म. सा.
महासती श्री सूरज कँवरजी म. सा.
महासती श्री सज्जन कँवरजी म. सा.
महासती श्री मनोहर कँवरजी म. सा.
महासती श्री कौशल्याजी म. सा.
महासती श्री विमलावतीजी म. सा.

पता—मंत्री श्री अ.भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ घोड़ों का चौक, जोधपुर

**(ii) घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)**

उप-प्रवर्तनी महासती श्री बदन कँवरजी म. सा.
महासती श्री लाडकँवरजी म. सा.
महासती श्री सुशीलाजी म. सा.
पता—उपरोक्त
महासती श्री राजमतिजी म. सा.
महासती श्री सरला कँवरजी म. सा.

**(iii) भोपालगढ़ (जोधपुर)**

सेवाभावी महासती श्री सायर कँवरजी म. सा.
महासती श्री तेजकँवरजी म. सा.
महासती श्री सौभाग्य कँवरजी म. सा.
महासती श्री शान्ताकँवरजी म. सा.

पता—मंत्री श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ भोपालगढ़ जि. जोधपुर (राज०)

**(iv) कोडम्बाकम (मद्रास)**

विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म. सा.
महासती श्री रतनकँवरजी म. सा.
महासती श्री चन्द्रावतीजी म. सा.

**(v) बारह गणगौर स्थानक जयपुर (राज.)**

शान्त स्वभावी महासती श्री शान्ति कँवरजी म. सा.
महासती श्री सुगनकँवरजी म. सा.
महासती श्री सोहनकँवरजी म. सा.
महासती श्री इन्दुबालाजी म. सा.

# शोक-संवेदना

## महासती श्री लीलावतीजी का स्वर्गवास

**सुरेन्द्र नगर**—प्रखर व्याख्यानदात्री, बाल ब्रह्मचारिणी, परम तेजस्वी, विदुषी महासती श्री लीलावतीजी का यहाँ ३ जुलाई, १९८३ को समाधिपूर्वक स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म संवत् १९७५ में मगसर सुद १३ को हुआ था। १७ वर्ष की आयु में आपने संवत् १९९२ जेठ सुदी ग्यारस को लीम्बड़ी सम्प्रदाय की महासतीजी श्री दिवाणी बाई के पास बांकानेर में दीक्षा अंगीकृत की। आपने साध्वी समाज में ज्ञान के प्रति विशेष जिज्ञासा जागृत की। आपकी कई शिष्याएँ बी० ए० हैं। आपके व्याख्यान बड़े प्रभावशाली होते थे। उनके कई संग्रह प्रकाशित हो चुके

हैं। सौराष्ट्र, महाराष्ट्र और गुजरात आपका प्रमुख विचरण क्षेत्र रहा है। आपके निधन से जैन समाज की एक चरित्र सम्पन्न प्रमुख तत्त्व विशेषज्ञ साध्वी उठ गयी है।

**मद्रास**—समाज हितैषी, सुप्रतिष्ठित श्रावक श्री रतनचन्दजी चौरड़िया का २१ जून को आकस्मिक दुःखद निधन हो गया। आप मूलतः आगरा के निवासी थे और सन् १९५० से मद्रास में व्यवसायरत थे। आप अपनी नैतिकता, प्रामाणिकता और समाज सेवागत उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। आपने तीन ट्रस्टों की स्थापना कर विभिन्न क्षेत्रों में सेवा प्रवृत्तियों का प्रसार किया। आप सरल स्वभावी, स्पष्ट वक्ता, कर्मठ कार्यकर्ता, सूझबूझ के धनी और अनेक संस्थाओं के विशिष्ट पदाधिकारी और सक्रिय सदस्य थे। अन्तिम समय में आपकी भावना के अनुसार आपके परिवार ने सेवा कार्यों के लिये डेढ़ लाख की राशि घोषित की साधु-सन्तों की सेवा में भी आप अग्रणी थे।

**यादगिरी**—यहाँ के प्रतिष्ठित सुश्रावक श्री पुखराजजी धोका का २ जुलाई को असामयिक दुःखद निधन हो गया। आपके जीवन में सरलता, सादगी, पांडित्य और विनय का दुर्लभ संगम था। जीव दया की ओर आपकी विशेष रुचि थी। साधु-सन्तों की सेवा में आप अग्रणी रहते थे। आप जैन संघ के अध्यक्ष थे तथा मैसूर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष भी रहे।

**जोधपुर**—स्वर्गीय श्री धनराजजी ओस्तवाल की धर्मपत्नी श्रीमती धूलीबाई का ७० वर्ष की आयु में २७ जून को निधन हो गया। आप धर्मपरायणा श्राविका थीं और कोसाणा के सुश्रावक श्री रेखचन्दजी घीसूलालजी बागमार की मामी थीं।

**राणावास**—धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री बनेचन्दजी सुराणा की धर्मपत्नी श्रीमती पानीबाई का ६९ वर्ष की आयु में २८ जून को आकस्मिक निधन हो गया। आप धर्म परायणा महिला थीं।

**मनमाड़**—श्री वर्द्धमान जैन पाठशाला मनमाड़ के अध्यक्ष श्री पुष्पमलजी सिंघी की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ताबाई का ५५ वर्ष की आयु में १७ जुलाई को त्याग प्रत्याख्यान सहित निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ श्राविका थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक विह्वल परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।—सम्पादक

# साभार प्राप्ति स्वीकार

## "जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु०

१. श्री बी० चम्पालालजी जैन—खाँडप, वाया समदड़ी (बाड़मेर)।
२. सौ० किरणदेवी दौलतमलजी सांड (जैन) – जलगाँव।
३. सौ० चन्द्रकला अजीतकुमारजी सुराणा—मनमाड़ (नासिक)।
४. सौ० मधुबाला किरणकुमारजी कटारिया—सिन्नर (नासिक)।
५. सौ० शोभा देवी श्रेणिककुमारजी छाजेड़—करही (खरगोन)।
६. श्री राजेन्द्रकुमारजी भंवरलालजी जैन—चालीस गाँव (महाराष्ट्र)।
७. श्री संजय धनराजजी भंसाली—कोपर गाँव (अहमद नगर)।
८. श्री महेन्द्रकुमारजी नरेन्द्रकुमारजी भंसाली—जलगाँव।
९. श्री जैन ओसवाल बोर्डिंग—कड़ा (अहमद नगर)।
१०. श्री भँवरलालजी धर्मचन्दजी सुराणा – नोखामंडी (बीकानेर)।

## भेंट एवं सहायता

५०१) श्री पूनमचन्दजी सा० बडेर—जयपुर, पूज्याचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१) श्री पूनमचन्दजी सा० बडेर—जयपुर, पूज्याचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के तख़तेशाही रोड स्थित बंगले पर पधारने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१) श्री राजमलजी सा० कोठारी – जयपुर, पूज्याचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१) श्री प्रकाशचन्दजी सुभाषचन्दजी बाफना—खिडकियाँ (होंशगाबाद) पूज्य पिताजी श्री पूनमचन्दजी बाफना का असामायिक निधन दि० ५-७-८३ को हो गया, उनकी पुण्य स्मृति में बाफना परिवार–खिडकियाँ एवं हरदा की ओर से सप्रेम भेंट।

५१) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ—सिवाना, अक्षय तृतीया के पारणे पर "जिनवाणी" को सहायतार्थ।

५१) श्री रेखचन्दजी घीसूलालजी बागमार—कोसाणावालों ने पूज्य मामीसा धूलीबाईजी धर्मपत्नी स्व० श्री धनराजजी ओसवाल की सत्तर वर्ष की आयु में स्वर्गवास होने की स्मृति में भेंट।

५१) श्री सम्पतराजजो पारसमलजी धोका—यादगिरी, पूज्य स्वर्गीय पिताजी श्री पुखराजजी धोका का दि० २-७-८३ को स्वर्गवास होने की स्मृति में भेंट।

५१) श्री पी० उगमराजजी सिंघवी—आर्नी (तामिलनाडू) सौ० सुमित्रा कुमारी पुत्री श्री उगमसिंहजी सिंघवी के शुभ विवाह के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

५१) श्री प्रसन्नचन्दजी अमरचन्दजी लोढ़ा—नागौर, चि० अभयकुमार का विवाह सुश्री कान्ता के साथ दि० २-७-८३ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

३१) श्री बिरदीचन्दजी धनराजजी बरड़िया—जलगाँव, स्वर्गीय श्री मोतीलालजी बरड़िया की पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट।

२१) श्री पदमराजजी भंडारी--कडप्पा, जोधपुर निवासी, पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री अजितराजजी सा० भण्डारी की दि० २३ जून, ८३ को पंचम पुण्य तिथि के अवसर पर सप्रेम भेंट।

२१) श्री घेवरचन्दजी चाँदमलजी बागमार—गजेन्द्रगढ़, श्री चाँदमलजी बागमार की सुपुत्री सौ० पुष्पाकुमारी का शुभ विवाह बल्लारी निवासी श्री धनराजजी नाहर के सुपुत्र चि० अशोककुमार के साथ सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२१) श्री प्रेमराजजी जतनराजजी मेहता—मेड़तासिटी, बैरागन बहन सुश्री चम्पाकुमारी की दीक्षा के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

२१) श्री बी० लूनचन्दजी घेवरचन्दजी कुम्भट—मद्रास, सौ० कां० बहन संतोष (कनिष्ठ सुपुत्री स्व० मामासा कन्हैयालालजी पारख) का शुभ विवाह दि० १३-७-८३ को खरियार रोड (नर्रा) निवासी श्रीमान् शाहजी श्री राजमलजी बोथरा के वरिष्ठ सुपुत्र चि० अशोककुमार बोथरा के साथ महासमुन्द (म०प्र०) में सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष में भेंट।

२१) नमोकार ट्रेडर्स (बजरिया सवाईमाधोपुर) के उद्घाटन के उपलक्ष में भेंट।

२१) श्री मोहनलालजी सेठिया—मद्रास, श्री अगरचन्दजी जेठमलजी सेठिया के सुपौत्र व श्री मोहनलालजी सेठिया के सुपुत्र चि० मुकेश सेठिया का शुभ विवाह दि० ७-७-८३ को आरकोनम निवासी श्रीमान् प्रकाशचन्दजी धाड़ीवाल की सुपुत्री सौ० प्रमिला के साथ सम्पन्न होने के उपलक्ष में भेंट।

११) श्री रमणलालजी तखतमलजी कटारिया—बावड़ी (झाबुआ) सौ० कां० रेखा कुमारी का शुभ विवाह श्री अरुणकुमारजी राजावत—रामानिवासी के साथ सम्पन्न हुआ उस उपलक्ष में श्रीमती कमलाबाई पत्नी रमणलालजी कटारिया की ओर से सप्रेम भेंट।

११) श्री लक्ष्मीनारायणजी जैन—श्योपुर कलां (मुरेना) अपनी सुपुत्री की शादी के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

साहित्य प्रकाशन—आजीवन सदस्यता ५०१) रु०

१. श्री नेमीचन्दजी माणकचन्दजी संचेती—इचलकरंजी।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल सहायता

५१) श्री आनन्दकुमारजी तलरेजा—इन्दौर, आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के इन्दौर पधारने की खुशी में सप्रेम भेंट।

—मंत्री

## श्रीमती मीनादेवी चोरड़िया का संथारा पूर्वक समाधि–मरण

श्रीमती मीनादेवी चोरड़िया धर्मपत्नी स्व० सरूपचन्दजी चोरड़िया का ४–८–८३ को संथारा पूर्वक समाधि मरण हो गया। संथारा आचार्य प्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० के विद्वान् शिष्य मधुर व्याख्यानी पं० र० श्री हीरामुनिजी म. सा. ने पचखाया। श्रीमती मीनादेवी का जन्म ७२ वर्ष पूर्व श्री मगनमलजी बोथरा के यहां हुआ था। श्री बोथराजी आचार्य श्री शोभाचन्दजी म. सा. के अनन्य भक्त थे यही कारण है कि पूरे परिवार में धार्मिक तप, त्याग एवं आध्यात्मिक संस्कार व्याप्त हुए। श्रीमती मीनादेवी विवाह से पूर्व भी आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों में अभिभूत रहीं। आपका विवाह केशरीमलजी चोरड़िया के सुपुत्र श्री सरूपचन्दजी चोरड़िया के साथ हुआ। आप समाज के प्रतिष्ठित एवं अग्रगण्य श्रावकों में से थे। आपका जीवन सादा, विचारों में उच्चता, धर्मपरायणता, दान, दया से ओतप्रोत था। जवाहरात उद्योग में आपका विशिष्ट कीर्तिमान था। कई स्वधर्मियों को जवाहरात प्रशिक्षण भी दिया जो आज भी उनके पारिवारिक जनों द्वारा यथावत चलाया जा रहा है। आपके ३ पुत्र सर्वश्री गुमानमलजी, उमरावमलजी, राजमलजी व १ पुत्री श्रीमती पदमा देवी नवलखा हैं। पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से युक्त है तथा तन, मन, धन से समाज सेवा कर रहे हैं। साधु-सन्तों एवं सतियों की सेवा मीनाबाई की तरह सभी परिवार करते हैं।

इस वर्ष जयपुर चातुर्मास में आपने आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. एवं पं. र. श्री हीरामुनिजी म. सा. को चातुर्मासार्थ गुमानमलजी चोरड़िया के बंगले में विराजने की आग्रहपूर्वक प्रार्थना इन शब्दों में की कि गुरुदेव मैं तो आपकी शिष्या हूँ अतः इस बार मुझे लाभ मिलना चाहिये। श्रद्धालु श्री पूनमचन्दजी बडेर तो पहले लाभ ले चुके हैं। इस निमित्त से आचार्य श्री का कुछ समय तक गुमानमलजी चोरड़िया के बंगले में बिराजना रहा। अस्पताल में भी जब-जब सन्त दर्शन देने पधारते उनके साथ कहलाते कि आचार्य श्री को मेरी सविधि वन्दना अर्ज कर खमतखामणा कहें।

वैभव सम्पन्न परिवार में रहकर भी आप भोग सामग्री से निर्लिप्त रहतीं और तपस्याएँ भी करतीं। आप मासखमण, पन्द्रह, अठाई आदि तपस्याएँ कर चुकी हैं। आप सन्त-सतियों की सेवा का सदैव ध्यान रखती थीं। सभी महिलाओं को भी दर्शन, प्रवचन व सेवा की प्रेरणा देती रहती थीं।

आपके असामयिक निधन से समाज ने आदर्श धर्मपरायण महिला रत्न सुश्राविका खो दी जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असम्भव है। आपके सम्मान में कई संस्थाओं ने शोक सभाएँ करके गहरी संवेदना व्यक्त की है। हम संघ, मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से श्री वीर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे एवं शोक सन्तप्त परिवार को यह असह्य दुःख धैर्य के साथ सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

**टीकमचन्द हीरावत**
मन्त्री
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

---

जिस मरने से जग डरे,
मेरे मन आनन्द।
कब मरिहौं, कब भेंटिहौं
पूरण परमानन्द॥
—कबीर

---

# ❋ अनुक्रमणिका ❋

## ☐ प्रवचन / निबन्ध ☐



## ☐ बोध कथा / प्रसंग / सूक्ति ☐



## ☐ कविता ☐



## ☐ उपन्यास ☐



## ☐ प्रतिवेदन ☐



## ☐ स्तम्भ ☐

# जिनवाणी

□

**मृत्युमार्गे प्रवृत्तस्य,**
**वीतरागो ददातु मै ।**
**समाधिबोधपाथेयं,**
**यावन्मुक्तिपुरी पुरः ।।**

हे वीतराग देव ! मैं मृत्यु मार्ग पर अग्रसर हो रहा हूं। मुझे मुक्ति रूपी नगरी में पहुँचना है। मुक्तिपुरी तक सकुशल पहुँचने के लिए मुझे समाधि का बोध अथवा चित्त की समाधि और सद्बोध प्रदान कीजिए जिससे यात्रा सानन्द पूर्ण हो।

□

सितम्बर, १९८३
वीर निर्वाण सं० २५०९
भाद्रपद, २०४०

**वर्ष : ४०** • **अंक : ९**

मानद सम्पादक :
**डॉ० नरेन्द्र भानावत,** एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
**डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,**
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
**प्रेमराज बोगावत**

संस्थापक :
**श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़**

प्रकाशक :
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर-३०२००३ (राजस्थान)

फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)

फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
**फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
जयपुर-३०२००३

**प्रवचनामृत :**

# परिग्रह की नदी का मोड़ बदलें !*

□ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

**प्रार्थना**

जो देवाण वि देवो, जं देवो पंजलि नमं संति ।
तं देव-देव महियं, सिरसा वंदे महावीरम् ।।

**वीर-वाणी की वर्षा :**

भगवत् वाणी के मंगलमय वचन आपको सुनने को मिल रहे हैं। इससे बढ़कर और सौभाग्य क्या हो सकता है ? चारों ओर रत्नों और मणियों की वर्षा यदि होती रहे तो वह इसके सामने कुछ नहीं है। यदि मानव इसका मूल्य समझे तो स्वर्ण और रजत की वर्षा तो क्या मणि और रत्नों की वर्षा हो तो भी शास्त्र वचनों की वर्षा के सामने नगण्य है, उसका कोई मूल्य नहीं है। क्या तो रत्नों की वर्षा, क्या स्वर्ण की वर्षा, क्या मणियों की वर्षा मानव की भूख को जगाती है, बढ़ाती है, मानव में चंचलता लाती है, मानव के दिमाग को उत्तेजित करती है और मानव-मानव के बीच में खाई बढ़ाती है लेकिन वीर-वाणी की वर्षा लोगों में अनन्त शान्ति, अनन्त आनन्द उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखती है। ताज्जुब होता है तब जबकि लोग वचन-वर्षा को समझ नहीं पावें, झेल नहीं पावें, अमृत बिन्दुओं का पान नहीं कर पावें और इधर-उधर रजत और स्वर्ण, रत्नों और मणि का संग्रह करने के लिये रात-दिन अपने आपको परेशान करते हुए जिन्दगी का अमूल्य समय गवाँ दें, इससे बढ़कर आश्चर्य की बात क्या है।

**शक्ति का मोड़ बदलें :**

भगवान् महावीर केवल जैन समाज को ही नहीं, केवल ओसवाल, पोरवाल

*जलगाँव में २३ सितम्बर, १९८२ को दिया गया प्रवचन। श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

आदि जातियों को ही नहीं, लेकिन उन्होंने मानव मात्र की कल्याण कामना से यह सन्देश दिया है कि मानव दुःख मुक्त हो जाय, बशर्ते कि वह अपनी शक्ति का उपयोग करना सीखे। एक ही सूरत में मानव और सारा संसार दुःख मुक्त हो जाय अगरचे अपनी शक्ति का सही सदुपयोग करना सीखलें। हो क्या रहा है आज ? आवश्यकता है भगवान् महावीर के भक्तों को, जैन सन्तों को, जैन संघों को और दयार्धमियों को अपनी शक्ति का मोड़ बदलने की।

**कामना का रास्ता खुला :**

आज संसार बढ़ रहा है। हर कौम की जनसंख्या बढ़ी है, अर्थ बढ़ा है, व्यवसाय बढ़ा है, भौतिक इच्छाएँ बढ़ी हैं, भौतिक साधन बढ़े हैं और एक हाथ से होने वाला काम हजार हाथों से हो रहा है। नतीजा यह है कि इन सबके बावजूद भी मानव में दुःख बढ़ा है, अशान्ति बढ़ी है, कलह बढ़ा है, क्लेश बढ़ा है और मानव अपने में त्राहि-त्राहि कर रहा है। यदि उसको शान्ति का उपाय कहीं से प्राप्त होने वाला है तो वीतराग की वाणी से। आत्मिक सुख देने वाला पवित्र निर्मल वीतराग के वचनों की शीतल छाया में ही मानव को शान्ति मिलने वाली है।

संसार के लोग भौतिक तरक्की पाकर यह देख रहे हैं कि हमारी तरक्की कहीं हमें खत्म करने वाली न बन जाय। संसार को यह चिन्ता है।

संसार में बड़े-बड़े आविष्कार की बातें, वैज्ञानिक आविष्कार आपके, हमारे सामने हैं, पहले छोटे-छोटे घरों के सामने चर्खा कातकर लोग अपना गुजारा करते थे, वह समय भी देखा। उसके बाद सैंकड़ों नहीं, हजारों छोटी-मोटी फैक्ट्रियां खुल गईं, इण्डस्ट्रीज खुल गईं। कहीं रंगों की, कहीं हैंडलूम या हाथकर्घा, दाल और चावल की मिलें आदि खुल गईं। अर्थ-संग्रह की कामना का रास्ता इतना खुला, इतना फैल गया कि हजारपति के घर में जन्मे हुए भाई-बहिन लखपति से भी आगे बढ़कर अपने आपको समझ रहे हैं कि हम भी संसार में कुछ अपना स्थान रख रहे हैं।

धन मिला, सम्पदा मिली, उद्योगपतियों में नम्बर आया लेकिन हमारा जीवन किधर जा रहा है, संघ किधर जा रहा है, शान्ति किधर जा रही है और शासन का उत्थान किधर हो रहा है, इस ओर नजर उठाकर देखें तो बहुत बड़ी चिन्ता की बात दिख रही है। जैसे राष्ट्रों में चिन्ता की बात हो रही है, अमेरिकावासियों और रूसवासियों का कलेजा हिल रहा है। दिन दहाड़े बड़े-बड़े राजमहलों में, अदालतों में सुरक्षित स्थानों में खून हो जाते हैं। छोटे-मोटे आदमियों का नहीं, राष्ट्र के अधिकारियों का, मंत्रियों का खून हो जाता है।

यदि एक अच्छे राष्ट्र के अधिकारी के शब्दों में कहूँ तो नरमेध हो रहा है।

किसी जमाने में वैदिक परम्परा के समय में नरमेध के नाम से मनुष्यों की बलि होती थी। लेकिन धार्मिक स्थान पर ऐसा मौका नहीं आया। लेकिन आज के युग में युद्ध के नाम पर, परिग्रह के नाम पर, किसी देश को अधीन करने के नाम पर आज खून की नदियाँ बह रही हैं।

**परिग्रह एक प्रकार का अणुबम :**

बड़े-बड़े राष्ट्र तो थककर सोच रहे हैं कि अणुबम का उत्पादन बन्द करें, आधुनिक शस्त्रों का उत्पादन बन्द करें। अणुबम का प्रयोग शान्ति के लिए करें। क्या जैन भाई भी यह सोचेंगे कि परिग्रह एक प्रकार का अणुबम है? इस परिग्रह के कारण धर्म-स्थानों पर लड़ाइयाँ हो गईं, मन्दिरों के बारे में केस चले, मन्दिरों पर कब्जा करने के लिये लाठियां चलगईं, परस्पर मार पिटाई हो गई। थोड़ी सी सामाजिक भूमि के बारे में पार्टियां बन गईं। धर्म विभाजित हो गये—सम्प्रदाय के नाम पर और अलग परम्पराओं के नाम पर। यदि इसी तरह हमारा संघ भी है, वह भी अपनी मूल संस्कृति का और धर्म के संस्कारों को रखने के बजाय, युवा पीढ़ी की दृष्टि से देखा जाय तो वह भी भारत के संस्कार, आहार-विहार, रीति नीति सब को भुलाकर चल रहा है। हमारे जैन धर्म के अनुयायियों में और इतर समाज के आहार-विहार में अन्तर नहीं दिख रहा है। हम यह नहीं कह सकते कि यह कोई "जैन" है या अजैन। यदि सामायिक का लिबास छोड़ने के पश्चात् घरों में जाकर कोई चैकिंग करे तो पड़ौस में रहने वाले अजैन भाई के और हमारे आहार-विहार में, आचार-विहार में, रहन-सहन में तुलना करें तो कोई अन्तर नहीं दिखेगा। आपके शादी अथवा विवाह और लेन-देन की तुलना करें तो अन्तर नहीं दिखेगा। आप कितना संयम से जीवन बिताते हैं, कितनी सादगी से रहने वाले हैं, कितने अल्पारम्भी हैं, कितने अनासक्त हैं, कितना आसक्ति भाव कम है, यदि इन बातों की जांच की जाय, देखा जाय तो शायद कोई फर्क नहीं मिलेगा।

अभी-अभी आप सुन गये ऐसा उदाहरण कि एक पत्नी कहलाने वाली नारी सती मदनरेखा अपने पति के अन्तिम विचारों को मोह से बचाने की बात करती है। जब पति की जीवन लीला समाप्त हो रही है, उस समय रोना चाहिये या साहस की बात करनी चाहिये थो। कुछ पूछना चाहिये था, संरक्षण की बात करनी चाहिये थी? लेकिन वह सती इन सब को भुलाकर पति के जीवन-सुधार की बात करती है। यह कितना बड़ा आदर्श है मातृ मण्डल के सामने और कितना बड़ा आदर्श है भाइयों के सामने। इतने उच्च आदर्श को देखकर हमें यह सोचना चाहिए कि अणुबम जैसी शक्ति का प्रयोग विनाश के लिए किया जाय

या शान्तिकाल में रक्षण के लिए प्रयोग किया जाय ? यदि शान्तिकाल में प्रयोग किया जाय तो राष्ट्र निर्माण के लिए भी अणुशक्ति काम में आ सकती है ।

आप परिग्रह की दृष्टि से लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति शादी अथवा विवाह के जलसों में, रोशनी आदि में समाप्त कर देते हैं । दिवाली का त्यौहार सामने आ रहा है । जैन घरों में दिवाली के अवसर पर आतिशबाजी में हजारों-लाखों रुपये चकनाचूर हो जायेंगे । क्या जैन संघ इतना साहस कर सकता है, धर्म सभा में निर्णय ले सकता है कि हम अपने घरों में बच्चों को आतिशबाजी नहीं करने देंगे । करने वालों का बहिष्कार करेंगे । क्या इतना साहस कर सकते हैं ? यदि अणुशक्ति की तरह आप अपनी परिग्रह-शक्ति, बल, बुद्धि, सम्पत्ति को शासन रक्षण में लगावें तो आपकी सेवा सराहनीय हो सकती है ।

**परिग्रह की नदी का मोड़ बदलें :**

जिस गांव के पास नदी निकलती है वह गांव अपने आपको सुखी मानता है, लेकिन जब वही नदी बाढ़ का रूप धारण कर लेती है तो गाँव का विनाश कर देती है । आपने पढ़ा या सुना होगा कि कई नदियों की बाढ़ ने वहां पर प्रलय का रूप धारण कर लिया है । बाढ़ से बचने के लिये नदियों का मोड़ बदलते हैं । वैसे ही आपके परिग्रह की नदी बह रही है । उसमें से काफी पैसा करों के रूप में आपसे सरकार ले लेती होगी । इस पर आप कन्ट्रोल करें । घर पर घेरा डालें उससे पहले ही आप नदी के मोड़ की तरह परिग्रह का मोड़ बदलना सीख जायं तो कितना लाभ हो सकता है ?

देश के काफी बड़े भाग में खेतों के लिये और पीने के लिये पानी का अभाव रहता है । लेकिन दूसरी ओर आसाम और उड़ीसा में नदियों की बाढ़ ने प्रलय का सा दृश्य उपस्थित कर दिया है । प्रकृति पर आदमी काबू नहीं कर सकता, लेकिन मोड़ करने आदि साधनों से उस पर काबू पाया जाता है । इसी तरह से आप भी अपनी परिग्रह-शक्ति का मोड़ कर सकते हैं ।

आज के मानव में काम, क्रोध और लालच की मात्रा बढ़ रही है । साहस बढ़ रहा है । वक्त पर काम पड़ जाय तो या तो मर जायेंगे या मार देंगे । जोश जल्दी आता है । कभी बाप को लड़का मार देता है, कभी पति पत्नी को मार देता है और कभी पत्नी पति को मार देती है, ऐसे किस्से सुनने में आते हैं । ऐसे बीसियों उदाहरण मिलते हैं ।

**ममता हो तो देव, गुरु, धर्म पर :**

भगवान् महावीर कहते हैं कि क्रोध करना है तो दुर्गुणों पर करो ।

आपको क्रोध आ रहा है और कन्ट्रोल में नहीं आ रहा है, बोलने की आदत वश में नहीं आ रही है तो उसे वश में लाने का प्रयास कीजिये। मोह करना है, ममता करनी है तो किस पर करें? बाल बच्चे, भाई-बहिन, कुटुम्ब, परिवार, खजाना आदि इन सब पर ममता करने की बजाय शास्त्र कहते हैं कि स्नेह या ममता करो तो देव, गुरु, धम पर करो।

कृष्ण ने ममता की, श्रेणिक ने ममता की। श्री कृष्ण ने अपने घर के बाल-वच्चों को कह दिया कि नेमिनाथ के चरणों में जाना चाहते हो, खुशी से जा सकते हो, मैं रुकावट नहीं करता। जिनशासन में कैसे उत्थान आवे, वह कैसे ऊपर उठे इसके लिये श्रेणिक और श्री कृष्ण ने अपना जीवन अर्पण कर दिया। आज उनका नाम ही अमर नहीं हुआ लेकिन उन्होंने तीर्थंकर गोत्र बांध लिया, तीर्थंकर गोत्र के अधिकारी बन गये। यह किसका नतीजा है? क्या करने से बन गये? क्या प्रदेशी का जीवन स्वर्ग में जाने लायक था? नहीं था। फिर कैसे स्वर्ग में चला गया? आपका जीवन स्वर्ग में जाने लायक है या प्रदेशी का? सोच समझकर बतावें कि इस बारे में आपका निर्णय क्या होगा? हिंसा करने वाले प्रदेशी ने अपने जीवन का मोड़ बदल लिया। उसी तरह से आपको भी अपने जीवन का मोड़ बदलने की जरूरत है। घड़ी भर कपड़े बदल कर बैठ गये तो 'मात्र' इससे हमारा कल्याण नहीं होगा। मैं 'मात्र' शब्द लगा रहा हूं इसलिये सन्त कहते हैं :—

ए वीर भूमि के धर्मवीर, जीवन निर्माण करो अब तो!
गामा ने तन निर्माण किया, चहुँओर नाम मशहूर किया।
आखिर तन जल कर खाक हुआ, सद्‌गुण निर्माण करो अब तो!
मोहम्मद गजनी ने देखो, धन लूट-लूट भंडार भरा,
अंतिम दम भू पर खिसक पड़ा, जीवन धन कोष भरो अब तो!
भौतिक निर्माण करो कुछ भी, सुखदायक भी दुःख देंगे कभी।
जब नाश के क्षण पल आयेंगे, कुछ कर न सकोगे तुम तब तो!
ए वीर भूमि के धर्मवीर, जीवन निर्माण करो अब तो।

**आगे आने के लिए कमर कसनी होगी :**

सारे संसार के छोटे-बड़े प्राणी और हमारे छोटे-बड़े लोग सब इस चिन्ता में हैं कि महाराज कुछ जीवन बनाना है। 'बंगलो बन गयो, छोकरी की शादी हो गई। अब तो सबकी भलाई करनो है', सब इस रट में लगे हुए हैं। कोई ५० वर्ष का हो गया, कोई ६० वर्ष का हो गया, कोई ७० वर्ष का हो गया। उनसे कहा जाय कि शासन की सेवा का क्षेत्र आपकी राह देख रहा है, धर्म शासन को सम्भालो। धर्मी भाइयों के कमज़ोर बच्चों को सम्भालो। साधु-साध्वी कम रह गये हैं। तेजस्वी विभूतियाँ दिवंगत हो गईं। आज हम अजमेर

सम्मेलन को याद कर रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि हम बदले जमाने की बात कर रहे हैं।

अम्बाला महासभा के भाई गौरीलालजी संघ के साथ यहां आये हुए हैं। एक-एक श्रावक को देखकर प्रसन्नता होती है। आचार्य सोहनलालजी म०, तेजस्वी सन्त जवाहरलालजी महाराज आदि-आदि मनिषियों के बीच में वहां के श्रावक तन देने वाले, समय देने वाले थे। जब सम्मेलन की बात उठाई तो पू० सोहनलालजी म० नरवीर खड़े हो गये, दूर-दूर से साधुओं को कैसे लाना, यह समस्या सामने थी। तार टेलीफोन से काम बनने वाला लगता नहीं था। इस काम के लिए घर छोड़कर निकलने वाले श्रावक चाहिये। उस समय ऐसे दिग्गज श्रावक देखे जो संस्कृति की धगस रखने वाले थे। लेकिन आज का समय देखते हैं तो बड़े-बड़े, अच्छे-अच्छे, पढ़े लिखे युवक दिमाग वाले दिखते हैं। यह देखकर मालूम होता है कि आपके यहां सब तरह के भौतिक साधन हैं, भीतर से सन्तों के प्रति प्रेम है, श्रद्धा है, समय देने को तैयार हैं। अभी लाला गौरीलालजी बोले। पंजाब की शानदार आवाज में बोले। सुनकर प्रसन्नता हुई। ऐसी बुलन्द आवाज में नारा लगाने वाले सौ-पचास बन्धु खड़े हो जायं तो धर्म शासन में कैसी रोनक आ जाय। लाला को भी आगे आने के लिए कमर कसनी होगी।

**सामग्री बढ़ गई, प्रेम घट गया :**

आज तो कर्मवीरों का जमाना है। युगवीर गुजर गये। अब तो कर्मवीर धर्मवीर बन जायं। आपके बच्चे बन गये, बड़ी-बड़ी कोठियां बनवालीं, तरक्की की, बड़ी-बड़ी इण्डस्ट्रीज खोलीं। ऐसे कर्मवीर की स्थिति पाना मुश्किल नहीं है। बाप ने जिन्दगी भर नहीं कमाया। बच्चों ने साहस किया, इण्डस्ट्रीज खोलीं। लाखों-करोड़ों इकट्ठे किये, लेकिन दिमाग में शान्ति कितनी है, समाज के साथ प्रेम कितना है, सन्तों के प्रति भक्ति कितनी है, शासन के प्रति भक्ति कितनी है? आज के समय में सामग्री बढ़ गई, प्रेम घट गया। पहले भाई-भाई के लिए जान देने वाला था, लेकिन आज जान लेने वाले मिल सकते हैं, देने वाले विरले ही मिलेंगे।

धन नाशवान है, रूप नाशवान है। महमूद गजनवी जैसे बहादुर लूटमार करके धन मिलाकर खत्म हो गये, हाथ मलकर रह गये। शरीर बनाने वाले बड़े-बड़े गामा पहलवान, रुस्तम जैसे पहलवान जिन्होंने शरीर बनाया। महमूद गजनवी ने धन बनाया। आपको भी उसके जैसा बनना है क्या? वह १८ ऊँटों की कतारें जवाहरातों से भरकर हिन्दुस्तान से ले गया। अपने स्थान पर पहुंच कर सामन्तों के बीच में सिंहासन पर बैठकर देखा कि मैं कितने जवाहरात लाया हूं, इनको कौन काम में लेगा, कौन इनका रक्षण करेगा, कौन सम्भालेगा?

ऐसी चिन्ता करते-करते ही वह गिरकर मर गया। ऐसे कितने ही धनपति चिन्ता ही चिन्ता में मर गये। खाली मरना न हो, कुछ करके जीवन में आगे बढ़ेंगे तो लोक सफल होगा, परलोक सफल होगा, शासन का कर्ज अदा होगा।

**धर्म दलाली का लाभ लें :**

अभी सन्त ने बताया था कि मदनरेखा ने अपने पति का ऋण चुकाने की कोशिश की। आपका शासन के प्रति ऋण है गुरुओं के प्रति ऋण है। आपके समाज के बाल-बच्चों को पवित्र रखने वाला कौन है? यदि गुरुजनों ने रास्ता नहीं बताया होता तो आपकी जिन्दगी कितनी पवित्र रहकर चलती। इसलिये गुरुओं का और धर्म शासन का ऋण है, उसको चुकाने के लिये आगे आओ। अच्छे वातावरण में जिन्दगी बीते, इस तरह से यदि आप आगे आयें तो धर्म शासन, देश, परिवार पवित्र होगा, महान दलाली का लाभ मिलेगा। कृष्ण और श्रेणिक की तरह आगे बढ़ें तो आपका, समाज का और शासन का उत्थान होगा और लोक और परलोक में, सुख, शान्ति और आनन्द पायेंगे।

---

## राजा से पहले इन्सान

☐ डॉ० भैंरूलाल गर्ग

जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रतापसिंह प्रजा के दुःख-सुख तथा विचारों को जानने के लिए वेश बदलकर, घोड़े पर सवार हो ग्रामों में घूमा करते थे। एक दिन वे घूमते-घूमते एक तालाब पर पहुंचे। वहां उन्होंने एक युवक को देखा। वह बुखार से पीड़ित था। वे बहुत देर तक उसका सिर दबाते रहे, फिर उन्होंने उससे पूछा, "कहां जा रहे हो?"

"जम्मू जा रहा हूं।"

"क्या काम है वहां?"

"मैं लक्ष्मी मेहतरानी का जामाता हूं, पत्नी को लिवाने जा रहा हूं।"

"तुम मेरे घोड़े पर बैठ जाओ. मैं तुम्हें लक्ष्मी के घर पहुँचा दूँगा।"

युवक घोड़े पर बैठ गया, महाराजा लगाम पकड़कर चल दिये।

लक्ष्मी महाराजा के महलों की ही मेहतरानी थी। महाराजा को देखते ही वह उनके चरणों पर गिर पड़ी और अपने जामाता के अपराध के लिए क्षमा मांगने लगी।

महाराजा ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा, "तुम्हारे जामाता ने कोई अपराध नहीं किया है। मैं स्वयं ही उसे घोड़े पर बिठाकर लाया हूं। मैं राजा होने के पहले एक मनुष्य हूं। मनुष्य के नाते यदि मैं तुम्हारे जामाता की दुःख तकलीफ में काम न आता तो मनुष्य धर्म से च्युत हो जाता।"

—जेल रोड, झालावाड़-३२६००१ (राजस्थान)

# विनय भाव यदि आ जाए !

☐ श्री इन्दरराज बैद

विनय भाव यदि आ जाए तो जीवन मंगल हो जाए !
कर्मों की हो जाय निर्जरा, भावी पुष्कल हो जाए !

( १ )

विनय मोक्ष का मूल कहाता, श्रमण पंथ का मर्म यही,
यही सरलता-समता का पथ, मानवता का धर्म यही।
छूट जाय सब अहंकार तो, मानस निर्मल हो जाए,
विनय भाव यदि आ जाए तो जीवन मंगल हो जाए।

( २ )

जीवन तो क्षण भंगुर है, फिर मिथ्या करते गर्व अरे !
रूप-रंग-ऐश्वर्य-पराक्रम रह जाएँगे सभी धरे।
वर्तमान पहिचान सकें तो, भावी उज्ज्वल हो जाए,
विनय भाव यदि आ जाए तो, जीवन मंगल हो जाए।

( ३ )

व्यर्थ बड़ाई नहीं करें हम, सच्चाई से प्यार करें,
कोसों दूर रहें माया से, सहज शुद्ध व्यवहार करें।
सहज भाव यदि अपना लें तो, भव का संबल हो जाए,
विनय भाव यदि आ जाए तो, जीवन मंगल हो जाए।

( ४ )

मात-पिता-गुरु-संत-अबल की, सेवा जो दिन-रात करे,
अंधकार हरले भव-भव का, सुख का मुक्ति प्रभात करे।
विनत सरल सेवाभावी का, बंधन निष्फल हो जाए,
विनय भाव यदि आ जाए तो, जीवन मंगल हो जाए।

( ५ )

जगती के इस महाकूप में, बने हुए मंडूक सभी,
कैसे कोई उबरेगा, है दुरभिमान की चूक अभी।
'मैं' 'मेरा' यह अहं हटे तो, जीव अचंचल हो जाए,
विनय भाव यदि आ जाए तो जीवन मंगल हो जाए।

कर्मों की हो जाय निर्जरा, भावी पुष्कल हो जाए,
विनय भाव यदि आ जाये तो, जीवन मंगल हो जाए।

—49, Govindan Road, West Mamblem' MADRAS-600 033

पर्युषण पर विशेष लेख :
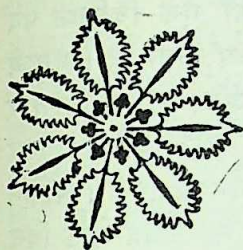
# पर्युषण को सार्थक कैसे करें ?

□ युवाचार्य श्री मधुकर मुनि

यह एक महान् आध्यात्मिक पर्व है। 'पर्युषण' शब्द से अनेक अर्थ और भाव व्यक्त होते हैं। शब्द शास्त्र का नियम है कि एक शब्द–व्युत्पत्ति भेद से, व्याख्या भेद से अनेक अर्थ का वाचक बन जाता है। पर्युषण शब्द के विषय में भी ऐसा ही हुआ है। इसके विभिन्न शब्द विभिन्न भावों के वाचक हो गये हैं। जैसे—पर्युषण—**परिवसन** एक स्थान पर स्थिर रहना। इससे पर्युषण का अर्थ वर्षावास करना या वर्षाकाल में एक स्थान पर रहना सिद्ध होता है।

अब पर्युषण—का दूसरा अर्थ करें—**पर्युपशमन**। परि-उपशमन अर्थात् सब प्रकार से शान्ति करना। यह शब्द कषाय आदि की उपशान्ति का द्योतक है। इसी तरह एक अर्थ है—**परिवसन**, निकट रहना। अर्थात् आत्मभाव के निकट रहना अथवा आतमा में रमण करना।

वर्षावास का अर्थ —पर्युषण का सिर्फ कालवाची अर्थ है, जबकि कषाय-उपशान्ति और आत्म-रमण यह उसके भाववाची अर्थ हैं। हमें शब्दों के बाह्य कलेवर को नहीं पकड़कर उसकी आत्मा को पकड़ना है। शब्द के भीतर छिपे हुए गहन भाव को ग्रहण करना है। तभी हम पर्युषण की सच्ची व्याख्या समझ सकेंगे।

**एक दिन या आठ दिन :**

एक मान्यता है कि प्राचीन समय में काल की दृष्टि से पर्युषण सिर्फ एक दिन का ही होता था। आषाढ़ी पूनम के पचासवें दिन पर्युषण मनाया जाता था। प्राचीन ग्रन्थों एवं आगमों में ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि पर्युषण एक अठाई महोत्सव के रूप में भी मनाया जाता था। तीन चातुर्मासिक पूनम और एक पर्युषण इन चार पर्वों पर देवतागण नन्दीश्वर द्वीप में जाकर अष्टाह्निक महोत्सव अर्थात् आठ दिन तक उत्सव मनाया करते हैं।[1]

१. जीवाभिगम सूत्र—नंदीश्वर द्वीप वर्णन।

इस प्राचीन उल्लेख से यह बात जानी जाती है कि अष्टाह्निक महोत्सव की परम्परा बहुत ही प्राचीन है। एक मुख्य दिन के पहले सात दिन और भी इसी प्रकार का उत्सव, आनन्द मनाकर उस मुख्य दिन को एक विशिष्ट पर्व का रूप दिया जाता है; क्योंकि एक दिन का समय बहुत कम होता है। मनुष्य उत्सव प्रिय है, वह एक दिन के सहारे अपने उल्लास को और अधिक विस्तार देकर उसे व्यापक बनाने में प्रसन्नता का अनुभव करता है और विविध प्रकार के नृत्य-गायन आदि का आयोजन कर त्यौहार को रंगारंग बना देता है। लेकिन त्यौहारों की भांति आध्यात्मिक पर्वों को भी वह एक दिन की जगह आठ दिन तक आध्यात्मिक कृत्य धर्म-साधना आदि के रूप में मनाने लगा हो, इसमें कोई आश्चर्य नहीं। उसकी उत्सवप्रिय वृत्ति आध्यात्मिक क्षेत्र में कुण्ठित कैसे हो सकती है? इस कारण यह प्राचीन उल्लेख तथ्यपूर्ण ही लगता है कि वह पर्युषण को भी अष्टाह्निक महोत्सव के रूप में मनाता रहा हो। एक दिन के पर्युषण पर्व को विभिन्न तप-ध्यान-स्वाध्याय आदि के आयोजनों द्वारा वह आठ दिन तक आत्म-रमण कृत्य में लग गया हो, वह सहज सम्भव है।

दूसरी बात, पर्युषण में कल्पसूत्र (कल्पदशा-दशाश्रुतस्कंध की आठवीं दशा) पढ़ने का भी उल्लेख आता है। उसमें साधु की समाचारी आचार आदि का विधि-विधान है, वह पढ़ने से श्रमण को अपने सम्पूर्ण आचार-नियमों के ज्ञान का पुनरावर्तन हो जाता है और वह विशेष सजगता तथा सावधानी पूर्वक आचरण करने लगता है। वह कल्पसूत्र भी एक दिन में पढ़ा जाये–यह कम सम्भव है। क्योंकि इतना विस्तृत विषय एक ही दिन में कोई कैसे पढ़ेगा? अतः हो सकता है–स्वाध्याय की भावना को प्रोत्साहन देने के लिए पर्युषण से सात दिन पूर्व ही यह क्रम प्रारम्भ कर दिया जाता हो, जिसमें श्रमण वर्ग अपने आचार कल्प का अध्ययन खूब गम्भीरतापूर्वक कर लें, और साथ ही अपने आराध्य देवों एवं महापुरुषों का पवित्र जीवन-चरित्र भी पढ़े और उससे तप, ध्यान एवं आत्म-जागरण की सबल प्रेरणा प्राप्त करे। इस दृष्टि से भी पर्युषण आठ दिन मनाये जाने की उपयुक्तता लगती है।

वैसे आठ की संख्या जैन साहित्य में मांगलिक मानी गई है। प्राचीन काल में आठ दिन के उत्सव होते थे तथा किसी भी शुभ कार्य में आठ का योग होना अच्छा मानते थे। मंगल आठ माने गये हैं। सिद्ध भगवान् के भी आठ गण बताये हैं। साधु की प्रवचन माता आठ हैं। संयम के भी आठ भेद बताये गये हैं। योग के आठ अंग हैं। आत्मा के रूचक-प्रदेश भी आठ हैं और कर्म भी आठ हैं। कहावत है—'आठ के ठाट'। इस प्रकार आठ की गणना बड़ी महत्त्वपूर्ण रही है।

पर्युषण में आठ प्रवचन माता की आराधना के लिए तथा आठ कर्मों को क्षीण करने के लिए, एक-एक दिन मान लिया गया हो, तो क्या आश्चर्य है ? एक दिन ज्ञानावरणीय कर्म को क्षय करने के लिए ज्ञान की आराधना, ज्ञानी का बहुमान आदि करे, दूसरे दिन दर्शनावरणीय कर्म को क्षीण करने हेतु, दर्शनविशुद्धि के उपाय करे। इसी प्रकार मोहनीय कर्म के क्षय हेतु—निर्वेद, वीतरागता और उदासीनत वृत्ति का अभ्यास करे, अन्तराय कर्म को उपशांत करने के लिए दान देवे, तपस्या करके संयम में पराक्रम करे। इस प्रकार प्रत्येक दिन एक विशेष प्रकार का आचरण करके तत्सम्बन्धी कर्मदलिकों को उपशांत करे, क्षीण करे–यह पर्युषण के आठ दिन का अष्टाह्निक कार्यक्रम हो सकता है।

मतलब यह है कि काल की दृष्टि से भले ही पर्युषण एक दिन का मान लिया जाय, फिर भी दीर्घदृष्टि आचार्यों ने इन दिनों में आत्मजागरण करने के लिए पर्युषण को अष्टाह्निक पर्व का रूप दिया और आठ दिन सतत पर्युषण पर्व की आराधना का उपदेश किया, यह विशेष महत्त्वपूर्ण है।

**आठ दिन के करणीय कृत्य :**

जैसा पहले बताया गया है—पर्युषण पर्व के आठ दिनों में पांच करणीय कृत्यों का विधान है—सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, केशलोच, यथाशक्ति तपश्चरण, आलोचना और क्षमापना।

**१. केशलोच :**

श्रमण को केशलोच करने का कारण यह है कि वर्षाकाल में वर्षा अधिक होने से पानी सिर में गिरता रहता है, केश गीले रहते हैं उससे अप्काय की विराधना होती है और सिर गीला रहने से जूं-लीख आदि की उत्पत्ति भी हो सकती है, दाद-खाज-खुजली आदि भी हो सकती है, इन सभी संभावित दोषों से बचने के लिए यह कहा गया है कि 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी' जब सिर में केश ही न रहेंगे, तो ये दोष उत्पन्न ही नहीं होंगे।

केशलोच एक अग्निपरीक्षा भी है। साधु कितना कष्ट-सहिष्णु है, कितना धैर्यवान है और शरीर के कष्ट में भी वह कितना आत्मस्थ रह सकता है, इसकी कड़ी कसौटी है—लोच। इसीलिए राजकुमार मृगापुत्र जब दीक्षित होता है तो उसकी माता कहती है—**केसलोओ य दारुणो**—केशलोच बड़ा ही दारुण कष्ट है, बड़ी भयंकर पीड़ा है। एक-एक बाल खींचा जाता है, तो जैसे बिजली-सी चमक जाती है। इस कष्ट को सहन करना सचमुच बड़ी धीरता और सहिष्णुता का काम है। यह केशलोच पर्युषण पर किया जाता है अर्थात

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण से पूर्व गो-लोम (गाय के रोम) प्रमाण बाल से बड़े बाल नहीं रखें जा सकते । शास्त्र में कहा है—

"वासावासं पज्जोसवियाणं नो कप्पई निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा परं पज्जोसवणाओ गोलोमप्पमाणमित्ते वि केसं तं रयणिं उवाइणा वितए।'[1]

वर्षावास में रहे हुए निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थनियां पर्युषण की अन्तिम रात्रि से पूर्व केशलुंचन अवश्य कर लेवें । क्योंकि पर्युषण के बाद (मस्तक, मूंछ और दाढ़ी पर) गाय के रोम जितने केश भी रखना नहीं कल्पता है ।

तो, यह केशलोच पर्युषण का आवश्यक कृत्य माना गया है । हाँ, इसका विधान सिर्फ श्रमण वर्ग के लिए ही है ।

**२. सांवत्सरिक प्रतिक्रमण :**

सांवत्सरिक प्रतिक्रमण तो वर्ष भर का आत्म-स्नान है । श्रमण हो या श्रावक, शुद्धि प्रत्येक के लिए आवश्यक है । इसलिए सभी को संवत्सरी का प्रतिक्रमण करके वर्ष भर में हुए प्रमाद, अतिचार, अनाचार आदि की सरलता-पूर्वक आलोचना करनी चाहिए ।

**मिच्छामि दुक्कड़ं : सच्चे मन से हो :**

प्रतिक्रमण में बार-बार अपने प्रमाद-आचरण के लिए 'मिच्छामि दुक्कड़ं' का उच्चारण कर पश्चाताप किया जाता है । साधक सच्चे दिल से कहता है- मैंने प्रमादवश जो आचरण कर लिया, वह मेरा दुष्कृत मिथ्या हो ।

कोई पूछ सकता है कि क्या ऐसा कहने से उसका पाप धुल जाता है ? पाप करके फिर मुँह से कह दिया–'मेरा पाप मिथ्या हो' तो पाप धुल जाय तब तो पाप-प्रक्षालन का यह बहुत ही सरल तरीका हो गया । इससे तो कोई भी अपने पाप धो सकता है ।

इसके उत्तर में समाधान है कि—पाप करने के अनेक कारणों को दो भागों में बांटा गया है—बाह्य कारण और आंतरिक कारण । बाह्य कारण परिस्थिति है, गरीबी, बीमारी, मजबूरी आदि । आन्तरिक कारण उसकी अज्ञान, भय लोभ एवं प्रमाद की वृत्तियां हैं । मूलत: आन्तरिक वृत्ति दूषित होने पर ही मनुष्य पाप करता है । अगर भावना निर्दोष और शुद्ध रही तो पाप प्रवृत्ति नहीं होती । जब मनुष्य भय, लोभ, अज्ञान आदि के वश होकर पाप कर लेता है किन्तु किसी कारण से, गुरु के उपदेश से या स्वयं की विवेक जागरणा से उसे

१. आयारदशा (मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' द्वारा सम्पादित) सूत्र ७०, पृष्ठ १२८

यह भान होता है कि 'हाय ! मैंने यह पाप कर डाला' तो सहसा उसके हृदय में पश्चाताप की लहरें उठती हैं और वह हृदय से पुकार उठता है—'मैंने जो भूल की, पाप किया, वह मेरा मिथ्या हो, मैं उसकी निन्दा करता हूं, उसके प्रति घृणा प्रकट करता हूं और भविष्य में पुनः ऐसा कृत्य नहीं करूंगा।' इस पवित्र भावना से, आत्म-ग्लानि और पश्चाताप की भावना से उसके पूर्वकृत पाप की आसक्ति कम होते ही कर्मबन्धन भी ढीला हो जाता है और पूर्वकृत कर्मों की निर्जरा हो जाती है। शास्त्र की भाषा में जिसे हम निर्जरा कहते हैं वह पाप का प्रक्षालन है, पाप-विशुद्धि है। 'मिच्छामि दुक्कड़' में यह पश्चाताप की भावना है, पाप के प्रति निन्दा, गर्हा का भाव है और भविष्य में पुनः पाप न करने का कठोर संकल्प है। 'मिच्छामि दुक्कड़ं' बोलते समय हमारी आत्मा में यह प्रकम्पन होना ही चाहिए, भावना में मृदुता और पश्चाताप की तरंगें तरंगित होनी ही चाहिए। अगर यह भावना जागृत नहीं होती है तो केवल शाब्दिक 'मिच्छामि दुक्कड़ं' से कोई आत्म-शुद्धि होने वाली नहीं है। शाब्दिक 'मिच्छामि दुक्कड़ं' को इसीलिए तो हमारे यहां कुम्हार वाला मिच्छामि दुक्कड़ं कहा गया है। टीका ग्रन्थ में एक उदाहरण आता है।

एक आचार्य अपने शिष्यों के साथ किसी नगर में पधारे। नगर के बाहर उद्यान में आचार्य श्री ठहरे। उनके संघ में एक नवदीक्षित बालक मुनि भी था। वह कुछ चंचल प्रकृति का था। उद्यान के एक ओर कोई कुम्हार अपने घड़े आदि बर्तन बनाकर सुखा रहा था। बालक मुनि, बाल क्रीड़ा करता हुआ उधर आया, निशाना लगाकर एक कंकर उसने कुम्हार के घड़ों पर मारा। घड़े फूट गये। कुम्हार ने देखा तो बाल मुनि की ओर घूर कर देखा, मुनि ने झट से कहा—'मिच्छामि दुक्कड़ं'।

कुम्हार ने बात आई-गई कर दी और अपने काम में लग गया। थोड़ी देर बाद फिर बाल मुनि ने कंकर फेंका और उसके बर्तन काने कर डाले। कुम्हार को फिर गुस्सा आया, घूर कर बोला—क्या बात है मुनिजी ? मुनि ने झट से कह दिया—'मिच्छामि दुक्कड़ं'। यों बार-बार कंकर मार कर बर्तन फोड़ता जाता और कहने पर 'मिच्छामि दुक्कड़ं' बोलता जाता। कुम्हार को गुस्सा आ गया। वह उठा, मुनि का कान पकड़ कर ऐंठा। बालक मुनि चिल्लाने लगा, अरे क्या करता है ? साधु का कान पकड़ता है ? कुम्हार बोला—'मिच्छामि दुक्कड़ं'। साधु बोला—'यह क्या ? मेरा कान खींचता जा रहा है और 'मिच्छामि दुक्कड़ं' कहता जा रहा है ? कुम्हार बोला—जैसा तुम बर्तन फोड़ते गये और मिच्छामि दुक्कड़ं बोलते गये वैसा ही मैंने किया। जैसा तुम्हारा 'मिच्छामि दुक्कड़ं' वैसा ही मेरा 'मिच्छामि दुक्कड़ं'।

तो, इस कुम्हार वाले 'मिच्छामि दुक्कड़'' से कोई लाभ नहीं होगा। सच्चे मन से पाप के प्रति ग्लानि और पश्चाताप होना चाहिए। पर्युषण के पवित्र दिनों में पाप की शुद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील होकर साधक वर्ष भर के प्रमादाचरण के प्रति पश्चाताप करता हुआ 'मिच्छामि दुक्कड़'' लेता है, यही सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का रूप है।

**३. आलोचना :**

प्रतिक्रमण भी यद्यपि आत्मालोचना ही है, किन्तु आलोचना (आलोयणा) को अलग बताने का कारण यह है कि प्रतिक्रमण तो साधक प्रतिदिन भी करता है, और वह आत्म-साक्षी से ही करता है, किन्तु आलोचना खास तौर पर गुरुजनों के समक्ष की जाती है।

स्थानांग सूत्र[1] में प्रायश्चित के चार भेद बताये हैं—(१) प्रतिसेवना प्रायश्चित, (२) संयोजना प्रायश्चित, (३) आरोपणा प्रायश्चित, (४) परिकुंचना प्रायश्चित। नहीं करने योग्य कार्य करना प्रतिसेवना है। इसकी शुद्धि के लिए आलोचना, प्रतिक्रमण आदि किये जाते हैं। एक प्रकार के ही कई दोषों का एक साथ मिल जाना संयोजना है। एक बार एक दोष सेवन किया, उसकी शुद्धि के लिए तप आदि का प्रायश्चित कर लिया। दुबारा उस दोष का सेवन करने पर उससे अधिक तप का प्रायश्चित देकर उस दोष की विशुद्धि करना यों तप रूप में छः मास तक के तप का प्रायश्चित दिया जा सकता है। इसे आरोपणा प्रायश्चित कहते हैं। अपराध को छिपाना परिकुंचना है। उसका प्रायश्चित दुगुना होता है। एक तो दोष-सेवन का और दूसरा कपट का। उस प्रायश्चित को परिकुंचना प्रायश्चित कहते हैं।[2] इसमें जो पहला प्रतिसेवना प्रायश्चित है, उसके दस भेद हैं–उनमें पहला भेद आलोचना है और दूसरा भेद है, प्रतिक्रमण। जो दोष गुरुजनों के समक्ष सरलतापूर्वक स्पष्ट वचनों से प्रकट कर लिया जाता है वह आलोचना है। जो दोष आलोचना करने मात्र से दूर होकर आत्म-विशुद्धि हो जाती है, उसे आलोचना प्रायश्चित कहते हैं। जिन दोषों की शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण का विधान है, मिच्छामि दुक्कड़ं करने से जिनकी विशुद्धि हो जाती है—वह प्रतिक्रमणार्ह प्रायश्चित है।

पर्युषण में आलोचना और प्रतिक्रमण इन दो करणीय कृत्यों का विशेष विधान है, इसलिए हम इन्हीं पर यहां विचार कर रहे हैं। आलोचना का

१. स्थानांग ४।१।सूत्र २६३ तथा दशवै० १।१ हारिभद्रीय टीका।
२. प्रायश्चित के अन्य भेदों के विस्तार के लिए देखें—भगवती सूत्र शतक २५, उ०।९ तथा स्थानांग १०।७५३।

सीधा-सा अर्थ है—सम्यक् प्रकार से निरीक्षण करना। आचार्य अभयदेवसूरि ने भगवती सूत्र की टीका में कहा है—

आ—अभिविधिना सकलदोषाणां
लोचना—गुरुपुरतः प्रकशन-आलोचना[1]

विधिपूर्वक अर्थात् सरल भाव से, विनयपूर्वक गुरुजनों के समक्ष सभी दोषों को प्रकट कर देना—आलोचना है।

आलोचना करने के लिए आत्मा की सरलता और विनम्रता बहुत आवश्यक है और जब आत्मा सरल होगी तभी शुद्धि होगी, **'सोही उज्जुभूयस्स'**— ऋजुभूत सरल आत्मा की ही शुद्धि होती है। अगर मन में कपट रहा, अहंकार रहा तो पहली बात तो वह आलोचना कर ही नहीं पाता, यदि लोक दिखावे के लिए शब्दों से आलोचना करता भी है, सिर्फ मुंह से अपनी भूल का उच्चारण कर देता है, पर उस उच्चारण के साथ यदि उसका हृदय नहीं बोलता है, हृदय में सच्चा पश्चाताप नहीं होता है तो वह कपट आलोचना और भी दुखदायी है। उसमें पाप-सेवन का एक दोष तो हुआ ही दूसरा कपट का और दोष लग गया तो वही बात हुई—

दो मण पाप आगे हुतो सौ मण लायो और।

तो आलोचना करने के लिए मन को सरल एवं विनम्र बनाना बहुत ही आवश्यक है। आलोचना का लाभ ही यही है कि—

आलोयणाए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणन्त संसारवद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च जणयइ।[2]

—आलोचना करने से जीव माया-निदान एवं मिथ्यादर्शन रूप तीन शल्यों (कांटों) को आत्मा से निकाल फेंकता है। ये शल्य मोक्ष मार्ग से विघ्न हैं और अनन्त संसार बढ़ाने के कारण हैं। इसलिए इनको निकालना बहुत आवश्यक है। आलोचना करने वाला सरल आत्मा इनको निकालकर निःशल्य हो जाता है।

स्थानांग सूत्र[3] में कहा है कि जो व्यक्ति अपने दोषों की आलोचना कर लेता है वह मरकर विशाल समृद्धि वाला, लम्बी आयु तथा उच्च जाति का

१. भगवती सूत्र २५।७ की टीका।
२. उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन २९, सूत्र २
३. स्थानांग सूत्र, स्थान ८, सूत्र ५९७

देवता बनता है। उसका दर्शन, उसकी वाणी सबको प्रिय लगती है। इसके विपरीत बिना आलोचना किये मरने वाला दुर्गति में जाता है। अगर देव योनि में भी जाता है तो निम्न जातियों में। वहां कोई उसका सम्मान नहीं करता, जब वह बोलता है तो चार-पांच देवता उसे टोकते हुए कहते हैं—'बस, रहने दीजिए। अधिक मत बोलिए।' मतलब यह कि बिना आलोचना किये मरने वाला परलोक में निम्न गति में जाता है, और सबको अप्रिय लगता है।

तो पर्युषण में आलोचना का उपदेश विशेष रूप से दिया गया है कि जैसे वर्षा ऋतु में मिट्टी नरम और मुलायम हो जाती है, उसमें बीज सरलता से उग आते हैं, उसी प्रकार पर्युषण में आलोचना करने से मन सरल और मृदुल-नम्र हो जाता है। हृदय निःशल्य होकर शान्ति और समाधि का अनुभव करता है। आंख में पड़ा कंकर, पैर में लगा कांटा जितनी तकलीफ देता है उससे भी सौ गुनी हजार गुनी पीड़ा देता है मन का कांटा—मन का शल्य। इसलिए मन को शान्ति और समाधि पाने के लिए पर्युषण में आलोचना करनी अनिवार्य है।

**४. तपश्चरण :**

पर्युषण का चौथा कृत्य है—तपश्चरण। पर्युषण आता है तो छोटे-छोटे बच्चों में भी धार्मिक उल्लास जगमगाने लगता है। अन्य त्यौहारों में जहां खाने-पीने की तैयारियां होती हैं, विविध मिष्ठान्न-पक्वान्न बनाये जाते हैं, वहां पर्युषण आते ही सहज रूप में तप करने का मन होता है। उपवास, एकासना, आयंबिल, बेला, तेला आदि तपस्याओं की होड़-सी लग जाती है। यह इस पर्व की विशेषता ही है कि छोटे-छोटे बालकों और वृद्धों में भी त्याग-वैराग्य की भावना अपने आप जागृत होती है।

शास्त्र में भी बताया है पर्युषण के अवसर पर विशेष प्रकार के तपश्चरण का उद्यम करना चाहिए। कम से कम विगय का त्याग, हरी वनस्पति आदि खाने का त्याग, एकासना, आयंबिल, रात्रि भोजन त्याग यह तो प्रत्येक श्रावक को करना चाहिए। क्योंकि त्याग से आत्मा में संकल्प बल बढ़ता है, तप से कर्मों को नाश करने की शक्ति जागृत होती है, तप की ज्वाला से कर्मों का घास-फूस जलकर भस्म हो जाता है और आत्म-तेज प्रदीप्त होता है।

अगर शक्ति हो तो श्रमण एवं श्रावक को उपवास, बेला, तेला से लेकर अठाई तप का तप भी पर्युषण में करना चाहिए। तप में एक बात का ध्यान रहे कि—

> सो हु तवो कायव्वो जेण मणोऽमंगलं न चिंतेइ।
> जेण न इंदियहाणी जेण य जोगा न हायंति॥
>
> —मरणसमाधि १३४

वही तप करना चाहिये जो करने से मन अमंगल न सोचे अर्थात् भूख-प्यास के कारण परिणामों में आर्तध्यान न आये। इन्द्रियों की हानि न हो और नित्यप्रति की योग-क्रियाओं में विघ्न न आये।

क्योंकि पर्युषण पर्व के दिनों में सिर्फ तप ही नहीं अन्य धर्म-क्रियाएं भी विशेष रूप से होती हैं, अतः तप अपनी शक्ति के अनुसार ही करने का निर्देश है, ताकि उसी के साथ-साथ ध्यान, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, आलोयणा आदि क्रियाएं निर्विघ्न रूप में चलती रहें।

तप की विशेष प्रेरणा देने के लिए ही पर्युषण में अंतगड सूत्र का वाचन किया जाता है ताकि श्रोताओं को उन प्राचीन आदर्श पुरुषों के जीवन से नया आत्मबल और तप-शक्ति प्राप्त हो।

**५. क्षमापना :**

क्षमापना पर्युषण पर्व का सबसे महत्त्वपूर्ण कृत्य है। इसका महत्त्व इतना अधिक है कि पर्युषण एवं संवत्सरी पर्व को ही 'क्षमापर्व' के नाम से पुकारा जाने लगा है। अगर पर्युषण पर क्षमा धर्म की आराधना नहीं की, कषायों की उपशांति नहीं की तो पर्युषण की कोई सार्थकता ही नहीं है। 'क्षमा' का विशेष महत्त्व होने के कारण इसका वर्णन स्वतन्त्र लेख का विषय है।

इस प्रकार संक्षेप में पर्युषण कृत्यों पर हमने विचार किया है। इसके अतिरिक्त इन आठ दिनों में प्रत्येक दिन कोई न कोई विशेष तप की आराधना करनी चाहिए। कभी मौन, कभी ध्यान, कभी स्वाध्याय, कभी विगय-त्याग, कभी उपवास और कभी क्रोध आदि का परिहार कर क्षमा-आराधना।

**आठ विशिष्ट उपदेश :**

आगम के अनुसार यहां मैं आठ बातों का निर्देश करना चाहता हूँ जिनका उपदेश करने को कहा गया है। भगवान् महावीर ने कहा —

से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा, सुस्सूसमाणेसु वा पवेवए—

संतिं, विरतिं, उवसयं, णिव्वाणं,
सोयं, अज्जवियं, मद्दवियं, लाघवियं।[1]

१. आचारांग ६।५

जो धर्म में तत्पर हैं, (उत्थित हैं) उनको, जो तत्पर नहीं है, उनको भी, अर्थात् सर्व साधारण को भी इन आठ बातों का उपदेश करना चाहिए—

१. **शांति**— अहिंसा, अर्थात् प्रत्येक प्राणी शान्ति चाहता है, अतः किसी भी प्राणी को न मारें, दया पालन करें, किसी को कष्ट न दें।

२. **विरक्ति**— भोगों से विरक्ति का उपदेश करें और व्रतों का पालन करें।

३. **उपशम**— क्रोध आदि कषायों को शान्त कर क्षमा एवं निलोभता का अभ्यास बढ़ाएं।

४. **निवृत्ति**— जितनी अधिक हो सके निवृत्ति करें, भोगों से दूर हटें, लालसाओं से मुक्त रहें।

५. **शौच**— मन, वचन एवं काया को पवित्र रखें, राग-द्वेष से मन को कलुषित न होने दें।

६. **आर्जव**— माया, कपट से दूर रहकर सरल आचरण करें।

७. **मार्दव**— मान एवं दुराग्रह को छोड़ कर विनम्र बनें।

८. **लाघव**— परिग्रह का त्याग कर मन को हल्का अर्थात् लघु रखें। आत्मा पर परिग्रह का भार न बढ़ने दें।

'उत्तराध्ययन सूत्र' में भी आठ बातें बताई गई हैं। वे भी जीवन में बड़ी उपयोगी है। पर्युषण के आठ दिनों में प्रत्येक दिन अगर एक-एक गुण का अभ्यास किया जाये तब भी उनसे जीवन में नया प्रकाश, नई चेतना की स्फुरणा हो सकती है। वे आठ गुण हैं—

अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चइ।
अहस्सिरे सया दंते, न य मम्ममुदाहरे॥
नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चइ॥

—उत्तराध्ययन ११।४-५

आठ कारणों (ठाणों) से व्यक्ति को शिक्षाशील कहा जाता है। अहिस्सिर—हास्य न करे। दान्त (इन्द्रियों का दमन करे) हो। दूसरों के मर्म

का प्रकाशन न करे। जो चरित्र से हीन-अशील न हो विशील—जिसका चरित्र दूषित या मलिन न हो। जो रसलोलुप न हो। जो क्रोध न करे तथा सत्य में दृढ़ रहे।

सार रूप में इन्हें इस प्रकार समझ सकते हैं—

१. **शांति**— हँसी-मजाक आदि नहीं करना, इससे वाणी का संयम सधता है।

२. **इन्द्रिय-दमन**— इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों का संयम करने की आदत डालें।

३. **स्वदोष-दृष्टि**— अपने दोषों और अवगुणों पर ध्यान देवें, किसी का मर्म प्रकाश न करें।

४. **सदाचार**— आचार में कहीं दोष न लगने दें।

५. **ब्रह्मचर्य**— अपने शील को शुद्ध रखते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करें।

६. **अलोलुपता**— रस आदि में लोलुप न हों, जिह्वा का संयम करें।

७. **अक्रोध**— क्रोध का वर्जन करें। क्षमा रखें। किसी भी कटु से कटु प्रसंग पर क्रोध न करें।

८. **सत्याग्रह**— सत्य में दृढ़ रहें। कैसा भी प्रसंग आये तब भी सत्य का त्याग न करें।

सम्पूर्ण विवेचन का सार यही है कि इस पर्व को आध्यात्मिक जागरण का पर्व मानकर आठ दिन तक यों बितायें जैसे साधक किसी नये संसार में प्रवेश कर गया है, जहां न क्रोध है, न लोभ है, न माया है, न अहंकार है, न विषय-वासना है। बस, सर्वत्र शांति, समता और त्याग-वैराग्य की शीतलता परिव्याप्त हो। यही पर्युषण पर्व की सार्थकता है। और यही उन दिनों की विशिष्ट अनुभूति है।

□ □ □
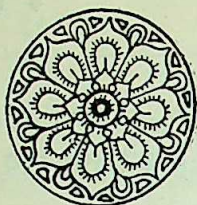
# सुविधा, साता, सुरक्षा, आनन्द और शांति

☐ श्री सूरजचन्द शाह डांगीजी

एक परम सज्जन मित्र ने प्रश्न किया कि मेरे जीवन का ध्येय क्या है और मैं उसमें कितना सफल हुआ हूँ ? मैंने उत्तर दिया कि मनुष्य मात्र के जीवन का ध्येय आनन्द और शांति प्राप्त करना और सर्वत्र उसका हर तरह वर्द्धन करना और उस ध्येय की प्राप्ति में अपने जीवन में परिपूर्ण सफलता का नित्य नया अनुभव करना है। आनन्द और शांति दोनों पृथक्-पृथक् तत्त्वों का फल है। संयम यानी संवर का फल आनन्द और निर्जरा तत्त्व का फल शांति है। निर्जरा, तप का हेतु है और संवर चारित्र्य का हेतु है। सुख की सम्पूर्णता यथाख्यात चारित्र्य में हैं और शांति की परिपूर्णता वेदनीय कर्म के निर्मूल होने पर होती है। यही पूर्ण सिद्धि है। सुविधाओं की सामग्री साता वेदनीय कर्म के उदय से और सुरक्षा मोहनीय के आस्रव निरोध से प्राप्त होती है। जिसे अंग्रेजी भाषा में 'कम्फर्टस्' और 'सेक्यूरीटिज' शब्द से सूचित किया गया है। 'प्लीजिंग' और 'ब्लिसिंग' शब्द से आनन्द और शान्ति का परिचय मिलता है जो आध्यात्मिकता के साथ सम्बद्ध है। स्वतंत्र, स्ववश प्रत्येक परिस्थिति मन:स्थिति के संयत और परीषह जय से मिल सकती है। इसके प्रमाण शास्त्रों से तथा अनुभव से साक्षात् रूप में सच्चे हो सकते हैं। शांति और आनन्द मन के संतोष और जितेन्द्रियता से हो सकता है। वह अपने हाथ में है, पराधीन नहीं। 'कम्फर्टस' और 'सेक्यूरीटिज' पराई वस्तु के हाथ में है। कर्मों का उदय है। परन्तु 'प्लैजर' और 'ब्लिसिंग' अपनी मुट्ठी में है। यही मोक्ष का कारण है। वर्द्धमान भगवान् ने हर हालत में अनन्त सुख और शांत होने पर परम सिद्धि का अनुभव किया और वे अंकिचन अवस्था में भी सुखी और शांत रह सके जबकि असंतोषी और अशांत व्यक्ति साता, सुविधा और बाह्य परिग्रह के मिलने पर भी दु:खी और अशांत रहते हैं। और वे अकिंचन अवस्था में भी पूर्ण सुखी रहे और दुनिया को शांति का मार्ग बताने में अग्रगण्य प्रमाणित हुए। सुख और सुविधाएँ कर्मों के अधीन हैं और शांति तथा आनन्द आत्माधीन हैं।

आनन्द तो अपनी मुट्ठी में है, स्वाधीन है और सुविधाएँ व सुरक्षा अपने हाथ में नहीं। अर्थ और काम कर्मों का फल है पर धर्म और मोक्ष मनुष्य का स्वभाव है, जो शाश्वत है और ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप के हाथ में है।

—बड़े मन्दिर के पास, बड़ा घर, बड़ी सादड़ी–३१२ ४०३

उद्बोधन :
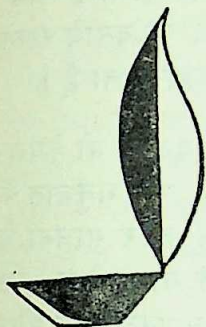
# आत्मा का साधन—धर्म•

□ पं० र० श्री हीरा मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के विद्वान् शिष्य]

संसार के एक मात्र उपकारक, परम हितैषी, शासनपति भगवान् महावीर और उनकी छत्र-छाया में शासन का उद्योत करने वाले उपकारी आचार्य भगवन्तों के चरणों में वंदन करने के बाद।

अभी शास्त्र वाणी के माध्यम से राजकुमार सुबाहु के जीवन की झाँकी आपके सामने रखी गई थी। राजमहल में रहने वाला सुकोमल, तीर्थेश भगवान् महावीर की पातक प्रक्षालिनी वाणी श्रवण कर व्रती बना। साधन जुटाकर आत्म-शक्ति बढ़ाकर व्रती से महाव्रती बना और महाव्रती बनकर सम्पूर्ण पापों का रूंधन कर साधना का अधिकारी हुआ।

**चार प्रकार के पुत्र :**

कौन किस तरह जीवन का निर्माण करता है, अंग शास्त्र की इस वाणी का आधार लेकर 'स्थानांग सूत्र' के माध्यम से भी पुत्र के संबंध को लेकर चार प्रकार के पुत्रों की बात आपके समक्ष रखी जा रही है—

"चत्तारी सुया पन्नता तंत्रहा-अइजाए, अनुजाए, अवजाए, कुलिंगारे।"

चार प्रकार के पुत्र तीर्थंकर भगवान् महावीर के 'स्थानाँग सूत्र' के चौथे ठाणे में वर्णित किए। एक पुत्र के संबंध को लेकर जो अतिजात के नाम से कहलाता है उसकी चर्चा आपके सामने कल के प्रकरण में की गई।

---

• जलगाँव में २८-९-८२ को दिया गया प्रवचन। श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

**अनुजात पुत्र :**

आज हम उस पुत्र का वर्णन करें जो अनुजात है। 'अनु' का अर्थ है पीछे चलने वाला। 'अनु' का अर्थ है पिता के अनुकूल आचरण करने वाला। 'अनु' का अर्थ है पिता का गौरव, पिता की सेवा, पिता की प्रतिष्ठा को बनाये रखने वाला, ऐसा जो जन्मजात पुत्र है, उसको अनुजात के नाम से कहा जाता है।

चक्रवर्ती भरत केवलज्ञानी हुए तो उनके पुत्र आदित्य यश ने भी केवलज्ञान पाया। इसी तरह एक नहीं, दो नहीं, आठ-आठ पीढ़ियों तक अनुजात के रूप में पुत्र अनुकरण करते रहे, साधना स्वीकार करते रहे और साधना के माध्यम से एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, तीसरे के बाद चौथा, इस प्रकार आठ परम्पराओं तक साधना में रत रह कर बंधन काटते हुए मोक्ष प्राप्त किया।

इस तरह भगवान् ऋषभ के शासन का वर्णन करने के साथ प्रभु महावीर के शासन का वर्णन किया जाय तो ऐसे हजारों पुत्र हुए जिन्होंने अपने पिताओं की परम्पराओं को कायम रखा, कुलीनता कायम रखी और वे पिता के नाम से कदाचित सुयश ज्यादा से ज्यादा बढ़ा नहीं पाये तो कम से कम उनके गौरव और गरिमा को कायम रखा। इस बारे में कम से कम लोग यह कहने लगे कि बाप से बेटा कदाचित सवाया नहीं है लेकिन उसके आचरण से हमारे गांव में या नगर में और समाज में किसी तरह की कमी नहीं रही। बेटा कैसा है? बाप के अनुकूल प्रतिष्ठा और गौरव को रखने वाला है। भले ही पिता चले गये, कोई बात नहीं, यह पुत्र सुपुत्र है, पिता से कुछ कम नहीं है। ऐसा जिसके बारे में कहा जाता है, वह पुत्र शास्त्रीय भाषा में 'अनुजात' कहलाता है।

**नमि की कथा :**

ऐसे ही एक पुत्र का वर्णन हम आपके समक्ष महासती मदनरेखा के चरित्र के माध्यम से कर रहे हैं।

पुत्र का नाम है महाराज नमि। सती मदनरेखा ने पुत्र को जंगल में छोड़ दिया। उसके जाने के पश्चात् भी जो भाग्य और पुण्य को लेकर आया है, उसके लिये जंगल में भी मंगल है। इसी कहावत के अनुसार मिथिला नरेश पद्मरथ का घोड़ा उनको लेकर शीघ्र गति से इस तरह भागा, जैसे आँधी तूफान में छोटे-छोटे रजकण उड़ते जाते हैं। इस पुण्यशाली, पुण्य करणी वाले घोड़े ने महाराज पद्मरथ को वहाँ लेजाकर छोड़ा जहां पेड़ के नीचे साड़ी के झूले में बच्चा लटक रहा है। घोड़ा वहीं आकर रुका। बच्चे के कारण प्रेरणा पाकर महाराज पद्मरथ उसे अपने नगर में ले गये। कल जिसका बाप राजा था, उसके भाग्य ने

पल्टा खाया तो उसकी माँ उसे अकेला छोड़ कर जंगल में निकल गई । लेकिन वे दिन भी रहे नहीं । जैसे दिन के बाद रात आती है, रात चाहे कितनी ही गहरी हो, काली हो, लेकिन रात आखिर रात है और उसकी भी सीमा है । रात पूरी हुई । उसके बाद जैसे अंधकार के बाद सूर्य का उदय होता है, उसी तरह उस बालक के भाग्य का उदय हुआ । राजघराने से निकल कर जंगल में पैदा हुआ लेकिन वापिस राज्य कुल में पहुँच गया । पहुँच ही नहीं गया, लेकिन पूर्व जन्मों की करणी से ऐसा पुण्य किया था कि जो राजा लोग पद्मरथ से द्वेष करते थे, नमन नहीं करते थे वे राजा लोग भी चरणों में झुकने लग गये । नहीं नमने वाले नम गये, इसलिये बालक का नाम नमि रखा गया ।

स्त्रियों के लिए ६४ और पुरुषों के लिए ७२ कलाओं की शिक्षा देने का प्रावधान है । लेकिन ये कलाएँ तो पुण्यशालियों के लिए निमित्त मात्र होती हैं । नमि ने भी इन कलाओं का अध्ययन किया, बड़ा हुआ ।

यह वह जमाना था जब राज्य का मालिक, सिंहासन-सुख भोगने वाला भी यह समझा करता था कि यह राज्य काँटों का ताज है । इस राज्य में आनंद नहीं है । इस कहावत के अनुसार "राजेश्वरी नरकेश्वरी" समझी जाती थी । इसलिए राजा लोग अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में, कीचड़ में जन्मे, पानी से बढ़े और पानी से ऊपर रहने वाले कमल की तरह भोग में जन्मे, राज्य में बढ़े और त्याग में अपने जीवन को अर्पण करना चाहते थे ।

महाराज पद्मरथ ने जब देखा कि मेरी संतान युवा होने के साथ ही योग्य हो गई है । इसलिए अब मुझे चाहिए कि मैं जिस खजाने को लेकर आया था, जिस पुण्य की सम्पत्ति को लेकर आया था, उस खजाने को बढ़ाने के लिए भी प्रयत्न करना चाहिये । इस कहावत के अनुसार कि पुण्य दृता पुण्य होता है, 'दीपक दीपक-ज्योत' जलता हुआ दीपक दूसरे को जलाता है । इसी तरह पहले का पुण्य संचित हो तब आगे का बढ़ाया जाता है । यदि पुण्य रहते पुण्य नहीं किया गया तो बुझने के बाद कुछ होने का नहीं । यह बात कौन सोच रहा है ? राजेश्वर पद्मरथ त्याग की बात सोच रहे हैं ।

राजा राज्य छोड़ने की बात सोचता है और आज के सेठ लोग सम्पत्ति बढ़ाने की बात सोचते हैं । राज-सुख वाले छोड़ना चाहते हैं और सेठ-सुख वाले जोड़ना चाहते हैं । अब अवस्था जोड़ने की नहीं है क्योंकि अवस्था पक रही है । एक-एक बाल अल्टीमेटम देता है कि भाई यम का दूत मैं आ गया हूं, अब सब कुछ छोड़ दें ।

**जिसका जन्म है, उसका मरण भी :**

मुझे एक कथानक याद आता है। हालांकि काल्पनिक कथा है लेकिन है शिक्षाप्रद। बी.ए., एल-एल.बी. करके वकालत करने वाले एक वकील साहब दौड़ते-कूदते हुए आनन्द से चल रहे थे। स्वांस बन्द हुई और दुनिया से रवाना हो गये और पहुंचे यम लोक में। पौराणिक आख्यान के अनुसार जो आदमी जैसी करणी करता है, उसका लेखा-जोखा यमराज के यहाँ रखा जाता है। मरने के बाद प्राणी पहले सीधे यमलोक में पहुँचता है और वहाँ से उसकी करणी के अनुसार जहाँ भेजना होता है, वहाँ भेज दिया जाता है।

वे मर कर यमलोक में पहुँचने वाले वकील साहब एडवोकेट थे और उन्होंने उम्र भर अदालतों में बहस की थी। वे यमराज के सामने पहुँच कर कहने लगे कि सर, हमारे मृत्युलोक के कोर्टों में बिना अर्जी सुने, बिना सूचना दिये, कोई फैसला नहीं हुआ करता। आपने मुझे बिना सूचना दिये कैसे बुला लिया ? यमराज बोले कि भाई तुम्हारा फैसला कागज पर होता है और हमारा फैसला शरीर पर होता है। वकील साहब बोले कि यह कैसे हो रहा है ? यमराज ने कहा कि हमारे यहाँ भी कानून है, उसी के अनुसार फैसला होता है। सबसे पहले हम दूत को भेजते हैं। सफेद बालों की कोई परवाह नहीं करता है तो उसको और मौका देते हैं। सफेद दाँत जड़ से निकाल देते हैं। बाल सारे सफेद हो गये, सफेद दाँत टूट गये, आँखों की पलकें झपकने लगीं, शरीर का बल क्षीण हो गया, लकड़ी का सहारा लेकर चलने लगा। इतनी याचिकाएँ भेजी गईं, इसके बाद भी यदि तुम्हें पता नहीं चला तो यह दोष मेरा है या तुम्हारा है ? जब एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन याचिकाएँ दी जाती हैं उस पर भी यदि मुलजिम उपस्थित नहीं होता है तो इक तरफा फैसला किया जाता है। तब उससे पूछा नहीं जाता है, सलाह नहीं ली जाती है। तीन-तीन पेशियों पर हाजिर नहीं हुआ, इसलिये लगता है कि यह व्यक्ति दोषी है। इसलिए इसको सजा दी जाय। वकील साहब चले तो थे बहस करने के लिए लेकिन यमराज की बात सुन कर ठंडे पड़ गये।

लेकिन हमारे भक्त लोग सोचते हैं कि मरने वाले मर गये, लेकिन हम मरने वाले नहीं हैं। आखिर में तो वे जाते ही। पाप का घड़ा कब तक भरा रहता आखिर तो फूटता ही है। वे चले गये लेकिन हम जाने वाले नहीं हैं। उनसे कहा जाय कि देखो, इन्कम टैक्स का मामला है, सम्भल कर चलो, कभी फंस जाओगे तब नानी याद आ जायगी। ऐसी शिक्षा देने वाले सोचते हैं कि हम तो दूध के धुले हुए हैं। हमारे जीवन में खराब काम नहीं है, कहीं भी कालिमा और कलंक नहीं है। इसलिए वह दूसरों को समझाने के लिए जाता है। लेकिन शास्त्र कह रहा है कि मानव जीवन के रहते ही अगले जीवन का रूप बनाया

जाता है। निर्माण और कल्याण किया जाता है। इसी तरह यह भी समझें कि जन्म के साथ जीवन है। जन्म में दो अक्षर हैं। पहला अक्षर है 'ज' उसका मतलब है जीवन और दूसरा अक्षर है 'म' उसका मतलब है मरण। ये अक्षर सूचना देकर कह रहे हैं कि जिसका जन्म है उसका मरण भी है। इसलिये साथ में लगे हुए सम्बन्ध को सोच कर चल।

एक हाथ पकड़ कर जिसको लाता है उसका चिन्तन करके चल रहा है तो जो जीवन के साथ जुड़ा है उसका चिन्तन क्यों नहीं करता, उसके बारे में गफलत में क्यों पड़ा हुआ है? जो जन्म के साथ मरण लगा हुआ है, उसका चिन्तन नहीं करके यह सोचता है कि मेरी पत्नी का क्या होगा, घर का क्या होगा, पुत्र का क्या होगा, संपत्ति का क्या होगा, घर-बार का क्या होगा, इसकी चिन्ता है लेकिन मेरा क्या होगा, इसकी चिन्ता नहीं है। इसी तरह पाप करता गया तो भाई यह तो सोच कि तेरा क्या होगा? सेठ क्यों सोचे? उनका ध्यान तो धन की तरफ है।

लेकिन लगता है कि पद्मरथ को यहाँ किसी चीज की कमी महसूस हो रही है। वह सोचता है कि आज यदि पुण्य संचय नहीं किया जायगा तो आगे मिलने वाला नहीं है।

**उल्टी बात :**

पांच-पांच सौ रानियों का राजा कहलाने वाले ने एक की संगत की और एक व्याख्यान श्रवण किया, उससे उसके जीवन में परिवर्तन आ गया। ५०० की संगत उसके लिये वेदना बन गई। यहाँ एक की संगत करने वाले ने ५०० बार वाणी श्रवण करली, फिर भी उस पर कोई असर नहीं हो रहा है। यह उल्टी बात है। यह पकड़ कैसी मजबूत है, यह गांठ है या गुल गांठ है जो प्रयत्न करने के पश्चात् भी खुल नहीं रही है।

**आत्मा का साधन धर्म :**

लेकिन राजा पद्मरथ ने गाँठ खोल दी। ऐसी खोली कि दीक्षित हो गये। वह राजा नमि को कह कर जा रहे हैं कि बेटा, जीवन का साधन धन है लेकिन आत्मा का साधन धर्म है। ऐसा नहीं हो कि तू राज-पाट व ऐश्वर्य में उलझ जाय और अपनी आत्मा को भूल जाय। मैं अपने पिता श्री के पथ पर चल रहा हूं। उन्होंने वैराग्य लिया था और अपना आत्म कल्याण किया था। उसी तरह मैं भी उनका अनुजात पुत्र हूँ। उन्होंने अपना राज्य छोड़ कर दीक्षा ली थी। उसी तरह मैं भी तुझे राज्य देकर दीक्षा ले रहा हूं। मेरी बात याद रखना, समय पर तेरा पुत्र तैयार हो जाय तो उसको राज्य देकर तू भी दीक्षा लेना।

आप पुत्र को क्या सीख देंगे ? तू मुझे कंधा देकर पहुँचाना, लकड़ी दीजे, चिता में आग लगाइजे, यही कहेंगे या कुछ और कहेंगे ?

पुत्र को इस तरह शिक्षा देकर पद्मरथ घरबार, राजपाट छोड़ कर निकल गये और नमिराज मिथिला का राजा बन गया।

एक बार बहुत छोटे से कारण को लेकर नमिराज का हाथी बिगड़ा तो ऐसा बिगड़ा कि किसी से सम्भाला नहीं गया। भाई-भाई के पास नहीं गया लेकिन हाथी भाई के पास गया और सुदर्शनपुर पहुंचा और वहाँ पर जैसे चन्द्रयश का पालतू कुत्ता हो, उस तरह से उसको सूंड पर बैठा कर राजमहल की तरफ चला गया।

खबर पहुँची नमिराज के पास कि मेरे अधिकार में रहने वाला हाथी बिगड़ कर दूसरे राज्य में चन्द्रयश के पास पहुंच गया है। दूत भेजा गया चन्द्रयश के पास यह कहलाने के लिये कि वह हाथी हमारा था, किसी कारण से बिगड़ गया और भाग कर आपके पास पहुंच गया। आपको पराई सम्पत्ति नहीं रखनी चाहिये, इसलिये हमारा हाथी हमें सौंप दीजिये। चन्द्रयश के पास संदेश पहुँचाया गया तो उसने कहलवाया कि जो अपने एक जानवर को सम्भाल कर नहीं रख सकता, वह राज्य को क्या सम्भालेगा ? "वीर भोग्या वसुन्धरा"। जिसके पास शक्ति है उसी की जमीन है। मेरे पास शक्ति थी और है इसलिए मैंने हाथी को अपने पास रोक लिया। तुम्हारी ताक़त हो तो तुम उसे छुड़ा लो। राजा शरणागत प्रतिपालक होता है।

सेठ ग्राहक प्रतिपालक होता है। कोई ग्राहक उसकी हाट पर चढ़ जाय तो उसकी अंटी खाली कराये बिना नहीं जाने देगा।

इसी तरह चन्द्रयश ने कहा कि राजा शरणागत प्रतिपालक है। मेरे पास आया है इसलिए मैंने रोक लिया, तुम में ताकत हो तो उसको ले लो।

नमि के पास समाचार पहुँचा, राजा था, खून खौल गया। युद्ध की तैयारियाँ होने लगीं। एक हाथी के पीछे युद्ध होने जा रहा था।

जब आदमी अपने ममत्व में और अपनी आग्रह वृत्ति में आ जाता है तब उसे अनर्थ भी दिखाई नहीं देता। मान रहा है, जान रहा है, जान रहा है तब भी लकीर का फकीर होता है, छोड़ता नहीं।

**दया धर्म का मूल :**

अनेक धर्मों में एक धर्म है जिसे इस्लाम धर्म के नाम से कहा जाता है।

शास्त्रकारों ने धर्म का अर्थ किया है जो दुर्गति से गिरने वाले प्राणी को धारण कर लेता है। वह धर्म 'दुर्गतो प्रयतनां प्राणिनं धारयतीति धर्मः'।

लेकिन आचरण की जो क्रियाएँ दुर्गति में ढालने वाली हैं, उनको भी कभी लोग आग्रह नीति से धर्म कह देते हैं। आज एक तिथि है, उसे किस नाम से कहा जाता है, मैं नहीं कह सकता। वह इदुलफितर है या बकरीद है। आप उसे अपने नाम से समझने की कोशिश करें। आज का दिन राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होने के कारण सरकारी ऑफिसेज में छुट्टी होगी। किस बात के लिये ? बकरों की गर्दन पर छुरी चलाने के लिये ? क्या है इसका रूप ? कौनसा ऐसा धर्म है, कौनका ऐसा प्राणी है, कौनसा ऐसा जन है जो यह नहीं चाहता कि मैं जिंदा रहूँ ? दुःखी से दुःखो, हीन से हीन, गिरा हुआ से गिरा हुआ, देवता नहीं, मानव ही नहीं, पशु ही नहीं लेकिन विष्टा में जन्म लेने वाला कीड़ा भी जीना चाहता है। जीना हर प्राणी का स्वभाव है। भले ही रहने का स्थान कैसा ही हो, खाने-पीने को वस्तुएँ कैसी ही हों, सब होते हुए भो वह चाहता है कि जीवे। विष्टा में जन्मा हुआ कीड़ा भी जिन्दा रहना चाहता है तो तिर्यंच जाति में जन्म लेने वाला, चाहे गाय हो चाहे बकरा हो या और कोई हो, क्या वह मरना चाहता है ? नहीं। तो यह कैसा धर्म, कैसा रूप ? हमने इसे किस तरह के रूप में ढाल दिया। किसी भी धर्म ग्रन्थ को उठा कर देख लीजिये, कुरान की आयतों को उठा कर देख लीजिये, उनका यह सिद्धान्त नहीं है, उनके धर्म ग्रन्थ में यह बात नहीं है।

'अहिंसा परमोधर्म' का सिद्धान्त मानने वाले जैनों की ही बात नहीं है, 'दया धर्म का मूल है' कहने वाले हिन्दुओं की ही बात नहीं है, कुरान की आयतों में कहे गये ये शब्द हैं कि चाहे कुरान को जला दें, चाहे मस्जिद की ईंट-ईंट उखाड़ दें, मक्का जाने के बजाय चाहे गन्दगी के स्थान पर चला जाय, लेकिन एक काम नहीं करें, किसी की हिंसा नहीं करें। क्या धर्मग्रन्थ जलाना धर्म है, क्या इबादत के स्थान मस्जिद की ईंट निकालना धर्म है ? यह धर्म नहीं है। लेकिन इससे भी भयंकर है किसी भी जीव को दुःख दिया जाय।

कहा जाता है झूठ मत बोलो। कहा जाता है कि अब्रह्मचर्य शक्ति को घटाने वाला है, जीवन नाश करने वाला है, इसलिए इसका सेवन मत करो, एक बून्द भी गिरने मत दो। कहते हैं, भाई तू कदाचित सच नहीं बोल सके तो झूठ भी नहीं बोलना चाहिये। चोरी नहीं करनी चाहिये। कम से कम एक काम मत कर, किसी भी जीव को मार मत। तात्पर्य यह है कि ये सब काम बुरे हैं लेकिन इससे भी बुरा है जीवहिंसा। इसलिये हिंसा सबसे बड़ा पाप है और दया सबसे बड़ा धर्म है। अभयदान सबसे बड़ा धर्म है। दान में सबसे श्रेष्ठ

अभयदान है। यदि अभयदान ही नहीं होगा तो जीवन का रक्षण नहीं होगा। प्राणी यदि जिन्दा ही नहीं रहे तो सत्य कौन बोलेगा, शील कौन पालेगा, दान कौन देगा, वात्सल्य कौन करेगा ? जो जिन्दा है वही तो धर्म करेगा। जो जिन्दा नहीं है, वह क्या करेगा ? इसलिये सबसे बड़ा पाप जीव-हिंसा कहा है और सबसे बड़ा धर्म है किसी भी सत्त्व, भूत, प्राण और जीव को नहीं मारना। यह धर्म शाश्वत है, नित्य है। यह धर्म चाहे देव हो, दानव हो, मानव हो सबके लिये है। पर ताज्जुब है कि आदमी भ्रमित हो जाता है और समझ लेता है कि बकरे को मारना धर्म है। धर्म क्या है ? क्या मारना धर्म है ? किस ग्रंथ में है, किस शास्त्र में है, किस दर्शन में है, किस मत में है, किस पोथी में है, किस पंथ में है ? जब किसी में नहीं है तब यह कैसे हुआ ? मैं इन बातों में नहीं जाऊं, मूल बात लेकर चलूँ। आदमी जब स्वार्थ और ममता के वशीभूत होकर चलता है, तब अच्छाई देखने के बजाय अत्याचार करने लगता है।

महाराज नमि भी जब स्वार्थ में आये तब युद्ध करने को तत्पर हो गये। यह बात जब महासती मदनरेखा को मालूम हुई कि एक ही उदर से जाये, एक ही उदर से जन्मे दो भाई नर-संहार करने को तैयार हैं। युद्ध क्षेत्र में लड्डू नहीं बँटते। वहाँ तोप, तलवार और बन्दूक से मुकाबला होता है। लेकिन साहस वाले कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपनी जान को जोखम में डाल कर दूसरों का भला करते हैं। सती मदनरेखा पहुँची अपनी महासतीजी के पास और निवेदन किया कि भयंकर युद्ध यदि मेरे वचनों से शान्त हो सकता है और यदि आपकी आज्ञा हो तो प्रयत्न करूँ। आज्ञा पाकर युद्ध के मैदान में पहुँची और नमि को समझाया, चन्द्रयश को समझाया कि तुम दोनों कौन हो ? दोनों मेरे ही उदर से जाये सगे भाई हो। दोनों को समझा कर लाखों का संहार रोक दिया।

**दो चीजें भटकाने वाली, दो चीजें जीतने वाली :**

शास्त्रों में कहा गया है कि मानव को जीतने वाली दो चीजें हैं और आदमी को भटकाने वाली भी दो चीजें हैं। कनक और कान्ता भटकाने वाली हैं और संसार में ज्ञान और क्रिया रास्ता दिखाने वाली हैं। लेकिन आज भटकाने वाली से प्रेम किया जा रहा है और जो रास्ता बताने वाली है उसको दूर पटका जा रहा है। चिन्तन नहीं किया जा रहा है। चन्द्रयश के सामने जब यह तथ्य आया कि नमि मेरा भाई है, सामने मेरी माँ है। यह खयाल आते ही उसको वैराग्य हो गया। दीक्षित हुआ और कल्याण कर गया। समय पर नमि को भी चूड़ी को लेकर वैराग्य हो गया।

चूड़ी ज्ञान देने वाली है या महाराज ज्ञान देने वाले हैं। चूड़ी ज्ञान देने वाली है तो चूड़ी के पास जाना चाहिये। जड़ भी ज्ञान देता है और चैतन्य भी

ज्ञान देता है। कभी चैतन्य का ज्ञान नहीं लगता है तो जड़ का लग जाता है। यदि लेने वाले का उपादान पक गया है तो चूड़ी देख कर भी ज्ञान मिल जाता है और यदि उसका उपादान नहीं पका है तो केवलज्ञानियों के समोसरण में जाने पर भी ज्ञान नहीं होता।

नमि को ज्ञान जगा, चन्द्रयश को जगा, सती को जगा। जाति स्मरण ज्ञान से मालूम हुआ कि नमि को कौन रोकने का प्रयत्न करेगा, कौन मनुहार करेगा? रोकने वाला इन्द्र उपस्थित हुआ, परीक्षण हुआ लेकिन अन्तर में सच्चा ज्ञान जग जाता है तो वह लाखों प्रयत्नों से भी रुकता नहीं। जिसके भीतर में सच्ची लगन नहीं है उस व्यक्ति को कुछ भी कहें। बाहर जाते समय धोती का पल्ला दरवाजे से अटक जाता है तो कहने लगता है कि पल्ला अटक गया, शकुन खराब हो गया इसलिए बाहर नहीं जाऊंगा, यह कहता है कि घर से बाहर मत जाओ। बापजी मन तो है धर्म ध्यान करण रो लेकिन रात्रि में स्वप्न बहुत खराब आयो जिणसूं मन बदल गयो। मन में उपादान में कचावट होती है तब रुक जाता है। मन दृढ़ होता है तो राजपाट छोड़कर भी निकल जाता है। मदनरेखा, चन्द्रयश, नमि निकल गये तो आत्म-कल्याण कर गये। मदनरेखा ने एक बार समझाया और चन्द्रयश को वैराग्य आ गया। लेकिन मैं ३ महीनों से समझा रहा हूं। ९० दिन हो गये। ९० दिनों में ९ तो तैयार हुए होंगे? कितने तैयार हो गये, अपने-अपने मन में सोच कर चिन्तन करना। धर्म अहिंसामय है। अभय देने में धर्म है, दूसरों को डराना, धमकाना, मारना धर्म नहीं है। □

## हमारी औषधि समकित जल

□ श्री राजमल पवैया

हमारी औषधि समकित जल।
यह भव रोग मिटावनहारी, अनुपम सहज सरल ॥ हमारी...............

भव अनन्त धर-धर दुःख पायो, पी-पी मोह गरल।
भाव मरण प्रति समय हो रह्यो, बन्यो दीन दुर्बल ॥ हमारी...............

एक बेर जो भी पी लेवे, हो जावे उज्ज्वल।
परम शुद्ध ज्ञायक स्वभाव से, पावे रूप विमल ॥ हमारी...............

निज अनुभव रसपान करे, नित निजानन्द निर्मल।
सकल ज्ञेय ज्ञाता बन जावे, अजर अमर अविकल ॥ हमारी...............

—४४, इब्राहीमपुरा, भोपाल

छह किस्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला
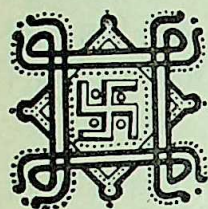
# भारतीय शाकाहार [४]

□ डॉ० ताराचन्द गंगवाल

६. **आइरन (लौह) (Iron)** : यह रक्त का आवश्यक अंग है। हीमोग्लोबिन (hemoglobin) और एन्जायमों (enzymes) का भी अगर अत्यधिक मात्रा में लोहा खाया जावे तो नहीं पचता। विटामिन 'सी' इसके अंगीकरण के लिये लाभदायक है। कैल्सियम और ऑग्जलिक एसिड (oxalic acid) का प्रभाव इसके विपरीत पड़ता है। आइरन दूध में कम होता है; परन्तु अन्न, दाल, हरे पत्ते, गुड़ इत्यादि में प्रचुर मात्रा में होता है।

७. **कॉपर (तांबा) (Copper)** : यह भी रक्त बनने और लौह को पचाने में काम आता है।

८. **आयोडीन (Iodine)** : यह थाइरायड (Thyroid) ग्रंथी के कार्य से संबंधित है जो शरीर में कई आवश्यक कार्य करती है—जैसे चयापचय (metabolism), विकास (growth) इत्यादि। यह समुद्री घास व मछली में अधिक होता है।

हमारे देश के कुछ प्रान्तों में इसकी कमी पाई जाती है (यद्यपि शरीर के कार्य के लिये तो न्यूनतम मात्रा की ही आवश्यकता होती है) इसकी कमी से कई वयस्क लोगों की गर्दन फूल जाती है और बच्चे तो बौने, गूँगे व बहरे हो जाते हैं। इन प्रांतों में निवासियों को नमक में इसका सूक्ष्म अंश मिला कर देना आवश्यक है, ताकि इस रसायन की कमी न रहे और यह रोग न होने पावे।

९. **जिन्क (जस्ता) (Zinc)** : यह एन्जाइम व पेन्क्रियाज (pencreas) की ग्रंथी से संबंधित है।

१०. **मैंगनीज (Manganes)** : इसकी भी कुछ एन्जाइमों के कार्य के लिए आवश्यकता पड़ती है।

११. **कोबाल्ट (Cobalt)** : यह विटामिन 'बी-१२' से सम्बन्धित है (३ प्रतिशत होता है)।

१२. **फ्लोरिन (Fluorine)** : यह दाँत के एनेमल (enamel) में होता है। अगर यह रसायन अधिक मात्रा में हो तो हड्डी का एक रोग हो जाता है जिससे हड्डियां अधिक भारी हो जाती हैं। इस रोग को (flurosis) कहते हैं।

## विटामिन

| नाम | स्रोत | क्रिया | अभाव | दैनिक आवश्यकता |
|---|---|---|---|---|
| | | **वसा में घुलनशील** | | |
| विटामिन 'ए' (A) (रैटीनोल) | जीवधारियों से प्राप्त वसा (घी, मक्खन) (हरा चारा खाने वाले पशुओं में अधिक मात्रा में), हरी पत्ती अथवा पीली तरकारियों में इसका पूर्व रूप, गाजर, पका आम, टमाटर, कद्दू, नारंगी, पपीता | बाह्य त्वचा व झिल्ली का स्वास्थ्य, आँख के रैटीना का कार्य, कीटाणुओं के अवरोध की शक्ति, (आवश्यकता से अधिक मात्रा में शरीर में संचित होने से विषैली) | रतौंधी, आंखों के नेत्र-पटल (cornia) इत्यादि की खुश्की (xerophthalmia) | ७५० μg (३००० कैरोटिन यूनिट) (१ μg= १/१००० मिलीग्राम) |
| विटामिन 'डी' (D) | दूध, अल्ट्रावायलैट विकिरण, सूर्य की रोशनी | हड्डी का निर्माण, कैल्शियम व फॉस्फोरस का अवशोषण | रिकेट (Ricket) (बच्चों की हड्डी मुलायम होने की बीमारी), टिटैनी (Tetany) (अंग फड़कने व बांयटे की एक बीमारी), आस्टियोमलैशिया (Osteomalacia) (बड़ी उम्र में हड्डी मुलायम होने की बीमारी) | २००IU (५ μg) |
| विटामिन 'ई' (E) | वनस्पति तेल, गेहूं का जीवाणु (embryo), पत्ती का साग, दालें | सन्तान उत्पत्ति, अन्तरकोषिका ऑक्सीजनिककरण निरोधक (Intracellula antioxident) | रुधिर की लाल कोशिका (R.B.C.) का विघटन, बांझपन, उत्तकों (tissues) की कमजोरी | अनिश्चित |
| विटामिन 'के' (K) | पत्ती का साग, वनस्पति तेल, आंतों के जीवाणु द्वारा निर्माण | प्रोथ्राम्बिन (Prothrombin) का निर्माण, रक्त जमना (coagulation) पित्त का अवशोषण | शिशुओं में रक्तस्राव (Haemorrhage) | अनिश्चित |

| नाम | स्रोत | क्रिया | अभाव | दैनिक आवश्यकता |
|---|---|---|---|---|
| | | **जल में घुलनशील** | | |
| थायमीन (बी-१) (B-१) | खमीर, साबुत अन्न (मिल में उपचार से नष्ट), दालें, आलू, यकृत (लिवर), नट–गिरि (nuts), आंतों के जीवाणु द्वारा निर्माण (क्षारीय माध्यम में खाना पकाने से नष्ट) | कार्बोहाइड्रेट चयापचय (metabolism), ज्ञान-तन्तुओं (nerves) का कार्य, दिल की माँस-पेशियों का कार्य, (अधिक मात्रा में बी-कॉम्पलेक्स समुदाय के चयापचय में बाधा) | बैरीबैरी (Beriberi) रोग (बच्चों व वयस्कों में), ज्ञान-तन्तुओं का रोग (Multiple Peripheral Neuritis), दिल व मस्तिष्क के उग्र (acute) रोग के लक्षण, (मैदा व पॉलिश किये हुये चावल में कम), (शराब के सेवन से कमी) | १.२mg. से २mg. |
| रिबोफ्लेवीन (बी-२) (Riboflavine B-२) | दूध, पनीर, अन्न, दालें, हरी पत्ती के साग (रोशनी व उष्णता का कुप्रभाव) | प्रोटीन चयापचय (Protein metabolism), श्लेष्म झिल्ली (mucous membranes) की अखंडता | कीलोसिस (Cheilosis), मुंह के छाले (Angular stomatitis), नेत्रपटल (Cornea) में रक्त संचार (vascularisation), रोशनी से चकाचौंध (Photopobia) थकान, नाक व अण्डकोष का चर्म-रोग (Seborrhic dermatitis) | ०.४ से १.६ mg. |
| नायसीन निकोटिनिक एसिड अथवा अमाइड (Niacin, Nicotinic acid or amide) | सूखा खमीर, दालें, साबुत अन्न, नट्स (Nuts), (दूध में कम मात्रा) विटामिन बी-6 ट्रिप्टोफेन को नायसीन में परिवर्तन करने के लिये आवश्यक (आंतों में जीवाणु द्वारा निर्माण) | ऑक्सीजनिककरण अथवा न्यूनिकरण क्रियायें (oxidation reduction), कार्बोहाइड्रेट और ट्रिप्टोफेन चयापचय, अनेक रासायनिक क्रियायें | पैलाग्रा (Pellagra) रोग (चर्म रोग, जीभ व मुंह के छाले, पतले दस्त, मानसिक विकार, जीभ और तालू समतल, जीभ में वेदना) | १५ से २० mg |
| पाइरीडाक्सीन (बी-६) (Pyridoxine B-६) | सूखा खमीर, दालें, साबुत अन्न, सोयाबीन, मूंगफली, मक्का सब्जियां | कोषिकाओं का कार्य, कई अमीनो-एसिड और वसा के एसिडों का चयापचय, एक प्रकार की रक्त की कमी की बीमारी, कार्बोहाइड्रेट चयापचय से सम्बन्ध, मूत्र के | आँख, नाक, मुँह और कान के पीछे एक प्रकार का चर्म रोग (Seborrhic dermatitis), मुँह व जीभ पर छाले (Cheilosis Glossitis, Stomatitis) | २ से १० mg |

| नाम | स्रोत | क्रिया | अभाव | दैनिक आवश्यकता |
|---|---|---|---|---|
| | | आक्ज़लिक एसिड (Oxalic acid) में लाभकारी, असंतृप्त वसीय अम्ल (unsaturated fatty acids) के कार्य से सम्बन्ध, ट्रिप्टोफेन के नायसीन में परिवर्तन में व मिथियोनीन व टाइरोसिन के अवशोषण में सहायता | (रिबोफ्लेवीन व नायसीन के अभाव के रोगों से भेद करना कठिन है) | |
| पैन्टोथिनिक एसिड, कैल्सियम पैन्टोथिनेट (Pantothenic acid, Calcium Pantothenate) | सूखा खमीर, दालें, मूँगफली, दूध, फल, वनस्पतियों में प्रचुर | वसा, प्रोटीन व कार्बोहाइड्रेट चयापचय से सम्बन्धित | थकान, गिरी पड़ी तबियत, सिरदर्द नींद में गड़बड़ी, जी मिचलाना, पेट व मांस-पेशियों में बांयटे, उल्टी, ज्ञान-तन्तुओं के कार्य में गड़बड़ी (Paraesthesias) व तालमेल में कमी (impaired co-ordination), मांस-पेशी की कमजोरी, अँड्रीनल (Adrenal) ग्रंथी के कार्य में बिगाड़, विरक्ति, खिन्नता | ५ से १० mg |
| फॉलिक एसिड (Folic acid) | ताजा हरी पत्ती की तरकारियाँ, फल, सूखा खमीर, साबुत अन्न, नट्स (Nuts), नारंगी, आंतों के जीवाणु द्वारा निर्माण | रक्त के लाल कोषाणु (R.B.C.) की परिपक्वता में योगदान, न्यूक्लियिक एसिड (D.N.A. & R.N.A.) के निर्माण से सम्बन्ध, विटामिन बी-१२ का सहयोगी | रक्त के सारे कोशिकाओं की कमी, रक्त की कमी (मीगैलोब्लास्टिक प्रकार की) (गर्भावस्था व बचपन में अवशोषण की क्षीणता), रक्त के लाल कोशिका (R.B.C.) की परिपक्वता में बाधा, मैक्रोसिटिक प्रकार की रक्त की कमी (Macrocytic anemia), प्रणांशी जैसी रक्तहीनता | ५ से १५ mg |

| नाम | स्रोत | क्रिया | अभाव | दैनिक आवश्यकता |
|---|---|---|---|---|
| | | | (Pernicious anemia), थ्रांबोसाइट (Thrombopenia) की कमी, सफेद रक्त कोशिकाओं (W.B.C.) की कमी, पुराने कई खंड (lobes) वाले न्यूट्रोफिल, जीभ के छाले, दस्त लगना | |
| विटामिन बी-१२ (B-१२) | दूध व दूध के अन्य पदार्थ, आंतों के जीवाणु द्वारा निर्माण | रक्त के लाल कोषाणु (R.B.C.) की परिपक्वता, डी. एन. ए., न्यूक्लियिक एसिड (Nucleic acid) और न्यूक्लियोप्रोटीन (Nucleoproteins) का निर्माण, आमाशय का आन्तरिक घटक या अंश (intrinsic factor) उपलब्ध न होने पर आंतों से अवशोषण में बाधा, भोजन पकाने से नष्ट नहीं होता, स्नायु उत्तकों के चयापचय से सम्बन्ध | स्प्रू (Sprue) के प्रकार का रोग, प्रणाशी रक्तहीनता (Pernicious anemia) के रोग का आवरण, कुछ मानसिक विकार, मन्ददृष्टिता (Amblyopia) | १ से २ μg |
| विटामिन 'सी' (C) (एस्कोर्बिक एसिड, सोडियम एस्कार्बेट) (Ascorbic acid, Sodium ascorbate) | नीम्बू जाति के (Citrous) फल, टमाटर, आलू, बंदगोभी, हरी मिर्च, अमरूद, आंवला, (सूर्य की किरणों से वृद्धि) दलहन के अंकुरित होने पर उत्पन्न (मनुष्य और बंदरों को छोड़कर सब पशु स्वयं का निर्माण करने में सक्षम हैं) | हड्डी के लिये आवश्यक, कोलेजन (Collagen) का निर्माण, रक्त के लिये आवश्यक, उत्तक श्वसन (Tissue respiration) और घाव भरने के लिए, जुकाम अवरोधक (जुकाम कम होना) | स्कर्वी (Scurvy), रक्तस्राव, दांत ढीले होना, मसूड़े की सूजन, दांत और मसूड़ों से रक्त निकलना (Haemorrhages), रक्त में ऑक्सीजन के सम्मिलित होने में सहायक, एस्पिरीन (Aspirin) प्रतिरोधी (antagonistic) है | ३० से ३५ mg |

## विटामिनों पर विशेष नोट

१. जो मनुष्य अच्छी तरह से संतुलित भोजन करते हैं, उसको ऊपर से विटामिन खाने की आवश्यकता नहीं होती। साधारण तौर पर शरीर को विटामिनों की सूक्ष्म मात्रा की ही आवश्यकता है।

२. 'अधिकस्य अधिकमफलम्' वाली कहावत यहाँ लागू नहीं होती। कुछ विटामिन (विशेषकर वसा में घुलनशील) अधिक मात्रा में विष का-सा बिगाड़ करती हैं।

३. पानी में घुलनशील विटामिनें जो प्रायः निर्दोष समझी जाती रही हैं, बिगाड़ कर सकती हैं। जैसे विटामिन 'बी-1' की अधिक मात्रा से अन्य विटामिनों के अंशों की कमी हो जाती है।

४. साधारणतया मनुष्यों को कुछ विटामिन के अंश अपने स्वयं के शरीर में आँतों में कीटाणु द्वारा निर्माण होने से ही उपलब्ध हो जाया करते हैं। यह लाभकारी कीटाणु, आजकल जो एन्टीबायटिक्स (antibiotics) का अधिक प्रयोग होने लगा है, उससे नष्ट हो जाते हैं और इस प्रकार अपने स्वयं के शरीर में निर्माण का इन विटामिनों का स्रोत नष्ट हो जाता है। ऐसी स्थिति में ऊपर से विटामिन खाना अनिवार्य हो जाता है। इसके लिये सस्ती व लाभदायक विटामिनें ही उचित मात्रा में लेना चाहिए। अत्यधिक मात्रा में लेना उचित नहीं है और अनावश्यक खर्चा भी होता है।

५. दवाई की कम्पनियाँ कम मुनाफा मिलने से सस्ती प्राकृतिक लाभदायक और संतुलित प्रकार की विटामिनें—जैसे खमीर (yeast) आदि के बेचने में रुचि नहीं रखती।

६. यदि प्रचुर मात्रा में हरी पत्ती का साग भोजन में सम्मिलित हो तो विटामिन 'ए' की कमी (जिससे रतौंधी होती है) नहीं रहेगी। इन हरी पत्तियों से अन्य पौष्टिक पदार्थ तो उपलब्ध होते ही हैं।

७. कुछ अंकुरित दलहनें (मूँग, मोठ, चना इत्यादि) भोजन में सम्मिलित करने से विटामिन 'सी' प्राप्त हो जावेगी। इन अंकुरों को मसाले इत्यादि मिलाकर चटनी के रूप में खाने से अधिक सुविधा रहेगी। आँवले में सूखने पर भी विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में रहती है। हरी मिर्च, अमरूद, टमाटर भी विटामिन 'सी' के अच्छे स्रोत हैं।

८. कुछ अंग्रेज विशेषज्ञ भी बेमतलब अधिक मात्रा में विटामिनों के उपयोग के पक्ष में नहीं हैं।

विटामिनों की कमी का हंगामा दवाई बेचने वाली कम्पनियों द्वारा खड़ा किया हुआ है, क्योंकि केवल विटामिन मात्र बेचने से ही (यदि अन्य दवाई का लेखा-जोखा न भी लें तो) इन कम्पनियों को प्रचुर लाभ होता है। यही कारण है कि प्रायः बहुत सी कम्पनियाँ अपने-अपने विटामिनों के फॉर्मूले बनाकर बेच रही हैं।

**जल-चयापचय (Water Metabolism), जल-संतुलन**

शरीर की आवश्यकता के लिए प्राथमिकता में जल का स्थान केवल हवा (ऑक्सीजन) ही के बाद है। कनेडियन विशेषज्ञों के अनुसार प्रति व्यक्ति को प्रति दिन साधारण तापमान व साधारण परिश्रम की अवस्था में २.५ लीटर जल की मात्रा उपयुक्त होगी। अधिक तापमान व शारीरिक श्रम से अधिक जल की आवश्यकता पड़ेगी।

मनुष्य का शरीर ६० प्रतिशत जल का बना हुआ है। कोशिकाओं में २६½ लीटर और रक्त में ३½ लीटर जल होता है।

**जल का खर्चा**

| | | |
|---|---|---|
| पेशाब द्वारा | १,५०० | सी.सीएस. (ccs) |
| पसीने द्वारा | ५०० | " |
| सांस की हवा द्वारा | ४०० | " |
| पाखाने द्वारा | १०० | " |
| | २,५०० | " |

**जल प्राप्ति**

| | | |
|---|---|---|
| भोजन द्वारा | ८५० | " |
| पीने के द्वारा | १,३०० | " |
| चयापचय से प्राप्त (Metabolism) | ३५० | " |
| | २,५०० | " |

शरीर का जल १० प्रतिशत कम होने से मृत्यु हो जाती है।

शरीर में जल का संतुलन स्वयमेव ही होता रहता है।

स्वाभाविक है कि अधिक परिश्रम करने वालों को अधिक जल चाहिए—क्योंकि पसीना अधिक निकलेगा और पसीने के रूप में जल का अधिक व्यय होगा। पसीने के संयन्त्र को सुचारु रूप से कार्य करने के लिए नमक (Sodium Chloride) की आवश्यकता पड़ती है। अधिक पसीना निकलने पर नमक का व्यय भी बढ़ जाता है; जैसे—खान में कार्यरत श्रमिकों के। अतः उनको अधिक मात्रा में नमक का प्रयोग करना आवश्यक है अन्यथा उनको बांयटे (cramps) आने लगते हैं।

**मसाले (Condiments-flavourings) :**

मिर्च-मसाले, आचार इत्यादि—यद्यपि ये वस्तुएँ जीवन के लिए अनिवार्य नहीं हैं; तथापि प्रायः लोग इनका भोजन के साथ प्रयोग करना पसन्द करते हैं, क्योंकि इनसे भोजन अधिक रुचिकर हो जाता है, जो अंततः स्वास्थ्यप्रद ही है।

यह कहा जाता है कि सामिष भोजन करने वालों के मांस, शाकाहार के मुकाबले अधिक पाचन रस प्रवाहित करता है। सम्भवतः यही कारण है कि पूर्व के देशों में काफी समय से पाचन क्रिया के लिए मसालों का प्रयोग होता रहा है, क्योंकि इन देशों में शाकाहार ही विशेष प्रचलित था। पाश्चात्य निवासियों ने भी बाद में मसालों का प्रयोग अंगीकार कर लिया। प्राचीनकाल में पश्चिम में काली मिर्च का भाव तोल में सोने के बराबर हुआ करता था।

**पेय पदार्थ (उत्तेजक) (Beverages) :**

1. उत्तेजक (Stimulants) –चाय, काफी अथवा कैफीनयुक्त पेय पदार्थ (कोला आदि)
2. नशीले (Intoxicants) –नशीले पेय–शराब, भंग इत्यादि
3. साधारण पेय (Soft Drinks) –शर्बत के प्रकार के पेय

(क्रमशः)

१, अस्पताल मार्ग, जयपुर–३०२ ००४

**यादृशं भक्षते अन्नम्, तादृषि जायते मतिः।**
**दीपो भक्षयते ध्वान्तम् कज्जलं च प्रसूयते ॥**

जिस प्रकार का अन्न खाते हैं, वैसी ही बुद्धि होती है;
जैसे—दीपक अंधकार को भक्षण करता है, उससे काजल ही पैदा होता है।

# प्रथम प्रवास
# मुनि सुधाविजय [१]

☐ अनुवादक : **श्री लालचन्द्र जैन**

[**'दीक्षा कुमारी का प्रवास'** नाम से **'जिनवाणी'** में कुछ वर्ष पहले धारावाही रूप में श्री लालचन्द्र जैन द्वारा हिन्दी में अनुवादित गुजराती उपन्यास प्रकाशित किया गया था। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा अब वह पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हो गया है। इसमें 'दशवैकालिक सूत्र' को आधार बनाकर विवेचन किया गया था। **'जिनवाणी'** के इस अंक से हम 'आचारांग सूत्र' को आधार बनाकर लिखा जाने वाला **'दीक्षा कुमारी का प्रवास'** भाग २ का हिन्दी अनुवाद धारावाही रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। —**सम्पादक**]

मध्याह्न का समय था। आकाश में सूर्य अपनी तीक्ष्ण किरणों को प्रसारित कर रहा था। धार्मिक लोग अपनी दोपहर की धार्मिक क्रियाएँ कर रहे थे। उद्योग-धंधों में प्रवृत्त लोग भोजन और विश्राम करने में लगे थे। प्रमादी पुरुष शास्त्रीय नियमों की अवहेलना कर दिन में सोने का प्रयत्न कर रहे थे। रात में देर तक जागने वाले लोग दिन में अपने काम से थक कर नींद लेने की कोशिश कर रहे थे। रात-दिन उद्योग-धंधों में फँसे हुए लोभी लोग आती हुई नींद को प्रयत्नपूर्वक भगाने का प्रयत्न कर रहे थे। अप्रमादी साधु पुरुष काल मर्यादा का ध्यान रखते हुए स्वाध्याय से निवृत्त होकर तत्त्व चिंतन में लगे थे। प्रमादी साधु धर्म-शास्त्रों के नियमों का उल्लंघन कर उपाश्रय की भूमि पर निद्रालीन थे।

इसी समय एक सुन्दर स्त्री नगर के बाहर अशोक वृक्ष के नीचे खड़ी थी। यद्यपि वह उम्र में अधिक थी, फिर भी उसके लावण्य की प्रभा स्पष्ट दिखाई दे

रही थी। मुखाकृति से मालूम हो रहा था कि वह यौवनावस्था से मुक्त हो चुकी है, तथापि यौवनावस्था के पवित्र प्रेम की झलक अभी भी थोड़ी-थोड़ी उसके शरीर पर मौजूद थी। प्रौढ़ावस्था यौवन को हटाने में सक्रिय थी, पर अभी उसे पूर्ण विजय प्राप्त नहीं हुई थी। क्योंकि उसके सुशोभित शरीर पर अब भी यौवन की छाया प्रसारित हो रही थी। उसके मनोहर मुख पर धार्मिक तेज प्रकाशित हो रहा था। इस रमणी ने अपनी उम्र के योग्य सुन्दर आभूषण धारण कर रखे थे, किन्तु वे आभूषण श्रृंगार रस के पोषक न होकर शांत रस के ही पोषक थे।

इस शांतमूर्ति सुन्दरी के ललाट पर चिन्ता की रेखाएं उभर रही थीं। उसने अशोक वृक्ष का सहारा ले रखा था, पर वह स्वयं अभी अ-शोक (शोक रहित) नहीं हुई थी। कुछ क्षण चिन्ता में व्यतीत कर आकाश की ओर देखते हुए उसने कहा, "अरे पंचमकाल! तेरा साम्राज्य अभी उच्चता को प्राप्त हो रहा है। अभी तेरा प्रभाव नष्ट नहीं हुआ है, तेरी शक्ति उग्र होकर जगत् में प्रवृत्त हो रही है। मैंने पहले के प्रवासों में जो कुछ देखा था, उससे भी अधिक शिथिलाचार आज दिखाई दे रहा है। मैं भी युवा से प्रौढ़ हो गई, पर तेरा प्रभाव अब भी कम नहीं हुआ। हे पवित्रमूर्ति चरित्रविभूषित महामुनि सुधाविजय! आप कहाँ हैं? आपकी निर्मल वाणी का प्रकाश कहाँ हो रहा है? हे महानुभाव! आप प्रत्यक्ष होकर अपनी शांतमूर्ति का दर्शन हमें दें। इस पंचमकाल (कलियुग) के प्रभाव से आप कहीं भाग तो नहीं गये? पर यह तो असम्भव है। आपकी चारित्रमय निर्मल शक्ति के समक्ष बेचारा पंचमकाल क्या कर सकता है? महात्मा! आप क्यों अदृश्य हो गये। आप के बिना चारित्र को कौन सम्भालेगा? आपके अभाव से चारित्र निराधार हो जायगा। वर्तमान समय में अधिकांश मुनि चारित्र पर ही प्रहार कर रहे हैं। चारित्र के शुद्ध गण तो अब सिद्धाचल पर्वत की तलहटी में रुदन कर रहे हैं। वे अनाथ, अनाधार और निराश्रित हो गये हैं। उनको आदर देने वाले महात्माओं की संख्या नगण्य रह गई। अनाचार के विशेष बल से साध्वाचार शोकातुर हो गया है। अनाचार रूपी विशाल सिंह चारित्र रूपी मृगों को भगा रहा है। प्रभाविक वीर शासन तटस्थ होकर अफसोस कर रहा है, तथा अपनी दिव्य शक्ति कुंठित न हो, वैसे उपाय ढूंढ़ रहा है। भगवन्! शासन देव!! आप अपनी उग्र शक्ति प्रदर्शित करें और मुनियों में व्याप्त अनाचार को हटाकर सदाचार का राज्याभिषेक करें। अपने अष्टाक्षरी महामन्त्र को गुंजरित करें और 'जैतं जयति शासनम्' की उद्घोषणा करें—

"णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।"

उपर्युक्त उच्चारण के साथ ही उस पवित्र रमणी ने अपने हृदय में पंच-परमेष्ठी का ध्यान किया। क्षण भर ध्यान कर जब वह महादेवी जाग्रत हुई, तब उसके समक्ष एक दिव्य पवित्र मूर्ति प्रकट हुई। उस पवित्र मूर्ति के दर्शन होते ही ध्यानमुक्त महादेवी सानन्द आश्चर्यान्वित हुई। पर अपनी ज्ञान शक्ति से उसने उस दिव्य मूर्ति को पहचान लिया। फिर भी उसका यथार्थ स्वरूप जानने और सुनने की इच्छा से रमणी ने पूछा, "महानुभाव ! आप कौन हैं ? मुझ पर अनुग्रह कर इस स्थान को कैसे अलंकृत किया ?" अपनी दंत पंक्ति की किरणों से दिशाओं को उज्ज्वल करते हुए दिव्य मूर्ति ने कहा, "महादेवी ! मैं आपकी पूर्ण कृपा का पात्र मुनि सुधाविजय हूँ। आपके पवित्र स्वरूप की उपासना करते हुए मृत्यु प्राप्त कर मैं देवलोक में उत्पन्न हुआ। चारित्र दीक्षा के दिव्य प्रभाव से मुझे दिव्य स्थान प्राप्त हुआ। आप इस पंचम काल के प्रभाव से शोकतप्त हो रही थीं, इस बात को अपने अवधि ज्ञान से जानकर, आपके पूर्व उपकार को याद कर, आपको आश्वासन देने के लिए मैं यहाँ उपस्थित हुआ हूं। हे दीक्षा-कुमारी ! आपने अपने पहले के प्रवासों में यौवनावस्था का स्वरूप प्रकट किया था, पर अब आप प्रौढावस्था में प्रकट हुई हैं, इसका क्या कारण है, यह जानने के लिये भी मैं यहाँ आया हूं।

"भद्रे ! इस समय पंचम काल ने इस विश्व पर अपना क्रूर पंजा फैला रखा है। कितने ही चतुर्विध संघ रूपी मृग इसके क्रूर पंजे में फँस गये हैं। ऐसे विषम काल में आपने फिर से प्रवास करने का प्रारम्भ क्यों किया है ? आपका यह प्रवास आपके हृदय में अधिक काँटे चुभायेगा, मुझे ऐसा भय है। वर्तमान समय में चतुर्विध संघ अव्यवस्थित हो गये हैं। श्रेष्ठ पदों पर विराजित कितने ही मुनि आचार की मर्यादा को तोड़ चुके हैं। निराश्रित चारित्र को कोई बिरला ही मुनि आश्रय देता है। दया धर्म को सूचित करने वाले मुनियों के उपकरण अधर्म के उपकरण बन गये हैं। उत्तम कार्य के लिये मुनियों द्वारा रखे हुए डण्डे मारने के काम लिये जा रहे हैं। 'धर्मध्वज' के नाम से पहचाने जाने वाले 'दंभध्वज' के नाम से पहचाने जाते हैं। वायुकायिक जीवों की रक्षा के लिए रखी गई मुखवस्त्रिका अनुचित शब्दों का प्रयोग करने वाले मुनियों के मुख से दूर ही रहती है। प्रासुक और नीरस आहार लेने के योग्य उनके पात्र सरस और विगय युक्त आहार से भरे रहते हैं। भद्रे ! इस समय आपका प्रवास ठीक नहीं है।"

दीक्षा कुमारी ने खिन्न होकर कहा, "हे दिव्य मूर्ति ! आपका कथन ठीक ही है। इस विश्व का अवलोकन करने से मुझे सब ज्ञात हो गया है, फिर भी मेरे हृदय में अभी तक आशा के अंकुर पल्लवित हैं। भगवान् वीर के शासन की विजय देखने की मेरी बहुत इच्छा है। मुझे आशा है कि कोई न कोई वीर पुत्र तो वीर शासन को प्रकाशित करने वाले भी अवश्य मिलेंगे। ज्ञात पुत्र के पवित्र

परिवार का एकान्त उच्छेद तो अभी नहीं ही हुआ होगा। मेरी इसी आशा ने मुझे फिर से प्रवास करने को प्रेरित किया है। इसी आशा से मुझे अपने प्रवास में सफलता मिलने की उम्मीद है, तथापि आप जैसे पवित्र मुनि के प्रथम दर्शन से मुझे अपने प्रवास की पूर्ण सफलता में विश्वास हो गया है। हे दिव्य मूर्ति ! आप मेरे प्रवास में सहायक बनें तो मैं आपकी हृदय से आभारी रहूंगी। महाशय ! यदि आपकी इच्छा हो तो आप भी मेरे साथ यात्रा पर चलें, जिससे कि मैं अपनी शक्ति का पूर्ण विकास करने में समर्थ हो सकूँ।"

दिव्य मूर्ति ने विनयपूर्वक कहा, "महादेवी ! यह दिव्य आत्मा सदा आपकी आज्ञा के अधीन है। फिर भी यदि आप प्रसन्न हों तो मैं एक विनति करना चाहता हूं। मुझे आशा है कि आप मेरी योग्य विनति को अवश्य सुनेंगी।"

दीक्षा कुमारी—"महानुभाव ! मेरा कर्त्तव्य है कि मैं आपकी मनोवृत्ति के अनुकूल बनूँ। आप प्रसन्नता से अपनी इच्छा प्रकट करें।"

सुधाविजय—"महादेवी ! मैं इस दिव्य रूप में आपके साथ सदा घूमने में असमर्थ हूं। किन्तु आप जब भी मुझे याद करेंगी, मैं उसी समय इसी रूप में आपके समक्ष उपस्थित हो जाऊँगा।"

दीक्षा कुमारी—"महानुभाव ! जैसी आपकी इच्छा, मेरे हृदय में भी यही धारणा थी। अब मैं यहाँ से अपनी यात्रा प्रारम्भ करती हूं। आप प्रसन्नता से दिव्य लोक में जाइये। जब मैं स्मरण करूँ, तब अवश्य उपस्थित हो जाइये।"

दीक्षा कुमारी के वचन सुनकर दिव्य मूर्ति मुनि सुधाविजय प्रसन्न हुए और वहाँ से जाने का उपक्रम करने लगे, तभी उन्हें एक प्रश्न पूछने की इच्छा हुई और उन्होंने मधुर स्वर से पूछा, "महेश्वरी ! जाने के पहले मेरे हृदय में एक प्रश्न करने की इच्छा जागृत हुई है, कृपा कर सुनें। आपने पहले प्रवासों में 'दशवैकालिक सूत्र' पर उपदेश दिया था, अब इस प्रवास में कौन से सूत्र का उपदेश देने की आपकी इच्छा है, वह बताने की कृपा करें।"

दीक्षा कुमारी—"महानुभाव ! आप जानते हैं कि श्रमण भगवान् महावीर से सुनकर उनके शिष्य सुधर्मस्वामी ने द्वादशांगी (बारह अंग सूत्रों) निर्गंथ प्रवचन की रचना की थी। इन १२ में से अंतिम दृष्टिवाद का विच्छेद हो चुका है, शेष ११ अंग अभी भी मौजूद हैं। इनमें से सर्वप्रथम **'आचारांग सूत्र'** का नाम प्रसिद्ध है। यह जैन धर्म का सर्वप्रथम रचित मूल्य सूत्र है। इसमें साधुओं का सम्पूर्ण आचार प्रतिपादित है। इस सूत्र में कथित आचार का जो पालन करे, वही शुद्ध साधु कहलाता है। इस सूत्र के दो श्रुत स्कंध (भाग) हैं,

पहले भांग का नाम 'आचार' और दूसरे का नाम 'आचारांग' है। इस सूत्र पर श्री भद्रबाहु स्वामी ने निर्युक्ति लिखी है। इसमें उन्होंने लिखा है कि प्रथम श्रुतस्कंध की रचना स्थविर मुनियों द्वारा की गई है और दूसरे श्रुतस्कंध की रचना अन्य स्थविर मुनियों ने की है। श्री जिनदास महत्तराचार्य ने इस पर प्राकृत में चूर्णि की रचना व्याख्या रूप में की है और श्री शीलाचार्य ने संस्कृत में टीका की रचना की है। इस पवित्र सूत्र के उपदेश का प्रसार करने की इच्छा से ही मैंने यह दूसरी यात्रा प्रारम्भ की है। मुझे आशा है कि इस विषम काल में भी इस सूत्र-वाणी का उपदेश काफी असरकारक हुए बिना नहीं रहेगा।"

दिव्य मूर्ति ने आनन्दपूर्वक अनुमोदन किया, "महेश्वरी ! आपकी इच्छा को ज़ानकर मुझे अत्यन्त आनन्द हुआ। आपकी यह यात्रा सफल हो, ऐसी मेरी तीव्र इच्छा है। मुझे हृदय से विश्वास है कि पवित्र 'आचारांग सूत्र' की दिव्य-वाणी का प्रकाश इस विषम काल के अन्धकार को कुछ न कुछ अंश में तो दूर किये बिना नहीं रहेगा। महादेवी ! आप इस सूत्र-वाणी को पल्लवित करें और महान् वीर शासन को विजयी बनावें, इसी आशा के साथ मैं प्रस्थान करता हूँ।"

दिव्य मूर्ति मुनि सुधाविजय उपर्युक्त कथन की समाप्ति के साथ ही प्रणाम कर आकाश मार्ग से प्रस्थान कर गये। दीक्षा कुमारी ने अभय मुद्रा से शुभाशीष दी और जिस दिशा में दिव्य मूर्ति ने प्रस्थान किया था, उस ओर एकटक देखती रही। [क्रमशः]

C/o Dr. Sushila J. Agrawal
3415, Cootheights Drive
Rancho Palos Verdes
CALIFORNIA–90724 (U.S.A)

## मेरे अनन्त घन प्रभु !

□ श्री जतनराज मेहता, मेड़ता सिटी (राज.)

आप मेरे अन्तरतर में विराजमान हैं।
जहाँ आप विराजमान हैं,
वहाँ दुःख कैसा, दारिद्र कैसा ?
रोग कैसा, शोक कैसा ?
स्वस्थ तन, स्वस्थ मन,
जीवन अखिलेश सदन।

हे मेरे अन्तर मन !
सृष्टि का सम्पूर्ण सौन्दर्य
मेरे अन्तरमन में
झलक रहा है !
थिरक रहा है !
उमड़ रहा है !
मेरे अन्तर मन – अनन्त आनन्द घन !

सामाजिक :

# "उपदेश" नहीं "आचरण" की जरूरत

□ श्री दुर्गाशंकर त्रिवेदी

एक पंडितजी से चर्चा चली तो वे बड़ी व्यथा पूर्वक बोले :—"त्रिवेदी जी ! हमारे जीवन मूल्य बड़ी तेजी से विघटित होते चले जा रहे हैं। देश की हालत जो है, वह सामने ही है। हम सब एक विस्फोटक शिला खण्ड पर खड़े हैं आज ! नई पीढ़ी तो बहुत ही उच्छृंखल हो चुकी है। अनशासन को तो वह व्यवहार में रखना ही नहीं चाह रही है। शिक्षा में उसकी रुचि नहीं, धर्म में, संस्कृति में आस्था नहीं, बड़ों के प्रति आदर भाव नहीं, दायित्व के प्रति सजगता नहीं।"

मैं बोला—"पण्डित जी ! आपकी व्यथा सचमुच सही है। यह शिकायत एकदम सही है कि नई पीढ़ी मूल्यहीनता की गिरफ्त में है। किन्तु इनसे कैसे निपटा जाये ? मूल-समस्या तो यही सामने है, हमारे भी। स्थितियों को हम कब तक नकारते रहा करेंगे ?"

वे मुस्काये, बोले—"हाँ नकारने वाली स्थिति तो उचित नहीं है। पर मर्ज बढ़ता ही चला जा रहा है, ज्यों-ज्यों हमने दवा की ! नेताओं को तो आज उपदेशों से ही फुर्सत नहीं है।"

वास्तव में इस तरह की व्यथाओं, शिकवे-शिकायतों आदि में काफी सच्चाई है। देश भर में आज क्या हो रहा है—जरा-जरा सी बातों पर शिक्षण संस्थाओं में हड़तालें हो उठती हैं, चाकू-छुरे चल जाते हैं ! प्रदर्शन, घेराव, नारेबाजी, अध्यापकों से दुर्व्यवहार तो आम बातें हो चली हैं। परीक्षाओं में सामूहिक नकलबाजी, प्रश्न–पत्र बहिष्कार आदि न मालूम क्या-क्या हो रहा है ? सार्वजनिक जीवन में भी घटनाक्रम कुछ इसी प्रकार के हैं। तो सहज ही प्रश्न उठता है कि इस तरह की खेदजनक और विस्फोटक स्थिति के लिए आखिर जिम्मेदार कौन हैं ?

लोग बात-बात में इसके लिए सरकार को जिम्मेदार ठहराने लग उठते

हैं। पर प्रजातन्त्र में 'सरकार' है कौन ? हम ही तो प्रतिनिधि चुनकर भेजते हैं हमारे बीच से ही ! सो जैसे हम वैसे ही हमारे सरकारी नुमाइन्दे भी हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहना अनुचित नहीं है कि हमारी ही गलतियों से यह स्थिति बनी है। इस सच्चाई को हम जितना शीघ्र स्वीकारेंगे और इलाज तलाशेंगे उतना ही अपनी पीढ़ी के साथ न्याय करेंगे !

**कैसी है हमारी शिक्षा :**

महर्षि मनु ने कहा था—"मनुर्भव जनया दैव्य जनम्" यानी—"मनुष्य बनो और देवताओं को जन्म दो।" भारतवासी देवताओं को जन्म देने वाले मनुष्य थे। पर आज हमारे पतन की पराकाष्ठा हो चुकी है ? पश्चिम के अंधानुकरण में हम अपना महत्त्व भूल चुके हैं। 'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा:" हम अपने चरित्र से पृथ्वी के मनुष्यों को शिक्षा देते थे।

पर आज क्या रह गई है हमारी शिक्षा की नीति ! देश को आजाद हुए ३६ वर्षों के बाद भो हम अपनी, अपने राष्ट्र की परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा नीति नहीं बना पाए ! हम आज भी उसी गुलाम बनाऊ शिक्षा पद्धति से चिपके बैठे हैं—जिसका मकसद देश के नवयुवकों की प्रतिभा को कुण्ठित करके "बाबुओं की एक फौज" तैयार करना था ! इसी शिक्षा का पुण्य प्रताप है कि हमारा पढ़ा लिखा युवक स्वावलम्बी नहीं बन पाया ! वह परावलम्बी ही नहीं, कायिक श्रम से कतराने वाला सुविधा भोगी जीव बन गया है। हमारे विश्वविद्यालय बेकारों की फौज तैयार करने के केन्द्र बन चले हैं। किशोर फौज जो राष्ट्र के लिये, उत्पादकता की संवाहिका होनी चाहिए वह 'वान्टेड' के कालम पढ़ती, नौकरी की मृग मरीचिका के पीछे भागती रहकर जब बदले में कुछ भी नहीं पाती है तो जगत् भर की खुराफातों के लिए, अपने आपको प्रस्तुत कर देती है। आखिर ऐसी शिक्षा किस काम की जो नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को तोड़ फैंके ! जो अपने आपको श्रम करने से, पसीना बहाने से, राष्ट्रीय उत्पादकता बढ़ाने से रोके ! व्यक्ति को खुद का अभिक्रम करने की प्रेरणा न दे ! आज हम देश भर में रट्टू तोते पैदा कर रहे हैं।

महात्मा गाँधी ने इस राष्ट्रीय ऊर्जाहारी शिक्षानीति को पहचान लिया था। मेकाले की बाबू बनाने वाली जमात की बुराई पहचान कर उन्होंने "बुनियादी तालीम" दी थी, पर हमने उसे फेल कर डाला। वह विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति को उत्पादक श्रम में लगाती थी। शारीरिक और मानसिक शक्ति के बीच उचित समन्वय स्थापित कर सकती थी। किन्तु हम न तो उसे अपना पाए और न अपनी शिक्षा नीति तय कर पाए। ऐसी स्थिति में जो हो रहा है, वही तो होना था।

**....और ये अन्य माध्यम :**

वैज्ञानिक प्रगति के इस युग में शिक्षा के अन्य कई दृश्य-श्रव्य उपकरण और माध्यम भी इस बीच विकसित हुए हैं। पर उनने भी जो कहर ढा रक्खा है, वह कोढ़ में खाज वाली स्थिति पैदा करता चला जा रहा है।

सिनेमा, दूर दर्शन, रेडियो और वीडियो ये सभी दृश्य श्रव्य माध्यम भी शिक्षा नहीं देकर समाज को जहरीला वातावरण ही दे रहे हैं। मनोरंजन की ओट में कामुकता और अश्लीलता के नग्न नृत्य लोकरुचि को तेजी से प्रभावित कर रहे हैं। इनके कार्यक्रमों में जो कुछ भी पेश किया जा रहा है उसने देशवासियों का चरित्र मिट्टी में मिला दिया है। सिनेमा की कहानियों, दृश्यों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, गानों, नाचों आदि ने लोकरुचि को विकृत किया और दूरदर्शन उसे बच्चे-बच्चे और परिवार-परिवार तक पहुँचा कर वातावरण को और भी दूषित बना रहा है। हमारी फिल्में शिक्षण का माध्यम न रहकर मारधाड़, हिंसा, उत्तेजक माहौल बनाने वाली कामुकता और अश्लीलता के क्रियात्मक पाठ पढ़ाने वाली हो गईं! टेलीविजन के "चित्रहार" कार्यक्रम में क्या वासनोत्तेजक नृत्यों की भरमार नहीं है? सप्ताह में २ बार दिल्ली केन्द्र इसे प्रदर्शित करता है! इनके फूहड़ किस्म के गानों को बच्चे शौक से गाते हैं और फिल्मी कलाकारों की भौंड़ी नकलें करते, नाचते, थिरकते रहते हैं और उसी तरह के फैशन में जीने की कोशिशें कर रहे हैं। कई किशोरों ने अपराध की तरकीबें फिल्मों से सीखी हैं, पकड़े जाने पर वे बताते हैं। सैंसर करने वाले भी शायद मुट्ठी गरम होने तक ही फिल्म में कुछ निकालने योग्य पाते हैं? यदि ऐसा नहीं होता तो ऐसी आपराधिक प्रवृत्तियाँ, खुलेआम शराब को महत्त्व, कामुकता भरे नृत्य, क्रूर बलात्कार, हिंसा, मार-धाड़ आदि से भरी फिल्में कैसे स्वीकृति पा रही हैं। अब विश्व भर की तरह हमारे देश में भी वीडियो का प्रचलन तेजी से लोकप्रिय हो चला है! इसके भविष्य में बड़े ही भयंकर नतीजे निकलेंगे।

शिक्षा के इन अतिरिक्त माध्यमों की तरफ हमारा ध्यान नहीं है। ऐसे माहौल में जीवन मूल्यों की तरफ ध्यान दिलाये भी तो कौन?

**साहित्य की दुर्दशा :**

साहित्य जो अब पढ़ा जा रहा है, वह भी घटिया और बाजारू हो चला है। अधिकांश स्वस्थ प्रेरक साहित्यिक पत्रिकाएं बन्द हो गई हैं, जो रो धोकर चल भी रही हैं, वे भी न तो प्रसार संख्या जुटा पा रही हैं, न कोई विशेष दायित्व निभा पा रही हैं। कवि सम्मेलन कभी लोकजागरण का मंच था! अब

वहाँ पर फूहड़ चुटकुलेबाजी ही सब कुछ होती चली जा रही है । सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर फूहड़ नृत्य, सस्ती चुटकुलेबाजी और सत्ताधीशों या नवधनाढ्यों की चारणवृत्ति ही यत्र तत्र सर्वत्र नजर आती है ।

....साथ ही नेतृत्व की अक्षमता के कारण शराब और जुआखोरी का वातावरण तेजी से बढ़ चला है । सरकार खुद इन्हें दबे छिपे ही नहीं, सार्वजनिक रूप से बढ़ावा दे रही है। होटलों में कैबरे लगभग अनिवार्य हो गए हैं। किशोर पीढ़ी सुरा-सुन्दरियों की गिरफ्त में पैसा, स्वास्थ्य और चरित्र सब कुछ लुटा रही है । राजनीति का हाल यह हो चला है कि 'सिद्धान्त' से किसी का कोई सरोकार ही नहीं रहा । सत्तारूढ दल विपक्षियों पर और विपक्षी सत्तारूढ दल पर मुक्त भाव से कीचड़ उछाल कर अपना-अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं ! जन प्रतिनिधित्व के नाम पर जो लोग आ रहे हैं, उनकी पृष्ठभूमि देखी जाए तो सिर पीट लेने को करता है । सड़क छाप दस नम्बरी ही नहीं, अनेक तरह की हिंसाओं, डकैतियों, बड़ी चोरियों, गुण्डागर्दियों, वेश्यावृत्तियों में लिप्त जन-प्रतिनिधि चुनकर आ रहे हों तो क्या उम्मीद की जा सकती है कि वे माहौल के लिए सोचेंगे । आज तो सारा देश भ्रष्टाचार की गंगा में डुबकी लगाने के लिए आतुर है । नेताओं का सिर्फ एक सूत्री कार्यक्रम ही रह गया है— किसी भी तरह कुर्सी झपटना, अजीब-सी आपाधापी में पूरा राष्ट्र लिप्त होता चला जा रहा है ।

**'आचरण' की जरूरत :**

जब चारों तरफ आपाधापी हो तो नई पीढ़ी से अनुशासन, जीवन मूल्यों की रक्षा, कर्तव्य निष्ठा, शालीनता, देश प्रेम आदि की आशा किस प्रकार की जा सकती है ? हम जो मूल्य स्थापित कर रहे हैं नई पौध उनको ही तो पुष्पित-पल्लवित कर रही है ।

अपनी बगिया में दूब, पौधों और फूलों के पेड़ों, लताओं को सींचने के लिए पानी ही नहीं श्रम और पसीने की भी जरूरत होती है न ! फिर उस पौध को जो कल की भाग्य विधाता बनेगी ! जिसको कल देश का भार उठाना है। कर्तव्य परायणता, चरित्र आदि की शिक्षा कौन देगा ? देश के बुद्धिजीवियों, सन्तों और नेताओं को ही नहीं आम परिवार के लोगों को भी गम्भीरता से सोचना होगा । आजादी के बाद तेजी से बढ़ती अनास्था और मूल्यहीनता ने स्पष्ट कर दिया है कि सज्जन-शक्ति संगठित होनी ही चाहिए । अब जमाना 'उपदेश' का नहीं 'आचरण' का आ चुका है । हम कहें नहीं, करके दिखलायेंगे तभी कुछ हो पायेगा । गांधी, टैगोर, विनोबा ने कहा कम—क्रियात्मक रूप से अधिक पढ़ाया ।

दैनिक जोवन व्यवहार में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिंष्ठापना करना हर परिवार अपनी जरूरत समझे और पहल करे। शिक्षा नीति में सुधार की प्रबल आवाज उठे। यदि सरकार ने, नेताओं ने, अभिभावकों ने नई पीढ़ी को 'चरित्र' की व्यावहारिक शिक्षा अपने 'आचरण' से नहीं दी तो मैकाले की बाबुओं की जरूरत देश को अन्धकार के गर्त मे डालकर रख देगी ! आइए, 'आचरण' से नई पीढ़ी को शिक्षित करें !

बी-११६, विजय पथ, तिलक नगर, जयपुर–४

□ □ □

## हार्दिक क्षमायाचना

मनुष्य मात्र से समय-समय पर असावधानी, प्रमाद एवं कषायवश भूल होना स्वाभाविक है। हमारे द्वारा भी 'जिनवाणी के विद्वान् लेखकों, धर्म निष्ठ पाठकों, ग्राहकों और सहृदय हितैषियों, दानदाताओं के प्रति प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, लिखित-अलिखित रूप में किसी प्रकार की भूल होना सहज सम्भाव्य है। अपनी सीमाओं में रहते हुए, सीमित स्थान के कारण सम्भव है हम किसी की रचना अथवा समाचार न प्रकाशित कर पाये हों, या विलम्ब से, संक्षेप में प्रकाशित कर पाये हों, किसी ग्राहक या लेखक को पत्रिका समय पर न भेज पाये हों, या कुछ ऐसे विचार या समाचार प्रकाशित करने में आये हों जिनसे किसी के मन को किंचित् भी ठेस लगी हो तो आत्म-शुद्धि के इस पुनीत पर्युषण पर्व पर हम सब से शुद्ध अन्तः-करण से क्षमायाचना करते हैं।

**'जिनवाणी' परिवार**

सूक्ति-विवेचन [१]

# धम्मस्स विणग्रो मूलं

□ श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

**"दशवैकालिक सूत्र" अ० ६, उ० २, गाथा २ में कहा गया है "एवं धम्मस्स विणग्रो मूलं, परमो से मोक्खो" अर्थात् धर्म रूपी वृक्ष का मूल विनय है और फल मोक्ष है।**

"विनय शब्द के अनेक अर्थ हैं" उनमें दो मुख्य हैं—(१) अहंकार-अहंभाव रहित होना, (२) आदर करना। अहंकार रहित होना, मैं पन का अस्तित्व न रहना ही मुक्ति है। यही मानव जीवन का, साधक का लक्ष्य है। अहंकार या मैं की उत्पत्ति होती है संयोग से। जीव जिससे संयोग करता है, वह उससे बंध जाता है। जब उस संयोग को त्याग देता है तो बंध भी छूट जाता है। बंध छूट जाना, बंध न रहना ही मुक्ति है। अतः "संयोग-मुक्ति" ही मुक्ति है। यही साधक का साध्य है। संयोग की अभिव्यक्ति होती है, अहंभाव के रूप में, यथा-जीव धन के संयोग से अपने को धनी मानता है, विद्या के संयोग से अपने को विद्वान् मानता है, क्रोध के संयोग से अपने को क्रोधी मानता है व दोष के संयोग से अपने को दोषी मानता है। मैं धनी हूँ, मैं विद्वान् हूँ, मैं क्रोधी हूँ, मैं दोषी हूँ, मैं रोगी हूँ, मैं बूढ़ा हूँ, मैं उच्च अधिकारी हूँ, मैं नौकर हूँ आदि सभी अहंभाव संयोग से ही उत्पन्न हुए हैं। अहंभाव में संयोग और संयोग में अहंभाव ओतप्रोत है। अतः संयोग के त्याग में अहंभाव का त्याग और अहंभाव के त्याग में संयोग का त्याग निहित है। संयोग का त्याग मुक्ति है। अतः अहंभाव का त्याग भी मुक्ति है। इस प्रकार विनय शब्द का "अहंभाव रहित होना" अर्थ, साधक के साध्य अर्थात् मुक्ति का द्योतक है।

विनय शब्द का दूसरा अर्थ है आदर करना। विनय आदर, आचरण, शील समानार्थक शब्द है। यहाँ आदर या आचरण से अभिप्राय है जिन साधनाओं से साध्य (मुक्ति) की प्राप्ति हो, उनका आचरण करना, उन्हें जीवन में उतारना। ये साधन या साधनाएँ सात हैं। अतः विनय भी सात प्रकार का है यथा :—(१) ज्ञान विनय—ज्ञान के अनुरूप आचरण करना। (२) दर्शन विनय—दर्शन के अनुरूप आचरण करना। (३) चारित्र विनय—

चारित्र का पालन करना। (४) मन विनय—मन से शील पालना–मन को निर्विकार बनाना। (५) वचन विनय—वचन से शील पालना, निर्दोष वाणी बोलना। (६) काय विनय—काया से विकार सेवन नहीं करना, काया से साधकों की सेवा करना। (७) लोकोपचार विनय – लोगों की सेवा करना। इन सात विनयों में से प्रथम तीन विनय ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय क्रियात्मक साधना से, मन विनय, वचन विनय और काय विनय ये तीन विनय संयम-शील पालन से और लोकोपचार विनय लोगों के प्रति सद्व्यवहार करने से सम्बन्धित हैं। ये विनय साधना मार्ग हैं। इस प्रकार विनय शब्द का "आदर करना" अर्थ साधना का द्योतक है।

विनय शब्द के उपर्युक्त "अहंभाव रहित होना" तथा "आदर करना" इन दोनों अर्थों में साध्य रूप धर्म एवं साधना रूप धर्म का पूरा समावेश हो जाता है। दूसरे शब्दों में धर्म का पूर्ण समाविष्ट हो गया है। इसीलिये विनय को धर्म का मूल और मुक्ति को उसका फल कहा है।

साधना भवन, बजाजनगर, जयपुर

---

क्या तुम नहीं जानते कि तुम ही ईश्वर का मन्दिर हो और ईश्वर की आत्मा तुम में रहती है? —इंजील

आत्मस्वरूप प्राप्त करने का सबसे सहज उपाय निष्काम कर्मयोग है। —ज्ञानेश्वरी

अगर मेरे पास दो ही चपातियाँ हों तो मैं एक के फूल खरीदूँगा ताकि रूह को गिजा मिल सके। —मुहम्मद

अन्तरंग में समस्त सुखों के भण्डार, मुझ आत्माराम के प्रत्यक्ष रहते हुए भी, माया से मोहित पुरुषों की वासना विषय भोगों की ओर ही प्रवृत्त होती है। —भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

आत्मा की तुम्हें थाह नहीं मिल सकती, वह इतनी अगाध है। —हेराक्लीटस

## बाल कथामृत [१८]

**१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमश: २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।**

**—सम्पादक**
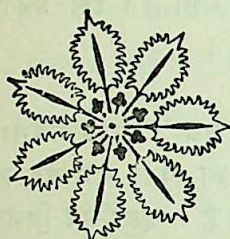
# हृदय परिवर्तन

**☐ श्री राजीव भानावत**

किसी नगर में एक सेठ रहता था। वह बड़े ही धार्मिक विचारों वाला नेक पुरुष था। लेकिन उसका पुत्र उसके एकदम विपरीत स्वभाव का था। वह चोरी, डकैती, मद्यपान, जुआ आदि व्यसनों में ग्रस्त रहता था। सेठ अपने पुत्र को गलत कार्य न करने के लिये समझाता, लेकिन इसका उसके पुत्र पर कोई असर नहीं पड़ता था। बहुत समझाने पर भी जब पुत्र नहीं सुधरा तो सेठ ने उसे घर से बाहर निकाल दिया।

घर से निकलकर सेठ का पुत्र लुटेरों के दल में सम्मिलित हो गया व उन्हीं के साथ रहने लगा। वह चोरी, डकैती, हत्या आदि दुष्कर्म करने में बहुत ही होशियार था, अतः शीघ्र ही वह लुटेरों के दल में प्रमुख बन गया। दल के मुखिये ने उसके द्वारा सही निशाना लगाने और दृढ़ प्रहार करने की कला से प्रभावित होकर उसका नाम दृढ़ प्रहारी रख दिया। कुछ समय बाद वह लुटेरों के दल का मुखिया बन गया।

दृढ़ प्रहारी ने कई गाँवों, नगरों को लूटा और अनेकों को मौत के घाट उतारा। गाँव व नगरवासी उसके नाम से काँपते थे।

एक बार वह अपने साथियों सहित किसी बड़े नगर को लूटने के लिये गया। नगर में लूटपाट करते हुए वे एक ब्राह्मण के घर में घुसे। उसने अपने साथियों को ब्राह्मण के घर को लूटने की आज्ञा दी और स्वयं दरवाजे पर खड़ा हो गया। ब्राह्मण व उसकी पत्नी ने डर के कारण घर से बाहर निकल कर

भागने की कोशिश की लेकिन दरवाजे पर खड़े दृढ़प्रहारी ने उन पर तलवार से वार किया। अपने मालिक व मालकिन को इस संकट में देखकर ब्राह्मण की गाय उनकी सहायता के लिये रस्सा तोड़कर दृढ़प्रहारी की ओर दौड़ी पर दृढ़ प्रहारी ने एक ही प्रहार में गाय का सर काट डाला। अचानक उसकी नजर जमीन पर पड़े ब्राह्मण व ब्राह्मणी के खून से लथपथ शरीर की ओर गई। वे जमीन पर पड़े-पड़े बुरी तरह तड़प रहे थे। थोड़ी देर में ही दृढ़प्रहारी के देखते-देखते दोनों के प्राण पखेरू उड़ गये।

दृढ़प्रहारी ने अब तक अपने जीवन में हत्याएँ तो बहुत की थीं लेकिन वह कभी रुक कर हत्या के बाद का दृश्य नहीं देखता था। आज उसे वह दृश्य देखना पड़ गया था। चारों तरफ फैले खून, और ब्राह्मण-ब्राह्मणी द्वारा, तड़प-तड़प कर प्राण दे देने के मार्मिक दृश्य को देखकर उसके हृदय की सोई करुणा जाग उठी। अपने अतीत में किये गये कार्यों को याद कर-करके उसके मन में अपने आपके प्रति घृणा पैदा हो गयी। वह विचार करने लगा कि मुझे थोड़ी भी चोट लगने पर बहुत कष्ट होता है तो फिर दूसरों पर जब मैं इतने भयंकर प्रहार करता हूं, उन्हें लूटता हूँ तो उन्हें कितना कष्ट होता होगा? यह सोचते-सोचते उसका हृदय पश्चाताप से भर गया।

उसने उसी समय तलवार को तिलाञ्जली दे दी। उसके मन का शैतान अब मर चुका था और उसकी जगह इन्सानियत ने ले ली थी। उसने प्रण किया कि वह अपने किये का पश्चाताप करेगा एवं शेष जीवन तप-साधना में लगा देगा।

दृढ़प्रहारी ने मुनि का वेश धारण कर लिया और नगर के बाहर ध्यानस्थ मुद्रा में खड़े होकर तपस्या प्रारम्भ कर दी। जब आते-जाते लोगों ने देखा कि कल तक का खूंखार डाकू आज साधु वेश में तपस्या कर रहा है तो उन्होंने सोचा यह निश्चित रूप से ढोंग कर रहा है। अपना क्रोध शान्त करने के लिए रुष्ट लोगों ने दृढ़प्रहारी को गालियाँ दीं, उस पर कूड़ा करकट डाला, पत्थर फैंके, लेकिन दृढ़प्रहारी अपनी तपस्या में लीन रहा। उसे उन लोगों पर किसी तरह का क्रोध नहीं आया। वह इस तरह शान्त चित्त से नगर के बाहर बहुत दिनों तक तपस्या करता रहा। धीरे-धीरे लोगों का उसके प्रति रोष शान्त हो गया और उन्होंने मुनि पर प्रहार करना बन्द कर दिया। समभाव पूर्वक की गई तपस्या के कारण उसकी आत्मा निर्मल हो गई और वह अनन्त आनन्द का धनी बना।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

१. सेठ ने घर से अपने पुत्र को बाहर क्यों निकाला ?

२. पुत्र का नाम दृढ़प्रहारी कैसे पड़ा ?

३. कौन से दृश्य को देखकर दृढ़प्रहारी की सोई करुणा जाग उठी ?

४. क्या सोचते-सोचते दृढ़प्रहारी का हृदय पश्चाताप से भर गया ?

५. 'उसके मन का शैतान अब मर चुका था और उसकी जगह इन्सानियत ने ले ली थी।' इस कथन से क्या तात्पर्य है ? समझाकर लिखिए।

६. आप कैसे कह सकते हैं कि दृढ़प्रहारी का हृदय परिवर्तन हुआ ?

७. हृदय-परिवर्तन सम्बन्धी किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जो आपने देखी हो।

८. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

—सी–२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर–३०२००४

## उत्तरदाताओं के नाम

**'जिनवाणी'** के जुलाई, १९८३ के अंक में प्रकाशित श्री राजकुमार जैन की कहानी **"मुखिया की हँसी'** के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सब को धन्यवाद।

**जयपुर** से बीना कोठारी, सीमा बोहरा, **राणावास** से अशोककुमार चाणोदिया, **कोटा** से बीना जैन, **मन्दसौर** से शिखा नलेरा, **जोधपुर** से अलका भण्डारी, **भवानीमण्डी** से रघुनंदन शर्मा, मीनाक्षी पौद्दार, शुभ कुमार व्यास, बाबूलाल जैन, अनिता जैन, सुरेन्द्र कुमार जैन, रवीन्द्र सिंह अरोड़ा, रमेशचन्द्र कुमावत, राजेश मूथा, प्रकाश चन्द्र शर्मा, जयन्ती माला जैन, नित्यानन्द दीक्षित, अशोक कुमार जैन, कुमारी संध्या सिंह, **पाली** से राजेन्द्र कुमार धारीवाल, **जसनगर** से प्रकाश चन्द दुग्गड़, **देवगढ़ मदारिया** से पृथ्वीराज, **बिलाड़ा** से प्रेम प्रकाश जैन, **सालावास** से उत्तम चन्द मेहता, **भीलवाड़ा** से सुरेन्द्र कुमार खाव्या, **बंगलौर** से जयश्री बाई, अरुण कुमार, **विजय नगर** से अंजना लुणावत, **मद्रास** से सुरेश कुमार गुगालिया, **बावड़ी** से अशोक कुमार कटारिया, **अजमेर** से अजय मनोचा, **मथुरा** से राजीव अग्रवाल, मनोज कुमार जैन, **बासाखेड़ी** से प्रशान्त सक्सेना, **भोपालगढ़** से अभय कुमार कांकरिया, **श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला, स्टेशन बजरिया, सवाईमाधोपुर** से कुमारी अनिता जैन, कुमारी उर्मिला जैन, कुमारी इन्द्रा जैन, कुमारी रीना गुप्ता, कुमारी प्रतिभा जैन,

कुमारी मधुबाला जैन, कुमारी सावित्री जैन, कुमारी मन्जूबाला जैन, कुमारी साधना जैन, कुमारी सरोज जैन, विजय कुमार जैन, सुरेन्द्र कुमार जैन, अनिल जैन, जितेन्द्र जैन, महेन्द्र जैन, निर्मला जैन, वीरेन्द्र जैन एवं प्रेम लता जैन, **झालरापाटन** से दिलीप कुमार सिंघवी ।

## पुरस्कृत उत्तरदाता

**प्रथम**—संजय आंचलिया, द्वारा मदनलाल सुजानमल जन, क्लाथ मर्चेन्ट, तिलक पथ, **नीमच** (म० प्र०) ।

**द्वितीय**—अमित भण्डारी, द्वारा श्री बिरदराजजी भण्डारी, आसोप की हवेली के सामने, **जोधपुर** ।

**तृतीय**—मुकेश कुमार सूरिया, द्वारा गणेश ट्रेडिंग, ८३, बालाजी मार्केट, **भीलवाड़ा** (राज०) ।

इस बार सर्वाधिक उत्तरदाता [१८] श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला, स्टेशन बजरिया, सवाईमाधोपुर के रहे हैं जिनमें से ३ सर्वश्रेष्ठ उत्तरदाताओं को ५-५ रु० का पुरस्कार **श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन एडवोकेट, भवानीमण्डी** की ओर से प्रदान किया जा रहा है । पुरस्कृत उत्तरदाता हैं—

१. कु० सावित्री जैन, द्वारा श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला, स्टेशन बजरिया **सवाईमाधोपुर** (राज०) ।

२. विजय कुमार जैन, सुपुत्र श्री झण्डूलाल जैन, द्वारा जैन किराना स्टोर, पुराना ग्रेन गोदाम रोड, स्टेशन बजरिया, **सवाईमाधोपुर** ।

३. महेन्द्र कुमार जैन, सुपत्र श्री झण्डूलाल जैन, द्वारा जैन किराना एण्ड जनरल स्टोर, पुराना ग्रेन गोदाम रोड, स्टेशन बजरिया, **सवाईमाधोपुर** ।

---

**सारा जगत् आत्मा ही है, अविद्या कहीं नहीं है, ऐसी दृष्टि का आश्रय लेकर सम्यक् रूप से स्थिर हो ।**

**—योगवाशिष्ठ**

**मैं ब्रह्म ही हूं, संसारी नहीं हूं, मैं ब्रह्म से भिन्न नहीं हूं; मैं देह नहीं हूं, मेरे देह नहीं है; मैं नित्य केवल हूं ।**

**—शंकराचार्य**

---

धर्मोद्योत :
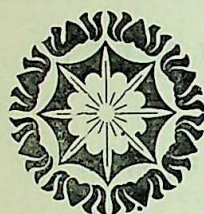
# आचार्य श्री के सानिध्य में धर्म जागरण की लहर

☐ श्री ब्रजमोहन जैन

प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० आदि ठाणा १३ तथा सरल स्वभाविनी महासती श्री शान्तिकँवरजी म० सा०, ठाणा ४, राजस्थान की राजधानी जयपुर में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं।

प्रेम निकेतन, गणेश कॉलोनी में प्रातःकालीन प्रार्थना विद्या रसिक श्री गौतम मुनिजी म० सा० द्वारा सुमधुर शैली में फरमाई जा रही है तथा दोपहर को परमाराध्य आचार्य श्री द्वारा 'आचारांग सूत्र' की वाचना विस्तृत विवेचन के साथ प्रदान की जा रही है। जिसका पूज्यात्माओं के साथ श्रावक-श्राविका श्रवण-आनन्द ले रहे हैं।

लाल भवन, चौड़ा रास्ता में पं० र० श्री मान मुनिजी म० सा०, पं० र० श्री हीरा मुनिजी म० सा० के प्रभावोत्पादक प्रवचनों के श्रवणार्थ, स्थानीय एवं समागत दर्शनार्थियों का सुविशाल समूह नित्य प्रति उपस्थित हो धर्म श्रवण एवं तपाराधन में संलग्न हो रहा है। प्रातःकाल महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म० सा० द्वारा प्रार्थना फरमाई जाती है।

बारह गणगौर—स्थानक में महासती श्री शान्तिकँवरजी म० सा० के तपस्या के १६ उपवास सानन्द सम्पन्न हो गये हैं। उनके सुखसाता है।

रत्नवंश के ज्योतिर्मय नक्षत्र स्वर्गीय स्वामी श्री सागरमलजी म० सा० एवं आचार्य श्री शोभाचन्दजी म० सा० की पुण्यतिथि के अवसर पर दि० ७ व

८ अगस्त को सामूहिक दया का आयोजन किया गया तथा इसी प्रसंग पर बहिनों एवं भाइयों में दया की अलग-अलग पचरंगियां हुईं। संवर पौषध आदि तपस्याओं का ठाठ रहा।

समागत दर्शनार्थी बन्धुओं का नित्य-प्रति आवागमन जारी है जिसमें, मेड़ता सिटी, दिल्ली, नागौर, सवाईमाधोपुर, आदि संघों ने सामूहिक रूप से उपस्थित हो दर्शन-सेवा का लाभ लिया।

दर्शनार्थी बन्धुओं में मद्रास, जोधपुर, अजमेर, ब्यावर, भोपालगढ़, किशनगढ़, कोटा, झालावाड़, इन्दौर, भोपाल, बरेली, बीजापुर, बैंगलौर, जलगांव, फतेहनगर, शिरपुर, पालासनी, महामन्दिर, अलवर, अलीगढ़, फाजिलाबाद, खेड़ली, भरतपुर, खोह, डावलाना जैनपुरी, उनियारा, चौथ का बरवाड़ा, महुआ, रसीदपुर-हिण्डौन, गंगापुर, रावर्संनपेठ, हैदराबाद, जालौर, जैसलमेर, ग्वालियर, पाली, सोजत, उदयपुर, भीलवाड़ा, टोंक, आगरा आदि अनेक ग्राम-नगरों से आये अनेक श्रद्धालुओं ने गुरु दर्शन एवं अर्हंत् वाणी-श्रवण का लाभ लिया। साथ ही श्री उमरावमलजी ढढ्ढा अजमेर, श्री जी० सी० सिंघवी, डाइरेक्टर पुलिस अकादमी हैदराबाद, श्री ललित कोठारी, जिलाधीश जैसलमेर, श्री बनेचन्दजी सिंघवी, डिप्टी कमिश्नर कर्मशियल टैक्सेज जोधपुर, श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा, न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, डॉ० सम्पतसिंहजी भांडावत, लोक अभियोजक, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर, श्री जसराजजी चौपड़ा, जिला एवं सत्र न्यायाधीश चित्तौड़गढ़, सेठ श्री शंकर-लालजी ललवाणी जामनेर, श्री भंवरलालजी गोठी मद्रास, श्री विजयकान्तजी रूणवाल बीजापुर, आदि ने गुरु-दर्शन का लाभ लिया। आगन्तुकों का भावभीना स्वागत-सत्कार जयपुर संघ द्वारा किया जा रहा है।

परमाराध्य आचार्य श्री की सेवा में श्री बसन्त मुनिजी अठाई, पचोले, तैले आदि विविध तपस्याएं कर चुके हैं तथा श्री ज्ञान मुनिजी व श्री नन्दिषेण मुनिजी एकासन तक की आराधना कर रहे हैं।

गुरुदेव की चरण-सेवा में सर्वश्री इन्दरमलजी शंखवाल, श्रीमती इन्दुबाला शंखवाल, दिल्ली, श्री मनोहरसिंहजी चौधरी, जोधपुर, श्री मोहनलालजी लोढ़ा श्री सूरतराजजी सुराणा एडवोकेट जोधपुर आदि धर्मानुरागी बन्धुओं एवं बहिनों ने सजोड़े आजीवन शील के खंद उठाये अर्थात् ब्रह्मचर्यव्रत पालन की प्रतिज्ञा की तथा श्री रिखबचन्दजी लूणावत जोधपुर ने सजोड़े वार्षिक शीलव्रत अंगीकार किया।

चातुर्मास के प्रारम्भ से ही जयपुर के धर्म-प्रेमी, भाई-बहनों में तपस्या की लहर फैलने लगी, परिणामतः इस थोड़े से समय में श्री प्रकाशचन्दजी नवलखा,

(डाक्टर बाबू) ३१, श्रीमती राजकुमारी नवलखा ३०, श्री विमलचन्दजी छाजेड़ की धर्मपत्नी ३१, श्रीमती पुष्पा मेहता, अलवर, श्री प्रकाशचन्दजी कोठारी की धर्मपत्नी १६, श्रीमती हँसमुख देवी दरड़ा १२, श्री विजयमलजी कवकिया की धर्मपत्नी २३, सुश्री सीताकुमारी सुपुत्री श्री पूनमचन्दजी दुग्गड़ १२, श्री केवलमलजी लोढ़ा की धर्मपत्नी ११, श्री मोहनलालजी बोहरा की धर्मपत्नी ११, श्री विमलचन्दजी हीरावत ११, श्री पुखराजजी मेहता की धर्म पत्नी ९, श्री हुकमीचन्दजी लोढ़ा की धर्म पत्नी ९, श्री मनोहरलालजी चौधरी की धर्मपत्नी ९ व श्री विमलचन्दजी हीरावत की धर्मपत्नी ९, की तपस्या चल रही है।

श्री ऋषभचंदजी बच्छावत की धर्मपत्नी, श्री सौभागमलजी चौधरी की धर्मपत्नी, श्री शरदकुमारजी बोथरा श्रीमती सुमन बोथरा, श्री अनिलकुमार नवलखा, श्रीमती सुमन नवलखा, श्रीमती सुधा नवलखा, श्रीमती राजकुमारी नवलखा, श्रीमती चांदबाई बोथरा, श्री हरिश्चन्द्रजी लोढ़ा की धर्मपत्नी, श्री केवलमलजी लोढ़ा की पुत्र वधू, श्री सन्तोषचन्दजी वेद मूथा की धर्मपत्नी, श्री राजेन्द्रकुमारजी बालिया की धर्मपत्नी, श्री धर्मेन्द्रकुमारजी हीरावत की धर्मपत्नी, श्री धनरूपचन्दजी हीरावत की धर्मपत्नी, श्री कनकमलजी मेहता की धर्मपत्नी, श्री रिखबचन्दजी बाफणा की धर्मपत्नी, श्रीमती शकुन्तला जरगड, श्रीमती रूपमती जरगड़, श्री स्वरूपजी जरगड़, श्री पूनमचन्दजी बेद की धर्मपत्नी, श्री उमरावमलजी मेहता की धर्मपत्नी, श्री राजा सा० की धर्मपत्नी महामन्दिर, श्री किरणराजजी बुवकिया को धर्मपत्नी महामन्दिर, श्रीमती मधु बंब, श्रीमती शोभा बंब, श्री नरेशचन्दजी सुराणा की धर्मपत्नी, श्री डी० सी० भण्डारी की धर्मपत्नी, श्रीमती साधना सुराणा, श्रीमती वेगानी, श्रीमती चाँदबाई बोथरा, श्री हीराचन्दजी वेद की धर्मपत्नी, श्री चम्पालालजी बोथरा की धर्मपत्नी, श्री हरिश्चन्दजी लोढ़ा की धर्मपत्नी, श्री हीराचन्दजी की धर्मपत्नी, श्री लाभचन्दजी लोढ़ा की मातुश्री आदि तपस्वियों द्वारा आत्म-कल्याणार्थ अठाई, पचोले, चोले, तेले आदि भारी संख्या में हुए व हो रहे हैं।

सदैव की भाँति इस वर्ष भी लाला श्री पूनमचन्दजी बड़ेर संवर-दया के साथ मौन साधना पर आरूढ़ हैं। उनके ३४वां दिन आज चल रहा है तथा श्री कुशलचन्दजी हीरावत भी दो माह की मौन साधना कर रहे हैं।

इस प्रकार जयपुर में तपाराधन की होड़ लग रही है।

□ □ □

# परिग्रह ही दुःखों का कारण है...

□ राज सौगानी

एक बहुत ही गरीब मनुष्य था। वह हमेशा किसी महात्मा द्वारा प्रदत्त मन्त्र की आराधना किया करता था, एक बार उसकी मंत्राराधना से प्रसन्न होकर एक देवी ने प्रकट होकर उससे कहा—"बोल क्या चाहता है ?"

देवी को सामने खड़ा देख बेचारा घबड़ा गया। वह बोला—

"देवी जी ! कल सबेरे मांग लूंगा।"

देवी ने कहा—"अच्छा" और अर्न्तध्यान हो गई।

वह गरीब मनुष्य सायंकाल से ही विचारने लगा कि देवीजी से क्या मांगा जाए ? पहले उसने सोचा रहने के लिए घर नहीं है, अतः ये ही मांगा जाए। फिर उसने सोचा कि जब देवीजी मुंह मांगा वरदान देने के लिए तैयार हैं तब घर ही क्यों मांगा जाए ? जमींदार गांव के सब लोगों पर रोब गांठता है, इसलिए मैं भी जमींदार हो जाऊँ तो अच्छा रहे। यह विचार कर उसने जमींदारी मांगने का निर्णय कर लिया।

थोड़ी देर बाद ही उसने सोचा—जब लगान भरने का समय आता है तो ये जमीदार भी तहसीलदार की आरजू मिन्नत करते हैं इसलिए इनसे बड़ा तो तहसीलदार है, वही क्यों न बन जाऊँ ? अब वह तहसीलदार बनने की आकांक्षा करने लगा। कुछ पल भी न बीते थे कि उसे जिलाधीश का स्मरण आया और उसे तहसीलदार का पद भी फीका दिखने लगा। इस प्रकार एक के बाद एक नवीन से नवीन इच्छा बढ़ती ही गई। और.......वह उलझता गया कि क्या मांगा जाए ?

सारी रात बेचारे की इसी चिन्ता में बीत गई। सवेरा हुआ तो देवीजी ने आकर कहा—"बोल क्या चाहता है ?"

उस व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कहा—"देवीजी, मुझे तो कुछ नहीं चाहिए।"

देवी ने कहा—"क्यों भाई ?"

वह बोला—"देखिए, देवीजी ! जब पास में सम्पत्ति आई नहीं, आने की आशा मात्र दिखी, तब तो रात्रि भर नींद नहीं आई और यदि कदाचित आ गई तो फिर नींद तो एकदम बिदा हो ही जाएगी, साथ ही न मालूम कौन-कौन सी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। इसलिए देवीजी ! मैं तो जैसा हूँ वैसा ही अच्छा हूँ।"

देवीजी वहाँ से बिदा हो गई, वह गरीब मनुष्य पहले की तरह अपनी टूटी-फूटी फूस की झोपड़ी में रह कर निराकुलता पूर्वक जीवन बिताने लगा।

वास्तव में परिग्रह ही दुःखों का कारण है जो कि दुनिया के प्राणी को क्षण भर चैन नहीं लेने देता।

—द्वारा पी. सी. सौगानी, स्टेशन रोड, भवानीमन्डी (राज.)

# समाज-दर्शन

## धार्मिक एवं स्वाध्यायी शिविरों के आयोजन

**भोपालगढ़** : यहां आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की आज्ञानुवर्तिनी शिष्या महासती श्री सायरकंवरजी, तेजकंवरजी, सोहनकंवरजी एवं शान्तिप्रभा जी के सान्निध्य में जैनरत्न नवयुवक सेवा संघ की ओर से ३१ जुलाई से ७ अगस्त तक द्वितीय श्री जैनरत्न धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग ४० बालिकाओं व महिलाओं ने भाग लिया। धार्मिक ज्ञानाभ्यास एवं तत्त्वज्ञान के साथ-साथ इस शिविर में १११५ सामायिक, २१ दया, १० उपवास, २ बेला, ११ पौषध, १५ एकासन एवं १६ संवर हुए। अध्यापन-कार्य में महासती श्री तेजकंवरजी के अलावा श्री सोहनलालजी हुंडीवाल, श्री कमल किशोरजी कांकरिया, श्री सूरजराजजी ओस्तवाल, श्री राजमलजी ओस्तवाल तथा श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल का विशेष सहयोग रहा। अन्य व्यवस्था में विशेष सहयोगी थे—श्री प्रेमचन्द कांकरिया, श्री मोहनलालजी कांकरिया, श्री अशोककुमारजी कांकरिया, श्री कमलकिशोरजी ओस्तवाल तथा श्री मुमताज अहमदजी चिश्ती। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाशजी कांकरिया ने की। पुरस्कार वितरण श्रीमती पारसबाई कर्णावट, श्रीमती पुष्पाबाई रांका, श्री पृथ्वीराजजी कवाड़ तथा श्री जैनरत्न नवयुवक सेवा संघ की ओर से किया गया। संघमंत्री श्री सुगनचन्दजी कांकरिया का भी विशेष सहयोग रहा।

**—श्री गौतमचन्द ओस्तवाल**

**मद्रास** : यहां जैन भवन में श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्यायी संघ की ओर से महासती श्री केसरदेवीजी के सान्निध्य में २२ जुलाई से २४ जुलाई तक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ८५ स्वाध्यायियों ने भाग लिया। श्री धर्मचन्दजी जैन, श्री प्रकाशचन्दजी ललवाणी, श्री अशोक कुमारजी जैन, श्री सागरमलजी पींचा का अध्यापन में तथा श्री नथमलजी दूगड़, श्री भंवरलालजी गोठी, श्री भीकमचन्दजी बाफना, श्री माधोमलजी सेठिया आदि का परीक्षण कार्य में सहयोग रहा। शिविर का कुशल संचालन श्री देवीलालजी बम्ब ने किया।

**—देवीलाल बम्ब**

**डीसा** : यहां श्री गुणरत्न विजयजी म० के सान्निध्य में ३१ जुलाई से २१ नवम्बर तक प्रत्येक रविवार को धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन करने का निश्चय किया गया है। इसमें १५ से ४५ वर्ष तक की आयु के लोग भाग ले सकेंगे।

# संक्षिप्त समाचार

**मद्रास** : श्री महावीर अहिंसा प्रचार संघ के मंत्री श्री के० सी० सेठिया की विज्ञप्ति के अनुसार भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के आयात-निर्यात विभाग के चीफ कन्ट्रोलर ने अपने १ जुलाई, १९८३ के पत्र में इस बात का खण्डन किया है कि औषध, अनुसन्धान एवं औषधि-अनुसन्धान हेतु ६ पौण्ड से अधिक वजन वाले बन्दरों के निर्यात पर से प्रतिबन्ध हटा लिया गया है। उन्होंने आगे लिखा है कि वर्तमान में बन्दरों के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा हुआ है और इसे हटाने का सरकार का कोई इरादा नहीं है। समाचार पत्रों में जो समाचार छपे हैं वे २५ वर्ष पूर्व दिनांक २५ फरवरी, १९५८ में आयात-निर्यात के सहायक मुख्य नियंत्रक द्वारा जारी की गई प्रेस विज्ञप्ति से सम्बन्धित हैं।

**नासिक** : यहां आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० एवं युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी के सान्निध्य में चातुर्मासिक धर्माराधना का विशेष कार्यक्रम बनाया गया है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह को स्वाध्याय सप्ताह के रूप में, दूसरे सप्ताह को सामायिक सप्ताह के रूप में, तीसरे सप्ताह को साधना सप्ताह के रूप में तथा पक्ष में एक बार प्रत्येक पक्खी को दया दिवस के रूप में मनाने का है।

**इन्दौर** : यहां जैन संघ की ओर से महावीर भवन में मद्रास के समाजसेवी श्री खींवराजजी चोरड़िया एवं श्री सायरमलजी चोरड़िया को अभिनन्दन-पत्र भेंट कर विशेष सम्मान किया गया। आप दोनों ने महावीर स्वास्थ्य-परीक्षण केन्द्र का अवलोकन कर ५-५ हजार का आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

**मद्रास** : जैन धर्म के अध्यापन में रुचि रखने वाले हिन्दी भाषा-भाषी योग्य अनुभवी शिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता है। सम्पर्क सूत्र-मंत्री, श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ, ३४८ मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास-६०००७९।

**उज्जैन** : यहां भर्तृहरि समारोह के अवसर पर मध्यप्रदेशीय संस्कृत प्रचार समिति की ओर से जैन धर्म दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान् हरीन्द्रभूषण जैन का भावभीना सम्मान किया गया।

**रतलाम** : आचार्य श्री माधव मुनिजी का दीक्षा शताब्दी समारोह इस वर्ष मनाया जा रहा है। उनके जीवन और साहित्य के सम्बन्ध में जिनको कोई

विशेष जानकारी हो, वे कृपया उनके स्मृति-ग्रंथ में प्रकाशनार्थ सामग्री, मंत्री, धर्मदास जैन मित्र मण्डल, ८० नौलाईपुरा, रतलाम के नाम पर भेजें।

**इन्दौर** : यहां तपस्वी श्री लालचन्दजी म० सा०, कानमुनिजी म० सा० एवं गुलाबमुनिजी म० सा० का क्लार्क कालोनी, परदेसीपुरा में चातुर्मास है। आपके सान्निध्य में धार्मिक शिक्षण, शान्ति जाप, भक्तामर पाठ के विविध कार्यक्रमों के साथ तपस्याओं का जोर है तपस्वी श्री लालचन्दजी म० सा० ने २३ जुलाई से एकान्तवास एवं मौनपूर्वक तपस्या आरम्भ की है।

**—माणकचन्द पोखरना**

**भोपालगढ़** : श्री जैनरत्न नवयुवक सेवा संघ द्वारा आयोजित "युवक एवं युवती वर्ग धर्म से अलग क्यों हो रहा है?" विषयक निबन्ध प्रतियोगिता में श्री राजेन्द्रकुमार जैन, बीकानेर प्रथम, कु० पारूल ठोलिया, बैंगलोर द्वितीय तथा कैलाश श्रीश्रीमाल, भवानीमण्डी तृतीय रहे हैं। पुष्पा गौरेचा, मेघनगर, प्रकाशचन्द पगारिया, पलाना कलां और विमलचन्द बोरान्दिया, जस नगर को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

**—गौतमचन्द ओस्तवाल**

**आकोला** : "आधुनिक परिवेश में महावीर के सिद्धान्तों की उपादेयता" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई है। १०००, ७५० व ५०० रुपयों के प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार रखे गये हैं। २०० रुपयों के ५ सांत्वना पुरस्कार हैं। निबन्ध २८ अक्टूबर, ८३ तक प्रवेश शुल्क ५ रु० के पोस्टल आर्डर के साथ राकेट प्रकाशन आकोला-३१२२०५ (चित्तौड़गढ़) के पते पहुँच जाना चाहिये। राकेट प्रकाशन द्वारा "**श्रमण महावीर**" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

**राजनाँदगाँव** : स्थानीय समता मंच के तत्वावधान में १४ सितम्बर, ८३ को छत्तीसगढ़ अँचल के जैन युवक, युवतियों का एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसमें मुख्य रूप से जैन युवक, युवतियों को सामाजिक, धार्मिक, साँस्कृतिक एवं रचनात्मक दिशा देने, सामजिक कुरीतियों को दूर करने, अश्लील साहित्य के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाने आदि विषयों पर विचार किया जायेगा। इस अवसर पर अत्र विराजित घोर तपस्विनी सती श्री कस्तूरकँवरजी म० सा०, विदुषी सती श्री चन्दनबालाजी म० सा० आदि ठाणा ६ के दर्शनों एवं प्रवचनों का सहज ही लाभ प्राप्त होगा।

**—महेश दिनेश नाहटा**

# शोक-संवेदना

**अजमेर** : यहां के प्रतिष्ठित श्रावक अग्रणी समाजसेवी, प्रमुख उद्योगी सेठ भागचन्दजी सोनी का ३ अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। आप राजस्थान के ही नहीं, वरन् भारत के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। दिगम्बर जैन समाज को आपकी विशिष्ट सेवाएँ रही और वर्षों तक महासमिति के अध्यक्ष रहे। आपके निधन से जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

**ब्यावर** : यहां के प्रतिष्ठित श्रावक श्री पूनमचन्दजी बाबेल का ४ अगस्त को ८५ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आप स्थानकवासी श्रावक संघ के वरिष्ठ सलाहकार एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता थे।

**इन्दौर** : सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं सुश्रावक श्री नेमनाथजी जैन के नवविवाहित २४ वर्षीय सुपुत्र श्री छविकुमारजी का दु.खद निधन हो गया। आप होनहार युवक थे।

**जयपुर** : ७ अगस्त को श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ की साधारण सभा की सम्पन्न बैठक में संघ के मंत्री श्री गुमानमलजी चौरड़िया के मातुश्री श्रीमती मीनादेवी के आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री मीनादेवी जैन का समाज की अनेक संस्थाओं की स्थापना में योगदान रहा है। वे सदैव जरूरतमन्द व्यक्तियों की सहायता को तत्पर रहती थीं। इस सभा की अध्यक्षता श्री इन्दरचन्द जी हीरावत ने की। सर्वश्री डॉ० नरेन्द्र भानावत, कन्हैयालालजी लोढ़ा, सन्तोषचन्दजी कर्णावट, विनोदकुमारजी सेठ, चुन्नीलालजी ललवाणी, मोहनलालजी मूथा, डॉ० चैनसिंह बरला व पं० दयाशंकरजी ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए समाज के सभी वर्गों से आह्वान किया कि वे श्रीमती मीनादेवी के जीवन से प्रेरणा लें।

**—पदमचन्द कोठारी**

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि एवं परिवारजनों के प्रति सवेदना व्यक्त करते हैं।

**—सम्पादक**

# साभार-प्राप्ति-स्वीकार

## "जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु०

१. श्री मानसिंह डागरिया—जलगाँव (महाराष्ट्र)
२. श्रीमती शीला पारवानी—लखनऊ (उ० प्र०)
३. श्री नेमीचन्द जी जैन—नई दिल्ली
४. श्री उगमकँवर जैन—जोधपुर (राज०)
५. श्री पारसमल जी खाटेड़—पाली (राज०)
६. श्री झुंबरलाल जी मगराज जी कांकरिया—जलगाँव (म० रा०)
७. श्री चम्पालाल जी मंगलकुमार जी पिरोदिया—रतलाम (म० प्र०)
८. श्री नरेन्द्रकुमार जी अनिलकुमार जी कर्नावट—बम्बई
९. श्री सोहनलाल भादरमल ढेलडिया—बालोतरा (राज०)
१०. श्री भँवरलाल जी महेन्द्रसिंह जी जैन—कोटा (राज०)
११. श्री हुकुमचन्द जी जैन—बम्बई

## (भेंट एवं सहायता)

१००१) श्री इन्दरचन्द जी सा० हीरावत—जयपुर, पूज्याचार्य श्री के आँख का सफल आपरेशन होने की खुशी में भेंट।

५०१) श्री गुमानमल जी, उमरावमल जी, राजमल जी चोरड़िया, जयपुर, आपकी माताजी श्रीमती मीनादेवी जी धर्मपत्नी स्व० श्री स्वरूप जी सा० चोरड़िया की पुण्य स्मृति में भेंट।

३५१) श्री नथमल जी ढड्ढा—जयपुर, आचार्य श्री के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

२५१) श्री मूलचन्द जी प्रसन्नचन्द जी बाफना—जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री सुगनचन्द जी बाफना की पुण्य स्मृति में सप्रेम भेंट।

१५१) श्री मोहनराज जी सा० बालिया—जयपुर, श्रीमती रेणु बालिया धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रकुमार जी के अठाई-तप करने की खुशी में भेंट।

१५१) श्री मांगीलाल जी मीठालाल जी गोलेछा—गिरी (पाली) श्रद्धेय गुरुदेव पूज्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री नथमल जी जीवराज जी बरडिया—धूलिया (म० रा०) पुत्र वधू सौ० पदमा बाई श्री कांतीलाल जी बरडिया के ९ उपवास की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

१०१) श्री जवाहरलाल जी बैगानी—जयपुर, श्रीमती पुखराज कंवर बाई के अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५१) श्री एस० भंवरलाल जी बागमार—मद्रास, अपने सुपुत्र के विवाह के उपलक्ष में सादर भेंट।

५१) श्री पुरामल जी स्वरूपमल जी सिंगी—मनमाड़ (म० रा०) धर्मपत्नी स्व० शान्ताबाई सिंगी की स्मृति में भेंट।

५१) श्री पूनमचन्द जी बैद—जयपुर, श्रीमती मीनादेवी धर्मपत्नी श्री पूनम चन्द जी बैद के ९ उपवास की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५१) श्री आर प्रसन्नचन्द श्री चोरड़िया—मद्रास, पूज्य पिताजी श्री एस० रतनचन्द जी चोरड़िया की पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्री दलीचन्द जी हस्तीमल जी चोरड़िया—जलगाँव, आपने ता० २०–५–८३ को ५१ वर्ष में पदार्पण किया, जिसके उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

५१) श्री गोतमचन्द जी ओस्तवाल—मद्रास, पूज्य महासती जी श्री १००५ श्री मैना सुन्दरी जी म० सा० के पावन सानिध्य में विरक्ता बहिनें पूर्णिमा सविता तथा अन्जुलता की तपस्या के उपलक्ष में इन्हीं तपस्विनी बहिनों की तरफ से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

५१) श्री मांगीलाल जी मीठालाल जी गोलेछा—गिरी (पाली) सौ० शशिकला (सुपौत्री श्री मांगीलाल जी गोलेछा) का शुभ विवाह चि० राजेन्द्रकुमार बोथरा (सुपुत्र श्री नौरतमल जी बोथरा) ब्यावर निवासी के साथ २ जुलाई, ८३ को सानंद संपन्न होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री रतनराज जी धनराज जी रांका, बम्बई, पूज्य आचार्य श्री के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

५०.) श्री मोतीलाल जी प्यारचन्द जी रांका—सैलाना (म० प्र०) श्री रतन लाल जी रांका की धर्मपत्नी एवं भाई डाडमचन्द जी की अठाई तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

२१)२५ श्री विजयचन्द जी कमलचन्द जी पारख—बीकानेर (राज०) श्री साधुमार्गी जैन बीकानेर श्रावक संघ के भू० पू० उपाध्यक्ष एवं किराने के थोक व्यापार के प्रमुख व्यवसायी श्री जेठमल जी सा० पारख (श्री बुलाकीचन्द जी) का ५-८-८३ को दोपहर में आकस्मिक स्वर्गवास हो गया, उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

२१) श्री प्रसन्नराज जी मगराज जी मेहता—पीपाड़ शहर (जोधपुर) पूज्य पिताजी श्री रूपचन्द जी मेहता के स्वर्गवास की स्मृति में भेंट।

२१) इन्दरचन्द जी पुत्र श्री दीपचन्द जी—अशोकनगर, पूज्य माताजी कमरबाई के स्वर्गारोहण के उपलक्ष में जिनवाणी को सादर भेंट।

२१) श्री नारमल जी अबीरचन्द जी रांकरिया—मेड़ता सिटी, पूज्य गुरुदेव श्री मरुधर केशरी म० सा० के चातुर्मास में श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नी श्री अबीरचन्द जी की मास खमण की तपस्या में भेंट।

११) श्री स्थानकवासी जैन संघ C/o श्री माणकचन्द जी पोखरना—इन्दौर, तपस्वी श्री लालचन्द जी म० सा० के १७ उपवास चालू होने की खुशी में भेंट।

११) श्री कालूराम जी हरकचन्द जी—अलीगढ़ (टोंक) श्रीमती केशरबाई ऊगेन वाले के ११ दिन के उपवास के उपलक्ष में भेंट।

११) श्री रमणलाल जी कटारिया—बावड़ी (झाबुआ) भाई श्री तिलोकचन्द जी कटारिया की धर्मपत्नी सौ० श्रीमती चन्द्रकान्ता सैलाना के ११ उपवास का पारना १३-८-८३ को हुआ, उसके उपलक्ष में भेंट।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

**(साहित्य प्रकाशन—आजीवन सदस्यता ५०१ रु०)**

१. श्री मनोहरसिंह जी सौभागसिंह जी जैन, जयपुर।
२. श्री एस० के जैन, दिल्ली-६।
३. श्री किशोरमल जी जसवन्तमल जी सुराणा, बीकानेर।
४. श्री पारसमल जी खाटेड, पाली मारवाड़। •

# ❀ अनुक्रमणिका ❀

## ☐ प्रवचन / निबन्ध ☐



## ☐ बोध कथा / प्रसंग / सूक्ति ☐



## ☐ उपन्यास ☐



## ☐ कविता ☐



## ☐ प्रतिवेदन ☐



## ☐ स्तम्भ ☐

# जिनवाणी

□

**अहे वयइ कोहेण,**
**माणेण अहमा गइ ।**
**माया गइ पडिग्घाओ,**
**लोभाओ दुहओ भयं ।।**

—उत्तराध्ययन ६/५४

क्रोध से आत्मा नीचे गिरती है, मान से अधम गति प्राप्त करती है, माया से सद्गति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है और लोभ से इस लोक व परलोक दोनों में ही भय-कष्ट होता है ।

□

**अक्टूबर, १९८३**
वीर निर्वाण सं० २५०९
आश्विन, २०४०

**वर्ष : ४०** • **अंक : १०**

मानद सम्पादक :
**डॉ० नरेन्द्र भानावत,** एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
**डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,**
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
**प्रेमराज बोगावत**

संस्थापक :
**श्री जैनरत्न विद्यालय,** भोपालगढ़

प्रकाशक :
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**
बापू बाजार दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)

फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
**जयपुर-३०२ ००४** (राजस्थान)

फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
**फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
जयपुर–३०२००३

**नोट :** यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

# शक्ति के साथ शील आवश्यक*

□ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

धर्म प्रेमी बन्धुओ एवं बहिनो !

लम्बे अर्से से आप लोग हम सन्तों के धार्मिक प्रवचन सुनते आ रहे हैं। अब यह वर्षा काल का उतार का समय आया है। लगभग ३ मास का समय पूरा होने में बहुत अल्प समय अवशेष है। यदि बराबर का टाइम होता तो अब एक महीना, सवा महीना का काल ही चातुर्मास का शेष रहता। लेकिन बढ़े हुए मास के कारण आपको २ मास का समय पूरा बाकी मिलता है, लेकिन इतना तो जरूर है कि—

बहु बीता थोड़ा रहा, थोड़ा छिन-छिन जाय।
नाटकिया धुन में कहे, अब तो सुरत सम्भाल।।

यह जीवन की नाटकशाला का पाठ है। आप हम संसार की इस नृत्य-शाला में पार्ट अदा करने वाले नर्तक हैं, अभिनेता हैं, खेल करने वाले हैं। न मालूम कर्मों के चक्र ने आपसे, हमसे किन-किन रूपों में कैसे-कैसे खेल करवा लिये। अब भी हम खेल करते रहे, नृत्य करते रहे, यदि जिन्दगी इसी में समाप्त करदी और अपने आप स्वतन्त्र, सिद्ध, बुद्ध, आनन्दधाम पद को पाने में मोहताज बने रहे तो हमारा मानव जीवन पाना कोई मूल्यवान नहीं होगा। इसलिए मानव जीवन को मूल्यवान कैसे बनाना, इसका थोड़ा चिन्तन करना है।

अनेक प्रांतों, नगरों और क्षेत्रों के धर्म प्रेमी बन्धु अभी यहां उपस्थित हैं। अनेक अपना क्षेत्र फरसने की विनती लेकर आये हैं। अनेक दर्शन करने आये हैं। अनेक प्रवचन सुनने आये हैं। तो कई अपनी प्रेरणा और साधना मार्ग को आगे बढ़ाने आये हैं। अनेक बन्धुओं का आगमन हुआ है। वह आगमन खाली न जाय, दर्शन करके रवाना न हो जायं। कुछ लेकर-देकर आपका जाना हो तो समयोचित रूपक बन सकता है।

हम संतजन आपके सामने अपने चिन्तन के माफिक अपने विचार, विवेक

*जलगाँव में २५ सितम्बर, १९८२ को दिया गया प्रवचन। श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

के माफिक हमको किस बाबत अधिक आवश्यकता आगे दिखती है, उस ओर प्रेरणा करते हैं। इसके साथ हमारी प्रेरणा को, हमारे उपदेश को, हमारे संदेश को समाज में कार्य रूप में कैसे ढालना, उसके लिए आपको भी चिंतन का अवसर हो सकता है। आप भी इसके लिए कुछ चिन्तन करें, युवक समाज के सामने कुछ विचार रखें, अपनी वर्तमान पीढ़ी के संचालकों के सामने कुछ कदम रखें और समाज के वर्तमान ढांचे को, समाज की रीति, नीति और प्रीति को कैसे सुसंस्कार की ओर जमाया जाय, आज यह विषय सबसे ज्यादा चिंतनीय हो रहा है। अन्यथा संसार में जैसी तरक्की हो रही है, संसार का बढ़ा हुआ वैभव और संसार में बढ़ा हुआ विज्ञान, अपने ही साधन अपने लिए खतरनाक न हो जायं, यह चिन्ता का विषय है।

**आज का पुरुषार्थ :**

आज मानव जीवन ऐसा है कि अपने पुरुषार्थ से अपनी मौत को नजदीक ला रहा है। छोटी-मोटी तलवार से, बन्दूक से लड़ाइयों में युद्ध कर मानव जितने समय में अपने साथियों को खत्म कर पाता था, उसके बजाय आज ऐसे अस्त्र-शस्त्र, बम आदि का निर्माण हुआ है जो थोड़े से क्षणों में अनेकों को नष्ट कर देता है। एक खेल खत्म करता है और मन में राजी होता है, तो दूसरा सोचता है कि मैं भी जब तक बदला न लूं तब तक आदमी नहीं हूं।

आज के मानव युग की बात बताऊँ। आज का मानव परिश्रम करता है, उसकी श्रम साधना है पर वह एक प्रकार से अपने संहार का साधन हो रही है।

**दो असुरों की कथा :**

पुराण में इस बात को समझाने के लिए दो असुरों की कथा आई है। एक असुर का नाम था सुंड और दूसरे का नाम था उप-सुंड। वे दोनों घूमने निकले। उन्होंने गौरी पार्वती को देखा जो महेश्वर महादेव की पत्नी थी। गौरी आकार-प्रकार, लावण्य में चित्ताकर्षक थी। उसे देखकर दोनों का मन ललचाया। उन्होंने सोचा कि इधर-उधर आदिवासियों को लूटने-खसोटने से क्या आना-जाना है। चलो फक्कड़ बाबा के पास। उनकी पत्नी देवी स्वरूप पार्वती है, उसको ले लेना है। उन्होंने सोचा कि पार्वती को लेने के लिए तो शक्ति चाहिए। जब तक शक्ति न हो, तब तक दूसरे पर कब्जा नहीं किया जा सकता, विजय नहीं मिलाई जा सकती, अपने काम को पूरा नहीं किया जा सकता, इसलिए शक्ति मिलानी चाहिए। उन्होंने कहा कि शक्ति मिलाने के लिए तपस्या करें।

इस बात को आप भी जानते होंगे कि तप में कितनी ताकत है। तपस्या ऐसी चीज है जिससे दुनिया में अपूर्व शक्ति मिल सकती है। यदि धन चाहिए,

यदि मान चाहिए, यदि शान्ति चाहिए, यदि सिद्धि चाहिए तो सबका साधन क्या है ? तपस्या । जो चीज दूर से दूर है, जो कठिनाई से मिलने वाली है, वह किससे मिलने वाली है ? तपस्या से ।

यह बात दोनों असुर सुन्ड और उपसुन्ड के दिमाग में आई । उन्होंने सोचा कि तपस्या करो । उनके दिल में लगन थी, निष्ठा थी । असुर अपने मतलब में बड़े धुनी थे । तपस्या करना और जब तक सिद्धि न मिल जाय तब तक नहीं उठना ।

**शिक्षा से भी ज्यादा आवश्यकता संस्कारों की :**

बोलो भाई, धुन के पक्के हों तो कौनसा काम नहीं होता ? हजारपति लखपति हो सकता है, लखपति करोड़पति हो सकता है । आप जन्म से ही क्या लखपति, करोड़पति हो गए ? कहाँ कैसे हुए ? कभी शायद हजारों का भी घर में जुगाड़ नहीं होगा, लेकिन अपनी मेहनत से लाखों की सम्पत्ति जोड़कर उस पर बैठने लायक हो गये । वह काम तो हो गया । क्या इतना कठिन काम शासन सेवा का, धर्म का है, जो आपके लिए कठिन हो । आज आवश्यकता किसकी है ? शिक्षा से भी ज्यादा आवश्यकता संस्कारों की है ।

दो चीजें हैं शिक्षा और संस्कार । शिक्षा तो दानव में भी होती है । आज का विज्ञान का युग बताता है कि शिक्षा तो पशुओं और पक्षियों में पाई जाती है । कभी भाइयों ने पुलिस थाने में कुत्ते को बंधा हुआ देखा होगा । पुलिस के सिपाही और गुप्तचर जिस केस का पता नहीं लगा सके, उसका पता कुत्तों ने लगा लिया और ईमानदारी से लगा लिया । आदमी भूल खा सकता है । आजकल अधिकांश लोग खुदगर्जी से रहने वाला हो गया, हो सकता है कोई लेवे या नहीं लेवे, लेकिन लेने वाला लेकर भी ईमानदारी से शासन का, राज्य का, देश का काम करे या न करे, भगवान भरोसे ।

लेकिन एक जानवर आज भी ऐसा है जो पूरा टुकड़ा नहीं मिलने पर भी ईमानदारी से काम करता है । आप इसको तमाशे में मत लें । तो मैं कह रहा था कि शिक्षा तो जानवर में भी है । आप पता नहीं लगा सके कि चोर ने चोरी कैसे की या खून किसने किया और खून करके कहाँ भाग गया । आप उसके पैरों के चिह्न से या कपड़ों की गंध से पता लगा सकें या नहीं लगा सकें, लेकिन वह माई का लाल जानवर कहलाता है लेकिन उसको इतना तजुर्बा है कि आपने उसको एक बार खूनी या चोर का कपड़ा सुंघा दिया तो सौ कोस पर चले जाने पर भी अपराधी के पीछे लगकर उसके कपड़े पकड़ लेगा, खड़ा हो जायगा और बतायेगा कि यह वही आदमी है जिसने खून किया ।

मैं कह रहा था कि शिक्षा जानवर में भी होती है और पक्षी में भी होती है जो आजकल शान्ति दूत का काम करता है—कबूतर। नेहरू के जमाने में कबूतरों को शिक्षा दी गई, जो एक देश से दूसरे देश को पत्र ले जाते हैं। लेकिन उसमें क्या कमी है जिसके कारण वह जानवर कहलाये। एक बात यह है कि हमारे नौजवान थोड़ा पढ़ना, लिखना, बोलना आ गया तो अकड़ाई में नहीं आवें। ठीक है, शिक्षा तो जानवर को मिल सकती है लेकिन शिक्षा के साथ जब तक संस्कार नहीं आयेंगे तब तक मानव नहीं कहला सकेंगे। देव कहलाना तो दूर की बात है।

**विचारों को अमली रूप दें :**

टाइम-घड़ी दौड़ रही है। मुझे अपनी बात संक्षेप में कहनी है। आपका भी सुनने का टाइम आ गया है, आप भी विचार करेंगे। हीरा मुनिजी कहते हैं कि सुनकर १५, २० मिनट तक मनन करें, फिर बच्चे-बच्चियों को घर में समझावें। कुछ युवकों की इच्छा हुई है कि कार्यान्वित रूप से सन्तों के व्याख्यान का मनन करेंगे और सोचेंगे कि व्याख्यान के विषय को अमली रूप कैसे दिया जाय। क्योंकि खाने वाले को सोचना पड़ता है कि यदि कतली किसी ने खिलाई, कलाकन्द किसी ने खिलाया, दो कतली ज्यादा खा ली तो खाने वाले को सोचना पड़ता है कि उसको कैसे पचाया जाय। वरना कहीं टट्टियां नहीं लग जायं। पचाने वाला विचार करता है। इसी तरह व्याख्यान के विषय में सुनने वाले को सोचना पड़ेगा कि चिन्तन कैसे किया जाय और समाज में उसे अमली रूप कैसे दिया जाय। इसका अनुभव अपने अनुभव से करेंगे। गहराई से सोचेंगे और बाद में जो चीज सोच ली उसको कार्यरूप में परिणत करने का निश्चय करेंगे। ऐसा करेंगे तो हमारा व्याख्यान सुनना आपके लिए सार्थक हो जायगा।

मैं सामायिक और स्वाध्याय की बात कहता हूँ। लेकिन आपने भी मनन किया या नहीं ? ऐसा है कि घोड़ा भी चलाये चलता है और टट्टू भी चलाये चलता है। लेकिन जब आपका भीतर का प्रयास हो, दर्द हो, स्वाध्याय कैसे करना, क्यों करना और स्वाध्याय के द्वारा हमारे मन में शान्ति कैसे आवे, पवित्रता कैसे आवे, हमारे मन में संस्कार कैसे जगें, यह सब प्रयास करने पर होगा।

**शक्ति के साथ शील आवश्यक :**

मूल बात शायद आप भूले नहीं होंगे। दो असुरों की बात चल रही थी। दोनों असुर शिक्षा पाये हुए थे लेकिन उनके संस्कार कैसे थे ? मारो, लूटो, तपस्या करने वालों की तपस्या भंग कर दो। यज्ञ मत करने दो, तपस्या मत करने दो, आगे मत बढ़ने दो। यह उनका एक मात्र उद्देश्य था। आप तो एक सामा-

यिक लेकर बैठते हो तब भी अगल-बगल देखते हो, लेकिन उन्होंने तपस्या में लगन लगाई और आशुतोष की आराधना करने लगे। भोले बाबा प्रसन्न हुए और उनसे कहा कि तुम्हारी तपस्या सिद्ध हुई, जो तुम चाहो सो माँग लो, तथास्तु। उन्होंने कहा कि हम चाहते यह हैं कि हमारे पास सेना नहीं, वैभव नहीं, हमसे लड़ने वाले बहुत आते हैं। हम पर ऐसी कृपा कीजिये कि हम जिसके सिर पर हाथ रख दें वह भस्म हो जाय, राख की ढेरी हो जाय। महादेव ने आगे-पीछे का परिणाम जरा भी सोचा नहीं और तथास्तु कह दिया।

अब क्या था ? उन असुरों ने सोचा कि अब तो शक्ति पास में आ गई है, तलवार, बन्दूक और बम की जरूरत नहीं है। जिसके सिर पर हाथ रखेंगे वही साफ हो जायगा। शक्ति मिल गई, लेकिन उसको पचाना मुश्किल हो गया।

एक सेठ पहले जब मामूली हैसियत में था तब गली में से निकलते समय हरेक से जय जिनेन्द्र करता। लेकिन जब वह लखपति, करोड़पति हो गया तब गली में से निकलते समय लोग हाथ जोड़ते। उनका उत्तर एक हाथ ऊँचा करके ही देता। कोई उसको हाथ जोड़े, पग पड़े, शेरसिंहजी कहकर पुकारे तो भी अब तो उसको सुनने की फुरसत नहीं थी। कोई उसके यहाँ जाता तो बोलता कि अभी तो फुरसत नहीं है, फिर आना। ऐसे माई के लाल विरले ही होते हैं जो धन और मान पाकर शान्त और गम्भीर रहते हैं और अपने देश और समाज के लिए तिल-तिल कर पिल जाते हैं।

उन असुरों ने देखा कि अब तो शक्ति मिल गई, गौरी को लाना है। वे महादेव के पीछे लग गये। महादेव सोचने लगे कि मेरे हाथ के बोये हुए कांटे मेरे को ही लगे हैं। आगे-आगे महादेव दौड़े और पीछे-पीछे असुर दौड़े। दौड़ते-दौड़ते देवलोक में आये। विष्णु ने पूछा कि बाबा कैसे दौड़ रहे हो ? पसीना-पसीना हो गये हो ? उन्होंने कहा कि पूछो ही मत कि मेरे में क्या बीत रही है। मेरे बोये हुए कांटे मेरे ही लग रहे हैं। बाबा आपने ऐसा क्या किया ? तब बाबा कहने लगे कि भाई, मैंने दो असुर छोकरों की तपस्या पर प्रसन्न होकर उनको इस तरह का वरदान दे दिया कि वे जिसके सिर पर हाथ रखेंगे, वह भस्म हो जायगा पर वे मेरे ही पीछे पड़ गये। वे मुझे भस्म कर देंगे और मेरी प्रिया गौरी पार्वती को हरना चाहते हैं। आप कोई रास्ता निकालो। विष्णु ने कहा कि बस यही बात है। आप फिक्र मत करो। शान्ति से बैठ जाओ। बाबा बैठ जाते हैं। विष्णु ने कहा कि हर किसी पर प्रसन्न होने और अपना चमत्कार बताने की बात बाबा भूल जाओ।

विष्णु मैदान में खड़े हो गए। वे दोनों असुर दौड़ते-दौड़ते आये और पूछने लगे कि अरे भाई ! मसानी बाबा को देखा क्या ? कौनसा मसानी बाबा ?

अरे हाँ, वही जो नशा करता है और सांपों को गले में लटकाये घूमता है, वही क्या ? हाँ वही। अरे उसका क्या ठिकाना है ? तुम पागल हो गये क्या ? तुम्हारे पास उसको जीतने का साधन है क्या ? हाँ, हमारे पास उन्हीं के दिये हुए वरदान का साधन है। हम जिसके सिर पर हाथ रखेंगे वही भस्म होकर राख की ढेरी हो जायगा। विष्णु ने कहा कि वह तो नशेबाज है, उसके पास देने-लेने का पता नहीं है। पहले अजमाइश कर लो कि उसका दिया हुआ वरदान सच्चा है या झूठा है ? वे असुर थे, पाछल मति वाले थे। वे दोनों ही सोचने लगे कि पार्वती मिल गई तो उसको रखेगा कौन ? सुंड ने कहा कि मैं लूंगा, उपसुंड ने कहा कि मैं लूंगा। लेने की चीज एक हो और लेने वाले दो हो तो बँटवारे के लिए आपस में झगड़ा खड़ा होता है। वे सोचने लगे कि ये विष्णु जो बात कह रहे हैं वह ठीक है, अनुभवी हैं। अपना पहले फैसला कर लें कि पार्वती को कौन लेगा ? दोनों असुर आमने-सामने खड़े हो गये। सुंड कहता है कि पार्वती को मैं लूंगा, मैं बड़ा हूं। उप सुंड कहता है कि तू तो बूढ़ा हो रहा है, पार्वती को मैं लूंगा। दूसरा कहने लगा, जाने दे बात छोटे के लिए नहीं थी, अभी भस्म हो जायगा। ऐसा कहते-कहते बड़े ने छोटे के सिर पर हाथ रख दिया। छोटा भी कहाँ मानने वाला था, उसने बड़े के सिर पर हाथ रख दिया। दोनों ही देखते-देखते ढेर हो गये।

**विज्ञान का मोड़ बदलें !**

संसार विज्ञान के ज्ञान का मोड़ बदल दे तो बचेगा अन्यथा कहीं ऐसा न हो कि सुंड और उपसुंड की तरह अपने ही हाथों समाप्त हो जाय। अमेरिका रूस पर और रूस अमेरिका पर हाथ रखे और एक-दूसरे को खत्म कर दे। संस्कारों को इसीलिए आवश्यक बताया है कि गलत रास्ते पर जाने वालों को रोक दें। कम से कम जैन समाज में जन्म लेने वाले तो इस बात को समझें। शिक्षा के साथ-साथ संस्कार लेकर अपना जीवन शान्त, उपशान्त और पवित्र बना लें। मानव में जो पागलपन है, भोग-लिप्सा है, अर्थ-लिप्सा है उसको समाप्त करके ज्ञान-लिप्सा, आनन्द और शक्ति को जग-मगावें। यदि आप स्वाध्याय, सामायिक क्रिया की ज्योति को जगा कर, आगे आकार व्याख्यान पर चिन्तन मनन करके जीवन में उतारने का प्रयास करेंगे तो यह कार्यक्रम आनन्दमय होगा और आपके संस्कारों को उन्नत करेगा। जो ऐसा करेंगे वे लोक और परलोक में आनन्द व शान्ति प्राप्त करेंगे।

———

उद्बोधन :
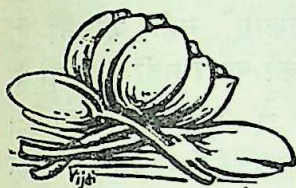
# विवेक और परीक्षा*

□ पं० र० श्री हीरामुनि

[आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के विद्वान् शिष्य]

**जीवन-निर्माण की कला :**

संसार के परम उपकारी, घट-घट के जीवन के भावों को जानने वाले, अनन्त करुणा के सागर तीर्थंकर भगवन्त ने युगलिक काल समाप्त होने पर अनेक-अनेक कलाओं का निर्माण किया। आदि युग में कल्प वृक्ष की क्षीणता होने के पश्चात्, यदि आपने इतिहास की जानकारी की हो तीर्थंकर भगवान् ऋषभ ने गृहस्थावस्था में स्त्रियों के लिये ६४ और पुरुषों के लिये ७२ कलाओं का निर्माण किया। घट कैसे बनाया जाता है, मकान कैसे बनाया जाता है, सोने-चांदी के आभूषण कैसे बनाये जाते हैं, जीवन-निर्माण के लिये अन्न का उत्पादन कैसे किया जाता है, इस तरह राज-राजेश्वर के पद पर रहते हुए उन्होंने अनेक कलाओं की बात कही। लेकिन नीतिकार महापुरुष ने कहा कि भाई एक नहीं, दो नहीं, ७२ कलाओं में भी पारंगत हो जाय तब भी जीवन-निर्माण की कला नहीं सीखी है तो सारी कलाएँ बेकार हो जायेंगी। नीति के इन वचनों को भी याद करें जिनमें कहा गया है—

"कला बहत्तर पुरुष की, तामे दो सरदार।
एक जीव आजीविका, एक जीव उद्धार।।"

अनेक कलाएँ हैं। शरीर बनाने की भी हैं, शृंगार सजाने की भी हैं, घोड़े की चाल और घोड़े की परीक्षा करने की भी हैं तो रत्नों का निर्माण और उनका वास्तविक उपयोग करने की भी हैं, इन सब कलाओं के प्रमुखता से भेद किये जायँ तो शास्त्रकार ने कहा कि दो भेद किये जा सकते हैं। अनेक कलाएँ मिलकर एक काम करती हैं और एक कला मिल कर भी एक काम करती है। ७२ कलाओं को एकत्रित कर दीजिये, सारी कलाएँ जैसे जीवन-निर्वाह की, तन परीक्षा की, गज परीक्षा की, नारी परीक्षा की, सुन्दरता की परीक्षा की।

* जलगांव में २९-९-१९८२ को दिया गया प्रवचन। श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

ये सारी कलाएँ सीखलीं लेकिन यदि जीवन-निर्माण की कला नहीं सीखी तो सारी कलाएँ बेकार हैं। इसलिये सच्चा कलाकार वही है जिसने जीवन का निर्माण किया है। ७२ कलाएँ पाने के बाद भी जीवन की कला नहीं सीखी तो चक्रवर्ती नरक के गड्ढे में चले गये। लेकिन जो ७२ कलाएँ नहीं जानता है, घोड़े की परीक्षा की कला नहीं जानता है, उत्पादन की कला नहीं जानता है, लेकिन जीवन-निर्माण की कला जानता है तो संसार से पार हो जाता है। जिन्होंने जीवन की कला सीखी है, उनको उत्तम कहा गया है। जिन्होंने नहीं सीखी है उनको अधम कहा गया है।

**अपजात पुत्र :**

मूल प्रश्न आपके सामने रखूँ जिसके बारे में चार दिन से चिन्तन कर रहे हैं।

"चत्तारी सुया पन्नत्ता तंजहा-अइजाए, अनुजाए,
अवजाए, कुलिंगारे।"

चार दिन से बार-बार इसको इसलिये दोहरा रहा हूँ कि शायद आपको भी मेरा पाठ याद हो जाय। चार प्रकार के पुत्र हैं—अतिजात, अनुजात, अपजात और कुलांगार। प्रथम दो का वर्णन कर चुके हैं। इसलिये आज तीसरे की बात कहनी है।

तीसरे का नाम रखा गया है, अपजात अर्थात् जिस पुत्र के कार्यभार संभाल लेने पर, जिस पुत्र की अवस्था सयानी होने पर और पिता के मौजूद रहते हुए अथवा पिता के निधन के बाद जिस पुत्र को देखकर जनता समझे, समाज के व्यक्ति अथवा देश के सदस्य यह कहें, कि लड़का है तो सही लेकिन बाप-बाप ही था। इसके पिता की राज्य में, समाज में जो प्रतिष्ठा थी, जो इज्जत थी, जो अपने बुद्धि-कौशल से अपने नगर को चमत्कृत करते थे और नगर को साथ लेकर चलते थे, वह बात आज पुत्र में नहीं है। पुत्र है तो सही लेकिन भाईसा-भाईसा ही थे, पिताजी-पिताजी ही थे। इस तरह कह कर जिस पुत्र को याद किया है, ऐसे पुत्र का नम्बर अपजात में गिना जाता है। अर्थात् जिसको देख कर उनके बुजुर्ग याद आते हैं, उनके आदरणीय पुरुष याद आते हैं तो कहना चाहिये कि लड़के में कुछ न्यूनता है, कुछ कमी है।

परिवार में ऐसे बूढ़े थे जिन्होंने अपना घर ही नहीं बनाया लेकिन समाज को बनाया, विहार के समय काछीगुड़ा होकर आया इसलिये गाँधीजी की मूर्ति को देख कर एक बात स्मरण आ गई। एक ऐसे बुजुर्ग थे, जिन्होंने घर का निर्माण किया, परिवार का निर्माण किया, संतान का निर्माण किया लेकिन एक

धर्मशाला का भी निर्माण किया, एक धर्म स्थान का भी निर्माण किया। ऐसा निर्माण किया कि समाज में किसी तरह की अड़चन नहीं आवे। उनको देखकर यह कहना पड़ता है कि उन बुजुर्ग ने समाज का कैसा उपकार किया लेकिन उनका उपकार किसने समझा, चिंतन करने वाले सोचें। लेकिन वह बात अब कब हो ?

अपने प्रसंग की बात भी कहूँ। शास्त्र कहता है कि राजा प्रसेनजित के एक नहीं सौ पुत्र थे। एक भी लड़का यदि है और वह शालीन और कुलीन, बुद्धिशाली है तो यह कहना चाहिये कि बाप के नाम को पीछे करके अपना नाम आगे कर देता है।

**अतिजात पुत्र :**

मैंने ऐसे पुत्र, जो अतिजात हुए हैं, उनमें से तीर्थंकर भगवन्तों की बात रखी। जिनके कारण माता-पिता, जिनके कारण समाज और धर्म पहचाना जाता है। ऐसे पुत्र अतिजात के नाम से पुकारे जाते हैं। वे खुद ही प्रसिद्ध नहीं हुए, उनके कारण से चैतन्य माता-पिता प्रसिद्ध हुए, भाई प्रसिद्ध हुए, उनका तो कहना ही क्या ? लेकिन उनके कारण से उनके गाँव और नगर भी गाये जाते हैं। कहाँ कुंडलपुर, कहाँ अयोध्या, कहाँ बनारस। इनके नाम क्यों याद किये जाते हैं ? भगवान् पार्श्वनाथ का जन्म स्थान होने के कारण बनारस प्रसिद्ध हुआ। भगवान् ऋषभ के कारण अयोध्या प्रसिद्धि में आया। महावीर की याद आयेगी तो कुंडलपुर भी याद आयेगा।

जिस व्यक्ति के पीछे, उसके आदर्श के पीछे और जीवन-निर्माण के पीछे उनके माता-पिता का नाम याद आता है, वे क्षेत्र, भूमियाँ और जगह याद आती हैं, जहाँ उन्होंने जन्म लिया है, ऐसे पुत्र अतिजात कहलाते हैं। और पिता के अनुकूल चलने वाले, उनकी इज्जत, आबरू और प्रतिष्ठा बनाये रखने वाले पुत्रों को अनुजात कहा जाता है। लेकिन कुछ बालक ऐसे हैं जिनको अपजात के नाम से पुकारा जाता है। इसमें प्रसेनजित के ९९ पुत्र आते हैं जो संख्या में इतने होकर भी पिता की समस्या को हल नहीं कर पाये। एक श्रेणिक क्या गया, मानो कुशाग्रपुर याने गिरिवन नगर सूना हो गया।

**प्रसेनजित और श्रेणिक का प्रसंग :**

इस प्रसंग को चलाये कुछ दिन बीत चुके हैं इसलिये पीछे का घटना चक्र याद करा देता हूँ। तिलकवती के साथ सशर्त सम्बन्ध करने के कारण राजा प्रसेनजित को वचन बद्ध होने के कारण अपने योग्य पुत्र श्रेणिक को देश

निकाला देना पड़ा। दशरथ को कैकई से वचनबद्ध होने के कारण राम को देश निकाला देना पड़ा और बाद में पछताना पड़ा, उसी तरह से भिल्लराज को वचन देने के कारण प्रसेनजित भी पछताया। क्षत्रिय या तो कुछ कहता नहीं और कह देता है तो उससे पीछे हटता नहीं। कछुए की गर्दन बाहर निकली हुई होती है लेकिन जैसे ही थोड़ी आहट हुई नहीं कि वह अपनी गर्दन को भीतर खींच कर ले जाता है। लेकिन हाथी के दांत पहले तो बाहर निकलते नहीं और यदि निकलते हैं तो अन्दर नहीं जाते। इसी तरह क्षत्रिय के वचन होते हैं।

ऐसे योग्य पुत्र को निष्कासित कर दिया गया। निर्दोष व्यक्ति पर, ईमानदार व्यक्ति पर आरोप लगाया जाता है तो उसको बहुत बुरा लगता है। झूठा व्यक्ति सहन कर लेता है या जिसमें योग्यता नहीं है या जिसने गलत काम किया है वह भी सहन कर लेता है, किन्तु श्रेणिक संस्कार सम्पन्न था इसलिये वह निर्दोष होने पर भी आदरणीय। अपने पिता के सामने कुछ बोला नहीं और उनकी आज्ञा मानकर गर्दन नीची करके देश छोड़ कर चला गया।

मार्ग में उसको इन्द्रदत्त नाम का श्रेष्ठि मिला जिसने उससे कई प्रश्न किये। इन्द्रदत्त के गांव के पास आकर श्रेणिक एक आम के पेड़ के नीचे ठहर गया। सेठ इन्द्रदत्त अपने घर पहुँच कर अपनी पुत्री नन्दा के सामने अपनी यात्रा का वृत्तान्त सुनाने के लिये बैठा।

वह कहने लगा कि बेटी स्वप्न तो मैंने ऐसा देखा था कि उसे देख कर में गद्गद् हो गया लेकिन रास्ते में साथी को पाकर मेरा सारा स्वप्न धूमिल हो गया। स्वप्न आया था कि आज एक ऐसा सुन्दर और सुपात्र पुरुष मिला है जो बिना ढूँढ़े, बिना खोजे मिला है जिसके साथ मैंने तेरा सम्बन्ध कर दिया है। लेकिन व्यक्ति को जब देखा तो बेटी क्या कहूँ वैसी कहावत है, "रूप रूड़ा गुण बाहिरा रोहिड़े का फूल" उसी तरह से देखा कि वह सुन्दर है, आकृति श्रेष्ठ है लेकिन सब कुछ होते हुए भी भगवान् ने उसमें कुछ कमी रख दी।

आदमी जब अपना दोष नहीं समझता है तो भगवान् को भी दोष देने लगता है। विधाता की इस दृष्टि को भी बदलते देखा है। भगवान् ने इस तरह के प्राणियों की रचना क्यों की ? नीति का एक दोहा है—

"चींटी, चींचड़ा, दुष्ट पुरुष, मच्छर, खटमल, जूँ।
अकल गई करतार री, ऐसा सरज्या क्यूँ ।।"

जो किसी को सुख देने वाले नहीं, मात्र खून चूसते हैं, मात्र दुःख देते हैं।

इस बात का भगवान् को पता नहीं है क्या ? तो फिर ऐसे पदार्थों को क्यों बनाया ? इसी तरह से रूप है, सुन्दरता है लेकिन अकल नहीं है, मूर्ख है, गंवार है। काला कलूटा है, सौजन्यता नहीं है लेकिन धरती पर करोड़पति बन कर बैठा है। कंजूस को धन दिया है और दरिद्र को खाने के भी लाले पड़ रहे हैं। भगवान् ने यह क्या किया ? लगता है कि अच्छे आदमी काम करते-करते भी भूल कर बैठते हैं। बेटी मुझे भी लगता है कि साथी सब तरह से ठीक था, लेकिन अकल से खाली था।

**प्रश्न और समाधान :**

पुत्री नन्दा ने जब पिता से यात्रा के संस्मरण सुने तो सेठ के उस साथी के जीवन का कुछ चिन्तन किया तो उसको कुछ पता लगा। उसने कहा पिताजी, आपको मिलने वाला गलत नहीं है लेकिन दृष्टि बदलने के कारण आपका सोचना गलत है। एक-एक बात को लेकर उसने समाधान करना चालू किया। मुर्दे को देख कर उसने पूछा कि यह जीवित है या मर गया है ? किसान को देख कर पूछा कि यह खेत को खा चुका है या खायेगा ? औरत को देख कर पूछा कि यह बंधी हुई है या छूटी हुई है ? मैं आपको संक्षेप में उसके जीवन की झांकी करा रहा हूँ, जो कुछ दिन पहले कह चुका हूँ।

आलीशान मकानों वाले गाँव को देख कर पूछा था कि यह गाँव बसा हुआ है या उजाड़ है ? फले-फूले हरी-हरी पत्तियों वाले पेड़ को देख कर उसने पूछा कि यह पेड़ हरा भरा है या ठूँठ है ? क्या कभी ऐसा हुआ है कि हरे-भरे पेड़ के नीचे कोई बैठे और उसको छाया नहीं मिले। नदी का ठंडा-शीतल, सुगन्धित पानी गिलास भर कर पीये और उसका कंठ ठंडा नहीं हो, क्या ऐसा भी कभी होता है ? इसी तरह ग्राम है, बड़ी-बड़ी बिल्डिंग्ज हैं, जीवन सम्भालने वाले हैं वहाँ पर यदि कोई आदमी आवे और खाली लौट जाय, क्या ऐसा भी कभी हुआ है ? नहीं हुआ है और न होना चाहिये। जहाँ घर है, खाद्य सामग्री है, करोड़ों की सम्पत्ति है, वहाँ से कोई खाली लौट जाय, ऐसा कभी हुआ नहीं। यदि ऐसा होता है तो समझना चाहिये कि वह ग्राम नहीं, श्मशान है। जहाँ होते हुए नहीं मिले, ऐसा हो नहीं सकता। इसलिये उस साथी ने आपसे पूछा कि यह गाँव बसा हुआ है या उजाड़ है ?

इसी तरह से पुत्री क्या कहूँ ? जब रेतीले मैदान को देखकर उस नव-युवक ने अपने जूते पाँव से उतार कर हाथ में ले लिये और जब पानी के पास पहुँचा तब हाथ के जूते नीचे उतारे और पाँवों में पहन लिये। मैंने रेत में जूते पहन रखे थे और जब मैं पानी के पास पहुँचा तब जूते उतार कर हाथ में ले लिये इसलिये कि पानी से चमड़ा सिकुड़ न जाय, तेल निकल न जाय, उसकी

जब श्रेणिक ने देखा कि पैर धोने के लिये पानी थोड़ा दिया गया है तब उसने बांस के टुकड़े से कीचड़ साफ किया और फिर गिलास के पानी से पैर धोये और भीतर पहुँचा तो सेठ के प्रतिनिधि ने उसका स्वागत किया।

श्रेणिक कुशाग्रपुर छोड़ चुका है और बेनातट आ गया है। परीक्षा की घड़ियों से भी कुछ पार हो चुका है, कुछ पार होना बाकी है।

सोचता हूँ कि आप भी घर छोड़कर उपासरे में आ गये हैं। जीवन की घड़ियाँ कुछ परीक्षा के क्षण बीत चुके हैं, कुछ बाकी हैं। इस परीक्षा में श्रेणिक नन्दा को मिलाने जा रहा है। हम शिवरमणी को मिलाने जा रहे हैं। कुछ परीक्षा पार हो चुकी है, कुछ बाकी है, उसके लिये बुद्धिबल, योग्यता और पुरुषार्थ का ठीक उपयोग करके चलेंगे तो हम भी परीक्षा में अवश्य सफलता प्राप्त कर सकेंगे और अपने आपको अतिजात के नाम से प्रसिद्ध करेंगे। अपनी समाज और कुल का नाम चमकाने के साथ-साथ शान्ति और आनन्द प्राप्त कर सकेंगे।

□ □ □

---

**गाँधी जयन्ती पर**

# उपयोग

□ श्री राजकुमार जैन 'राजन'

........एक बार गाँधीजी रेल से सफर कर रहे थे। एक स्टेशन पर कुछ देर के लिए गाड़ी रुकी। वहाँ कुछ लोग उनसे मिलने आये। अभी गाँधीजी एक भाई से बातें कर ही रहे थे कि गार्ड ने सीटी दे दी। झटके के साथ गाड़ी चल पड़ी। गाँधीजी के सम्भलते-सम्भलते एक पाँव की चप्पल सरक कर नीचे जा पड़ी। ऐसे में क्या हो ?

........गाँधीजी जानते थे कि अभी तो चप्पल नीचे गिरी है। उन्हें अब वापस नहीं मिल सकती और दूसरे पाँव की चप्पल का अब वे उपगोय नहीं कर सकेंगे। क्षण भर सोचने के बाद उन्होंने वह चप्पल भी वहीं गिरा दी। यह सोचकर कि दोनों चप्पलें जिस किसी को भी मिलेंगी तो वह उनका उपयोग कर सकेगा।

........बात छोटी-सी है। हमारे आपके जीवन में भी ऐसी कितनी ही घटनाएँ घटती हैं। फिर भी कोई इतनी दूर तक सोच नहीं पाता।

• आकोला-३१२ २०५ (चित्तौड़गढ़) राज०

# ज्ञान वही जो आत्मलक्षी बनावे !

□ श्रीमती मंजुला बम्ब

**धर्म की पहचान करावे वह सम्यग्ज्ञान :**

जगत में सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाश के स्रोत हैं। जुगनू भी प्रकाश करता है। मोमबत्ती, दीपक और बिजली का भी प्रकाश होता है। ये सब अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बाह्य वस्तुओं को प्रकाशित करते हैं। इनकी अपनी सीमाएँ हैं। पर प्रकाश का एक असीम स्रोत और है वह है सम्यग्ज्ञान। सम्यग्ज्ञान का प्रकाश हृदय की गुफा में—जहाँ अनन्त-अनन्त युगों से अज्ञान, मोह और मिथ्यात्व का घना अन्धेरा छाया हुआ है, पहुँचकर उसे दूर करता है। सम्यग्ज्ञान के पवित्र प्रकाश के अतिरिक्त जगत के और किसी प्रकाश में यह विलक्षण शक्ति नहीं है। अतः इस सम्यग्ज्ञान को आत्म-सूर्य अथवा तृतीय लोचन कहा गया है।

सम्यग्ज्ञान अर्थात् सच्चा ज्ञान, जिस ज्ञान से मानव आत्माभिमुख बनता है, वह सम्यग्ज्ञान। जो ज्ञान मनुष्य की विषय तृष्णा के ताप को शान्त करता है, वह सम्यग्ज्ञान। मैं कौन हूँ, मेरा क्या है, इन दो अनादिकाल से अनुत्तरित जटिल प्रश्नों का सचोट समाधान करे, वह सम्यग्ज्ञान। सच्चे देव, गुरु और धर्म की पहचान करावे वह सम्यग्ज्ञान। जिस ज्ञान से मनुष्य में विनय, विवेक, वैराग्य और व्रत आवे, वह सम्यग्ज्ञान। जिस ज्ञान से मनुष्य संस्कारी, सदाचारी, संयमी, सत्यवादी और संतोषी बने वह सम्यग्ज्ञान। मानव जीवन का महत्त्व समझावे वह सम्यग्ज्ञान।

**ज्ञान वही जो आत्मलक्षी बनावे :**

जो पदार्थ जिस स्वरूप में, जिस स्वभाव में हो उस पदार्थ को उसी स्वरूप में, उसी स्वभाव में बतलावे वह सम्यग्ज्ञान कहलाता है। ऐसा सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए सर्वज्ञ परमात्मा के शास्त्रों की शरण लेनी चाहिए। क्योंकि सर्वज्ञ के शास्त्र कभी मिथ्या बात नहीं कहते। सर्वज्ञ भगवान यथार्थवक्ता

नरमाहट कम न हो जाय। इसलिये पानी आने पर मैंने जूते अपने हाथ में लिये और उसने पहने रखे। बेटी इसमें क्या राज है? उसने ऐसा क्यों किया? समाधान के लिये नन्दा के सामने पिता ने प्रश्न रखा।

तब नन्दा ने कहा कि पिताजी ऐसा लगता है कि वह कोई राजपुरुष है। जितना उत्तम, शालीन और सुकुमाल प्राणी होता है उतने ही उसके पैरों के तले नर्म होते हैं। ऐसा भी लगता है कि उसको चलने का विशेष अभ्यास नहीं है, इसलिये नदी की रेत में जूते पहन कर चलना उसके लिये मुश्किल हुआ होगा, इसलिये जूते उसने हाथ में ले लिये। लेकिन जब पानी के नजदीक आया तब उसने सोचा होगा कि अनजानी जगह है, पानी में काँटें भी हो सकते हैं, कोई जलचर प्राणी भी हो सकते हैं, वे कहीं कष्ट नहीं दें इसलिये पैरों की कोमलता के कारण उसने जूते पहन लिये। आपको रोज का अभ्यास था, इसलिये आपको रेत में चलने में कठिनाई नहीं थी इसलिये आपने जूते पहने रखे।

सेठ ने कहा कि बेटी यही बात नहीं है, नदी पार करने के बाद मैंने उससे कहा कि पेड़ के नीचे उसकी शीतल छाया में ठहरो। अब तक उसके पास का छाता बंद था लेकिन वृक्ष के नीचे पहुँचने के बाद उसने छाता तान लिया। छाया में छाया करने की क्या जरूरत थी? ऐसा लगता है कि जैसे महाजन घी में घी डालते हैं, अमीर-अमीर को ही पैसा देता है, इसी तरह लगता है कि छाया को छाया देने के लिये ही उसने पेड़ की छाया के नीचे छाता तान लिया। देना किसको चाहिये? भूखे को या डकार खाने वाले को? जिसका पेट भूखा है, मांग रहा है, खाने के लिये तरस रहा है उसको तो फटकार लगाते हैं या दुत्कारते हैं और जिन्हें भूख नहीं है, उनका हाथ पकड़ कर कहते हैं कि नहीं साहब चाय तो पीनी पड़ेगी। बेटी ऐसा लगता है कि पेड़ के नीचे छाता तानना उसकी कोई समझदारी की बात नहीं थी।

नन्दा ने कहा कि पिताजी यह भी दूरदर्शिता का रूप है। वृक्ष पर कई तरह के पक्षी बैठते हैं जैसे कौए आदि। उनकी बींटों से कपड़े खराब नहीं हों इसलिये उसने पेड़ के नीचे छाता ताना होगा। पुत्री की बात सुनकर सेठ कहने लगा कि यदि ऐसी बात है तब तो वह समझदार लगता है, उसको अपने घर बुलाना चाहिये।

पिता की स्वीकृति मिली तो श्रेष्ठि पुत्री नन्दा ने एक लम्बे नाखूनवाली दासी को बुलाया और उसको कुछ समझा कर कहा कि गाँव के बाहर आम्र वृक्ष के नीचे एक युवक बैठा है, उसको बुलाकर लाओ।

ग्राम के बाहर वृक्ष के नीचे बैठे हुए युवक के पास जाकर दासी ने उस को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और उससे कहा कि तुमको सेठ ने अपने घर पर बुलाया है। उसने पूछा कि कहाँ? कहाँ का नाम सुना और दासी चकराई। दोनों हाथ उसने कान के लगाये, आँखें बंद करके नीचे देखा और चल दी। उस युवक ने सोचा कि बुलाने आई है, स्थान का पता नहीं। मैंने स्थान का पता पूछा तो कान पर हाथ रखकर बोली नहीं और चल दी। इससे उसका क्या अभिप्राय था? कानों के हाथ शायद उसने इसलिये लगाया होगा कि कान बड़ा होता है इसलिये उसके मकान के आगे ताड़ का वृक्ष होना चाहिये। कान कीचड़ वाला भी होता है इसलिये उसके मकान के पास कीचड़ का नाला होना चाहिये।

दो इशारों को पहचान कर श्रेणिक वहाँ से रवाना हुआ। यह आपसे नहीं पूछकर मैं ही समाधान कर देता हूँ।

पुत्री नन्दा ने देखा कि आगन्तुक मात्र बोलने वाला ही है या कुछ जानने वाला भी है। दासी तो इशारा करके रवाना हो गई और श्रेणिक दूर से निगाह डालकर लम्बा ताड़ का वृक्ष देखता हुआ उस ओर रवाना हुआ। मौहल्ले, गली पार करता हुआ वह वहाँ पहुँच गया। कैसे पहुँच गया? ताड़ के वृक्ष के इशारे के साथ उसको ताड़ का वृक्ष भी मिला और उसके साथ ही गंदा नाला भी एक मकान के सामने मिला। उसको पार करने के लिये उसमें ऊपर पत्थर रखे हुए थे जो बेडोल थे, स्थिर नहीं थे। उसने सोचा कि यह भी मेरी परीक्षा है। इन पत्थरों पर पाँव रखा और डिगमगा गये तो कपड़े भी खराब होंगे और इज्जत भी खराब होगी।

मैंने सुना है कि आज भी नौकरी में प्रवेश करने वालों का इन्टरव्यू लिया जाता है। शायद ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनसे परिचित नहीं हों या जो कोर्स में नहीं हों। प्रश्नों का सही उत्तर मिलता है तो मन में संतोष होता है। और कुछ घटनाएँ बचपन में देखी हुई याद भी आती हैं। लड़कों की ही परीक्षा नहीं होती लड़कियों की भी परीक्षा होती है। शादी के बाद जब नयी वधू घर में आती है तो उसको कैसे घर में लाना, कैसे बैठाना, कैसे खिलाना इन सब बातों की परीक्षा की जाती है। खाती कैसे है, बैठती कैसे है, बोलती कैसे है, इन बातों की पहले परीक्षा हुआ करती थी। आज तो गंधर्व विवाह होने लगे हैं, इसलिये शायद परीक्षा की बात नहीं रही अथवा दूसरी भाषा में कहूँ तो लालच का सौदा होने लगा है इसलिये परीक्षा की बात गौण हो गई है। अभी क्या चाहिये? लड़की कैसी है, कैसी गुणवाली है, किस घराने की है, कैसे संस्कार हैं, यह सब देखने की आवश्यकता नहीं है। अभी तो रूप और रुपया दो बातें

देखी जाती हैं। शादी से पहले फोटो देखली जाती है और शादी के बाद धन का ढेर देख लिया जाता है। ये दोनों मिल गये तो भगवान् मिल गया। फिर क्या होता है, यह आप सब जानते हैं, इसलिये मैं नहीं कहूँ।

**श्रेणिक की परीक्षा :**

श्रेणिक की परीक्षा हुई। क्या इन डोलते हुए पत्थरों पर से निकलना चाहिये, क्या करना चाहिये, एक सैकिण्ड के लिये सोचा और जूते उतारे, कपड़े ऊपर किये और पँजा टेकते हुए नाली को पार किया। नजदीक पहुँचा। दरवाजे के पास पहुँचा होगा कि झट से दासी निकल कर आई और उसने आधा गिलास पानी से भरा हुआ उसके हाथ में दिया और कहा कि इससे पाँव धो लीजिये। उसने चिंतन चालू किया। गाँव में पानी की कमी है क्या? जमे हुए कीचड़ में सने हुए पाँव इतने से पानी से धो लीजिये, इतना सा पानी भेजने का क्या कारण है? यदि आदमी मान अक्कड़ हठवाला हो तो लड़ने लग जाय। ऐसा लगता है कि बुलाने वाले का मन नहीं है। यह तो 'मान-न-मान मैं तेरा मेहमान' वाली बात हुई। एक बार तो सोचा कि लौट चलूँ, फिर सोचा कि आ गया हूँ तो जितना पानी भेजा है, उसी से काम चलाऊँ। इधर-उधर देखकर एक बाँस की खपची उठाई और पहले उससे कीचड़ साफ किया फिर थोड़ा-थोड़ा जल डालकर पाँव साफ किये। इसमें धार्मिक भावना नहीं है, जीवों के रक्षण की बात भी नहीं है।

**विवेकपूर्ण जीवन-पद्धति :**

मैं भी कभी चिन्तन करता हूँ कि जितने बड़े महापुरुष हुए हैं वे पूरा विवेक और जीवन-पद्धति को लेकर चलते हैं। आप भी आश्चर्य करेंगे, मैं रोज आश्चर्य करता हूँ। आचार्यदेव बाहर से निपट कर पधारते हैं, वापिस आते हैं तब आप उनकी पद्धति देखेंगे तो ताज्जुब करेंगे। एक-एक बूँद जल डालकर चुल्लू भर पानी से अपने पैर धो डालते हैं। क्या समझ कर? पानी जीवों का पिंड है। दूसरे शब्दों में कहूँ तो पानी जीवन का आधार है। आप जिसको प्राणाधार कहते हैं, वह दूसरी चीज है। मैं कहता हूँ कि पानी प्राणों का आधार है। रोटी के बिना काम चल सकता है, घी के बिना काम चल सकता है, लेकिन पानी के बिना काम नहीं चल सकता। 'अन्तगढ़ सूत्र' में ऐसी महारानियों का वर्णन है जिन्होंने अपनी शक्ति के अनुसार आयम्बिल तप किया। घी के बिना, तेल के बिना, रस के बिना लेकिन पानी के बिना नहीं किया। तो कीमती क्या है, घी या पानी? खाने की सारी सामग्री है लेकिन पानी नहीं है तो खाना कैसे खाया जायगा? मैं सुना करता हूँ कि पानी की महाराष्ट्र में शॉरटेज है। मैं सुनता हूँ लेकिन आप क्या सुनते हैं? कभी ऐसी खबर भी सुनी है क्या कि

पानी कम बरसने से अकाल जैसी स्थिति हो गई है या पानी नहीं बरसने से धान उगा नहीं या घर में पानी नहीं पहुँचा इसलिये पानी का एक-एक घड़ा एक-एक रुपये में मिल रहा है। आपने सुना कभी कि इस पानी की कीमत क्या है, इसका उपयोग क्या है ? हम प्राचीन बुजुर्गों को याद करते हैं। नागौर में एक बहिन को देखा जो एक लोटा पानी का भर कर लाती। उससे सारा काम कर लेती थी। महाराष्ट्र की तरह वहाँ पर नल कूप नहीं थे। रेगिस्तान में पानी की कमी थी, इसलिये आज भी बीकानेर, नोखा, देशनोक, जैसलमेर आदि क्षेत्रों में चले जायेंगे तो वहाँ पर घर-घर में टांके मिलेंगे जिनमें बरसात का पानी संचित किया जाता है। पानी का कम मात्रा में उपयोग किया जाता है।

घर पर जंवाई आ गया है तो भी उसको आधी बाल्टी पानी नहाने के लिये देते हैं। गर्मी में नहाये बिना नहीं रहा जाता है, पसीने के कारण बदन खाने लगता है तब कूंडे में बैठकर नहाया जाता है और नहाने के बाद जो पानी कूंडे में बचता है, उससे कपड़े धोये जाते हैं और बाकी पानी से फर्श धोई जाती है। यदि ऐसा नम्बर आपका आ जाय तो क्या होगा ? महलों में रहने वाला जंगल में चला जाय तो क्या होता है ? लेकिन परीक्षा तब होती है जब कमी महसूस होती है। जब कमी नहीं है तो आदमी अच्छी-से-अच्छी चीज का भी दुरुपयोग कर लेता है।

मैं किसकी बात कह रहा हूँ। अभी मैंने एक बात आपके सामने रखी। यहाँ यह प्रश्न नहीं है कि हमें पानी नहीं मिलता। हम पात्र लेकर निकलें तो एक नहीं दस पात्र पानी मिल सकता है। लेकिन इतना मिलने के पश्चात् भी पैर धोने का नमूना देखेंगे तो एक-एक बूँद डालकर पैर साफ किये जाते हैं। अपने लिये किया जाता है, लेकिन देखने वाले के लिये यह आदर्श है। लेकिन आदर्श तब है जब कि जीवन आदर्श की घूंट गले में उतरे। श्रमणों के उपासक कहलाने वाले आज कितना पानी खराब कर रहे हैं, किस तरह से कर रहे हैं, देखकर बड़ा दुःख होता है। जैन घरों में कभी-कभी लीलन या काई जम जाती है। लीलन तब जमती है जब कि निरंतर पानी पड़ा रहे।

इस शरीर पर काई लगने का काम नहीं है, काजल का धब्बा लगने का काम नहीं है, यदि लग भी जाय तो पाउडर से ढक दिया जाता है। लेकिन पानी की मटकी पर जमी हुई लीलन उतारने की फुरसत नहीं है। कभी किसी के घर में पूछने का काम पड़ा तो कहा कि मटकियाँ महँगी मिलती हैं, भारी होती हैं और मुश्किल से मिलती हैं। पता नहीं मटकी महान् है या आलस्य है या विवेक की कमी है। आज तो भोजन भी कई तरह के बन गये हैं, इसलिये यह समस्या नहीं है।

होते हैं। वे वीतराग हैं, उनमें तनिक भी रागद्वेष नहीं होता, अतः असत्य भाषण का कोई प्रयोजन ही नहीं है। अत: सर्वज्ञ के शास्त्र प्रत्येक वस्तु का सत्य स्वरूप ही प्रतिपादन करते हैं। वन में घर, दुखी अवस्था में धन, अंधकार में प्रकाश, मरुभूमि में जल प्राप्त होना जैसे कठिन हैं वैसे ही कलयुग में धन्य पुरुष ही अध्यात्म शास्त्र को कठिनाई से प्राप्त करते हैं। सचमुच जैसे सूअर विष्टा में आनन्द मानता है वैसे ही अज्ञानी जन अज्ञान रूपी विष्टा में आनन्द मनाते हैं। ज्ञानी पुरुष तो ज्ञान में आनन्द मानते हैं जैसे हंस मानसरोवर में क्रीड़ा करते हैं। ज्ञान वही है जो मनुष्य को आत्मलक्षी बनाता है। आत्मलक्षित्व रहित ज्ञान, अज्ञान ही है। जो ज्ञान-राग-द्वेष मोह को पोषण देता है, वह ज्ञान ही नहीं है, वह महा अज्ञान है।

ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होने पर राग, द्वेष और मोह का गाढ़ अन्धकार दूर होना ही चाहिए। यदि यह अन्तर का अन्धकार बना रहता है तो समझना चाहिए कि अभी जीवन रूपी गगन में ज्ञान रूपी सूर्य उगा ही नहीं है। सूर्योदय हो और अन्धेरा बना रहे, ऐसा कदापि सम्भव नहीं। इसी तरह पंतजलि ऋषि फरमाते हैं कि जो ज्ञान आत्म-स्वरूप के लाभ का कारण बनता है, वही ज्ञान कहा जाता है शेष सर्व बुद्धि का अन्धत्व है।

**सद्बुद्धि का फल : आत्मज्ञान की प्राप्ति :**

चौबीस घण्टों में हमें अपना सनातन चैतन्य स्वरूप, सुख स्वरूप, आनन्द स्वरूप आत्मा कितनी बार याद आती है ? आत्मा के अतिरिक्त अन्य बातें कितनी-कितनी बार याद आती हैं, नाशवन्त शरीर की सुख-सुविधा की कितनी अधिक चिन्ता करते हैं ? और शाश्वत आत्मा की सुख शान्ति की कितनी चिन्ता करते हैं ? हमने दूसरों के लिए बहुत कुछ किया परन्तु अपनी आत्मा को तारने के लिए क्या किया ? तो क्या अपनी आत्मा के उद्धार के लिए कुछ नहीं करना है ? सद्बुद्धि का फल ही आत्म-ज्ञान की प्राप्ति है। आत्मज्ञानी में विषय की रमणता नहीं होती है, स्वरूप-रमणता होती है।

**श्रुतज्ञान से ही आत्मा के हिताहित का भान :**

श्रुतज्ञान के द्वारा आत्मा के हित और अहित का भान होता है। इससे आत्मा अहित का मार्ग छोड़कर हित के मार्ग में प्रवृत्ति करने में समर्थ बन सकती है। आत्मा के हित का मार्ग इसके द्वारा जाना जा सकता है। ज्ञान रहित अज्ञान तपस्वी अनेक करोड़ों वर्षों तक घोर तप करके जितने अशुभ कर्मों का नाश करता है, उतने कर्मों का नाश तीन गुप्ति से गुप्त ज्ञानी एक श्वासोच्छ्वास में कर देता है। मन, वचन और काया को स्थिर करके शास्त्र स्वाध्याय करने

वाला ज्ञानी पुरुष असंख्य जन्मों के संचित कर्मों का नाश एक श्वासोच्छ्वास में कर डालता है। ज्ञान की कितनी अधिक शक्ति है, यह जानकर सम्यग्ज्ञान सीखने में अधिक उत्साह रखना चाहिए।

जगत् में ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के अधीन बने हुए जीवों में कदाचित् बुद्धि हो या न हो, तो भी ज्ञान सीखने में उद्यम नहीं छोड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए माषतुष मुनि को तो 'मा रुष, मा तुष' यह वाक्य भी बारह वर्ष तक रटते रहने पर भी याद नहीं हुआ तदपि उत्साह और उमंग को कायम रखते हुए उन्होंने याद करना चालू रखा तो बारह वर्ष के पश्चात् उन्हें केवलज्ञान हो गया।

**तीन कार्य।**

मार्ग को जाने बिना यदि चलना शुरू कर दें तो वह भटकेगा ही। मोक्ष मार्ग को जाने बिना यदि चलना शुरू कर दें तो भव-वन में भटके बिना नहीं रहेगा। मार्ग और उन्मार्ग की जिसे पहचान नहीं वह मार्ग पर कैसे चल सकेगा? मनुष्य को सच्चा ज्ञान आने के साथ ही तीन कार्य होने चाहिए—पाप से निवृत्ति, पुण्य कार्यों में प्रवृत्ति और विनय गुण की प्राप्ति। ये तीन कार्य सच्चा ज्ञान आने के साथ ही होने चाहिए।

हमें सम्यग्ज्ञान के मार्ग पर चलना चाहिए, सर्वज्ञ परमात्मा के शास्त्रों का वाचन करना चाहिए, श्रवण करना चाहिए, उन पर गहरा चिन्तन करना चाहिए और इस ज्ञान से आत्मा को भावित करना चाहिए। केवल सुना हुआ श्रुत पानी जैसा है, चिन्तन किया हुआ श्रुत दूध जैसा है और भावित किया हुआ श्रुत अमृत बनता है। सम्यग्ज्ञान को अमृत बनाकर विषय-कषाय की भयंकर तृषा को सदा के लिए शान्त कर देना चाहिए।

**भौतिक शिक्षण के साथ धर्म-शिक्षण आवश्यक :**

जिस शिक्षण से मनुष्य संस्कारी, सदाचारी और अनुशासित न बने, वह शिक्षण कैसे कहा जा सकता है? यदि भौतिक शिक्षण के साथ धर्म का शिक्षण दिया जाता हो तो भी शिक्षण का कुछ अर्थ हो सकता है। आज तो दिन-प्रति-दिन विद्यार्थी निरंकुश बनते जा रहे हैं। शिक्षा के पीछे रहा हुआ आशय ही भुला दिया गया है। पढ़ने वाले केवल पैसा या डिग्री के लिए पढ़ते हैं, पढ़ाने वाले भी पैसे के लिए पढ़ाते हैं। 'सा विद्या या विमुक्तये' यह सूत्र तो केवल शालाओं की शोभा बढ़ाने हेतु ही लिखा जाता है। आज के शिक्षण में बन्धन और मुक्ति का विचार ही कहाँ है? आज तो शाला और कॉलेज में पढ़ते-पढ़ते

ही छात्र-छात्राएँ प्रेम में बंध जाते हैं तो बन्धन-मुक्ति की आशा ही कैसे की जा सकती है ? विवाह के पहले ही आज के युवकों का शील खण्डन हो चुका होता है। अनैतिक मार्ग में गई हुई युवतियाँ गर्भपात कराती हैं, यह क्या कम अधः-पतन है ? यह तो अध:पतन की पराकाष्ठा है, यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सरकार ने गर्भपात को वैध करार देकर ऐसे व्यक्तियों के लिए सुविधा करदी है।

सच कहा जाय तो आज के शिक्षण में और वर्तमान सरकार में लगभग पाप-पुण्य का विचार ही नहीं रहा है। केवल भौतिक विकास की ओर ही इस शिक्षण और सरकार ने ध्यान केन्द्रित किया है। आज के शिक्षण का ढांचा मूल से ही जब तक नहीं बदला जाता तब तक भारतीय संस्कृति का प्राण पुनः स्पंदित नहीं हो सकता।

लार्ड मैकाले ने जान-बूझकर भारतीय संस्कृति का निकंदन करने के लिए ही ब्रिटिश पद्धति का शिक्षण भारत में चालू किया। डिग्री और उच्च पद का लालच देकर भारतीय जनता में उस शिक्षण के प्रति मोह पैदा किया और भारत के लोगों के दिमाग में ऐसा भूत भर दिया कि अंग्रेजी शिक्षण लेने वाले ही विद्वान्, होशियार, चतुर और शिक्षित हैं। इसके सिवाय सब मनुष्य पत्थर युग के जड़मानस वाले हैं। भारतीय प्रजा को धीरे-धीरे अपने धर्म की श्रद्धा से चलित करके अन्त में उन्हें धर्मभ्रष्ट, धर्म विमुख, धर्म निन्दक बना दिया। आज के पढ़े-लिखे व्यक्ति धर्म की बात आने पर मुँह बिगाड़ते हैं। वे मुँह फेर लेते हैं। मानो धर्म कोई निरुपयोगी वस्तु हो। इस शिक्षण ने प्रायः किसी जाति या समाज को धर्म स्थिर-चुस्त रहने नहीं दिया।

आज के नेताओं के भाषण में कहीं धर्म, आत्मा, परमात्मा परलोक, मोक्ष, शील, सदाचार और जीवदया की बात का उल्लेख ही नहीं होता। केवल भौतिक उन्नति की बात के सिवाय और कुछ नहीं मिलता। प्रजा में दिन-प्रति-दिन विलास और पैसे की प्यास बढ़ती जा रही है। विज्ञान के पास से प्रजा में विलास की वृत्ति और हिंसक वृत्ति बहुत बढ़ी है। भोग विलास के विविध विपुल साधनों से मनुष्य लुब्ध होता जा रहा है और परलोक की साधना के साधनों को भूलता जा रहा है।

**खाओ, पीओ, मजा करो :**

आज तो जनता के दिमाग में ऐसा ठूंस गया है कि 'पैसा है तो सब कुछ है।' अतः पैसे के लिए भयंकर से भयंकर पाप करने में आज के विज्ञान युग का मनुष्य तनिक भी संकोच और लज्जा नहीं करता। अन्यथा खाद्य वस्तुओं में

इतनी अधिक मिलावट का अनिष्ट रोग क्यों फैले ? परन्तु मानों एक रात में सबको लखपति बनना हो, इस रीति से मनुष्य व्यापार आदि करता है । अभक्ष्य के भक्षण की और अपेय के पान की घृणा मानो भारतीय जनता में से निकल गई हो, ऐसा वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा है ? बस, 'खाओ-पीओ-मजा करो' की नास्तिक मान्यता आज तेजी से भारतीय प्रजा में फैलती जा रही है ।

आज तो सर्वत्र स्वार्थ और स्वार्थ ही मानव पर सवार है । परोपकार की बात और दूसरों की भलाई की वृत्ति मनुष्य में से लगभग विदा हो चुकी है । अपने उपकारी माता-पिता के प्रति भी आज की नयी पीढ़ी में बहुत ममता की भावना नहीं रही है उनकी दुनिया में वे स्वयं और उनकी पत्नी ही हैं । इसके सिवाय अपना भाई या बहिन भी उन्हें नहीं रुचती । कारण स्पष्ट है कि आज की पीढ़ी को सच्चा ज्ञान नहीं मिलता है । अतः सम्यग्ज्ञान आवे तो ही प्रजा का मानस उदार, पवित्र और सहिष्णु बन सकता है ।

**सम्यग्ज्ञान :**

सम्यग्ज्ञान जीवन का निर्माता है, सम्यग्ज्ञान दीपक है, सम्यग्ज्ञान सूर्य है, सम्यग्ज्ञान माता, बन्धु और मित्र है और सम्यग्ज्ञान ही भवसागर पार करने का पुल है ।

—बम्ब सदन, जड़ियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर–३०२ ००३

लघु कथा

## एक टोकरी मिट्टी

□ नीलम जैन

एक जमींदार ने विधवा बुढ़िया का खेत बलपूर्वक छीन लिया । बुढ़िया ने गाँव के सभी लोगों के पास जाकर इस अत्याचार से बचाने के लिए पुकार की । पर किसी की हिम्मत जमींदार के सामने मुँह खोलने की नहीं हुई । दुःखी बुढ़िया ने स्वयं ही साहस बटोरा और जमींदार के पास यह कहने पहुँची कि खेत नहीं लौटाये तो उसमें से एक टोकरी मिट्टी खोद लेने दें ताकि उसे कुछ तो मिलने का सन्तोष हो जाए । जमींदार रजामंद हो गया और बुढ़िया को साथ लेकर खेत पर पहुँचा । उसने रोते-धोते एक बड़ी टोकरी मिट्टी से भर ली और कहा—उसे उठवाकर मेरे सिर पर रखवा दें । टोकरी बहुत भारी हो गयी । जमींदार ने अकड़ कर कहा—बुढ़िया इतनी सारी मिट्टी रखेगी तो दबकर मर जाएगी । बुढ़िया ने नहले पर दहला मारा—यदि इतनी सी मिट्टी से मैं दबकर मर जाऊँगी तो तू पूरे खेत की मिट्टी लेकर कैसे जीवित रहेगा ? जमींदार ने कुछ सोचा । उसका सिर लज्जा से नीचे झुक गया और उसने बुढ़िया का खेत लौटा दिया ।

—विमल क्लॉथ कं. दयानंद मार्ग, नीमच (म.प्र.)

ऐतिहासिक :
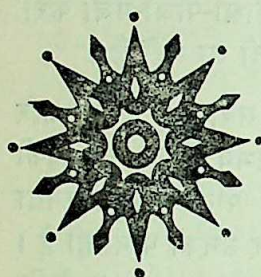
# जीव दया सम्बन्धी कुछ प्राचीन उल्लेख

□ श्री रामवल्लभ सोमानी

जैन धर्म में अहिंसा को सर्वोपरि माना गया है। प्राचीन काल से राजस्थान में जीव दया के प्रति लोगों की बड़ी रुचि रही है। कुछ ऐतिहासिक उद्धरण निम्नानुसार प्रेषित किये जाते हैं।

नाडोल के जैन श्रेष्ठि शुभंकर के पुत्र सालिग एवं पातिग ने इस सम्बन्ध में बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। उसने कई राजाओं से सम्पर्क कर ऐसी राजाज्ञायें जारी कराईं जिनमें अमारि की घोषणाएं थीं। इस प्रकार के दो लेख वि. सं. १२०६ के अभी भी उपलब्ध हैं। इनमें स्पष्टत: उक्त श्रेष्ठि की प्रेरणा से ये आज्ञाएं जारी कराने का वर्णन है :—

(१) रतनपुर (जालौर) के रायपाल के लेख में वर्णित है कि उसने "प्राणि नामऽभयदान" देने के लिये नगर निवासियों, धर्माचार्यों, महाजनों आदि को सम्बोन्धित करते हुए आज्ञा दी कि प्रत्येक माह की ग्यारस, चवदस, अमावस्या एवं पूर्णिमा को जीवहिंसा नहीं की जावे। (जीवस्य अमारि दानं) कुम्हार भी इन दिनों में बर्तन नहीं पकायेगा। जो व्यक्ति इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसे सख्ती से निपटा जावेगा एवं ४ द्रम्म दण्ड के रूप में उससे लिये जावेंगे।

(२) किराडू के शिव मन्दिर के स्तम्भ पर वि. सं. १२०६ का एक शिला लेख लगा हुआ है। इसमें भी उपर्युक्त अनुसार आदेश दिया हुआ है। यह आदेश महाराजा अल्हणदेव द्वारा अपने राजपुत्र केल्हरण व गजसिंह एवं संधिविग्रहक खेलादित्य को सम्बोन्धित करके लिखा गया है। इस लेख में "प्राणि नामऽभयदान" देने का उल्लेख है। इसके अनुसार मास की अष्टमी, ग्यारस, चतुर्दशी, अमावस्या एवं पूर्णिमा को जीवहिंसा पर पूण प्रतिबन्ध होगा। अमारि के इस आदेश का सख्ती से पालन कराया जावेगा। यदि कोई इसका खण्डन करेगा तो ५ द्रम्भ दण्ड के होंगे।

**जीव दया सम्बन्धी निम्न संदर्भ भी महत्त्वपूर्ण हैं :**

(३) मेवाड़ के महारावल समरसिंह ने जैन साधुओं से प्रभावित होकर अपने समस्त राज्य में कई वर्षों तक अमारि की घोषणा लागू की थी। इस प्रकार की राजाज्ञा किसी भी राज्य में नहीं निकाली गई थी। समरसिंह का शासन काल १३वीं शताब्दी के अन्त तक था एवं वहाँ जैन धर्म की अद्वितीय उन्नति हुई थी।

(४) देवलिया प्रतापगढ़ के वि. सं. १७५३ श्रावण सुदी ३ के एक शिलालेख में वर्णित है कि चतुर्दशी के दिन पूरे वर्ष जानवरों को मारने एवं मांस बेचने की मनाई करादी थी। इसी काल का एक अन्य लेख जैन मन्दिर के बाहर लगा हुआ है उसमें भी इसी प्रकार का उल्लेख है।

(५) मूंगथला के वि. सं. १६८६ के एक शिला लेख में वर्णित किया गया है कि हर माह को ग्यारस एवं अमावस्या को "अगता" पाला जावेगा। इस दिन कोई व्यक्ति हल नहीं चलावेगा एवं लुहार अपना काम नहीं करेंगे। जो व्यक्ति इस आदेश का उल्लंघन करेंगे उन्हें दण्डित किया जावेगा।

(६) पर्युषण पर्व पर शराब की बिक्री पर रोक लगाने का एक रोचक लेख देवगढ़ (प्रतापगढ़) के जैन मन्दिर के बाहर संवत १७७४ का लगा हुआ है। इसमें वर्णित है कि श्वेताम्बरों के पर्युषणों पर ८ दिन, दिगम्बरों के पर्युषणों पर १० दिन साल भर की चवदस, आठम एवं रविवार के दिन शराब की बिक्री पर रोक रखी जावे व इन दिनों शराब की भट्टियां भी बंद रखी जावें।

(७) मछलियों के मारने पर रोक लगाने के कई लेख मिले हैं। पाली के तालाब के बाहर वि. सं. १७०१ का लेख लगा हुआ है। इसी प्रकार के लेख जैतारण, मांडलगढ़, उदयपुर आदि कई स्थानों पर लगे हुए हैं।

(८) मुगल बादशाह अकबर एवं जहांगीर ने जैन साधुओं से प्रभावित होकर के ऐसे आदेश निकाले थे जिनमें जीवहिंसा पर प्रतिबन्ध लगाया गया था। एक फरमान हीरविजय सूरि को अकबर ने दिया था वह प्रकाशित भी हो गया है। इसी प्रकार से खरतरगच्छ के जिनचन्द्र सूरि का भी अकबर पर बड़ा प्रभाव था।

इन उद्धरणों से यह सिद्ध है कि राजस्थान में जीव दया एवं शराब बन्दी के प्रति बड़ी रुचि दिखाई गई थी।

—कानूनगो भवन, कल्याणजी का रास्ता, जयपुर

# धर्म का स्वरूप

□भंडारी सरदारचन्द जैन

**धर्म का स्वरूप**

१. धर्म-धर्म सब कोई कहे, मर्म न जाणे कोय ।
मर्म सहित धर्म करे तो, निश्चय पावे पद निर्वाण ।।
उपयोग सहित धर्म आराधन करे तो,
निश्चय केवल ज्ञान होय ।

२. दुर्गतो प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः ।

३. सो धम्मो जो जीवं धारेइ भवण्णवे निवडमाणं ।

४. देव, गुरू, धर्म ये तीन तत्त्व ही महान् हैं ।
इनका आराधन करे, वो ही सच्चा बुद्धिमान है ।।

**तीन तत्त्व :**

(१) देव, (२) गुरु, (३) धर्म ये तीन तत्त्व हैं। इस तरह तीसरा आराध्य तत्त्व धर्म है। देव और गुरु को, देव एवं गुरु की योग्यता प्राप्त कराने वाला तत्त्व धर्म ही है।

**धर्म का अर्थ :**

आचार्य हरिभद्रसूरि ने धर्म का अर्थ इस प्रकार किया है—जो दुर्गति में पड़ते हुए आत्मा को धारण करके रखता है, वह धर्म है। उपाध्याय यशोविजयजी ने इसी से मिलता-जुलता धर्म का अर्थ किया है। धर्म उसे कहते हैं जो भवसागर (संसार समुद्र) में डूबते हुए जीव को धारण करके रखता है, पकड़ लेता है, बचा लेता है।

इसके दो फलितार्थ ये होते हैं:—१. जिस वृत्ति-प्रवृत्ति से जीव ऊपर उठे, नीचे दुर्गति में न गिरे।

२. जिस वृत्ति-प्रवृत्ति से प्राणी संसार-सागर में डूबने से बचे तथा उसकी मोक्ष प्राप्ति सम्बन्धी योग्यता बढ़े, वह धर्म है।

धर्म के इस आशय से या फलितार्थ से अनभिज्ञ कई व्यक्ति 'धृञ् धारणे' धातु के धारण अर्थ को लेकर यह मानते हैं कि जिसने जिस वस्तु को धारण

किया है, वही उसका 'धर्म' है किन्तु यह उनका निरा भ्रम है । ऐसे भ्रान्त लोगों के मतानुसार तो 'अधर्म' नाम की कोई चीज है ही नहीं क्योंकि उनकी इस भ्रान्त मान्यता के अनुसार तो धर्म के पेट में सभी पापी, अधर्मी लोगों के कार्यों का भी समावेश हो जाता है ।

एक चोर ने चौर्यकर्म धारण कर रखा है, वह भी उनके विचारानुसार धर्म हो जाएगा । इसी प्रकार एक शिकारी ने पशु वध धारण कर रखा है; एक व्यभिचारी पुरुष या वैश्या ने व्यभिचार-दुराचार धारण कर रखा है, एक कसाई ने पशु हत्या कर्म धारण कर रखा है, पूर्वोक्त भ्रान्त अर्थ के अनुसार तो इन सबके पाप कृत्यों का धारण भी धर्म कहलाएगा, किन्तु यह अर्थ भ्रान्त एवं विपरीत है । अतः लक्षण के अनुसार धर्म का पूर्वोक्त अर्थ ही समीचीन है ।

केवली प्रज्ञप्त धर्म ही ग्राह्य है ।

धर्म का अर्थ समझने के बाद यह जानना आवश्यक है कि धर्म शब्द से कौनसा धर्म ग्राह्य है और क्यों ?

धर्म के सम्बन्ध में बड़ी भारी गड़बड़ी चल रही है । पंथों और सम्प्रदायों के चक्कर में पड़कर यह महान् कल्याणकारी एवं आराध्य तत्त्व अपना महत्त्व ही खो बैठा है । विश्व में धर्म के नाम से अनेक मत, पंथ, सम्प्रदाय आदि चल रहें हैं । जो धर्म शांति और सुख का प्रदाता था, उसको लेकर बहुत से सम्प्रदायों और मतों में आए दिन संघर्ष, कलह, क्लेश, वाद-विवाद एवं सिर फुटोबल होती है । इन दुष्प्रवृत्तियों को देखकर कैसे कहा जा सकता है कि धर्म सुख शांति का दाता या समाज का धारण-पोषध करने वाला है । विभिन्न सम्प्रदायों के पारस्परिक द्वन्द्वों को देखकर धर्म उपहास की वस्तु बन गया है । इसी कारण ग्राम, नगर, प्रान्त, राष्ट्र, समाज या संघ में उन्नति और सुख शान्ति वृद्धि के बदले अवनति, अधोगति और दुःख तथा अशान्ति में वृद्धि हो रही है, बढ़ोतरी हो रही है ।

चौबेजी बनने गये थे छब्बे, परन्तु छब्बे तो न बन सके और चौबेजी के उल्टे दुब्बे बनकर आये, यह कहावत चरितार्थ हुई ।

इसे देखकर कई अनभिज्ञ या नास्तिक लोग कह बैठते हैं कि इससे तो अच्छा था, ये धर्म कर्म ही न रहते । इन्हें ही देश निकाला दे दिया जाता तो इतनी अशान्ति और संघर्ष तो न होता परन्तु ऐसा कहने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि वैष्णव, शैव, शाक्त, वैदिक, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई आदि विशेषण वाले धर्म एक तरह से सम्प्रदाय है । इनमें धर्म हो सकता है परन्तु वास्तविक धर्म ये नहीं हैं । सम्प्रदाय आदि बर्तन यानी पात्र के समान हैं और धर्म अमृत

तुल्य है। अमृत रखने के लिए बर्तन आवश्यक तो है परन्तु बर्तन को ही अमृत मानना भूल होगी। इसी प्रकार सम्प्रदाय को ही धर्म मानना भूल होगी।

कलह, द्वन्द्व या संघर्ष इन सम्प्रदायों के कारण ही होते हैं, शुद्ध धर्म के कारण नहीं। शुद्ध धर्मरूप अमृत ने तो अतीतकाल में लाखों मानवों को तारा है, वर्तमान में भी तर रहे हैं और भविष्य में भी तरेंगे। शुद्ध धर्म का पालन तो समाज और राष्ट्र में सुख शान्ति वर्धक है, आत्मा का कल्याण करने वाला है। दुर्गति में गिरने से बचाने वाला है। सद्गति या मोक्ष गति में पहुँचाने वाला है।

विचारणीय तथ्य यह है कि तथाकथित विभिन्न धर्मों के प्ररूपक महानुभावों ने शुद्ध धर्म के नाम से भी जो विधान किये हैं, उनमें परस्पर मतभेद हैं। इसी कारण साधारण मनुष्य भ्रम में पड़ जाता है कि किसे धर्म मानें और किसे धर्म नहीं मानें ?

एक धर्म कहता है—यज्ञ में होने वाली पशु बलि के रूप में हिंसा, हिंसा नहीं होती। दूसरा कहता है—यज्ञीय हिंसा भी हिंसा है। एक धर्म कहता है—अमुक रूढ़ि धर्म है, इसके विपरीत दूसरा धर्म कहता है—अमुक रीतिरिवाज या प्रथा का पालन ही धर्म है, बशर्ते कि उसमें अहिंसा संयम और तप हो, जहां अहिंसा–इत्यादि नहीं है, तप नहीं हैं, वहां अमुक प्रथा धर्म नहीं हो सकती। अतः हिंसा प्रधान, असंयम—(व्यभिचार, चोरी, असत्य) प्रधान या तपस्या रहित केवल भोग-विलास-परायण धर्म,–धर्म नहीं हो सकता।

अतः जिसमें अहिंसा, संयम और तप-त्याग की प्रधानता हो, जो आप्त पुरुषों द्वारा कथित हो, वही धर्म-केवलि प्रज्ञप्त धर्म ग्राह्य हो सकता है।

'दशवैकालिक' सूत्र में स्पष्ट है :—

"धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।"

आप्त का अर्थ है—सर्वज्ञ तथा साक्षात् ज्ञाता दृष्टा। ऐसे आप्त पुरुष केवली (केवलज्ञानी-सर्वज्ञ) एवं साक्षात द्रष्टा वीतराग–(राग द्वेष रहित) पुरुषों द्वारा कथित धर्म ही प्रामाणिक एवं ग्राह्य हो सकता है।

छद्मस्थ तथा अपूर्ण ज्ञान-दर्शन से युक्त व्यक्ति यत्किंचित अज्ञान एवं रागद्वेष आदि आवृत्त होने के कारण अनाप्त होता है और अनाप्त कथित धर्म प्रामाणिक नहीं हो सकता।

जब अज्ञान और मोह का पूर्णतया नाश हो जाता है, तब उस शुद्ध आत्मज्योति के समक्ष कोई भी पदार्थ दुर्ज्ञेय नहीं रह पाता। जब दोष या अज्ञान आदि आवरणों का समूल क्षय हो जाता है, तब उसके ज्ञान-दर्पण में दर्पणतल

की तरह समस्त पदार्थ समूह झलकने लगते हैं। उससे धर्म-अधर्म का यथार्थ यथावस्थित स्वरूप कुछ भी छिपा नहीं रहता।

वे साक्षात् द्रष्टा होते हैं। लोक व्यवहार में भी सुनी-सुनाई बात कहने वाले की अपेक्षा साक्षात् द्रष्टा–प्रत्यक्ष अनुभवी की बात पर अधिक विश्वास किया जाता है। अतएव धर्म भी साक्षात् द्रष्टा केवलज्ञानी, रागद्वेष विजेता आप्त पुरुषों द्वारा कथित ही वास्तविक श्रद्धास्पद होता है। इसीलिए 'केवली पण्णत्तो धम्मो' विशेषण धर्म के लिए दिया गया है।

धर्म की ही पूर्ण आराधना से वीतराग, केवली, अरिहन्त, तीर्थंकर एवं सिद्ध बनते हैं तथा धर्म की ही साधना से आचार्य, उपाध्याय और साधु बनते हैं। इसलिए धर्म केवल साधुओं के लिए ही नहीं, समस्त प्राणियों विशेषतः सब मनुष्यों के लिए अनिवार्य रूप से आराध्य है, साध्य है, सर्वतो भावेन उपादेय है।

—त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज०)

## □ शास्त्री जी की दया

□ डॉ. भैरूलाल गर्ग

सन् १९४० में सेवाग्राम की बात है। उन दिनों वहां परचुरे शास्त्री नामक एक विद्वान् भी रहते थे जो कुष्ठ रोग से पीड़ित थे। बापू स्वयं उनकी सेवा किया करते थे। वे उनजी मालिश करते, घावों को धोते और दवाई लगाते। एक दिन जब बापू शास्त्रीजी की मालिश कर रहे थे तो परिश्रमी कार्यकर्त्ता पं सुन्दरलालजी ने जो निकट ही खड़े थे, बापू से कहा—"बापू, कोढ़ की ही एक गुणकारी औषधि है। एक जीवित काला साँप पकड़ा जावे और उसे कोरी मिट्टी की हाँडी में बन्द कर दिया जावे। फिर उस हाँडी को उपलों की आग में इतना तपाया जाये कि वह सांप जलकर भस्म हो जाये। वह भस्म यदि शहद के साथ सेवन की जाये तो अत्यन्त जीर्ण कुष्ट रोग भी मिट जाता है।"

यह सुनकर बापू मुस्कुराये और फिर शास्त्रीजी को सम्बोधन करके पूछा—"कहिए शास्त्रीजी, क्या आप उक्त प्रयोग को करने के लिए तैयार हैं?"

शास्त्रीजी कुछ देर तो चुप बैठे रहे, फिर रुंधी आवाज से बोले—"बापू, यदि सांप के बजाय मुझे ही भस्म कर दिया जाये तो क्या हानि है? उस सांप बेचारे ने कौनसा अपराध किया है जो उसे जीवित ही भस्म कर दिया जावे?"

इतना कहने के पश्चात् शास्त्रीजी की आँखों से आँसू बहने लगे। कुछ देर रुककर वे फिर बोले—"मैंने पिछले जन्म में पाप किये थे, दूसरों को सताया था, उसी का परिणाम तो मैं भोग रहा हूं। यदि पुनः मैंने निरपराध प्राणियों को सताया तो कौन जानता है मेरा क्या भाग्य होगा? मेरे लिए अधिक अच्छा यह होगा कि किसी निरपराध जीव को सताने के स्थान पर मैं जलकर भस्म हो जाऊँ।"

—जेल रोड, झालावाड़-३२६००१ (राज०)

छह किस्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला
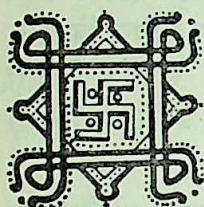
# भारतीय शाकाहार [५]

☐ डॉ० ताराचन्द गंगवाल

## खाद्य पदार्थों में पोषक तत्त्व
(प्रति 100 ग्राम)

| | प्रोटीन (Protein) | वसा (Fat) | कार्वोहाइड्रेट (Carbo-hydrate | ऊर्जा (कैलोरी) (Calories) |
|---|---|---|---|---|
| **अन्न** | | | | |
| बाजरा | ११.६ | ५.० | ६७.५ | ३६१ |
| जौ | ११.५ | १.३ | ६९.६ | ३३६ |
| ज्वार | १०.४ | १.९ | ७२.६ | ३४९ |
| मक्का | ११.१ | ३.६ | ६६.२ | ३४२ |
| चावल, हाथ से कुटे | ८.५ | ०.६ | ७७.४ | ३४९ |
| चावल, मिल से साफ किये हुए | ६.४ | ०.४ | ७९.० | ३४६ |
| गेहूँ (साबुत) | ११.८ | १.५ | ७१.२ | ३४६ |
| गेहूँ का आटा (समूचा) | १२.१ | १.७ | ६९.४ | ३४१ |
| गेहूँ का आटा (शोधित) | ११.० | ०.९ | ७३.९ | ३४८ |
| **दालें** | | | | |
| चना (साबुत) | १७.१ | ५.३ | ६०.९ | ३६० |
| चने की दाल | २०.८ | ५.६ | ५९.८ | ३७२ |
| उड़द की दाल | २४.० | १.४ | ५९.६ | ३४७ |
| लोबिया | २४.१ | १.० | ५४.५ | ३२३ |
| मूँग (साबुत) | २४.० | १.३ | ५६.७ | ३३४ |
| मूँग की दाल | २४.५ | १.२ | ५९.९ | ३४८ |
| मसूर | २५.१ | ०.७ | ५९.० | ३४३ |
| मोठ | २३.६ | १.१ | ५६.५ | ३३० |
| मटर (सूखे) | १९.७ | १.१ | ५६.५ | ३१५ |

| | प्रोटीन | वसा | कार्बोहाइड्रेट | ऊर्जा (कैलोरी) |
|---|---|---|---|---|
| राजमा | २२.९ | १.३ | ६०.६ | ३४६ |
| अरहर | २२.३ | १.७ | ५७.६ | ३३५ |
| सोयाबोन | ४३.२ | १९.५ | २०.९ | ४३२ |
| **पत्तेदार साग** | | | | |
| बथुआ | ३.७ | ०.४ | २.९ | ३० |
| बंधगोभी | १.८ | ०.१ | ४.६ | २७ |
| मेथी | ४.४ | ०.९ | ६.० | ४९ |
| धनिया | ३.३ | ०.६ | ६.३ | ४४ |
| सलाद | २.१ | ०.३ | २.५ | २१ |
| पोदीना | ४.८ | ०.६ | ५.८ | ४८ |
| मूली के पत्ते | ३.८ | ०.४ | २.५ | २८ |
| पालक | २.० | ०.७ | २.९ | २६ |
| **जमीकंद** | | | | |
| चुकन्दर | १.७ | ०.१ | ८.८ | ४३ |
| गाजर | ०.९ | ०.२ | १०.६ | ४८ |
| अरबी | ३.० | ०.१ | २१.१ | ९७ |
| प्याज | १.२ | ०.१ | ११.१ | ५० |
| आलू | १.६ | ०.१ | २२.६ | ९७ |
| मूली (लाल) | ०.६ | ०.३ | ६.८ | ३२ |
| मूली (सफेद) | ०.७ | ०.१ | ३.४ | १७ |
| शकरकन्द | १.२ | ०.३ | २८.२ | १२० |
| शलजम | ०.५ | ०.२ | ६.२ | २९ |
| सुवरण (जमीकंद) | १.२ | ०.१ | १.४ | ७९ |
| **अन्य सब्जियाँ** | | | | |
| चौलाई | ०.९ | ०.१ | ३.५ | १९ |
| पेठा | ०.४ | ०.१ | १.९ | १० |
| सेम | ७.४ | १.० | २९.८ | १५८ |
| सेम (अन्य प्रकार की) | ४.५ | ०.१ | ७.२ | ४८ |
| करेला | १.६ | ०.२ | ४.२ | २५ |
| लोकी | ०.२ | ०.१ | २.५ | १२ |
| लोकी (अन्य प्रकार की) | ०.५ | ०.३ | ३.३ | १८ |
| बैंगन | १.४ | ०.३ | ४.० | २४ |
| गोभी | २.६ | ०.४ | ४.० | ३० |

| | प्रोटीन | वसा | कार्बोहाइड्रेट | ऊर्जा (कैलोरी) |
|---|---|---|---|---|
| ग्वार फली | ३.२ | ०.४ | १०.८ | ६० |
| लोबिया फली | ३.५ | ०.२ | ८.१ | ४८ |
| ककड़ी | ०.४ | ०.१ | २.५ | १३ |
| सहजना | २.५ | ०.१ | ३.७ | २६ |
| अंजीर (लाल) | १.२ | ०.६ | १०.८ | ५३ |
| बड़ी मिर्च | १.३ | ०.३ | ४.३ | २४ |
| कटहल | २.६ | ०.३ | ६.४ | ५१ |
| करोंदा | १.१ | २.९ | २.९ | ४२ |
| गांठगोभी | १.१ | ०.२ | ३.८ | २१ |
| भिण्डी | १.९ | ०.२ | ६.४ | ३५ |
| अमिया कैरी | ०.७ | ०.१ | १०.१ | ४४ |
| पपीता (कच्चा) | ०.७ | ०.२ | ५.७ | २७ |
| परवल | २.० | ०.३ | २.२ | २० |
| मटर | २.० | ७.२ | १५.९ | ९३ |
| केला (कच्चा) | १.४ | ०.२ | १४.० | ६४ |
| कद्दू | १.४ | ०.१ | ४.६ | २५ |
| तुरई | ०.५ | ०.१ | ३.४ | १७ |
| टिंडा | १.४ | ०.२ | ३.४ | २१ |
| टमाटर (कच्चा) | १.९ | ०.१ | ३.६ | २३ |
| सफेद कद्दू | ०.५ | ०.१ | ३.५ | १७ |
| सिंघाड़ा (ताजा) | ४.७ | ०.३ | २३.३ | ११५ |

**गिरी व तिलहन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| बादाम | २०.८ | ५८.९ | १०.५ | ६५५ |
| काजू | २१.२ | ४६.९ | २२.३ | ५९६ |
| चिलगोजा | १३.९ | ४९.३ | २९.० | ६१५ |
| नारियल | ६.८ | ६२.३ | १८.४ | ६६२ |
| तिल | १८.३ | ४३.३ | २५.० | ५६३ |
| मूंगफली | २५.३ | ४०.१ | २६.१ | ५६७ |
| पिश्ता | १९.८ | ५३.५ | १६.२ | ६२६ |
| कुसुम्ब के बीज | १३.५ | २५.६ | १७.९ | ३५६ |
| सूरजमुखी | १९.८ | ५२.१ | १७.९ | ६२० |
| अखरोट | १५.६ | ६४.५ | ११.० | ६८७ |

| | प्रोटीन | वसा | कार्बोहाइड्रेट | ऊर्जा (कैलोरी) |
|---|---|---|---|---|
| **मसाले** | | | | |
| हींग | ४.० | १.१ | ६७.८ | २९७ |
| मिर्च (सूखी) | १५.९ | ६.२ | ३१.६ | २४६ |
| मिर्च (हरी) | २.९ | ०.६ | ३.० | २९ |
| धनिया | १४.१ | १६.१ | २१.६ | २८८ |
| जीरा | १८.७ | १५.० | ३६.६ | ३५६ |
| मेथी | २६.२ | ५.८ | ४४.१ | ३३३ |
| लहसन | ६.३ | ०.१ | २९.८ | १४५ |
| काली मिर्च | ११.५ | ६.८ | ४९.२ | ३०४ |
| इमली | ३.१ | ०.१ | ६७.४ | २८३ |
| **फल** | | | | |
| आंवला | ०.५ | ०.१ | १३.७ | ५८ |
| सेव | ०.२ | ०.५ | १३.४ | ५८ |
| केला (पका हुआ) | १.२ | ०.३ | २७.२ | ११६ |
| मुनक्का | २.७ | ०.५ | ७५.२ | ३१६ |
| खजूर | २.५ | ०.४ | ७५.८ | ३१७ |
| अंजीर | १.३ | ०.२ | ७.६ | ३७ |
| अंगूर (काले) | ०.६ | ०.४ | १३.१ | ५८ |
| अंगूर (हरे) | ०.५ | ०.३ | १६.५ | ७१ |
| अमरूद | ०.९ | ०.३ | ११.२ | ५१ |
| जामुन | ०.७ | ०.३ | १४.० | ६२ |
| नींबू | १.० | ०.९ | ११.१ | ५७ |
| आम | ०.६ | ०.४ | १६.९ | ७४ |
| खरबूजा | ०.३ | ०.२ | ३.५ | १७ |
| तरबूज | ०.२ | ०.२ | ३.३ | १६ |
| पपीता (पका हुआ) | ०.६ | ०.१ | ७.२ | ३२ |
| फालसा | १.३ | ०.९ | १४.७ | ७२ |
| अनन्नास | ०.४ | ०.१ | १०.८ | ४६ |
| आलूबुखारा | ०.७ | ०.५ | ११.१ | ५२ |
| अनार | १.६ | ०.१ | १४.५ | ६५ |
| सीताफल | १.६ | ०.५ | २३.५ | १०४ |
| किशमिश | १.८ | ०.३ | ७४.६ | ३०८ |
| टमाटर (पका हुआ) | ०.९ | ०.२ | ३.६ | २० |

| | प्रोटीन | वसा | कार्बोहाइड्रेट | ऊर्जा (कैलोरी) |
|---|---|---|---|---|
| बेलफल | ७.१ | ३.७ | १८.१ | १३४ |
| बेर | ०.८ | ०.३ | १७.१ | ७४ |
| **दूध एवं दूध के पदार्थ** | | | | |
| छाछ, मठा | ०.८ | १.१ | ०.५ | १५ |
| भैंस का दूध | ४.३ | ८.८ | ५.० | ११७ |
| गाय का दूध | ३.२ | ४.१ | ४.४ | ६७ |
| बकरी का दूध | ३.३ | ४.५ | ४.६ | ७२ |
| दूध (वसा रहित) गाय का | ३८.० | ०.१ | ५१.० | ३५७ |
| **वसा, तेल इत्यादि** | | | | |
| मक्खन | — | ८१.१ | — | ७२९ |
| घी (गाय का) | — | १००.० | — | ९०० |
| खाने के तेल (मूंगफली, तिल) | — | १००.० | — | ९०० |
| **विविध खाद्य पदार्थ** | | | | |
| शक्कर | ०.१ | — | ९९.४ | ३९८ |
| नारियल का पानी | १.४ | ०.१ | ४.४ | २४ |
| शहद | ०.३ | — | ७९.५ | ३१९ |
| गुड़ | ०.४ | ०.१ | ९५.० | ३८३ |
| गन्ने का रस | ०.१ | ०.२ | ९.१ | ३९ |
| खमीर (Yeast) सूखा | ३५.७ | १.८ | ४६.३ | ३४४ |

## माँस की तुलना में अन्न व दालों के पौष्टिक तत्त्व–(प्रति 100 ग्राम)

| | प्रोटीन | वसा | कार्बोहाइड्रेट | ऊर्जा (कैलोरी) |
|---|---|---|---|---|
| गौ मांस (वसा के अनुपात से) | १४ to २५ | ३ to ३४ | ० | ११५ to ३७५ |
| बकरा या भेड़ का मांस | १९.८ | १३.३ | १.३ | १९४ |
| अन्न | ७.१ to १३.६ | ०.५ to ७.६ | ६०.६ to ७९.३ | ३०८ to ३७४ |
| दालें | १७.१ to ४३.२ | ०.७ to १९.५ | २०.९ to ६१.२ | ३२७ to ४३२ |

# कुछ खाद्य पदार्थों के तुलनात्मक पोषक तत्त्व

[प्रति ६० पैसा—एक अण्डे के मार्च १९८२ के मूल्य—के आधार पर]

| खाद्य पदार्थ | भाव (रुपयों में) | प्रति ६० पैसे (तोल) | पोषक तत्त्व (ग्रामों में) | | | कैलोरी (ऊर्जा) (Calories) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | प्रोटीन (Protein) | वसा (Fat) | कार्बोहाइड्रेट (Carbohydrate) | |
| **सामिष पदार्थ** | | | | | | |
| मुर्गी का अंडा | ६० पैसे (एक) | ५५ ग्राम | ६.४ | ५.७० | — | ८०.५ |
| मांस | १५/- किलो | ४० ग्राम | ८.० | ५.३० | — | ७७ ८ |
| मछली | १५/- किलो (१०/-से २५/-) | ४० ग्राम | ८.६ | ०.६४ | — | ४०.० |
| दूध | २/४० किलो | २५० ग्राम | ८.२५ | ९.०० | १२.०० | १६२.५ |
| **शाकाहारी पदार्थ** | | | | | | |
| गेहूं का आटा | २/४० किलो | २५० ग्राम | ३०.२५ | ४.२५ | १७३.५ | ८५२.५ |
| चावल | ६/- किलो | १०० ग्राम | ६.४० | ०.४० | ७९.० | ३४६.० |
| दाल | ६/- किलो | १०० ग्राम | २०.८० | ५.६० | ५९.८ | ३७२.० |
| शक्कर | ६/- किलो | १०० ग्राम | — | — | १००.० | ४००.० |
| गुड़ | ३/- किलो | २०० ग्राम | — | — | २००.० | ८००.० |
| **ताजा फल** | | | | | | |
| केला | २/४० किलो | २५० ग्राम | ३.२५ | ०.५० | ९१.० | ३८२.५ |
| **सूखा मेवा** | | | | | | |
| मूंगफली | ८/- किलो | ७५ ग्राम | २०.०० | ३०.०० | १५.० | ४१०.० |
| **पेटेंट (Proprietory) प्रोटीन के डिब्बे** | | | | | | |
| प्रोटीनैक्स (डूमैक्स) | २१/६० २२५ ग्राम | ६ ग्राम | ३.३ | — | — | १३.० |
| प्रोटीन्यूल्स (अलेम्बिक) | २५/- २२५ ग्राम | ५ ग्राम | — | — | — | २०.० |
| प्रोमोलान (साराभाई) | १२/- २२५ ग्राम | ११ ग्राम | ४.५ | — | — | १८.० |
| स्यू (अंग्लो-फ्रेंच) | १५/- ३०० ग्राम | १२ ग्राम | ४.० | — | — | १६.० |
| स्पर्ट (वार्डन) | २१/६० २०० ग्राम | ५.५ ग्राम | १.० | नगण्य | ३.० | १८.० |
| कम्पलान (ग्लैक्सो) | १७/८० ५०० ग्राम | १७ ग्राम | ३.५ | २.७ | ९.० | ७५.० |
| ग्रैप्टीन बिस्कुट (रैप्टकौस) | २४/६० २७५ ग्राम | ६.६ ग्राम | २.० | १.० | २.५ | २७.० |

अधिक पोषण के उद्देश्य से महंगे पेटैन्ट डिब्बाबन्द प्रोटीन, जो बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं, उनमें प्रोटीन की मात्रा तो कम होती ही है, किन्तु अधिक मुनाफे का औचित्य जताने के लिये सस्ते कार्बोहाइड्रेट और वनस्पतिक वसा और अंशमात्र विटामिन और खनिज, जो भी नगण्य लागत के होते हैं, सम्मिश्रण किये जाते हैं। इनके निर्माण महंगे और फालतू भोजन सामग्री की श्रेणी का उदाहरण ही है।

## सन्तुलित शाकाहारी भोजन की तालिका

[वयस्क पुरुष के लिए]

| खाद्य पदार्थ | साधारण श्रम के लिए | | | | | अधिक श्रम के लिए |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | तोल | प्रोटीन (Protein) | वसा (Fat) | कार्बोहाइड्रेट (Carbohydrate) | कैलोरी (Calories) | |
| अन्न (गेहूं, चावल आदि) | ४०० ग्राम | ४८.४ | ६.५ | २७७.६ | १३८४.० | ४७५ ग्राम |
| दालें | ७० ग्राम | १२.० | ८.५ | ४२.० | २४३.६ | ८० ग्राम |
| हरी पत्ती का साग | १०० ग्राम | २.० | ०.७ | २.६ | २६.० | १२५ ग्राम |
| अन्य सब्जियाँ | ७५ ग्राम | २.० | ०.३ | ३.० | २२.० | ७५ ग्राम |
| जमीकन्द | ७५ ग्राम | १.२ | — | १७.० | ७२.० | १०० ग्राम |
| फल | ३० ग्राम | ०.२ | — | ३.२ | १४.५ | ३० ग्राम |
| दूध (गाय का) | २०० सीसी | ६.४ | ८.२ | ८.८ | १३४.० | २००सीसी |
| घी, तेल | ३५ ग्राम | — | ३५.० | — | ३१५.० | ४० ग्राम |
| गुड़, शक्कर | ३० ग्राम | — | — | ३०.० | १२०.० | ४० ग्राम |
| लागत लगभग १०० रु० प्रति माह | | ७७.२ | ५६.५ | ३८४.५ | २३३१ | |

अधिक पोषण की आवश्यकता होने पर मूंगफली भी सम्मिलित की जा सकती है, जिसके पोषक तत्त्व निम्नलिखित हैं :—

| मूंगफली | ३० ग्राम | ८.० | १२.० | ८.० | १७० |
|---|---|---|---|---|---|

**टिप्पणी :** (१) निरन्तर एक ही प्रकार के भोजन से उकताने से बचने के लिये, 'खाद्य पदार्थों में पोषक तत्त्व' तालिका की मदद से पोषक तत्त्व एवम् कैलोरी को सन्तुलित करके फेर-बदल किया जा सकता है।

(२) विशेष प्रकार की रोटी बनाने का नुस्खा (सस्ती, आसानी से उपलब्ध, सन्तुलित, पौष्टिक, बनाने में आसान, यात्रा में ले जाने में सुविधा, कम जगह रोकने वाली, जो सफर अथवा पिकनिक (Picnic) के लिए भी उपयुक्त है :—

(इसमें भी अपनी रुचि के अनुसार हेर-फेर किया जा सकता है।)
गेहूँ का आटा ३०० ग्राम, चने का आटा (बेसन) ७५ ग्राम,
पत्तीदार साग (मेथी, पालक, बथुवा चौलाई इत्यादि) १५ ग्राम,
दूध ३० सी.सी. या अधिक: नमक १५ ग्राम या रुचि के अनुसार
प्याज (परहेज न हो तो) २५ ग्राम, घी या वनस्पतिक तेल १० ग्राम या अधिक,
मूंगफली और तरह-तरह के मसाले भी सम्मिलित किये जा सकते हैं।

(३) सस्ते लड्डू :—

साबुत गेहूँ ३० ग्राम: मूंग २० ग्राम, मूंगफली ८ ग्राम } भाड़ में भुनवाकर व पीसकर
गुड़ का रस २० ग्राम

**प्रस्तावित सन्तुलित शाकाहारी भोज्य-पदार्थों में आवश्यक अमोनिएसिड्स की मात्रा**

| दैनिक आवश्यकता (पुरुषों एवं स्त्रियों के लिए) मिलीग्राम में | | फिनिल एलेनीन (Phenyl-alanine) | मिथियोनीन (Methionine) | ल्यूसीन (Leucine) | वैलीन (Valine) | लाइसीन (Lysin) | आइसो-ल्यूसीन (Iso-leucine) | थ्रियोनीन (Threonin) | ट्रिप्टोफेन (Tryptophan) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| न्यून मात्रा | | ४०० | १७५ | १७० | २३० | ४०० | ७० | १०३ | ८२ |
| अधिक मात्रा | | ११८० | ११०० | ११०० | ८०० | १२०० | ७०० | १५०० | ६३० |
| खाद्य पदार्थ | मात्रा | | | | | | | | |
| १. अन्न (गेहूँ, साबुत) | ४०० ग्राम | २६६० | १३०० | ३६४० | २२४० | १४०० | २०८० | १७२० | ६२० |
| २. दालें (मटर) | ७० ग्राम | ८०५ | ३२२ | ११२७ | ८८५ | १०४३ | ८८९ | ६२६ | १२९ |
| ३. हरी सब्जियाँ | १०० ग्राम | | | | | | | | |
| ४. अन्य सब्जियाँ | ७५ ग्राम | | | | | | | | |
| ५. जमीकन्द (आलू, कच्चे) | ७५ ग्राम | ९० | ३७ | १४२ | ८२ | १२७ | ५६ | १०५ | ३० |
| ६. फल | ३० ग्राम | | | | | | | | |
| ७. दूध (गाय का शुद्ध) | २०० ग्राम | ३६२ | १८६ | ७९६ | ४६६ | ४८६ | ४४२ | ३०४ | ९२ |
| ८. वसा (तेल, घी) | ३५ ग्राम | | | | | | | | |
| ९. चीनी व गुड़ | ३८ ग्राम | | | | | | | | |
| योग | | ३९१७ | १८४५ | ५७०५ | ३६७४ | ३०५६ | ३४६७ | २७५५ | ८७१ |
| विशेष मूंगफली | ३० ग्राम | १५६ | १६५ | १३९६ | ९०० | ७१७ | ८१९ | ५४९ | १५६ |

(क्रमशः)
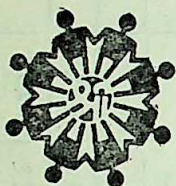
# The Hidden Spring

□ **By Shri Jitendra**

Man was born for happiness. If one is not happy, surely it must be the result of his own doings. Life is not merely to live but to live well. But most of us live without any design and pass through life as mere straws in the wind. Few men would deliberately choose to be unhappy.

The attainment of true happiness by the process of material wants or by excessive fun is an absurd task, which the modern man has foolishly imposed upon himself. What a typical modern man desires is more money, with a view to go in for ostentation and splendour and prove his superiority to those who have hitherto been his equals. Competition considered as the main goal of life is too grim, too tanacious, too much a matter of taut muscles and intent will to enable any body to be happy.

In these days of conflicts, tension and contradiction, the individual is caught up in great mental and intellectual dilemma. Of all the characteristics of human nature, 'Worrying is the most unfortunate and the most frequent cause of unhappiness.' Worry kills more people than work—and that is because more people worry than work. Worry is the interest paid in advance by those who borrow troubles. More often than not, the misfortunes we anticipate, either do not come about at all or if they do, they are not half as bad as expected.

Happiness means many things to many men. What an ordinary man imagines in the terms of happiness is merely the pleasures he derives from various mandane acquisitions. As multitude of people

feel happy in hoarding up material wealth. For them happiness is to be had simply by a proleferation of possession. Some conceive of happiness as building up a body beautiful and maintaining a good physique. Some find pleasure in taking alcohol in various forms. There are others who seek pleasure in the glamorous company of women. It is only a temporary dismaying escape from grim reality. The lure of painted and glamorous life and polished phrases of polite and fashionable society are poor substitute for real happiness. The torments within the heart cannot be stilled by the multitude of dances, feats and entertainments. Such a culture of consumption must stimulate, but never satisfy. It seems to promise everything but in the end seems to deliver nothing.

In the modern world, we have lost sight of the hidden spring of human life. Many of us seem to have lost the capacity for happiness. Violence is on the increase all the world over. Negative forces are creating conflicts and clashes. Destruction of property and life has become the order of the day. The minds of the people have been so indoctrinated that even the fear of God is no more to be found in the hearts. We are so engrossed in the daily routine of life and so over-helmed by the inflated importance we tend to give to our own role in running the world that the capacity to be joyful is rapidly becoming a thing of the past. We get unduly excited, unduly strained and unduly impressed by the importance of the little work we do in the world. In fact, one of the symptoms of approaching nervous breakdown is the belief that one's work is terribly important and taking a holiday would bring disaster. Many people fret and fume over very little thing that goes wrong and in this way waste a great deal of energy that might be more usefully employed.

I believe that unhappiness is very largely due to a mistaken view of the world, wrong ethics and misguided habits of life. Prosperity and happiness do not always go together. Fortune can give all she can to her votaries—wealth, power, reputation and long life, but it cannot make them happy. Happiness is not to be found in the rich

acquisitions and possessions of this world, nor in luxurious living but in the mind. Happiness is nothing concerete, nor anything tangible to be searched for. Any one could acquire it by cultivating a mental disposition to feel content. Contentment quality which emanates from within one's being, is the twin of happiness. The greatest happiness any person derives is by giving away rather than receiving gifts from others, by helping the needy and by working for the downtrodden people, not being selfish, and by entertaining lofty thoughts to improve the living conditions of all. Of all the miserable people of the world, there are none so miserable, who think only of themselves and whose motive is self-seeking. If we are to succeed in any measure in lightening the burden of others, our aim should be to make this world a happier place to live in. Only the joy that comes from right conduct and inner harmony is true happiness. Other pleasures are really source of pain and causes of shame. Where there is inner harmony there is no room for unhappiness.

---

# ब्रह्मचर्य

☐ डॉ० सियाराम सक्सेना 'प्रवर'

ब्रह्मचर्य है ब्रह्मलीनता ।।

परानन्द की परम पीनता,<br>
ब्रह्मचर्य है ब्रह्मलीनता ।<br>
ब्रह्मचर्य है ब्रह्मलीनता ।।१।।

सत्य अहिंसा में अविकल है,<br>
ब्रह्मचर्य की आत्म प्रतिष्ठा ।<br>
सत्य - अहिंसा - मनोभूमि में,<br>
ब्रह्मचर्य - संचार - प्रखरता ।<br>
ब्रह्मचर्य है ब्रह्मलीनता ।।२।।

ब्रह्मचर्य का जगरक्षक नयः,<br>
है तत्-क्रिया-प्रसार समुच्चय ।<br>
अपरिग्रह - अस्तेय भाव द्वय,<br>
यों ब्रह्मचर्य है दोष - हीनता ।<br>
ब्रह्मचर्य है ब्रह्मलीनता ।।३।।

कर्म-जाल से प्रवर मुक्ति-मय,<br>
भवसागर - जल-मुदित - मीनता,<br>
ब्रह्मचर्य है प्रत्यक् चेतन ।<br>
नित्य आत्मरत स्व अधीनता ।<br>
ब्रह्मचर्य है ब्रह्मलीनता ।।४।।

—बिड़ला महाविद्यालय, भवानीमंडी (राज.)

साधकों से बातचीत :
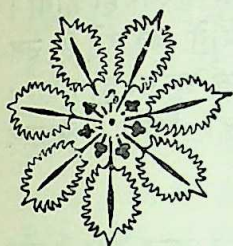
# ज्ञान प्राप्ति से मोक्ष प्राप्ति का क्रम—एक विवेचना

☐ श्री चाँदमल कर्णावट
संचालक, साधना विभाग

साधक बन्धुओ एवं बहनो !

काफी लम्बे समय के बाद आपके साथ पुनः बातचीत शुरू कर रहा हूं। आप मुझसे नाराज अवश्य होंगे, परन्तु अस्वस्थता और अन्य विशिष्ट कारणों वश मैं आपकी सेवा में उपस्थित नहीं हो सका, इसके लिए मुझे खेद है।

कुछ दिनों पूर्व 'दशवैकालिक सूत्र' का स्वाध्याय करते समय मुझे ऐसा प्रसंग मिला, जिसकी विवेचना मैंने आप लोगों तक भी पहुँचाना आवश्यक और उचित समझा। उक्त सूत्र के चतुर्थ अध्ययन की गाथा १४ से २५ तक में ज्ञान प्राप्ति से लेकर मोक्ष प्राप्ति का जो क्रम शास्त्रकार ने बताया है, उसी की विवेचना मैं क्रमशः आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूं।

**शास्त्रीय गाथाओं का अर्थ -**

शास्त्रकार ने मुक्ति प्राप्त के क्रम में सर्वप्रथम स्थान ज्ञान को दिया है। १४वीं गाथा से १८वीं गाथा तक बताया गया है कि जब आत्मा जीव और अजीव दोनों को जान लेता है तब सभी जीवों की बहुत भेदों वाली नरक-तिर्यंच आदि नानाविध गतियों को भी जान लेता है। जीवाजीव को जान लेने वाला आत्मा, पुण्य, पाप तथा मोक्ष का भी ज्ञान कर लेता है। तदनन्तर वह आत्मा देव एवं मनुष्य सम्बन्धी कामों - भोगों को असारता को समझ कर उनका त्याग कर देता है। इसके फलस्वरूप वह रागद्वेषादि कषाय रूप आभ्यन्तर और माता-पिता तथा सम्पत्ति रूप बाह्य संयोगों का भी त्याग कर देता है। ज्ञान की अन्तिम परिणति के रूप में वह ज्ञानवान आत्मा द्रव्य एवं भाव से मुंडित होकर अणगार वृत्ति को ग्रहण कर लेता है अर्थात् संयमी एवं त्यागी बन जाता है।

**सम्यग्ज्ञान की अनिवार्यता :**

साधना मार्ग में ज्ञान की कितनी उपयोगिता है, यह उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है। प्रत्येक प्रकार की क्रिया चाहे वह लौकिक हो या लोकोत्तर उसे अपनाने से पूर्व उसके स्वरूप का ज्ञान हमारे लिए नितान्त आवश्यक है। व्यापार, व्यवसाय, खेती, कला, कारीगरी कोई भी लौकिक कार्य लेलें, हमें

उनके विषय में औपचारिक या अनौपचारिक जानकारी प्राप्त करनी ही होगी। ठीक इसी प्रकार जिस साधना मार्ग पर आप और हम आगे बढ़ रहे हैं, उस साधना के विषय में हमें भी अनिवार्य रूप से कुछ ज्ञान प्राप्त करना ही होगा। अन्यथा सम्यग्ज्ञान के अभाव में हम साधना मार्ग पर सही दिशा में अग्रसर नहीं हो सकेंगे।

ज्ञान स्व-पर का भेद कराने वाला प्रमुख तत्त्व है। जड़ तत्त्व क्या है और चेतन तत्त्व क्या है, इनमें विभेदीकरण करके ही हम साधना मार्ग में स्थिर हो सकते हैं। ज्ञान के अभाव में हम भौतिक पदार्थों या जड़ पदार्थों में ही उलझकर रह जायेंगे। रागद्वेष की परिणतियाँ तथा मोह और अज्ञान के अँधेरे रास्ते हमें अधोगति में ले जायेंगे। भेद विज्ञान-विवेक के अभाव में हमारी यह आत्मा चतुरगति रूप संसार में चक्कर लगाती ही रहेगी।

आपकी ओर से यह प्रश्न हो सकता है कि ज्ञान किसका किया जाय? तो मैं निवेदन करूँगा कि हमें सर्वप्रथम अपने आपका ज्ञान करना है। आत्मा या चेतन तत्त्व क्या है, उसका स्वरूप क्या है, इसके क्या लक्षण और गुण हैं, उनकी क्षमताएँ और सामर्थ्य क्या है, उसके साथ ही शेष तत्त्वों का ज्ञान भी हमारे लिए आवश्यक है। पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बँध और मोक्ष तत्त्वों का ज्ञान हमें आत्मोत्थान की प्रेरणा प्रदान करेगा। बँध का स्वरूप समझकर हम उससे बचने का प्रयास करेंगे और संवर, निर्जरा के द्वारा मोक्ष की ओर अग्रसर होंगे। जब तक इन नव तत्त्वों का ज्ञान नहीं किया जायेगा, तब तक उनमें प्रवृत्ति अथवा कुछ तत्त्वों से निवृत्ति कैसे सम्भव होगी? इसीलिए तो 'उत्तराध्ययन सूत्र' में बताया गया—"नाणंस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाण मोहस्सविव्वजणाए" अर्थात् ज्ञान ही सर्व प्रकाशक तत्त्व है। और अज्ञान तथा मोह त्यागने योग्य है। "नाणेण विना न हुंति चरणगुणा" अर्थात् सम्यग्ज्ञान के अभाव में सम्यग् आचरण का विकास नहीं हो सकता, सम्यग्चारित्र सम्यग्ज्ञान के प्रकाश में ही आलोकित होता है, तेजस्वा बनता है और यथेष्ट फल को प्रदान करता है। इसीलिए हम अज्ञान को परम शत्रु और ज्ञान को परम मित्र मानते हैं। ज्ञान हमें हिताहित और लक्ष्य का बोध कराता है। इसके विपरीत अज्ञान में हम भटकते ही रहते हैं और अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते। एक ग्राम से ग्रामान्तर जाते हुए भी यदि उन्हें मार्ग का ज्ञान नहीं है तो हम गन्तव्य तक नहीं पहुँच सकते। इसी प्रकार सम्यग्ज्ञान प्राप्त किए बिना हम मुक्ति की मंजिल तक कभी नहीं पहुँच सकते।

**ज्ञान से विकास की प्रक्रिया :**

जीव एवं उसकी गतियों को जानने वाला आत्मा पुण्य, पाप, बंध और

मोक्ष को भी जानता है। किस प्रकार के कार्य करने से जीव किस प्रकार के बँध करता है, उसका परिणाम क्या है, तथा उससे मुक्त होने का उपाय या प्रक्रिया क्या है, इनका ज्ञान प्राप्त करके आत्मा ज्ञान के आलोक में सन्मार्ग में प्रवृत्त होता है और असद् मार्ग से निवृत्त हो सकता है। आप और हम जानते हैं कि इन्द्रियों के विषय, विकार तथा उनके प्रति रागद्वेष की वृत्तियाँ हमारे दुःख का मूल कारण है। संसार में जो मानसिक, वाचिक और कायिक दुःख हैं, वे सभी इन्द्रिय भोगों की लालसा से ही उत्पन्न हुए हैं। नीतिकारों ने भी लिखा है—"आपदां कथितः पन्थाः इन्द्रियाणां मनिग्रह" अर्थात् इन्द्रियों का अनिग्रह ही आपत्ति का मूल मार्ग है। कामभोगों या इन्द्रिय विषयों की पूर्ति की इच्छा हमें अत्यन्त अशान्त और बेचैन बनाती है। इच्छाएँ तो आकाश की तरह अनन्त हैं, उनकी पूर्ति कभी सम्भव नहीं। यह अशान्ति केवल त्याग से ही जीती जा सकती है। ज्ञान के बल से हम समभाव में स्थित होकर इन्द्रिय विजय या रागद्वेष पर विजय कर पाते हैं।

शास्त्रकार कहते हैं कि दिव्य एवं मनुष्य सम्बन्धी भोगों का त्याग करने वाला आत्मा बाह्यान्तर संयोगों का भी त्याग करता है। हम यह भलीभाँति जानते हैं और देखते हैं कि प्रत्येक संयोग का अन्त वियोग में होता है, जैसे तन, धन, परिवार जिनका हमें संयोग मिला है, एक दिन उनका वियोग निश्चित होगा ही। काम भोगादि अनित्य और नश्वर हैं। ये संयोग और वियोग हमारे जीवन में आर्तध्यान उत्पन्न करके तनाव पैदा करते हैं। इनकी अनित्यता समझकर ही हम अशुभ ध्यान और तनावों से मुक्त हो सकते हैं। मोह और ममता का परित्याग कर सकते हैं, जिसने महाबलि योद्धाओं को भी परास्त कर डाला। यह ज्ञान का बल ही हमें सही शक्ति प्रदान कर सकता है, एक जागृत आत्मा इन संयोगों में ही नहीं उलझती और संयमी जीवन अपना लेता है। बाह्य और आभ्यन्तर संयोगों का त्याग ही सच्चा संयम है।

**बाह्य और अभ्यान्तर संयोगों का विश्लेषण :**

यहाँ हमारे लिए बाह्य और अभ्यान्तर संयोगों को समझना जरूरी है। रागद्वेषादि कषाय आभ्यन्तर संयोग हैं तो माता, पिता, धन, सम्पत्ति आदि पदार्थों का संयोग बाह्य संयोग है। इस प्रकार के संयोग-पाश में बँधकर हमारे लिए मुक्ति की साधना कैसे सम्भव हो सकती है? इनके बीच में रहते हुए भी भरत चक्रवर्ती की तरह कोई विरला साधक ही अलिप्त रह सकता है और आत्मगुणों की रक्षा करते हुए मुक्त हो सकता है। सामान्य साधक तो इनका परित्याग कर मुनि धर्म स्वीकार कर लेते हैं। यदि उन्हें इन संयोगों में रहना भी पड़ा तो वे विरक्त भाव से ही जीवन यापन करते हैं जिससे इन बन्धनों की

शृंखला को ढीला बना सकें। मोह और ममत्व का त्याग ही सही रूप में संयम है।

साधक बन्धुओ ! इसीलिए हमने अपने साधना के कार्यक्रमों में स्वाध्याय को प्रथम स्थान दिया है। आपको ध्यान होगा ही कि तीन कार्यक्रम हैं—स्वाध्याय, साधना और समाज सेवा। आशा है, आपका स्वाध्याय नियमित चलता होगा और सद्ग्रंथों का स्वाध्याय करते होंगे। हमारा ज्ञान उपरोक्त शास्त्र की व्याख्या और विवेचना के अनुसार ही फलित हो। हम आत्मस्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर जड़ चेतन का भेद ज्ञान करें और समभाव में स्थिर रहते हुए शुद्ध संयम की ओर अग्रसर हों, यही शुभकामना है।

आप इस विवेचना पर अपने विचार, जिज्ञासा आदि प्रश्न भेजेंगे तो फिर इस विषय में चिन्तन का अवसर मिलेगा।

—३५, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर-३१३००१

## रेंट की आवाज

□ श्री दीपचन्द सहलोत

गर्मी के मौसम में एक घुड़सवार एक शहर से दूसरे शहर जा रहा था। मार्ग में घोड़े को प्यास लगी। थोड़ी दूर एक रेंट का कुआ था।

सवार ने घोड़े को उधर मोड़ दिया। किन्तु रेंट के अपरिचित शब्दों से घोड़ा चमकने लगा। सवार ने रेंट वाले से आवाज बन्द करने के लिए कहा, किन्तु आवाज के साथ-साथ पानी आना भी बन्द हो गया।

निराश घुड़सवार ने क्रोधित होकर कहा—"मूर्ख, मैंने आवाज बन्द करने के लिए कहा था, पानी बन्द करने के लिए नहीं।" रेंट वाले ने कहा—"पानी के साथ आवाज अवश्य होगी। तुम घोड़े के गर्दन पर हाथ फेरते रहो, मैं अभी पानी निकाल देता हूं।" सवार ने वैसा ही किया और घोड़े ने शान्ति से पानी पी लिया।

रेंट की आवाज की तरह प्रगति के मार्ग में कठिनाइयाँ अवश्यम्भावी हैं। जो साधक उनकी परवाह नहीं कर आगे बढ़ता है, वही सफल होता है।

—जैन छात्रालय, इतवारी, नागपुर-२

# रात्रि भोजन का त्याग इसलिये है—

□ श्री भीकमचन्द कोठारी

भोजन का उपयोग जीने के लिए है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में व्यवहार-संचालन करते हुए जो शक्ति व बल गंवाता है, उसकी प्राप्ति के लिए उसे भोजन की आवश्यकता होती है। अधिकतर देखा जाता है कि मनुष्य एक बार का भोजन दिन में और दूसरी बार का रात में करता है। लेकिन रात का भोजन न तो वैज्ञानिक कसौटी पर और न ही स्वास्थ्य की तुला पर ही ठीक उतरता है। क्योंकि भोजन के बाद उसकी पाचन क्रिया के लिए कम से कम उतना समय तो जरूर मिलना चाहिये जिसमें वह ठीक रूप से अपने अन्दर के तत्त्व को पचाकर उपयुक्त रूप दे सके। दिन में मन की स्वस्थता के अभाव में पाचन आदि क्रिया सही ढंग से नहीं हो पाती जिससे कुछ न कुछ भोजन तत्त्व पाचन रहित रह जाते हैं। रात्रि विश्राम की घड़ियाँ पाचन के लिए उपयुक्त मानी गई हैं। अत: रात्रि का समय जितना पाचन के लिए उपयुक्त है, उतना खाने के लिए नहीं। रात्रि भोजन का त्याग करने के लिए किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

> "चिड़िया कव्वे पक्षी कहाये, रात्रि में वे भी नहीं खावे।
> भूखें हो तो भी उड़ जायें, मानव तू तो श्रेष्ठ कहावे।।"

उपर्युक्त दोहे से स्पष्ट होता है कि चिड़ी, कव्वे इत्यादि पक्षी भी रात्रि में चुगा नहीं चुगते हैं। यदि भूखे होते हैं तो उड़ जाते हैं, फिर मानव तो पक्षियों से श्रेष्ठ हैं।

संसार में त्रस और स्थावर सूक्ष्म प्राणी भी बहुत हैं। वे रात्रि में नहीं दिखते। रात्रि में अन्धकार के कारण भोजन के पात्रों में जीवों के उड़कर गिरने की सम्भावना रहती है। रात्रि में सूक्ष्म जीव दिखाई नहीं देने के कारण भोजन का अंश बन जाते हैं, इस प्रकार भोजन करने वाला मांसाहार का दोषी भी बन जाता है। 'दशवैकालिक सूत्र' अ. ६ गा २४ में भगवान् ने फरमाया है:—

> "संति में सुहुमा पाणा, तस अदुव थावरा,
> जाइं रावो अपासंतो, कहमेसणियं चरे।"

त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ भगवान् ने रात्रि भोजन का निषेध किया ही है। एक अन्य ऋषि के शब्द इस प्रकार हैं—

अस्तं गते दिवाना थे आपो रुधिर मुच्यते।
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेय महर्षिण॥

मार्कण्डेय ऋषि ने सूर्यास्त के बाद पानी पीने को रक्त पीना और भोजन को मांस तुल्य बताया है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी रात्रि भोजन से कई प्रकार की प्रत्यक्ष हानियां भी हैं, जैसे—अगर चींटी खाने में आवे तो बुद्धि मारी जाती है, जूँ जलोदर उत्पन्न करती है, मक्खी उल्टी कराती है, मकड़ी कुण्ठ रोग उत्पन्न करती है, केश खाने से स्वर भंग होता है तथा कब्जी व बदहजमी भी रहती है। इस प्रकार स्वास्थ्य की दृष्टि से भी रात्रि भोजन त्याज्य है।

आज जैन समाज में रात्रि भोजन त्याग का पालन यदा कदा ही देखने को मिलता है। जिसका मूल कारण है आज के वैज्ञानिक युग में जैन समाज के युवकों, किशोरों में जैन संस्कार की कमी। यह कटु सत्य हमें स्वीकार करना होगा कि समाज के बच्चों के हृदय में संस्कार की छाप के अभाव का कारण माता-पिता या कुटुम्ब के अन्य सदस्यों की दुर्लभ उपेक्षा है। कभी-कभी यह भी देखने में आता है कि माता-पिता या कुटुम्ब के अन्य वरिष्ठ सदस्यों में ही जैन संस्कार नाम मात्र का है। मुख्य प्रश्न जिसे आज प्राथमिकता दी जानी चाहिये वह यह है कि जैन आचार पद्धति के प्रति समाज के बच्चों, किशोरों, युवकों के मन में आस्था उत्पन्न की जावे। आचार्य रतनचन्द्रजी म० ने रात्रि भोजन से सावधान करने हेतु फरमाया कि—

"रात पड्यां क्यूं खाय, जाय मारिया त्रस प्राणी।
कीट पतंगा केथुआ, पड़े भाणा में आणी॥

लट, गजाई, सुलसली, इली अंड समेत।
'रतन' कहे धिक तेहने. खावे कर-कर हेत॥"

—बर (राज०)
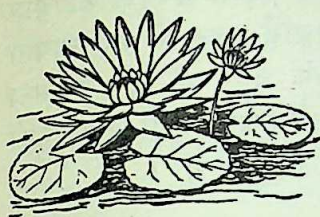
# गुलाबी नगरी जयपुर में धर्मोद्योत

☐ प्रस्तोता—**श्री ब्रजमोहन जैन**

प्रातः स्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी, आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० आदि ठाणा १३ तथा सरल स्वभावी महासती श्री शान्ति कंवरजी म० सा० ठाणा ४ सुख सातापूर्वक विराजमान् हैं। आचार्य प्रवर के चातुर्मास में जयपुर शहर तथा प्रेम निकेतन गणेश कालोनी में धर्म ध्यान का ठाठ लगा रहा। तपस्याओं की झड़ियां लगीं और दर्शनार्थी संघों के आवागमन का तांता लग रहा है।

२६ अगस्त को श्री दिनेन्द्रकुमारजी छाजेड़ जयपुर ने ४२ वर्ष की तरुणायु में आजीवन शील व्रत ग्रहण कर समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया। संघ द्वारा सद्साहित्य एवं चंदनाहार से उनका सम्मान किया गया। ३० अगस्त को सवाई माधोपुर से युवक संघ के लगभग ३५ सदस्य गुरुदेव के दर्शनार्थ उपस्थित हुए तथा सामायिक-स्वाध्याय के यथाशक्ति नियम ग्रहण किये।

३१ अगस्त को डॉ. ताराचंदजी गंगवाल जो अहिंसा भगवती के कट्टर उपासक हैं, आचार्य श्री की सेवा में उपस्थित हुए और आपने अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध किया कि आज के युग में कतिपय लोग अण्डे को शाकाहारी बताते हैं वह बिलकुल गलत है। अण्डा शाकाहारी हो ही नहीं सकता। उन्हें शुद्ध शाकाहार में अण्डे का निषेध है, यह मत स्पष्ट प्रकट किया। इसी दिन सायं फ्रान्स के विद्वान् डॉ. जे. एन. मौनसुयर आचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे व बहुत देर तक जैन धर्म व दर्शन पर आचार्य श्री के संक्षिप्त सारगर्भित विचारों को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। आचार्य प्रवर एवं डॉ. मौनसुयर के बीच वार्तालाप का अंग्रेजी, हिन्दी रूपान्तर श्री उमरावमलजी ढढ्ढा अजमेर ने किया। आचार्य प्रवर के त्यागमय सादे जीवन से डॉ. मौनसुयर बहुत प्रभावित हुए। कुछ देर के अन्तराल में प्रसिद्ध वैष्णव सन्त श्री ओंकारानन्दजी स्वामी आदि भी आपके दर्शन को पधारे।

४ सितम्बर—पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की प्रभातकालीन शुभ वेला में श्रद्धेय आचार्य प्रवर प्रेम निकेतन गणेश कालोनी से लाल भवन पधारे जहाँ

हजारों की जनमेदिनी ने आपके दर्शन का लाभ लिया। अनेक धर्मानुरागी भाई-बहिनों ने आचार्यश्री से प्रत्याख्यान लेने की होड़ लगा दी। जयपुर की दीर्घ तपस्विनी श्रीमती इचरज कंवरबाई लूणावत ने आचार्य प्रवर से ७० उपवास की तपस्या के प्रत्याख्यान किये, उनकी भावना आगे बढ़ने की है। उपासना गृह लाल भवन आज तपो भवन के रूप में परिणित हो गया। वृद्धों और युवकों में ही नहीं, छोटे-छोटे बच्चों में भी उपवास की होड़ लगी हुई थी।

प्रात: प्रार्थना में अच्छी उपस्थिति के पश्चात् मधुर व्याख्याता पण्डित रत्न श्री मान मुनिजी म० सा०, मधुर व्याख्यानी प. र. श्री हीरा मुनिजी म० सा० ने सर्व जन मन आकर्षणकारिणी सुमधुर शैली में वीतराग वाणी के पर्युषणीय प्रवचन का श्रीगणेश करते हुए अन्तगड दशांग सूत्र फरमाया तथा विद्यानुरागी श्री गौतम मुनिजी म० एवं भजन रसिक श्री धन्ना मुनिजी म० ने आधुनिक काव्य शैली में पर्युषण की महत्ता पर प्रकाश डाला। दोपहर को पण्डित रत्न श्री हीरा मुनिजी म० सा० ने कल्पसूत्र फरमाया। आठों ही दिन यहाँ धर्म ध्यान का भारी ठाठ लगा रहा। स्थानीय धर्मानुरागी बन्धुओं के साथ समागत दर्शनार्थियों ने धर्माराधन का लाभ लिया। ५ सितम्बर को प्रातः आचार्यश्री गणेश कालोनी पधार गये।

११ सितम्बर को सवंत्सरी महापर्व को समूचे स्थानकवासी जैन समाज में पर्वाराधन की एक विशेष उमंग थी। प्रात: से ही उद्वेलित सागर की अथाह जल राशि की भाँति हजारों की जनमेदिनी अपने आराध्य आचार्यश्री एवं शिष्य समुदाय के सान्निध्य में महापर्व मनाने को समुपस्थित थी। पूरे दिन आचार्यश्री से तपस्याओं के प्रत्याख्यान करने वालों की भारी उपस्थिति से उपासना भवन खचाखच भरा रहा। दोपहर को श्वे० मूर्तिपूजक संघ क्षमापना हेतु आचार्य प्रवर की सेवा में उपस्थित हुआ। सायंकाल सामूहिक प्रतिक्रमण के पश्चात् सामूहिक क्षमतखामना का मनोरम दृश्य दर्शनीय था। अपने आपका मनोमालिन्य दूर कर समभाव की ओर अग्रसर करने का यह अपूर्व संगम था। यहाँ व्यवहार में आयी कलुषता को क्षमापना रूपी साबुन (सर्फ) से स्वच्छ-निर्मल कर मानसिक शुक्लता शुभ्रता, स्पष्ट प्रकट हो रही थी।

लाल भवन, एवं प्रेम निकेतन गणेश कालोनी में पर्युषण पर्व में सप्त-दिवसीय नवकार मंत्र का अखण्ड जाप सानन्द सम्पन्न हुआ। जाप का समापन संवत्सरी की उषा वेला में नवकार मंत्र की उच्च ध्वनियों के साथ श्रद्धेय आचार्यश्री के मांगलिक से हुआ। नवलखा परिवार ने प्रेम निकेतन पर समागत दर्शनार्थियों की सेवा का पूरा लाभ लिया। जहाँ दर्शनार्थ आयी तपस्विनी बहनों का सुश्राविका श्रीमती प्रेमलता नवलखा द्वारा सम्मान-सत्कार किया गया।

श्री सिरेहमलजी नवलखा एवं श्रीमती प्रेमलता नवलखा द्वारा गत माह लिये गये आजीवन शील के नियम के उपलक्ष में अनेक पारमार्थिक संस्थाओं को नवलखा फेमिली ट्रस्ट की ओर से काफी राशि भेंट स्वरूप प्रदान की गई।

१२ सितम्बर को सांवत्सरिक क्षमापना का आदान-प्रदान सामूहिक रूप से सानन्द सम्पन्न होने के पश्चात् आचार्य श्री सायं चार बजे प्रेम निकेतन से भव्य जुलूस के साथ तखतेशाही सड़क पर श्री पूनमचन्दजी बडेर के बंगले पधारे जहाँ बडेर परिवार ने आगन्तुकों की सेवा-सत्कार का लाभ लिया।

जयपुर के ऐतिहासिक चातुर्मास में तपस्याओं का भारी ठाठ रहा। महान् अध्यवसायी, श्री महेन्द्र मुनिजी म० सा० के १०, घोर तपस्वी श्री प्रकाश मुनिजी म० के १२ की तपस्या का पारणा सानन्द हुआ। अब तक १५ मास-खमण, सैकड़ों अठाइयाँ, ६-१०, ११, १२, १३, १५, १६, २५ आदि बड़ी तपस्यायें व बेले-तेले आदि बहुत हो चुके हैं। दीर्घ तपस्विनी श्रीमती इचरज कंवरबाई लूणावत के ७५ उपवास का पारणा सानन्द हो चुका है। अभी अनेक बड़ी तपस्यायें चल रही हैं। यहां अधिकांश तपस्याओं के पारणे बिना आडम्बर सादगी के साथ हुए।

युवा हृदय रत्न व्यवसायी श्री कुशलचन्दजी हीरावत ने चार माह का मौन व्रत संवर के साथ अंगीकार किया एवं पर्युषण में अठाई तप भी किया। श्री पूनमचन्दजी बडेर ने विगत वर्षों की भांति ६५ दिन की मौन साधना जप-संवर के साथ पूर्ण करली है।

अब तक देहली, बालोतरा, मेड़तासिटी, जोधपुर, नागौर, भोपालगढ़, मद्रास, बंगलौर, अलीगढ़-रामपुरा, पाली-मारवाड़, सवाई माधोपुर, फूलियाकलां, चौथ का बरवाड़ा, आलनपुर, इन्दौर, धूलिया (महाराष्ट्र), टोंक, सैलाना, देई, रतलाम, लुधियाना, जालन्धर, कलकत्ता, घोड़नदी, पूना, देवास आदि अनेक संघ दर्शनार्थ उपस्थित हो चुके हैं एवं अभी संघों का निरन्तर आवागमन जारी है। जयपुर श्री संघ हर्षविभोर होकर स्वागत में तत्पर खड़ा है। आये हुए संघों में जोधपुर, पाली-मारवाड़ एवं भोपालगढ़ संघों ने आचार्य श्री भगवन से अपने-अपने क्षेत्रों में पधारने बाबत साग्रह भावभीनी विनतियाँ कीं।

तखतेशाही रोड पर प्रातः प्रार्थना में भारी उपस्थिति से धर्म ध्यान का ठाठ है तथा दोपहर को व्याख्यानप्रिय श्री शुभेन्द्र मुनिजी म० सा० का जैन इतिहास पर सुमधुर व्याख्यान आगन्तुकों द्वारा श्रवण किया जा रहा हैं। यहाँ श्री हरिश्चन्द्रजी कुशलचन्दजी बडेर सपरिवार आगन्तुकों की आवभगत उत्साह के साथ कर रहे हैं।

□ □ □

# साहित्य-समीक्षा

☐ डॉ० नरेन्द्र भानावत

**१. आगम और त्रिपिटक-एक अनुशीलन, खण्ड २, भाषा और साहित्य :** ले० राष्ट्र संत मुनि श्री नगराजजी, प्र० अर्हत् प्रकाशन, ३६६-३६८, तोदी कार्नर, ३२, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता–७०० ००१, पृ० ७३५, मू० १००.०० ।

मुनि श्री नगराजजी प्रबुद्ध विचारक, गवेषक विद्वान् और सिद्धहस्त लेखक के रूप में सुप्रसिद्ध हैं। धर्म, दर्शन, इतिहास-परम्परा और भाषा-साहित्य से सम्बन्धित आपकी विविध कृतियाँ साहित्य जगत् का गौरव हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रथम भाग इतिहास और परम्परा से सम्बन्धित था जिस पर कानपुर विश्वविद्यालय ने मुनि श्री को मानद डी० लिट्० की उपाधि प्रदान की। समीक्ष्य ग्रन्थ में आगम और त्रिपिटक का भाषा और साहित्य के परिप्रेक्ष्य में व्यापक पर तलस्पर्शी अध्ययन-विवेचन प्रस्तुत किया गया है। आगम प्राकृत भाषा में तथा त्रिपिटक पाली भाषा में लिखे गये हैं। ये दोनों भाषाएँ सामान्यत: धर्म शास्त्रों की भाषा तक ही सीमित रही हैं। मुनि श्री ने प्रथम बार इनका भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत कर, उन्हें विश्व मान्य भाषा परिवारों से सम्बद्ध किया है। मुनि श्री के विवेचन में ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुतीकरण में आलोचना एवं गवेषणा का सम्यक् योग रहा है। ९ अध्यायों में मुनि श्री ने विश्व भाषा प्रवाह में प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं की स्थिति स्पष्ट करते हुए, पाली और प्राकृत भाषा के विविध प्रकारों का ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, अर्थ विज्ञान, वाक्य विज्ञान आदि की दृष्टि से तात्त्विक विवेचन किया है। शिलालेखों एवं स्तम्भ लेखों की प्राकृत पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। लिपि कला के उद्भव और विकास पर भी विस्तार पूर्वक लिखा है। मुनि श्री ने अपने लेखन एवं प्रस्तुतिकरण में बौद्धिक ईमानदारी और प्रखर प्रज्ञा का परिचय दिया है।

**२. जीवन-दृष्टि :** सं० डॉ० नरेन्द्र भानावत व श्री सौभाग्यमल श्री श्रीमाल, प्र० श्री एस० एस० जैन सुबोध शिक्षा समिति, ज्ञान प्रकाश भवन, सांगानेरी दरवाजा, जौहरी बाजार, जयपुर–३०२ ००३, पृ० ७४, मू० ५.०० ।

प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए चरित्र निर्माणकारी पाठ्य-पुस्तक के रूप में इसका प्रणयन किया गया है। मानवीय सद्भावनाओं को

जागृत करने में सहायभूत जीवन-मूल्यों यथा—विनय, करुणा, उत्सर्ग, सहानुभूति, कर्त्तव्यनिष्ठा, परिश्रम, स्वावलम्बन, क्षमा, सहयोग, परोपकार, साहस, विवेक, सन्तोष आदि से सम्बन्धित सरल कथाएँ और महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग इस पुस्तक में संकलित हैं। कथाओं का संकलन इस ढंग से किया गया है कि उनमें प्रमुख धर्म और धर्म नायकों के सार्वजनीन सिद्धान्तों का समावेश हो गया है। यथा प्रसंग सरस कविताएँ और हृदयस्पर्शी सूक्तियाँ तथा सुभाषित भी दिये गये हैं। पुस्तक में कुल २४ पाठ हैं। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिए प्रश्न दिये गये हैं। पुस्तक में कथाओं से सम्बन्धित पूरे पृष्ठों के १६ बहुरंगी चित्र दिये गये हैं जो बच्चों के लिए विशेष आकर्षक हैं। प्रत्येक विद्यालय में नैतिक शिक्षण के पीरियड में इस पुस्तक का उपयोग किया जाना चाहिये। जैन सुबोध शिक्षा समिति ने इसका प्रकाशन कर एक ऐतिहासिक माँग की पूर्ति की है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष श्री जगन्नाथसिंह मेहता ने अपने प्राक्कथन में इस पुस्तक को मौजूदा शिक्षा की कमी को पूरा करने में सहायक सिद्ध बताया है।

**३. जैन-हिन्दी-काव्य में छन्दोयोजना** : ले० आदित्य प्रचंडिया 'दीति', प्र० जैन शोध अकादमी, आगरा रोड, अलीगढ़—२०२ ००१, पृ० ६०, मू० ५.००।

जैन कवि मूलतः लोक धर्म और लोक चेतना के कवि हैं। अपने काव्य को लोकप्रिय एवं संगीतात्मक बनाने के लिए वे विभिन्न छन्दों का प्रयोग करते रहे हैं। प्रस्तुत कृति में लेखक ने छन्द के महत्त्व, स्वरूप, विकास पर प्रकाश डालते हुए जैन हिन्दी पूजा काव्यों में प्रयुक्त मात्रिक एवं वर्णिक लगभग ३२ छन्दों का सोदाहरण परिचय दिया हैं। शोध और आलोचना दोनों का सुन्दर समन्वय हुआ हैं इस कृति में। लेखक ने शोध-क्षेत्र में नई दिशा का उद्घाटन किया है।

**४. प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उनमें प्राक्-संस्कृत तत्त्व** : ले० डॉ० के० आर० चन्द्र, प्र० प्राकृत विद्या मण्डल, लालभाई दलपत भाई भारतीय संस्कृति विद्या मन्दिर, अहमदाबाद-३८० ००९, पृ० १४४, मू० ५.००।

प्रारम्भिक एवं उच्चस्तरीय प्राकृत भाषा के छात्रों के लिए व्याकरण के अध्ययन में यह पुस्तक बड़ी सहायक है। लेखक ने विषय-निरूपण में तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। उदाहरणों में प्राकृत के विभिन्न रूपों (पाली-प्राकृत-अपभ्रंश) का समावेश किया गया है। प्राकृत भाषा की उत्पत्ति

विषयक मान्यता में आधुनिक तथ्यों को महत्त्व दिया गया है। शैक्षणिक दृष्टि से लिखी गई यह पुस्तक प्राकृत के अध्यापकों एवं छात्रों के लिए विशेष उपयोगी है।

**५-६. श्री गुरु गणेश जीवन दर्शन, व्यक्तित्व के प्रतिबिम्ब :** ले० मरुधरा भूषण श्री रमेश मुनि, प्र० श्री गुरु गणेश जैन निवृत्ति आश्रम, पो० अनकाई, ता० येवला, जि० नासिक एवं श्री रमेश जैन साहित्य प्रकाशन समिति, जावरा, पृ० २०० व १६०, मू० ६.०० व ५.००।

**'श्री गुरु गणेश जीवन दर्शन'** पुस्तक में कर्नाटक केशरी श्री गणेशमलजी म० के जीवन और व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। श्री गुरु गणेश तपे हुए साधक, निर्भीक वक्ता, जीवदया प्रचारक और निरभिमानी विशिष्ट सन्त थे। खादी धारण और गौशाला निर्माण की विशेष प्रेरणा देकर उन्होंने जन-जन में स्वदेश प्रेम, स्वावलम्बन और जीवदया की भावना भरी। प्रस्तुत पुस्तक ४ खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड जीवन-दर्शन से, द्वितीय खण्ड विविध संस्मरणों से, तृतीय खण्ड कोटा सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्यों, मुनियों और सतियों के परिचय से सम्बन्धित है। अन्तिम खण्ड में विद्वान् मुनियों और श्रावकों ने श्री गुरु गणेश के प्रति अपनी श्रद्धार्चना अर्पित की है।

**'व्यक्तित्व के प्रतिबिम्ब'** पुस्तक में मेवाड़ भूषण स्वर्गीय श्री प्रतापमलजी म० के जीवन, साधना और व्यक्तित्व के विविध पक्षों से सम्बन्धित छोटे-छोटे प्रेरक दृष्टान्त और रोचक प्रसंग संकलित किये गये हैं, जिनसे मुनि श्री की विद्वता, मधुरभाषिता, विचारशीलता, सहिष्णुता, गुणवत्ता, सरलता, उदारता आदि गुणों पर विशेष प्रकाश पड़ता है। अतीत के तथ्यों को प्राणवान बनाकर सरल सरस श्रेणी में प्रस्तुत करने में लेखक सिद्धहस्त हैं। □□

## विशेष सूचना

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यसमिति की बैठक जयपुर में दिनांक १९ नवम्बर, १९८३ को रात्रि ७.३० बजे एवं साधारण सभा की बैठक दिनांक २० नवम्बर, १९८३ को दोपहर १.३० जयपुर में आयोजित की गई है। सभी सदस्यों की उपस्थिति प्रार्थित है।

**—टीकमचन्द हीरावत**

मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

धारावाहिक उपन्यास 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' भाग २

# द्वितीय प्रवास वृद्ध मुनि की आत्म-प्रशंसा [२]

☐ अनुवादक : **श्री लालचन्द्र जैन**

[ गतांक से आगे ]

दिव्यमूर्ति के अदृश्य होते ही पवित्र शांतिमूर्ति दीक्षा कुमारी ने भी वहाँ से आगे प्रस्थान किया। वह सौराष्ट्र देश की भूमि पर विचरण करने लगी। मार्ग के बड़े शहरों के उपाश्रयों में जाकर वहाँ निवासित मुनियों के आचरण का अवलोकन करने लगी।

एक समय वह किसी मनोहर शहर में पहुँची। वह नगर राजधानी की शोभा से अलंकृत था। चारों वर्णों के निवासस्थान वहाँ क्रमशः आयोजित थे। विविध प्रकार के जैन मन्दिर देव विमानों के समान सुशोभित थे। श्रावक प्रजा देव, गुरु और धर्म को शुद्धता से मानती थी। उपाश्रय भिन्न-भिन्न होने से लोगों की श्रद्धा भी विभाजित हो गई थी। चैत्यराग, उपाश्रयराग और गुरुराग की भिन्नता अल्पबुद्धि लोगों के हृदयों में प्रविष्ट हो चुकी थी। क्षुद्र हृदय के लोगों ने धर्म के शुद्ध स्वरूप को छिन्न-भिन्न कर दिया था।

पवित्र दीक्षा कुमारी नगर की शोभा का अवलोकन करते हुए उपाश्रयों की पंक्ति में घूमने लगी। विविध उपाश्रयों में विविध राग दशा को देखकर महादेवी का हृदय शोकविह्वल होने लगा। धर्म गुरुओं की विपरीत प्रवृत्ति को देखकर महेश्वरी की आँखों से शोक के आँसुओं की वर्षा होने लगी।

नगर के मन्दिरों और उपाश्रयों में घमती हुई महादेवी एक सुन्दर उपाश्रय में पहुँची। यह उपाश्रय अत्यधिक सुशोभित था। चारों तरफ विविध रंग पुते हुए थे, दीवारों पर सुन्दर मूर्तियां चित्रित थीं। यह उपाश्रय दो तल्ले का था। ऊपर के तल्ले में साधुओं की बैठकें थी और नीचे के तल्ले में उनके भोजन का

स्थान था। भोजन स्थान के पास ही जल से भरे हुए घड़ों की पंक्ति लगी हुई थी। उसके पास ही सफेद रंग से रंगी हुई लकड़ी के पाटे पड़े थे जिन पर साधुओं के नवीन रंग किए गए पात्र रखे थे। दीवारों की खूंटियों पर मोरपंखी तथा अन्य प्रकार की पंखिये लटक रही थीं।

उपाश्रय में घुसते ही महादेवी को साधुओं का समूह दिखाई दिया। यह संध्या का समय था। साधु भोजन-पान से निवृत्त हो चुके थे। प्रतिक्रमण का इन्तजार कर रहे थे। महादेवी ने साधुओं की विविध चेष्टायें देखीं। कई मुनि एकत्रित होकर भोजन की बातें कर रहे थे। कोई किसी नीरस भोजन की निंदा कर रहा था तो कोई सरस भोजन की प्रशंसा कर रहा था। अनिच्छित भोजन लाने वाले मुनि को कोई उपालंभ दे रहा था, तो कोई अनुकूल आहार लाने वाले मुनि को शाबासी दे रहा था। कोई आहार देने वाले गृहस्थ श्रावक के घर की बातें कर रहा था, तो कोई उनकी उदारता या लोभवृत्ति को प्रकट कर रहा था। कोई भोजन से तृप्त होकर आनन्दित हो रहा था तो कोई ठसाठस भरे हुए पेट पर हाथ फिरा रहा था। कोई डकारें लेकर गर्जन कर रहा था तो कोई अजीर्ण के कारण कम भोजन कर पाने का शोक मना रहा था। कोई अपने से बड़े साधु को प्रसन्न करने के लिये भोजन के स्वाद के विषय में पूछ रहा था तो कोई भोजन से प्राप्त बल को प्रकट करने के लिये विविध प्रकार की चेष्टायें कर रहा था। कोई परस्पर शरीरों को भिड़ाकर विविध चेष्टायें कर रहे थे, तो कोई उच्च स्वर से हँसते हुए परस्पर मजाक कर रहे थे।

दीक्षा कुमारी उस उपाश्रय में घुसकर इधर-उधर घूमने लगी। साधुओं की उपर्युक्त प्रवृत्ति को देखकर उसके हृदय में शोक होने लगा और उसके नेत्रों से शोकाश्रुओं की धारा बहने लगी। उसने मन ही मन कहा, 'ओह! यह इस काल की कैसी प्रवृत्ति है? वीरप्रभु का परिवार कैसी निकृष्ट स्थिति में आ पड़ा है। जिन महावीर भगवान् ने विश्व उद्धार के लिये अनेक प्रकार के उपदेश देकर अपने परम्परागत परिवार को सत्कर्म और सदाचार में जोड़ा था, वही परिवार आज ऐसी स्थिति में पड़े, यह कितने दुःख की बात है? इन मुनियों ने भगवान् के पवित्र शासन की कैसी विडम्बना की है! हे शासन देव! इस विषय में आप ही उपालंभ के पात्र हैं। वीरप्रभु ने आपके विश्वास पर ही शासन आपको सौंपा था, आप जैसे समर्थ देव ने शासन की ऐसी उपेक्षा कैसे की? क्या इस पंचम काल की महाशक्ति के समक्ष आपकी शक्ति नहीं चली? अब सावधानी से आप शक्ति को प्रकट करें और अपनी अगाध शक्ति को प्रस्फुटित कर वीर शासन को पुनः तेजस्वी करें।

'ओह! ये मुनि अपने आचार का विचार क्यों नहीं करते? वे किसके वंशज हैं, इस बात का विचार उनके मन में क्यों नहीं आता? नवरंगित

उपाश्रय ! तू तो जड़ है, तुझे क्या कहें ? पर तेरी पवित्र भूमि में ये साधु इस प्रकार का व्यवहार करें, यह तुझे शोभा नहीं देता। हे पवित्र उपाश्रय ! तू न तो राजमहल है और न किसी गृहस्थ की हवेली ही, तू तो अनगार (बेघर) महात्माओं का निवास स्थान है। तेरी भूमि में गृहस्थी नहीं, कांचन-कामिनी के त्यागी निर्ग्रन्थ रहते हैं। वे ऐसी विपरीत चेष्टायें करें, यह तेरे लिये लज्जा-जनक है।'

मन में इस प्रकार का विचार करती हुई दीक्षाकुमारी उस उपाश्रय के एक हिस्से में खड़ी हो गई। थोड़ी देर बाद एक वृद्ध मुनि ने साधुओं को आज्ञा दी, "मुनियो ! प्रतिक्रमण का समय हो गया है, सब तैयार हो जाओ।" आज्ञा होते ही मुनि प्रतिक्रमण करने लगे। सब अपने वरिष्ठ गुरु के समक्ष पंक्तिबद्ध होकर बैठ गये। एक तरफ कुछ गृहस्थ श्रावक भी बैठ गये। थोड़ी देर बाद प्रतिक्रमण शुरू हुआ। प्रतिक्रमण में अनेक प्रकार के दोष दिखाई दे रहे थे। शांत और एकाग्रचित्त से करने की क्रिया को साधुओं ने जैसे-तैसे थोड़ी ही देर में पूरी करदी मानो बेगार काट रहे हों प्रतिक्रमण सूत्र के पाठों में अनेक प्रकार की अशुद्धता दिखाई दे रही थी।

हृदय की भावना तो गायब ही हो गई थी। मानो सिर का बोझ उतारा हो, इस प्रकार बेमन से प्रतिक्रमण से निवृत्त होकर साधु इधर-उधर की बातें तथा निंदा-प्रशंसा करने में लग गये। किसी साधु ने कहा, अमुक संधाड़ा के साधुओं में विच्छेद है, किंतु यह विच्छेद अमुक विजय (साधुओं के गुरु) ही करवाते हैं। अमुक विजय ने अमुक स्थान पर चातुर्मास किया तब वहाँ के संघ में फूट डाली। अमुक आचार्य ने अमुक श्रावक को बलपूर्वक संघ से बहिष्कृत करवाया। अमुक पन्यास ने अपनी शक्ति का प्रयोग कर अमुक श्रावक को संघ का अग्रणी बनाया। अमुक विजय ने अपने नाम से एक जैन पाठशाला की स्थापना की है और अमुक विजय ने अपनी साध्वी के नाम से एक श्राविकाशाला की स्थापना की है। अमुक विजय ने एक गृहस्थ श्रावक से दस हजार रुपया शुभ काम के लिये निकलवाया है और अमुक मुनि ने एक दिन भूख हड़ताल कर अमुक श्रावक को दंड दिलाया है।"

बहुत देर तक इसी प्रकार की अनुचित चर्चा चलती रही, फिर गुरु की आज्ञा से मुनि अपने-अपने बिस्तर पर सोने के लिये चले गये। उनके साथ-साथ कुछ रात्रि श्रावक भी अपने-अपने अनुकूल मुनियों की सेवा करने उनके पीछे-पीछे चले गये। कोई मुनि के पांव दबा रहा था, कोई मुनि की तारपीन के तेल से मालिश कर रहा था, कोई मुनि की पगतली पर तेल लगा रहा था, कोई मुनि की पीठ दबा रहा था और कोई किसी मुनि की खुशामद कर रहा था।

यह देख कर दीक्षाकुमारी शोक मग्न हो गई और उसका हृदय परितप्त हो गया।

वृद्ध मुनि के पास संघ के कई नेता और माननीय श्रावक बैठकर अनेक प्रकार की चर्चा कर रहे थे। अब वे भी गुरु वंदना कर अपने-अपने घर चले गये। मुनियों के रागी अन्य श्रावक भी चले गये। सर्वत्र रात्रि की शांति प्रवर्तित हो गई। रागी श्रावकों ने उपाश्रय के कुछ स्थानों पर दीपक जलाकर रखे थे और मुनियों की सेवा करने के लिये नियुक्त कुछ सेवक उपाश्रय के नीचे के तल्ले में दरवाजे के पास सो गये थे।

इस समय दीक्षाकुमारी वरिष्ठ गुरु के पास आकर अदृश्य रूप से खड़ी हो गई। थोड़ी देर बाद उसने स्पष्ट रूप से निम्न उच्चारण किया—

"इस संसार में कुछ जीवों को यह ज्ञान नहीं होता कि वह किस दिशा से यहाँ आया है? पूर्व से या दक्षिण मे? पश्चिम से या उत्तर से? नीचे से या किसी भी दिशा-विदिशा से? इसी प्रकार कुछ जीवों को यह ज्ञान भी नहीं होता कि मेरी आत्मा का पुनर्जन्म होगा या नहीं? मैं पहले कौन था? यहाँ से मर कर मैं जन्मान्तर में कहाँ जाऊँगा?"

इस अदृश्य आकाशवाणी को सुनकर वृद्ध मुनि आश्चर्य चकित हो गये और अन्य मुनि भी जो जाग रहे थे, आश्चर्यान्वित होकर दौड़कर गुरु के पास आ गये। वे उपाश्रय में व्याप्त अंधेरे में चारों तरफ देखने लगे, पर उन्हें कोई नजर नहीं आया। थोड़ी देर बाद महादेवी दीक्षाकुमारी प्रकट हुई। उनके तेज से उपाश्रय में प्रकाश फैल गया। उन्हें देखते ही वृद्ध मुनि आश्चर्य से भयभीत होकर कांपने लगे। मुनि को कांपते देखकर दयालु महादेवी ने शांत स्वर से कहा, "वृद्ध मुनि! क्यों कांप रहे हैं? मैं तुम्हें भयभीत करने वाली नहीं, अभय प्रदान करने वाली हूं। मेरे समागम से तुम्हें अमूल्य लाभ होगा। तुम्हें किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। जब तुम मेरे स्वरूप को पहचानोगे, तब तुम्हें विश्वास होगा कि मैं तुम्हारे जीवन का उद्धार करने वाली और शांति प्रदान करने वाली हूं।"

महादेवी दीक्षाकुमारी के आश्वासन पूर्ण वचन सुनकर वृद्ध मुनि की कंपकंपी बन्द हुई। उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, "भद्रे! आप कौन हैं? अचानक यहाँ कैसे प्रकट हुई हैं? ऐसे विषमकाल में आप जैसी दिव्य मूर्ति के दर्शन दुर्लभ हैं। मैं अपना अहोभाग्य मानता हूँ कि आपकी दिव्य मूर्ति का मुझे दर्शन हुआ।"

दीक्षाकुमारी ने शांत एवं प्रौढ़ स्वर से कहा, "वृद्ध मुने! मैं चारित्र

धर्म की अधिष्ठात्री देवी हूं, मेरा नाम दीक्षाकुमारी है। आप लोगों ने मेरे ही स्वरूप को धारण कर रखा है। मेरे शुद्ध स्वरूप से ही आपका चारित्र सुशोभित होता है। वर्तमान समय में मेरे चारित्र स्वरूप की कैसी दुर्गति हो रही है, यह जानने के लिये ही मैं यात्रा पर निकली हूं। यह मेरी दूसरी यात्रा है। मेरी यह यात्रा निष्फल होगी, मुझे ऐसा भय है, किन्तु भविष्य की अच्छी आशा के बल पर ही मैं यात्रा में प्रवर्तित हुई हूं।"

महादेवी के वचन सुनकर वृद्धमुनि ने विनय से कहा, "महेश्वरी ! आप दयालु हैं। आपके प्रत्यक्ष दर्शन कर मैं और मेरा परिवार कृतार्थ हुए। आपके स्वरूप को धारण कर हम हमारे कर्तव्य में प्रवर्तित हो रहे हैं। यद्यपि वर्तमान विपरीत समय में साधुओं की स्थिति में काफी शिथिलता आई है, तथापि वीर शासन के प्रभाविक देव की कृपा से और हमारे आद्य गुरु के अनुग्रह से हमारा संघाड़ा यथाशक्ति स्वधर्म में प्रवर्तित हो रहा है। आपको यहाँ जितना संतोष प्राप्त होगा, उतना अन्यत्र नहीं हो सकेगा। फिर भी आपको अन्य स्थान की यात्रा में थोड़ी बहुत सफलता तो अवश्य मिलेगी, ऐसी मुझे आशा है।"

वृद्धमुनि के वचन सुनकर दीक्षाकुमारी को क्रोध आ गया, उसने तीव्र स्वर से कहा, "वृद्ध मुनि ! आपके आत्म प्रशंसा के शब्द सुनकर मुझे बहुत बुरा लगा। आप कहते हैं कि आपका संघाड़ा यथाशक्ति स्वधर्म में प्रवर्तित हो रहा है, यह कथन असत्य से पूर्ण है। आपके परिवार की कैसी स्थिति है, यह मैंने अभी-अभी प्रत्यक्ष देखा है। आप और आपके मुनि चारित्र धर्म से विमुख हैं, यह मैंने अपनी आँखों से देखा है। मैं संध्या से ही इस उपाश्रय में हूं। इतने अल्प समय में ही आपके आचार का स्वरूप मैंने देख लिया है। हे वृद्ध अनगार ! क्यों अपने दोष छुपा रहे हो ? आपको परिवार की प्रवृत्ति एकदम धर्म विरुद्ध है। आप और आपका परिवार साध्वाचार को भूल गया है, इतना ही नहीं, आप लोगों में अनचार भी प्रवेश कर चुका है। वृद्धमुनि ! आपको सोचना चाहिये कि चारित्र क्यों ग्रहण किया जाता है ? मुनि जीवन की सार्थकता कहां है ? वीर प्रभु के परिवार का धर्म क्या है ? यह विचार करने से ही आप अपने सच्चे स्वरूप को पहचानेंगे, तब आपकी प्रवृत्ति आचारयुक्त बनेगी, तभी दुराचार को दूर करने में आप स्वयं उत्साहित होंगे। आपका यह उत्साह ही आपकी आत्मा के लिये हितकारी बनेगा।"

दीक्षाकुमारी के उपर्युक्त वचन सुनकर वृद्धमुनि सोच में पड़ गये। उनके हृदय में चिंता की ज्वाला भभक उठी। दीक्षाकुमारी हमारे दोष जानती है, यह जानकर उन्हें बहुत अफसोस हुआ। उनके मुख पर ग्लानि छा गई और हृदय प्रज्वलित हो उठा।

क्षण भर रुक कर वृद्ध मनि ने गद्‌गद् कंठ से कहा, "माँ ! मैं आपका अपराधी हूं और झूठा हूं । मुझे क्षमा करें । इस पंचमकाल रूपी अजगर ने मुझे भी निगल लिया है । हम दुषमकाल रूपी अग्नि की महाज्वाला में दग्ध हो रहे हैं । महेश्वरी क्षमा करें ! क्षमा करें !"

वृद्धमुनि के दीन वचन सुनकर दयालु देवी को दया आ गई । महेश्वरी ने मधुर स्वर से कहा, "वृद्धमुनि ! आपकी दीनवाणी सुनकर मुझे दया आती है, इसीलिये मैं आपको विशेष उपालंभ नहीं देती । फिर भी आपके हित के लिये मुझे आपको उपदेश देना चाहिये । हे वृद्ध अनगार ! आपने क्या पढ़ा है ? जैन आगम रूपी महासागर से कितने मोती निकाले हैं । आपके परिवार में कितने मुनि विद्वान् एवं बुद्धिमान हैं ? आपके परिवार में कोई सूत्रों का पठन करने वाला भी है या नहीं ?"

वृद्धमुनि—"भगवति ! मैंने अपनी शक्ति के अनुसार सामान्य अभ्यास किया है, किन्तु सूत्रों को नहीं पढ़ा है । कल्पसूत्र और चरितानुयोग के कुछ ग्रंथों को पढ़ा है और व्याकरण आदि में मेरा सामान्य अभ्यास है । मेरे परिवार के दो मुनि अच्छे बुद्धिमान हैं और वे व्याकरण का अभ्यास कर रहे हैं ।

"मेरे एक शिष्य ने बहुत अच्छा अभ्यास किया था । वह व्याकरण, न्याय और सूत्रों में प्रवीण है, पर उग्र स्वभाव के कारण वह मुझ से अलग हो गया है । बहुत आशा से ध्यान देकर उसे पढ़ाया और उसकी पढ़ाई में कितनी ही प्रकार से मदद की, पर वह उग्र साधु मुझे और मेरे परिवार को छोड़कर अकेला ही चला गया । उसने सौराष्ट्र देश के अमुक नगर में चातुर्मास कर बहुत से श्रावकों को रागी बनाया है और कुछ शिष्य भी एकत्रित किये हैं । अब वह मुझ से विरुद्ध हो गया है । महादेवी ! देखा आपने इस पंचमकाल का प्रभाव ! शिष्य उन्मत्त होकर अपने उपकारी गुरु का त्याग करते हैं और स्वतन्त्रता से विचरने के लिये अलग होते हैं । जब से वह उन्मत्त मुनि मुझ से अलग हुआ है, तभी से किसी मुनि को विशेष विद्वान् बनाने का मेरा उत्साह मन्द हो गया है । मेरा हृदयबल शिथिल हो गया है । महादेवी ! मेरी और मेरे परिवार की जो यथार्थ स्थिति है, वह मैंने आपके समक्ष रखी है ।"

दीक्षाकुमारी—"मुनिराज ! तुम्हारी परिस्थिति को जानकर मुझे दया और क्रोध दोनों आ रहे हैं । आप स्वयं कम पढ़े हैं, किन्तु आचार में शिथिल क्यों हैं ? ज्ञान की प्राप्ति कर्माधीन है । ज्ञानावरणीय कर्म का अन्तराय हो तो उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त नहीं होता, पर शुद्ध आचार की प्रवृत्ति तो स्वयं आपके हथ में है । ज्ञान में हीन होने पर भी आचार में उत्कृष्ट होने पर मुनि धर्मानुसार

चारित्र का पालन करने वाला माना जाता है। अल्प ज्ञान चारित्र को दूषित नहीं करता पर अल्प आचार या प्रवृत्ति चारित्र को दूषित करती है। आपकी प्रवृत्ति उत्तम न होने से आपका परिवार अनाचार के पाश में फंसा है और अभी तो अधिक फंसेगा। भद्र ! आप वृद्ध और प्रौढ़ विचार के हैं, अतः मुझे आपको कहना है कि आप स्वयं मुनि धर्म के शुद्ध आचार का पालन करें, तो आपका परिवार भी आपका अनुसरण करेगा। जिस मार्ग पर नेता जाता है, उसी का अनुसरण अनुयायी करते हैं। आप अपने आचार के ग्रन्थों को पढ़ें। यदि पढ़ने की शक्ति न हो तो दूसरों से सुनें और उसके अनुसार प्रवृत्ति करें। विश्व उपकारी वीर प्रभु ने भविष्य के साधुओं के लिये उपदेश रूप सूत्रवाणी को प्ररूपित किया है। सुधर्मा स्वामी ने जम्बू स्वामी को उद्देश्य कर 'आचारांग सूत्र' कहा है। इस पवित्र सूत्र में जैन मनियों के शुद्ध आचार को बताया गया है। महावीर प्रभु के मुख से जो वाणी प्रगट हुई, उसे ही 'आचारांग सूत्र' में ग्रंथित किया गया है। यदि आप इस वाणी को सुनकर इसका मनन करेंगे तो आपके हृदय पर साधुत्व की उत्तम छाप पड़े बिना नहीं रहेगी। भद्र ! कुछ समय पहले मैंने जिन वाक्यों का उच्चारण अदृश्य रह कर किया था, वे आपने सुने या नहीं ?"

वृद्धमुनि ने लज्जा से सिर झुका कर कहा, "महादेवी ! आपके मुख से अदृश्य रहकर जो वचन प्रकट हुए थे, वे मैंने सुने थे, पर अचानक भय और आश्चर्य से मैं दब गया था, अतः मैंने ध्यानपूर्वक नहीं सुना। भगवति ! कृपा कर एक बार फिर अपने पवित्र वचन सुनावें और मेरी दूषित आत्मा को पवित्र करें।"

दीक्षाकुमारी ने उत्साह से कहा, "मुनिराज ! मैंने जिस वाणी का उच्चारण किया था, वह 'आचारांग सूत्र' की थी। आपको मागधी भाषा का ज्ञान नहीं होने से मैंने अपनी वाणी बोलचाल की भाषा में ही कही थी। वृद्ध मुनि ! इन महात्मा के वचनों में से बहुत बोध प्राप्त होता है। आपकी और आपके शिष्यों की प्रवृत्ति देखकर मुझे बहुत खेद होता है। संध्या समय आपका भोजन-पानी और उस सम्बन्धी बातचीत में व्यर्थ व्यतीत हो जाता है। आप विचार करें, आपको भोजन में अत्यन्त आसक्ति नहीं रखनी चाहिये। आपकी प्रतिक्रमण की प्रवृत्ति को देखकर मुझे अत्यन्त क्षोभ होता है। इस पवित्र क्रिया को शान्त चित्त से करना चाहिये, उसके स्थान पर आप लोग ऐसा करते हैं जैसे बेगार टाल रहे हों, यह कितने अफसोस की बात है ? उसके पश्चात् आप और आपके शिष्य निन्दा और दूसरों की चर्चा में व्यर्थ समय खोते हैं। आपकी यह प्रवृत्ति निंदा की पात्र है। आपको बार-बार इसका विचार करना चाहिये। इसके लिये आपको आचार शास्त्र को याद करना चाहिये। प्रतिक्रमण के बाद

मुनियों को जो विचार करना चाहिये, वह मैंने अदृश्य रहकर सुनाया था। पवित्र मुनि रात्रि में या अन्य शान्ति के समय में नित्य यह विचार करते हैं कि, "मैं कहाँ से आया हूँ। मेरी आत्मा का पुनर्जन्म होगा या नहीं ? मैं भूत काल में कौन था और यहाँ से मर कर जन्मान्तर में कहाँ जाऊँगा ?" यह विचार करने से आपको अपने स्वरूप का भान होगा जिससे आपकी आत्मा के उद्धार के लिये अच्छे विचार प्रकट होंगे।

"मुनियो ! वर्तमान समय में उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना कठिन है, क्योंकि जीव का आगमन कहाँ से हुआ, वह कौन था और अब कहाँ जायगा, इस ज्ञान को जानने वाले महात्मा वर्तमान में विद्यमान नहीं हैं, फिर भी यदि आत्मा इस भावना से विचार करे तो इस विषय का वास्तविक ज्ञान प्राप्त न होने पर भी, अपने वर्तमान स्वरूप का ज्ञान तो अवश्य प्राप्त होगा ही। विचार करते-करते आपको ज्ञात होगा कि 'मैं पहले गृहस्थ श्रावक था, फिर किसी गुरु के उपदेश से मैंने चारित्र ग्रहण किया। यदि मैंने शुद्ध चारित्र का पालन किया तो मेरी आत्मा यहाँ से अच्छी गति में जायेगी और अनुक्रम से मैं परम सुख का अधिकारी बनूंगा।' यों स्वयं अपने विषय में जानने पर बाद में मुनियों को बहुत लाभ होता है। हे वृद्धमुनि ! आप भी अपने परिवार के साथ यह विचार करना प्रारम्भ करें। व्यर्थ पर-निंदा एवं अन्यों की चर्चा में अपने अमूल्य समय को क्यों खो रहे हैं ? भूतकाल के महान् पुरुष त्रिकालज्ञ थे इसीलिये वे आत्मवादी, लोकवादी, कर्मवादी और क्रियावादी कहलाते थे। उनके अपूर्व ज्ञान की भावना का मनन कर अपनी आत्मा को उत्कृष्ट बनाने की इच्छा करें, जिससे आपके हृदय की उत्तम प्रकार की विशुद्धि होगी।

"साधुओ ! आपको क्षण-क्षण में कर्मबंध के हेतुओं का विचार करना चाहिये। मैंने किया, मैंने कराया, मैंने अन्य करने वाले का अनुमोदन किया; मैं कर रहा हूं, मैं कराता हूँ, मैं अन्य करने वाले का अनुमोदन करता हूँ; मैं करूँगा, मैं कराऊँगा, मैं अन्य करने वाले का अनुमोदन करूँगा। इन नव भागों को मन, वचन और काया के साथ जोड़ने से २७ भांगे बनते हैं। ये २७ भेद कर्मबंध के हेतु हैं, यह आपको सर्वप्रथम जानना चाहिये। आपका रात्रि श्रावकों के साथ जो व्यवहार चल रहा है, उससे उपर्युक्त २७ भेदों में से कई आप पर लागू होते और आप असंख्य कर्मों का बंध कर रहे हैं। साधुओ ! मैंने आपके व्यवहार को प्रत्यक्ष देखा है, उससे मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि आप नाम मात्र के साधु हैं, आपके व्यवहार में चारित्र का एक भी शुद्ध अंश दिखाई नहीं देता। महात्मा वीरप्रभु की वाणी रूपी 'आचारांग सूत्र' में लिखा है कि, 'जो पुरुष उपकार-क्रिया को नहीं जानता, वह दिशा-विदिशाओं में भटकता है, अनेक योनियों में जन्मता है और अनिच्छित स्पर्श आदि दुःखों को भोगता है।'

"सूत्रकार आगे कहते हैं कि, 'जो भेद परिज्ञान से क्रिया के भेदों को शुद्ध रूप से समझता है, उसे ही कर्मों को समझकर उसके कारणों से दूर रहने वाला मुनि समझना चाहिये ।' मुनियो ! आपको मनन पूर्वक इस सूत्र-वाणी पर विचार करना चाहिये । जब तक आप इस सूत्र का मनन और चिंतन न करें, तब तक आपको साधुत्व का अधिकार प्राप्त नहीं होता, ऐसी मेरी मान्यता है । इसीलिये मैंने आपको वास्तविक मुनि न कहकर मात्र वेषधारी मुनि कहा है ।"

दीक्षाकुमारी के उपर्युक्त वचन सुनकर वृद्धमुनि और उसके शिष्य खिन्न हो गये । उनके मुख ग्लानि और लज्जा से पीले पड़ गये । थोड़ी देर बाद वृद्ध मुनि ने नम्रता से कहा, "महेश्वरी ! आपका कथन यथार्थ है । हम में मुनियों का एक भी शुद्ध अंश नहीं है । अब कृपा कर हमें 'आचारांग सूत्र' का उपदेश दें, जिससे हम अपने भूले हुए स्वरूप को यथार्थ में समझ सकें । आपके समान सत्यवक्ता हमें और कहाँ मिलेंगे ?" (क्रमशः)

□ □ □
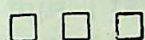
## सामायिक संगोष्ठी का आयोजन

श्री अ. भा. जैन विद्वत् परिषद् के तत्त्वावधान में जयपुर में दिनांक १७, १८ व १९ नवम्बर, १९८३ को आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा, के सान्निध्य में **सामायिक संगोष्ठी** का आयोजन किया गया है । विद्वानों से निवेदन है कि वे 'सामायिक' के स्वरूप, 'सामायिक' से सम्बन्धित पाठों और समभाव पोषक साधना पद्धतियों के विभिन्न आयामों पर अपने शोध·निबन्ध ५ नवम्बर, ८३ तक निम्न पते पर भेजने की कृपा करें—

**डॉ. नरेन्द्र भानावत**

महामंत्री, अ. भा, जैन विद्वत् परिषद्,
सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२ ००४

**कोडम्बाकम—(मद्रास)** यहाँ पर परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म. सा., महासती श्री रतनकंवरजी म. सा., महासती श्री चन्द्रावती जी म. सा. ठाणा ३ सुख साता में हैं । धर्म ध्यान का ठाठ है । यहाँ अब तक ५ मास खमण तथा अनेक बड़ी तपस्यायें एवं धर्म ध्यान गति पर है ।

**—रणजीत मार्लेचा**

सूक्ति-विवेचन [२]
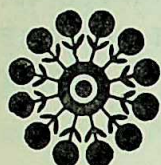
# उट्ठिए णो पमायए !

□ श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

वीतराग प्रभु साधक को चेतावनी देते हुए फरमा रहे हैं कि 'उट्ठिए णो पमायए' (आचारांग १।५।२) हे साधकों उठो ! प्रमाद मत करो। जागो, सोते मत रहो। पुरुषार्थ करो, आलस्य में मत रहो। धर्माचरण करो, निष्क्रिय न रहो। सत्य को जान लेने पर भी उस पर आचरण न करना, साध्य को जान लेने पर भी उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्न न करना प्रमाद है। यह जानते हुए भी, कि सत्य हमारे लिए कल्याणकारी है और उसे प्राप्त करने का उपाय है—असत्य का, दोष का, दुर्गुण का, पाप का त्याग करना। त्याग करने में बल, शक्ति, वस्तु आदि अपने से भिन्न किसी भी पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती है। अतः त्याग करने में मानव मात्र समर्थ और स्वाधीन है फिर भी दोषों को, दुःख के कारणों को त्याग करने के लिए उद्यत नहीं होना, यही प्रमाद है।

जैनागम में प्रमाद के पाँच हेतु बतलाये हैं यथा—(१) मद, (२) विषय, (३) कषाय, (४) निद्रा और, (५) विकथा।

**१. मद**—के दो मुख्य अर्थ हैं—(१) अहंभाव और (२) नशा-बेहोशी, स्वरूप की, सत्य की विस्मृति। अहंभाव की उत्पत्ति होती है विद्या, बल, धन, पद आदि नश्वर या पर पदार्थों के साथ जुड़ने से, उनके द्वारा अपना मूल्यांकन करने से। जब व्यक्ति इन पर व नश्वर पदार्थों की प्राप्ति में ही अपना जीवन मान लेता है तो उसे एक प्रकार का नशा चढ़ता है। जो इन सब का वियोग अवश्यंभावी है, ये घोर पराधीन बनाने वाले हैं, इस सत्य को भुला देता है। मद के कारण सत्य दृष्टि से ओझल हो जाता है। व्यक्ति में सत्य को आत्मसात करने की भावना का लोप हो जाता है, जो घोर प्रमाद है। यह साधक के लिए अहितकर है।

**२. विषय**—यद्यपि इन्द्रिय सुख के पूर्व और पश्चात् अर्थात् आदि और अंत में दुःख ही है। अतः सुख नहीं, सुखाभास है फिर भी मानव क्षण मात्र के लिए मिलने वाले क्षणिक सुख के अधीन होकर विषय सुख के परिणाम में मिलने वाले दुःख से आँख मूंद लेता है। इन्द्रिय सुख की दासता, आशा-प्रलोभन में आबद्ध व्यक्ति सत्याचरण तथा साधना की उपेक्षा कर देता है जो प्रमाद है।

विषय सुख की दासता में आबद्ध व्यक्ति पराधीन होता है। यह सर्व विदित है कि पराधीन होना दुःख है, स्वाधीन या मुक्त होना सुख है। सुखी होना या मुक्त होना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में ही जीवन की सार्थकता है, सफलता है।

**३. कषाय**—विषय सुख से भोग्य पदार्थों के प्रति आसक्ति या मोह उत्पन्न होता है जिसका फलस्वरूप अनुकूलता के प्रति राग तथा प्रतिकूलता के प्रति द्वेष पैदा होता है, यह कषाय है। इस कषाय से व्यक्ति मनचाही के प्रति राग में और अनचाही के प्रति द्वेष में फँस जाता है और सत्य के प्रति जो जिज्ञासा होती है, उसको वह अनदेखी कर देता है, जाने-अनजाने उसे भुलाने का प्रयत्न करता है—जो प्रमाद ही है।

**४. निद्रा**—निद्रा का अर्थ है, स्वरूप-विस्मृति, अपना भान भूल जाना, जड़ता आ जाना। विषय सुख के कारण प्राणी बहिर्मुखी हो जाता है। जड़ पदार्थों के साथ जुड़ जाता है। जड़ के साथ जुड़ने से उसमें जड़ता आ जाती है। जिससे उसे चिन्मयता का अनुभव नहीं होता तथा विषय सुख की भोग प्रवृत्ति के कारण शक्ति हीनता आ जाती है जो थकान के रूप में प्रकट होती है। शक्ति हीनता से जड़ता आती है जो आलस्य व निद्रा के रूप में प्रकट होती है, जिससे त्याग का सामर्थ्य नहीं रहता जो प्रमाद है।

**५. विकथा**—कथा का अभिप्राय विवेचन से है। विवेचन चिंतन-चर्चा रूप होता है। जो चर्चा और चिंतन रूप विवेचन अहितकर है, अकार्यकारी है, व्यर्थ है, विकथा है। इस दृष्टि से विनाशी और नश्वर पदार्थों, घटनाओं की चर्चा और चिंतन भी विकथा है। अपने चारों ओर के वातावरण (देश व राज्य संबंधी) की कथा, भोजन (भात) कथा, भोग कथा, की गिनती इसी कोटि में आती है। अतः सत्य साधक के लिए ये विघ्न रूप हैं—सत्य से विमुख करने वाली हैं, इनकी चाह, चिंतन और चर्चा में रस लेने वाले साधक में सत्य-प्राप्ति की व्याकुलता नहीं जगती। सत्य की उपलब्धि के लिए उसमें पुरुषार्थ की भावना ही नहीं जगती है जो भयंकर प्रमाद है।

इस प्रकार मद, विषय, कषाय, निद्रा और विकथा रूप प्रमाद साधक को सत्य से, साध्य से, साधना पथ से विमुख करने वाले हैं, विषयगामी बनाने वाले हैं, शान्ति, स्वाधीनता, अक्षय, निराकुल सुख से वंचित करने वाले है, सर्वनाश करने वाले हैं, इनसे बचने वाला साधक पुरुषार्थ कर सिद्धि पाता है, कृतकृत्य हो जाता है।

—अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान,
महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-३०२०१७

# बाल-कथामृत [१९]

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

## असली दान की महिमा

□ राज सौगानी

एक बादशाह था जो अपने समय का सबसे बड़ा दानी था। उसके दरवाजे से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटता था। चौबीसों घन्टे बादशाह के दरवाजे दान देने वालों के लिए खुले रहते थे।

एक दिन बादशाह के द्वार पर एक महात्मा आये। महात्मा ने आवाज लगाई, "दाता कुछ मिल जाए।"

बादशाह ने दरबार के अन्न-धन के भंडारों की ओर संकेत किया और बोला—"जितनी जरूरत हो अपनी इच्छानुसार ले जाओ।"

महात्मा ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"दाता, तेरे भंडार में से हम कुछ भी नहीं लेंगे। यह सब तो हमारे लिए त्याज्य है। यदि देना ही है तो तू हमें अपनी मेहनत की कमाई से ही कुछ दे।"

बादशाह ने महात्मा से कहा—"आप कल पधारियेगा।"

उसी दिन बादशाह ने वेश बदला और काम की तलाश में निकल पड़ा। उसी के नगर में एक सेठ के यहां मकान बन रहा था। बादशाह ने दिन भर वहाँ पर ईंटें उठाईं व उन्हें ऊपर की मंजिल तक पहुँचाया। शाम को सेठ ने उसके हाथ पर दो पैसे का सिक्का रख दिया। बादशाह खुशी-खुशी उस सिक्के को लेकर महल में पहुँचा। महल में किसी को कुछ पता न चला। थकान से चूर बादशाह गहरी नींद सो गया।

दूसरे दिन सुबह से ही वह महात्मा जी के आने का इन्तजार करने लगा। महात्मा आए तो उसने खुशी-खुशी वह सिक्का उन्हें दे दिया। उस दिन के दान से बादशाह को एक अद्भुत खुशी की अनुभूति हुई। ऐसी खुशी उसे करोड़ों का दान देने में भी नहीं हुई थी।

इधर महात्मा ने सिक्का लिया और अपनी कुटिया की ओर चल पड़े। महात्मा जी ठहरे विरागी। वह पैसों का क्या करें? कुटिया के पास ही उन्होंने वह सिक्का फेंक दिया।

कुछ दिनों बाद ही कुटिया के पास एक झाड़ उग आया। इस झाड़ पर खूब सिक्के लगे। महात्मा जी के पास आने वाले लोग उस झाड़ के सिक्के तोड़-तोड़कर ले गए, मगर झाड़ फिर भी सिक्कों से लदा रहा।

धीरे-धीरे बादशाह के पास भी सिक्कों के इस चमत्कारिक वृक्ष की खबर पहुँच गई। इसे सुनकर बादशाह का मन डोल गया। वह सोचने लगा कि ऐसा वृक्ष तो केवल उसके बाग में ही होना चाहिए। यह सोचकर उसने अपने नौकरों से कहा—"जाओ उस वृक्ष को जड़ सहित उखाड़ लाओ।"

बादशाह के नौकरों ने उस वृक्ष को उखाड़ने की बहुत कोशिश की पर उनसे वह हिला तक नहीं। महात्मा जी चुपचाप सब देखते रहे। नौकर खूब पचकर यूँ ही लौट गए।

जब बादशाह ने उस वृक्ष का सारा हाल उन नौकरों से सुना तो उस अद्भुत वृक्ष को देखने व लाने के लिए खुद ही चल पड़ा। बादशाह ने अपने नौकरों के साथ मिलकर वृक्ष उखाड़ना चाहा, पर व्यर्थ। वृक्ष तो हिला तक नहीं। बादशाह निराश होकर लौटने लगा। उसी समय महात्मा जी वहाँ आ पहुँचे और मुस्कराते हुए कहने लगे—

"यह तो असली दान की महिमा है राजन्। तुम भूल गए। एक दिन तुमने मुझे दान में एक सिक्का दिया था। पहली बात, मैं सिक्के का क्या करता? दूसरो मैं देखना चाहता था कि यह सिक्का दान के लिए खरा है या खोटा? तुम्हारा असली दान आज रंग लाया है। इस वृक्ष की जड़ें, दूसरे लोक तक पहुँच चुकी हैं। पसीने में यही तो खूबी है। मेरी बातों का आशय तुम समझ गए हो।" कहकर महात्मा जी चले गए।

उसी दिन से बादशाह भी "दान" शब्द का महत्त्व "वास्तविक अर्थों" में समझ गए।

"अपने परिश्रम से कमाई हुई पूँजी व सच्चे मन से दिया गया दान, चाहे वह "कुछ" ही क्यों न हो, वास्तव में दान है। लाखों की सम्पत्ति को खुले हाथों से और नाम करके किसी को देना दिखावा है, दान नहीं।"

## अभ्यासार्थ प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:—

१. बादशाह को अपने समय का सबसे बड़ा दानी क्यों कहा गया है?

२. महात्मा ने यह क्यों कहा कि 'दाता तेरे भंडार में से हम कुछ भी नहीं लेंगे ?'
३. 'उस दिन के दान से बादशाह को एक अद्भुत खुशी की अनुभूति हुई।' इस दान की क्या विशेषता थी ?
४. दान में प्राप्त सिक्के का महात्मा ने क्या उपयोग किया और उसका क्या परिणाम रहा ?
५. "तुम्हारा असली दान आज रंग लाया है ?" महात्मा ने बादशाह को यह बात क्यों कही ?
६. 'असली दान' किसे कहा जाना चाहिए ?
७. वर्तमान समाज में प्रचलित दान की परिपाटी पर अपने संक्षिप्त विचार लिखिए।
८. इस कहानी से आपको क्या शिक्षा मिलती है।

## उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के अगस्त, ८३ के अंक में श्री राजीव भानावत की कहानी **'सौन्दर्य की कसौटी'** के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सबको धन्यवाद।

**जयपुर** से सीमा कुचेरिया, नीना बोहरा, संदीप शर्मा, **देवगढ़ मदारिया** (उदयपुर) से फतहलाल कोठारी, पृथ्वीराज उपाध्याय, **भीलवाड़ा** से दिनेशकुमार, **पाली** से कुसुमलता सुराणा, **पोढ़रकवड़ा** से राजेन्द्र मुणोत, **मथुरा** से राजीव अग्रवाल, राजेशकुमार जैन, **रामगंज मंडी** से संजय पतीरा, **बंगलौर** से मंजु गडिया, संतोष बोहरा **नीमच कैन्ट** से सनत्कुमार, संजय आंचलिया, **अलीगढ़** (टोंक) से विनोदकुमार जैन, भागचन्द जैन **बावड़ी** (म० प्र०) से अशोक कुमार कटारिया **पनवाड़** (टोंक) से राजकुमार पोखरना, **बर** से इन्दरचन्द कोठारी, **सवाई माधोपुर** से अनिलकुमार जैन, जितेन्द्रकुमार जैन, विमल जैन, सुरेन्द्र जैन, आशा जैन, ममता जैन, सरोज जैन, साधना जैन और **जोधपुर** से अमित भण्डारी।

## पुरस्कृत उत्तरदाता

**प्रथम** :— मनोजकुमार जैन, ३ क २०, जवाहर नगर, **जयपुर**-३०२००४।

**द्वितीय** :—मनु जैन, द्वारा श्री नरेन्द्रकुमार लोंग्या, विजयवर्गीय मसाला चक्की, जैन नसियां के पास, **टोंक** (राजस्थान)।

**तृतीय** :—अशोक कुमार चाणोदिया, सुपुत्र श्री हस्तीमल जी खारड़ीवाला, द्वारा श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन छात्रावास, **राणावास**।

# पल्लीवाल क्षेत्रों में सामायिक संघों का गठन एवं स्वाध्याय का प्रचार-प्रसार

प्रस्तोता—**श्री सूरजमल मेहता, संयोजक**

परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा से प्रेरित हो, श्री केसरीचन्दजी नवलखा, श्री राजेन्द्रकुमारजी पटवा, श्री हरिप्रसादजी तथा मैंने दि० २९ व ३० अगस्त, ८३ को सामायिक एवं स्वाध्याय के निरीक्षण एवं प्रचार-प्रसार हेतु पल्लीवाल क्षेत्रों के मौजपुर, खेड़ली, नदबई, मंडावर एवं रसीदपुर का प्रवास किया। सभी स्थानों पर वहाँ के लोगों का पूरा सहयोग मिला। चार स्थानों पर सामायिक संघों का गठन किया गया, कुछ नये स्वाध्यायी भी बनाये गये। इन स्थानों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

**मौजपुर**— यहाँ कुल जैन घर २२ हैं। स्थानक है। श्री राजेन्द्र बाबू पटवा ने स्थानक में एकत्रित पुरुषों, महिलाओं एवं युवकों को सामायिक संघ का महत्त्व बतलाते हुए सामायिक संघ के गठन की प्रेरणा दी। श्री केसरीचन्दजी नवलखा, श्री हरिप्रसादजी तथा मैंने भी सामायिक संघ एवं स्वाध्याय की लोगों में काफी प्रेरणा की फलस्वरूप सामायिक संघ की स्थापना हुई और २६ पुरुष एवं महिलाएँ जिनमें अधिकांश नवयुवक एवं युवतियाँ हैं तथा श्री पारसकुमारजी एम. काम. तथा श्री लक्ष्मणप्रसाद, बी. ए. भी शामिल हैं, ये सब इसके सदस्य बने हैं। इनमें ११ नियमित सामायिक करेंगे, शेष माह में १५-२० दिन सामायिक करेंगे। वहाँ पहले ११ स्वाध्यायी हैं, एक नये स्वाध्यायी श्री किरोड़ीमल जी बने हैं। यहाँ सामायिक के उपकरण तथा सामायिक-प्रतिक्रमण की पुस्तकें तथा मंगलवाणी दी गई।

**खेड़ली**—यहाँ श्वेताम्बर जैन घर ११३ हैं। स्थानक नहीं है। मन्दिर के उपासरे में ही सामायिक-स्वाध्याय होता है। स्थानक की नितान्त आवश्यकता है। सामायिक संघ के गठन की एकत्र लोगों को प्रेरणा दी है। फलस्वरूप सामायिक संघ का गठन हुआ जिसके २५ सदस्य तो उसी समय बन गये जिसमें

१५ नियमित सामायिक करेंगे । वर्तमान में ६ स्वाध्यायी हैं, ७ नये बनाये गये । श्री बाबूलालजी अध्यक्ष ने कहा कि जब तक लोगों की आर्थिक कठिनाइयों की ओर ध्यान नहीं दिया जावेगा तब तक लोगों की धर्म के प्रति रुचि नहीं होगी । श्री राजेन्द्रकुमारजी ने आर्थिक कठिनाई को दूर करने के लिये श्री वर्द्धमान सेवा समिति जयपुर तथा सेवा की ओर लगे हुए महावीर इंटरनेशनल की सेवाओं को बताया जो समाज को काफी लाभ पहुँचा रही है । तथा इन कठिनाइयों में जो लोग हैं उनको बताने के लिये कहा जिससे वे स्वयं भी उनकी कठिनाइयों को दूर करने की कोशिश करें । इस प्रकार उनका समाधान किया । यहाँ भी सामायिक के उपकरण तथा पुस्तकें दी गई । यहाँ बच्चों की धार्मिक पाठशाला है तथा धार्मिक पुस्तकालय भी है ।

**नदबई**—यहाँ श्वेताम्बर जैन घरों की संख्या ३५ है । स्थानक नहीं है । सामायिक संघ गठन को तथा स्वाध्याय की प्रेरणा की गई फलस्वरूप सामायिक संघ का गठन हुआ जिसके ११ सदस्य बने जिसमें ६ नियमित सामायिक करेंगे, शेष माह में ४ से १५ दिन करेंगे । वर्तमान में सिर्फ एक स्वाध्यायी श्री ज्ञानचन्द जी जैन हैं । नये ७ स्वाध्यायी बने हैं । सामायिक के उपकरण तथा पुस्तकें दी गई ।

**मंडावर**—यहाँ श्वेताम्बर जैन घर ६० हैं । स्थानक है । महासतीजी श्री स्नेहप्रभाजी, श्री नूतनप्रभाजी एवं श्री विमलप्रभाजी का चातुर्मास है । स्थानक में एकत्र लोगों को सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा की गई । १२ व्यक्तियों को १५ मिनिट से एक घंटा तक नित्य स्वाध्याय के लिये तैयार किया । तीन व्यक्तियों को नित्य सामायिक के लिये तैयार किया ।

**रसीदपुर**—यहाँ श्वेताम्बर स्थानकवासी घरों की संख्या ८ है । स्थानक नहीं है, इसके लिये श्री अशोककुमारजी ने अपना कमरा फिलहाल सामायिक स्वाध्याय के लिये देने की स्वीकृति प्रदान की । सामायिक संघ गठन करने की तथा स्वाध्याय की प्रेरणा की गई । फलस्वरूप सामायिक संघ का गठन हुआ । जिसके २२ सदस्य बने हैं जिसमें ६ नियमित सामायिक करेंगे । वर्तमान में ११ स्वाध्यायी हैं । एक नये स्वाध्यायी श्री राजेशकुमारजी बने हैं । कुल ८ घर की बस्ती होते हुए गाँव में चौविहार करने वाले ३२ पुरुष एवं एक महिला हैं । रात्रि भोजन कोई नहीं करता है । विवाह के अवसर पर भी रात्रि भोजन नहीं होता है । इसे आदर्श गाँव की संज्ञा दी जा सकती है । ऐसा अनुकरण औरों को भी करना चाहिये । सामायिक के उपकरण तथा पुस्तकें दी गई ।

—छाजूसिंह के दरवाजे के सामने, अलवर–३०१००१

# समाज–दर्शन

## पर्यु षण पर्वाराधना और विविध तप-त्याग

देश के विभिन्न स्थानों पर आचार्यों, मुनियों एवं साध्वियों के सान्निध्य में वर्षावास व पर्यु षण की पर्वाराधना विशेष उत्साह के साथ तप-त्यागपूर्वक सम्पन्न हुई। 'जिनवाणी' कार्यालय में जो समाचार प्राप्त हुए हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

**मद्रास** के त्यागराय नगर में आचार्य श्री नानेश के विद्वान् शिष्य श्री धर्मेश मुनि के सान्निध्य में २१ अगस्त को श्री एस० एस० जैन संघ माम्बलम की ओर से श्री एस० एस० जैन बोर्डिंग भवन में 'मासखमण तप आराधना महोत्सव' का कार्यक्रम रखा गया जिसमें मासखमण करने वाले ९ भाई-बहिनों– सर्वश्री प्रेमचन्द जी कांठेड़, नेमीचन्द जी छाजेड़, श्रीमती शान्ताबाई छाजेड़, मदनबाई बोहरा, कमलाबाई कांकरिया, बादलबाई तालेड़ा, किरणबाई चोरड़िया, बदनबाई झामड़ और कुमारी भारती बेन शाह ने मुनिश्री से मास-खमण के प्रत्याख्यान लिये। श्री सी० एल० मेहता ने आतिथ्य सत्कार का लाभ लिया। तपस्वी भाई-बहिनों का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। **परदेसी-पुरा इन्दौर** में तपस्वी श्री लालचन्द जी म० सा० ने ३५ उपवास की तपस्या की। १० बार २४-२४ घन्टों के अखण्ड जाप हुए, दो बार सवा-सवा लाख नमस्कार मन्त्र का सामूहिक जाप हुआ। सामायिक व्रत, पौषध आदि कई विविध तपस्यायें हुईं। 'दया फण्ड' की स्थापना भी की गई।

**रायचूर** (कर्नाटक) में श्री कान्ति ऋषि जी म० सा० के सान्निध्य में विभिन्न तपस्याओं के साथ भाइयों में ५१ दिन का व बहिनों में ३१ दिन का अखण्ड जाप सम्पन्न हुआ। सर्वश्री धर्मचन्द जी आंचलिया ने ४१ दिन की, श्रीमती विजयलक्ष्मी बोहरा ने ३७ दिन की, उमरावबाई आंचलिया ने ३५ दिन की, श्री माणकचन्द जी कोल्लन ने ३५ दिन की, श्रीमती दाखीबाई मूथा बादलबाई मूथा एवं ललिताबाई रांका ने ३१ दिन की तपस्याएँ सम्पन्न कीं। ८ से लेकर १७ दिनों तक की भी कई तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। **श्री नानक जैन छात्रालय, गुलाबपुरा** के बालकों ने पर्यु षण की अवधि में १५४५ सामायिक, ६८ उपवास, ६ आयम्बिल, ५५ दया एवं १ बेला किया। विदुषी साध्वी श्री

इन्द्रकँवर जी के सान्निध्य में **छोटी सादड़ी** में श्री पारसकँवर जी महासती जी ने ३२ की तपस्या की। पर्युषण में १ मासखमण, १० अठाई, ५ पंचोले, ७ तेले, ५० बेले, ५५० उपवास और ४८ पौषध हुए। **किशनगढ़** में महासती श्री कुसुमवती जी के सान्निध्य में कई सामूहिक अठाइयाँ व तेले हुए। अखण्ड शान्ति जाप भी हुआ। महासती जी की प्रेरणा से 'नवयुवक सेवा समिति' का गठन किया गया। श्री गणपतसिंह जी मेहता ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत का नियम लिया। **आबू पर्वत** पर पं० रत्न मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' के सान्निध्य में विविध तप त्याग और अखण्ड शान्ति जाप हुआ। **अजमेर** में महासती श्री प्रेमकँवर जी म० सा० के सान्निध्य में विविध प्रकार के तप त्याग हुए। श्रीमती सुमनलता पगारिया ने मासखमण किया। **रामगंजमण्डी** में श्री उत्तम मुनि जी के सान्निध्य में ४ मासखमण सहित विविध तप-त्याग प्रत्याख्यान हुए हैं।

**सिन्धनूर** (कर्नाटक) में भारती श्री जी म० सा० के सान्निध्य में ४१, ३५, ३२, ३१ की लम्बी तपस्याओं के साथ १ से लेकर १६ तक की कई तपस्याएँ हुई हैं। तपस्वी भाई-बहिनों का संघ की ओर से सम्मान किया गया। **नागौर** में महासती जी श्री छगनकँवर जी के सान्निध्य में श्रीमती झन्कार देवी सुराणा ने मास खमण की तपस्या की। **घोड़नदी** में महासती श्री कौशल्या कँवर जी के सान्निध्य में २०,००० से अधिक सामायिक एवं १ से लेकर ११ तक की कई तपस्यायें हुई हैं। **बर** निवासी श्री बाबूलाल जी बोहरा एवं **जयपुर** निवासी श्री रोशनलाल जी चपलावत जैन ने एक विज्ञप्ति में अपनी वृद्धावस्था को देखते हुए चतुर्विध संघ से मनसा, वाचा, कर्मणा क्षमायाचना की है। **रायपुर** (झालावाड़) के वयोवृद्ध श्रावक श्री पूनमचन्द जी धूपिया ने भी चतुर्विध संघ से क्षमायाचना करते हुए सन्त-मुनिराजों एवं श्रावकों से रायपुर पधारने की विनती की है।

## संक्षिप्त समाचार

**मद्रास** :—रिसर्च फाउण्डेशन फार जैनोलोजी द्वारा मद्रास विश्वविद्यालय में जैन शिक्षा विभाग की स्थापना करने के लिए जैन समाज की ओर से विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० सान्तप्पा को १५ लाख रुपये की राशि भेंट की गई। इस कार्य के लिए जैन समाज बधाई का पात्र है।

**अहमदनगर** :—श्री त्रिलोक रत्न जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के रजिस्ट्रार पं० चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी ने परीक्षा केन्द्र के संचालकों को सूचित किया है

कि उपाधि परीक्षाएँ ७ नवम्बर से आरम्भ होंगी। आवेदन पत्र १५ अक्टूबर तक भर कर कार्यालय को भिजवा देवें।

**गुलाबपुरा** :—जैन स्वाध्यायी संघ गुलाबपुरा का त्रिदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर १४ अगस्त को थांवला में सम्पन्न हुआ। इसमें ४७ स्वाध्यायियों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्री आनन्दीलाल जी मेहता, गजराज जी कोठारी, गोबिन्दसिंह जी चौधरी व मदललाल जी बड़ोला को उनकी दीर्घकालीन सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

**जलगाँव** :—यहाँ के श्री का० शि० ओसवाल जैन बोर्डिंग हाउस के छात्र श्री सुशीलकुमार जैन ने विधि महाविद्यालय के प्रथम वर्ष में प्रथम श्रेणी प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। श्री अतुलकुमार ने डी फार्मसी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर कॉलेज में तृतीय स्थान प्राप्त किया। बधाई।

**जयपुर** :—श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के भूतपूर्व छात्र प्रो० धर्मचन्द जैन एवं प्रो० गौतमचन्द जैन ने राजस्थान प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगी परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है। एतदर्थ बधाई। अभी ये दोनों राजस्थान कॉलेज शिक्षा निदेशालय की सेवा में क्रमशः झालावाड़ व भतरपुर में संस्कृत प्रवक्ता हैं। अब शीघ्र ही इनकी नियुक्ति प्रशासनिक पदों पर होगी।

**कानोड़** :—यहाँ जवाहर विद्यापीठ में जिनेन्द्र कला भारती, भीलवाड़ा द्वारा जिन भक्ति संगीत का विशेष कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण भक्तामर स्तोत्र के राजस्थानी पदों का प्रसारण था। राजस्थानी अनुवाद श्री विपिन जारोली ने किया जिसका प्रकाशन हीरा भैया प्रकाशन, इन्दौर से हुआ है। कला भारती के मंत्री श्री निहाल अजमेरा एवं विपिन जारोली का विद्यापीठ परिवार की ओर से अभिनन्दन किया गया।

**जयपुर** :—२९ सितम्बर को अखिल विश्व जैन मिशन की ओर से **'निःशस्त्रीकरण से ही विश्व शांति संभव है'** विषय पर श्री वीर बालिका कॉलेज में अन्तःकॉलेज वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें ७ टीमों ने भाग लिया।

**बम्बई** :—श्री बम्बई जैन युवक संघ द्वारा आयोजित पर्युषण व्याख्यानमाला में दिनांक ५ व ६ सितम्बर को 'जिनवाणी' के सम्पादक डॉ० नरेन्द्र भानावत ने **'जिस मरण से जग डरे, मेरे मन आनंद'** विषय पर तथा श्रीमती शान्ता भानावत ने **'चरित्र निर्माण में नारी की भूमिका'** विषय पर विशेष व्याख्यान दिये। ये व्याख्यान प्रतिवर्ष डॉ० रमणलाल शाह की अध्यक्षता में

बिड़ला क्रीड़ा केन्द्र, चौपाटी पर आयोजित किये जाते हैं। बम्बई की कफ परेड की धर्मसभा में भी डॉ. भानावत ने व्याख्यान दिया। इस यात्रा में उन्होंने पूना, घोड़नदी, कोल्हापुर, बाहुबलि, बेलगाँव, हुबली, धारवाड़, गोवा आदि स्थानों पर स्थित विभिन्न जैन संस्थाओं का निरीक्षण किया और वहां विराजित विशिष्ट आचार्यों, मुनियों व विद्वानों से जलगाँव में स्थापित किये जाने वाले महावीर जैन विश्वविद्यालय व जैन विद्या के अध्ययन-अनुसंधान व प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में उपयोगी विचार-विमर्श किया।

**अलीगढ़** :—यहाँ आयोजित पर्युषण व्याख्यान माला में डॉ० नरेन्द्र भानावत ने १७ सितम्बर को **'उत्तम तप'** पर विशेष व्याख्यान दिया। यहां स्थित विभिन्न जैन संस्थाओं का उन्होंने निरीक्षण भी किया। यह व्याख्यान-माला डॉ० महेन्द्रसागर प्रचंडिया के निदेशन में प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है।

**जयपुर** :—स्व० श्री सरदारसिंह जैन की स्मृति में दिनाक १५, १६ व १८ सितम्बर को 'रंगछवि' की ओर से नाट्य समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान की ओर से श्री सिरहमल जी नवलखा ने पाँच हजार की राशि जैन के स्मरणार्थ घोषित की। स्व० श्री जैन संस्थान के छात्र रहे हैं। समारोह का संयोजन श्री संजीव भानावत ने किया और नाटकों के निर्देशक थे राजीव आचार्य।

दिनांक २७ सितम्बर को प्रसिद्ध जैन विद्वान् प्रो० प्रवीणचन्द जी जैन का उनकी दीर्घकालीन सेवाओं के उप्रलक्ष्य में सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्रकुमार ने की व मुख्य अतिथि थे मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर।

**जोधपुर** :—अ० भा० जैन महावीर श्राविका संघ की अध्यक्षता एवं प्रमुख समाजसेवी श्रीमती सुशीला बोहरा का १५ अगस्त को जिला प्रशासन द्वारा आदर्श समाज सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर, सम्मान किया गया। हार्दिक बधाई !

**कानोड़** :—शिक्षक दिवस पर यहाँ के शिक्षक श्री शान्तिलाल जी धींग को राज्य सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। इस उपलक्ष्य में यहाँ नगर की ओर से उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

**जयपुर** :—प्रसिद्ध समाज सेवी, निर्भीक वक्ता, समाज सुधारक, प्रबुद्ध विचारक और लेखक पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी का २४–२५ दिसम्बर को उज्जैन में अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है। अभिनन्दन समिति के

संयोजक नेमीचन्द काला ने उन सभी महानुभावों से जो सेठीजी से परिचित हैं, निवेदन किया है कि वे उनके बारे में अपने संस्मरण, नव अल्पना, मोदीखाना, मनिहारों का रास्ता, जयपुर ३०२ ००३ के पते पर भेज देवें।

**रतलाम**—यहाँ विराजित उपाध्याय श्री कस्तूरचन्द जी म० सा० एवं मानव केसरी श्री सौभाग्यमल जी म० सा० के सान्निध्य में आचार्य श्री नन्दलाल जी म० सा०, आचार्य श्री माधव मुनि जी म० सा० एवं आचार्य श्री चम्पालाल जी म० सा० का दीक्षा शताब्दी समारोह मनाने का निश्चय किया गया है। सभी से निवेदन है कि वे एक-एक दिन सुविधानुसार अध्यात्म साधना एवं जनकल्याणकारी कार्यक्रम का आयोजन करें।

सम्पर्क सूत्र—श्री त्रयाचार्य दीक्षा शताब्दी समारोह समिति,
८० नौलाईपुरा, रतलाम–४५७००१ (म. प्र.)

**इन्दौर**—२५ अगस्त को इन्दौर में परम श्रद्धेय जैनाचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० की सद्प्रेरणा से चल रही श्री महावीर जैन स्वाध्याय शाला को आगे बढ़ाने और स्वाध्याय-सामायिक संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिये निम्न पदाधिकारीगण सर्वानुमति से चुने गए—१. डायरेक्टर जनरल श्री नेमनाथ जैन, २. अध्यक्ष, श्री अशोककुमार मण्डलिक, ३. कार्याध्यक्ष, श्री प्रकाश कोठारी, ४. उपाध्यक्ष, श्री विमलचन्द तांतेड़ एवं नगीनचंद नारेलिया, ५. महामन्त्री, श्री गजेन्द्र बोड़ाना, ६. कोषाध्यक्ष, श्री राजेन्द्र नाहर, ७. सहमंत्री, श्री राकेश नाहर एवं श्री राजेन्द्र छिगावत, ८. प्रचार मंत्री, कु० मंजुला सालेचा, ९. सह-प्रचारमंत्री, कु. अभिलाषा गेलड़ा, १०. मनोनीत सदस्य–श्री वर्द्धमान ललवानी, श्री महेन्द्र भंडारी, श्री राजेश भंडारी एवं गौतम झांझरिया।

**जयपुर**—जैन दर्शन के प्रकांड विद्वान् व सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की कृति **'धर्म के दशलक्षण'** मुनिराजों, जिनमन्दिरों, वाचनालयों, त्यागियों, विद्वानों एवं मुमुक्षु भाइयों को श्री नेमीचन्द, सौभाग्यमल पाटनी, ट्रस्टी रवीन्द्र चेरिटेबिल ट्रस्ट बम्बई की ओर से निःशुल्क भेंट दी जा रही है। इच्छुक सज्जन पोस्टेज खर्च हेतु ६० पैसे के डाक टिकिट भेंजे। कृपया मनी-आर्डर न करें एवं ध्यान रखें कि एक व्यक्ति को एक ही पुस्तक भेजी जाएगी। सम्पर्क सूत्र—निःशुल्क पुस्तक वितरण विभाग, टोडरमल स्मारक भवन, बापू नगर, जयपुर–१५।

**रतलाम**—गणधर गौतम २५००वां परिनिर्वाण महोत्सव के सन्दर्भ में मधुर वक्ता श्री चन्दनमुनिजी म० ने एक ऐतिहासिक एवं अनूठे प्रकाशन की योजना प्रस्तुत की है। मुनि श्री नाथूलाल साहित्य विभाग नोमच (म.प्र.) ने

इस योजना को स्वीकृति दे दी है। प्रस्तुत योजना के अनुसार प्राचीन हस्त-लिखित ३२ आगमों की मूल अर्थ सहित २ इंच लम्बी चौड़ी साइज में प्रकाशन होगा। प्रत्येक सूत्र की २००० प्रतियां प्रारम्भ में आफसेट पर मुद्रित की जायेंगी। पूरी बत्तीसी ६५) रु० में १ किलो वजन में होगी। इस नये प्रकाशन के लिये दानदाताओं का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है।

**जयपुर**—जैन समाज की आंतरिक स्थिति देखते हुए 'जैन सेवा समिति' नामक एक संस्था चालू की गई है जिसके बहुत से उद्देश्यों में से एक मुख्य उद्देश्य है कि जो भी जैन भाई-बहिन अपने अतिरिक्त समय में कुछ कार्य अपनी इच्छानुसार करना चाहें तो यह समिति उसे कार्य दिलाने की कोशिश करेगी। इच्छुक भाई-बहिन समिति के कार्यालय मंत्री, जैन सेवा समिति, बारह गणगौर का रास्ता, सुबोध बालिका विद्यालय के सामने, जौहरी बाजार, जयपुर-३ फोन ६७१३६ पर सम्पर्क कर सकते हैं। साथ ही जो भाई-बहिन किसी को कार्य दे सकते हैं, वे भी इस समिति को बताने का कष्ट करें।

—शरद गोलेछा, मन्त्री

# शोक - श्रद्धांजलि

**मद्रास**—यहाँ के सुप्रतिष्ठित श्रावक, समाज रत्न श्री रतनचन्दजी चौरड़िया का आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, उदार हृदय, मिलनसार, विद्या रसिक, धर्म प्रेमी, समाजसेवी, अग्रणी श्रावक थे। विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं के उत्तरदायी पदों पर रहकर आपने उनका बड़ी कुशलतापूर्वक संचालन किया। आपके निधन से समाज की महत्त्वपूर्ण क्षति हुई है। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

**मद्रास**—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री सुगनचन्दजी चौरड़िया का १-९-८३ को दुःखद निधन हो गया। आप श्रद्धालु श्रावक, मधुर कंठी संगीतज्ञ, कर्मठ कार्यकर्त्ता, सफल व्यवसायी, अहिंसा प्रेमी, उदार दानी और मिलनसार व्यक्ति थे। कई धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से आप सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। मद्रास विश्वविद्यालय में जैन विभाग की स्थापना के लिए आपने बड़ी राशि का दान कर रिसर्च फाउन्डेशन फार जैनोलोजी के गठन में पहल की थी। आपके निधन से समाज की विशेष क्षति हुई है।

**रायचूर**—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री मुकनचन्दजी भण्डारी का ११-८-८३ को सन्थारापूर्वक निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, उदार हृदयी, धर्मानुरागी और विद्यारसिक थे। श्री सौभाग्यराजजी भण्डारी के आप बड़े पूज्य पिताजी थे। अपनी मातुश्री की भावना के अनुसार आपने एम० के० भण्डारी मैटरनिटी हास्पिटल स्थापित करने की भावना बताई। अपने पिता श्री कुशलराजजी के देहान्त के समय ८०,१११ रुपयों की राशि भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा घोषित की गई थी। अब आपकी स्मृति में भण्डारी ट्रस्ट ने हास्पिटल के लिए ८४,१११ रुपयों की राशि घोषित की है। आपके निधन से समाज की विशेष क्षति हुई है।

**बंगलौर**—प्रसिद्ध न्यायमूर्ति जैन धर्म दर्शन के विशिष्ट विद्वान् और बंगलौर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति श्री टी० के० तुकौल का १८ अगस्त को ७५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपके व्यक्तित्व में विद्वता और विनम्रता का अद्भुत समन्वय था। आप कई संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। दक्षिण भारत के हर विश्वविद्यालय में हिन्दी माध्यम का एक डिग्री कालेज हो, इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहे। हिन्दी शिक्षण संघ, जैन शिक्षा समिति और श्री मांगीलाल गोटावत हिन्दी जूनियर कालेज की प्रबन्ध समिति से आप विशेष रूप से जुड़े हुए थे। आपके निधन से समाज और राष्ट्र की बड़ी क्षति हुई है।

**अजमेर**—श्री जिनदत्त सूरि मण्डल के मंत्री श्री चांदमल सीपाणी का २० अगस्त को ७० वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, जैन तत्त्व ज्ञाता, कुशल लेखक और सामाजिक धार्मिक कार्यों में अग्रणी थे। आपके निधन से एक उदार समाजसेवी और साहित्य साधक की कमी हो गई है।

**धूलिया**—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक स्व. श्री भीकमचन्दजी चौधरी की धर्मपत्नी श्रीमती भिकीबाई का १८-८-८३ को ६० वर्ष की आयु में दुःखद निधन हो गया। आप आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की अनन्य श्रद्धालु श्राविका थीं।

**धनोप**—धनोप की धर्मनिष्ठ उदारचेता, सरल स्वभावी, सेवाभावी, महिला रत्न श्रीमती राजबाई लोढ़ा का १ अक्टूबर १९८३ को ८३ वर्ष की आयु में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया।

**बंगलौर**—यहाँ श्रीरामपुरम् क्षेत्र में शा० दीपचन्द जेवंतराज एण्ड कं० के श्री जेवन्तराजजी कटारिया का आकस्मिक निधन गत १७-८-८३ को ४३ वर्ष की उम्र में हो गया। राजस्थान में आप राणावास के थे।

आप धर्मप्रेमी, दानवीर सेठ स्व. श्री दीपचन्दजी कटारिया के सुपुत्र थे। आप भी अपने पिताजी की तरह विद्याप्रेमी, धर्म परायण, सवाजसेवी, अनुभवी, उदारदानी, मिलनसार, हँसमुख व उत्साही व्यक्ति थे। आपके द्वारा बहुत सद्कार्य सम्पन्न हुए।

**बावड़ी**—श्री तखतमलजी कटारिया मंत्री, जीवदया प्रेमी मण्डल, सैलाना वालों की धर्मपत्नी विजय कुंवरबाई कटारिया का निधन हो गया। आप बड़ी सेवाभावी व मृदुभाषिणी थीं। श्री तखतमलजी कटारिया ने ५४००) रुपये गौ सेवा व पक्षी-चुगा हेतु प्रदान करने की घोषणा की।

**मलकापुर** (जिला बुलडाणा, महाराष्ट्र)—यहाँ के दानी समाज प्रेरक एवं कपड़े के व्यापारी श्री नथमलजी नाहर का १७ अगस्त को दुःखद निधन हो गया। मलकापुर में महावीर भवन निर्माण के लिए आपने समाज को ८५,००० रुपये का दान किया। जिसका भूमिपूजन ३१ अगस्त को श्री जुगराजजी संचेती की अध्यक्षता में श्री भींवराजजी संचेती के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

**नागपुर**—स्वर्गीय श्री प्रेमराजजी मुणोत की धर्मपत्नी श्रीमती सिरे कंवरबाई मुणोत का १५ सितम्बर को दुःखद निधन हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की सरल हृदया महिला थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम मण्डल एवं 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि एवं परिवारजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।

—**सम्पादक**

**भोपालगढ़**—यहाँ पर सरल स्वभावी महासती श्री सायरकंवरजी म. सा. महासती श्री तेजकंवरजी म. सा. महासती श्री सोभागकंवरजी म. सा. महासती श्री शांतिप्रभाजी म. सा. ठाणा ४ सुख साता पूर्वक विराजमान हैं। महासतियाजी म. सा. के सान्निध्य में धर्म ध्यान का ठाठ लग रहा है। अब तक निम्न तपस्यायें हो चुकी हैं। १७/१, १०/१, ६/४, ८/४, ५/२, ४/४, ३/६८, २/३४ उपवास व दया का-४ मासखमण पचरंगी-६, धर्मचक्र-१, संवर पौषध-१३६५, सामयिकी-२८०००, अखण्ड शान्ति जाप-१ भाई-बहिनों में आदि तपस्याओं का तांता लग रहा है।

**सुगनचन्द कांकरिया**
मन्त्री

# साभार-प्राप्ति-स्वीकार

## "जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु०

सदस्यता संख्या

१९७८ श्री जी. सी. जैन, रायपुर (म. प्र.)
१९७९ श्रीमती विमला झोटा. बम्बई
१९८० श्री प्रतापसिंहजी सुबोधकुमारजी चोरडिया, जयपुर
१९८१ श्री बंसीलालजी भैरूलालजी चौधरी, अहमदाबाद
१९८२ श्री बाबूलालजी मोदी, जयपुर
१९८३ श्री चम्पालालजी बोथरा, मद्रास
१९८४ श्री विमलचन्दजी बाफना, भोपालगढ़ (जोधपुर)
१९८५ श्री प्रेमचन्दजी संजयकुमारजी छाजेड
१९८६ श्री शिवराजसिंहजी भण्डारी, जयपुर
१९८७ श्री राजीवकुमार पटवा, कलकत्ता
१९८८ श्री महावीरप्रसादजी श्रीमाल. जयपुर
१९८९ श्री जैन जवाहर मंडल, देशनोक (बीकानेर)
१९९० श्री सज्जनराजजी मुणोत, पीपाड सिटी (जोधपुर)
१९९१ श्री कपूरचन्दजी कुलिश, जयपुर
१९९२ श्रीमती तारा जैन, कानपुर

## "जिनवाणी" आजीवन सदस्यता विदेश ७०१) रु.

८. मिस्टर एच. सी. नवलखा, वेस्ट जर्मनी

## (भेंट एवं सहायता)

५०१) श्रीमती नैनीबाई धर्मपत्नी सेठ श्री मोहनमलजी चोरड़िया, मद्रास जिनवाणी को सहायता।

२५१) श्री सम्पतलाल एण्ड ब्रदर्स, जबलपुर, पूज्य आचार्य श्री के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

२५१) श्री कान्तिलालजी भीकचन्दजी चौधरी, धूलिया (म. रा.), माताजी श्रीमती भिकी बाई धर्मपत्नी भीकचन्दजी चौधरी का दि. १८-८-८३ को देहान्त हो जाने से स्मरणार्थ भेंट।

२५१) श्री शान्तिचन्दजी सोहनराजजी कटारिया, इन्दौर, पौत्र प्राप्ति की खुशी में भेंट।

२०१) श्री भण्डारी राजमलजी खेमराजजी, रायचूर (कर्नाटक), परम श्रद्धेय, सरलस्वभावी, उदार हृदय, धर्मानुरागी, शिक्षा प्रेमी, दानवीर सेठ श्री मुकनचन्दजी भण्डारी का आकस्मिक निधन दि. ११-८-८३ के स्मरणार्थ भेंट।

२०१) मैसर्स गोल्डविन ज्वैलर्स प्रा. लि., मछलीपट्टम, 'जिनवाणी' को सहायतार्थ भेंट।

२०१) श्री विसनचन्दजी दलपतराजजी छाजेड़, हैदराबाद, 'जिनवाणी' को सहायतार्थ भेंट।

१५१) शा. दीपचन्दजी जिवत राज एण्ड कं., बैंगलौर, श्री जिवतराजजी कटारिया का ४३ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन के स्मरणार्थ भेंट।

१५१) श्री श्रीचन्दजी सा. गोलेछा, जयपुर, सुपौत्र के तेलेकी तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

१०१) गुप्तदान, जयपुर, आचार्य श्री के आँख का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री मांगीलालजी मीठालालजी गोलेछा, गिरी, सपरिवार आचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारने की खुशी से भेंट।

५१) श्री एस. एस. जैन संघ, मद्रास, प्रातः स्मरणीय श्री १००८ श्री आचार्य प्रवर की विदुषी महासतीजी श्री मैना सुन्दरीजी ठाणा ३ के चातुर्मास में वैरागिन बहिन पूर्णिमा, सविता तथा अन्जुलता के ८ दिन की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५१) श्री प्यारेलालजी प्रेमराजजी मुणोत, नागपुर, आचार्य श्री के आँख का सफल आपरेशन होने की खुशी में भेंट।

५१) श्रीमती रूपकंवरजी, जोधपुर, अपने स्वर्गीय पति श्री नथमलजी चामड की पुण्य स्मृति में भेंट।

५१) श्रीमती रूपकंवरजी जोधपुर, अपने पौत्र निखिल, पुत्र श्री देवेन्द्रकुमार मेहता के जन्म दिवस की खुशी में भेंट।

५१) श्री शिवलालजी नवनीतलालजी, बांरा (राज.) मातु श्री मणिबेन माधवजी का ३१-८-८३ को स्वर्गवास होने की स्मृति में भेंट।

५१) श्री जौहरीलालजी बरडिया, बिशाखापट्टम, चि. राजेन्द्रकुमार बरडिया

का लग्न श्री कन्हैयालालजी हीरावत की सुपुत्री सौ. कां. कुसुम के साथ दिनांक ५ जून, ८३ को सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री श्वे. स्थानकवासी जैन संघ, रामगंजमंडी, पूज्य तपस्वी राज श्री चम्पालालजी म. सा. के सुशिष्य मधुरव्याख्यानी श्री उत्तम मुनिजी का चातुर्मास रामगंजमंडी होने की खुशी में भेंट।

५१) श्री अशोककुमारजी राजकुमारजी धारीवाल, आगरा, आचार्य श्री के दर्शनार्थ सपरिवार पधारने की खुशी में भेंट।

५१) श्री सागरमलजी कटारिया, इन्दौर, धर्मपत्नी की अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५०) श्री एम. एस, जैन संघ, रायचूर, पर्वाधिराजपर्व तप के साथ जप का भाइयों ने ५१ दिन व बाइयों ने २१ दिन का अखण्ड जाप सम्पन्न किया इस अवसर पर तपस्वियों द्वारा सप्रेम भेंट।

५०) श्री तखतमलजी कटारिया, सैलाना, धर्मपत्नी श्रीमती बज्जीबाई का स्वर्गवास १४-९-८३ को हुआ उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

३१) श्री चिमनलालजी बैद, जयपुर, चि. लक्ष्मीचन्दजी की बहू के ११ की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

२५) श्री मेहता बी. अमोलकचन्दजी अमरचन्दजी, बैंगलोर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

२१) श्री रतनलालजी नथमलजी नाहर, मलकापुर (म. रा.) श्री स्व. नथमलजी नाहर की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी हरकीबाई नाहर की ओर से भेंट।

२१) श्री कपूरचन्दजी घीसूलालजी पीपाडा, बल्लारी (कर्नाटक) कु. निर्मला पीपाडा जयपुर में अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

२१) श्री रमणलालजी कटारिया, बावडी (झाबुआ) पूज्य माताजी विजय कंवर बाई कटारिया धर्मपत्नी श्री तखतमलजी कटारिया सैलाना के दि. १४-९-८३ को स्वर्गवास होने के स्मरणार्थ भेंट।

२१) श्री जैन श्वे. स्था. संघ, कानपुर, 'जिनवाणी' को सहायता प्राप्त हुई श्री प्रेमचन्दजी लीढ़ा के द्वारा।

२१) श्री राजमलजी गौतमचन्दजी ओस्तवाल, भोपालगढ़ (जोधपुर) विवाह के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

२१) श्री पूनमचन्दजी धूपिया जैन, रायपुर (राज.) 'जिनवाणी' की सहायतार्थ भेंट।

११) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, किशनगढ़, (राज.) महासतीजी श्री चारित्र प्रभाजी के चातुर्मास में बन्धुओं तथा बहिनों की तपस्या में भेंट।

११) श्री डॉ. के. सी. जैन, जोधपुर, श्री पारसमलजी सांखला के सुपुत्र शान्तिचन्दजी के ९ उपवास के उपलक्ष में भेंट।

११) श्री मास्टर ब्रजमोहनजी जैन, लहचोड़, (हिन्डौन) पर्युषण पर्व में चार दिवस मौन रखने के उपलक्ष मैं भेंट।

११) श्री हरकचन्दजी जैन, जरखोदा, (बून्दी) अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कल्याणी बाई के अठाई की तपस्या के उपक्षल में सप्रेम भेंट।

११) श्री ब्रजमोहनजी जैन, उखलाना, (टोंक) श्रीमती नर्मदादेवी धर्मपत्नी श्री ब्रजमोहनजी की अठाई की तपस्या आचार्य श्री के सान्निध्य में होने की खुशी में भेंट।

१०) श्री धन्नालालजी जैन, रामगंजमंडी, पूज्य तपस्वीराज श्री चम्पालाल जी म. सा. सुशिष्य मधुर व्याख्यानी श्री उत्तम मुनि जी म. सा. के उपदेश से श्रीमती पुष्पाकुमारी की अठाई की तपस्या में भेंट।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

### (साहित्य प्रकाशन—आजीवन सदस्यता ५०१) रु०

स. नं.

६९. श्री डॉ. गोतमराजजी सिंघवी, जयपुर

७०. श्री नथमलजी जीवराजजी बरडिया, धूलिया

### (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल भेंट एवं सहायता)

५०१) श्री नवलखा फैमेली मेमोरियल ट्रस्ट, जयपुर

३५१) मैसर्स श्री विजयकान्त हीरालाल रुणवाल, बीजापुर (कर्नाटक) आचार्य श्री की आंख के सफल आपरेशन होने की खुशी में भेंट

१५१) श्री मीठालालजी मांगीलालजी गोलेछा, गिरी (राज.)

१०१) श्री प्यारेलालजी प्रेमराजजी मुणोत, नागपुर, श्रीमती सिरेकंवर बाई प्रेमराज मुणोत नागपुर की पुण्य स्मृति में भेंट।

१०१) मैसर्स विजयकान्त हीरालाल रुणवाल, बीजापुर, परमपूज्य पिताजी सा. श्री हीरालालजी प्रेमराजजी रुणवाल दि. ६-९-८३ को ७० वर्ष में प्रवेश किया, उस उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

## (स्वाध्याय संघ सहायता)

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल जयपुर

१००१) श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्री संघ, सवाई माधोपुर
२५१) „ श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, आलनपुर, स. माधोपुर
१५१) „ स्था. जैन श्रावक संघ, बारां (कोटा)
१०१) „ वर्धमान श्रावक संघ, देई (बून्दी)
७१) „ छीतरमलजी जैन, बजरिया, सवाई माधोपुर
६१) „ हंसराजजी रूपचन्दजी जैन, बजरिया, सवाई माधोपुर
५१) „ वर्धमान श्रावक संघ, नदबई, (भरतपुर)
३१) „ महावीरप्रसादजी जैन, एण्डवा वाले, बजरिया, स. माधोपुर
३१) „ हनुमान प्रसादजी जैन, चौथका बरवाड़ा वाले, मानटाऊन
२१) „ श्वे, स्था. जैन संघ, पचाला (टोंक)
२१) „ रामगोपालजी जैन, एण्डवा वाले, बजरिया, सवाई माधोपुर
२१) „ रामप्रसादजी जैन, अध्यापक, मानटाऊन, स. माधोपुर
२१) „ प्रभुलालजी जैन, करेला वाले, बजरियां, स. माधोपुर
२१) „ महीवीरप्रसादजी जैन, पान वाले, बजरिया, स. माधोपुर
२१) „ चौथमलजी जैन, अध्यापक, बजरिया, स. माधोपुर
२१) „ गणपतलालजी जैन, जवाहर नगर, स. माधोपुर
२१) „ महावीरप्रसादजी जैन, बैंक मैनेजर, स. माधोपुर
२१) „ महावीरप्रसादजी जैन, बीलोतावाले, बजरिया स. माधोपुर
२१) „ रामकरणजी जैन, इन्द्रा कालोनी, स. माधोपुर
२१) „ ऋद्धिचन्दजी जैन, अध्यापक, मानटाऊन, स. माधोपुर
२१) „ लल्लूलालजी जैन, बजरिया, स. माधोपुर
१५) „ शान्ताप्रसादजी जैन, इन्द्रा कालोनी, स. माधोपुर
१५) „ धनसुरेशजी जैन, बजरिया, स. माधोपुर
११) „ हरकचन्दजी जैन, जरखौदा, (बून्दी)

११) श्री श्वे. स्था. जैन संघ, सुमेरगंज मण्डी
११) „ नाथूलालजी जैन, पचाला (टोंक)
११) „ रतनलालजी जैन, एण्डवा वाले, बजरिया, स. माधोपुर
११) „ महावीरप्रसादजी जैन, लोहे वाले, बजरिया, स. माधोपुर
११) „ बाबूलालजी जैन, पटवारी, बजरिया, स. माधोपुर
११) „ हनुमानप्रसादजी जैन, जैन भोजनालय, स. माधोपुर
११) „ एल. एल. लोढा, व्याख्याता रा. महाविद्यालय, स. माधोपुर
११) „ मड्डूलालजी जैन, बजरिया, स. माधोपुर
५) „ गोपीलालजी जैन, एण्डवा वाले, बजरिया, स. माधोपुर
५) „ पूरणमलजी जैन, करेला वाले, बजरिया, स. माधोपुर
५) „ सौभागमलजी जैन, गाडोली वाले, बजरिया, स. माधोपुर
५) „ बाबूलालजी जैन, धणोली वाले, बजरिया, स. माधोपुर
५) „ रिखबचन्दजी जैन, श्यामपुरा वाले, बजरिया, स. माधोपुर
५) „ पुष्पेन्द्रकुमारजी जैन, बजरिया, स. माधोपुर

---

# ❋ अनुक्रमणिका ❋

## ☐ प्रवचन / निबन्ध ☐



## ☐ कथा / प्रसंग / सूक्ति ☐



## ☐ धारावाहिक उपन्यास ☐



## ☐ कविता ☐



## ☐ स्तम्भ ☐

# जिनवाणी

□

दिवसे दिवसे लक्खं देइ'
सुवण्णस्स खंडियं एगो ।
एगो पुण सामाइयं करेइ,
न पहुप्पए तस्स ।।

—संबोध सत्तरि १७

एक आदमी प्रतिदिन लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान करता है और दूसरा मात्र दो घड़ी की सामायिक करता है तो वह स्वर्ण मुद्राओं का दान करने वाला व्यक्ति सामायिक करने वाले की समानता प्राप्त नहीं कर सकता ।

□

**नवम्बर, १९८३**
वीर निर्वाण सं० २५१०
कार्तिक, २०४०

**वर्ष : ४० • अंक : ११**

मानद सम्पादक :
**डॉ० नरेन्द्र भानावत**, एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
**डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत**,
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
**प्रेमराज बोगावत**

संस्थापक :
श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक :
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)
फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)
फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

| | |
|---|---|
| वार्षिक सदस्यता | : १५ रु० |
| त्रिवर्षीय सदस्यता | : ४० रु० |
| आजीवन सदस्यता | : देश में २०१ रु० |
| आजीवन सदस्यता | : विदेश में ७०१ रु० |
| संरक्षक सदस्यता | : ५०१ रु० |
| स्तम्भ सदस्यता | : १००१ रु० |

मुद्रक :
**फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
जयपुर–३०२००३

**नोट** : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

प्रवचनामृत :

# साधु धर्म एक रूप, श्रावक धर्म अनेक रूप*

□ आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०

## प्रार्थना

वीरः सर्व-सुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः ।
वीरेणाभिहतः स्वकर्म-निचयो, वीराय नित्यं नमः ।।
वीरा तीर्थामिदं प्रवृत्तमतुलं-वीरस्य घोरं तपो ।
वीरे श्री धृति-कान्ति-कीर्ति-निचयो, हे वीर भद्रं दिश ।।

इस प्रार्थना में शासनपति भगवान् महावीर को नमस्कार किया गया है । आप सोचेंगे कि भगवान् महावीर प्रत्यक्ष नहीं हैं । अभी तो छोटे-मोटे साधु-साध्वी हैं, उन साधुओं को सीधा नमस्कार नहीं करके महावीर की रटन क्यों लगा रहे हैं ? इस तरह के विचार हो सकते हैं । वस्तुतः यह सोचने की बात है, सवाल आपका ठीक है, भगवान् महावीर नहीं हैं और हम महावीर को नमस्कार करते हैं । महावीर नहीं हैं क्षेत्र से, काल से और अपनी पर्याय से, तन से महावीर के रूप में नहीं हैं । क्षेत्र भारतवर्ष, काल अवसर्पिणी का चौथा आरा, भाव अरिहन्त पद, तीनों में नहीं हैं । वे सिद्ध पद पा चुके हैं । क्या बदल गया ? भाव बदल गया । अरिहन्त पद से महावीर सिद्ध पद में पहुँच गये हैं । महावीर हमारे सामने नहीं हैं लेकिन महावीर का धर्मशासन हमारे सामने है । महावीर का धर्मशासन है और महावीर द्वारा संस्थापित चतुर्विध संघ भी है । इस मूल धारा की अपेक्षा से महावीर सशरीर तो नहीं हैं । अरिहन्त पद से महावीर का भाव नहीं होने पर भी महावीर का सर्वज्ञ अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति आदि गुण अरिहन्त पद में थे, वे स्थायी गुण अब भी रखकर चलने वाली महावीर की सिद्ध आत्मा मौजूद है । जो अरिहन्त पद में अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन आदि १२ गुण थे उनमें से चार मूल गुणों की विद्यमानता अरिहन्त पद की तरह सिद्ध पद में भी मौजूद है । अतः मैंने कहा कि महावीर की वह सिद्ध

* जलगांव में २ अक्टूबर, १९८२ को दिया गया प्रवचन । श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादि

ग्रात्मा इन गुणों से सम्पन्न होने के कारण चाहे वे शरीर से हमारे सामने नहीं हैं, तब भी वे वंदन ग्रौर नमन के ग्रधिकारी हैं ।

ग्रब रही यह बात कि वर्तमान में उनका शासन चल रहा है । हम ग्राप उनके शासन के सदस्य की तरह ग्रपने आपको कहते हैं । उनका शासन चल रहा है वह गुण पर्याय वाला है ।

**धर्म ग्रौर धर्मी :**

महावीर के समय में भी धर्मशासन था ग्रौर ग्राज भी है और भविष्य में भी रहेगा । इसके साथ ही संघ शासन के हम जो चार ग्रंग हैं, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, ये धर्म का रूप धारण करने के चार ग्राधार हैं । गुण को रखने के लिये पात्र चाहिये । धर्म को रखने के लिए धर्मी रूपी पात्र चाहिये । जीव रूप धर्मी में धर्म रह सकता है । बिना पात्र के घी नहीं रह सकता, जल नहीं रह सकता, इसी तरह से बिना धर्मी के धर्म नहीं रह सकता । इसलिये कहा गया कि धर्म को रखने के लिए धर्मी की ग्रावश्यकता है । धर्म की ग्रलग हिफाजत करने की ग्रावश्यकता नहीं है । धर्मी की हिफाजत करने की ग्रावश्यकता है । यदि धर्मी-जन की हिफाजत की जायगी तो धर्म की सुरक्षा स्वतः हो जायगी ।

**साधु धर्म–एक रूप, श्रावक धर्म–ग्रनेक रूप :**

ग्रब हम चार विभागों को दो विभागों में कर लेते हैं, एक साधु ग्रौर एक श्रावक । साधु के साथ साध्वी उपलक्षण से ग्रा जाती है और श्रावक के साथ श्राविका उपलक्षण से ग्रा जाती है । इस तरह से चतुर्विध संघ दो विभागों में ग्रा जाता है । इनमें से धर्मी श्रमण या धर्मी अणगार का धर्म एक रूप में है ग्रौर श्रावक धर्म ग्रनेक रूप में हैं । मैं क्या कह रहा हूं ग्रापके समझ में आ रहा है या नहीं ? धमनियाँ खुली रखेंगे अथवा सावधानी रखेंगे तो समझ में ग्रा सकता है ।

सामान्य रूप से साधु धर्म एक रूप में कहा गया है ग्रौर सामान्य श्रावक धर्म अनेक रूप में है । विशेष की तो बात ही क्या है । आप जल्दी में पूरी बात समझ नहीं पाये होंगे । इस तरफ ख्याल कीजिये ।

साधु धर्म सामान्यतः एक रूप में कैसे है ? एक बच्चा साधु है, एक बूढ़ा साधु है, एक बीमार साधु है, एक नीरोग साधु है । इन चारों कैटेगरीज के साधुओं के लिए पंच महाव्रत का पालन करना ग्रनिवार्य है । मेरे लिए जैसे पंच महाव्रत का पालन करना जरूरी है उसी तरह से क्या मेरे छोटे साधुओं के लिए पंच महाव्रत का पालन करना जरूरी नहीं है? क्या मेरे बीमार साधु-साध्वियों के

लिए पंच महाव्रत का पालन करना जरूरी नहीं है ? पंच महाव्रतों का पालन करना सब के लिए जरूरी है। इसमें कहीं खाने-पीने में महाव्रत के खिलाफ सचित वस्तु जैसे फल-फूल, भोग-उपभोग आदि का उपयोग क्या इसमें चल सकता है ? नहीं चल सकता। इसलिए मैंने कहा कि सामान्यत: एकरूपता आवश्यक है।

मैं आपसे पूरा ध्यान रखने की अपेक्षा करता हूं। अभी तक आपका ध्यान पूरा जमा नहीं है। फिर भी कई बातें समय के साथ ही कही गई हैं। अभी साढे दस बजने में समय बाकी है। आपका मन मेरी ओर लगा रहेगा तो बात समझ में आयेगी और आनन्द आयगा वरना समय पूरा करना पड़ेगा। समय ही पूरा नहीं करूं, मैं भी ध्यान से कहूँ और आप भी ध्यान से सुनें तो अच्छा उपयोग होगा।

सामान्यत: साधु धर्म एक रूप में है। आपका श्रावक धर्म सामान्यत: अनेक रूप में है। बच्चा, जवान, बूढ़ा, रोगी, नीरोगी, अमीर, गरीब, सेठ, मंझला दुकानदार इन सब में श्रावक धर्म के पांच अणुव्रत पालन करने में समानता नहीं है। पांच अणुव्रत पालन करने में समानता की बात तो दूर रही, क्या आपने सामायिक करना तो सब के लिए कंपलसरी रखा है ? अमीर भी सामायिक करे, गरीब भी करे, हजारपति भी करे, लखपति और करोड़पति भी करे, नौकरी वाला भी सामायिक करे, सेठानी करें, माताएँ करें, बहिनें करें, बालक और बच्चियाँ भी करें। ऐसा है या नहीं ? यदि नहीं है तो आपके श्रावक धर्म में और हमारे अणगार धर्म में क्या फर्क हुआ ? हमारे यहां साधु १०-१२ वर्ष का है, नवदीक्षित है, अभी तक एक संवत्सरी भी उसने नहीं की है तो संवत्सरी का समय आयेगा तब बड़े साधुओं की तरह वह लुंचन कराने बैठेगा। दया-दुहाई की बात नहीं कही जायगी, इसको तकलीफ होगी, अभी इसको छोड़ दें ऐसा नहीं कहा जायगा। यह साधु के रूप में एकरूपता हुई।

पंच महाव्रत के साथ जो कुछ भी मौलिक धर्म है, उसमें समानता है। ढाई हजार वर्ष बीते लेकिन साधु-साध्वियों के व्यवहार, आचार में भेद और फेरफार नहीं हुआ। लेकिन हमारे गृहस्थ समाज ने हमारे श्रावक समाज ने, हमारे भक्त समाज ने ढाई हजार वर्षों के इस अन्तराल में अपने श्रावक धर्म में एकरूपता नहीं होने का गलत फायदा उठाया। मैं 'गलत' शब्द काम में ले रहा हूं। कंपलसरी सामायिक करने की तो बात ही क्या है लेकिन जहां तक नमस्कार मंत्र का जाप करने की बात है, यह भी कंपलसरी नहीं है। सेठ साहब हो या श्रीमंत घराने की सेठानी हो, नवकार मंत्र के बारे में उनसे पूछें तो कहेंगे कि टाइम मिले तो गिन लेवें, टाइम नहीं मिले तो नहीं गिनें।

कहाँ हमारा उपासक धर्म और कहाँ हमारे पुराने जमाने के श्रावक और कहाँ आज के श्रावक। 'भगवती सूत्र' में खुलकर पुराने श्रावकों का वर्णन आया है। एक-एक का इतिहास मिलता है, एक-एक का आदर्श रूप मिलता है। उन श्रावकों का नियम, आचार और जीवन को देखकर मन गद्गद् होता है। वे श्रावक कोई छोटे-मोटे दुकानदार नहीं थे, पैसा बनाने वाले नहीं थे। लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति उनके यहां खेल रही थी, लक्ष्मी जिनके यहां खेल रही थी ऐसे सेठ, ऐसी विशिष्ट योग्यता वाले व्यक्तियों का वर्णन आता है।

क्या ही उत्तम उनके आदर्श गुणों का वर्णन है। आपके चंचल मन को देखकर वह बात भी पूरी निकलती-निकलती रह जाती है। मैं पुनः पुनः आपसे कहता हूं, चाहता तो यह हूँ कि आधा पौन घण्टा तक आप लोग मन लगा कर सुनें तो कुछ बातें आपके पल्ले पड़ें। यहां आने से पहिले मैंने सोचा कि आज आश्विन की पूर्णिमा होने जा रही है। आज चतुर्दशी की पखी पूरी हो जायगी। आश्विन मास पूरा हो जायगा। इस दिन श्रावक-श्राविकाएँ अष्ट प्रहरी षौषध करके जीवन की आलोचना करते हैं। आज वह दिन है। मैंने सोचा कि मैं भी जाऊँ भक्तों के बीच में और उनको याद दिलाऊँ कि तुम्हारे जीवन का आदर्श क्या है, इस स्मृति को ताजा करो। इस विचार से आपके बीच में आ गया और सोचने लगा कि आपको इतिहास की झांकी कराऊँ।

**श्रावक की श्रद्धा में फर्क नहीं :**

एक ओर तो आपका वह श्रावक था जो मगध देश के पूरे राज्य सम्बन्धी बहीवट करता था। वह कौन था? अभयकुमार। जिनका पिता था राजराजेश्वर श्रेणिक जो पूरे मगध देश पर शासन करता था। पिता-पुत्र के बीच में श्रावक धर्म की साधना में अन्तर है। इसलिये मैंने कह दिया कि श्रावक धर्म अनेक रूपा है और साधु धर्म जो है वह एक रूप है। यह छोटा सा भेद आप याद रखें। लेकिन इस कैटेगरी में भी यह ध्यान जरूरी है कि श्रावक धर्म के अनेक रूप व्रत आदि में भले ही हो सकते हैं लेकिन श्रद्धा की अपेक्षा से श्रावक के अनेक रूप नहीं हो सकते। पूरी बात याद है या नहीं? चाहे आनन्द जैसा श्रावक हो, शंख पोखली जैसे श्रावक हों, चाहे अभयकुमार और श्रेणिक जैसे राजपुरुष हों, क्या इनकी श्रद्धा में फर्क है या एकसी है? अभयकुमार और श्रेणिक की श्रद्धा में फर्क है क्या? नहीं।

आपका मन अभी तक अनुकूल नहीं हो रहा है। मुझे अपना वक्तव्य जल्दी समेट लेना चाहिये, लेकिन जो विषय छिड़ गया है, उसे समझने का प्रयत्न करें। मैं जरा स्पष्ट करूंगा।

अभयकुमार सामायिक और पौषध करने वाला था और महाराज श्रेणिक नवकारसी भी करने वाले नहीं थे। पिता-पुत्र के व्रत में भेद हो गया। लेकिन राजा श्रेणिक श्रद्धा में उतना ही मजबूत है, उतना ही चुस्त है कि यदि देवता भी आ जाय तो नहीं डिगे। देवता उसको डिगाने के लिए आ भी गये, देवों ने कई बार श्रेणिक को धर्म से डिगाने का प्रयत्न किया, लेकिन राजा श्रेणिक अपने देव, गुरु और धर्म की मान्यता से तिल तुश मात्र भी विचलित नहीं हुआ। तो अभयकुमार और श्रेणिक की श्रद्धा में फर्क नहीं हुआ। अभयकुमार ने भगवान् के शासन पर आंच नहीं आने दी, उसकी रक्षा के लिए अभयकुमार निकल जाय, गति करे और श्रेणिक क्या आराम से बैठा रहे? श्रेणिक ने क्या-क्या किया, उसके लिए हमारे जिनशासन का इतिहास स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है, उसे आप भी 'अंतगढ़ सूत्र' में पढ़ें, 'ज्ञाता धर्म कथा' में पढ़ें।

जहां वर्णन आता है श्रेणिक का, आप ताज्जुब करेंगे। आपके पास तो छोटा-मोटा व्यापारिक प्रतिष्ठान होगा, कहीं देश-विदेश में व्यापार फैल जायेगा तो कहेंगे कि महाराज इस समय तो धर्म-आराधना करने की, शासन की सेवा करने और स्वाध्याय करने का हमको अवकाश नहीं मिल सका। इस बारे में निरन्तर हम लोगों का अनुभव है, छोटा-मोटा नियम कराने का समय आता है तो भक्त लोग कहते हैं कि बापजी माला फेरने रो नियम तो करलूं लेकिन गाँव परगांव जाऊं तो छूट होनी चाहिये। जब माला के लिए भी छूट चाहते हैं तो व्रत, उपवास, पौषध की छूट तो पहले चाहेंगे। यह आप लोगों की कायरता है या वीरता है? आप इससे बचने का ख्याल रखें। यदि आपने समझ लिया है और ध्यान में ले लिया है तो इस कायरता को निकाल कर फेंक दें। यदि ऐसा साहस करेंगे तो मैं आपके प्रति विशेष प्रमोद करूंगा।

पुण्य और पाप के फल के स्वरूप छोटी-मोटी तकलीफ हो जाने से, छोटा-मोटा सुख-दुःख होता है उसमें गुमराह नहीं होना चाहिये। शुभ कर्मों का फल सुख के रूप में होता है और अशुभ कर्मों का फल दुःख रूप में होता है। प्रतिकूल सामग्री से दुःख आया है तो जैसे आया है वैसे ही चला जायेगा। आया हुआ सुख नहीं रहा तो दुःख कैसे रहेगा? अच्छे श्रद्धालु श्रावक सुख बढ़ जाने पर उन्मत्त नहीं होते वैसे ही दुःख से घबराते भी नहीं। वे कहते हैं कि आया हुआ सुख नहीं ठहरा तो दुःख कैसे ठहरेगा? सुख आया और चला गया वैसे ही दुःख आया है तो यह भी चला जायगा। यह हमारे श्रावकों का आदर्श होता है और उसी माफिक शिक्षा होती है। श्रावक एकरूप नहीं हो सकते क्योंकि देश, काल एवं निजकी परिस्थिति, मनोबल की मंदता-प्रबलता की दृष्टि से यदि व्रत में एकरूप नहीं हो सकते तो कम से कम श्रद्धा में तो एकरूप होते ही हैं।

**चार प्रकार के धर्मी :**

'स्थानांग सूत्र' के चौथे ठाणे में चौभंगी रखी है :—

'पियधम्मे नामेगे नो दढ़धम्मे, दढ़धम्मे नामेगे नो पियधम्मे ।
एगे पियधम्मे वि दढ़धम्मे वि, एगे नो पियधम्मे नो दढ़धम्मे ।।

अर्थात् पुरुष चार प्रकार के हैं। एक पुरुष वह है जिसे धर्म प्रिय है किन्तु वह धर्म में दृढ़ नहीं है। एक वह जो धर्म में दृढ़ है किन्तु उसे धर्म प्रिय नहीं है। एक वह जिसे धर्म प्रिय भी है और वह धर्म में दृढ़ भी है। एक वह जिसे धर्म प्रिय नहीं है और न वह उसमें दृढ़ है।

उन्होंने कहा कि धर्म चार प्रकार का होता है। एक तो वह है जहां महाराज को देखा तो तबियत हरी हो गई। महाराज के चरण पकड़ कर बैठ जाय, बापजी आपरी झोली पूजनीय है, पांव दबावे, हाथ दबावे, पांवों में माथा रगड़े। कई माताओं को देखा है कि जिस जमीन पर गुरुजी के पांव पड़े हैं, वहां से रेत उठाकर माथे पर लगाती हैं। श्रद्धा ऊँची है। यदि उसके समान उनका मन धर्म में रंगा हुआ हो तो कितनी जल्दी वे संसार की इस दरिया को पार कर सकती हैं। लेकिन शास्त्र कहता है कि ऐसे लोग मौका पड़ने पर स्वार्थ त्याग नहीं कर सकते। कुटुम्ब कबीले से अलग नहीं हो सकते। कभी मौका पड़ने पर सुदर्शनकुमार की तरह भगवान् के दर्शन करने के लिए जाने को कहा जाय तो बापजी देश, काल के अनुकूल वातावरण नहीं है। सामायिक करने की बात मत करीजो। पजूषण आवेला जब सारी कसर निकाल देवालां, अबार तो मत्थेण वंदामि। ऐसे व्यक्ति प्रिय धर्मी हैं या दृढ़ धर्मी ?

**१. प्रिय धर्मी :**

प्रिय धर्मी वह है जो धर्म गुरुओं से स्नेह करता है। धर्मी भाई आवे तो हजारों रुपये उनके आगत-स्वागत में खर्च कर देगा। धर्मी भाई को बड़े संतों की सेवा में लगा देगा। लेकिन काम-धंधा छोड़कर सेवा में लगने का मौका आवे, शरीर पर आंच आने का मौका आवे तो दूर भाग जायगा। राजकीय कठिन परिस्थिति में झूंजने का मौका आवे तो माई का लाल नजर नहीं आयेगा। लाखों में एक दो व्यक्ति अच्छे निकल जायें तो बात अलग है। ऐसा व्यक्ति प्रिय धर्मी है।

**२. दृढ़ धर्मी :**

दृढ़ धर्मी वह है जो स्वयं भी धर्म पर दृढ़ है और दूसरों को भी दृढ़ करता है। वह रोज-रोज दर्शनों के लिए दरवाजे पर नहीं पहुँचता, लेकिन जब

कभी किसी सगे-सम्बन्धी के बीमार होने की सूचना मिलती है, सद्गुरु के बीमारी का टाइम है, संघ पर संकट का वक्त है, किसी श्रद्धालु भाई के तकलीफ का मौका है तो ऐसे समय में वह उनके पास स्वतः ही पहुँच जायगा और कहेगा कि भाई, मैं स्वयं महीने भर से बीमार हूं परन्तु तुम्हारी बीमारी के समाचार सुनकर नहीं रह सका। मेरे लायक सेवा-सहयोग की बात हो तो बतावो। मैं तुम्हारा भाई हूं। मेरे से तुम भेद मत करो, परहेज मत करो। मुझे भी लाभ मिले और तुम्हें भी धर्म हो। जो दूसरों की तकलीफ के बारे में सुनकर घर से बाहर निकले। वैसे सद्गुरुओं के पास भी रोज नहीं आता लेकिन तकलीफ के समय दूर नहीं रहे बल्कि गर्दन हथेली पर रखने का मौका आ जाय तो दूर नहीं रहता। ऐसे व्यक्ति को कहते हैं दृढ़ धर्मी।

संसार में कुछ लड़के होते हैं जो माँ-बाप के पास रोज आकर पांवों में धोक देते हैं। लेकिन जब कठिन समय आता है, पिताजी का ऋण चुकाने का मौका आता है तो कहता है कि मेरे बड़े भाई हैं, उनके पास जाओ, पिताजी की जायदाद का ज्यादा हिस्सा उनको मिला है वे चुकायेंगे। ऐसे मामलों को आप लोग मुझ से ज्यादा जानते हो। मैं भुक्तभोगी नहीं हूं। लेकिन आप अनुभव कर सकते हैं। इसी तरह कठिन वक्त में गांठ की वस्तु निकाल कर देने वाले, पिता, पितामह व बुढ़िया माँ की सेवा में दुकानदारी छोड़कर लग जायें, ऐसी नजीरें कितनी मिलेंगी ?

### ३. प्रिय धर्मी और दृढ़ धर्मी :

इसी तरह धर्म पक्ष में प्रिय-धर्मी और दृढ़ धर्मी की बात आपको बताई। तीसरे नम्बर में वह माई का लाल है जो प्रिय धर्मी भी है और दृढ़ धर्मी भी है। आनन्द, कामदेव, शंख, पोखली की तरह और अरणक श्रावक की तरह। सुबह से शाम तक श्रावक धर्म का कर्त्तव्य करता है। हजारों लोगों को साथ लेकर व्यापार के लिए देश-विदेश में जाना है तो सोचता है कि अकेला क्यों जाऊँ, अकेला पेट भरने की क्रिया तो कौआ, कुत्ता भी करता है। मैं पुण्यशाली हूं, सब तरह की सामग्री मेरे पास है। कमाने के लिए बाहर जा रहा हूं तो अन्य साथियों को भी साथ लेकर जाऊँ, वह घोषणा करवाता है कि मैं कमाई करने के लिए विदेश जा रहा हूं। जिन्हें भी चलना हो, वे मेरे साथ चलें सबके रहने, भोजन आदि की सारी व्यवस्था मैं करूंगा। उनको काम धन्धे में लगाऊँगा। काम धन्धे के लिए धन की कमी है तो उसकी पूर्ति भी मैं करूंगा और वापसी में अपने साथ लेकर आऊँगा। जो भी चलना चाहें, मेरे साथ चलें।

आप लोगों के पूर्वज भी राजस्थान-मारवाड़ छोड़कर कमाई करने के लिए दक्षिण प्रान्तों में गये, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि स्थानों पर आये। यहां

आकर मेहनत-मजदूरी करके कुछ पैसा कमाया। दूसरों को भी साथ लेकर आये, ऐसा कितना नमूना बता सकते हैं ? आज के जमाने में इस तरह की मुफ्त व्यवस्था हो तो काम धन्धा करने वाले, उसके साथ जाने वाले कितने लोग तैयार हो जावें। अरणक श्रावक व्यापार के लिए विदेश जा रहा था, साथ में अन्य भी कई लोग थे। जब वह समुद्र के बीच में पहुँचा तो एक देव ने उसकी श्रद्धा की परीक्षा करने की ठानी। वह दैत्य के रूप में आया और कहने लगा कि तुम देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा रखने वाले हो, कह दो कि यह धर्म सच्चा नहीं है। अगर ऐसा कहते हो तो मैं तुम्हें छोड़ देता हूं वरना तुम्हारे जहाज को समुद्र में डुबा दूंगा। तुम और तुम्हारे साथी सभी डूब जाओगे। ऐसे मौके पर श्रद्धा को कायम रखने वाले कितने मिलेंगे ?

आप लोगों में से भी ऐसे लोग हुए होंगे जो मारवाड़ से दिसावर आते समय कुछ दूसरे लोगों को भी साथ लेकर आये होंगे यह समझकर कि पर धरती पर जार्या हाँ, न मालूम कैसो मौको आ जावे, साथी री जरूरत पड़ जावे। ए आंपारे साथे चालर्या है तो थोड़ी मदद आपां भी करद्यालां। वक्त जरूरत पर काम ही आवेला। ऐसा सोचकर साथ में लाने वालों के कुछ नमूने मिल जायेंगे। इसमें थोड़ी स्वार्थ की भावना है और थोड़ी परमार्थ की भावना है। महाजन का बेटा खुद ठगीजे नहीं। लेकिन अपने स्वार्थ के साथ सामाजिक लोगों को कुछ सहयोग मिले, इतनी श्रद्धा भावना रखने वाले कम मिलेंगे। अपने जीवन को खतरे में डालकर धर्म पर श्रद्धा रखने वाले लोग भी मिल जायेंगे वे दृढ़ धर्मी हैं। अरणक और कामदेव की नजीर आप तीसरे नम्बर पर लेंगे—दृढ़ धर्मी और प्रिय धर्मी।

**४. न प्रिय धर्मी न दृढ़ धर्मी :**

चौथे नम्बर में वे हैं जो न तो प्रिय धर्मी हैं और न दृढ़ धर्मी हैं। वे कहेंगे कि मैं तो धर्म स्थान पर पर्युषण रे दिनां में जावां और नमस्कार करल्यां। समाज रो कितनो उत्थान हुयो आ बात तो वे लोग जाणै जिण रै कन्धे पर समाज रो भार है यानी जो मंत्री है या प्रेसीडेन्ट हैं, वे जाणे उणां रो काम जाणे। इस तरह की स्थिति आपको ज्यादातर गांवों में, नगरों में और संघों में मिलेंगी। इस चढ़ते-बढ़ते इतिहास में समाज में धर्म प्रेमियों की, समाज में आत्मीयता की भावना रखने वालों की और समाज व धर्म के प्रति कर्त्तव्य भावना रखने वालों की जानकारी आपको इतिहास के पन्नों से मिलेगी। एक-एक परम्परा को पकड़ें। जैसे श्रेणिक ने पकड़ी थी कि मैं शासन सेवा करूंगा, सामायिक नहीं कर सकता। अभयकुमार ने कहा था कि मैं शासन सेवा भी करूंगा और व्रत-नियम की परम्परा भी निभाऊँगा। आनन्द ने यह परम्परा पकड़ी कि मैं शासन

सेवा लम्बी-चौड़ी नहीं कर सकता लेकिन मैं अपना आत्म-कल्याण करूंगा, आस-पास में रहने वालों की सहायता करूंगा, लेकिन छोटे दायरे में करूंगा और अपने जीवन की स्थिति को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूंगा।

मैं थोड़े में तीन विभाग करता हूँ। एक विभाग तो श्रेणिक की तरह खुले रूप में कोई छल-कपट करने की आवश्यकता नहीं। उसने कहा कि सामायिक वगैरा धार्मिक क्रिया नहीं होगी लेकिन शासन सेवा, चतुर्विध संघ की सेवा करने के लिए मैं तन से, मन से और धन से तैयार हूँ। यदि मेरा लड़का चाहता है तो मैं उसको धर्म-मार्ग पर लगाने को तैयार हूँ। यदि मेरी लड़की त्याग-वैराग्य का रास्ता पकड़ती है तो मैं उसके लिए भी तैयार हूँ।

आपको ख्याल करना चाहिये कि आप के पास तो क्या धन्धा है और कौनसी बड़ी पोस्ट पर हैं जो आपको धार्मिक क्रिया के लिए थोड़ा भी समय निकालना मुश्किल हो रहा है ? श्रेणिक और दूसरे बड़े-बड़े श्रावकों के मुकाबले में आपके पास क्या काम धन्धा है ? मैं आपसे पूछूं कि आपके घर पर आपका जंवाई आवे तो क्या आप घर से बाहर नहीं निकलोगे या यह कहोगे कि आज तबियत अलील है, जुकाम लग रहा है। कँवरसाहब आपके यहां पहलो बार आये हैं, उनको यहां के दर्शनीय स्थल देखने के लिए जाना है और आपको धन्धे के आगे फुरसत नहीं है तो क्या आप यह कहोगे कि कँवरसाहब गाड़ी ले जावो, मैं आपके साथ आदमी भेज देता हूँ। वह आपको सब दिखलायेगा। आप भले ही कन्याकुमारी देख आओ। कँवरसाहब अपने मन में क्या सोचेंगे ? किसी को पूछने की आवश्यकता नहीं है। आप अपने मन में विचार करें।

**वीतराग के चरणों में विश्वास हो :**

जिनशासन के रसिक जिस-जिस योग्यता वाले भाई-बहिन हैं वे तीन विभागों में विभक्त हो सकते हैं। अपनी-अपनी तैयारी ईमानदारी से करते रहें तो भी जिन शासन की सेवा कुछ कर सकते हैं। जिन शासन के सिद्धान्त घर-घर में पहुँचाकर जैन समाज को कल्याण के रास्ते पर लगाने वाले हो सकते हैं।

समय पूरा हो रहा है। मैं अपनी बात को अधिक नहीं कहकर छोटी सी उक्ति कहकर समाप्त करने का प्रयत्न करूंगा :—

अगर जिन देव के चरणों में, तेरा ध्यान हो जाता।
तो इस संसार सागर से, तेरा उद्धार हो जाता॥
न होती जगत में ख्वारी, न बढ़ती कर्म बीमारी।
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता॥

अनुभव रखने वाले सन्त ने अपनी वाणी में कहा कि वीतराग मार्ग की आराधना करना बहुत बड़ी बात है। यदि वीतराग के चरणों में तेरा विश्वास ही रह जाय तो मानव निश्चय समझ कि तेरा दुःख दूर होना, कोई मुश्किल बात नहीं है। जिन देव के चरणों में जाकर इस संसार-सागर से हजारों नहीं, अनन्त जीव गति कर चुके हैं। भविष्य में भी अनन्त जीव तिर जायेंगे। जिन देव के चरण की सेवा अमर दवा है, अमर औषधि है, जिससे इस जन्म काल में ही जन्म रोग मिट जायेगा। इसके द्वारा हजारों, लाखों लोगों का जीवन पवित्र हो चुका है। इस जड़ी बूंटी का आप स्वयं सेवन करें, दूसरों को सेवन करावें, मार्ग पर लगावें।

पहला श्रेणिक स्वयं व्रत नहीं करता था लेकिन शासन सेवा करता था। दूसरी श्रेणी में अभयकुमार को रखा जा सकता है जो शासन सेवा भी करता था और व्रत तपस्या भी करता था। महीने में ६ दिन उपवास करता था। ६ दिन न भी हो पावे तो महीने में ४ दिन अष्टमी और चतुर्दशी को तो व्रत रखता ही था। लेकिन वीतराग मार्ग के उपासक श्रावक-श्राविकाएँ आठम, चवदश और पखी के ६ दिन व्रत नियम करते हैं। तीसरी श्रेणी में वे श्रावक कहे गये हैं जो रोजाना तो व्रत, नियम नहीं करते लेकिन चतुर्विध संघ की खुले मन से सेवा करते हैं। आप भी इन सब बातों पर चिन्तन करके तन योग, मन योग और काया योग से शासन सेवा और धर्म सेवा में लगेंगे तो आपको इस लोक और परलोक में शान्ति प्राप्त होगी, और कल्याण होगा।

## आत्मा की पवित्रता

□ श्री मनोज आंचलिया 'टोनी'

स्वामी रामकृष्ण परमहंस अपने पास हमेशा एक पीतल का चमचमाता हुआ लोटा रखते थे। वे उसको हमेशा पूजा करने से पहले मांजा करते थे। उस लोटे को वे कभी भी प्रयोग में नहीं लेते थे परन्तु उसे रोज साफ करते थे।

यह देखकर उनके एक शिष्य ने इसका कारण पूछा तो वे मुस्करा कर बोले—"यह लोटा मैं इसलिए साफ रखता हूँ ताकि उस पर धूल न जम पाए। उसी तरह तुम्हें भी अपनी आत्मा साफ रखनी चाहिये अर्थात् आत्मा को हमेशा मांजना चाहिए तभी तुम अपने मन, वचन और कर्म से पवित्र रह सकते हो।"

—११६, देवाली, उदयपुर–३१३००१

उद्‌बोधन :

# गुणों की आराधना करें !*

□ पं० र० श्री हीरामुनि

[आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के विद्वान् शिष्य]

संसार के भवचक्र का अन्त करने वाले, अनन्त-अनन्त कर्मों के समूह हटाकर ज्ञान और क्रिया के माध्यम से अनन्त शान्ति प्राप्त करने वाले वीतराग भगवन्तों तथा जिन्होंने अनन्त करुणा द्वारा दल-दल में फंसे लोगों को जीवन निर्माण की राह पर लगाया, ज्ञान का प्रकाश देकर श्रद्धान का बल दिलाया, ऐसे उपकारी आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के बाद।

वीतराग वाणी में जिन-जिन महापुरुषों ने जीवन-निर्माण किया और साधना के पथ पर लगकर शान्ति का स्रोत प्राप्त किया, ऐसे महापुरुषों का वर्णन 'विपाक सूत्र' के माध्यम से किया गया है। यही बात 'स्थानांग सूत्र' के माध्यम से भी चार प्रकार के पुत्रों के माध्यम से कही जा रही है, जिसका सूत्र कई दिनों से आपके सामने कहा जा रहा है।

**चार प्रकार के पुत्र :**

चार तरह के पुत्र हुए—अतिजात, अनुजात, अपजात और कुलिंगार। वंश, ऋद्धि, सम्पदा, सौजन्यता और आत्मिक गुणों की वृद्धि करने वाला अतिजात है तो गुणों की समानता रखने वाला, गौरव, सम्पत्ति की मूल पूंजी को कायम रखने वाला अनुजात कहा जाता है। अपजात वे हैं जो इस सम्पदा में से बैठे-बैठे खाते हैं लेकिन उसको बढ़ाने का साधन नहीं करते। प्राचीन सम्पदा, यश, कीर्ति इकट्ठा नहीं करने से वह अपजात के नाम से कहलाता है।

कुछ पुत्र ऐसे हैं जो घर में, कुल में अंगारे की तरह उत्पन्न होते हैं। फैली हुई आग जैसे खाना बनाने के काम आने के बजाय, सर्दी को मिटाने के काम आने के बजाय कभी फैल जाती है तो मर्यादा नहीं रख पाती है तो वह आग सामान, सम्पत्ति आदि को जलाकर राख कर देती है, उसी तरह संसार में कुछ

*जलगाँव में ३० सितम्बर, १९८२ को दिया गया प्रवचन। श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

पुत्र भी ऐसे होते हैं जो नियम, मर्यादा, नीति और सिद्धान्त-पालन के अनुरूप चलने के बजाय उन सिद्धान्तों को अंगार पर रख देते हैं। उनका कहना होता है कि—

'लीक-लीक गाड़ी चले, लीक ही चले कपूत ।
तीन लीक पर ना चले, सायर, सिंह, सपूत ।।'

उनमें विचक्षण करामात होती है। वे प्राचीन सिद्धान्तों पर नहीं चलते। वे कहते हैं कि प्राचीन नियमों पर, सिद्धान्तों पर चलना उनका काम है जिनमें हौसला नहीं है, जिन्होंने बुद्धि-बल, सम्पत्ति बल नहीं पाया है, वे पिताजी जैसा कहते हैं, वैसा करते रहते हैं। हर समय, हर बात पिताजी की मानकर चलना कपूतों का काम है, सपूतों का काम नहीं। ऐसे भी कहीं काम होता है। इसलिये 'शठे शाठ्यम् समाचरेत' की तरह मर्यादा का उल्लंघन करके चलते हैं। नतीजा यह होता है कि उनमें स्वयं बुद्धिबल है नहीं और बुजुर्गों की बात को मानना अपमान समझते हैं। नतीजा यह होता है कि वे घर में अंगारे की तरह आग लगाते हैं और विनाश करने वाले बन जाते हैं।

शास्त्रों में ऐसे दृष्टान्तों की कमी नहीं है। भले ही उन दृष्टान्तों में रावण को लिया जाय, भले ही कौरव पुत्रों को लिया जाय, भले ही मणिरथ को लिया जाय, जिसको भी लिया जाय, ये सब एक सी समान दृष्टि वाले हैं। पिताजी और बड़ों की बात मानने के बजाय अपने अहंकार में आते हैं और एक दिन ऐसा आता है कि उनका पता ही नहीं चलता। ऐसे पुत्रों को कुलिंगार कहते हैं।

ऐसे ही एक पुत्र के जीवन की झांकी आपके सामने चल रही है। श्रेणिक के माध्यम से जहां अतिजात पुत्र का वर्णन किया जा रहा है वहां राजा प्रसेनजित के पुत्र ऐसे हैं जो अपजात के नाम से कहे जा सकते हैं। उनमें बुद्धि-बल, शक्ति-बल आदि ऐसे नहीं हैं जिनके सहारे राज्य का संचालन कर सकें। उनमें से एक पुत्र भिल्लराज की पुत्री से उत्पन्न हुआ, जिसका नाम है चिलाती कुमार। वह माता के समान गुणों वाला था। शक्ल से काला था तो उसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। हर काली चीज खराब नहीं हुआ करती है। कुछ लोग बाहरी रूप रंग का देखकर ही चौंक जाते हैं, भीतर की ओर देखने की चेष्टा नहीं करते। उनका ध्यान सिर्फ चमड़ी की ओर होता है, भीतर के गुणों की ओर नहीं होता, इसलिए कभी ऐसा होता है कि वे ठगा जाते हैं।

**रंग नहीं, गुण देखें :**

काली कस्तूरी भी होती है लेकिन कोयले जैसी नहीं होती। कोयला

काला है, कस्तूरी भी काली है। लेकिन क्या काला रंग होने से कोयला और कस्तूरी एक भाव वाले हैं ?

प्राचीन जमाने में कहा जाता था कि इंजिन काला होता है और डिब्बे गोरे हैं। पचास गोरे डिब्बों को इकट्ठा कर दिया जाय, आगे काला इंजिन नहीं लगे तो कौन से गांव और नगर में पहुँचेंगे ?

इसी तरह संसार को देखने के लिए कालिख चाहिए। आँख की कीकी काली के बजाय गोरी हो जाय तो क्या नजर आवे ? बाल काले से गोरे हो जावें तो शायद मेरा ख्याल है कि मसाला लगाना पड़ेगा। इसी तरह हर काली वस्तुएँ खराब नहीं हुआ करती हैं। शास्त्रकारों का कथन है कि बाहर का वर्ण काला है लेकिन भीतर की तरफ देखें और मन गोरा है, उजला है तो काली चीज भी अच्छी है। मन काला है तो बाहर से चमड़ी गोरी होने पर किसी काम की नहीं। जो बाहर से काला है और भीतर से भी काला है, ऐसे व्यक्ति को शास्त्रकारों ने निम्नकोटि का बताया है।

भीतरी गौर गुण प्राणियों में उपादेय होता है। वे बाहर से काले से काले होने पर भी तरक्की के पद पर बैठा दिये जाते हैं। केकैयी के वचनबद्ध हो जाने पर भरत के लिए राज्यपद मांगा जाता है। इसी तरह भिल्लराज से वचनबद्ध होने के कारण चिलातीकुमार को राज्य की गद्दी पर बैठा दिया जाता है। रिश्वतखोर, लालची, अपने तन, मन पर काबू नहीं रखने वाला चिलातीकुमार जब से राज्य का काम सम्भालने लगता है, तब से प्रजा दुःखी हो जाती है। आजकिसी के साथ छेड़खानी है तो कल किसो के शोल पर आक्रमण करता है। परसों किसी व्यापारी पर आफत है। प्रजा दुःखी होती है। अचानक एक दिन पाप प्रगट होने लगता है। त्राहि-त्राहि करतो हुई प्रजा ने राजा प्रसेनजित से निवेदन किया कि राजन् इसके बजाय तो आप बूढ़े राजा हो अच्छे थे। हमें इस वर्तमान राजा से छुटकारा दिला दीजिये। राजा प्रसेनजित भी जान रहा था कि मैंने जो कार्य किया है, वह अच्छा नहीं है। अयोग्य को योग्य करार देना, यह भी एक भयंकर भूल है।

सवारी के काम में घोड़ा आता है, हाथी भी आता है। ये दोनों ही आपके स्नेही हैं। इसी तरह से धोबी के पास भी एक घोड़ा होता है जो उसका स्नेही होता है। उसको भी वह कभी-कभी सवारी के काम में लेता है। अब यदि वह यह कहे कि असली घोड़े के बजाय मेरे घोड़े (गधे) को सवारी के काम में लिया जाय तो यह कैसी बात होगी ?

इसी तरह जब अयोग्य व्यक्ति को उत्तरदायित्व वाला कारोबार सम्भलाते

हैं तो वह अपने खानदान, गांव और देश के नाम को डुबा देता है। हमारे यहां प्राचीन कहावत है कि 'एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।' एक-एक करके इज्जत बनती है और एक-एक करके इज्जत जाती है।

**संस्कार निर्माण :**

मैंने बचपन में प्राचीन कथा भाग से एक बात श्रवण की थी, उसका ख्याल आता है इसलिए आपके सामने बयान कर देता हूँ। कभी हिन्दुस्तान का व्यक्ति अमेरिका गया। वह विद्वान था, सदाचारी था, सज्जन था और देश का गौरव था। ऐसा एक व्यक्ति अमेरिका गया और वहां जाकर ही नहीं रहा लेकिन उसने वहां के लोगों पर अच्छी प्रतिष्ठा स्थापित की। उनके नाम का खुलासा करूं तो स्वामी विवेकानन्द के नाम से कह सकते हैं। एक 'बिन्दु' विषय देकर बोलने के लिए कहा गया। कहा जाता है कि घंटों उस पर बोलते रहे और सारे देखने, सुनने वाले देखते रह गये और जहां तक पढ़ा हुआ स्मरण आता है कि सुन्दरता और वेशभूषा में अभिमान करने वाले एक व्यक्ति ने विवेकानन्द पर हास्य करते हुए कहा कि आप जैसा विद्वान् और ऐसी वेशभूषा? यह बेमेल योग कैसे मिला? खुली धोती, ऊपर दुपट्टा, शरीर को खिलाने वाला एक भी वस्त्र नहीं है, क्या हिन्दुस्तान के लोग ऐसे ही रहते हैं? उसको जो जवाब दिया स्वामी विवेकानन्द ने मुझे आज भी वह उत्तर इतना प्रिय और इतना अच्छा लगता है कि यदि सुनने के साथ आचरण में लिया जाय तो कहना ही क्या? उन्होंने उस व्यक्ति से कहा कि भाई, **तुम्हारे यहां संस्कार-निर्माण तुम्हारा दर्जी करता है, मेरे यहां संस्कारों का निर्माण मेरे गुरु करते हैं।** भारतीय संस्कृति बाहरी वेशभूषा पर इतना महत्त्व नहीं देती है जितना महत्त्व सादगी, शील और सदाचार को देती है। जिस बात का भारतवर्ष में महत्त्व है, वह बात इन बढ़िया कपड़े पहनने वालों में नहीं आ सकती।

**इज्जत का बनाव-बिगाड़ :**

मैं कह रहा हूँ कि स्वामी विवेकानन्द भी अमेरिका गये, उसी तरह एक दूसरे भारतीय भी अमेरिका गये। वे अमेरिका की लाइब्रेरी में एक पुस्तक पढ़ रहे थे कि पढ़ते-पढ़ते उनके मन में न मालूम कैसा लोभ आया कि उस पुस्तक में से उन्होंने एक अच्छा चित्र या फोटो निकाल लिया। वापिस किताब जमा कराते समय वहां के अधिकारी ने चित्रों की सम्भाल की तो एक चित्र गायब पाया। खोज करने पर वह चित्र उसी भारतीय के पास मिला। नतीजा यह हुआ कि उस राजकीय लाइब्रेरी के बोर्ड पर एक नोटिस लगा दिया गया कि हिन्दुस्तानी चोर होते हैं, इसलिये उनको पढ़ने के लिए पुस्तक न दी जाय।

एक व्यक्ति ने अमेरिका जाकर हिन्दुस्तान की इज्जत, शील और संस्कार

को जागृत किया तो दूसरे व्यक्ति ने वहां पहुँचकर सब पर पानी फेर दिया। व्यक्ति एक ही है। पहले जाने वाला भी एक ही व्यक्ति था और बाद में जाने वाला भी एक ही व्यक्ति था, लेकिन एक ने इज्जत बनाई और दूसरे ने बिगाड़ी।

इसी तरह राजा प्रसेनजित के राज्य की भी यही हालत होती है। श्रेणिक को देखकर वहां के प्रजाजन जितने आश्वस्त थे, जितने आदर्श भावना वाले थे, अचानक श्रेणिक के चले जाने पर और चिलाती के राजा बननें पर वहाँ की सारी व्यवस्था भंग हो जाती है।

आप भी अपने-अपने मन में चिन्तन करना कि राजघराने में और श्रेष्ठि घराने में जन्म लेना ही श्रेयस्कर है या संस्कार पाना और उसको कायम रखना श्रेयस्कर है? श्रेष्ठि से ऊँचे घराने में चले जाइये, उत्तराध्ययन सूत्र में तीर्थेश के शब्द याद आते हैं। वहां कहा गया है कि न शरीर की महिमा है और न जाति व कुल की महिमा है। यदि महिमा है तो जीवन में सदाचरण और तप की है। अच्छे आचरण वाला है तो आदरणीय है। यदि श्रेष्ठि के घर में या राजमहल में जन्म पाया है लेकिन खराब आदत वाला है, खराब गुण वाला है तो उसका कोई महत्त्व नहीं है।

चिलातीकुमार ने कहां जन्म पाया है? जिसके पिता रक्षक हैं, जिसके ९९ भाई काम कर रहे हैं इस पर भी अपने ही घर में उसकी निन्दा हो रही है। और श्रेणिक अपना घर छोड़कर निकला है। वह क्या कर रहा है? अपनी बुद्धि से, चतुराई से और अपनी शुभ्र, तीव्र पुण्यवानी से वह जहां भी गया है वहां उसका मंगल कार्य हो रहा है।

श्रेणिक कहां पहुँचा है, शायद आपको याद होगा? कुमारी नन्दा की दासी द्वारा बुलाये जाने पर ताड़ वृक्ष और कीचड़ की बात को ख्याल में लेकर कुमारी नन्दा के घर के पास पहुँचा। अपनी युक्ति से मकान के किनारे पर पहुँचा। वहां उसकी बुद्धि की परीक्षा हुई। गिलास में थोड़ा सा जल दिया गया पैर धोने के लिए। नगर में पानी की कमी नहीं थी। देने वाले में धर्म की आस्था नहीं जगी है कि पानी काम में कम लेना चाहिये। लेकिन मूल दृष्टि क्या है? समझा जा रहा है कि रूप वाला, ज्ञान वाला, शील वाला अपने-अपने स्थान पर पूजा जाता है लेकिन बुद्धि वाला जहां भी जाता है वहां पर पूजा जाता है। यदि व्यक्ति बुद्धि वाला है, शील सम्पन्न है, ज्ञान सम्पन्न है तो वह जहां जायेगा वहां पूजा जायगा।

आपको क्या चाहिये? हवेली चाहिये, धन का ढेर चाहिये या शील और संस्कार चाहिये? श्रेणिक के जोवन को आप ख्याल में लें।

**श्रेणिक की परीक्षा :**

श्रेणिक नन्दा के घर में पहुँचा । एक दासी नाखून भिगोकर कुछ तेल की बूँदे लाई और उन्हें पानी से भरी बाल्टी में डालकर बाल्टी उसके सामने रखदी और श्रेणिक से कहा कि मालिश कर लीजिये और स्नान कर लीजिये । कुछ घटनाएँ कथा भी भाग में मिलती हैं जिन्हें आपके समक्ष रख रहा हूँ ।

चार बूंद तेल की पानी में डाली गई और कहा गया कि इससे मालिश करना और पानी से स्नान करना । यह कैसे सम्भव है ? लेकिन उसने सोचा कि भेजने वाला भी चतुराई वाला है तो लेने वाला भी कम चतुराई वाला नहीं । तेल की वे चार बूंदे पानी पर छा गई थी जिसे मारवाड़ी में तिरवारी कहते हैं । चिकनाहट वाला पदार्थ पानी पर छा गया और फैल गया । स्नान करने पर उसका कुछ अंश शरीर पर भी आया । स्नान करके भोजन किया और श्रेणिक सेठ इन्द्रदत्त के साथ उसकी दुकान पर आकर बैठ गया ।

आज एक रूढ़िवाद की बात आपके सामने कहने जा रहा हूँ । कभी मैंने कहा था कि पुण्यशाली जीव जहां कहीं भी बैठते हैं वहां उनका बैठना भी निरर्थक नहीं जाता । पक्षियों में भी, पशुओं में भी और तिर्यंच में भी ऐसा पुण्यबल पाया जाता है । यदि उनका आगमन या पगछेड़ा घर में हो जाय ऋद्धि सिद्धि से भंडार भर देता है । तो क्या यह मान लिया जाय कि लक्ष्मी उनके सहारे ही आई है, हमारा कोई भाग्य है ही नहीं ? उन्हीं का है । शास्त्रों ने ऐसा नहीं कहा है । शास्त्र यह कहते हैं कि हमारे भाग्य का और पुण्य का उदय होता है तभी हमें दूसरों से सहायता और लाभ मिलता है ।

श्रेणिक के सेठ की दुकान पर बैठने के पश्चात् रोज की तरह आज इक्का दुक्का ही ग्राहक नहीं आया बल्कि दुकान पर ग्राहकों की भीड़ लग गई । जिन व्यापारियों को कभी उधार में सामान दिया था या उधार पैसा दिया था या तो वे मांगने पर भी नहीं देते थे, पर आज वे बिना मांगे पैसा जमा कराने के लिये आने लगे । माल खरीदने वालों की संख्या भी और दिनों की अपेक्षा आज बहुत अधिक बढ़ गई । माल में भी तेजी आ गई । सेठ कहने लगा कि मैंने आज साल भर की कमाई एक दिन में करली ।

संयोग की बात है कि निकम्मा बैठकर भारभूत बनने की बजाय राजघराने में जन्मा हुआ राज पुत्र सेठ के पास आया । ग्राहकों की विशेष स्थिति देखकर वह सेठ का सहायक बनता है । सेठ माल दिये जा रहा है और श्रेणिक बांध-बांधकर ग्राहकों को दे रहा है । क्या समझकर ? राजपुत्र समझकर नहीं । लेकिन जब हम महाजन समाज की बात को स्मरण करते हैं तो यहां तक सुनने

में आता है कि कलम दवात साफ करना, गद्दियों को ठीक करना, दुकान में झाड़ू लगाना आदि हमारा काम नहीं है। मैं ये काम करने के लिए थोड़े ही आया हूं। ऐसी नौकरी मुझे नहीं चाहिये, मैं अपने घर में बैठा ही खा लूंगा।

मैं कहता हूँ कि काम छोटा होता है या मन छोटा होता है? मेहनत का कोई काम, पुरुषार्थ करके खाना यह किसी काम के लिए हल्का नहीं है। लेकिन मांग कर खाना, कर्जा करके खाना या उधार लेकर खाना, घर की रकम बेचकर खाना मंजूर है लेकिन काम करना मंजूर नहीं है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो प्रबल पुण्यशाली होते हैं जिनके यहां किसी चीज की कमी नहीं होती। तो कभी ऐसा मौका भी आता है कि जिनके यहां करोड़ों की सम्पत्ति होती है, सौ-सौ मुनीम उनके यहां काम करने वाले होते हैं लेकिन जब पुण्य की पूंजी खलास हो जाने पर खुद मोहताज हो जाते हैं और दूसरों के यहां स्वयं नौकरी करने पर मजबूर हो जाते हैं।

अयोध्या के नरेश जिनके यहां दो चार या सौ पचास की क्या बात करूँ, सैंकड़ों की तादाद में काम करने वाले होते थे, वे राजा हरिश्चन्द्र भंगी के यहां बिक गये। किसलिये? अपनी सत्यता-धर्म रखने के लिये। उन्हीं सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की महारानी तारामती एक ब्राह्मण के यहां बिककर उसकी दासी बनकर रही जो कि स्वयं हजारों दासियों को रखने वाली थी।

राजा बड़ा है या ५, १० आदमियों को रखने वाला सेठ बड़ा है? मैं क्या कह रहा हूँ कि पुरुषार्थ करना, मेहनत करना, अपनी परिस्थिति को समझ कर देखकर काम करना विज्ञ पुरुष का काम है। जैसा समय है, जैसी स्थिति है, उसके अनुसार अपने को बना लीजिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो दुःख पायेंगे।

श्रेणिक राजघराने का पुरुष होते हुए भी सेठ का सहयोगी बनता है। उसके सहयोग के कारण सेठ को एक दिन में ही साल भर होवे जितनी इनकम हुई। सेठ इन्द्रदत्त ने घर पहुँचकर अपनी पुत्री नन्दा के सामने श्रेणिक की प्रशंसा करते हुए कहा कि बेटी जैसा तू सोचती है, जैसा स्वप्न है, लगता है कि हमारे भाग्य खुल गये हैं। यह आगन्तुक मात्र रूपवाला ही नहीं है, मात्र बुद्धि का धनी ही नहीं है परन्तु भाग्यशाली है। इसके मात्र दुकान पर बैठने से ही आज साल भर की कमाई हुई है। इसलिये बेटी मेरी एक बात का ख्याल रखना। यह अतिथि अपने यहां आया है, इसको अपने यहां ही रखना है, यह घर छोड़कर नहीं जावे इसलिये इसके आतिथ्य-सत्कार में किसी प्रकार की कमी नहीं आनी चाहिये।

यह तो वही बात हुई 'मन में भाया, वैद्य ने बताया", मीठा खाने की

इच्छा है, जीभ ललचाई है और वैद्यजी यह कहदें कि आप में शुगर की कमी है, इसलिये मिठाई खाया करें। अपने मन में इच्छा है और वैद्यजी ने वही बात कह दी या बता दी। इसी तरह नन्दा श्रेणिक के रूप-गुण से आकृष्ट थी फिर पिताजी ने कह दिया कि यह मेहमान घर से नहीं जाना चाहिये, इसलिए उसने आतिथ्य सत्कार में कोई कमी नहीं रखी। पिताजी को व्यापार के कारण फुरसत नहीं थी। उसने सोचा कि पिताजी को स्वप्न आया था कि तेरे साथ आगन्तुक का सम्बन्ध कर दिया है। जो व्यक्ति जीवन-साथी बनने वाला है वह कहां का है, किस कुल का है पूछना चाहिये। बुद्धिशाली नन्दा ने श्रेणिक से अनेक प्रकार के प्रश्न किये, जानकारी करने की कोशिश की लेकिन श्रेणिक भी नहले पर दहले की तरह ऐसा उत्तर देता कि समाधान भी हो जाता और उसको पता ही नहीं चलने दिया कि वह है कौन ?

आखिर नन्दा ने नई तरकीब निकाली। टेढ़े-मेढ़े मोतियों की माला, उसके सामने रखी और कहा कि बहुत कोशिश करने के बाद भी मैं इन मोतियों का पिरो नहीं पा रही हूं। क्या आप इस छोटे से काम में मेरी मदद करेंगे? सीधे और सहज रूप में कभी-कभी गुप्त से गुप्त बात भी प्रगट हो जाती है। सहज भाषा में अचानक कोई बात पूछी जाती है तो सच्ची बात मुँह से निकल जाती है। एक बालक के पिताजी के यहां मांगने वाला आया तो पिताजी ने उस बालक से कहा कि बेटा बाहर जाकर उस व्यक्ति से कहदे कि पिताजी घर पर नहीं हैं। वह बालक नीचे आया, दरवाजा खोलकर उस व्यक्ति से कहा कि पिताजी कह रहे हैं कि बेटा इनसे कह दे कि पिताजी घर पर नहीं हैं। उसको यह पता नहीं था कि क्या कहना चाहिये, कैसे कहना चाहिये, मेरे कहने से भेद खुल जायगा। सहज भाषा में बात प्रगट हो गई।

श्रेणिक के सामने नन्दा ने जब काम रखा तो श्रेणिक ने कहा कि मदद करना हमारा धर्म है। इतना सुनते ही नन्दा को पता चल गया कि यह निश्चय ही राजपुरुष है। श्रेणिक ने मोती पिरोने की कोशिश की लेकिन डोरा टेढ़े मोती के सुराख में जा ही नहीं रहा था। तब उसने एक तरकीब की। डोरे के सिरे पर गुड़ लगाकर मोती के एक छेद में डोरे को अटका कर या लगाकर कीड़ीनगरे के पास रख दिया। रास्ता नहीं मिलने के कारण चींटी ने डोरे को पकड़कर उस मोती की सुराख में से पार कर दिया। श्रेणिक ने डोरा खींचकर मोती पिरो दिया। उसने मोती क्या पिरोया, नन्दा का मन पिरो दिया। नन्दा ने एहसास कर लिया कि मेरा भाग्य कमजोर नहीं है।

कुछ दिन रहने के पश्चात् श्रेणिक ने सेठ इन्द्रदत्त से कहा कि सेठजी आपके यहां रहते हुए मुझे कई दिन हो गये हैं और मेहमान के लिए कहावत है

कि 'एक दिन का पावणा, दूसरे दिन का पई, तीसरे दिन रहता है तो अक्ल कठे गई।' मेहमान एक दिन या दो दिन रहता है। और यदि वह ज्यादा दिन टिक जाता है तो उसके सत्कार-सम्मान में भी अन्तर पड़ जाता है। सेठ कुछ कहे उससे पहले ही श्रेणिक ने कहा कि अब मेरी इच्छा है कि अतिथि पद से मुक्त होकर अन्यत्र जाऊँ। ज्यादा पहचान नहीं होने पर भी आपने मुझे इतने दिन यहां रखा, स्वागत-सत्कार किया, इसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। मैं अपना भाग्य आजमाने के लिए निकला था। अब मुझे आप विदा दीजिये ताकि प्रस्थान करदूँ।

सेठ ने कहा कि भाग्यशाली पुरुष सबसे पहले तो तुमने मेरे साथ रिश्ता कायम किया। तुमसे पहली बार मिलने के साथ ही तुमने कहा था कि मामा कहां जा रहे हो? जब तुम मेरे भाणजे हो तो घर छोड़कर कहां जा रहे हो। मां का ही घर नहीं होता है, मामा का भी घर होता है। नीति तो यहाँ तक कहती है कि 'मरो मां जीयो मासी'। घर से भी दूसरे का घर अच्छा होता है लेकिन मैं तो आपको घर जँवाई बनाकर यहां पर रखना चाहता हूँ। श्रेणिक ने सुना लेकिन लोभी प्राणी नहीं था। ऐसा नहीं था कि रंग-रूप देखकर फिसल जाय। उसने कहा कि सेठ जिसके कुल का, घराने का पता नहीं, ऐसे के साथ अपनी पुत्री का सम्बन्ध करना बुद्धिमत्ता नहीं है। नीति की कहावत है कि 'पानी पीना छानकर और सगा याने रिश्ता करना जानकर।' बिना जाने-पहचाने पुत्री को दे देना योग्य नहीं है। जब आप मेरे ही बारे में जानते नहीं तो सम्बन्ध करने की बात आपको नहीं करनी चाहिये। सेठ बोला कि क्या जानना चाहिये? चमड़ी जाननी चाहिये या धन जानना चाहिये या घराना जानना चाहिये? जिन-जिन बातों की जानकारी करनी चाहिये, वह करली। मैं आपके रूप से, बुद्धिमत्ता से, शालीनता से, खानदान को बिना देखे परिचित हूँ। मैं जो कह रहा हूँ वह बात ठीक है। शर्त यही है कि आप जैसे योग्य व्यक्ति के लिए मेरा घराना योग्य नहीं है तो मना करदें। लेकिन मैंने जानने में कसर नहीं रखी है।

जब अपने ऊपर बात आने लगी तब श्रेणिक ने उनकी बात स्वीकार करली।

इस तरह घर से बाहर निकाले गये श्रेणिक को नया घर बसाने को मिल गया। सम्बन्ध हुआ और नन्दा के साथ सेठ इन्द्रदत्त के घर में बेनातट पर रहने लगा।

**पुण्यशाली जीव की विशेषता :**

एक बात और है जहां तक पुण्यशाली जीव रहते हैं तब तक आनन्द ह

आनन्द रहता है और जहां से वह चला जाता है वहाँ संकट खड़ा हो जाता है। श्रेणिक जहाँ-जहाँ गया है वहाँ उसने सम्मान पाया है। लेकिन उसके जाने के बाद प्रसेनजित के राज्य की जनता चिलातीकुमार के अत्याचार के कारण त्राहि-त्राहि कर रही है। राजा प्रसेनजित श्रेणिक को किस तरह अपने यहाँ पुनः बुलाने का प्रयत्न करेगा और किस तरह नई राजधानी राजगृह का निर्माण किया जायगा, इस विषय में समय आने पर कहा जायगा। अभी तो श्रेणिक की बात यहीं पर समाप्त कर देता हूँ। श्रेणिक एक से दो हो गया है। शास्त्रकार कहते हैं कि दो पग से चौपगा होता है तो जानवर होता है। अब तक दो पैर थे। दो पैर और हो गये तो क्या हो गया ? चौपगा हो गया।

**गुणों की आराधना :**

लेकिन चार पगवाला ही नहीं हुआ चार हाथ वाला भी हो गया। चार हाथवाला होता है तो विष्णु बन जाता है, देवता बन जाता है। गुणों की तारीफ कैसे होती है। आप यह मन में सोचना कि आप चार पैर वाले हैं या चार हाथ वाले हैं ? यदि हमारे मन में मात्र भोग की सामग्री, रूप-लावण्य की चाह बढ़ी है तो कहना चाहिये कि हम चार पैर वाले जानवर बन गये हैं। और क्या बनना है ? यदि देवता बनना है तो गुणों की वृद्धि कीजिये। पहले एक थे, अब दो बन गये। सहायक मिला, काम करने के लिये और धर्मभावना के लिए भी। यदि नीचे गिरना चाहते हैं तो चार पांव वाले बनेंगे। आपको बनना क्या है, यह आपके हाथ में है और कहना मेरे हाथ में है। अपने मन में सोचकर गुणों की आराधना करेंगे तो शान्ति और आनन्द प्राप्त होगा।

---

**गीतिका :**

# ज्ञान की निर्मल ज्योति जली

□ श्री राजमल पवैया

ज्ञान की निर्मल ज्योति जली।
तत्त्व प्रतीति होत ही सगरी, मिथ्या बुद्धि टली ॥
ज्ञान की० ॥१॥
अनंतानुबंधी की माया में, निज सुमति छली।
दृष्टि बदलते ही प्रभु मेरी, दिशा आज बदली ॥
ज्ञान की० ॥२॥
निज परिणति रस पान करत ही, मन की खिली कली।
मिथ्या भ्रान्ति मिटी क्षण भर में, जो थी सदा पली ॥
ज्ञान की० ॥३॥

४४, इब्राहीमपुरा, भोपाल (म०प्र०)

लोक कथा :

# ज्ञान की चार बातें*

□ श्री धन्ना मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के शिष्य]

बहुत पुराने समय की बात है। भरतक्षेत्र में चम्पापुरी नाम की एक विशाल और समृद्ध नगरी थी। अरिमर्दन राजा के विस्तृत राज्य की वह राजधानी थी। अरिमर्दन बड़ा नेक, धार्मिक वृत्तिवाला प्रजापालक राजा था। उसके शासन में प्रजा अत्यन्त प्रसन्न थी और समृद्धि के शिखर पर थी।

चम्पापुरी के पास ही एक गांव था। वहाँ एक धनाढ्य धनपति व्यापारी रहता था। उसका व्यापार बड़ा विस्तृत था। अपार सम्पत्ति का वह स्वामी था। सभी प्रकार के धन वैभव का वह सुखपूर्वक उपभोग कर रहा था। पर उसे एक दु:ख भी था, जिसके कारण वह सुख के इतने विस्तीर्ण साधनों का उपभोग भी नहीं कर पा रहा था। दु:ख इस बात का था कि वह नि:सन्तान था। सेठजी फिर भी अपने मन को समझा बुझाकर इस दु:ख को हल्का कर लेते थे। किन्तु सेठानी रात दिन चिन्ता मग्न रहती थी। आर्त्त ध्यान करती रहती थी—कि मैंने यह नरतन व्यर्थ गँवाया। मैं बाँझ रह गई। मैं एक भी पुत्र को जन्म नहीं दे सकी। इस स्थिति में उन सेठ दम्पति के कई वर्ष व्यतीत हो गये।

अन्त में सेठानी ने सोचा कि इस तरह आर्त्तध्यान से कर्म बन्धन करना मूर्खता होगी। क्यों न धर्म ध्यान में शेष जीवन बिताया जाय। भाग्य में ही जब पुत्र प्राप्ति नहीं लिखी तो केवल आर्त्तध्यान करने से क्या लाभ। यह सोचकर सेठानी ने अपने को धर्मध्यान में तल्लीन कर लिया। उसका समय धर्म ध्यान में बीतने लगा।

इधर सेठजी का व्यापार चूँकि विदेशों में ही चलता था इसलिये वे अधिकतर विदेशों में ही भ्रमण करते रहते थे। तीन-चार महीने वर्षा ऋतु में घर आ जाते थे। चार मास गांव में ही बिताकर फिर परदेश चले जाते थे।

*श्री प्रशान्त कर्णावट द्वारा संकलित-सम्पादित।

संयोग से उस गाँव में एक ठाकुर साहब रहते थे। ठाकुर अच्छे सम्पन्न जागीरदार थे। राजसभा में भी उनकी अच्छी पहुँच थी। वे सेठ सा० के भी मित्र बन गये। गाँव में दोनों को कोई काम नहीं था अतः दोनों आपस में बैठकर गाँव-नगर सम्बन्धी बातों में अपना समय बिताते थे। ठाकुर साहब और सेठजी में इस तरह काफी घनिष्ठता हो गई। विदेश से लौटकर जब सेठजी घर आते थे तो अधिकतर ठाकुर सा० के साथ रहते थे एवं विदेश आदि की इधर-उधर की बातें करते रहते थे। ठाकुर सा० खाने-पीने के शौकीन थे। सेठ सा० उनके लिये तरह-तरह की मिठाइयाँ लाना नहीं भूलते थे।

ठाकुर साहब को एक बुरा व्यसन और लग गया था। मिठाइयाँ खाने के अतिरिक्त वे शराब के बड़े शौकीन बन गये। होते-होते जुआ की लत भी उनको लग गई। शराब के अत्यधिक व्यसनी होने के कारण उनको असाध्य बीमारियों ने घेर लिया।

डाक्टर, हकीम, वैद्यों से और बहुत से गाँवों के जानकार लोगों से इलाज करवाया पर कोई असर किसी औषधि का इस बीमारी में नहीं पड़ा। उनकी स्थिति दिन भर दिन गिरती गई। उनकी बीमारी के दिनों में सेठजी अधिकतर उनकी सेवा में ही अपना समय बिताते थे।

अपना अन्त समय निकट जानकर ठाकुर सा० ने अपने अनन्य मित्र सेठ जी से कहा—"सेठ सा० मेरा अन्त समय आ गया है, ऐसा मुझे लग रहा है। मैं अब कुछ क्षणों का मेहमान हूँ। मेरी अन्तिम इच्छा यह है कि मेरा पुत्र है, वह बहुत छोटा है अभी। मेरे बाद उसकी सार-सम्भाल करने वाला कोई नहीं है। उसकी सार सम्भाल आप करना। मैं उसे आपके भरोसे छोड़ कर जा रहा हूँ। आप मुझे विश्वास दिलावें ताकि मैं अपनी अन्तिम साँस शान्ति से ले सकूँ।" सेठजी ने हर तरह से सान्त्वना देते हुए उस बच्चे के पूरी तरह से लालन-पालन का भार अपने पर लिया। मैं उसे अपने पुत्रवत् रखूँगा। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें और अन्त समय में प्रभु का स्मरण करें। सेठ सा० के वचनों से ठाकुर सा० को बड़ी शान्ति मिली और अपने इष्ट देव का स्मरण करते-करते अपनी इहलीला समाप्त की।

सेठ सा० आठ वर्ष के उस अबोध बालक को अपने घर ले गये। सेठ और सेठानी ने बड़े प्रेम के साथ उसका लालन-पालन किया। सेठ सा० ने उसके अध्ययन की भी अच्छी व्यवस्था कर दी। लड़का कुशाग्र बुद्धि था। दत्तचित्त होकर उसने विद्याध्ययन करना प्रारम्भ किया।

संयोग की बात कि सेठजी को अपने व्यापार में घाटे पर घाटा लगना प्रारम्भ हो गया और एक दिन ऐसा आ गया कि उनको खाने-पीने के भी लाले

पड़ने लगे। फिर भी सेठजी ने साहस और धीरज नहीं छोड़ा। सोचने लगे कि यह तो मेरे अशुभ कर्मों का उदय है। मुझे ही इसे शान्ति से सहन करना है। सब दिन एक से नहीं होते। मेरे वे दिन नहीं रहें तो ये दिन भी नहीं रहेंगे। ऐसा शुभ चिन्तन करते हुए अपने इष्टदेव का स्मरण करने में वे तल्लीन रहते।

एक दिन सेठजी ने अपनी पत्नी से कहा कि "जो होना हुआ, वह तो हो गया। इस तरह से हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से भी कुछ होने वाला नहीं है। मेरा विचार है कि मैं फिर विदेश जाऊँ और कोई नया व्यापार प्रारम्भ करूँ और इस तरह से अपने भाग्य को एक बार फिर आजमाऊँ। मुझे विश्वास है कि इस बार भाग्य साथ देगा।"

सेठ पत्नी ने कहा—"आपका सोचना अति उत्तम है। पर एक बात है। मैं आपको अकेला अब विदेश नहीं जाने दूंगी।

सेठजी ने भी सोचा कि यह अच्छा ही है। एक से दो भले। ऐसा सोचकर सेठ और सेठ पत्नी ने निर्णय लिया कि और किस को साथ लिया जाय। भूपतसिंह अपने ही पुत्र के समान है। बालक अवश्य है पर क्या किया जाय? विदेश जाने से उसको भी कुछ जानने-सीखने का ही अवसर मिलेगा। पीछे घर पर रहकर भी क्या करेगा? अतः उसे ही साथ लिया जाय।

बालक भूपतसिंह को पूछा। बाल सुलभ जिज्ञासा थी उसमें। वह यही चाहता था। तुरन्त सेठजी के साथ विदेश जाने के लिये राजी हो गया।

'घर कूंचा घर मंजला' करते-करते सेठजी अपने पुत्र भूपतसिंह के साथ चलते रहे। एक दिन ऐसा हुआ कि उनको शाम होने को आई पर कोई आरामदायक विश्राम स्थल नहीं मिला। वे थक कर चूर-चूर हो गये कि इतने में ही उनको एक झोंपड़े में दूर दीपक जलता हुआ दिखाई दिया। वे उसी को लक्ष्य कर वहां पहुँचे।

वह एक किसी गरीब ब्राह्मण की झोंपड़ी थी। ब्राह्मण ने उनकी बड़ी आवभगत की। जो कुछ उसके पास रूखा-सूखा था वह अपने अतिथि को उसने दिया और इस तरह बड़े प्रेम से उनको खिलाया-पिलाया। रात्रि को सोने के समय ब्राह्मण ने कहा कि आप चाहो तो मेरे यहाँ विश्राम करो रात भर या चाहो तो यहाँ से थोड़ी सी दूरी पर एक सन्त महात्मा का प्रवचन हो रहा है, वहाँ जाओ और उनके प्रवचन सुनकर वहीं रात्रि विश्राम भी कर लो। रात्रि विश्राम की व्यवस्था मेरे यहाँ से भी वहाँ ज्यादा अच्छी है।

सेठजी ने सन्त के प्रवचन सुनने की इच्छा प्रकट की। बालक भूपतसिंह को भी इच्छा हुई। ब्राह्मण स्वयं उनके साथ उन सन्त के प्रवचन स्थान तक गया।

सन्त के आश्रम में उन्होंने सन्त के प्रवचन सुने। प्रवचन समाप्ति के बाद सेठजी अपने पुत्र सहित सन्त के चरण स्पर्श हेतु पहुँचे। सन्त ने उनसे पूछा—"भक्त, आप कौन हैं? और कहाँ से आये हैं? और कहाँ जावेंगे?"

सेठजी ने विनयपूर्वक निवेदन किया—"महात्मन्, भाग्य ही मुझे इधर ले आया है। मैं चम्पापुरी के निकट एक ग्राम का रहने वाला हूँ। पहले मेरा विदेशों में अच्छा व्यापार चलता था। अच्छा सम्पन्न व्यापारी था। पर दुर्भाग्यवशात् व्यापार में घाटा लग गया और बड़ी विपन्नावस्था में आ गया। अब फिर अपने भाग्य को आजमाने के लिये व्यापार हेतु अपने इस पुत्र को साथ लेकर विदेश के लिये घर से निकला हूँ और आज भूला भटका आपके पास पहुँच गया हूँ।"

सन्त ने बालक भूपतसिंह की तरफ देखा और सेठजी से कहा—"सेठजी, यह तो आपका बालक नहीं हो सकता।"

यह सुनकर सेठ ने अपने मन में सोचा कि ये सन्त पहुँचे हुए ज्ञानी, ध्यानी और भूत-भविष्य के जानकार मालूम होते हैं। बड़ो विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर प्रकट में सेठजी ने सन्त से निवेदन किया—"महात्मन्, आप तो अन्तर्यामी हैं। आप सब जानते हैं। आपसे क्या छिपा है।" और यह कहकर सेठ ने अपना और उस बालक का सारा पिछला हाल कह सुनाया।

सन्त बोले—"सेठजी, इस बालक के शारीरिक लक्षण और इसका उन्नत भाल यह स्पष्ट बता रहे हैं कि बहुत शीघ्र ही यह किसी बड़े राज्य का अधिपति बनेगा।'

सेठ ने और बालक भूपतसिंह ने रात्रि विश्राम सन्त के आश्रम में किया। प्रातः होने पर जब सन्त से विदा होने लगे तो सन्त ने चार बातों का ध्यान रखने की सलाह दी और आशीर्वादपूर्वक उनको वहाँ से विदा किया। चार बातें जो सन्त ने बताईं, वे इस प्रकार थीं :—

(१) छोटा व्यक्ति अगर अपने पुरुषार्थ से या भाग्यवशात् बड़ा बन जावे तो उसे बड़ा समझ कर वैसा ही उसके साथ बर्ताव करना।

(२) किसी का कोई गुप्त भेद कभी किसी पर प्रकट नहीं करना।

(३) कितनी भी जल्दी क्यों न हो तथापि अगर कोई भोजन के लिये निमन्त्रित करे तो उसका निमन्त्रण नहीं ठुकराना।

(४) जहाँ अधिक शत्रु एकत्रित हो जायें अथवा कोई सबल शत्रु प्रकट हो जाय तो वहाँ नहीं ठहरना या रहना।

सन्त की इन चारों बातों को गाँठ बांधकर और अच्छी तरह हृदयंगम करके सेठ सा० अपने बालक भूपतसिंह के साथ वहाँ से प्रस्थित हुए और चलते चलते कुछ दिनों में वे एक बड़े नगर में पहुँचे।

नगर के बाहर बगीचे में वे ठहरे। सेठ सा० को बड़ी भूख लग रही थी। अपने पुत्र बालक भूपतसिंह से वे बोले—"पुत्र! ऐसा करो कि खाना बनाने में तो समय लगेगा। इस बीच थोड़े भुने हुए चने बाजार से ले आओ ताकि उनको ही चबाकर तात्कालिक भूख तो कुछ शान्त की जा सके। तुम चने लाओ तब तक मैं विश्राम कर लेता हूँ।"

भूपतसिंह अपने धर्मपिता के लिये चने लाने बाजार की तरफ निकला। संयोग की बात कि उन्हीं दिनों वहाँ के राजा का देहान्त हो गया था। वह निःसन्तान था अतः उनका दाह संस्कार तब तक वहाँ के रिवाज के हिसाब से नहीं किया जा सकता था जब तक कि दूसरा राजा गद्दी पर न बैठ जाए। दो दिन हो गये उपयुक्त राजा की तलाश करते-करते। पर तलाश नहीं हो सकी। अन्त में परम्परा के अनुसार वहाँ के मन्त्रियों ने यह निर्णय लिया कि पाटवी हथिनी को माला देकर राजा की तलाश करने के लिये भेजा जाय। वह जिसके गले में माला डाल दे उसी को राजा बनाया जाय। प्रकृति की यह अद्भुत देन है कि हाथी वर्ग का पशु लाक्षणिक व्यक्ति का चुनाव करने में सक्षम गिना जाता और उसका निर्णय अत्युत्तम और अचूक होता है। उसकी चयन बुद्धि में किसी को किसी प्रकार का संशय नहीं रहता। निर्णय के अनुसार वहाँ की प्रमुख उत्तम गुणों वाली हथिनी को अच्छी तरह से स्नान आदि कराकर, गहनों वगैरह से सजाया गया और उसकी सूँड में माला देकर उसे राजा का चुनाव करने के लिये खुला छोड़ दिया गया और उसके पीछे-पीछे मन्त्रीगण एवं अन्य राज्याधिकारी चले।

इधर हथिनी माला सूँड में लिये घूम रही थी और घूमते-घूमते नगर के द्वार तक गई। उधर भूपतसिंह भी नगर के प्रवेश द्वार तक आया। हथिनी की नजर उस पर पड़ी। अपनी विचक्षण बुद्धि से हथिनी ने उसमें राजा के योग्य सभी लक्षण देखे और उसके गले में वह माला डाल दी।

साथ चलते मन्त्रियों के हर्ष का पारावार नहीं रहा। वे बड़े प्रसन्न हुए कि चलो उपयुक्त राजा के योग्य पात्र मिल गया। उन्होंने उसे विधिवत् राज सिंहासन पर बिठाया। उसका राज तिलक किया। इसके बाद उसकी सवारी निकाली। उसे सजे धजे हाथी के हौदे पर बिठाया और सारे नगरजनों के बीच से होते हुए वह सवारी निकली।

इधर सेठ सा० भूख से व्याकुल हो रहे थे। बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के बाद भी जब बालक भूपतसिंह नहीं लौटा तो वे अपने भूख के कष्ट को तो भूल गये। [उन्हें नई चिन्ता लग गई कि कैसा दुर्भाग्य हमारे पीछे लगा है कि वह लड़का भी मेरे से बिछुड़ गया। न जाने उस के साथ क्या बीती होगी ? किसी ने उसे पकड़ तो नहीं लिया या किसी के साथ कोई कहा-सुनी तो नहीं हो गई या किसी दुर्घटना में तो नहीं फँस गया। यह चिन्ता करते-करते वे उसे ढूँढते-ढूँढते नगर के मध्य तक आये। वहाँ उस बड़े जुलूस को देखकर कौतूहल-वश यह जानने के लिये समीप आये कि यह किसका जुलूस निकल रहा है। समीप आने पर उनकी नजर हाथी के हौदे पर सज धज के साथ बैठे भूपतसिंह पर पड़ी। हाथी के हौदे पर राजा की तरह बैठे भूपतसिंह को देखकर उन्हें आश्चर्य-मिश्रित हर्ष हुआ।

इधर हाथी पर बैठे भूपतसिंह की नजर भी उन सेठजी पर पड़ी। सेठजी को तत्काल उन महात्मा की कही हुई चारों सीख की बातें स्मरण हो आईं। सन्त ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक शीघ्र ही राजा बनेगा सो सन्त की वह वाणी सच निकली। सन्त ने पहली सीख में कहा था कि कोई छोटा व्यक्ति कदाचित अपने पुरुषार्थ से या भाग्य से बड़ा बन जाय तो उसे बड़ा मानकर ही उसके उपयुक्त बर्ताव उससे करना। पहली सीख स्मरण करते ही सेठ सा० ने तुरन्त ही हाथी की तरफ बढ़ते हुए जोर-जोर से राजाजी की प्रशंसा करते हुए कहा कि "जय हो, विजय हो महाराज भूपतसिंह जी की। आपके यहाँ भी ठाठ हैं और वहाँ भी ठाठ हैं।"

सेठजी की बोली सुनकर साथ में चल रहे मन्त्रीगण ने समझा कि ये सेठजी इन राजाजी के पूर्व परिचित कोई भद्रपुरुष मालूम होते हैं।

इधर भूपतसिंह ने सोचा कि सेठजी कितने उदार हृदय हैं कि मैं अब तक तो इनके चाकर के समान था तो मुझ चाकर को भी आज कितना मान-सम्मान दे रहे हैं। मेरी बढ़ती देखकर ये कितने प्रसन्न हो रहे हैं। मेरी इन सेठजी ने इज्जत रखली है। वैसे कहा जाय तो मेरी इज्जत ही नहीं रख ली बल्कि मेरी इज्जत को औरों की नजर में और भी अधिक बढ़ाने का प्रयत्न किया है और वह भी कितनी खूबी से—'आपके यहाँ भी ठाठ हैं और वहाँ भी ठाठ हैं', कहकर

किया है। तो जब इन्होंने मेरी इज्जत बढ़ाई है तो मुझे भी इनके साथ पूरा उपयुक्त सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिये।

यह सोचकर राजाजी बने हुए भूपतसिंह जी ने अपने मन्त्रियों और अन्य सामन्तों से कहा—"इन सेठ सा० को मेरे पास ही हाथी पर बिठाओ।" मन्त्रियों और सामन्तों ने राजा की आज्ञा का पालन किया।

राज भवन लौटने पर राजा बने भूपतसिंह ने अपनी राज्य सभा में तत्काल घोषणा की कि आज से ये सेठजी मेरे राज्य के प्रधानमन्त्री होंगे। अन्य मन्त्रीगण उनके आदेशानुसार शासन संचालन का कार्य करेंगे।

राजाजी ने उनके निवास की व्यवस्था भी राजमहल के निकट ही एक अच्छे उपयुक्त भवन में कर दी।

सभा विसर्जन के बाद एकान्त में राजा बने भूपतसिंह सेठजी से मिला। बड़ा गद्‌गद् होकर वह उनके चरणों में गिर पड़ा और कहने लगा—"सेठ सा० आप मेरे पिता तुल्य हैं और आपने जो उपकार मेरे साथ किये हैं उनको जीवन भर नहीं भूलूँगा। आप ही का उपकार है कि मैं आज इस स्थान पर पहुँचने में योग्य बना हूँ।"

सेठजी और भूपतसिंह ने अपने सुख-दुःख की बातों में बहुत समय बिता दिया। अन्त में निर्णय किया गया कि भूपतसिंह अपनी दुःखी माता को भी शीघ्र ही बुला ले।

राजा भूपतसिंह अपने अंगरक्षकों के साथ अपने गाँव में गया और अपनी माता को सारा वृत्तान्त सुनाकर अपने साथ चलने के लिये कहा। माता के आदेश से अपनी उपकारिणी सेठानी माँ को भी साथ लेकर अपने राज्य में लौट आया। उच्च कुल की परम्परा और पहिचान कैसे होती है, यह इससे प्रकट है। सारा वृत्तान्त सुनकर जब साथ चलने की बात आई तो उस क्षत्राणी वीर माता ने अपने पुत्र को उपदेश देते हुये कहा कि "तू मेरी कोख से जन्म लेकर भी इस तरह की स्वार्थभरी बात कर रहा है तो क्या मेरे दूध में कोई कसर थी। यह स्वार्थ वृत्ति तुझे आई तो कैसे आई? जिस सेठानी माँ ने अपने अत्यन्त कष्ट के दिनों में अत्यन्त विपन्नावस्था में मुझे सहारा देकर और तुझे अपने पुत्र की तरह समझ कर तेरा लालन पालन किया, पाल पोसकर बड़ा किया, लिखाया-पढ़ाया, माता तुल्य उन सेठपत्नी को तू भूल गया।" इस पर राजा भूपतसिंह ने पश्चात्ताप करते हुए अपनी माता से बार-बार क्षमा याचना की।

राजा बना भूपतसिंह, उसकी माता, सेठजी और सेठ पत्नी के दिन आराम से व्यतीत होने लगे।

यौवनावस्था में आने पर राजा भूपतसिंह का विवाह योग्य कुल की तीन सुन्दर राज कन्याओं के साथ हुआ। उत्तम प्रकार के भोगोपभोगों को भोगते हुए राजा के दिन बीतने लगे।

इस बीच एक नई घटना घटित हुई। राजाजी की तीन रानियों में से दो तो अपने जातिकुल की मर्यादा के अनुसार पतिभक्ता एवं पूरी तरह से पति परायणा थीं पर तीसरी रानी कुलटा निकली। उनका प्रेम सम्बन्ध एक उसके ही किसी सेवक महावत के साथ हो गया। यह बात अपने गुप्तचरों से प्रधान-मन्त्री बने सेठजी को विदित हो गई। सेठजी ने अपने गुप्तचरों से ज्ञात हुई इस जानकारी की पुष्टि स्वयं करनी चाही। प्रधानमन्त्री ने स्वयं अपनी आँखों से उनके प्रेमालाप को जब देख लिया तो उनको बड़ा दुःख हुआ। सोचने लगे कि अहो, देखो संसार की भी क्या स्थिति है? कर्मों की कितनी गहन गति है। शास्त्रों में प्रभु ने क्या ही उत्तम वाणी उच्चरित की है, 'कणकुंडगं चइत्ताणं विट्ठं भुजइ सूयरो'— यह कथन तो वीर प्रभु ने सूअरों के लिए कहा है पर कर्म गति से मनुष्य भव पाकर, इतना उत्तम कुल पाकर और इतने देवोपम भोग सामग्री को प्राप्त करके भी प्राणी किन नीच जाति और कुल के लोगों के प्रेम पाश में बन्ध कर अपने कुल की मर्यादा को भी भूल जाते हैं। ये काम भोग भी व्यक्ति को कहां से कहां तक नीचे ले जाकर धकेल देते हैं, इसकी कोई सीमा नहीं।

उस पतिता रानी की नजर संयोगवशात् प्रेमालाप करते समय अपनी ओर देखते हुए प्रधानमन्त्री पर पड़ गई। यह देखकर रानी ने समझ लिया कि अब हमारी खैर नहीं। हमें प्रधानमन्त्री ने देख लिया है और प्रधानमन्त्री निश्चय ही राजाजी को कह देंगे और राजाजी को यह बात मालूम हो गई तो मुझे प्राणदंड मिलना निश्चित है। अब क्या करना चाहिये। रानी ने सोचा कि कुछ ऐसा करना चाहिये कि राजाजी से मिलने से पूर्व ही किसी तरह इन प्रधानमन्त्री को ठिकाने लगा दिया जाय। न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी।

राजाजी उन दिनों भ्रमणार्थ कुछ समय के लिये नगर के बाहर गये हुए थे। इसे उपयुक्त अवसर समझ कर रानी ने एक दिन सन्ध्या समय प्रधानमन्त्री को अपने पास बुलाया और कहा कि "मेरे चन्द्रायण व्रत है इसलिये भोग की थोड़ी सी सामग्री थाल में लेकर आप अमुक देवीजी के मन्दिर में चढ़ा आएँ। इसमें विलम्ब न करें।"

सेठजी ने कहा—"आज तो मुझे अवकाश नहीं है। कल मैं यह चढ़ावा चढ़ा दूंगा।"

इस पर रानीजी ने कहा—"नहीं, यह तो अत्यन्त जरूरी है। इसे आप अभी तुरन्त चढ़ाकर आवें। तभी मैं भोजन करूँगी। इसके बिना मैं भोजन नहीं कर सकती।"

प्रधानमन्त्री ने विचार किया कि रानी जी की यह सात्विक इच्छा है। इसे टालना नहीं चाहिये। यह विचार कर उन्होंने रानीजी से कहा—"अच्छी बात है मैं अभी आपका काम करता हूँ।"

यह कहकर प्रधानमन्त्री ने थाली अपने हाथों में ली और चल दिये। देवी का मन्दिर नगर से बाहर काफी दूरी पर था। प्रधानमन्त्री वृद्ध थे। अतः विचार किया रास्ते में थोड़ा विश्राम कर लेना चाहिये। यह सोचकर वे विश्राम हेतु अपने महल में पहुँचे।

संयोग ऐसा हुआ कि राज्य के सेनापति के यहाँ उन्हीं दिनों एक पौत्र का जन्म हुआ था और उस दिन शाम को उनके यहाँ इस खुशी में भोज का निमन्त्रण आया हुआ था। विश्राम हेतु जैसे ही घर पहुँचे तो वहाँ सेनापति स्वयं उनको भोजनार्थ ले जाने हेतु आये हुए बैठे थे। प्रधानमन्त्री ने कहा—"क्षमा करें। मैं इस भोज में अभी सम्मिलित नहीं हो सकूँगा। रानीजी के एक अत्यावश्यक कार्य से मुझे देवीजी के प्रसाद चढ़ाने जाना है।"

इस पर सेनापति ने आग्रहपूर्वक विनती की कि "आप मेरे घर भोजन करते हुए उधर ही निकल जावें। इसके लिये इन्कार न करें।"

प्रधानमन्त्री को तुरन्त सन्त की तीसरी सीख याद आ गई कि 'कितनी ही जल्दी क्यों न हो तथापि कोई अगर भोजन के लिये निमन्त्रण दे तो उसे नहीं ठुकराना चाहिये।' यह सीख याद करते ही उन्होंने सोचा कि चलो दो कौर ही ले लूं। इसमें देर भी नहीं लगेगी।

यह निश्चय करके वे सेनापति के साथ भोजनार्थ उनके घर पहुँचे। उसी निमित्त रानीजी वाले महावत जी भी वहाँ आये हुए थे। प्रधानमन्त्री के जल्दी जल्दी दो-चार कौर लेकर जाने के कारण की बात उस महावत ने सुनी तो बड़ी नम्रता से प्रधानमन्त्री से बोला—"आप तो बहुत बड़े राज्याधिकारी हैं। यह छोटा मोटा काम तो हम नौकर-चाकर भी कर सकते हैं। आप तो निश्चिन्त होकर भोजन करिये। यह थाल तो मुझे दे दीजिये। मैं स्वयं ही इसे देवीजी के चढ़ाकर अभी आता हूँ।"

महावत ने थाल प्रधानमन्त्री के हाथ से ले लिया और स्वयं थाल लेकर देवीजी के मन्दिर की तरफ चला।

मन्दिर पहुँचकर ज्योंही थाल लिये महावत देवी के कक्ष में प्रविष्ट हुआ वैसे ही वहाँ कोने में छिपे हुए चार जल्लादों ने उस पर तलवार का भरपूर वार किया और उसे मौत के घाट उतार दिया।

प्रातःकाल जब यह खबर लगी कि किसी ने महावत की देवी के मन्दिर में हत्या कर दी है तो प्रधानमन्त्री को इसके पीछे छिपे रानी के षड़यन्त्र को समझते देर नहीं लगी। रानी ने जब यह जाना तो वह स्तब्ध रह गई। सोचने लगी कि मैं किसे मारना चाहती थी और कौन मारा गया ? उधर राजा भी नगर में लौट आये। उन्होंने भी यह खबर सुनी। पर इसके पीछे छिपे रहस्य को प्रधानमन्त्री के सिवा अन्य कोई नहीं समझ सका।

यह सब देखकर समझ कर प्रधानमन्त्री बने सेठजी को सन्त की दी हुई दूसरी और चौथी सीख भी याद आ गई। सोचने लगे वे सन्त भविष्यवक्ता थे। सब भावी को जान उन्होंने मेरे हितार्थ ही ये स्पष्ट सीखें मुझे दी हैं। यह अब पूर्णतः स्पष्ट हो गया हैं। अतः अब भूलकर भी मुझे इन सन्त के वचनों के विपरीत कुछ भी आचरण नहीं करना चाहिये। सन्त ने उपयुक्त ही सीख दी है। क्या ही सुन्दर सीख है कि किसी का कोई गुप्त भेद प्रकट नहीं करना चाहिये। इस दृष्टि से रानीजी ने जो भी कुछ पाप किया है, उसे मुझे किसी पर प्रकट नहीं करना चाहिये। फिर अब तो उस पाप का कारणभूत वह महावत नहीं रहा। उसके पाप का फल उसको स्वतः ही मिल गया। अब प्रश्न रह जाता है चौथी सीख का कि जहाँ अधिक शत्रु हो जांय अथवा कोई सबल वैरी हो जाय तो वहाँ नहीं रहना चाहिये। तो इसके अनुसार अधिक शत्रु तो अवश्य मेरे यहाँ नहीं हैं। पर प्रबल और सबल वैरी के रूप में यह रानी अवश्य विद्यमान है। अतः मुझे अब यहाँ नहीं रहना चाहिये। मुझे अब यह नगर छोड़कर चला जाना चाहिये। नहीं तो अनिष्ट की पूरी पूरी आशंका है। ऐसे अनिष्ट की आशंका वाले स्थान पर मुझे नहीं रहना चाहिये।

यह सोचकर प्रातःकाल होते ही सेठजी ने राजाजी से निवेदन किया— "महाराज ! अब मैं बहुत वृद्ध हो गया हूं। मेरी अन्तिम अवस्था है तो यह सोचकर धर्मध्यान में अपना अन्तिम समय बिताना चाहता हूं। मुझे इसके लिये तीर्थयात्रा पर जाने की आप अनुमति प्रदान करिये।"

राजा ने अतुल धन सम्पत्ति देकर सेठ और सेठानी दोनों को तीर्थ यात्रा करने की अनुमति प्रदान की। सेठजी और सेठानीजी दोनों वहाँ से सहर्ष विदा

होकर तीर्थयात्रा पर निकल पड़े। तीर्थयात्रा के बाद वे अपने पैतृक गाँव में गये और वहाँ अपना शेष जीवन धर्म-ध्यान में बिताने लगे।

इधर रानी ने जब सेठजी और सेठानी जी ने तीर्थयात्रा पर जाने की और प्रधानमन्त्री पद से निवृत्त होने की बात सुनी तो सन्तोष की साँस ली। सोचा चलो अच्छा हुआ। विपदा टली। उधर राजा का अपने प्रति बर्ताव भी यथावत् देखा तो रानी ने निष्कर्ष निकाला कि प्रधानमन्त्री बुद्धिशाली थे कि जिन्होंने मेरी बात को छिपाया और राजाजी से कुछ भी जिक्र नहीं किया। यह साधु पुरुषों का ही कार्य है। यह तो मैं ही पापिणी हूँ कि इतने उच्च कुल में जन्म लेकर भी फिसल पड़ी और इतने नीच कर्म में लिप्त हुई।

पर प्रकृति का यह नियम है कि शराब, जुआ और लम्पटता का रोग एक बार किसी को लग जाता है तो छूटना अत्यन्त दुष्कर होता है। कोई बिरला ही दृढ़ मनोबल वाला व्यक्ति अपने को इस महारोग से सम्भाल पाता है। इतना मनोबल रानी का दृढ़ नहीं था। वह फिर फिसलने लगी। इस बार उसे किसी लम्पट के साथ प्रेमालाप करते हुए स्वयं राजा ने देख लिया। इसके बाद तो गुप्तचरों द्वारा राजा को यह भी ज्ञात हो गया कि उसका अवैध सम्बन्ध देवी के मन्दिर में मारे गये उस महावत से भी था और उसकी जानकारी चूँकि प्रधानमन्त्री को हो गई थी अतः उनको मरवाने का षड़यन्त्र इस रानी ने किया था। यह तो प्रकृति की लीला थी कि प्रधानमन्त्री बच गये और वह महावत ही मारा गया।

राजा ने रानी को देश निकाला दे दिया और स्वयं संसार से विरक्त होकर ईश्वराराधन करने के लिये सन्त मुनि के पास दीक्षा लेकर ज्ञान, ध्यान और भगवदाराधन में अपना समय व्यतीत करने लगे।

## वीर कौन ?

☐ श्री मनोज आँचलिया 'टोनी'

एक बार महात्मा ईसा से उनके एक शिष्य ने प्रश्न किया—"प्रभो इस दुनिया में सबसे बड़ा वीर कौन है?"

महात्मा ईसा ने उत्तर दिया—"संतोषी व्यक्ति! क्योंकि उसे अपने मन की इच्छाओं को दबाने में जो कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, वे तकलीफें बड़े-बड़े वीर भी नहीं उठा सकते हैं।"

यह सुनकर शिष्य अपने गुरु की महान् बात पर नतमस्तक हो गया।

—116, देवाली, उदयपुर (राज०)

छह किस्तों में समाप्य धारावाही लेखमाला
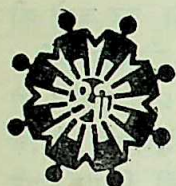
# भारतीय शाकाहार (६)

☐ डॉ० ताराचन्द गंगवाल

## शाकाहारियों के लिए अखाद्य वस्तुओं के अनजाने में उपयोग के कुछ उदाहरण

कई प्रकार की वस्तुओं के बनाने में अखाद्य पदार्थों का सम्मिश्रण किया जाता है, इसकी जानकारी इस देश में प्राय: नहीं दी जाती है। अमेरिका जैसे देश में यह कानून है कि निर्माता हर पैकिंग पर जो-जो वस्तुएँ उस पदार्थ के निर्माण में उपयोग में लाई गई हैं, उनका विवरण लिखें। इसके विपरीत दुर्भाग्य से भारतवर्ष में यह प्रतिबन्ध नहीं है।

इन अखाद्य वस्तुओं के कुछ उदाहरण :

१. जिलैटीन (Gelatine) : यह चमड़े के टुकड़े, हड्डी, कार्टिलेज इत्यादि पशुओं से प्राप्त वस्तुओं से उबाल कर बनाई जाती है, जो जमी हुई (Crystal) अथवा चूर्ण के रूप में बिकती है अथवा किसी और पदार्थ के सम्मिश्रण के रूप में। यह स्पष्ट ही है कि यह शाकाहारी पदार्थ नहीं है। इसका प्रयोग आइसक्रीम (Ice-cream) का निर्माण करने वाली कम्पनियाँ स्टेबिलाइजर (Stabiliser) के रूप में कर रही हैं, जिसका आइसक्रीम खाने वालों को गुमान भी नहीं हो सकता। यह लैमन ड्राप (Lemon drop) और फ्रूट जैली (Fruit Jelly) जैसे कहलाने वाले पदार्थों में भी प्रयोग की जाती हैं। दवाई के कैप्सूल (Capsule) (खोल) भी इसके ही बनाये जाते हैं। कैप्सूल को प्रयोग में न लेना चाहने वालों के पास इसका तुरन्त और कोई हल न भी हो तो कम-से-कम कैप्सूल को खाली करके उसके अन्दर की दवाई को गुड़ अथवा चीनी की चाशनी से लुगदी या गोली बनाकर निगली जा सकती है। पहिले कैशे (Cachets) स्टार्च के वेफर पेपर (Wafer Paper) के बने हुए मिलते थे, जो आपत्तिजनक नहीं थे, परन्तु वे आजकल उपलब्ध नहीं हैं।

२. गाय के बछड़ों के पेट (Stomach) से प्राप्त रस की एक रसायन 'रैनट' (Rennet) दूध को फाड़ने के प्रयोग में लाई जाती है जिससे पनीर

(Cheese) बनता है। यह गवर्नमेन्ट के अमूल जैसे कारखाने में, लोकसभा में प्रश्न उठाये जाने के उपरान्त भी, प्रयोग में लाई जा रही है, जिससे शाकाहारियों की भावना को ठेस पहुँच रही है।

३. अण्डा कई खाद्य पदार्थ बनाने वाली कम्पनियों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है; जैसे—ओवलटीन (Ovaltine) जैसी खाद्य सामग्रियाँ।

४. कई विटामिन बी-कम्पलक्स (Vit. B. Complex) में पशुओं से प्राप्त शुद्ध जिगर (Liver) का अंश होता है; जैसे—सुरबैक्स (Surbex) या सुरबैक्स-टी (Surbex-T) में।

५. पाश्चात्य देशों में वेजीटेबिल सूप (Vegetable Soup) कहलाने वाला पदार्थ, घरों के रसोईघर में बचे-खुचे सामान जैसे—माँस की बोटियाँ इत्यादि के मूल (Base) से बनाया जाता है।

६. केक तो प्राय: अण्डे से ही बनता है।

७. अण्डा बड़ी चतुराई से सुखाये हुये पाउडर के रूप में शोरवा झोल इत्यादि खाद्य वस्तुओं में डाला जाता है, विशेषकर पाश्चात्य देशों में।

८. मेवोनीज सास (Mayonese sauce) एक प्रकार की चटनी—अण्डे से बनाई जाती है।

६. 'काड लिवर आइल' काड नाम की मछली के जिगर से निकाला जाता है। इस ही प्रकार 'शार्क लिवर आइल' शार्क मछली से।

१०. कन्सन्ट्रेटेड मीट ग्रैवीज (Concentrated Meat Gravies) चाहे विश्वास भी न हो—यह भी गवर्नमेन्ट द्वारा संचालित सेन्ट्रल फूड एण्ड टैक्नोलॉजीकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, मैसूर (Central Food and Technological Research Institute, Mysore) ने तैयार किया है। इसकी विज्ञप्ति थोड़े समय पूर्व ही निकली है। (देखिये हिन्दुस्तान टाइम्स, दिनांक १७-३-८२)। इसका उद्देश्य प्रोटीन की कमी को दूर करने का है।

**भोजन के सम्बन्ध में वहम, परहेज और पारम्परिक गलत विश्वास**

अनादि काल से भोजन के सम्बन्ध में अनेक वहम इत्यादि प्रचलित हैं जो गलत निष्कर्ष अथवा विश्वास पर आधारित हैं।

लेटिन भाषा में कहावत है 'Post hoc egro propter hoc' जिसका आशय है किसी घटना के अनन्तर कोई अन्य घटना हो जावे तो उसे पहली

घटना का ही परिणाम मानना। यह निष्कर्ष निकालना ही गलत धारणा का परिणाम है। एक घटना किसी दूसरी घटना के पूर्व घटित हो सकती है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि दूसरी घटना पहली घटना का ही परिणाम हो। उदाहरण के तौर पर यदि एक व्यक्ति को दही खाने के बाद ज्वर हो जावे तो यह निर्णय निकालना भ्रामक ही है कि दही खाने से ज्वर आया। यदि यह सत्य होता तो अन्य जिन-जिन व्यक्तियों ने दही खाया था—सबको ज्वर आना भी अनिवार्य होता।

हम सब भली प्रकार परिचित हैं कि जो परहेज रात-दिन बताया जाता रहा है या यों कहिये कि सदा मुँह पर आता रहता है वह है—'तेल, गुड़, खटाई' पर हर सम्भव रोग में रोक लगा देना। परन्तु आजकल विज्ञान ने बिना किसी विवाद के सिद्ध कर दिया है कि तेल कई कारणों से घी से अधिक स्वास्थ्यप्रद है, क्योंकि तेल से कोलैस्ट्रोल (Cholesterol) नामक हानिकारक पदार्थ शरीर में नहीं बढ़ता। तेल के प्रयोग से रक्तवाहिनी धमनियों की कठोरता (Arteriosclerosis) नहीं होती, क्योंकि तेल में आवश्यक असंतृप्त वसीय अम्ल (Unsaturated essential fatty acids) होते हैं, जो इस बीमारी की रोकथाम करते हैं।

इसी प्रकार प्रोफेसर युडकिन, न्यूट्रिशन रिसर्च इन्स्टीट्यूट, लन्दन यूनिवर्सिटी के अनुसार गुड़ स्वास्थ्य के लिए चीनी (White sugar) से अधिक स्वास्थ्यप्रद है।

'खटाई' या जो वस्तुएँ स्वाद में खट्टी लगें, उनमें कभी-कभी विटामिन 'सी' (Vit. C) (Ascorbic acid—जो प्रत्यक्ष ही एक अम्ल है) पाया जाता है जिसके बगैर जीवन तक की जोखम है। पुराने समय में कई मल्लाहों को विटामिन 'सी' के प्राप्त नहीं होने से स्कर्वी (Scurvy) नामक बीमारी हो जाया करती थी और उनमें कई को तो जीवन से हाथ धोना पड़ा था। यह विटामिन 'सी' आँवला, टमाटर, नींबू इत्यादि में होती है, जो स्वाद में अम्लयुक्त होने से खट्टे होते हैं।

आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा करने वाले कम-से-कम प्राचीन काल में तो खाँसी इत्यादि रोगों में दूध पीना बंद कर देते थे, दही का तो प्रश्न ही नहीं था। स्पष्ट है कि यह प्रथा उचित नहीं थी, क्योंकि प्रायः सब ही तेज (Acute) रोगों में दूध ही मुख्य पथ्य गिना जाता है। कदाचित् वे लोग जब दूध पीते बालक को खाँसी का रोग होता होगा तो कठिनाई में पड़ जाते होंगे, क्योंकि वह बालक दूध के अतिरिक्त क्या खा सकता था?

लम्बे समय चलने वाले रोगों तक में भी लंघन कराने की सनक हुआ करती थी। स्पष्ट ही है कि अधिक दिन के ज्वर में तो यह अनुचित ही है। वैसे भी ज्वर में अधिक कैलोरी व्यय होती है। अगर उसकी क्षति-पूर्ति न हो तो शरीर पर अत्यन्त भार पड़ेगा, रोग से लड़ने की शक्ति भी क्षीण होगी। इसलिए उपयुक्त पोषण की आवश्यकता है। आजकल का अनुभव तो है कि विशेषकर चोट लगने, जलने इत्यादि में भोजन और भी अधिक मात्रा में देना चाहिए। प्रोटीन की मात्रा अधिक होने से जल्दी स्वास्थ्य लाभ होता देखा गया है।

हम सब परिचित हैं कि किस प्रकार भोजन के सम्बन्ध में बहम पैदा होते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी व्यक्ति को यदि बदहजमी की शिकायत हो गई (चाहे केवल मानसिक अथवा विचार मात्र ही हो) जो किसी गरिष्ठ भोजन जैसे मूँग के हलवे के खाने के उपरान्त हुई हो तो भविष्य में वह व्यक्ति ऐसे भोजन से परहेज करेगा, जिसके परिणामस्वरूप उसके जठर को इस प्रकार के भोजन को पचाने की आदत नहीं रहेगी अथवा उसका जठर इस व्यायाम से वंचित रहेगा। निरन्तर इस ही प्रकार के विचार के परिणामस्वरूप समय पाकर उसकी पाचन-क्रिया वास्तव में क्षीण हो जावेगी।

ऐसा व्यक्ति ऐसे ही अन्य खाद्य पदार्थों से भविष्य में परहेज करता रहेगा, अपितु धीरे-धीरे इनसे भी कम गरिष्ठ भोज्य-पदार्थों से भी वंचित रहने का क्रम निरन्तर जारी रहेगा। इसके परिणामस्वरूप ऐसे व्यक्ति का भोजन अन्ततोगत्वा सुपाच्य से सुपाच्य—केवल दुर्बल रोगियों के जैसा ही रह जावेगा। ऐसे रोगी को (विशेषकर "तन्दुरुस्ती के पीछे पड़ने वाले व्यक्ति को") समय पाकर वास्तव में दुर्बल पाचन-क्रिया का शिकार होना पड़ जाता है। इसको "कम खाने से उत्पन्न पाचन शक्ति की दुर्बलता" (Dyspepsia of Starvation) की संज्ञा उपयुक्त है। स्पष्ट ही है कि ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना का एकमात्र कारण व्यक्ति-विशेष की विकृत विचारधारा ही है।

इस ही प्रकार कई रोगों में भोजन सम्बन्धी कई प्रकार के परम्परागत बन्धन बता दिए जाते हैं जिसका दोष योग्यता प्राप्त डॉक्टरों (Qualified Medical Men) तक को भी है। जैसे 'मोतीझरे' में केवल तरल पदार्थ का भोजन देना। नई खोजों से ज्ञात हुआ है, जो बाद में अनुभव से भी प्रमाणित हो गया है कि इस रोग में मुलायम व गाढ़ा (Solid) भोजन देने में कोई भी हानि नहीं है, अपितु यह नई प्रणाली अधिक लाभकारी है। इससे स्वास्थ्य-लाभ में अत्यधिक लाभ मिला है।

दही, गन्ने का रस इत्यादि निमोनिया जैसे रोगों में विशेषकर जब अन्य प्रकार के रस उपलब्ध न हों, देने से कोई भी हानि नहीं होती।

दाल को पेट में हवा (Wind) पैदा करने का निराधार दोष दिया जाता है।

हमारा सबसे बड़ा दोष है कि हमारा मानस खुला नहीं है, जिससे हम लोग वास्तविकता (जड़) को समझ सकें और परम्परागत दोषों व भूलों को छोड़ दें।

दाल, चावल खाने में वहम है, परन्तु इनकी ही बनी हुई खिचड़ी से कोई आपत्ति नहीं समझी जाती।

मधुमेह में प्रायः चावल निषिद्ध कहा जाता है। यदि दक्षिण भारत अथवा बंगाल के निवासी को जो चावल खाने के अभ्यस्त हैं, यह रोग हो जावे तो इस जीवन भर चलने वाली बीमारी होने पर क्या खावें ? यह तथ्य है कि एक प्रकार का अन्न प्रायः अन्य प्रकार के अन्न से कोई विशेष भिन्न नहीं होता, अतः वे सब ही अन्न एक ही प्रकार से लाभदायक अथवा हानिकारक हैं। वैज्ञानिक विचारधारा है कि यदि गेहूँ खाना वर्जित नहीं है तो चावल खाने में भी कोई विशेष हानि नहीं है। यही प्रश्न आलू के साथ भी है। इसको भी मधुमेह के रोगी द्वारा अपने कार्बोहाइड्रेट की निर्धारित मात्रा में खाने में कोई आपत्ति नहीं है।

प्रायः सब अवसरों पर जबकि कोई विशेष भोजन पर प्रतिबन्ध आवश्यक न हो, अंग्रेजी की पंक्तियों का निम्नलिखित भाव काफी महत्त्वपूर्ण है :—

"सब प्रकार के प्रकृतिदत्त पदार्थ खावो,
वे नीचे जाकर सब मिल जावेंगे,
यदि आपको इसका विश्वास है,
परन्तु एक बार आपको शंका हो जावे तो,
पाचन रसों को इसका पता लग जावेगा।"

### निष्कर्ष

१. भारतीय शाकाहार अथवा दुग्ध युक्त शाकाहार पूर्णरूप से पोषक है। इसमें प्रोटीन समेत किसी भी तत्त्व की कमी की कोई भी जोखिम नहीं है अथवा स्वास्थ्य की हानि की कोई भी आशंका नहीं है। दुग्ध के प्राप्त नहीं होने की स्थिति में भी संतुलित आहार, जिसकी ऊपर सलाह दी गई है, स्वास्थ्यप्रद है। "वनस्पति से प्राप्त प्रोटीनों का विवेकपूर्ण सम्मिश्रण, पशुओं से प्राप्त उच्च कोटि के प्रोटीन के बराबर ही पोषण की क्षमता रखता है। भोजन में अन्न व

दाल के सम्मिश्रण से सारे संसार में लोगों का स्वास्थ्य अत्यन्त संतोषजनक रह रहा है और एक प्रकार के शाकाहार का दूसरे प्रकार के शाकाहार से मिश्रण करने से लाभदायक प्रभाव पड़ता है, जो सर्वमान्य है।" इसलिये प्रमाणित हो गया है कि जैसा मिश्रित आहार हम लोग पुराने समय से उपयोग में लाते रहे हैं उसमें सब प्रोटीन के आवश्यक अमीनोएसिड मौजूद हैं।

२. इस भोजन में अण्डे (निषेचित अथवा अनिषेचित) की सम्मिलित करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है, यद्यपि यह पाश्चात्य शाकाहार में सम्मिलित है।

३. जैसे संतुलित शाकाहार का आई. सी. एम. आर. (I. C. M. R.) ने सुझाव दिया है; उसका यदि अनुसरण किया जावे तो इसमें ऊपर से और विटामिन अथवा खनिज पदार्थों को सम्मिलित करने की भी आवश्यकता नहीं रहती।

४. यह भी आवश्यक नहीं है कि जैसा भोजन का सुझाव दिया गया है उसका अक्षरश: पालन ही किया जावे। एक प्रकार के भोजन से ऊब जाने पर इसमें 'खाद्य पदार्थों में पोषक तत्त्व' तालिका के सहारे से मनचाहा फेर-बदल किया जा सकता है। केवल मुख्य भोजन के तत्त्वों और कैलोरी का ध्यान रखता पर्याप्त है।

५. यह भोजन अत्यन्त सस्ता और स्वास्थ्यप्रद है।

६. भोजन बनाने की दक्षता के अनुसार यह तृप्तिकारक व अत्यन्त स्वादिष्ट भी हो सकता है।

७. प्राय: अनेक धर्म मांसाहार के विरुद्ध हैं।

८. बाजार में बिकने वाले पेटैन्ट प्रोटीन के डिब्बों (Proprietory Protein Foods) के उपयोग का इस आहार को सहारा देने के लिए कोई भी स्थान नहीं है, क्योंकि ये निरर्थक और अत्यन्त महंगे हैं, इनसे धन का पूरा मूल्य प्राप्त नहीं होता। यदि जिस भोजन की सलाह दी हुई है, उसके अलावा भी किसी कारणवश अधिक प्रोटीन की आवश्यकता पड़ जावे तो बहुत सस्ते प्रकार से यह मूंगफली अथवा दूध से उपलब्ध हो सकता है, जो किसी भी प्रकार डिब्बों के प्रोटीन से हीन नहीं है।

९. सुरुचि (Aesthetically) के विचार से भी शाकाहार, पशुओं की हत्या करके भोजन प्राप्त करने से कहीं अधिक सराहनीय है, क्योंकि पशुओं की हत्या नि:सन्देह अवांछनीय व घृणित कार्य है।

१०. दुर्भाग्य से हमारे देश में भीषण निर्धनता की समस्या है, जिससे नाम-मात्र का भी भोजन उपलब्ध होना हमारी जनता के काफी अंश के लिए दुर्लभ है। सन्तुलित भोजन अथवा पर्याप्त प्रोटीन युक्त भोजन का तो प्रश्न ही नहीं है। निःसंदेह ऐसे लोगों का साधारणतया कुपोषण का शिकार होना अनिवार्य है। मांसाहार का ऐसी परिस्थिति में तो अधिक खर्च के कारण कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

११. जो पनीर अमूल जैसे गवर्नमेंट द्वारा संचालित संस्थाओं द्वारा तैयार किये जाते हैं, उनमें गाय के बछड़े के जठर के रस का प्रयोग होता है। इस ही प्रकार अभी हाल ही में विज्ञप्ति निकली है कि मांस का गाढ़ा किया हुआ शोरबा (Concentrated Meat Gravies) सेन्ट्रल फूड एण्ड टैक्नोलॉजीकल इन्स्टीट्यूट, मैसूर ने तैयार करके बन्द डिब्बों में बेचने को निकाला है। प्रत्यक्ष है कि इसका शाकाहारी भोजन में कोई भी स्थान नहीं है। वैसे भी अधिकतर भारतीय जनता निर्धन है और ऐसे महंगे खाद्य पदार्थ के प्रयोग करने में असमर्थ है। यह दुःख का विषय है कि टैक्स देने वाली भारतीय जनता का अमूल्य धन ऐसी व्यर्थ की चीजों पर नष्ट किया जाता है। इसका अगर लाभ भी उठाया जायेगा तो केवल नगण्य लोगों द्वारा ही। आम जनता तो इसका लाभ उठाने में सर्वथा असमर्थ है। जो खोजें आम जनता के लाभ की नहीं हों, उन पर राष्ट्र को मूल्यवान सम्पत्ति को नष्ट करना नितान्त अनुचित है। अपितु शाकाहारी भारतीय जनता को ऐसी खोजों से मानसिक आघात होना भी अनिवार्य है।

१२. यह कहा जाता है कि मांसाहार के लिए पशुओं को पालने में जो धरती उपयोग में आती है उस ही धरती में अन्न, दलहन इत्यादि की उपज से ६ गुणी अधिक जनसंख्या का पालन-पोषण सुचारु रूप से किया जा सकता है।

१३. शाकाहार हमारे जैसे निर्धन देश की भोजन की समस्या हल करने के लिए पूर्ण रूप से सक्षम है, विशेषकर जब आबादी बेतहाशा बढ़ रही हो; क्योंकि यह शाकाहार सस्ते होने के अतिरिक्त मांसाहार के अनुपात में अत्यधिक जनता की संख्या का भरण-पोषण करने में सक्षम है।

१४. मांसाहार और उसकी प्राप्ति के लिए पशु पालन बेकार के व्यय का उदाहरण है। हिसाब लगाया गया है कि गाय के एक पौंड मांस (Beef) के लिए १६ पौंड अन्न की आवश्यकता होती है। यह मांस किसी प्रकार से प्रोटीन तत्त्व में कोई खास विशेषता नहीं रखता और कैलोरी तो उतने ही तोल के अन्न अथवा दाल से बहुत ही कम है। १०० ग्राम भेड़-बकरे के मांस (Mutton) से १९.८ ग्राम प्रोटीन व १९४ कैलोरी प्राप्त होती है और उतनी ही तोल

की दाल से (चने की) से २०.८ ग्राम प्रोटीन और ३७२ कैलोरी (मूंग की दाल से २४.८ ग्राम उड़द की दाल से २४ ग्राम प्रोटीन) उपलब्ध होते हैं। क्या इससे कोई भी अधिक घाटे का सौदा सम्भव है ? विश्वास हो या नहीं, केवल विकसित अमेरिका जैसे देश ही इस तरह का सौदा कर सकते हैं, जो अपनी दौलत लुटाने की स्थिति में हैं।

१५. यह सम्भव है कि अहिंसात्मक-सिद्धान्त देश की आबादी के कुछ ही अंश को प्रेरित कर सके, परन्तु आध्यात्मिक उपलब्धि के लिए तो यह प्रथम सीढ़ी है। कम-से-कम अहिंसा के सिद्धान्त में विश्वास रखने वालों में दूसरों के जीवन का मूल्य तो होता ही है। यह हमारे देश के संस्कारों से भी मेल खाता है। वास्तव में किसी भी व्यक्ति को, जो किसी और को जीवन प्रदान करने में नितान्त असमर्थ है, क्या अन्य किसी भी प्राणी का जीवन लेने का नैतिक अधिकार प्राप्त है ?

### मुख्य संदर्भ ग्रन्थ

1. **Human Nutrition & Dietetics**—Sir Stanley Davidson & others, 1970.
2. **Normal & Therapeutic Nutrition**—Proufit-Robinson, 1967.
3. **Current Medical Diagnosis and Treatment**—Maruzen Asian Edition, 1980.
4. **Human Nutrition**—Benjamin T. Burton, 1980.
5. **Our Food**—M. Swaminathan, 1972, Ganesh & Co. Madras–600017.
6. **Essentials of Food & Nutrition**—M. Swaminathan, 1974.
7. **Essentials of Food & Nutrition (Supplement)**—M. Swaminathan, 1977.
8. **Nutritive Value of Indian Foods**—I.C.M.R. Hyderabad, 1971.
9. **Special Report Series No. 60**—I.C.M.R. (Gopalan), 1974.
10. **Recommended Dietary Intakes for Indians**—I.C.M.R., 1981.
11. **Diet and Your Religion**—John Cook, 1976, Woodbridge Press Publishing Co., Santa Barbara, California.
12. **Medicine Out of Control**—Richard Tayler, Sun Books Pvt. Ltd., Melbourne, 1979.

13. **The Vegetable Passion**—Janet Barkes, Charles Seribner, New York, 1975.
14. **Anatomy of Illness**—Norman Cousins–Bantom Edition, 1981.
15. **The Frontiers of Science & Medicine**—Rick J. Carlson, Wildwood House, London, 1975.
16. **Merck's Manual,** 1972.
17. **How the Other Half Dies**—Susan George, Panguin Books, 1979.
18. **Common Cold & Its Cure**—Linus Pauling, 1971.
19. **Manual of Nutrition**—Ministry of Agriculture, Fisheries & Food, by Her Majesty's Stationary Office, London, 1961. [समाप्त]

प्रेरक प्रसंग

# दान की महिमा

□ डॉ० भैरुंलाल गर्ग

किसी नगर में एक धनी व्यक्ति रहता था। अपार सम्पत्ति होते हुए भी उसने न कभी अच्छा खाया न अच्छा पहना। इसलिए नगर निवासी उसे कंजूस सेठ के नाम से पुकारते थे। एक बार उस नगर के आस-पास के इलाके में भयंकर अकाल पड़ा। महामारी फैली और बच्चे-स्त्रियां आदि सभी बेहाल होकर इधर-उधर भटकने लगे।

उसी नगर में एक परोपकारी महात्मा रहते थे। वे असहायों की मदद के लिए चंदा इकट्ठा करने निकल पड़े। वे उस महाकंजूस धनी के पास भी गए, लेकिन उसने एक पैसा भी देने से मना कर दिया। महात्मा ने एक युक्ति सोची। उन्होंने उस धनी सेठ से कहा—"आप दस हजार रुपये का चैक शाम तक के लिए मुझे दे दें। मैं शाम को वापस कर दूँगा।"

वह सेठ महात्माजी की बात न समझ पाया, बोला—"लेकिन आप चैक का क्या करेंगे?"

महात्माजी बोले—"आप इस नगर के सबसे धनी व्यक्ति हैं और कंजूस भी। आपका चैक देखकर अन्य सेठ सोचेंगे कि जब इतने बड़े कंजूस ने दस हजार रुपये दे दिये तब वे भी क्यों न दें।"

सेठ ने सोचा इसमें क्या नुकसान है। नाम भी होगा और कुछ जायेगा भी नहीं। उसने महात्माजी को चैक दे दिया। जैसी उम्मीद थी, चैक देखकर सेठों में दान देने की होड़ लग गई और शाम तक लाखों रुपये इकट्ठे हो गए।

शाम को महात्मा सेठ को चैक वापस करने गए तो चैक लेने से इंकार करते हुए सेठ ने कहा—"आज तक मैंने दान की महिमा नहीं जानी थी। सुबह से प्रशंसा और बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। आज जैसा सुख मुझे कभी नहीं मिला।" महात्मा सेठ का मुँह देखते रह गए।

—जेल रोड, झालावाड़–३२६ ००१ (राज०)

धारावाहिक उपन्यास 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' भाग २

## द्वितीय प्रवास

# वृद्ध मुनि की आत्म-प्रशंसा [३]

☐ अनुवादक : **श्री लालचन्द्र जैन**

[ गतांक से आगे ]

दीक्षा कुमारी ने उत्साह पूर्वक कहा, "मुनियो ! 'आचारांग सूत्र' का सम्पूर्ण उपदेश देने का अभी मुझे समय नहीं है, फिर भी उसके दूसरे उद्देशक में हिंसा को रोकने के लिये जो कुछ कहा गया है, वह आप ध्यान पूर्वक सुनें। मुनियों को सर्व प्रथम छः काय जीव की हिंसा को रोकना चाहिये, उनके सारे आचार का यह मुख्य कर्त्तव्य है। जो मुनि यह कहते हैं, 'हम अनगार हैं, अर्थात् जीव रक्षा के लिये घर गृहस्थी को छोड़कर यति बने हैं।' उनका यह कथन बकवास मात्र है क्योंकि वे पृथ्वी में होने वाले कामों से पृथ्वी कायिक जीवों को शस्त्रों से मारते रहते हैं। साथ ही वनस्पति आदि अनेक जीवों को मारते हैं। वीर प्रभु ने समझाया है कि 'अधिक जीने के लिये, कीर्ति के लिये, मान के लिये, जन्म, जरा-मरण से छूटने के लिये तथा दुःख मिटाने के लिये स्वयं पृथ्वी कायिक जीवों की हिंसा करते हैं, दूसरों से करवाते हैं और करने वाले का अनुमोदन करते हैं, पर यह सब उनके लिये अहितकारी एवं अज्ञान को बढ़ाने वाला है।

"मुनियो ! आपको इस कथन को ध्यान में रखना चाहिये। आप लोग रहने के लिये नवरंगित उपाश्रय चाहते हो, उपाश्रय में अनेक प्रकार की सुख-सामग्री इकट्ठी करते हो और रागी श्रावकों से अनेक प्रकार की सेवा कराते हो, जिसमें पृथ्वीकाय जीवों का बहुत संहार होता है। मुनियो ! शायद आप समझते होंगे कि पृथ्वीकाय एकेन्द्रीय जीवों की हिंसा कैसे होती है, उनमें तो चेतना की स्फुरणा भी नहीं है, अतः आपकी मान्यता गलत है। किन्तु 'आचारांग सूत्र' में इन जीवों की हिंसा के बारे में कहा गया है, जैसे एक मनुष्य को कोई

घायल कर मूर्छित कर दे फिर उसे मार दे, तब मूर्छित होने पर भी उस मनुष्य को पीड़ा तो होती ही है, इसी प्रकार पृथ्वीकाय जीवों को भी मारने से वेदना होती है। अतः बुद्धिमान पुरुषों को यह सब जानकर स्वयं पृथ्वीकाय की हिंसा नहीं करनी चाहिये, दूसरों से करवानी नहीं और अन्य करते हुए का अनुमोदन भी नहीं करना चाहिये। जो पृथ्वीकाय की हिंसा को अहितकारी समझ कर उसका त्याग करता है, वही वास्तविक मुनि है।

"मुनियो! इस सूत्र वाणी पर विचार करें और आपकी प्रवृत्ति में होने वाली अनेक प्रकार की पृथ्वीकाय की हिंसा को रोकें।

"हे वृद्धि मुनि! आपकी और आपके शिष्यों की प्रवृत्ति को देखकर मुझे लग रहा है कि आपसे अपकाय जीवों की हिंसा भी होती होगी। क्योंकि आचार विमुख मुनियों द्वारा अपने पीने और स्नान-शोभा के लिये अत्यधिक पानी का उपयोग करने में कोई दोष नहीं माना जाता होगा। जैसे आपको शरीर तेल मालिश करने की आदत पड़ी है, वैसे ही स्नान करने की आदत भी पड़ी होगी। अतः अनाचारी साधु अपकाय जीव की हिंसा में भी प्रवृत्ति करते होंगे। मुनियो! आप अपकाय जीवों की हिंसा से बचें। अत्यधिक आवश्यकता होने पर सिर्फ उचित पानी का उपयोग करें। यदि अनाचारी स्वभाव से या प्रमाद से संचित जल का उपयोग करेंगे तो आपको महान् दोष लगेगा। संचित जल के उपयोग से मात्र जीव हिंसा का दोष ही नहीं लगता, अपितु अदत्त-दान (चोरी) का दोष भी लगता है, क्योंकि संचित जल पर परिग्रहीत वस्तु है और उसमें रहे हुए जीवों की आज्ञा के बिना उसका उपयोग करने से अदत्त-दान का दोष लगता है। अतः आपको तीन करण, तीन योग से अपकाय जीवों की हिंसा से बचना चाहिये।

"मुनियो! आप वैभव सुख की इच्छा वाले बन रहे हैं, अतः आपको अग्निकाय जीवों की हिंसा का दोष लगे बिना भी नहीं रह सकता, क्योंकि पृथ्वी, तृण, पान, लकड़ी, कंडे एवं कचरा इन सब में सूक्ष्म जीव रहते हैं। ये सूक्ष्म जीव तथा इनमें आकर गिरने वाले सम्पातिक सूक्ष्म जीव अग्नि सुलगाने से शरीर को संकुचित कर मूर्छित होकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। चाहे आप स्वयं अग्नि नहीं सुलगाते हों, पर आपके रागी श्रावक आपके लिये ही आपको आराम पहुँचाने के लिये अग्नि का समारम्भ किये बिना नहीं रह सकते। आप तो सुखाभिलाषी हैं ही, अतः उस ओर उपेक्षा रखना स्वाभाविक ही है, अतः आपको अग्निकाय जीवों की हिंसा का महापाप अवश्य लगेगा। अनगारो! यदि मेरी बात पर विचार करोगे तो आपको अपने दोष का भान होगा, जिससे अपने शुद्ध

आचार का स्मरण कर, इस अनाचार से दूर रहने की इच्छा प्रकट होगी। यों आपको अग्निकाय जीवों की हिंसा से दूर रहना चाहिये।

"मुनियो ! यदि आपकी प्रवृत्ति यों ही चलती रही तो आपको वनस्पति काय के जीवों को हिंसा का दोष भी लगेगा। आपके भक्त श्रावक अपकी पूजा-सम्मान के लिये अनेक प्रकार की प्रवृत्ति करेंगे और आपके निमित्त वनस्पतिकाय जीवों की हिंसा कर आपको दूषित करेंगे। वनस्पति भी शरीर की भाँति नाशवान वस्तु है, अतः उसको काटने से अवश्य हिंसा का दोष लगता है, अतः आपको अपने शुद्ध आचार में रहना चाहिए जिससे कि आपको यह दोष नहीं लगे।

"साधुओ ! आपकी वर्तमान प्रवृत्ति में त्रसकाय जीवों की हिंसा भी बहुत होती है। अनेक प्रकार के नये-नये उपकरणों का आप उपयोग करने लगे हैं। आपके आसन के पास नूतन रंगीन चाकें, सुशोभित कलमें, मनोहर पेंसिलें, ब्लाटिंग पेपर, नोट पेपर, पचरंगी पुट्ठे, सुनहरी अक्षर वाली पुस्तकें, डायरियें तथा अन्य सुन्दर उपकरणों का ढेर लगा रहता है। आप उच्च कोटि के कोमल वस्त्र धारण करते हैं तथा उच्च कोटि की भोग उपभोग की वस्तुएं आपके पास आती हैं। आपको समझना चाहिये कि ये सभी वस्तुएं त्रसकाय जीवों की हिंसा की कारण भूत हैं। कुछ पदार्थ तो जीव हिंसा के बिना बन ही नहीं सकते। आपके उपयोग में भी ऐसे कई पदार्थ आते होंगे, जिससे आपको त्रसकाय जीवों की हिंसा का दोष लगता है। इस विषय में 'आचारांग सूत्र' में निम्न कथन है :—

"कुछ लोग शरीर सुख के लिये जानवरों को मारते हैं। कुछ माँस के लिये, कुछ खून के लिये, कुछ हृदय के लिये तो कुछ धन के लिये ही जानवर मारते हैं। पंख, पूँछ, बाल, सींग, दांत, दाढ़, नाखून, नाडियें, हड्डी और चर्बी आदि प्राप्त करने के अनेक स्वार्थों के लिये लोग जानवरों को मारते हैं। कुछ लोग बिना कारण भी खेल-खेल में जानवरों को मार देते हैं। 'इसने हमें मारा था', 'यह हमें मारता है' या 'यह हमें मारेगा' इस विचार से बहुत लोग जानवरों को मारते हैं। त्रसकाय के समारम्भ से अनेक आरम्भ लगते हैं और उनकी रक्षा से किसी प्रकार का आरम्भ नहीं लगता, यह जानकर बुद्धिमान पुरुष को त्रस जीव की हिंसा न स्वयं करनी चाहिये, न करवानी चाहिये और न करते हुए का अनुमोदन ही करना चाहिये। जिसने त्रसकाय जीव की हिंसा को अहितकारी समझ कर उसका त्याग किया हो उसे ही मुनि समझना चाहिये, ऐसा मैं (श्री महावीर) कहता हूं।" मुनियो ! इस सूत्रवाणी पर चिंतन करें। आपकी प्रवृत्ति में त्रसकाय की हिंसा की पूर्ण सम्भावना है, अतः यदि आप इस हिंसा का त्याग

नहीं करेंगे तो आप साधुत्व से भ्रष्ट हो जायेंगे, फिर मैं तुम में से अपने दीक्षा के स्वरूप को वापस खींच लूँगी।

"मुनियो! वर्तमान में आप अपने शरीर की कुचेष्टाओं से, उच्च वाणी, हास्य और मजाक से वायुकाय के जीवों की हिंसा करते हैं। आप में से कई साधु रात-दिन रागी श्रावकों के साथ अनेक प्रकार की बातें करते हैं, कभी-कभी क्रोध से श्रावकों को डांटते हैं और उनका तिरस्कार करते हैं। कोई साधु अपनी सेवा में कमी होने पर श्रावकों को फटकारते हैं और उनको बुरे वचन बोलते हैं। आपकी इस सारी प्रवृत्ति से वायुकायिक जीवों की हिंसा होती है और अन्य प्रकार से भी कर्मबंध करने वाली है। अनगारो! जरा सोचें कि आप कौन हैं? अपने स्वरूप को पहचानें और तद्नुसार अपनी प्रवृत्ति में सुधार करें। आप अहिंसक धर्म के उपासक हैं और श्री वीरप्रभु की शिष्य परम्परा से उनकी संताने हैं। जब आप अपने स्वरूप को भूलकर ऐसी कुत्सित प्रवृत्ति चलायेंगे, तो जैन मुनियों का शुद्ध स्वरूप निराधार बन जायगा और चारित्र धर्म अनाथ हो जायेगा।

"हे साधुओ! मेरे उपरोक्त आचारांग सूत्र के वचनों को अपने हृदय में धारण करें और तद्नुसार प्रवृत्ति कर अपने मुनि जीवन को सफल करें।"

दीक्षाकुमारी के वचन सुनकर वह वृद्ध मुनि और शिष्य चिन्ता में पड़ गये। वे अपने शिथिलाचार के लिये मन में पश्चाताप करने लगे, अपनी दूषित आत्मा को सच्चे दिल से धिक्कारने लगे और शुद्ध मुनि धर्म का पालन करने की इच्छा करने लगे।

कुछ देर पश्चात् वृद्ध मुनि ने निवेदन किया, "भगवती! आपने कृपा कर हमें जो उपदेश दिया है, उसके लिए हम आपके आभारी हैं। आपने प्रत्यक्ष दर्शन देकर हमारी आत्मा का उद्धार किया है और हमारे पापों का प्रलय किया है। पंचमकाल के प्रभाव से हम चारित्र भ्रष्ट हो गये हैं। हमारे चारित्ररत्न को विषमकाल की मलिनता लग गई है। हमारी मनोवृत्ति में अनेक प्रकार के विकार बढ़ते जा रहे हैं। साधु बनकर हमने अपने दोनों लोक भ्रष्ट किये हैं। महादेवी! यद्यपि हमारी शिथिल प्रवृत्ति का मुख्य कारण गृहस्थ श्रावक हैं, फिर भी हम स्वयं राग (मोह) के कारण ही भ्रष्ट हुए हैं। इसमें हमारा भी मुख्य अपराध है। हमारी अवनति का दूसरा विशेष कारण हमारी फूट भी है। ब्राह्मणों में एक कहावत है कि 'भिक्षुक अन्य भिक्षुक को देखकर कुत्ते की तरह भौंकता है।' हम जैन साधुओं में भी आजकल यह कहावत चरितार्थ हो रही है। भिन्न-भिन्न संघाड़ों के साधु परस्पर ईर्ष्या करने लगे हैं। एक संघाड़े में जब

कोई आचार्य, पन्यास या गणि का पद ग्रहण करता है, तो दूसरे संघाड़ा वाले ईर्ष्यावश जैसे-तैसे अयोग्य मुनि को भी आचार्य, पन्यास या गणि की पदवी दे देते हैं। ज्ञान, प्रौढ़ता, विनय या विवेक को नहीं देखा जाता और न पात्र अपात्र की परीक्षा ही की जाती है। उच्छृंखल, क्रोधी और प्रचंड स्वभाव के युवक मुनियों को वरिष्ठ पद का अधिकारी बना दिया जाता है। इससे मुनि धर्म की मर्यादा का भंग होता है। इसके साथ ही अल्प विद्या की सुगन्ध से गाँधी बने युवक मुनि श्रावकों के अत्यधिक सम्मान से फूलकर कुप्पे हो जाते हैं, तथा द्रव्य और भाव से एवं ज्ञान में उनसे श्रेष्ठ अपने गुरु का त्याग कर स्वतन्त्र विहार करते हुए विश्व में अपना शासन चलाने का प्रयत्न करते हैं। महादेवी ! स्वयं मुझे भी अपने एक शिष्य का अनुभव है। मैंने बचपन से उसे दीक्षा देकर पढ़ा-लिखाकर तैयार किया और अनेक प्रकार से उसकी सुधि रखी, तब भी वह मुझे छोड़कर स्वतन्त्र होकर चला गया। इतना ही नहीं, विदेश में जहाँ कहीं वह विचरण करता है, वहाँ मेरी और मेरे शिष्यों की निन्दा करता है। महेश्वरी ! हमारी परिस्थिति ऐसी निकृष्ट हो गई है। ऐसे समय में आपकी सहायता होगी तो ही जैन मुनियों की स्थिति सुधरेगी। आपकी मदद के बिना हम अनाथ और आश्रयहीन हैं।"

उपरोक्त कथन के साथ ही वृद्ध मुनि दीक्षाकुमारी के चरणों में गिर पड़े और अनेक प्रकार से उनसे क्षमा याचना करने लगे।

महादेवी ने दया पूर्वक कहा, "वृद्ध मुनि ! आपकी नम्रता और दीनता को देखकर मुझे दया आती है। आप कोई भव्य जीव हैं और मुझे ऐसी आशा तथा प्रतीति हो रही है कि आप अपना भविष्य जीवन सुधार सकेंगे। फिर भी मुझे उपालंभ तो देना ही पड़ेगा कि आप कभी-कभी बहुत अनहोने साहसिक कार्य कर लेते हो। पात्र-अपात्र का विचार किये बिना अयोग्य बालकों और युवकों को मेरा स्वरूप (दीक्षा) ग्रहण कराते हो। आपका शिष्य पढ़-लिखकर आपसे अलग हो गया, इस बात पर जरा सोचेंगे तो आपको शिक्षा मिलेगी। अब तो आप समझ गये होंगे कि पात्र-अपात्र की परीक्षा किये बिना हर किसी को दीक्षा देने का साहस नहीं करना चाहिये। अधिकारी के सिवाय किसी को चारित्ररत्न की प्राप्ति नहीं कराई जा सकती। जो पुरुष संपूर्ण रूप से योग्य हो उसे ही चारित्ररत्न से अलंकृत करना चाहिये। चारित्ररत्न का प्रकाशित होना बहुत कठिन कार्य है। वृद्ध मुनि ! आगे से आप ऐसा साहस न करें। यदि हो सके तो दशवैकालिक और आचारांग सूत्र का अभ्यास करें। यदि अभ्यास न कर सकें तो किसी विद्वान् मुनि के पास जाकर इन सूत्रों को सुनें। जब आपके हृदय में आपके आचार की रूपरेखा उतरेगी, तभी आपको अपने स्वरूप का

भान होगा और आपको स्वयं अपने दोष दिखाई देने लगेंगे। साधुओ! आप सभी इन वृद्ध गुरु की सेवा करें तथा दशवैकालिक एवं आचारांग सूत्र का अभ्यास कर अपने चारित्र धर्म की जानकारी करें। यदि दिल में स्वतन्त्र होने की इच्छा हो तो उसका त्याग कर गुरु के शिष्यत्व में रहने का निश्चय करें। यदि स्वतन्त्र होने की इच्छा रखोगे तो आपमें उच्छृंखलता, प्रमाद और सुखेच्छा के दोष उत्पन्न हो जायेंगे, जिससे आप अपने साधुत्व से भ्रष्ट हो जायेंगे और परम्परा से इस महान् संसार चक्र में भटकते हुए अंत में अधोगति को प्राप्त होंगे।"

दीक्षा कुमारी के वचन सुनकर वृद्ध मुनि और उसके शिष्य आनन्दित हुए। उन्होंने उस उपदेश को स्वीकार किया और उसके अनुसार आचरण करने का निश्चय किया। वृद्ध मुनि ने गद्गद् कंठ से, कहा, "महेश्वरी! हम पर कृपा कर हमें आचारांग सूत्र सुनावें। आपके मुख से सुनकर हम हमारी आत्मा को कृतार्थ करेंगे और अपने जीवन को सुधार कर स्वधर्म में तत्पर बनेंगे।"

दीक्षाकुमारी—"अभी इतने समय तक रुकने का मेरे पास अवकाश नहीं है। अभी मुझे भारत में बहुत से भागों की यात्रा करनी है। आप स्वयं इस पवित्र सूत्र को सुनें और अपने जीवन को सुधारें।"

इतना कह कर महादेवी अदृश्य हो गई और उपाश्रय में फैला हुआ उनके तेज का प्रकाश भी समाप्त हो गया। उपाश्रय में चारों ओर फिर अन्धकार हो गया। वृद्ध मुनि और शिष्य आश्चर्यान्वित होकर उस दिव्यमूर्ति का फिर से दर्शन करने को उत्कंठित हो उठे। काफी समय तक वे पुनःदर्शन की आशा से बाट देखते रहे, पर वह मनोहर मूर्ति उन्हें फिर दिखाई नहीं दी। दीक्षाकुमारी के अदृश्य होने के बाद वृद्ध मुनि ने अपने शिष्यों को कुछ हितकारी उपदेश दिया और उन्हें सदाचार में प्रवृत्त होने के नियम धारण करवाये। तब से वृद्ध मुनि और उनके शिष्य यथाशक्ति अपने सदाचार में प्रवृत्त होने लगे तथा सदाकाल दीक्षाकुमारी के दर्शन की महिमा गाने लगे। (क्रमशः)

□ • □

आप हर व्यक्ति का चरित्र बता सकते हैं, अगर आप देखें कि वह प्रशंसा से किस तरह प्रभावित होता है।

—सैनेक
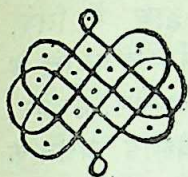
# समाज–सेवी मानव मुनि

☐ श्रीमती विमला डी० मेहता

बलेड़ी ग्राम जिला उज्जैन के कृषक—व्यापारी जैन परिवार में जन्मे श्री दीपचन्द को करीब ५० वर्ष पूर्व बाबा बिनोबाजी ने यकायक मानव मुनि बना दिया। बाबा की पद यात्रा चल रही थी। वे बाबा से मिलने गये। बाबा ने कहा—कपड़े उतारो। उन्होंने झोला व जैकेट उतार दिये। फिर कहा—कुर्ता व बनियान भी उतारो। उन्होंने आदेश की पालना की। फिर तिलक लगाया और चादर ओढ़ाते हुए कहा कि "मानव मुनि चरेवेति"। तब से वे मानव सेवा में और अधिक जुट गये।

मानव मुनि ने एक घटना सुनाई। उनके पास वितरण हेतु कुछ वस्त्र आये। उन्होंने बिहार के मुंगेर जिले के संथाल क्षेत्र, जहाँ आदिवासी लोग बसते हैं, में उन वस्त्रों को बांटने का निर्णय लिया। उन्हें बताया गया कि एक गाँव की झोंपड़ी में चार बहिनें रहती हैं जो अत्यधिक गरीब हैं। वे वहाँ पहुँचे और आवाज लगाई। एक बहिन फटी हुई साड़ी में बाहर आई। उसे एक साड़ी दी गई। उसने कहा कि मैं अपनी बहिनों को बाहर भेजती हूँ कृपया उन्हें भी साड़ियाँ दीजिये। दूसरी बहिन आई, उसे भी साड़ी दी गई। फिर तीसरी आई। उन्हें लगा जो साड़ी वह पहिने थी, उसी साड़ी में पहली व दूसरी बहिनें भी आई थीं। कौतूहलवश उन्होंने झोंपड़ी में झांक लिया। उन्होंने देखा कि तीन वयस्क बहिनें केवल कच्छे पहिने बैठी थीं। उन्हें पता लगा कि चार बहिनों के बीच एक ही फटी साड़ी थी। आदिवासी क्षेत्रों में वैसे ही गरीबी व्याप्त है। पर बिहार के संथाल परगने में तो उसकी अति है। हमारे आदिवासी भाई प्रकृति के नजदीक हैं, सच्चे व सरल प्रवृत्ति के हैं। आज की उलझी हुई और विकृत अर्थ-व्यवस्था में उनका शोषण होना अस्वाभाविक नहीं है और मानव मुनि सेवा करने के उद्देश्य से वहाँ विचरते हैं। वे अहिंसा के नकारात्मक स्वरूप अर्थात् हिंसा नहीं करना, से आगे बढ़कर अहिंसा के सकारात्मक स्वरूप, अर्थात् करुणा और जन वात्सल्य के आधार पर सेवा करना, को क्रियान्वित करते हैं।

शोषण युक्त अर्थ-व्यवस्था के अतिरिक्त शराब व अन्य व्यसन व कई सामाजिक कुरीतियाँ आदिवासियों की इस स्थिति का कारण हैं। हरिजन व

अन्य ग्रामीण लोग भी इनसे त्रस्त हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में इन समस्याओं के समाधान के लिये ग्रामीण आदिवासी एवं हरिजन बाहुल्य क्षेत्रों में शिक्षा, शराबबन्दी एवं सामाजिक सुधार के कई कार्यक्रम उन्होंने हाथ में लिये, जिनका लाभ हजारों लोगों को मिला। इसी कार्य को धर्मपाल प्रवृत्ति के अन्तर्गत और भी व्यापक बनाया गया। रतलाम, जावरा, मन्दसौर, उज्जैन, शाजापुर आदि क्षेत्रों में ८०० ग्रामों में रहने वाले हजारों बलाई जाति के लोगों ने शराब-मांस का त्याग किया। वे शाकाहारी बने और धार्मिक पथ अपनाया। उन गाँवों में नैतिक शिक्षा के लिये पाठशालायें चलाई जाती हैं जहाँ लड़के-लड़कियों को प्रोत्साहित करने के लिये छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं। पढ़े-लिखे नवयुवकों के लिये ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर भी लगाये जाते हैं। नारी उत्थान के लिये विशेष प्रयत्न किये जाते हैं।

इन कार्यकलापों से इस क्षेत्र में नई चेतना आई है। पदयात्रायें भी आयोजित की जाती हैं। मानव मुनि व कई प्रतिष्ठित व्यक्ति गाँवों में जाते हैं और नैतिक उत्थान का प्रयास करते हैं। इन यात्राओं का लाभ ग्रामीण लोगों को तो मिलता ही है पर पदयात्री भी कम लाभान्वित नहीं होते हैं। शहरों में आराम से रहने वाले, वास्तविकता से कुछ दूर, पदयात्रियों को काली कलूटी गरीबी के वीभत्स रूप का परिचय और दूसरी तरफ मानवीय सरलता का आभास उन्हें होता है, जिससे उनके जीवन-मूल्यों में कुछ परिवर्तन आता है और उनके लिये एक विशिष्ट अनुभव बन जाता है। इस कार्य में आचार्यश्री नानालालजी महाराज सा० से उन्हें विशेष प्रेरणा मिली है।

उक्त प्रवृत्तियों के अतिरिक्त विनोबाजी द्वारा चलित अन्य संस्थाओं से भी वे सम्बन्धित हैं। "आचार्य कुल" संस्थान मध्य प्रदेश के वे अध्यक्ष हैं जिसका उद्देश्य है—सज्जन व्यक्तियों को संगठित कर उनके नैतिक व व्यक्तित्व स्तर का लाभ उठाकर समाज में व्याप्त दूषित वातावरण दूर करना। इसी प्रकार वे "सन्त-सेवक, समुद्यत-परिषद्" के संयोजक हैं जिसका लक्ष्य है—धार्मिक सम्प्रदायों को और सेवकों को जोड़ना ताकि सन्तों की आध्यामिक शक्ति व सेवकों की निष्काम सेवा का सम्मिश्रण, जन-जागृति, जन-उद्धार के लिये हो सके। आँखों व अन्य बीमारियों के उपचार के कैम्प भी ग्रामीण क्षेत्रों में लगवाते हैं।

मानव मुनि ने एक बार अपनी डायरी में लिखा कि "मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं के लिये स्वयं मेहनत करनी चाहिये क्योंकि जहाँ दूसरे का शोषण करके या दूसरे पर अन्याय, अत्याचार करके धोखेबाजी से रोजी-रोटी कमाई जाती है, वहाँ हिंसा है। उसमें दूसरों के आनन्द पर डाका डाला जाता है जिससे अपने चित्त की शान्ति और दूसरे का आनन्द खत्म हो जाता है।

असल में जिसकी आजीविका में स्वयं-श्रम लगा है, वही रोजी-रोटी मनुष्य जीवन के लिये सात्विक है ?"

मानव मुनि से पूछा गया कि आप क्या सीख देना चाहेंगे ? बोले—"अपरिग्रही बनो, आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करो। संग्रह में संघर्ष है। घृणा से मुक्त रहो, सबके साथ प्रेम से रहो।" इस प्रकार की बातें कई लोग प्रतिदिन कहते हैं पर मानव मुनि तो उनका पालन करते हैं। अहिंसा व अपरिग्रह के सम्बन्ध को उन्होंने समझा है।

मानव मुनि जैसे विशुद्ध सेवी को मैं श्रद्धा अर्पित करती हूँ। •

# कृतज्ञता का आदर

□ श्री कमल सौगानी

सुप्रसिद्ध लुकमान हकीम बचपन में गुलाम थे। एक दिन उनका सेठ बाजार से एक ककड़ी लेकर आया और खाने लगा। ककड़ी बहुत कड़वी निकली, अतः उन्होंने लुकमान को वह ककड़ी दी, और कहा—"ले, इसे तू खा"।

सेठ ने मन में सोचा था, ऐसी कड़वी ककड़ी लुकमान नहीं खा सकेगा, परन्तु लुकमान जरा भी मुँह बिगाड़े बिना सारी ककड़ी खा गया। यह देखकर सेठ ने पूछा—"यह जहर की तरह कड़वी ककड़ी तूने किस तरह से खाई ?"

लुकमान ने बड़ी नम्रता से कहा—"सेठ साहब ! आपने मेरे साथ आज तक जैसा बर्ताव किया है, उससे मुझे कभी ऐसा विदित नहीं हुआ कि मैं आपका खरीदा हुआ गुलाम हूँ। आपके हाथ से मेरे ऊपर बहुत से उपकार हुए हैं, तो फिर आपकी बख्शी हुई कड़वी ककड़ी मैं क्यों न आनन्दपूर्वक खाता ?"

सेठ भी बहुत सज्जन था। वह लुकमान के गुणों से पहले ही से उसे चाहता था। इस उत्तर से उसने जाना कि इस गुलाम ने मुझे आड़ में एक जरूरी उपदेश दिया है। भगवान् की दया अपार होती है, और समय-समय पर भगवान् जो दुःख देता है, उनसे जरा भी विचलित न होकर किस तरह सहने की जरूरत है, यह बात आज मैंने लुकमान के वचनों से सीखी है। ऐसा सोचने के बाद सेठ को विश्वास हुआ कि लुकमान अब गुलाम के तौर पर रहने लायक नहीं है। इसने आज के बर्ताव से मेरे मन में पवित्र भाव उत्पन्न किया है, इसलिये यह तो मेरे लिये गुरु के समान पूज्य है।

ऐसा विचार कर सेठ ने लुकमान को फौरन गुलामी से मुक्त कर दिया।

स्वामी और सेवक ऐसे ही होने चाहिए।

स्टेशन रोड, भवानी मंडी (राज०)

# साहित्य समीक्षा

□ डॉ० नरेन्द्र भानावत

**१. दशवैकालिक सूत्र**—आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा०, प्र० सम्यक्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-३, पृ० ४३२, मू० १५.०० ।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० संस्कृत-प्राकृत के प्रकाण्ड विद्वान्, गूढ़ आगमवेत्ता और प्रखर व्याख्याता हैं। नन्दी सूत्र, प्रश्न व्याकरण सूत्र, अन्तगढ़ सूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र पर किया गया आपका विवेचन और व्याख्यान पण्डितों और स्वाध्यायियों के लिये बड़ा उपयोगी और सहज है। मण्डल द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र का हिन्दी पद्यानुवाद प्रकाशित किया गया था जो बड़ा लोकप्रिय रहा। दशवैकालिक सूत्र के हिन्दी पद्यानुवाद की माँग बराबर बनी रही। इस प्रकाशन द्वारा दशवैकालिक सूत्र का मूल पाठ, हिन्दी पद्य, अन्वय और भावानुवाद सहित प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी पद्यानुवाद पं० शशिकान्तजी झा द्वारा किया हुआ है जो अत्यन्त सरल और सुगम बन पड़ा है। प्रत्येक अध्ययन के बाद विशिष्ट स्थलों और शब्दों के सम्बन्ध में आवश्यक टिप्पणियाँ देने से ग्रन्थ की महत्ता और उपयोगिता विशेष बढ़ गई है। नवदीक्षित मुमुक्षु आत्माओं के अध्ययन के लिये यह ग्रन्थ अनिवार्य सा है। जैन साध्वाचार को समझने में यह विशेष मार्ग-दर्शक है। साधकों और स्वाध्यायियों में इस ग्रन्थ का अधिकाधिक प्रचार हो, इस दृष्टि से इसका मूल्य लागत कीमत से भी कम रखा गया है जो अनुकरणीय है।

**२. श्री स्था० जैन चातुर्मास सूची १९८३**—सं० बाबूलाल जैन, प्र० अ० भा० स्था० जैन चातुर्मास सूची प्रकाशन परिषद्, तिरुपति अपार्टमेंटस, रूम नं० १०५, आकूर्ली क्रॉस रोड नं० १, कांदिवली (पूर्व) बम्बई-४०० १०१, पृ० ४२०, अर्ध मू० ७.०० ।

श्री बाबूलाल जैन गत ५ वर्षों से इस प्रकार की चातुर्मास सूची का प्रति वर्ष प्रकाशन कर रहे हैं। इस प्रकाशन में उत्तरोत्तर निखार और वैशिष्ट्य आता जा रहा है। प्रस्तुत प्रकाशन में स्था० परम्परा के विभिन्न सम्प्रदायों के संत-सतियों की चातुर्मास तालिका का सुन्दर आकलन किया गया है। प्रमुख संत-सतियों के संक्षिप्त जीवन परिचय देने से इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है। कई तुलनात्मक तालिकाएँ देकर तथा जैन समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों की सूची देकर इस ग्रन्थ को शोधात्मक रूप भी प्रदान किया गया है। यह प्रकाशन संत-गौरव की वृद्धि में सहायक और प्रत्येक संघ के लिये मार्ग-दर्शक है।

**३. ढोलक कौन बजायेगा ?**—श्री गणेश मुनि शास्त्री, प्र० अमर जैन साहित्य संस्थान, कोरपोल, बड़ा बाजार, उदयपुर, पृ० १००, मूल्य ५.०० ।

श्री गणेश मुनि का कथा साहित्य अब ऐतिहासिक, पौराणिक परिवेश से हटकर समसामयिक यथार्थ जीवन घटनाओं से जुड़ गया है। इसमें संकलित १२ कहानियाँ इस कथन की सूचक हैं। मुनि श्री अपना कथ्य वर्तमान समाज की विसंगतियों, विडम्बनाओं और रूढ़ परम्पराओं से लेकर उसे इस प्रकार मोड़ देते हैं कि वह सामाजिक स्वस्थता, नैतिक उन्नयन और चरित्र-निर्माण के लिये प्रेरणादायी बन उठता है। शैली स्पष्ट, सुबोध होने के साथ-साथ व्यंग्य-विनोद का पुट लिए हुए है। सामाजिक यथार्थ और धार्मिक, नैतिक आदर्श का सुन्दर समन्वय हुआ है इन कहानियों में।

४. **सचाई के पर्दे पर**—लेखक, प्र० आदि वही।

श्री गणेश मुनि सहज और सहृदय कवि हैं। उनमें प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार की काव्य-रचना करने की प्रतिभा है। इस पुस्तक में धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, नैतिक और साहित्यिक क्षेत्रों के विविध पक्षों पर छोटी-छोटी क्षणिकाओं द्वारा चुटीले व्यंग्य और कटाक्ष किये गये हैं। व्यक्तित्व के टूटन और मूल्यों के बिखराव पर लिखी गयी ये क्षणिकाएँ अधिक प्रभावी और नुकीली बन पड़ी हैं।

५. **उद्‍बोध**—मुनि धर्मचन्द 'पीयूष', युवा प्रकाशन अ० भा० तेरापंथ युवक परिषद्, लाडनूँ—३४१ ३०६, पृ० १६२, मू० ४.००।

मुनि श्री लघु प्रेरक बोध कथाएँ लिखने में सिद्ध हस्त हैं। इसमें संकलित ७४ कथाएँ विविध विषयक हैं। इतिहास, पुराण, लोकजीवन, धर्म शास्त्र आदि विविध स्रोतों से मुनि श्री ने ये कथाएँ संकलित की हैं। सभी कथाएँ जीवन निर्माण में सहायक और मानव मूल्यों की प्रतिष्ठापक हैं। शैली रोचक, सुबोध और प्रवाहपूर्ण है।

६. **महावीर के दस श्रावक**—मुनि विनयकुमार 'आलोक', प्र० गतिमान प्रकाशन, १२३७, रास्ता अजबघर, जयपुर—३०२ ००३, पृ० ११६, मू० ८.००।

मुनि श्री मूलतः नई संवेदनाओं के कवि हैं पर इस कृति के माध्यम से वे प्राचीन आगमिक जीवन-गाथाओं को आधुनिक कथा-शैली में प्रस्तुत करने में भी सफल हुए हैं। 'उपासक दशांग' सूत्र में भ० महावीर के जिन दस आदर्श श्रावकों का वर्णन है, उस वर्णन के आधार पर मुनि श्री ने प्रत्येक उपासक श्रावक के साथ उसके विशिष्ट पहचान धर्मी गुणवत्ता को रेखांकित किया है। यथा आनन्द की विनम्रता, कामदेव की सम्यक्त्व दृष्टि आदि। शैली रोचक, सुगम और प्रभावपूर्ण है। □

# बाल-कथामृत [२०]

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमशः २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

## दौलत सच्चाई की

□ श्री अशोक श्रीश्रीमाल

बहुत दिन हुए भारत में फैजपुर नाम की एक छोटी सी रियासत थी। फैजपुर में नसीरूद्दीन शाह नामक एक प्रकांड विद्वान् रहते थे। नसीरूद्दीन बड़े ईमानदार और अच्छे चरित्र के व्यक्ति थे, इसलिए वह फैजपुर में बड़े जाने-माने जाते थे।

एक बार नसीरूद्दीन को किसी काम से बाहर जाना पड़ गया। पानी के ज़हाज पर सफर के लिए रवाना होने से पहले नसीरूद्दीन ने सभी जरूरत की चीजों के साथ एक हजार स्वर्ण अशर्फियां भी अपने साथ रखलीं। जहाज फैजपुर बन्दरगाह से चल पड़ा।

नसीरूद्दीन अपने मिलनसार स्वभाव के कारण जहाज के सभी यात्रियों में जल्दी ही घुल-मिल गये। उनके अच्छे स्वभाव से सभी यात्री बहुत प्रभावित हुए। एक यात्री से नसीरूद्दीन का बहुत अच्छा परिचय हो गया। वह अपना अधिकांश वक्त नसीरूद्दीन के साथ गुजारने लगा। एक दिन बातों के दौरान नसीरूद्दीन ने अपनी एक हजार सोने की अशर्फियां उस यात्री को दिखा दीं। इतनी सारी अशर्फियां देखकर यात्री की नीयत बिगड़ गई। वह कैसे भी इन अशर्फियों को हासिल करना चाहता था। चोरी तो वह कर नहीं सकता था, क्योंकि बाद में जहाज में तलाशी होती तो वह आसानी से पकड़ा जाता।

आखिरकार उसने अशर्फियां पाने का एक अच्छा सा उपाय सोच ही लिया।

अगले दिन सवेरे-सवेरे वह यात्री चिल्लाने लगा—"मैं तो लुट गया……… मेरी एक हजार अर्शाफियां जहाज में किसी ने चुरालीं………हाय, अब मैं क्या करूँ………?"

यह सुनकर जहाज के सभी यात्री उसके पास आये। सारी बात सुनने पर उन यात्रियों में से एक ने कहा—"घबराओ मत। चोर होगा तो जहाज में ही। अभी सबकी तलाशी लेकर जिसके पास अर्शाफियां निकलेंगी, उसे पकड़ लेंगे।"

एक-एक कर जहाज के सभी यात्रियों की और उनके सामानों की तलाशी ली गई। लेकिन किसी के पास अर्शाफियां न निकलीं। अन्त में नसीरूद्दीन और उनके सामान की तलाशी लेना बाकी रह गया। उन्हें देखकर जहाज के एक यात्री ने कहा—"अरे, नसीरूद्दीन तो चोरी कर ही नहीं सकते। उनकी क्या तलाशी ली जाए? उन पर सन्देह करना खुद को गाली देने के बराबर है।"

सभी यात्रियों ने उस यात्री की बात का समर्थन किया। लेकिन खुद नसीरूद्दीन ने कहा—"नहीं, जब आप लोगों ने सब की तलाशी ली है तो मेरी भी जरूर लीजियेगा। इससे किसी भी किस्म का सन्देह नहीं रह जायेगा।"

नसीरूद्दीन की बात सुनकर वह यात्री बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि अब जैसे ही नसीरूद्दीन के पास एक हजार अर्शाफियां निकलेंगी, मैं फौरन कह दूँगा कि हाँ, यही हैं मेरी अर्शाफियां।

नसीरूद्दीन के बहुत जोर देने पर उनकी तथा उनके सामान की तलाशी ली गई। लेकिन अर्शाफियां नहीं मिलीं। जहाज के कर्मचारियों ने जहाज का कोना-कोना छान मारा लेकिन कहीं पर अर्शाफियां नहीं मिलीं। तब सभी ने समझ लिया कि वह यात्री झूठ बोल रहा है।

उधर वह मुसाफिर हैरत में था कि नसीरूद्दीन की अर्शाफियां आखिर गई कहां?

बात आई-गई हो गई। सभी यात्री इस घटना को भूल गये। दो-तीन दिन बाद उस यात्री ने नसीरूद्दीन से कहा—"मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं।" सहज स्वर में नसीरूद्दीन ने कहा—"पूछो"।

उस मुसाफिर ने पूछा—"जब आपकी तथा आपके सामान की तलाशी ली गई तो आपके पास अर्शाफियां क्यों नहीं निकलीं? आखिर आपने उन्हें कहां छुपाया?"

यह सुनकर नसीरूद्दीन के होठों पर सहज मुस्कान आ गई, उन्होंने कहा— "उनको मैंने समुद्र में फेंक दिया था।"

"समुद्र में ? लेकिन क्यों ?"—बहुत आश्चर्य से उस यात्री ने प्रश्न किया।

नसीरूद्दीन ने जवाब दिया—"देखो भाई, बहुत सीधी सी बात है। मैंने लोगों के विश्वास और मेरी सच्चाई पर यकीन करने की दौलत बहुत मेहनत से कमाई है। तलाशी के वक्त मेरे पास अशर्फियां निकलतीं तो भी मेरे कहने से लोग मेरी बात पर विश्वास कर लेते। लेकिन मेरी ईमानदारी और सच्चाई पर उनके दिल में हमेशा के लिए सन्देह बन जाता। मेरे पास सच्चाई और विश्वास की दौलत है। मैं थोड़े से धन के लालच में इतनी बड़ी दौलत नहीं खोना चाहता था।"

नसीरूद्दीन की यह बात सुनकर उस यात्री ने अपनी सारी चालबाजी नसीरूद्दीन को बता दी और उनके कदमों में गिरकर फूट-फूटकर रो पड़ा। नसीरूद्दीन ने उसे उठाकर गले लगा लिया और माफ कर दिया।

## अभ्यासार्थ प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये—

१. नसीरूद्दीन के स्वभाव को अच्छा क्यों कहा गया है ?
२. यात्री ने नसीरूद्दीन की अशर्फियां पाने के लिए क्या उपाय सोचा ?
३. नसीरूद्दीन ने अशर्फियों को समुद्र में क्यों फेंक दिया ?
४. 'मैं थोड़े से धन के लालच में इतनी बड़ी दौलत को नहीं खोना चाहता था।' यह बड़ी दौलत क्या थी ?
५. यदि आप नसीरूद्दीन के स्थान पर होते तो क्या करते ?
६. सच्चाई को दौलत क्यों कहा गया है ?
७. इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

—श्रीश्रीमाल भवन, भवानीमंडी, (राजस्थान)

## उत्तरदाताओं के नाम

**'जिनवाणी'** के सितम्बर, १९८३ के अंक में प्रकाशित श्री राजीव भानावत की कहानी **'हृदय परिवर्तन'** के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित बाल पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सब को धन्यवाद।

**भवानीमण्डी** से रघुनन्दन शर्मा, राजेश मूथा, **जोधपुर** से अरविन्द भंडारी, अलका भण्डारी, **पाली** से लक्ष्मीचन्द रूणवाल, कुसुमलता सुराणा, **नीमच** से संजय आंचलिया, **अलसूर** से सन्तोष कुमारी, **मन्दसौर** से प्रेरणा तलेरा, प्रीति सक्सेना, **सिरोही** से संजयकुमार जैन, **रायचूर** से मदनलाल जैन, **बीजापुर** से शीतलकुमार, सम्पतलाल रूणवाल, **जयपुर** से शिवकुमार जालान, संजय सिंघवी, **अलीगढ़** से रवीन्द्रकुमार जैन, **ब्यावर** से राजेन्द्रकुमार संचेती, **गुलाबपुरा** से निर्भयकुमार तातेड़, सज्जनसिंह छाजेड़, घेवरचन्द लोढ़ा, शिवप्रसाद जोशी, **पनवाड़** से राजकुमार पोखरना, **खारड़ी** से अशोककुमार चाणोदिया, **बांसाखेड़ी** से प्रशान्त सक्सेना, **बावड़ी** से अशोककुमार कटारिया, **सिन्धनूर** से लेखचन्द बोहरा, **स्टेशन बजरिया, सवाईमाधोपुर** से महेन्द्रकुमार जैन **श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला** से अनिलकुमार जैन, अरुणकुमार जैन, सुरेन्द्रकुमार जैन, वीरेन्द्रकुमार जैन, सतीशचन्द्र जैन, महेन्द्रकुमार जैन, कु. सुजाता, कु. आशा जैन, कु. निर्मला, कु. उर्मिला, कु. सरोज, कु. बीना, कु. ममता रानी, कु. इन्द्रा, कु. मधुबाला, सुनील, जितेन्द्र, कु. साधना, कु. जयमाला, कु. मीना, कु. गुणमाला, कु. अनिता खण्डेलवाल, कु. सुषमा सक्सेना, कु. सीमा श्रीवास्तव, कु. रजनी गर्ग एवं निरंजन गर्ग ।

## पुरस्कृत उत्तरदाता

**प्रथम** : प्रदीप भन्साली, सुपुत्र श्री पुखराजजी भन्साली, २०५ II पोलो, **जोधपुर** (राज.)

**द्वितीय** : सुशीलकुमार जैन, सुपुत्र श्री रामकल्याणजी जैन, पाटोली वाले, अध्यापक, **पो. अलीगढ़** (जिला टोंक) राज.

**तृतीय** : कु. सावित्री जैन, सुपुत्री श्री शान्ताप्रसाद जैन, प्लाट नं. १२१, इन्द्रा कॉलोनी, **मानटाऊन, सवाईमाधोपुर** (राज.)

---

## आवश्यक निवेदन

'जिनवाणी' के सभी ग्राहकों व हितैषियों से निवेदन है कि वे ग्राहक सदस्यता शुल्क, भेंट-राशि आदि 'जिनवाणी' के सम्पादकीय कार्यालय के पते पर न भेजकर निम्न पते पर ही भेजें।

'जिनवाणी' कार्यालय
दुकान नं. 182-183 के ऊपर,
बापू बाजार, **जयपुर-302 003**

# लक्ष्मी : स्वरूप और उपासना

□ कुमारी कौशल्या नागौरी

जगमगाते दीपों का त्यौहार दीपावली सदा की भाँति फिर आ पहुँचा—रावण पर राम की विजय अर्थात् अत्याचार और असत्य पर न्याय और सत्य की विजय की विकास यात्रा........प्राणिमात्र के प्रति करुणा, प्रेम तथा अहिंसा के संदेशवाहक भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि। हर्ष, उमंग तथा आत्मा-लोचन का यह पर्व अपनी अपूर्व आभा के साथ-साथ अनेकानेक प्रतीकों की मार्मिक अभिव्यक्ति अपने में समेटे हुए है।

दीपावली पर्व लक्ष्मी-पूजन के लिए प्रसिद्ध है। लक्ष्मी—जिसे सामान्य रूप से धन-सम्पदा तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। ऐसी कथा प्रचलित है कि एक बार देवों एवं दानवों ने मिल कर जब समुद्र-मंथन किया तो उसमें चौदह रत्नों—धन्वन्तरि, उच्चश्रवा, अमृत, विष, ऐरावत, सुरभि कामधेनु, पारिजातक, कौस्तुभमणि आदि के साथ लक्ष्मी की प्राप्ति हुई।

वैदिक साहित्य में लक्ष्मी को विविध रूपों में देखा गया है। 'ऋग्वेद' में जहाँ लक्ष्मी को अदिति, इला, सरस्वती, इन्द्राणी, वरुणानि, श्री एवं श्रिये आदि के रूप में व्यक्त किया गया है तो वहीं अन्य तीन वेदों में भी लक्ष्मी को सम्पन्नता की देवी के रूप में माना है तथा वहाँ भी 'श्री' तथा 'श्रिये' शब्द का प्रयोग मिलता है। 'शतपथ ब्राह्मण' में लक्ष्मी को शांति, आभा, सम्पन्नता तथा सुन्दरता की देवी माना है। विविधरूपा लक्ष्मी के वाहन भी विविध हैं। लक्ष्मी वाहन के रूप में उल्लू तो प्रसिद्ध है ही किन्तु 'महालक्ष्मी स्तोत्र' में उसका वाहन गरुड़ बताया गया है तथा 'अथर्ववेद रहस्य' में हाथी का उल्लेख मिलता है। लक्ष्मी को कमलआसिनी भी कहा गया है।

'मार्कण्डेय पुराण' के अनुसार महालक्ष्मी मूलभूत आद्याशक्ति है। वह सत्व, रज और तमस गुणों से युक्त है। सत्व-गुण के प्राधान्य रूप में वह ज्ञान और प्रभा की प्रतीक सरस्वती है। रजस-गुण के प्राधान्य रूप में वह भरण-पोषण की अधिष्ठात्री देवी है। पृथ्वीरूपा है। उर्वरता की प्रतीक है। इसी रूप

में गरुड़वाहिनी है। तमस-गुण के प्राधान्य रूप में वह लालसा, तृष्णा, लोभ, प्रमाद की प्रतीक है। जिसके मन में स्वार्थ, ममत्व, लालच, भोगवृत्ति संग्रह-भावना का प्राधान्य होता है, वह लक्ष्मी के इसी रूप की उपासना करता है। इस रूप में लक्ष्मी उलूकवाहिनी मानी गई है जिसे प्रकाश में भी दिखाई नहीं देता। लक्ष्मी के इस रूप का उपासक येन-केन-प्रकारेण रिश्वत, बेईमानी, टैक्स चोरी, वस्तु में मिलावट, कम नाप-तौल आदि खोटे तरीकों से धन-संग्रह में लगा रहता है। अपनी आवश्यकताएँ बढ़ाता रहता है। उसकी इच्छाएँ कभी तृप्त नहीं होतीं। वह क्रूर और कठोर होता है। दूसरों के सुख-दुःख में वह सहभागी नहीं बनता। अपने क्षणिक सुख भोग के लिए दूसरों को पीड़ित व संतप्त करने में उसे तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होती। लक्ष्मी के इस रूप की उपासना त्याज्य व निन्दनीय है। दुःख इस बात का है कि आज के अधिकांश लक्ष्मी उपासक इसी श्रेणी के हैं। दीपावली के दीप इस बात के संकेतक हैं कि दिल में रहे हुए इस तृष्णा रूप अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से नष्ट किया जाये। क्रिया के साथ ज्ञान का योग होने पर यह बोध जागृत होता है कि धन की प्राप्ति शुभ साधनों से हो, लाभ शुभ हो और उसका उपयोग-उपभोग निजी स्वार्थ में, भोग-विलास में न होकर जनहित व लोककल्याण में हो।

धन अथवा सम्पत्ति वैयक्तिक अधिकार नहीं है। वह समष्टि की सम्पत्ति है। यही भावना हम भगवान महावीर के परिग्रह परिमाण व्रत व महात्मा गांधी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत में देखते हैं।

लक्ष्मी चंचल तथा अस्थिर होती है। कहा भी गया है—'चंचलायै नमस्तुभ्यं चपलायै नमो नमः।' इतना निश्चित है कि धन के उन्माद में उसका दुरुपयोग करने वालों तथा व्यसनोन्मुखी प्रवृत्ति के लोगों के यहां लक्ष्मी नहीं ठहरती। जनहित तथा प्राणीमात्र के प्रति संवेदनशील पुण्यात्माओं पर लक्ष्मी सदा कृपाशील रहती है। 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' में लक्ष्मी स्वयं कहती है—

स्थिरा पुण्यवतां गेहे, सुनीतिवेदिनाहम्।
गृहस्थानां नृपाणं वा, पुत्रवत् पालयामि तान्॥

अर्थात् "पुण्यशील गृहस्थियों और सत् नीति पर चलने वाले राजाओं के घर में मैं स्थायी रूप से निवास करती हूँ और उनकी पुत्र की भाँति पालना करती हूं।"

इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे पुरुषार्थ-प्रयत्नों के साथ जिस प्रकार के भाव-संकल्प जुड़े हुए होंगे लक्ष्मी भी वैसी ही प्राप्त होगी। समुद्र-मंथन के समय लक्ष्मी के साथ अमृत के संग विष और शराब भी निकली थी। स्वार्थों के

वशीभूत होने पर लक्ष्मी विष के समान घातक होगी तथा अभिमान के दर्प से वह शराब की भाँति उन्माद उत्पन्न करने वाली होगी। ये दोनों ही स्थितियाँ विनिष्टकारी हैं। जब हम श्रम, सेवा व समर्पण के भाव से लक्ष्मी-प्राप्ति का प्रयत्न करेंगे तो वह लक्ष्मी अमृत तुल्य सिद्ध होगी। उसमें अनुराग व कल्याण का भाव परिलक्षित होगा। डॉ० विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में "लक्ष्मी धन के प्रसार की नहीं, आत्मा के विस्तार की अधिदेवता है। वे इन्द्रियों की अधिष्ठात्री हैं, समस्त चेतन-अर्धचेतन जीवन्त जगत् की इन्द्रियों की अधिष्ठात्री हैं, समस्त गोचर संसार के साथ रागात्मक संबन्ध जोड़ने वाली चैतन्य दीपिका है।"

'रागात्मक (अनुराग भाव) प्रसार की देवी' लक्ष्मी के इस चैतन्य स्वरूप को हमें समझना है। उसके इस आलोकित प्रकाश में हमें 'कर्म लक्ष्मी' को जागृत करना है। राष्ट्र का हर नागरिक यदि 'कर्म लक्ष्मी' के इस प्रतीक को समझ-कर्तव्य-पथ पर आरूढ़ हो जाता है तो राष्ट्र की बिगड़ती आर्थिक दशा को सही मार्ग पर नियोजित कर सकने में वह सफल हो सकता है।

धन का सही उपयोग तभी सम्भव होता है जब ज्ञान का पुट उसमें हो। 'श्री' का अर्थ सरस्वती भी है। सरस्वती के अतिरिक्त विष्णुप्रिया होने के कारण लक्ष्मी पालक भी है तथा दूसरी ओर शक्ति की प्रतीक महाकाली भी है। इस प्रकार लक्ष्मी ज्ञान, क्रिया और भावना का अनूठा समुच्चय है।

धन की प्रतीक लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए तप तथा श्रम करना पड़ता है। लक्ष्मी चूंकि पृथ्वी का भी एक रूप है अतः पृथ्वी पर उपज पैदा करने के लिए कड़ी मेहनत तथा लगन की आवश्यकता है। पृथ्वी की उदारता, परिपूर्णता, क्षमाशीलता तथा उर्वरता प्रकारान्तर से लक्ष्मी की ही विशेषताएँ हैं। इन प्रतीकों को यदि हम अपने जीवन के साथ संयुक्त करें तो हमारा व्यक्तित्व आन्तरिक सौंदर्य से जगमगा उठता है। आन्तरिक सौन्दर्य क्षमा, दया, करुणा, सहकार, सेवा आदि गुणों की ही अभिव्यक्ति है।

दीपावली के पावन पर्व पर हमें लक्ष्मी के सात्विक रूप को गहराई से समझने की आवश्यकता है। लक्ष्मी पूजन की औपचारिकता मात्र पूरी कर देना ठीक नहीं। धन और वैभव की देवी की उपासना में निहित मर्म के रहस्य को समझ कर, हमें न सिर्फ व्यक्तिगत जीवन में शुद्धता के लिए प्रयास करना है वरन् राष्ट्रीय निर्माण में भी अपना योगदान देना है। कमलासना लक्ष्मी कमल की भाँति केवल सौंदर्य, शोभा, सौरभ या रस की प्रतीक नहीं है, उसमें शक्ति भी है तथा शील भी। मात्र भोगपरायणता हमें कर्त्तव्यविमुख तथा कर्मविहीन

कर देती है। इसलिए हमें 'श्री' या लक्ष्मी के साथ 'ज्ञान' अर्थात् विवेक तत्त्व को जागृत करना है। विवेक तत्त्व जागृत होते ही हम कमलासना तथा सिंह-वाहिनी लक्ष्मी की आराधना सही अर्थों में कर, जीवन को शक्तिमत्ता, सार्थकता तथा पूर्णता प्रदान कर सकेंगे। अभाव तथा दारिद्र्य को जड़ समूल नष्ट करने का संकल्प हम इस पर्व पर करें—यही दीपावली की आधुनिक संदर्भों में प्रासंगिकता है। सर्वत्र एक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर, प्रेम और सद्भाव का प्रसार कर हम सच्चे अर्थों में लक्ष्मीपति कहलायें। यह तभी सम्भव है जब हम जड़ धन-जड़ता के प्रति ममत्व को छोड़कर आत्म-धन (आत्म-गुण) के विकास में सचेष्ट बनें।

—प्राध्यापिका, अर्थशास्त्र विभाग
मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

## मन की झील

☐ डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'

जेठ की तपती दुपहरी थी। विभु बुद्ध को प्यास लगी थी। प्रबुद्ध शिष्य आनन्द को निर्देश दिया गया। वे पहाड़ी निर्झर से जल लेने गए। वहाँ देखा कि निर्झर में से बैलगाड़ियों का गुजरना हो रहा है जिससे सारा निर्झर-जल गंदला होता जा रहा है। वे वापस लौटे और विभु से बोले—"नाथ ! मैं नदी पर से जल लेने गया था। निर्झर का जल बैलगाड़ियों के कारण गंदला हो गया है।" विभु ने पुनः निर्झर पर जाने का आदेश दिया। आनन्द ने देखा कि जल अब भी स्वच्छ नहीं है। आनन्द पुनः लौटे।

यह क्रम एक नहीं अनेक बार हुआ। जब चौथी बार आनन्द का जाना हुआ तो आनन्द अवाक् रह गए। सब सड़े-गले पत्ते नीचे बैठ चुके थे। काई सिमट कर दूर जा चुकी थी। जल निर्मल हो गया था। इस बार आनन्द जल लेकर लौटे। लेकिन आँखों में जिज्ञासा थी।

विभु ने आनन्द की आँखें पढ़ीं। वे बोध देने लगे—"आनन्द ! हमारे जीवन के जल को भी विचारों की बैलगाड़ियों ने गंदला किया हुआ है और हम जीवन से भाग खड़े होते हैं। लेकिन भन्ते ! हमें भागना नहीं चाहिए अपितु मन की झील के शांत-शमित होने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुमने देखा कि निर्झर की नाईं सब कुछ साफ-स्वच्छ हो जाता है।

—३९४, सर्वोदय नगर, आगरा रोड, अलीगढ़

# समाज–दर्शन

## जयपुर में धर्म-लहर

प्रातःस्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी आचार्य प्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म० सा० आदि ठाणा १३ तथा महासती श्री शान्तिकँवर जी म० सा० आदि ठाणा ४ सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। श्रद्धेय आचार्य श्री, मुनि मण्डल एवं महासती मण्डल का स्वास्थ्य समीचीन चल रहा है। धर्म ध्यान, जप-तप-स्वाध्याय की अनूठी श्रृंखला क्रमशः गति पर है।

नित्य प्रति लाल भवन चौड़ा रास्ता पर मधुर व्याख्यानी पं० र० श्रीमान मुनि जी म० सा०, मधुर व्याख्यानी श्री हीरामुनि जी म० सा० के प्रभावशाली व्याख्यानों का श्रद्धालु श्रोताओं द्वारा अच्छी उपस्थिति के साथ लाभ उठाया जा रहा है। आगन्तुक संघ एवं साधर्मी बन्धुओं का आवागमन जारी है जिसका जयपुर संघ द्वारा यथायोग्य सत्कार किया जा रहा है।

दि० ११ अक्टूबर को मासखमण तपस्याओं का पूर्ति समारोह सराहनीय रहा। श्रीमती प्रेमिलादेवी धर्मपत्नी श्री संतोषकुमार जी बंब, श्रीमती पारस रानी धर्मपत्नी श्री धनरूप मल जी हीरावत, श्रीमती प्रेमबाई धर्मपत्नी श्री भागचंद जी के मासखमण तपस्या के पूर्ति दिवस बड़े ही सादगीमय वातावरण में सोत्साह सम्पन्न हुए।

श्री रामप्रसाद जी जैन, मौहम्मदपुरा एवं श्री अमृतलाल जी शाह जयपुर ने सजोड़े आजीवन शील का खंद उठाया।

१४ से १६ अक्टूबर तक कतिपय विशिष्ट साधकों का त्रिदिवसीय साधना शिविर परमाराध्य आचार्य श्री की पवित्र छत्र-छाया में सानन्द सम्पन्न हुआ। साधकों को साधना की पद्धति व श्रद्धा का दिग्दर्शन कराया गया।

३० अक्टूबर से १ नवम्बर तक त्रिदिवसीय स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के तत्त्वावधान में स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा किया गया। जिसमें लगभग ३२–३३ स्वाध्यायियों के अनुभव सुने गये तथा आवश्यक परामर्श एवं सुझाव तत्काल दिये गये जिससे वक्तृत्व कला प्रभावशाली बन सके। शिविरार्थियों का अध्ययन-अध्यापन कुशलता से संपादित किया गया।

## आमन्त्रण-पत्र

अखिल भारतवर्षीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की कार्यकारिणी की मीटिंग दिनांक १८-११-८३, शुक्रवार दोपहर को १ बजे तथा साधारण सभा का वृहद्-अधिवेशन दिनांक १९-११-८३ शनिवार को जयपुर में आयोजित किया गया है। सभी बन्धु सादर आमन्त्रित हैं।

### विषय

(१) गत मीटिंग के विवरण की स्वीकृति।
(२) संघ की अब तक की गतिविधियों की जानकारी एवं मन्त्री-प्रतिवेदन।
(३) रत्नवंशीय आद्य स्रष्टा आचार्य पूज्य श्री कुशलो जी म० सा० की द्विशताब्दि विषयक विचार-विमर्श।
(४) संघ के आय-व्ययक की जानकारी एवं संपुष्टि।
(५) नई कार्यकारिणी निर्वाचित करना।
(६) अन्य विषय अध्यक्ष महोदय की आज्ञा से।

निवेदक :
**माणकमल भण्डारी**
**ज्ञानेन्द्र बाफणा**
मंत्री

## साधना, स्वाध्याय, धार्मिक शिक्षण शिविर

**उदयपुर (राजस्थान)** : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर के अन्तर्गत संचालित साधना-विभाग की ओर से कुछ विशिष्ट साधकों का शिविर आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के सान्निध्य में जयपुर में १४-१०-८३ से १६-१०-८३ तक सम्पन्न हुआ। शिविर में साधना की पद्धति पर विचार विनिमय कर उस पर अभ्यास किया गया। संयोजन साधना विभाग के संयोजक श्री चाँदमल कर्णावट ने किया।

**इन्दौर** : म० प्र० जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में महासती उमराव कुँवर जी "अर्चना" के सान्निध्य में स्व० सतीश मेहता की पुण्य तिथि के अवसर पर, महावीर भवन, इमली बाजार में श्री भँवरलाल जी बाफना, कार्याध्यक्ष,

स्वाध्याय संघ की अध्यक्षता में सामूहिक स्वाध्याय एवं सामायिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्वाध्याय संघ की रिपोर्ट श्री अशोक जी मण्डलीक, प्रबंध मंत्री, स्वाध्याय संघ द्वारा प्रस्तुत की गई। आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज सा० की प्रेरणा से एवं उनकी ७३वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर स्वाध्याय संघ की ओर से ७३ स्वाध्यायी पर्युषण पर्व पर प्रवचनार्थ गये थे।

**जयपुर** : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्त्वावधान में स्वाध्याय संघ के अन्तर्गत आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के सान्निध्य में दिनांक ३०, ३१ अक्टूबर व १ नवम्बर को **स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के २५ स्वाध्यायियों ने भाग लिया। श्री डी० आर० मेहता व डॉ० हरिराम आचार्य के विशेष व्याख्यान हुए। श्री कन्हैयालाल लोढ़ा, श्री चाँदमल कर्णावट, श्री सम्पतराज डोसी व श्री फूलचन्द मेहता ने प्रशिक्षण कार्य किया। **समापन समारोह** के मुख्य अतिथि श्री सज्जननाथ मोदी थे व अध्यक्षता डॉ० नरेन्द्र भानावत ने की। आचार्य श्री ने उद्बोधन में स्वाध्यायियों को ज्ञान एवं आचार के क्षेत्र में बढ़ने की विशेष प्रेरणा दी व महिला स्वाध्यायी तैयार करने की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया। मण्डल के मंत्री श्री टीकमचन्द हीरावत ने सबके प्रति आभार प्रकट किया।

**श्रीमहावीर जी** : आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० की सद्प्रेरणा से श्रीमहावीर जी में नवपद जी की ओली आराधना एवं महामंत्र नवकार का अखण्ड जाप का आयोजन दिनांक १३-१०-८३ से २१-१०-८३ तक श्री श्वे० जैन पल्लीवाल धर्मशाला में बड़े ही आनन्द एवं उत्साह के साथ किया गया। इसमें ७ साधकों ने भाग लिया। इसका संचालन श्री सूरजमल जी मेहता ने बड़ी लगन और निष्ठा से किया।

**रायचूर** : जैन श्रावक संघ की ओर से खम्भात सम्प्रदाय के आचार्य श्री कान्ति ऋषि जी के सान्निध्य में ३-१०-८३ से १०-१०-८३ तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें ३९९ शिविरार्थियों ने भाग लिया। ५ कक्षा में शिविरार्थियों को विभाजित कर धार्मिक शिक्षण दिया गया। शिविर-काल में २५००० सामायिक, २२० दया, २० उपवास, १ बेला व १ तेला हुए।

**नागपुर** : यहाँ आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० की प्रेरणा से स्थापित स्वाध्याय केन्द्र की ओर से श्री श्वेताम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान में ४-९-८३ से ११-९-८३ तक जैन धर्म दर्शन के विविध पक्षों पर व्याख्यान

तथा चरित्र निर्माण व जैनाचार परीक्षा में विशेष श्रेणी में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं का पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। धार्मिक साधना एवं नवकार मंत्र का जाप भी रखा गया।

## विविध साहित्यिक, धार्मिक आयोजन

**माण्डवी** : यहाँ श्री अखिल भारत अचलगच्छ (विधि पक्ष) श्वेताम्बर जैन संघ तथा महावीर जैन विद्यालय, बम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में २३ सितम्बर से २६ सितम्बर तक पंचम जैन साहित्य समारोह एवं कच्छ दर्शन का आयोजन डॉ० रमणलाल ची० शाह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में लगभग ४० विद्वानों एवं विदुषियों ने जैन धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति और कला के विविध पक्षों पर शोध निबन्ध प्रस्तुत किये। स्वागत प्रमुख श्री वसन जी लखम सी शाह थे। विशिष्ट अतिथि थे श्री किशोरचन्द वर्धन, श्री लक्ष्मीचन्द धारसी मोता, श्री गुलाबचन्द हरखचन्द आदि। इस अवसर पर श्री नानालाल वसा एवं कनुभाई सेठ के संयोजन में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी का विशेष आयोजन किया गया। जिसमें कई सचित्र दुर्लभ ग्रन्थ और प्राचीन लेखन-सामग्री व उपकरण के नमूने प्रदर्शित किये गये। श्री वसन जी लखन सी शाह ने प्राचीन साहित्य के संशोधन एवं प्रकाशन के लिये तथा ऐतिहासिक एवं कलात्मक तीर्थों व मन्दिरों की फोटोग्राफी के लिये एक-एक लाख रुपये के दो ट्रस्ट स्थापित करने की घोषणा की। २३ व २६ सितम्बर को सभी विद्वानों के लिए कच्छ जनपद के विभिन्न धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थानों की दर्शन-यात्रा का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रकार यह समारोह केवल माण्डवी नगर तक सीमित न रहकर पूरे कच्छ जनपद की धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक जागृति का अंग बन गया। इस सम्मेलन में 'जिनवाणी' के सम्पादक डॉ० नरेन्द्र भानावत एवं डॉ० शान्ता भानावत ने भी अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत किये।

**नई दिल्ली** : राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा के तत्त्वावधान में २८, २९ व ३० अक्टूबर को तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें देश-विदेश के लगभग ५ हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया व अध्यक्षता की इंगलैण्ड के डॉ० आर० एस० मैग्रेगर ने। सम्मेलन के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी के प्रसार की सम्भावनाएँ और प्रयास, आधुनिक भारत में हिन्दी के बढ़ते चरण—हिन्दी भाषा की प्रगति, देवनागरी लिपि : स्वरूप और संभावनाएँ, हिन्दी पत्रकारिता की प्रगति, हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति

हिन्दी के विकास में स्वैच्छिक संस्थाओं का योगदान, भारतीय मूल के जन-समुदाय तथा विश्व के अन्य देशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की समस्याएँ और संभावनाएँ, संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप, हिन्दी और अन्य भाषाएँ—आदान-प्रदान विषयक विशेष गोष्ठियां आयोजित की गई। खुले अधिवेशन में भारत के सांस्कृतिक सम्बन्ध और हिन्दी तथा मानव-मूल्यों की स्थापना में हिन्दी की भूमिका पर विशेष व्याख्यान हुए। समापन समारोह की मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा थीं। इस अवसर पर देश-विदेश के हिन्दी साहित्यकारों, हिन्दीसेवी प्रचारक विद्वानों तथा भाषा विज्ञान, मानविकी, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में विशेष योगदान देने वाले देश-विदेश के ४१ हिन्दीसेवियों को सम्मानित किया गया। 'जिनवाणी' के सम्पादक डॉ० नरेन्द्र भानावत ने भी विविध संगोष्ठियों में भाग लिया।

**राजनांद गांव** : यहां १४ सितम्बर को समता मंच की ओर से छत्तीसगढ़ स्तरीय जैन युवा सम्मेलन श्री रिखबराज जी कर्णावट की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। जिसमें २५ क्षेत्रों के ४०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में युवकों को रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर लगाने तथा सामाजिक कुरीतियों के निवारण से सम्बन्धित ६ सूत्री कार्यक्रम पर विचार किया गया। समारोह का संचालन दिनेश नाहटा ने किया।

**भावनगर** : यहां ८-९ अक्टूबर को अ० भारतीय साधुमार्गी जैन संघ का २१वां वार्षिक अधिवेशन श्री दीपचन्द जी भूरा की अध्यक्षता एवं श्री पीरदान जी पारख के संयोजन में सम्पन्न हुआ। धर्मपालों को संघ की सदस्यता प्रदान करने के लिये विधान में संशोधन किया गया। इस अवसर पर आदर्श भ्राता, समता संगीत सरिता एवं रूपान्तरण इन तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। आचार्य श्री नानालाल जी म० सा० की नेश्राय में भागवती दीक्षाएँ भी सम्पन्न हुईं।

**नागपुर** : श्री व० स्था० जैन श्रावक संघ का हीरक जयन्ती महोत्सव ६ अक्टूबर को मनाया गया जिसकी अध्यक्षता अतिरिक्त जिलाधीश श्री जयन्त कुमार बाँठिया ने की। श्री घेवरचन्द जी ने संघ की प्रवृत्तियों के लिए एक लाख रुपये दान देने की घोषणा की।

**उदयपुर** : १७ अक्टूबर को श्री गणेश मुनिजी शास्त्री की दीक्षा जयन्ती तप-त्यागपूर्वक मनाई गई। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डॉ आर० के० अग्रवाल ने की और मुख्य अतिथि थे मेवाड़ महामण्डलेश्वर

मुरलीमनोहर जी शरण। इस अवसर पर मुनिश्री की दो नवीन पुस्तकों का विमोचन भी हुआ।

**कुशालपुर :** आचार्य श्री जीतमल जी म० सा० एवं उपाध्याय श्री लालचंद जी म० सा० के सान्निध्य में १६ व १७ अक्टूबर को 'आचार्य भूधर जन्म स्मृति दिवस' तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री अ० भा० श्वे० स्था० जयमल्ल जैन श्रावक संघ की वार्षिक बैठक भी हुई।

**पटियाला :** महावीर जैन चेयर पंजाबी विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में 'आचार्य आत्माराम जी म० स्मारक व्याख्यान माला' के अन्तर्गत डॉ० जगदीश चन्द्र जैन एवं डॉ० वामन महादेव कुलकर्णी के विशेष व्याख्यान १२ अक्टूबर को आयोजित किये गये। संयोजक थे डॉ० बी० भट्ट।

**श्रीमहावीर जी :** श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीर जी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान के प्रतिनिधि के रूप में १ व २ अक्टूबर को लन्दन में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय जैन सम्मेलन में डॉ० कमलचन्द सौगानी ने भाग लिया। उन्होंने 'अहिंसा—उच्चतम मूल्य' विषय पर अपना निबन्ध पढ़ा।

## राष्ट्रपति को अहिंसा प्रेमियों का ज्ञापन

**मद्रास :** भ० महावीर अहिंसा प्रचार संघ के मंत्री श्री के० सी० सेठिया ने १८-९-८३ को यहां राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जेलसिंह जी को प्रतिनिधि मंडल के साथ जो ज्ञापन प्रस्तुत किया उसमें निम्नलिखित मांगें की गई हैं—

१. महावीर जयन्ती को अहिंसा के रूप में भारत भर में मनाया जाय। उस दिन अनिवार्य रूप से बूचड़खाने, मांस विक्रय की दुकानें एवं शराब की दुकानें बंद रखी जाय। भगवान महावीर जयन्ती एवं गाँधी जयन्ती पर समस्त शराब की दुकानें बंद रखी जाय।

२. पोस्टोरियर पिटयूटरी एवं स्ट्रक्ट के इंजेक्शन पर प्रतिबंध लगाया जाय। उस विधि से पशुओं के रासायनिक तत्त्वों में असमानता हो जाती है। उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। स्तन में घाव पड़ जाते हैं। अतः इस अमानुषिक तरीके पर प्रतिबंध लगाया जाय।

३. आधुनिक कत्लखाने की स्कीम अविलंब स्थगित की जाय।

४. भारत सरकार कानूनी रूप से मांस के पैकेट, विज्ञापनों के विक्रय तथा खरीद की दुकानों एवं इसी तरह की व्यावसायिक चीजों पर लिखें कि "माँस भक्षण स्थास्थ्य के लिए हानिप्रद है।"

५. पशु-पक्षी के निर्यात पर प्रतिबंध लगायें, चाहे वे खाने के लिए, परीक्षण के लिए अथवा मौज-शौक के लिए भेजे जाते हैं ।

नोट :—समस्त अहिंसा प्रेमी बंधुओं से निवेदन है कि वे अपनी ओर से तथा अपनी संबंधित संस्था की ओर से इसी तरह का मेमोरंडम भेज कर संघ द्वारा की गई मांग का पुरजोर समर्थन करें ।

## डॉ० डी० एस० कोठारी अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

**बालोतरा :** आचार्य तुलसी फाउण्डेशन की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला एक लाख रुपये का अणुव्रत पुरस्कार इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ० डी० एस० कोठारी को प्रदान किया गया । 'जिनवाणी' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ।

## संक्षिप्त समाचार

**जयपुर :** श्री कनकमल जी मेहता के सुपुत्र विंग कमाण्डर श्री अमृतलाल मेहता को उनकी व्यावसायिक दक्षता, कठोर श्रम, सत्यवादिता तथा पूर्ण कर्त्तव्यनिष्ठा के लिये भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने वायुसेना मेडल प्रदान किया है । अक्टूबर में आयोजित समारोह में एयर चीफ मार्शल दिलबाग सिंह ने श्री मेहता को यह पदक प्रदान किया । श्री मेहता फरवरी १९७९ से चीफ एग्जीक्यूटिव पाइलट के रूप में हरियाणा राज्य सरकार में प्रतिनियुक्ति पर हैं । उन्हें ७३१० घंटों की दुर्घटनारहित उड़ान भरने का श्रेय प्राप्त है । उन्होंने नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, जम्मू और कश्मीर जैसे क्षेत्रों में पर्यवेक्षक की हैसियत से २५०० घण्टों की उड़ान पूरी की है । श्री मेहता को हार्दिक बधाई ।

**अजमेर :** श्री महेन्द्रकुमार पारख जिनदत्त सूरि मण्डल के मानद मंत्री एवं श्री नरेन्द्रकुमार सीपाणी संयुक्त मंत्री मनोनीत किये गये हैं ।

**इन्दौर :** यहां श्रीमती शान्ता कुमारी शेखावत ने तथा कन्हैयालाल जी संघवी की धर्मपत्नी ने तथा हातौद में श्रीमती कमलाबाई जैन ने ३१-३१ उपवासों की तपस्या पूरी की है ।

**बम्बई :** श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद' की प्रेरणा से राजस्थान स्था० जैन संघ ने २००० जरूरतमन्द बालकों को वस्त्र वितरित किये । देवनार सत्याग्रह के लिये ५००० की राशि भी सहायतार्थ प्राप्त हुई ।

**जलगाँव :** आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म० सा० की प्रेरणा से जलगांव जिले में विगत २ वर्षों से २५ धार्मिक पाठशालाएँ चल रही हैं जिनमें लगभग ७०० बच्चों को धार्मिक शिक्षण दिया जा रहा है। लगभग ४५० बच्चे प्रतिक्रमण सीख चुके हैं। प्राय: प्रत्येक गांव में पढ़ी लिखी महिला पाठशाला संचालन करती है। "सम्यग्ज्ञान" पुस्तक का प्रकाशन कराया गया। पाठशाला योजना का कार्यभार एवं व्यवस्था सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी M. L. A. महाराष्ट्र राज्य, के द्वारा की जा रही है। श्री ललवाणी धर्मनिष्ठ एवं कर्तव्यपरायण उत्साही नवयुवक हैं। आपका लक्ष्य हमेशा दु:खी व्यक्ति के कष्ट का निवारण करने में रहता है। आप आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० के अनन्य भक्तों में से हैं।

**जयपुर :** हीरावत परिवार शुरू से ही आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक सेवा के क्षेत्र में आगे रहा है। इसी कड़ी को स्व० श्री सरदारमल जी सा० हीरावत के सुपुत्र श्री कुशलचन्द जी हीरावत ने ४ माह तक अखण्ड मौन साधना आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा० की नेश्राय में रहकर पूर्ण की है। इस अवधि में पैदल चलना, संवर में रहना, धर्म स्थान में ही सोना विशेष महत्त्वपूर्ण है। पर्युषण के ८ दिनों में अठाई करके स्वाध्याय चिन्तन में ही पूरा समय बिताया। लाल भवन में दिनांक १३–११–८३ को संघ मंत्री ने माल्यार्पण कर आपका हार्दिक अभिनन्दन किया। २०–११–८३ को दया, धार्मिक क्रिया आदि में रहकर व्रत को पूरा करेंगे। हमारा आध्यात्मिक हार्दिक अभिनन्दन।

## शोक-संवेदना

**यवतमाल :** यहाँ के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री ताराचन्द जी सुराणा का ८० वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका पूरा जीवन देश सेवा, समाज सेवा एवं धार्मिक, शैक्षणिक प्रवृत्तियों के लिये समर्पित रहा। आपने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया और कई बार जेल भी गये। हरिजन सेवक संघ, अनाथालय आदि प्रवृत्तियों से भी आप जुड़े रहे। स्थानीय हिन्दी हाई स्कूल का आरम्भ भी आपने किया। नगर परिषद के आप वर्षों तक अध्यक्ष रहे। आपके निधन से देश और समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

**जयपुर :** "जिनवाणी" के व्यवस्थापक श्री देवराज जी भंडारी के दोहते श्री दिलिपकुमार जैन सुपुत्र श्री आर० एस० जैन का २० सितम्बर को ईराक में आकस्मिक निधन हो गया। खेतड़ी नगर में उनका

दाह संस्कार किया गया। श्री जैन इराक में ओवरसियर के रूप में कार्यरत थे।

**छोटी सादड़ी :** "जिनवाणी" की सम्पादक श्रीमती डॉ० शान्ता भानावत की माताजी श्रीमती सरेकँवर बाई धर्मपत्नी स्व० श्री गोटीलाल जी वया का २२ अक्टूबर को ७८ वर्ष की आयु में संथारापूर्वक निधन हो गया। आपकी धार्मिक भावना अनुकरणीय एवं प्रेरणाप्रद थी।

**इन्दौर :** सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकर्ता श्री लक्ष्मीचंद जी मण्डलीक की माताजी एवं स्वाध्यायी अशोक मण्डलीक की दादीजी श्रीमती ताराबाई मण्डलीक का ८२ वर्ष की आयु में १९ अक्टूबर को संथारापूर्वक निधन हो गया। आपकी स्मृति में मण्डलीक परिवार की ओर से २५ हजार रुपये ट्रस्ट की तथा विभिन्न संस्थाओं को २५०१) रु० देने की घोषणा की गई है।

**मेड़ता सिटी :** वनियमवाड़ी (मद्रास) निवासी श्री मगराज जी तालेड़ा का यहाँ २६–८–८३ को आकस्मिक निधन हो गया। आप यहाँ सन्तों के दर्शनार्थ पधारे हुए थे। आप सेवाभावी, धार्मिक वृत्ति के उदार-मना श्रावक थे। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री जतन-राज जी मेहता के आप ससुर थे।

**ब्यावर :** छोटी सादड़ी निवासी श्री सुजानमल जी सेठिया का यहां १–११–८३ को ६४ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। आप मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन आदि विविध संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे और वर्षों से ब्यावर में रहकर समाज की सेवा कर रहे थे। आप सरलहृदयी, सेवानिष्ठ ज्ञानवान श्रावक थे।

**मन्दसौर :** यहां के सांसद श्री भँवरलाल जी नाहटा का ६१ वर्ष की आयु में हृदय ऑपरेशन के समय ह्यूस्टन (अमेरिका) में निधन हो गया। आप कर्मठ समाजसेवी एवं राजनैतिक कार्यकर्ता थे।

उपयुक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति हम मण्डल एवं "जिनवाणी" परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि एवं परिवारजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं।

—मंत्री

# साभार-प्राप्ति-स्वीकार

## "जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु०

**सदस्यता संख्या**

१९९३ श्री राज कॉर्पोरेशन, कानपुर
१९९४ श्री संतोष ट्रेडर्स, कानपुर
१९९५ श्री वर्धमान स्था० जैन श्रावक संघ कोडम्बाकम, मद्रास
१९९६ श्री एच. सी. नवलखा, वेस्ट जर्मनी
१९९७ श्री टोडावरमल सुमेरमल जैन, बम्बई
१९९८ श्री उत्तम एल. मेहता, अहमदाबाद

**श्रीमान् दलीचन्दजी सा. चोरड़िया, जलगाँव के सौजन्य से निम्न सदस्य**

१९९९ श्रीमती सौ. शान्ताबाई बंसीलाल लोढ़ा, पहूर (जलगाँव)
२००० श्रीमती सौ. रुकमणी देवी बिरदीचन्द ललवानी, जलगाँव
२००१ श्रीमती राधाबाई दीपचन्द जैन, बम्बई
२००२ श्रीमती सौ. प्रभावतीदेवी गिरधारीलाल दसर्डा, जलगाँव
२००३ श्रीमती डॉ. साराबाई शंकरलाल कांकरिया, बम्बई
२००४ श्रीमती सरोजबाई पन्नालाल सुराणा, जलगाँव
२००५ श्री जैन ओसवाल भागरिथीबाई वाचनालय, जामनेर

**श्री राजमलजी लखीचन्दजी सा., जलगाँव के सौजन्य से निम्न सदस्य**

२००६ श्री जैन पाठशाला, बोदवड़ (जलगाँव)
२००७ श्री जैन पाठशाला, एदलाबाद (जलगाँव)
२००८ श्री जैन पाठशाला, पाचोरा (जलगाँव)
२००९ श्री सुगनचन्दजी ललवानी (जैन स्थानक), शेंदूर्णी (जलगाँव)
२०१० सौ. सायर देवी संघवी (जैन स्थानक), कजगाँव (जलगाँव)
२०११ श्री केशव गोविन्दा भगत (जैन स्थानक), वाघली (जलगाँव)
२०१२ श्री अमोलकचन्दजी बागरेचा (जैन स्थानक), धरणगाँव (जलगाँव)
२०१३ श्री चन्दनबाला कन्या मंडल (जैन स्थानक), चोपड़ा (जलगाँव)
२०१४ सौ. मंगला बागरेचा (जैन स्थानक), लासूर (जलगाँव)
२०१५ सौ. कमलादेवी छाजेड़ (जैन स्थानक), हिरापुर (जलगाँव)
२०१६ सौ. शकुन्तला छाजेड़ (जैन स्थानक), चालीसगाँव (जलगाँव)
२०१७ सौ. गोरीबाई खिवसरा (जैन स्थानक), मांडल (जलगाँव)

२०१८ कु. कोयलदेवी कोठारी (जैन स्थानक), राजणी (जलगाँव)
२०१९ श्री हीरालालजी मंडलेचा (जैन स्थानक), फत्तेपुर (जलगाँव)
२०२० कु. मधुबाला खिवसरा (जैन स्थानक) तोड़ापुर (जलगाँव)
२०२१ कु. मन्दा ओस्तवाल (जैन स्थानक), शहापुर (जलगाँव)
२०२२ कु. सरला गोलेछा (जैन स्थानक), पलास खेड़ा (औरंगाबाद)
२०२३ श्री दीपचन्दजी बोरा (जैन स्थानक), न्यायडोंगरी (नासिक)

## (जिनवाणी को भेंट एवं सहायता)

२०१) श्री कनकमलजी चोरड़िया, मद्रास, पुत्र श्री धनपतमलजी चोरड़िया की धर्मपत्नी श्रीमती प्रसन्नलता चोरड़िया के मास खमण के उपलक्ष में भेंट।

२०१) श्री रतनचन्दजी लोढ़ा, जयपुर, तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

१५१) श्री मोहनराजजी बालिया, जयपुर, श्रीमती सुनिता बालिया धर्मपत्नी श्री ज्ञानचन्दजी बालिया के अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

१०१) श्री दुलीचन्दजी बागमार, मद्रास, आचार्य श्री एवं संत-सती मंडल के दर्शन करने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री पंकज प्रिन्टर्स, जगदलपुर (बस्तर) सुपुत्र श्री भंवरलाल के विवाहोपलक्ष्य में।

१०१) श्री पदमचन्दजी हीरावत, जयपुर, पुत्र श्री धनरूपमल की पत्नी के मास खमण की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

१०१) श्री ज्ञानचन्दजी समरथमलजी बम्ब, जयपुर, स्व. श्री सिरेहमलजी बम्ब की पुत्र वधू श्रीमती प्रमिला बम्ब धर्मपत्नी श्री संतोषजी बम्ब के मास खमण की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५१) श्री धनराजजी मगराजजी तालेड़ा, मद्रास, श्री मगराजजी तालेड़ा का स्वर्गवास २६-८-८३ को पच्चखाण सहित मेड़ता में हुआ उनकी यादगार में भेंट मार्फत श्री जतनराजजी मेहता (मेड़ता)।

५१) श्रीमती बसन्तीदेवी सुराणा, कलकत्ता, धर्मपत्नी श्री हस्तीमलजी सा. सुराणा के अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५०) श्री प्रकाशमल लुणावत, नासिक, श्रीमती ऋषभकुंवर लुणावत के अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

५०) श्री चेनकरणजी सुराणा, यवतमाल, श्रीमान् ताराचन्दजी सुराणा का २६ सितम्बर, ८३ को निधन हो जाने की स्मृति में भेंट।

५०) मेसर्स जैन ब्रदर्स, जलगाँव, भाई शिवराजजी व उनकी पत्नी ताराबाई के अठाई के उपलक्ष में परिवार वालों की तरफ से भेंट।

५०) श्री पवनकुमार बिरदीचन्द ललवाणी, जलगाँव, सौ. ज्योती धर्मपत्नी चि. रजनीकान्त ललवाणी के पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में नो उपवास करने के निमित्त भेंट।

२५) मंत्री श्री जीवनलालजी भंसाली, बालोद (दूर्ग) पयुर्षण पर्व के उपलक्ष में भेंट।

२१) श्री उत्तमचन्दजी मिश्रीमलजी कोठारी, अमरावती, अठाई की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

२१) तेजमलजी लोढ़ा, धनोप, श्रीमती राजाबाई लोढ़ा की पुण्य स्मृति में उनके पौत्र श्री तेजमलजी लोढ़ा की ओर से सप्रेम भेंट।

१५) श्री नथमलजी पदमचन्दजी, विलुपुरम, आचार्य श्री की आँखों का सफल ऑपरेशन होने की खुशी में भेंट।

११) श्री स्वरूपसिंहजी मेहता, जयपुर, सपरिवार समकित ग्रहण करने के उपलक्ष में भेंट।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

### (साहित्य प्रकाशन—आजीवन सदस्यता ५०१) रु०

**सदस्य संख्या**

७१. श्री हजारीलालजी लोढ़ा, दिल्ली
७२. श्री किशनजी भण्डारी, मद्रास
७३. श्री खेमचन्दजी सुराणा, मद्रास
७४. श्री कोडमबाकम जैन संघ, मद्रास
७५. श्री चम्पालालजी गजराजजी मेहता, मद्रास
७६. श्री भूमरमलजी बागमार, मद्रास
७७. श्री ए. पन्नालालजी कोठारी, मद्रास
७८. श्री डॉ. सी. एम. लोनावला, मद्रास
७९. श्री गौतमचन्दजी खिवेसरा, मद्रास
८०. श्री सम्पतराजजी महावीरचन्दजी मरलेचा, बैंगलोर
८१. श्री बसन्तीलालजी नाथूलालजी सेठिया, रतलाम
८२. श्री दशरथमलजी चोरड़िया, बैंगलोर

८३. श्री दौलतमलजी चोरड़िया, मद्रास
८४. श्री धनपतमलजी चोरड़िया, मद्रास
८५. श्री गौतमचन्दजी चोरड़िया, मद्रास
८६. श्री रंगरूपमलजी चोरड़िया, मद्रास
८७. श्री रमेशजी दूगड़, मद्रास
८८. श्री एस. एम. जी दूगड़, मद्रास
८९. श्री भंवरलालजी किरणराजजी गोलेछा, मद्रास
९०. श्री बी. सूरजमलजी भण्डारी, चिकपेट
९१. श्री ए. मदनलालजी नाहर, मद्रास
९२. श्री सम्पतसिंहजी भाण्डावत, जोधपुर
९३. श्री पन्नालालजी उत्तमचन्दजी चोरड़िया, बैंगलोर
९४. श्री विजयचन्दजी लोढ़ा, जयपुर
९५. श्री उत्तमचन्दजी हीरावत, जयपुर
९६. श्री राजमलजी विजयकुमारजी गोलेछा, जयपुर
९७. श्री सूरजमलजी नवलखा, जयपुर
९८. श्री कमलचन्दजी पालावत, जयपुर
९९. श्री भैरूलालजी भँवरलालजी चौधरी, मद्रास
१००. श्री एस. भँवरलालजी बागमार, मद्रास
१०१. श्री लखमीचन्दजी सकलेचा, मद्रास
१०२. श्री नेमसिंहजी योगेन्द्रसिंहजी बैद, जयपुर
१०३. श्री ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
१०४. श्री बाबूलालजी मोदी, जयपुर
१०५. श्री माणकचन्दजी गोलेछा, जयपुर
१०६. श्री महताबजी अरुणकुमारजी नवलखा, जयपुर
१०७. श्री रतनराज पियुषकुमार कोठारी, जयपुर
१०८. श्री प्रेमचन्दजी ढड्डा, जयपुर
१०९. श्री सुगनचन्दजी किशनलालजी ओस्तवाल, जोधपुर
११०. श्री जैन साहित्य प्रकाशन, बैंगलोर
१११. श्री ज्ञानचन्दजी बालिया, जयपुर
११२. श्री जे. ढड्डा, मद्रास
११३. श्री जवाहरलालजी प्रेमचन्दजी, मद्रास
११४. श्री प्रकाशचन्दजी भाबक, राजनाँद गाँव
११५. श्री पदमचन्दजी लाभचन्दजी नवलखा, जयपुर
११६. श्री शान्तीचन्दजी दिनेशकुमारजी कटारिया, इन्दौर
११७. श्री विजयमलजी तेजमलजी मेहता, अहमदाबाद

# ❀ अनुक्रमणिका ❀

☐ प्रवचन / निबन्ध ☐



☐ बोध कथा/प्रसंग ☐



☐ धारावाहिक उपन्यास ☐



☐ कविता ☐



☐ प्रतिवेदन ☐



☐ स्तम्भ ☐

# जिनवाणी

□

अहे वयइ कोहेण,
माणेण अहमा गई ।
माया गइ पडिग्घाओ,
लोभाओ दुहओ भयं ।।

—उत्तराध्ययन ६/५४

क्रोध से आत्मा नीचे गिरता है । मान से अधम गति प्राप्त करता है । माया से सद्गति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है और लोभ से इस लोक तथा परलोक दोनों में ही भय-कष्ट होता है ।

□

दिसम्बर, १९८३
वीर निर्वाण सं० २५१०
मार्गशीर्ष, २०४०

वर्ष : ४० • अंक : १२

मानद सम्पादक :
**डॉ० नरेन्द्र भानावत,** एम. ए., पी-एच. डी.

सम्पादन :
**डॉ० (श्रीमती) शान्ता भानावत,**
एम. ए., पी-एच. डी.

प्रबन्ध सम्पादक :
**प्रेमराज बोगावत**

संस्थापक :
**श्री जैनरत्न विद्यालय, भोपालगढ़**

प्रकाशक :
**सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल**
बापू बाजार, दुकान नं० १८२-१८३ के ऊपर
जयपुर–३०२००३ (राजस्थान)

फोन : ७५९९७

सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र :
सी-२३५ ए, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर,
**जयपुर-३०२ ००४ (राजस्थान)**

फोन : ६७९५४

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं० ३६५३/५७

वार्षिक सदस्यता : १५ रु०
त्रिवर्षीय सदस्यता : ४० रु०
आजीवन सदस्यता : देश में २०१ रु०
आजीवन सदस्यता : विदेश में ७०१ रु०
संरक्षक सदस्यता : ५०१ रु०
स्तम्भ सदस्यता : १००१ रु०

मुद्रक :
**फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स**
जयपुर–३०२००३

**नोट :** यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

**प्रवचनामृत :**

# अहिंसा-तत्त्व को जीवन में उतारें*

☐ आचार्य श्री हस्तीमल जी म० सा०

परम मंगलमय जिनेश्वर देव का जब-जब स्मरण किया जाता है, मन से विकारों का साम्राज्य एक तरह से बहिष्कृत हो जाता है। विकारों को निर्मूल करने का साधन अपनाने से पहले उसका आदर्श हमारे सामने होना चाहिये।

व्यवहार मार्ग में भी आदर्श काम करता है और अध्यात्म मार्ग में भी आदर्श काम करता है। चलने के लिये, यदि हमको चलकर राह पार करनी है तो कैसे चलना, किधर से चलना और आने वाली बाधाओं का कैसे मुकाबला करना, उसके लिये व्यक्ति को कुछ आदर्श ढूँढ़ने पड़ते हैं।

हमारी आध्यात्म साधना का और विकारों पर विजय मिलाने का आदर्श जिनेन्द्र देव का पवित्र जीवन है। वैसे ही आप सांसारिक जीवन में हों, राजनीतिक जीवन में हों या घरेलू जीवन में हों, उसमें भी मनुष्य को कुछ आदर्श लेकर चलना पड़ेगा।

भ० महावीर ने हजारों वर्ष पहले जो मार्ग अपनाया, उसे तीर्थंकर देव की स्तुति करके शास्त्रीय शब्दों में इस प्रकार कहा गया है—"अभयदयाणं, चक्खुदयाणं"। यह बढ़िया विशेषण है और अब अपने सामने चिन्तन का विषय है।

वास्तव में दूसरे को अभय वही दे सकता है जो पहले स्वयं अभय हो जाय। खुद अभय हो जायगा वही दूसरों को अभय दे सकता है। और खुद अभय तभी होगा जब उसमें हिंसा की भावना न रहेगी।

**अष्टांग योग :**

हमारे यहां एक साधनाप्रिय आचार्य हुए हैं पतंजलि ऋषि। उन्होंने अष्टांग योग की साधना मुमुक्षुजनों के सामने रखी। अष्टांगयोग में पहला है

*जलगाँव में ५ अक्टूबर, १९८२ को दिया गया प्रवचन। श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित।

यम, फिर नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। यम पाँच प्रकार के है : अहिंसा, सत्य अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। सबसे पहला स्थान अहिंसा को दिया गया है। उन्होंने कहा कि जब तक अहिंसा को साध्य बनाकर नहीं चलोगे तब तक आत्मा को, समाज को, राष्ट्र को और किसी को दुःख मुक्त नहीं कर सकोगे। अहिंसा एक ऐसी चीज है जो अति आवश्यक है।

अहिंसा का लाभ बताया कि अहिंसा क्यों करनी चाहिये। पतंजलि के शब्दों में ही आपसे कहूँगा, "अहिंसा प्रतिष्ठायां वैरत्याग:।" यदि आप चाहते हैं कि दुनिया में आपका कोई दुश्मन न रहे, आपका कोई दुश्मन होगा तो आप चैन की नींद सो सकेंगे क्या ? यदि पड़ौसी द्वेष भावना से सोचता होगा तो आपको नींद नहीं आयेगी। राजनीतिक क्षेत्र में, समाज के क्षेत्र में, धन्धे बाड़ी के क्षेत्र में भी आप चाहेंगे कि दुश्मन से मुक्त कैसे हों ? मुक्ति की तो बहुत इच्छा है लेकिन कर्मों की मुक्ति करने से पहले संसार की छोटी मोटी मुक्ति तो करलो।

संसार चाहता है कि पहले गरीबी से मुक्त हों। आप लोग इण वास्ते ही तो जूंझ र्‌या हो। यदि देश पराधीन है तो सोचोगे कि गुलामी से मुक्त होना चाहिये। अंग्रेजों के समय में अपने को क्या दु:ख था ? भाई-बहिनों को और कोई दु:ख नहीं था सिर्फ यही दु:ख था कि मेरा देश गुलाम है। आप जैसे मान रहे हैं वैसे ही गाँधीजी को क्या दु:ख था ? उनको खाने-पीने का, पहनने का दु:ख नहीं था सिर्फ यही दु:ख था कि मेरा देश गुलाम है। उन्होंने सोचा कि गुलामी से मुक्त होने के दो तरीके हैं। एक तरीका तो यह है कि जो हमको गुलाम रखे हुए हैं, उनके साथ लड़ें, झगड़ें, गालियाँ दें, उनके पुतले जलावें। दूसरा तरीका यह है कि उनको बाध्य करें, हैरान करें, चेतावनीं दें, उनको विवश करदें। उनको यह मालूम हो जाय कि उनके आधीन रहनेवालों में से उन्हें कोई नहीं चाहता है इसलिये अब उन्हें जाना पड़ेगा। इन दोनों रास्तों में से कौनसा रास्ता अपनाना चाहिए ?

**अहिंसा की भूमिका :**

गाँधी ने इस पर बड़ा चिन्तन किया। शायद यह कह दिया जाय तो भी अनुचित नहीं होगा कि महावीर की अहिंसा का व्यवहार के क्षेत्र में उपयोग करने वाले गाँधी थे।। संसार के सामने उसूल के रूप में अहिंसा को रखने वाले महावीर के बाद में वे पहले व्यक्ति हुए। अहिंसा का व्यवहार के क्षेत्र में कैसे उपयोग करना ? घर में इसका कैसे व्यवहार करना ? पड़ौसी का कलह अहिंसा से कैसे मिटाना ? यह चिंतन गाँधीजी के मन में आया। उन्होंने सोचा कि हमारे लिए यह अमोघ शस्त्र है। हमारे गौरांग प्रभु के पास में तोपें है, टैंक हैं, सेना है, तबेला है और हमारे पास में ये सब नहीं हैं।

अब इनको कैसे जीतना, कैसे भगाना, कैसे हटाना और देश को मुक्त कैसे करना ? यदि आपकी जमीन किसी के हाथ नीचे दब गई है तो आप क्या करोगे भाई ? आपको शस्त्र उठाना नहीं आता, चलाना नहीं आता, तो पहले आप उसको नरमाईके साथ कहोगे । इस पर नहीं मानता है तो धमकी दोगे, इससे भी काम तहीं चलेगा तो राज्य की अदालत में कानूनी कार्यवाही करोगे, दावा करोगे । नतीजा यह होगा कि इस पद्धति से काम करते वर्षों बीत जायेंगे । इससे काम नहीं चलेगा ।

गाँधीजी ने अहिंसा का तरीका अपनाया । सबसे पहले उन्होंने कहा कि मैं अहिंसा को पहले अपने जीवन में उतारूं । भ० महावीर ने जिस प्रकार अहिंसा को समझा, समाज के जीवन में और विश्व के संपूर्ण प्राणी मात्र के जीवन में काम आने वाला अमृत बताया और यह बताया कि अहिंसा का अमृत पीने वाला अमर हो जाता है, जो अहिंसा का अमृत पीयेगा वह अमर हो जायेगा । उसी अहिंसा पर गाँधीजी को विश्वास हो गया । गाँधीजी के सामने भी देश को आजाद करने के लिये विविध विचार रहे । देश की एकता और आजादी मुख्य लक्ष्य था । देश में विविध पार्टियां थीं । इतिहास के विद्यार्थी जानते होंगे कि आपसी फूट से देश गुलाम होता है और एकता से स्वतंत्र होता है । देश गुलाम कैसे हुआ ? फूट से ।

देश में राजा-महाराजा, रजवाड़े कई थे जिनके पास शक्ति थी, ताकत थी , जिन्होंने बड़े-बड़े बादशाहों का मुकाबला किया । छत्रपति शिवाजो कितने ताकतवर थे । राजस्थान को वीर भूमि बताते हैं । वहाँ पर महाराणा प्रताप, दुर्गादास राठौड़ जैसे बहादुर हुए जिन्होंने आँख पर पट्टी बाँधकर शस्त्र चलाये और बड़े-बड़े युद्धों में विजय पाई, अपनी आन रखी । ऐसे राजा-महाराजाओं के होते हुए भी देश गुलाम क्यों हुआ ? एक ही बात मालूम होती है कि देश में फूट थी । ताकतवर ने ताकतवर से हाथ मिलाकर, गले से गला मिलाकर, बांह से बांह मिलाकर काम करना नहीं सीखा, इसलिये बादशाहों के बाद गौरांग लोग राजा हो गये । उन्होंने इतने विशाल मैदान में राज्य किया कि सारा भारतवर्ष अंग्रेजों के अधीन हो गया । मुगलों से भी ज्यादा राज्य का विस्तार अंग्रेजों ने किया । इतने बड़े विस्तार वाले राज्य के स्वामी को देश से हटाना कैसे ?

**अहिंसा की सीख :**

लेकिन गाँधीजी ने देखा कि अहिंसा एक अमोघ शस्त्र है । अहिंसा क्या करती है ? पहले प्रेम का अमृत सबको पिलाती है । प्रेम का अमृत जहाँ होगा वहाँ पहुँचना पड़ेगा । आप विचार की दृष्टि से मेरे से अलग सोचनेवाले होंगे ।

तब भी आप सोचेंगे कि महाराज और आपांरो उद्देश्य एक ही है, एक ही रास्ते रा पथिक हां । मैं भी इसी दृष्टि से सोच रहा हूँ और वे भी इसी दृष्टि से सोच रहे हैं । हम दोनों को एक ही काम करना है । ऐसा सोचकर आप महाराज के पास आओगे । आप एक दूसरे का आदर करना सीख लो तो कोई मतभेद की बात ही नहीं रहती । यह भूमिका अहिंसा सिखाती है ।

गाँधीजी ने अहिंसा की भूमिका को भ० महावीर की कृपा से प्राप्त किया । उनका सिद्धान्त कठिन होने पर भी उसे मानकर इस अमृत को गाँधीजी ने पिया । उन्होंने सोचा कि देश और देशवासियों को हमें गुलामी से मुक्त कराना है ।

सुभाष भी यही चाहते थे और गाँधी भी यही चाहते थे । सुभाष और गाँधीजी का उद्देश्य एकसा था । सुभाष ने कहा कि मेरा भारतवर्ष आजाद हो, गाँधीजी भी चाहते थे कि देश आजाद हो । तिलक भी चाहते थे कि देश आजाद हो । गोखले भी चाहते थे कि देश आजाद हो । अन्य नेता लोग भी चाहते थे कि देश आजाद हो ।

आज कोई कहे कि शान्ति और क्रान्ति दोनों में मेल कैसे हो सकता है ? आज कहने को तो कोई यह भी कह सकता है कि गाँधीजी की अहिंसा की नीति दब्बूपन और कायरता की थी । सुभाष की क्रान्ति की नीति से, सेना की भावना में परिवर्तन हो गया । सैनिकों ने विद्रोह मचा दिया, इसलिये अंग्रेजों को जाना पड़ा ।

कहने वाले भले हीं विविध प्रकार की बातें कहें लेकिन मैं आपसे इतना ही पूछूंगा कि क्या गांधीजी और सुभाष के विचारों में भेद होते हुए भी सुभाष और उनके साथियों ने कभी अपने शब्दों में गाँधीजी का तिरस्कार करने की भावना प्रगट की ? उन्होंने अपने भाषणों में ऐसी बात नहीं कही । यदि उनके विचारों में टक्कर होती तो फूट पड़ जाती और ऐसी स्थिति में देश आजाद हो पाता क्या ? नहीं । गाँधीजी अपने विचारों से काम करते रहे और सुभाष अपने विचारों से काम करते रहे । शौकतअली, मोहम्मदअली आदि मुस्लिम नेता भी आजादी की लड़ाई में पीछे नहीं रहे । वे भी कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे थे ।

मैं जब वैराग्य अवस्था में अजमेर में था तब गाँधीजी, हिन्दू, मुस्लिम, सिख आदि समुदायों के नेता, शान्त-क्रान्ति के विचार वाले वहां एक मंच पर एकत्रित हुए थे । सबके साथ आत्मीयता का सम्बन्ध था । गाँधीजी सोचते थे कि ये सब मेरे भाई हैं । देश को मुक्त कराने के लिये हम सब मिलकर काम कर

सकते हैं। इसीलिये देश गुलामी से मुक्त हुआ। कैसे हुआ ? देश की आजादी के विषय में विविध विचार होते हुए भी बुद्धिजीवियों की शृङ्खला जुड़ी और बुद्धिजीवियों की शृङ्खला से सब संस्थाएँ और सब वर्ग एक उद्देश्य के साथ देश की मुक्ति के लिये जूझ पड़े और अंग्रेजों को बाध्य होकर देश छोड़कर यहाँ से जाना पड़ा।

यह इतिहास की कड़ी यहां बतादी है। देश आजाद हुआ। किससे ? अहिंसा, प्रेम और बंधु भावना की एक शक्ति के द्वारा देश आजाद हुआ, गुलामी से मुक्त हुआ। और देश परतंत्र क्यों हुआ ? आपसी लड़ाई-झगड़ों से।

**अहिंसा-तत्त्व को जीवन में उतारें :**

यदि आप अहिंसा सप्ताह मनाते हैं। गाँधी जयन्ती की अपेक्षा से अहिंसा सप्ताह मनाते हैं तो उसमें भाषण होंगे, प्रार्थना होगी, चर्खा कताई वगैरह होगी, ऐसे विविध प्रकार के कार्यक्रम देश के हजारों, लाखों लोग करते होंगे। लेकिन मैं कहता हूँ सब के साथ मिल भेंट कर अहिंसा तत्त्व को आगे बढ़ाने के लिये आप क्या कर रहे हैं ? महावीर ने धर्म क्षेत्र में अहिंसा को अपनाने की शिक्षा दी। गाँधी ने राज्य क्षेत्र में अहिंसा को अपनाने की प्रयोगात्मक शिक्षा दी। महावीर ने अहिंसा के द्वारा आत्मशुद्धि करने का बारीक से बारीक चिन्तन किया। लेकिन गाँधी ने चिन्तन किया कि घर गृहस्थी के मामलों को भी अहिंसा हल कर सकती है। अहिंसा के द्वारा कोई भी बात चाहे समाज की हो या घर की, हल की जा सकती है। जिसके घर में अहिंसा के बजाय हिंसा होगी, प्रेम के बजाय फूट होगी वहां शक्ति, समृद्धि, मान, सम्मान सब का ह्रास होगा। उनका जीवन काम करने के लिये आगे नहीं बढ़ पायेगा। इसलिये महावीर का अहिंसा सिद्धान्त देश में समस्त मानव जाति को सिखाना होगा, अमली रूप में लाना होगा। सभी लोग इसे अमल में लावें उससे पहले महावीर के भक्त इसको अपनावें, यह सबसे पहली आवश्यकता है। लेकिन महावीर के भक्तों को अभी अपनी वैयक्तिक चिन्ता लग रही है। सब के हित की बात तो बोल जाते हैं लेकिन करने के समय अपना घर, अपनी दुकान, अपना धन्धा, अपने बाल-बच्चों की व्यवस्था आदि के सामने दूसरी बातों की ओर देखने की फुरसत नहीं है। चाहे देश और प्रदेश का अहित हो रहा हो, अहिंसा के बजाय हिंसा बढ़ती हो तो भी उसके प्रतिकार के लिये सौम्य तरीके से आगे कदम नहीं बढ़ा सकते। आप सोचते हैं कि ओ काम आपां रो थोड़े ही है, बिगड़े तो राज रो बिगड़े और सुधरे तो राज रो सुधरे। इसलिये ये समस्याएँ ज्यों की त्यों रह जाती हैं। बोलने में रह जाती हैं, करनी में नहीं आतीं।

अखबारों में खबर आती है कि दिल्ली में २८ करोड़ की लागत से नया कत्लखाना खोला जा रहा है। वहाँ पर वैज्ञानिक तरीके से जीवों की हिंसा होगी। अहिंसा के सिद्धान्त को माननेवाले देश हिंसा की ओर बढ़ रहे हैं। देश

की सरकार अहिंसक कहलाने वाली गांधीवादी सरकार है। गाँधीवादी सरकार में अहिंसा का तत्त्व कितना व्यापक होना चाहिये। गाँधीवादी सरकार कितने शुद्ध विचारों के साथ आगे आने का प्रयत्न कर रही है, यह देखने की बात है। सबसे पहले जैन कार्यकर्त्ताओं में से इस प्रकार की सच्ची नीति अपनाने वाले लोग आगे आवें। इस बात की देश के लिये बहुत बड़ी आवश्यकता है। इस अहिंसा तत्त्व को देश आसानी से समझे। सार्वजनिक सेवा करने वाले लोग व्यक्तिगत स्वार्थ को भुलाकर, ममत्व को भुलाकर देखें कि गाँधी जैसे व्यक्ति देश के लिये बलि हो गये, गोली खाकर मर गये, लेकिन उन्होंने अहिंसा तत्त्व को अन्त तक नहीं छोड़ा। मरते समय उनके मुँह से राम निकला। जहाँ ऐसा नमूना हमारे सामने है वहां जैन समाज और भारत के अहिंसक समाज के लोगों को कितना उच्च शिक्षण लेना चाहिये। यदि आप अहिंसा के सिद्धान्त को अमली रूप देकर विश्व प्रेम की ओर बढ़ेंगे तो आपका वास्तव में अहिंसा सप्ताह मनाना सार्थक होगा।

एक व्यावहारिक काम देश के अहिंसा प्रेमियों के सामने यह आता है कि गाँधी सप्ताह में भी यदि कत्लखाने बन्द नहीं हों, हमारे प्राणी जो मानव समाज के लिये पोषक हैं, उन पशुओं में, गाय, भैंस, बकरे, बकरियां आदि जानवरों का वध इन कत्लखानों में हो और गाँधी सप्ताह के दिनों में जैन समाज के लोग, हिन्दू समाज के लोग, राम और कृष्ण को मानने वाले लोग यदि इसको रोकने की ओर कदम नहीं बढ़ा सके तो यह कैसी बात मानी जायगी? अहिंसा का खाली गुणगान ही करते हैं लेकिन उनको अहिंसा में विश्वास नहीं है। मैं चाहूँगा कि हमारे जैन समाज के लोग इस दिशा में भी कदम बढ़ावें और समाज की शक्ति को अहिंसा के मैदान में लगावें। जब कभी सामाजिक बुराइयां मिटानी हों, राष्ट्र की बुराइयां मिटानी हों तब आप कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें।

पश्चिमी देश फ्रान्स में एक व्यक्ति जंगली जानवरों तक से प्यार करने वाला हुआ। उसकी स्मृति में प्राणी दिवस मनाया जाता है। अनार्य देश के लोग अहिंसा का आदर करते हैं और अहिंसक देश हिंसा में विश्वास करने वाला बनता जा रहा है। हमने जब सतारा में चातुर्मास किया था तब फ्रांस के उस प्राणी रक्षक भाई के बारे में बहुत कुछ सुना था। कम से कम जैन समाज के लोग दया और अहिंसा को अमली रूप देवें। खुद के जीवन को भी ऊँचा उठावें और जो आपके संपर्क में आवें, उनके जीवन को भी ऊँचा उठावें। देश और समाज को ऊँचा उठाने के साथ, विश्व प्रेम और अहिंसा के विचारों में तेजस्विता ला सकें तो सबके लिये कल्याण की बात होगी। जो ऐसा करेगा वह इस लोक और परलोक में शांति, आनन्द और कल्यान प्राप्त करने का अधिकारी होगा। □

**स्वाध्यायियों के लिए विशेष लेख :**

# ब्रह्मचर्य : महत्त्व एवं स्वरूप

□ श्री पी० एम० चौरड़िया

शील एवं ब्रह्मचर्य जीवन का तेज है। इसमें अमित शक्ति है। यह आत्म शक्ति को मजबूत बनाता है। यह जीवन की सफलता का द्वार है। तपों में सर्वश्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य है। यह मोक्ष का द्वार है। अपने कर्मों की निर्जरा करने का मुख्य स्रोत है। महापुरुषों ने कहा है—ब्रह्मचर्य जीवन है, वासना मृत्यु है। ब्रह्मचर्य अमृत है, वासना विष है। ब्रह्मचर्य अनन्त शान्ति है, अनुपम सुख है। वासना अशांति है एवं दुःख का अथाह सागर है। ब्रह्मचर्य शुद्ध ज्योति है, वासना कालिमा। इसलिये ब्रह्मचारी को देवता भी नमस्कार करते हैं।

**ब्रह्मचर्य का महत्त्व :**

ब्रह्मचर्य व शील की महिमा अपरम्पार है। शील के अभाव में विद्वान् और धनी लोग अपनी उच्छृंखल प्रवृत्ति के कारण अपमानित-लांछित होते पाये जाते हैं। शीलवान नर अशिक्षित या निर्धन होते हुए भी सम्मान पाते हैं। किसी कवि ने कहा है—

शीलवान नर जहाँ जाय।
तहाँ-तहाँ आदर हो अधिकाय॥

शीलवान सभी स्थानों पर आदर पाता है। उसकी वाणी सुनने को सभी लालालित रहते हैं। शील सदैव उसकी रक्षार्थ कवच का कार्य करता है। वह देश, समाज, धर्म एवं कुल का नाम उज्ज्वल करता है। शील वह मधुर बीज है जिसमें नम्रता, सहिष्णुता, संतोष, आत्म-संयम, अनुशासन आदि पुष्प निकलते हैं। शीलवान की वाणी मधुर और हृदय निश्छल, सरल हो जाता है। शील की शक्ति से मनुष्य की कीर्ति दसों दिशाओं के कण-कण में फैलती है। कल्प वृक्ष की भाँति मनुष्य का प्रत्येक मनोरथ यह शील ही पूरा करता है।

शील साधना की महिमा कहाँ तक लिखी जाये ? जैसे मरुभूमि की रेती के दानों का हिसाब लगाना और वर्षा की बूँदों को गिनना एक अनहोनी और अजीब सी बात है, उसी तरह शील के कारण होने वाले अन्य गुणों को गिनना भी अचरज भरा और असम्भव कार्य है। यही कारण है कि शीलवान के यहाँ सारे सुख और सम्पदाएँ बिना बुलाये और बिना चाहे हुए ही आकर टिक जाती हैं। अतः कवि की कल्पना बोल उठी—

> है उत्तम धन शील ही, शील सुमंगल रूप।
> दुरिति निवारक शील है, सुख-जड़ शील स्वरूप ।।

प्राणियों के लिए शील ही उत्तम धन और शील ही परम मंगल का कारण है। शील दुर्भाग्य को मिटाने वाला तथा सुख का मातृ-स्थान है।

**शील के विभिन्न अर्थ :**

शील का सर्वमान्य प्रचलित अर्थ सदाचार या सच्चरित्रता है। सदाचार के गर्भ में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह वृत्ति का समावेश हो जाता है। यही कारण है कि बौद्ध धर्म में ये पंचशील के नाम से प्रसिद्ध हैं।

जैन धर्मावलम्बियों में शील का अर्थ ब्रह्मचर्य ही बहुत अधिक प्रचलित है। जैसा कि 'समवायांगसूत्र' की वृत्ति में कहा है—"शील ब्रह्मचर्यम्"।

ब्रह्मचर्य का अर्थ इतना व्यापक है कि उसमें शील की मर्यादाओं अथवा सच्चरित्रता के लिए आवश्यक गुणों का समावेश हो जाता है। यही कारण है कि 'प्रश्न व्याकरण' सूत्र में सभी व्रतों में ब्रह्मचर्य को महान् व मुख्य बताया गया है। जैसे पर्वतों में मेरू पर्वत और देवों में इन्द्र सबसे बड़ा है, वैसे ही ब्रह्मचर्य सभी व्रतों में बड़ा व्रत है। ब्रह्मचर्य की आराधना से सभी व्रतों की आराधना हो जाती है।

ब्रह्मचर्य का दूसरा अर्थ होता है—ब्रह्म आत्मा या परमात्मा में विचरण-रमण करना। यह अर्थ बहुत व्यापक है। स्वामी रामतीर्थ ने कहा—काम की दवा काम है। अर्थात् जब मानव शारीरिक श्रम करने लग जाता है तो उसके सारे विकार शान्त हो जाते हैं। यदि मनुष्य अपने हाथों से काम करता रहे तो वह वासनाओं को जीत सकता है।

ब्रह्मचर्य का एक अर्थ अकुशल कर्मों का त्याग करना भी है। इस अर्थ से भी हिंसादि पाँच पाप कर्मों का त्याग ब्रह्मचर्य के साथ-साथ करना जरूरी हो जाता है।

ब्रह्मचर्य का एक और व्यापक अर्थ है—पाँचों इन्द्रियों का निग्रह करना अथवा पाँचों इन्द्रियों का आत्मा में रमण करना।

जिसके द्वारा आत्म या ब्रह्म का साक्षात्कार किया जाए वह ब्रह्मचर्य है।

**विभिन्न धर्मों में ब्रह्मचर्य का स्थान :**

ब्रह्मचर्य एक ऐसा धर्म है, जिसकी पवित्रता, पावनता और स्वच्छता से कोई इनकार नहीं कर सकता। जब तक मनुष्य के मन में संयम, सदाचार और शील के प्रति आस्था का भाव जागृत नहीं होगा, तब तक ब्रह्मचर्य का पालन करना सरल नहीं है। विश्व के समस्त धर्मों में ब्रह्मचर्य को एक पावन और पवित्र धर्म माना गया है।

वैदिक परम्परा में आश्रम-व्यवस्था स्वीकार की गई है। चार आश्रमों में ब्रह्मचर्य सबसे पहला आश्रम है। वैदिक परम्परा का यह विश्वास है कि मनुष्य को अपने जीवन का भव्य प्रासाद ब्रह्मचर्य की नींव पर खड़ा करना चाहिये। ज्ञान और विज्ञान की साधना एवं आराधना बिना ब्रह्मचर्य की साधना से नहीं की जा सकती। जीवन के ऊँचे ध्येय को प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है।

बौद्ध परम्परा के सिद्धान्त ग्रन्थों में कहा गया है कि बोधि लाभ प्राप्त करने के लिए मार को जीतना आवश्यक है, वासनाओं पर संयम रखना आवश्यक है। जो व्यक्ति अपनी वासना पर संयम नहीं कर सकता, वह बुद्ध नहीं बन सकता। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म में ब्रह्मचर्य को कितना आदर एवं सत्कार प्राप्त हुआ।

ईसाई धर्म में भी ब्रह्मचर्य को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। बाइबिल में अनेक स्थानों पर व्यभिचार, विषय-वासना और विलासता आदि दुर्गुणों की भर्त्सना की गई है और दूसरी ओर त्याग, संयम, शील और सदाचार के मधुर गीत गाये गये हैं।

मुस्लिम धर्म में भी व्यभिचार, विलास और वासना का तीव्र विरोध किया गया है। जिस व्यक्ति का जीवन विलासमय, वासनामय होता है, मुस्लिम धर्म में उस व्यक्ति के जीवन को गर्हित एवं निन्दनीय समझा जाता है।

जैन परम्परा में ब्रह्मचर्य में एक अपार बल, अमित शक्ति और एक प्रचण्ड पराक्रम माना गया है। मानव जीवन को सरस, सुन्दर, शीतल एवं प्रकाशमय बनाने के लिये ब्रह्मचर्य की साधना को आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य माना गया है। भगवान् महावीर ने ब्रह्मचर्य की महिमा बताते हुए कहा है कि यह एक शाश्वत धर्म है, ध्रुव है, नित्य है और कभी मिटने वाला नहीं है। ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में इतने सुन्दर विचार अन्यत्र मिलना दुर्लभ है।

वर्तमान युग में महात्मा गांधी व सन्त विनोबा भावे ने ब्रह्मचर्य की स्थापना को जीवन-विकास के लिए परमावश्यक माना और उन्होंने बहुत लम्बे काल तक इसकी साधना करके इसे परखा।

**जीवन की आधारशिला ब्रह्मचर्य :**

मनुष्य का यह महान् जीवन ब्रह्मचर्य की आधारशिला पर व्यवस्थित रूप से टिका हुआ है, क्योंकि चारित्र का मूल ब्रह्मचर्य है। मनुष्य के पास विद्वत्ता हो, वक्तृत्व कला हो लेकिन चारित्र में वह खोखला हो तो उसका जीवन सफल नहीं होता। चारित्र को सुरक्षित रखने के लिए ब्रह्मचर्य-पालन आवश्यक है। ब्रह्मचर्य से शरीर और मन दोनों सशक्त बनते हैं, जीवन भी निर्भय, सुखी, शान्तिमय एवं शक्ति सम्पन्न बनता है। विचारों में शील का बल होने से आचरण को भी बल मिलता है।

ब्रह्मचर्य शरीर की मूल शक्ति है। जीवन का ओज है। जीवन का तेज है। सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य शरीर को सशक्त बनाता है। वह हमारे मन को मजबूत एवं स्थिर बनाता है। वस्तुतः मानसिक एवं शारीरिक क्षमता आध्यात्मिक साधना की पूर्व भूमिका है। जिस शरीर में बल नहीं, शक्ति नहीं, क्षमता नहीं, उसे आत्मा का दर्शन नहीं होता। सबल शरीर में ही सबल आत्मा का निवास होता है।

**ब्रह्मचर्य सभी व्रतों का मूल :**

'प्रश्न व्याकरण' सूत्र में ब्रह्मचर्य का महत्त्व निम्न प्रकार से बताया गया है :—

"पंच महव्वय–सव्वयमूलं"

अर्थात् ब्रह्मचर्य महाव्रतों और अणुव्रतों का मूल है। मूल के बिना जिस प्रकार वृक्ष पुष्पित और फलित नहीं होता, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य के बिना महाव्रतों और अणुव्रतों का टिका रहना कठिन ही नहीं, महा कठिन है। जैसे पृथ्वी के आश्रय के बिना कोई चीज टिक नहीं सकती, इसी प्रकार इस अनुपम शक्ति के अभाव में कोई भी सद्गुण नहीं पनप सकता। समुद्र में जैसे बहुमूल्य रत्न उत्पन्न होते हैं, वैसे ही 'ब्रह्मचर्य' भी अन्यान्य व्रतों की उत्पत्ति का स्थान है।

किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है—

"शील धर्म की खान है, पाप भंजक शील।
विश्व विजय का हेतु है, सहज सुभूषण शील।"

अर्थात् शील धर्म का निधान है, क्योंकि जहाँ शील है, वहाँ धर्म के विविध गुण रहते हैं। शील पाप को खंडन करने वाला है, शील प्राणियों का संसार में श्रेष्ठ और नैसर्गिक अलंकार है।

**शील का चमत्कार :**

आज दुनिया में अधिकांश लोग चमत्कारों के चक्कर में पड़े हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि समस्त चमत्कारों का मूल क्या है ? जिन्हें सामान्य लोग चमत्कार कहते हैं, वह तो जादू का खेल दिखाने वाले जादूगर या टोना करने वाले भी बता सकते हैं । परन्तु जिस चमत्कार का प्रभाव केवल मनुष्यों पर ही नहीं, भौतिक जगत् पर भी पड़े, प्रकृति पर भी पड़े, वह चमत्कार इन जादूगरों के पास भी नहीं है । वह है शीलवान के पास । इसके कुछ प्रेरक उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं :—

(१) शीलवती सीता के शील के प्रभाव से आग भी पानी-पानी हो गई थी । वह उन्हें जला न सकी ।

(२) शीलवान हनुमान के आदेश से लंका का समुद्र भी छोटी नदी जैसा बन गया था ।

(३) स्वामी रामतीर्थ ने जब हिमालय की बर्फीली चट्टानों को आदेश दिया तो सचमुच वे चट्टानें पिघल गईं ।

(४) शील बल के प्रभाव से सेठ सुदर्शन को दी गई, सूली भी सिंहासन बन गई ।

भर्तृहरि ने इसीलिए कहा—जिसके अंग-अंग में निखिल लोक का अति वल्लभ शील, ओत-प्रोत है, उसके लिए अग्नि जल बन जाती है, समुद्र छोटी नदी बन जाता है, मेरु पर्वत छोटी सी शिला बन जाता है, सर्प फूल की माला बन जाता है व विष अमृत हो जाता है ।

**शीलवान की सिद्धियाँ :**

हमारे शास्त्रों में ऐसे अनेक शीलवान पुरुषों और स्त्रियों के नाम अंकित हैं जिनके अतुल प्रभाव ने ही उन्हें प्रातः स्मरणीय बनाया है । शीलवान पुरुष के तेजस्वी व्यक्तित्व के सामने विरोधी-से-विरोधी, पापी-से-पापी और दुराचारी-से-दुराचारी व्यक्ति भी झुक जाता है । कहा भी है कि जिनकी आत्मा शील रूपी अलंकार से सुशोभित है, उनके सामने देवता भी दास बन जाते हैं । सिद्धियाँ उनकी सहचरी बन जाती हैं और लक्ष्मी उनके सामने हाथ जोड़े खड़ी रहती है ।

शीलवान को देवता, दानव, राक्षस तथा मानव आदि सभी नमस्कार करते हैं । शीलवान पुरुष मन से जिस बात की इच्छा करता है, वह उसे प्राप्त

हो जाती है। कुरूप-से-कुरूप और बेड़ौल-से-बेडौल व्यक्ति भी शील के कारण संसार में पूजा जाता है। शास्त्रों में बताया गया है कि देवों का राजा इन्द्र अपने सिंहासन पर बैठते समय 'णमो बंभयारिस्स' (ब्रह्मचारी को नमस्कार हो) कह कर उसे नमन करता है।

**शील-पालन से प्रत्यक्ष लाभ :**

आचार्य हेमचन्द्र ने शील के प्रत्यक्ष लाभ बतलाते हुए कहा है—

"चिरायुषः सुसंस्थाना, दृढ़ संहनना नराः।
तेजस्विनो महावीर्या,भर्वयु ब्रह्मचर्यतः।।"

अर्थात् ब्रह्मचर्य पालन करने से मनुष्य दीर्घायु, तेजस्वी और महापराक्रमशाली होते हैं, उनके शरीर का डीलडौल एवं उनके शरीर के अवयव परस्पर गठे हुए और मजबूत होते हैं।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है—"एक मात्र ब्रह्मचर्य के भली भांति पालन से समस्त विद्याएँ थोड़े ही समय में प्राप्त हो जाती हैं। ब्रह्मचर्य के बल से चाहे जो व्यक्ति श्रुतिधर व स्मृतिधर बन सकता है। ब्रह्मचर्य की रक्षा से ही ऐसी अमानवीय शक्ति प्राप्त होती है।

ब्रह्मचारी मनुष्य के ज्ञान तंतु बड़े निर्मल हो जाते हैं। वे जिस चीज को एक बार देख लेते हैं या सुन लेते हैं उसे फिर कभी नहीं भूलते। स्मरणशक्ति के मूल में ब्रह्मचर्य का तेज रहता है।

ब्रह्मचर्य संयम का मूल है। परब्रह्म अर्थात् मोक्ष का यह एक मात्र कारण है। ब्रह्मचर्य पालन करने वाला पूज्यों का भी पूज्य है। सुर, असुर व नर सभी का वह पूज्य होता है जो विशुद्ध मन से ब्रह्मचर्य की साधना करता है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से मनुष्य स्वस्थ, प्रसन्न और सम्पन्न रहता है। ब्रह्मचर्य की साधना से मनुष्य का जीवन तेजस्वी और ओजस्वी बन जाता है।

**शील के प्रेरक प्रसंग :**

(१) दयानन्द सरस्वती जब पंजाब में ब्रह्मचर्य की अनुपम महिमा का उपदेश दे रहे थे, तब एक प्रतिष्ठित सज्जन ने कहा—"ब्रह्मचर्य का महत्त्व कोरे शब्दों में नहीं, हम वास्तविक जीवन में प्रत्यक्ष देखने के इच्छुक हैं। स्वामीजी मंद-मंद मुसकरा कर रह गये।

जब वे सज्जन बग्घी में बैठकर जाने लगे तो दयानन्द सरस्वती ने पीछे से पहिया पकड़ लिया। बग्घी का चलना रुक गया। यह देखकर वे महाशय

नीचे उतरे तो आश्चर्यचकित रह गए। तब स्वामीजी ने कहा—"देखी बन्धु! ब्रह्मचर्य की साक्षात् शक्ति।"

(२) राम कृष्ण परम हंस और शारदा मणि देवी दोनों विवाहित होकर भी आजीवन ब्रह्मचर्य से युक्त रहे। विवाह होते ही राम कृष्ण परम हंस ने अपनी पत्नी शारदा मणि को 'माँ' के रूप में देखा। वासना की बात अपने मन, वचन या शरीर-चेदना से नहीं आने दी।

(३) शिवाजी के सैनिकों ने युद्ध में विजय होने के साथ एक खूबसूरत मुसलमान स्त्री को लाकर शिवाजी के सम्मुख उपस्थित किया। शिवाजी अपने सैनिकों के कार्य के लिए बहुत दुःखी हुए। उन्होंने उस स्त्री से कहा—"यदि आपके समान मेरी माता भी सुन्दर होती तो मैं भी सुन्दर होता।" शिवाजी ने अपने सैनिकों की ओर से क्षमा माँगी तथा उसे इज्जत के साथ अपने पति के पास पहुँचा दिया।

(४) बादशाह की पत्नी गुलनार दुर्गादास के रूप और उनके व्यक्तित्व पर मुग्ध हो गई तो उन्हें जेल की हवा खानी पड़ी। जेल में भी गुलनार दुर्गादास को शील व्रत से गिराना चाहती थी लेकिन दुर्गादास ने दृढ़ता से जवाब दिया कि वे ऐसे गन्दे शब्दों को सुनना भी नहीं चाहते, आचरण की बात ही क्या?

(५) अलाउद्दीन खिलजी के बुरे इरादों को नाकामायाब करने हेतु रानी पद्मिनी अपनी दासियों के साथ 'जौहर' कर जल गई लेकिन अपने शील व्रत पर किसी प्रकार की आँच न आने दी।

(६) श्रीमद् रायचन्द्र में शताधिक अवधान करने की अद्भुत क्षमता और योग्यता ब्रह्मचर्य के कारण ही थी। जिस भाषा का उन्होंने अध्ययन नहीं किया था, उस भाषा के कठिन-से-कठिन शब्दों को भी आसानी से वे हृदयंगम कर लेते थे। उन्होंने स्वयं के द्वारा रचित ग्रन्थ के बारे में ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में कितना सुन्दर कहा है—

"निरखी ने नव यौवना, लेश न विषय निदान।
गणे काष्ठ नी पूतली, ते भगवंत समान।।"

इस संसार में ज्ञानी, ध्यानी और दानी तो अनेक मिल जायेंगे लेकिन शीलवान मिलना अत्यन्त कठिन है। कहा भी है—

"ज्ञानी ध्यानी संयमी, दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत है, शीलवन्त कोई एक।।"

**जैन शास्त्रों में शील के उत्कृष्ट उदाहरण :**

(१) १९वें तीर्थंकर श्री मल्लीनाथजी स्त्री थीं। उनकी यौवन अवस्था में ६ राजकुमार उन पर आसक्त हो गए। श्री मल्ली ने अपनी कठपुतली बनाकर उनको मार्मिक उपदेश दिया, जिससे वे सब विरक्त हो गए तथा मल्ली भगवती स्वयं दीक्षित हो गईं।

(२) अपने गीले वस्त्रों को सुखाने जब साध्वी राजमति गिरनार की गुफा में गई तो वहाँ पहले रथनेमी ध्यान में खड़े थे। राजमति को इसकी जानकारी नहीं थी। राजमति के शरीर एवं उसके अलौकिक सौन्दर्य को देखकर रथनेमी संयम से विचलित होने लगे। उस समय साध्वी राजमति ने मार्मिक उपदेश देकर पुनः रथनेमी को ब्रह्मचर्य में स्थिर किया।

(३) राजा मणिरथ अपने लघु भ्राता की धर्मपत्नी मदन रेखा पर मुग्ध हो गया और उसको पाने के लिए अपने छोटे भाई की हत्या तक करदी, फिर भी मदन देखा ने महासती पतिव्रता, धर्म परायणा नारी का आदर्श कायम रखा। उधर पर नारी पर कुदृष्टि डालने से मणिरथ राजा को मौत का शिकार होना पड़ा।

(४) चन्दनबाला की माँ धारिणी ने अपनी शील रक्षा के लिए जीभ खींचकर जीवन त्याग दिया, किन्तु जीते जी अपने को 'रथिक' के हाथों नहीं सौंपा तथा अपना शीलव्रत सुरक्षित रखा।

(५) जैन शास्त्रों में सबसे उदात्त ब्रह्मचर्य का प्रसंग विजय सेठ और विजिया सेठानी का है। ये दोनों दम्पती विवाह के पश्चात् अपनी शुक्ल और कृष्ण पक्ष में ब्रह्मचर्य-पालन की प्रतिज्ञा पर जीवन पर्यन्त प्रसन्नतापूर्वक अडिग रहे और इतिहास की एक मिसाल बन गए।

**ब्रह्मचर्य-साधना के उपाय :**

ब्रह्मचर्य की साधना के लिए और उसकी परिपूर्णता के लिए शास्त्रकारों ने कुछ साधन एवं उपायों का वर्णन किया है, जिनके अभ्यास से साधारण-से-साधारण साधक भी ब्रह्मचर्य का पालन आसानी से कर सकता है। भगवान् महावीर ने १० प्रकार की समाधि और नव बाड़ों का उपदेश दिया है। जिस प्रकार किसान अपने खेत की रक्षा के लिए चारों ओर काँटों की बाड़ लगा देता है, जिससे कोई पशु उस खेत और पौधों को किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सके। उसी प्रकार साधना के क्षेत्र में भी ब्रह्मचर्य रूपी बाल पौधे की रक्षा के लिए बाड़ की नितान्त आवश्यकता है। भगवान् महावीर ने 'स्थानाङ्ग' सूत्र में समाधि, गुप्ति और बाड़ों का कथन किया है। 'उत्तराध्ययन' सूत्र में १०

प्रकार के ब्रह्मचर्य पालने की विधि बतलाई है। 'तत्त्वार्थ' भाष्य में आचार्य उमास्वाति ने ब्रह्मचर्य व्रत की पाँच भावनाओं का सुन्दर वर्णन किया है।

**दृढ़ शील निष्ठा से ही मुक्ति :**

शीलवान प्राणी अपने शील को अखण्डित रखने के लिए मृत्यु का भी आलिंगन करने के लिए तैयार होता है। एक भी बुरा विचार, बुरा स्वप्न, अश्लील कार्य, बुरी प्रवृत्ति मन-वचन-काया से नहीं होती, इतना मजबूत अभ्यास शील का हो जाता है, तभी काम वासनाएँ जड़मूल से नष्ट होती हैं।

जैन दर्शन में बताया गया है कि जब शील सम्पन्न व्यक्ति की उपर्युक्त दृढ़ भूमिका हो जाती है तो उस समय वह नवम् गुणस्थान का अधिकारी बनता है।

**ब्रह्मचर्य व्रत को अंगीकार कीजिए :**

ब्रह्मचर्य की साधना जीवन की एक कला है। अपने आचार, विचार और व्यवहार को बदलने की साधना है। कला वस्तु को सुन्दर बनाती है, उसके सौन्दर्य में अभिवृद्धि करती है और आचरण भी यह काम करता है। जीवन में शारीरिक सौन्दर्य से आचरण का सौन्दर्य कई गुना अच्छा है। आचरण हीन व्यक्ति सबके मन में काँटे की तरह खटकता है और श्रेष्ठ आचरण सम्पन्न पुरुष सर्वत्र सम्मान पाता है, अतः आचरण समस्त कलाओं में सुन्दरतम कला है।

अब्रह्मचर्य से महान् पाप होता है। गौतम स्वामी के प्रश्न करने पर भगवान् महावीर ने कहा कि जिस प्रकार रूई में भरी हुई नली में लोहे की तप्त सलाई डालने से रूई का नाश होता है, उसी प्रकार कामाचार से नव लाख सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय तक जीवों का नाश होता है।

ब्रह्मचर्य को व्रत के रूप में अंगीकार करने से भी विचारों की पवित्रता में सहायता मिलती है। मनुष्य के मन की निर्बलता जब उसे नीचे गिराने लगती है, तब व्रत की शक्ति ही उसे नीचे गिराने से बचाती है। व्रत अंगीकार नहीं करने वाला किसी समय गिर सकता है। उसका जीवन बिना पाल की तलाई जैसा है। किन्तु व्रती का जीवन उज्ज्वल होता है। उसमें एक प्रकार की दृढ़ता आ जाती है जिससे बुरे विचार उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते। अतएव किसी पाप या कुकृत्य को न करना ही पर्याप्त नहीं है वरन् न करने का व्रत ले लेना भी आवश्यक है।

शील व ब्रह्मचर्य का विवेचन पढ़कर उसे आचरण के धरातल पर लाया जाए, तभी जीवन के विकास के सारे मार्ग खुल सकते हैं।

—89, Audiappa Naicken Street,
MADRAS-600 079

साधकों से बातचीत

# ज्ञान-प्राप्ति से मोक्ष-प्राप्ति तक का क्रम [२]

□ श्री चाँदमल कर्णावट

माननीय साधक बन्धुओ एवं बहनो !

'जिनवाणी' पत्रिका के अक्टूबर '८३ के अंक में प्रकाशित ज्ञान-प्राप्ति से मोक्ष-प्राप्ति की विवेचना आपने पढ़ी होगी। 'दशवैकालिक' शास्त्र के चतुर्थ अध्ययन की गाथा १४ से १८ तक के विवेचन में आगमकार ने मोक्ष-प्राप्ति के लिए ज्ञान को प्रथम स्थान दिया है। इन गाथाओं में उल्लेख है कि साधनाशील आत्मा ज्ञान से सब जीवों की बहुत भेदों वाली नानाविध गतियों को किस प्रकार जान जाता है ? किस प्रकार वह इससे पुण्य-पाप को तथा बंध-मोक्ष को हृदयंगम कर सकता है ? क्रमशः अग्रसर होते हुए साधक आत्मा किस प्रकार देव एवं मनुष्य सम्बन्धी भोगों की असारता समझ कर उन्हें त्याग देता है, और आभ्यन्तर एवं बाह्य संयोगों का त्याग करते हुए संयमी जीवन स्वीकार कर लेता है।

आज अनेक विचारकों के सामने यह प्रश्न है कि क्या संयम ले लेना या अणगार जीवन स्वीकार कर लेना ही पर्याप्त है ? तदनन्तर मोक्ष तक की साधना के कौन-कौन से सोपान हैं तथा उनकी साधना किस प्रकार होनी चाहिए। संभव है, यह जिज्ञासा आपके मन-मानस में भी जगी होगी। उसी जिज्ञासा को दृष्टि में रखकर मैं तत्सम्बन्धी कुछ विचार लेकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूँ। आगे यह बतलाने का प्रयास करूँगा कि संयमी-जीवन के बाद मोक्ष तक की साधना के कौन से सोपान हैं और उनकी साधना किस प्रकार से की जाय।

**अणगार जीवन से केवलज्ञान प्राप्ति तक का क्रम :**

'दशवैकालिक' सूत्र अध्ययन ४ की १९ से २१ तक की गाथाओं में अणगार जीवन से केवलज्ञान प्राप्ति तक का क्रम इस प्रकार बताया गया है।

जब साधनाशील आत्मा द्रव्य और भाव से मुंडित होकर अणगार वृत्ति को ग्रहण करता है तब उत्कृष्ट एवं प्रधान संवर चारित्र धर्म को स्पर्श करता है। जब उत्कृष्ट संवर धर्म को प्राप्त करता है तब आत्मा मिथ्यात्व परिणाम द्वारा उपार्जित किए हुए कर्मरज को झाड़ देता है अर्थात् दूर कर देता है। इसी क्रम में जब आत्मा मिथ्यात्व परिणाम द्वारा उपार्जित कर्म को झाड़ देता है, तब वह सब पदार्थों को जानने वाले ज्ञान अर्थात् केवलज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त कर लेता है।

**संवर धर्म की उत्कृष्टता :**

उपर्युक्त शास्त्रीय उल्लेख से हमें यह ज्ञात हो जाता है कि संवर धर्म अनुत्तर एवं प्रधान धर्म है। आप इन गाथाओं को पढ़ेंगे तो देखेंगे कि स्वयं शास्त्रकार ने संवर धर्म के लिए 'उक्किट्ठम' एवं 'अणुत्तरं' विशेषणों का प्रयोग करके संवर धर्म की उत्कृष्टता और प्रधानता बताई है।

अब आपके मन में यह उत्सुकता हो रही होगी कि संवर धर्म की इस उत्कृष्टता का आधार क्या है ? जीवादि नव तत्त्वों में संवर को अनुत्तर स्थान किस कारण दिया गया है ? मोक्ष-प्राप्ति के क्रम में संवर का यह मूलभूत महत्त्व किस कारण स्थापित किया गया है ? इन सभी प्रश्नों का समाधान आगे देने का प्रयास किया जा रहा है।

**संवर धर्म की यह व्याख्या :**

लाला रणजीतसिंहजी कृत 'वृहत् आलोयणा' की निम्न पंक्तियों को देखिए—

> अरिहंत देव, निर्ग्रन्थ गुरु, संवर निर्जरा धर्म।
> केवली भाषित शास्त्र, यही जैन मत मर्म।।

उपर्युक्त दोहे में देव गुरु और धर्म का उल्लेख करते हुए संवर और निर्जरा को धर्म बताया है। संवर आत्म संयम का ही अपर रूप है। समस्त अशुभ प्रवृत्तियों से निवृत्ति ही संवर है। यही धर्म है, क्योंकि यही हमें उन्मार्ग में जाने से बचाता और उत्थान के मार्ग में अग्रसर करता है। आज हमारे सामने एक मूल प्रश्न खड़ा होता है कि धर्म क्या है और कौनसा धर्म श्रेष्ठ है ? आधुनिक विचारशील मस्तिष्क में भी यही प्रश्न बार-बार उभरता है। हमारे इन प्रश्नों का उत्तर संवर धर्म है जिसको स्वयं शास्त्रकार ने उत्कृष्ट और अणुत्तर धर्म माना है।

संवर तत्त्व की हमारी परम्परित परिभाषा यही है कि जो प्रवृत्तियाँ आत्मा में आते हुए कर्मों को रोकती हैं, संवर कहलाती हैं। इसी को आधार मानकर हम संवर तत्त्व एवं संवर धर्म की विस्तृत व्याख्या करेंगे। आप सभी जानते होंगे कि प्रभु महावीर से जब पूछा गया कि संवर क्या है तो उन्होंने फरमाया था—"आया संवरे, आया संयमे, आया पच्चक्खाणे" अर्थात् हमारी यह आत्मा ही संवर है, आत्मा ही संयम और आत्मा ही प्रत्याख्यान है। इसका सरल अर्थ है कि आत्मस्वरूप में रमण करना ही संवर है। जड़ पदार्थ और चेतन आत्मा के भेद को समझकर ही यह आत्मरमण किया जा सकता है। हम प्राय: कहा करते हैं कि हम इसका या उसका लोभ संवरण नहीं कर सके। यहाँ 'संवरण' का अर्थ 'काबू करना' या 'वश करना' है। 'संवर' शब्द का यदि हम विश्लेषण करें तो देखते हैं कि 'सम्' और 'वर' इन दो शब्दों से संवर शब्द बना है, जिसका अर्थ है सम्यक् रूप से वश करना या काबू करना। यदि वरण का अर्थ प्राप्त करना माना जाय तो इसका अर्थ होगा सम्यक् रीति से प्राप्त करना। वह सम्यक् रूप या स्वरूप क्या है जिससे हम आत्मस्वरूप में रमण कर सकें, उसे प्राप्त कर सकें।

आत्मरमण की इस सम्यक् विधि की व्याख्या इस प्रकार हो सकती है :—

(१) बाह्य जड़ पदार्थों अथवा क्रोध कामादि असत् वृत्तियों से अपना संवरण करना अथवा आत्मिक गुणों की निधि की सुरक्षा करना। जैन दर्शन में दमन के स्थान पर शमन को महत्त्वपूर्ण माना है। तदनुसार जड़-चेतन का भेद-ज्ञान करके उन्मार्ग में जाती हुई इन्द्रियों और मन को मोड़कर आत्मा के शुद्ध स्वरूप में स्थिर करना। पदार्थों के नश्वर स्वरूप, कषायों के विभाव रूप का चिंतन करते हुए अपने आप में स्थित होने का प्रयास करना शमन है। यह संवर की व्याख्या का मूल अंग है।

(२) संवर की व्याख्या के अन्तर्गत वस्तुओं और व्यक्तियों के प्रति केवल ज्ञाता और द्रष्टा का दृष्टिकोण बनाकर व्यवहार करना भी सम्मिलित है। जब हम व्यक्तियों और वस्तुओं के प्रति केवल ज्ञाता द्रष्टा भाव रखते हुए कोई प्रतिक्रिया नहीं करेंगे तो संवर की सम्यक् साधना कर पायेंगे। मैं यह नहीं कहता कि यह सब एक दिन में ही सिद्ध हो जाएगा, इसके लिए तो दीर्घ साधना की आवश्यकता है। परन्तु हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाना चाहिए।

(३) अनुकूल एवं प्रतिकूल स्थितियों में रागद्वेष की वृत्तियों पर नियन्त्रण करना और समभाव में रहने का अभ्यास करना भी संवर साधना

का ही रूप है। सामायिक की साधना का लक्ष्य भी यही है। सामायिक को इसीलिए संवर की क्रिया माना गया है।

(४) संवर की साधना आंतरिक साधना होने के साथ बाह्य रूप में भी साधना है। मन में उठते हुए काम क्रोधादि विकारों को श्वास की गति धीमी करके हम नियन्त्रित कर सकते हैं अथवा श्वास निरोध करके भी उन्हें काबू में ला सकते हैं। यह केवल कहने का ही विषय नहीं इसे आप सभी साधक स्वयं अनुभव कर सकते हैं। जब भी विकारों की आँधी उठने लगे, आप अपने श्वास की गति को निरुद्ध कर दें अथवा धीमी कर दें तो प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे कि विकारों की आँधी स्वयं शांत हो रही है।

**संवर धर्म की साधना :**

साधु-साध्वी तो पूर्णरूपेण संवर की साधना करते ही हैं परन्तु हम गृहस्थों के लिए भी संवर साधना व्यक्तिगत और सामाजिक सुखी जीवन के लिए आवश्यक है। हम विवेकपूर्वक प्रत्येक क्रिया को करते हुए अन्तःकरण में आत्मस्वरूप का चिंतन करते हुए संवर की साधना करें, यह आवश्यक है।

संवर के २० भेद एवं ५७ भेद जिन्हें आप सभी जानते हैं, समझकर उनका अनुपालन करते हुए हम संवर की साधना में अग्रसर हो सकते हैं। परन्तु इन सभी क्रियाओं में ऊपर बतायी गई संवर की व्याख्या हमारे लक्ष्य में रहनी चाहिए।

**संवर की परिणति निर्जरा में :**

'दशवैकालिक सूत्र' के चतुर्थ अध्ययन की २०वीं गाथा में निर्जरा धर्म का उल्लेख है। संवर की साधना करते हुए साधक निर्जरा करता है। पक्षी के पंखों पर लगी हुए धूल झड़ने की तरह संवर साधना से कर्म रज भी झड़ जाती है और आत्मा उत्तरोत्तर निर्मल होती जाती है। संवर के उत्कृष्ट स्वरूप में रहते हुए हम अधिकाधिक कर्म-निर्जरा करने में समर्थ हो सकते हैं।

**संवर निर्जरा की परिणति :**

जैसा कि शास्त्रकारों ने बताया है, संवर निर्जरा की साधना करता हुआ साधक कर्ममल से रहित बनकर परमज्ञान अर्थात् केवलज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त कर लेता है। काम, क्रोध, आदि कषायों के फलस्वरूप तथा अज्ञान और मोह दशा के कारण आत्मा पर एक आवरण छा जाता है। उससे हमारी ज्ञान और दर्शन की ज्योति ढक जाती है। यह अज्ञान का अंधकार हमारे जीवन

में भटकने की स्थिति पैदा करता है परन्तु जैसे-जैसे संवर साधना से मोह और अज्ञान की मलिनता दूर होती जाती है वैसे-ही-वैसे हमारी ढकी हुई ज्ञान ज्योति प्रकट होती है। जैसे-जैसे मिथ्या दृष्टिकोणों का या अज्ञान का निवारण होता है, काम क्रोधादि पर विजय की जाती है, उस सत्पुरुषार्थ से आत्मिक ज्ञान और दर्शन की प्रखर ज्योति आविर्भूत होती जाती है। इसी के फलस्वरूप हम अपने परम लक्ष्य के रूप में केवलज्ञान-केवलदर्शन को प्राप्त करते हैं और सब कुछ जानने और देखने की शक्ति हस्तगत कर लेते हैं।

साधक बन्धुओ! ऊपर मैंने संवर धर्म की विस्तृत व्याख्या की है। मुझे इस पर आपकी प्रतिक्रिया जानने की उत्सुकता रहेगी। आशा है, आप अपनी प्रतिक्रिया मुझे भेजेंगे। मेरा आपसे अनुरोध है कि संवर के इस स्वरूप को अपनी साधना का अंग बनाकर इसका अभ्यास करेंगे।

—संचालक, साधना-विभाग, ३५, अहिंसापुरी,
फतहपुरा, उदयपुर–३१३ ००१

---

**प्रेरक प्रसंग :**

# वसुधैव कुटुम्बकम्

☐ डॉ० भैरूंलाल गर्ग

घटना उस समय की है जब स्वामी रामतीर्थ अमरीका गये। जहाज सॉनफ्रांसिस्को के बन्दरगाह में लंगर डाले खड़ा था। यात्री उतरने की उतावली कर रहे थे। केवल निष्परिग्रह स्वामी रामतीर्थ शान्तभाव से डैक पर खड़े थे। उन्हें ऐसी स्थिति में देखकर एक अमरीकन ने पूछा, "आपको नीचे नहीं उतरना है? आपका सामान कहाँ है?"

"सामान? सामान तो मैं रखता ही नहीं।"

अनजान अमरीकन ने फिर पूछा, "तो साथ धन तो होगा ही, मगर कहाँ रखते हो?"

"पैसा भी पास नहीं है।"

"तो क्या अमरीका में आपका कोई मित्र है?"

"हाँ, मेरा एक मित्र है यहाँ", स्वामी रामतीर्थ ने अमरीकन के कंधे पर हाथ रखकर हँसते हुए कहा, "और वह तुम हो।"

—जेल रोड, झालावाड़–३२६ ००१ (राजस्थान)
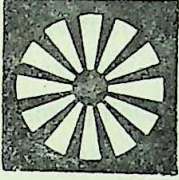
# Some Psychological Aspects of the Jaina Concept of Non-Violence

□ Krishna Gopal Sharma

Perhaps no other religion in the world has discussed, analyzed and defined the concept of non-violence so elaborately and meticulously as Jainism. The concept is central too, and in some respects, identical with the Jaina religion itself.[1]

Ahimsa, according to Jainism, is a natural instinct. It stands for the negation of the unnatural as well as for the affirmation of that which is natural. 'It inspires the individual and the nation to achieve complete harmony with all the noble impulses of human nature'.[2] It would be seen that this is a concept which is opposed to the Darwinian concept of the survival of the fittest. That the bigger fish swallows the smaller fish is true of the physical world only which includes our bodies also. But inherent in our hearts is

---

1. Cf. the following references :

जीवादीसद्दहणं सम्मत्तं तोसिमधिगमो णाणं ।
रागादीपरिहरणं चरणं एसो दु मोक्खपहो ।।
—*Samayasara*, 155

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयंमासे जयं सये ।
जयं भुंजतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ ।।
—*Dasavaikalika*, ch. 4

जेय बुद्धा अतिक्कंता, जेय बुद्धा अणागया ।
संति तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा ।।
—*Sutrakrtanga*, 1-11-16

2. George kottman, *Ahimsa-Gautama to Gandhi,* Sterling Publishers, New Delhi, 1973, introduction. p. 3.

'a natural desire to help others and not to torment them'.[3] Let us take an example to illustrate this. If one throws a man into the river, his action is not natural. There has to be some motive or cause behind it. On the other hand, we do not require an explanation when a man who knows swimming saves a drowning man without any previous familiarity with him. It means that non-violence is inherent in the nature of things.

Ahimsa is an altruistic faith, a faith based on the sanctity of all creation. It springs from an attitude of respect towards human will to live and grow. *As Acaranga sutra* says.

सव्वे पाणा पियाउया, सुहसाया दुहपडिकूला ।
अप्पियवहा पियजीविणो, जीविउकामा सव्वेसिं जीवियं पियं ॥

सव्वे जीवा वि इच्छन्ति, जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जायंति णं ॥

This human will when given due regard reciprocally results in an attitude of non-violence. There we see Ahimsa in its incipient and naturalistic form. The concept when elaborated allows for freedom of progress and equality of opportunity for all people. It recognises that every man irrespective of caste, colour and creed has a dignity of his own. Though the doctrine has an ethical significance it has behind it a deep sympathetic understanding of the universe and the innumerable beings in it. It is supported by the metaphysical theory of hylozoism.[4]

3. D. N. Bhargava, "Some Chief Characteristics of the Jain Concept of Non-Violence", in *Contribution of Jainism to Indian Culture*, ed. by R. C. Dwivedi, Motilal Banarasidass, Varanasi, 1975, p. 123.
4. For example see 'सव्वेपाणा, सव्वे भूया, सव्वेजीवा, सव्वे सत्ता न हंतव्वा न अज्जावेयव्वा, न परिघेतव्वा न उवद्दवेयव्वा एसधम्मे सुद्धे नियए सासए समेच्च लोयं खेयन्नेहिं पवेहए'—*Acaranga;* 'अहिंसा निउणा दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो'; 'सव्व-भूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ'; 'अत्तसमे मलिज्ज छप्पिकायं'—*Dasavaikalika;* 'आयतुले पयासु'—*Sutrkrtanga*.

The modern trends in the study of psychology are increasingly leading to the conviction that a man should integrate his feelings with values. The Jaina concept of non-violence with its severe code of conduct appears to be standing on the condemning corner when judged by this yardstick. This, however, is not the case. In fact, the psychology of asceticism of which Ahimsa forms a substantial part itself needs a close examination. The asceticism in its dark facet signifies some abnormalities chiefly caused by suppression of emotions or feelings. A Jaina practicant of non-violence, however, shows a constructive bent of mind from the available mass of literature throwing light on the personalities of Jaina saints and from the testimony of the living saints themselves, one can easily distinguish between the serenity of an ascetical behaviour and the behaviour of the neurotic and psychotic patients. 'Between masochism which is a perversion by which pain and suffering become sources of sexual pleasure or of thinly disguised substitutes for it and the Jainist denial of the enjoyment of sensuous pleasures, the similarity is more apparent than real.[5]

Jainism has taken the wiser course of coping with the dynamic roots of the syptoms which lie deep in the emotional life of an individual. Everyone likes to have pleasure and Jainism ultimately aims at the accomplishment of the blissful state of the self. There is no denying that human nature is essentially end-oriented. The humam life is 'so thoroughly teleological that it cannot be understood apart from what it is seeking to become.[6] Jainism recognizes that Ahimsa can be both good as a means and good as an end. The Sutrakrtanga explicitly says that Ahimsa is the highest good. In a similar view, Samantabhadra has said that Ahimsa of all living beings is equivalent to the realisation of the highest good. 'By this theory of Ahimsa-Utilitarianism, narrow egoism is abandoned,'[7]

5. M. G. Dhadphale, "Some offshoots of the Ahimsa as implied in the Jain Philosophy" in *Contr. of Jain. to Ind. Cul.*, p. 129.
6. Blanshard, *Reason and Goodness*, p. 316.
7. Kamal Chand Sogani "Jaina Ethical Theory" in *Contr. of Jaina to Ind. Cul*, p. 173.

The Jaina concept of non-violence has been criticized on the ground that 'the form of asceticism which it encourages including physical torture and starvation is repignant to the passive idealism of Ahimsa.'[8] It is true that the Jaina idea of non-violence is a severe one. But a Jaina practicant does not suffer for the sake of suffering. He only treats himself severely to eradicate the evil of Karman. It is not self-suffering; it is a rigorous self-discipline. The so-called self-chastisement is only a step towards self-chastity. Just as the gaining of knowledge is strenuous but not so the attainment of knowledge which is blissful, so is the preliminary stage to nirvana painful but not the nirvana itself. The Jainist asceticism is not motivated by any type of 'Thanatos' or self-destructive urges of hostility, hatred and guilt. It springs from attitudes of respect, value and worth towards life. The psychology of Jain ascetic practices is thus a stage in the search for a psychology of human purity and spiritual perfection. The Jainist Ahimsa is an active treatment and a progressive ideology.

—U. G. C. Research Fellow,
Deptt. of History, Univ. of Raj., Jaipur

8. George kottman, *op. cit.*, p. 12.

## उत्सर्ग

☐ कल्पना आंचलिया

गुलाब के फूल पर पड़ी ओस की बूँद मोती के समान झलमल कर रही थी।

ईर्ष्यालू कौवे ने कर्कश स्वर में कहा—"इतनी इठला मत। अभी वायु का झोंका तुझे महामिट्टी में फेंकने वाला है।"

बूंद दुगनी चमक के साथ बोली—'सच ! तब तो मैं इस सुन्दर गुलाब के पौधों में रस बनूंगी और एक दिन मैं स्वयं गुलाब का पुष्प बनकर उपवन को सुगन्धी से भर दूँगी।''

116, देवाली, उदयपुर–313001

**उद्बोधन :**
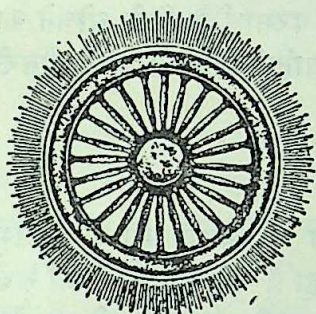
# सत्–असत् करणी*

□ पं० र० श्री हीरा मुनि
[आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के विद्वान् शिष्य]

**सत्-असत् करणी :**

संसार के अनन्त-अनन्त उपकारी, ज्ञान और क्रिया की ज्योति जगमगाने वाले तीर्थेश महावीर और तीर्थेश की वाणी पर संपूर्ण न्यौछावर कर, पंचाचार के पालक आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात् ।

वीतराग वाणी में विपाक सूत्र के माध्यम से जीवन-निर्माण का कुछ संदेश दिया जा रहा है । कहा जाता है कि जीवन में सत् करणी सुख प्रदान करनेवाली है और असत् करणी दुःख प्रदान करनेवाली है ।

जितनी-जितनी मात्रा में मिथ्या मोह से घिर कर स्वार्थ की भावना से जीवन में सामंजस्य कर जो कुछ किया जा रहा है वह दुःख देनेवाला है और सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान में ओतप्रोत होकर निर्माण के लिये तथा दूसरों के लिये तथा दूसरों के जीवन को बनाने के लिये जो कुछ किया जा रहा है, वह दोनों के लिये कल्याणवाला होता है । मृगालोढ़ा के जिस शरीर और अंगोपांग को देखा नहीं जा सकता, नाक की आकृति मात्र है, आंखों की जगह गड्ढे पड़े हैं, कान की जगह सुराख मात्र हैं और हाथ-पैरों की भी यही स्थिति है । अंग-उपांग से कुछ कहने-करने का साधन नहीं ।

दोहरी चाल है । पुण्य का उदय है इसलिये तो राजघराने में जन्मा है । पापाचार हुआ है, इसलिये राजघराने में जन्म लेकर भी जो दृष्टि मिलनी चाहिये, क्रिया का साधन मिलना चाहिये, जो समझ मिलनी चाहिये, वह उस समझ से और क्रिया से रहित है ।

*जलगांव में ४ अक्टूबर, १९८२ को दिया गया प्रवचन । श्री संजीव भानावत द्वारा सम्पादित

सही दृष्टि आज के मानव पर भी गड़ाई जानी चाहिये, जिनको मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल, अच्छा शरीर, पूर्ण इन्द्रियाँ, सब कुछ मिली लेकिन कुछ ऐसी कमियाँ रहीं कि वे अपना जीवन अपने स्वार्थ, अपने नाम और अपने ही कर्त्तव्य में लगाये हुए हैं। आत्मा के लिये और परमार्थ के लिये सोचने का उनके पास समय नहीं है। पाया सब कुछ है पर बाहरी दृष्टि से और भीतरी दृष्टि से देखा जाय तो कुछ भी नहीं पाया है।

**जो कुछ पाया है, उसका सही उपयोग हो :**

इसी तरह प्राणियों को शिक्षा देने के लिये वीरवाणी का यह दुर्लभ संदेश विपाक सूत्र के माध्यम से इसलिये रखा जा रहा है कि मानव ने जो कुछ पाया है उससे अधिक पाने की इच्छा के बजाय जितना है, उसका सही उपयोग करें। सात सुखों में से पाँच प्राप्त हैं और दो बाकी हैं तो दो के लिये रोना-रोने का प्रयत्न करना हर प्राणी में पाया जाता है लेकिन मिला है उसका क्या करना, यह बात सोचनीय है। इस दृष्टि से आपके सामने रखा जा रहा है कि जिन्होंने पाया, उन्होंने किस तरह से उपयोग किया, इस बारे में स्थानांग सूत्र के माध्यम से चौभंगी आपके सामने रखी जा रही है। जिसमें से पुत्रों के संबंध में और शिष्यों के संबंध को लेकर इस बात को स्पष्ट तौर पर कहा गया।

**चार प्रकार के जीव :**

इसी तरह एक चौभंगी सूत्र में कही गई। क्या है वह और शास्त्र में कौनसा रहस्य उद्घाटित किया जा रहा है। वीरवाणी में क्या कहा गया ? यह कहा गया कि इस संसार में चार प्रकार के जीव कहे गये है :—

"सच्चे नामेगे सच्चे, सच्चे नामेगे असच्चे ।
असच्चे नामेगे सच्चे, असच्चे नामेगे असच्चे ।।"

चार प्रकार के प्राणियों में से पहले प्राणी हैं जो संसार में श्रेष्ठ हैं। अपने और पराये के स्वरूप को समझ कर बाहर और भीतर को देख कर चलने वाले हैं। उनके लिये कहा गया है "सच्चे नामं एगे सच्चे"। अर्थात् आदि काल से ही वे सत्य को लेकर चल रहे हैं और पुरुषार्थ करने का, साधना करने का जब समय आया तब भी अपने सत्य व्रत पर अवलंबित रहकर चलते रहे। जैसा उनका कहना है, वैसी ही उनकी करनी है। जैसा वे सोचते हैं, वैसा ही वह बोलते हैं। इस तरह कुछ पुरुष ऐसे हैं जो सत्यवादी होकर, सत्य मानकर, सत्य जानकर, सत्य में ही क्रिया करते हैं।

लेकिन दूसरी तरह के प्राणी वे हैं "सच्चे नामं एगे असच्चे" कहने के लिये जब नंबर आता है तब यह कहते हैं कि अहिंसा परम धर्म है। सत्य से

बढ़कर इस संसार में साख जमानेवाला और विश्वास देनेवाला और कोई धर्म नहीं है। ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ व्रत है। इसकी महिमा की क्या बात कहूँ। सब धर्मों में यह धर्म सर्वश्रेष्ठ है। वह जीवन-निर्माता और शक्तिदाता है। जो नहीं करने और अशक्य काम हैं वे काम भी शील के माध्यम से किये जा सकते हैं। शील से बढ़कर कोई धर्म है नहीं, था नहीं और होगा नहीं। कब ?

कहने के लिये तो शील महान् है, ब्रह्मचर्य महान् है, अहिंसा महान् है लेकिन करने के लिये जहाँ चिकनी मिट्टी देखी, वहाँ पैर लड़खड़ा गये। जहाँ चार आंखें हुई कि मान भूल गया। जब तक संसर्ग नहीं था तब तक शील महान् था और जब संसर्ग में आया तब शील को कागज की पुड़िया की तरह जेब में रखकर चला गया। ऐसे प्राणियों को दूसरे नंबर में रखा गया है। "सच्चे नामं एगे असच्चे" अर्थात् दूसरों को शिक्षा देनी है तब सत्य कहते हैं। दूसरों का जीवन-निर्माण करना होता है तब सत्य कहते हैं। जब स्वयं के करने का नंबर आता है तब कहते हैं कि हम संसारी हैं। धर्म अच्छा है, बहुत बढ़िया है लेकिन क्या करें, हम से पाला नहीं जाता है। इसी तरह स्वार्थ में आकर, लोभ की प्रवृत्ति में आकर सत्य मानते हुए भी, सत्य का कथन करते हुए भी जो करने-कराने में विपरीत होता है, ऐसा प्राणी दूसरे नंबर में है जो आचरण करने योग्य नहीं है।

तीसरा नंबर है "असच्चे नामं एगे सच्चे" अर्थात् जब तक कोई प्राणी अज्ञानी था, ना ससझ था, बचपन की अवस्था में था, समझ नहीं थी तब तक असमझवाला था, मूर्ख था, अपढ़ था। लेकिन जब उसकी समझ में आया कि विद्या परम धर्म है, विद्या जीवन निर्माण में सहायक है, विद्या अज्ञान-अन्धकार का नाश करनेवाली है, तब से उसने प्रयत्न चालू किया और भरसक प्रयत्न करके विद्या अध्ययन किया और विद्या उपार्जित की। जब तक शील-अश्लील के बारे में नहीं समझ पाया था तब तक संसार में रहकर, भोग में रहकर, कुछ दुराचरण कर बैठा यह अलग बात है। लेकिन जब समझा तभी असत्य मार्ग को छोड़कर सत्य मार्ग अपनाया। यह तीसरे दर्जेवाला है।

**कथा थावरचा पुत्र की :**

शास्त्रों में एक छोटीसी लघु कथा है। शील का आचरण कैसे होता है, किस तरह आगे बढ़ता है ? मैं अपना चालू चरित्र जो श्रेणिक का है, चलाना चाहता हूँ। उस नाम से आगे कहना है। लेकिन असत्य सत्य कैसे हुआ, अज्ञान ज्ञान कैसे होता है और ज्ञान पाने से सचेत आत्मा कैसे जगती है, इस बारे में एक छोटासा दृष्टान्त आपके सामने रखूँ।

सूर्य ढलान पर है। ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं और छत की मुंडेरों पर हल्की पीली-सुनहरी धूप फैली हुई है। छत की मुंडेर पर बैठा गोरे मुख और लम्बे घुँघराले बालों वाला एक बालक तल्लीन होकर नीचे झांककर कुछ देख रहा है। बालक को देख कर लगता है कि इसकी उम्र लगभग सात-आठ साल की होगी।

नीचे एक श्रेष्ठि के आँगन में सारंग-नैनी सारंग-बैनी बालाओं के पैर थिरक रहे है। नुपुरों की रुनझुन और ढोलकों की धुनक इस बालक के लिए जितनी आनन्दवर्द्धक है, उतना ही कुतूहलपूर्वक भी। क्योंकि ऐसे मीठे गीत इसने पहले कभी नहीं सुने। जितना आनन्द इसे इन गीतों को सुनने में आ रहा है, इससे अधिक उत्सुकता इसे अपनी जिज्ञासा को शान्त करने की है।

बालक ऊपर से नीचे आता है और अपनी माँ से पूछता है, "माँ-माँ! ऊपर चलकर देखो, कैसा सुन्दर नाच हो रहा है? ऐसे अच्छे गीत तो मैंने पहले कभी नहीं सुने।"

सेठानी अपने इस इकलौते पुत्र की सरलता पर बलिहार हो गई और प्यार से उसे पुचकार कर बताने लगी—"बेटा! हमारे पड़ोसी सेठ के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ है, उसके जन्म की खुशी में ही ये मंगल गीत गाये जा रहे हैं।"

एक जिज्ञासा का समाधान हुआ तो बालक के मन में दूसरी जिज्ञासा उठी "माँ, क्या मेरे जन्म पर भी ऐसे ही मंगल गीत गाये थे?"

"हाँ बेटा! इससे भी अच्छे मंगल गीत तेरे जन्म पर गाये गये थे। हमारा यह आँगन खचाखच भर गया था। बड़े भाग्य से पुत्र का मुख देखने को मिलता है। तेरे जन्म की खुशी में तेरे पिता ने खुले हाथों से खजाना लुटाया था, जब तेरा ब्याह होगा तभी ऐसे ही गीत गवाऊँगी।"

बालक ने कहा—"माँ, चल मेरे साथ ऊपर छत पर चल, तू भी उन गीतों को सुन।" माँ ने प्यार से कहा कि—"जा बेटा तू ही जा। मैं तेरे लिये भोजन बनाऊँगी। देख तो सही दिन छिप रहा है। गीत सुनकर जल्दी आ जाना।"

हड़बड़ाता हुआ वह बालक नीचे दौड़ कर आता है और एक अजीब सी परेशानी अनुभव करता हुआ माँ से पूछता है कि "माँ गीत बदल गये। तू चल कर देख, ऐसे गीत तो किसी को भी अच्छे नहीं लगेंगे। ढोलकों की थपकी बन्द हो गई। ढोलकें एक ओर लुढ़की हुई पड़ी हैं। अब उन गीतों में पुरुष भी शामिल हो गये हैं—बस, मुँह फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हैं। कुछ स्त्रियाँ छाती पीट रही हैं, कुछ पछाड़े खा रही हैं। माँ पहले गीत बहुत अच्छे थे। क्या जन्म दिन पर दो तरह के गीत गाये जाते हैं?"

सेठानी को वास्तविकता समझने में देर नहीं लगी। कुछ क्षण पहले की परिस्थिति में जो परिवर्तन हुआ, उसे देखकर सेठानी उदास हो गई। अपने लाड़ले से बोली—"बेटा, ये गीत नहीं हैं, रोना है। जो स्त्रियाँ पहले गीत गा रही थीं, वे अब रो रही हैं। अब परिस्थिति बदल गई।" बालक ने पूछा "माँ, मेरी समझ में कुछ नहीं आया। तू क्या कह रही है ? यह रोना क्या है ? पहले गाना, फिर रोना ? गाना तो मुझे बहुत अच्छा लगता है, पर यह रोना नहीं सुहाता।"

माँ बोली—"बेटा, जब कुछ पाते हैं तो गाते हैं और जब खोते हैं तो रोते हैं। हमारे पड़ोसी सेठ के घर पुत्र का जन्म हुआ तो मंगल गीत गाये गये। अभी-अभी वह बच्चा मर गया, इसलिये सब रो रहे हैं।"

बालक के मन में उथल-पुथल मच गई। क्षण भर के लिए उस सुकुमार बालक का सिर घूम गया। उसकी वाणी में विषाद था। माँ से पूछा—"माँ, यह मरना क्या है ? क्या मैं भी मरूंगा ?" बालक के मुँह पर हाथ रखते हुए सेठानी ने कहा—'बेटे, ऐसी अशुभ बातें नहीं कहते। तू अभी छोटा है। जा खेल। मैं तेरे लिए रसोई बनाती हूँ।" माँ बात टालना चाहती थी पर बालक जानना चाहता था। उसने हठ किया।

"नहीं माँ, मैं खेलने नहीं जाउँगा। तुझे भी रसोई नहीं बनाने दूंगा। पहले मुझे यह बता दे कि यह मरना क्या है ? कौन मरना मरता है ? कौन नहीं मरता ? और यह भी बता दे कि पड़ौसी का बच्चा इतनी जल्दी क्यों मर गया ? वह मेरे बराबर बड़ा क्यों नहीं हुआ ?"

सेठानी ने सोचा कि सच बताने में हर्ज ही क्या है और वह बताने लगी—

"बेटा सवेरे सूर्य निकलता है और शाम को छिपता है। सूर्य का निकलना और छिपना एक नियम में बँधा हुआ है। ऐसे ही जो पैदा होता है, वह मरता है। जो मरता है वह पैदा होता है। मरना-जीना, गाना-रोना साथ-साथ चलते हैं। यहाँ हरएक को मरना होता है। मरने का कोई समय नहीं। जब तू छोटा था, तेरे पिताजी चल बसे। हमारे पड़ौसी का बच्चा जन्म लेते ही मर गया। तेरे पिताजी बूढ़े होकर मरे और यह बच्चा छोटा ही मर गया। जन्म, मृत्यु और बुढ़ापा इनसे कोई नहीं बचता।"

बालक ने एक निःश्वास छोड़ा।

"माँ तू भी मरेगी और मैं भी मरूँगा ? अब तू यह बतादे कि क्या कोई ऐसा उपाय है कि मरने से बचा जा सके ?"

"हाँ बेटा, एक उपाय है पर वह बहुत कठिन है। तू अभी छोटा है। उस उपाय की कल्पना से बड़े-बड़े महारथियों के छक्के छूट जाते हैं।"

"माँ, कितना ही कठिन उपाय क्यों न हो, तू मुझे वह उपाय बता दे। मैं मौत को जीतूंगा।"

माँ ने कहा कि "बेटा भगवान नेमिनाथ की शरण में जाकर संयम का पालन करने वाला, मरना-जन्म लेना, फिर मरना, फिर जन्म लेना—इस चक्र से छूट जाता है।" बालक ने पूछा कि "माँ, भगवान नेमिनाथ कहाँ रहते हैं ? मैं उनके पास जाऊँगा।"

"माँ ने कहा कि बेटा, वे किसी एक स्थान पर नहीं रहते। घूम-घूमकर संसार का कल्याण करते हैं। कभी हमारी नगरी द्वारका में भी आ सकते हैं। उनके साथ मृत्यु को जीतने की इच्छा रखने वाले बहुत से संयमधारी श्रमण भी रहते हैं।"

बालक का मन हर्ष से खिल गया। उसे अमरता प्राप्त करने की आशा हो गई। हर्ष विह्वल हो, उसने अपनी माँ सेठानी थावरचा से कहा—"माँ, फिर तो मैं भी भगवान् नेमिनाथ की शरण में जाकर संयम ग्रहण करूंगा और मृत्यु को जीतूंगा— अमरता के पथ का राही बनूंगा।"

"नहीं बेटा, मैं तुझे नहीं जाने दूंगी।" बालक ने कहा कि "क्यों माँ तू मुझे क्यों रोकेगी ? तुझे तो खुश होना चाहिये कि तेरा बेटा मृत्यु से अमृत की ओर जा रहा है।" सेठानी थावरचा ने बताया कि "बेटा, माँ की अनुमति के बिना भगवान् नेमिनाथ किसी को दीक्षा नहीं देते। मैं तुझे अनुमति नहीं दूंगी। मैं तुझे विद्यालय भेजूंगी--विद्यावान् बनाऊँगी, तेरा व्याह रचाऊँगी। उससे पहले अनुमति की बात मैं सोचूंगी भी नहीं।"

अब बालक के मन में बस दो ही बातें थीं। भगवान् नेमिनाथ के आगमन की प्रतीक्षा और माँ की अनुमति मिलने की चिन्ता।

विधवा सेठानी थावरचा का बेटा ही उसका एक सहारा था। अगर उसका बेटा उसे छोड़ देगा तो वह किसके सहारे रहेगी ? आज उसने स्पष्टतः देख लिया था कि उसके पुत्र के मन में वैराग्य के बीज हैं। बीज है तो वह अंकुरित भी होगा और अंकुरित होगा तो वृक्ष लहलहायेगा भी, जो अपनी शीतल छाया

और पत्र-पुष्पों से सबको लाभान्वित करेगा। सेठानी थावरचा सोच रही है कि पुत्र ने कहा था कि क्यों माँ तू मुझे क्यों रोकेगी ? तुझे तो खुश होना चाहिये कि तेरा बेटा मृत्यु से अमृत की ओर जा रहा है। लेकिन मेरी अनुमति उसे रोक देगी। पर अपने स्वार्थ के लिये उसे रोकना भी तो कायरता होगी।

संकल्प-विकल्प तथा सोच-विचार में कई दिन बीत गए। बात आई गई हो गई। थावरचा ने अपने पुत्र को कलाचार्य के पास भेज दिया। बालक के मन की वैराग्य अग्नि को भी मानो अब अवसर और समय की राख ने ढक दिया। थावरचा पुत्र विद्याध्ययन करने लगा। यथा समय वह विद्याओं और कलाओं में निष्णात हो गया।

एक इच्छा पूरी हुई, दूसरी सामने आई। सेठानी थावरचा ने अपने पुत्र का विवाह बत्तीस श्रेष्ठि कन्याओं के साथ कर दिया। उसका घर पुत्र-वधुओं से भर गया। उसके विवाह पर मंगल गीत गाये गये। कोकिलकंठी बालाओं के मुख से मंगल गीत सुनते ही थावरचा पुत्र की स्मृति जाग गई। वह सोचने लगा कि कितना अच्छा हो, अगर भगवान् नेमिनाथ आ जाएँ। लेकिन माँ की आज्ञा ? हाँ, अब तो माँ की अनुमति भी मिल जायगी। उनकी इच्छा पूरी हो गई, ये मेरा ब्याह करना ही तो चाहती थी।

द्वारकापुरी के ईशानकोण में उज्ज्यन्त पर्वत है। इस पर्वत पर भगवान् नेमिनाथ का आगमन हुआ है। साथ में अनेकों मुमुक्षु साधु भी हैं।

प्रभु आगमन की सूचना यदुकुल भूषण श्री कृष्ण को मिली तो वे अपनी पटरानियों तथा पार्षदों सहित बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ का वन्दन करने को प्रस्तुत हुए। श्रीकृष्ण की आज्ञा से उनके सेवक ने सुधर्मा भेरी बजाई। भेरी का तुमुल नाद घर-घर में गूँज गया। श्रीकृष्ण के साथ पूरी द्वारिका ही उज्ज्यन्त पर्वत पर भगवान् नेमिनाथ के दर्शन करने पहुँच गई।

बचपन से ही प्रतीक्षारत थावरचा पुत्र भला पीछे क्यों रहता ? प्रभु आगमन की सूचना सुनते ही उसके पैर ही पर (पंख) बन गए। प्रभु ने एक देशना दी— संसार नाशवान है। काल हर समय सिर पर सवार रहता है। एक व्यक्ति अपने रोगी पिता के लिये दवा लेने बाजार जाता है और दुकान पर पहुँचने से पहले मदारी का तमाशा देखने लग जाता है। और धीरे-धीरे शाम हो जाती है। मदारी अपना झोला समेटता है और व्यक्ति देखता है कि बाजार बन्द हो गया।

भव्य आत्माओ ! सोचो, तुम इस दुनिया में क्या लेने आये हो ? बाजार बन्द होते देर नहीं लगती । समय रहते जो लेने आये हो, उसे ले लो ।

जो कार्य फिर पर टाला जाता है, उसका कोई भरोसा नहीं है क्योंकि यह फिर अपने हाथ में नहीं, कराल काल के हाथ में है ।

प्रभु की देशना से थावरचा पुत्र का वैराग्य जाग्रत हो गया । अंकुर तो पहले से ही था, प्रवचन रूपी जल-सिंचन से वह हराभरा हो गया । घर जाते ही उसने अपनी माँ थावरचा से पूछा—"माँ, मुझे आज्ञा दो । मैं भगवान् नेमिनाथ की शरण में जाकर अमरता की प्राप्ति करूंगा ।"

थावरचा महाव्रतों की कठोरता दिखाकर उसे रोकने का विफल प्रयास करते हुए बोली कि "पुत्र छोटा बछड़ा हल नहीं खींच सकता, उसी तरह सुखों में पला सुकुमार तू महाव्रतों का पालन नहीं कर सकेगा । महाव्रतों का पालन तलवार की धार पर चलने वाले के समान है । मैं तुझे संयम की आज्ञा कैसे दे दूँ ? इन बत्तीस बहुओं को किसके सहारे छोड़ेगा ?" थावरचा पुत्र ने कहा कि "माँ, मानलो मैं संयम न लूँ तो क्या जब काल आएगा तब भी तुम मुझे नहीं जाने दोगी ? यदि तीर्थंकरों की माताएँ उन्हें अनुमति नहीं देतीं तो इस विश्व का कल्याण कैसे होता ? माँ, आज तो तुम्हें अनुमति देनी ही पड़ेगी ।"

थावरचा विचार में पड़ गयी । पुत्र ठीक ही कहता है और उसने अनुमति देते हुए कहा—"पुत्र, तू भगवान् नेमिनाथ की शरण में जा रहा है तो जा । पर थावरचा भाग्यशालिनी है कि उसका पुत्र प्रव्रज्या लेगा । पुत्र, अभी ठहर । मैं द्वारकेश श्रीकृष्ण को खबर सुनाती हूँ । राजकीय सम्मान के साथ तेरा दीक्षा समारोह होगा ।"

घर-घर में चर्चा है कि थावरचा पुत्र आज दीक्षा ग्रहण करेगा । मेरे नगर में ऐसा पुण्यात्मा जीव है, यह सोच श्रीकृष्ण भी आनंदित हो गये । अपना उत्साह प्रदर्शित करते हुए उन्होंने घोषणा की कि "जन्म-मरण के भय से मुक्त होने थावरचा पुत्र आज दीक्षा लेंगे । थावरचा पुत्र के साथ जो भी दीक्षा लेगा, उसके पीछे उसके घर की सार-संभाल मेरी ओर से होगी ।"

कोई अपने छोटे बच्चों के कारण रुका हुआ था । किसी को अपनी पुत्री का विवाह करना था, किसी को अपने बूढ़े माता-पिता की चिन्ता थी, किसी को और कुछ । श्रीकृष्ण की घोषणा सुनकर ऐसे सभी लोग थावरचा पुत्र के साथ दीक्षा लेने को तैयार हो गये । थावरचा पुत्र के साथ एक हजार लोगों ने संयम

धारण किया। अपनी घोषणा का ऐसा प्रभाव देखकर श्रीकृष्ण बहुत ही प्रसन्न हुए। राजकीय सम्मान के साथ सभी मुमुक्षुओं का जुलूस निकाला गया। वे माता-पिता तथा वे नारियाँ कितनी भाग्यशालिनी थीं, जिनके पुत्र और पति अमरता के पथ पर जा रहे थे।

भगवान् नेमिनाथ ने थावरचा पुत्र के साथ सबको दीक्षित किया और यथा समय उज्जयन्त पर्वत से अन्यत्र विहार किया।

**श्रेणिक की खोज :**

कुछ प्राणी ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष दुःख देखते हैं तब भी अपने आपको बदल नहीं पाते। ऐसे कुमारों के वर्णन में महाराज श्रेणिक की बात आपके समक्ष रखी जा रही है।

कुशाग्रपुर नरेश प्रसेनजित के राज्य से एक पुण्यशाली व्यक्ति के चले जाने के पश्चात् नगर की तबाही आ गई। आज भी बिहार प्रान्त में काष्ठ के घर अधिक बनते हैं। जहां नदियां अधिक हैं, बाढ़ अधिक आया करती हैं, ऐसे स्थानों पर मकानों की रचना काष्ठ की हुआ करती थी। लेकिन कभी ख्याल नहीं रखा जाता तो आग लग जाया करती थी। ऐसा ही प्रसंग कुशाग्रपुर में कई बार जुटने लगा। आखिर में नगर में घोषणा हुई कि जिस घर में आग लगेगी उस घर के मालिक को नगर छोड़कर जाना पड़ेगा। लोग असावधान नहीं रहें इसलिये इस राज्य-आज्ञा से लोग सावधान रहने लगे। लेकिन हुआ उल्टा। राजकुमार व्यसनी होने के कारण, दूसरे-दूसरे व्यसन होने के कारण जब राजमहल में आग लग गई तो उसे शान्त करने का प्रयत्न किया गया। आग राजमहल में लगी थी इसलिये राज्य-आज्ञा के अनुसार राजा प्रसेनजित को कुशाग्रपुर छोड़ना पड़ा। मगध देश और मगध जनपद की राजधानी कुशाग्रपुर से हटाकर दूसरे स्थान पर ले जानी पड़ी। उस स्थान के पाँच तरफ पहाड़ हैं। सोनगिरि, विपुलगिरि, रत्नगिरि, खंडगिरि और उदयगिरि। इन पाँच पहाड़ों के बीच में महाराज प्रसेनजित ने नई राजधानी का निर्माण कराया। राजा के वहाँ बसने के कारण धीरे-धीरे प्रजा भी वहाँ बसने लगी। विशेष आवश्यक काम होने पर कभी-कभी जनता भी राजा से मिलने जाती। सामने मिलनेवाला प्रश्न करता कि भाई कहाँ जा रहे हो ? तो उत्तर मिलता कि राजा के घर जा रहे हैं। इस तरह जाते-जाते राजा के घर जा रहे हैं के बजाय राजगृह जा रहे हैं, ऐसा नाम उस स्थान का पड़ गया। राजगृह का निर्माण हुआ और प्रजा को चिलातीपुत्र द्वारा विशेष दुःख दिये जाने के कारण प्रजा जब अधिक दुखी हुई तब राजा प्रसेनजित ने मंत्री को कहकर श्रेणिक को खोजने के लिये विशेष व्यक्ति भेजे। इतिहास में दो मान्यताएँ मिलती हैं। एक मान्यता

तो यह है कि राजा प्रसेनजित ने चिलातीकुमार को सिंहासन पर बैठाया और उनका स्वर्गवास होने के पश्चात् प्रजा ने क्रान्ति की थी और चिलातीकुमार को हटाकर श्रेणिक को उसके स्थान पर राजगद्दी पर बैठा दिया था।

दूसरी कथा मिलती है कि राजा प्रसेनजित की मौजूदगी में श्रेणिक की खोज की गई और खोज करनेवाले श्रेणिक के पास पहुँचे और उनसे आत्म निवेदन किया कि आपके बिना पिताजी के प्राण कंठ तक जाकर रुक गये हैं। नगर के लोग और प्रसेनजित आपको याद कर रहे हैं, इसलिये आप सब कुछ छोड़कर पिताजी के चरणों में जावें। पिता का संदेश पाकर राजकुमार श्रेणिक जाने के लिये उद्यत हुआ पर अचानक कदम रुक गये। सोचने लगा कि नंदा का क्या किया जाय? मन में आया कि उसे भी सूचना, संदेश और कुछ संकेत देकर तब चला जाय लेकिन पुरुष पुरुष ही है। व्यक्ति के साथ जैसा वातावरण और जैसे साथियों के पास जाता है कभी वह भी उनसे घिर जाता है। मन में चिन्तन चला कि जब मैं इस घर में आया था, मुझे बुलाया गया था, लेकिन नाम, ग्राम, पता बताये बिना दासी ने कान पर हाथ पर हाथ लगाकर संकेत किया था, मैं जैसे संकेत पाकर इस घर में पहुँचा उसी तरह से यह नंदा कितनी चतुर है। इसकी चतुराई की परीक्षा की जाय।

नंदा के सामने जाकर श्रेणिक ने कहा कि पिताजी अस्वस्थ हैं, मेरा जाना आवश्यक है। तुम्हें साथ ले जाना उचित नहीं है क्योंकि तुम गर्भ की स्थिति में हो। नंदा ने कहा कि क्या स्वामी आप सचमुख जा रहे हैं? जा रहे हैं तो मुझे मत भूलना। आप कौन हो, कहाँ के हो, यह भी आपने मुझे अब तक नहीं बताया। श्रेणिक बोला कि मैं राजगृह का गोपाल हूँ!

इतना कह कर श्रेणिक नंदा से विदा लेकर अपने सेवक के साथ राजगृह में पिता के चरणों में पहुँचा। श्रेणिक को देखकर प्रसेनजित बहुत हर्षित हुआ। बोला, बेटा मैंने पूर्व में जो कुछ किया है, उस बात को भूल जा। मैं वचनबद्ध था। मेरे मन में तेरे प्रति किसी प्रकार की गलतफहमी नहीं थी। लेकिन अब मुझे बचाना और प्रजा को बचाना तेरे हाथ में है। तेरे अलावा और कोई व्यक्ति शासन संभालनेवाला, सदाचरणवाला और बुद्धिवाला नहीं है। इसलिये राज-पाट संभाल और मुझे शान्ति के साथ वचन दे कि मेरी आज्ञा का पालन करेगा।

श्रणिक ने पिताजी से निवेदन किया कि पिताजी आपकी आज्ञा तो मुझे शिरोधार्य है। लेकिन इस अंतिम अवस्था में राज्य की चिन्ता करने के बजाय, और किसी की चिन्ता करने के बजाय आप अपने आपका चिन्तन करें। आप

तीर्थेश भगवान् पार्श्वनाथ का स्मरण कीजिये। उनके चरणों के उपासक बनकर निर्ग्रन्थ परम्परा से ज्ञान प्राप्त करके जो कुछ मिलाया है, उसके लिये आपको अरिहन्त का शरण, सिद्ध का शरण लेना चाहिये। यह राज्य, प्रजा, राग-द्वेष इन बातों को छोड़कर आप अपने आपको अरिहन्त भक्ति में लीन कीजिये।

**पुत्र का कर्तव्य :**

अन्य-अन्य कर्त्तव्यों के साथ में पुत्र का एक कर्त्तव्य यह भी है कि वह अंतिम समय में पिता को धर्म की राह पर लगावे। पहले पिता के ऋण के रूप में कुछ परम्पराएँ थीं। लेकिन आज ऐसा रूप है कि जीते जी माता-पिता की सार-संभाल नहीं ली जाती और मरने पर आँसू लुढ़काये जाते हैं। माता-पिता की सेवा नहीं की जाती, उनका आदर नहीं किया जाता लेकिन उनके मरण पर दुःख, शोक व्यक्त किया जाता है और जीमणवार किया जाता है। दूसरी भाषा में कहूँ तो ऐसा कहदूं कि जीते जी दुःख दिया जाता है और मरने पर चिता में आग लगाई जाती है। पिताजी मुक्ति में जावें। कदाचित् उनके मन में किसी बात की इच्छा रह गई है तो श्मशान में उनकी चिता के पास मिठाई रखी जाती है और कदाचित् वे किसी प्रकार के व्यसनी थे तो उनके व्यसन की चीजें भी चिता के पास में रखी जाती हैं यह समझकर कि ये सब चीजें पिताजी के पास पहुंच जायेंगी। जीते जी जो नहीं किया गया वह मरने के पश्चात् किया जाता है। क्यों रखा जाता है, किसलिये रखा जाता है? मरने के बाद उनके पास पहुँचाने के लिये रखा जाता है लेकिन शास्त्र कहता है कि मानव मरने के बाद यह सब कुछ करना, रखना अज्ञानता है।

हो सकता है पुत्र की पुण्यशालिता से कभी वह बाप से भी बढ़कर हो जाय। पिता सामान्य स्थितिवाला है और लड़का कभी वकील, डॉक्टर, बैरिस्टर, जज बन सकता है या मंत्री, प्रधानमंत्री ही नहीं राष्ट्रपति भी बन सकता है या पुराने जमाने में राजराजेश्वर भी बन सकता था। यह सब कुछ होने के बाद भी यदि वह पिता की सेवा करने में दरियादिली नहीं रखता है तो कहना चाहिये कि वह एक जन्म में ही नहीं जन्म-जन्म में ऋणी रहता है। इसलिये श्रेणिक प्रसेनजित को सब तरह की चिन्ताओं से मुक्त होकर, सब तरफ से ध्यान हटाकर भगवान् के चरणों में ध्यान लगाने के लिये प्रार्थना कर रहा है।

उस समय तीर्थेश भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा चल रही थी। जैन ग्रन्थों के अनुसार राजा प्रसेनजित भगवान् पार्श्वनाथ का अनुयायी माना गया है। कथा भाग में इसका वर्णन मिलता है। श्रेणिक ने पिता को धर्म में स्थिर करने के लिये सभी तरह से ध्यान हटाकर अंतिम समय में शान्ति पहुँचाई।

उसके इस प्रयत्न से राजा प्रसेनजित अंतिम समय में शान्ति के साथ प्रभु की शरण में गया। आज उनका भी नाम रह गया है। श्रेणिक भी आया और चला गया। उनकी भी आज कथा मात्र ही शेष है। आप और हम भी आये हैं और चले जायेंगे। अब हम और आप पीछे क्या छोड़ जाना चाहते हैं ? नाम छोड़ जाना चाहते हैं या कीर्ति, यश आदर्श छोड़ जाना चाहते हैं ? यह बात निश्चय समझिये कि आनेवाला जायगा। अपने पीछे वह या तो नाम छोड़ जायगा या बदनामी छोड़कर जायगा ? कोई भी आदमी न तो जीते जी बद-नाम होना चाहता है और न मरने के बाद बदनाम होना चाहता है। हम भी अपने परिवार, समाज और राष्ट्र में कदाचित नाम नहीं कर सकें तो बदनामों की गिनती में तो नहीं आवें। मनुष्य जन्म पाया है तो वीर वाणी का स्मरण करते हुए सद्आचरण रखेंगे तो इस जीवन में और अगले जीवन में आनन्द और कल्याण प्राप्त करेंगे।

---

**राजस्थानी कविता :**

# पीढ़ी रो अन्तर

☐ डॉ० नरेन्द्र भानावत

म्हनैं
याद है
बाबरू दादा नैं
अंधारा में सूझतो हो
वो कीड़ी बचा'र
चालतो हो।
आँधी आँख्याँ में
रोशनी भरतो हो,
लूला लंगड़ा ने
वैसाखी देतो हो,
भूखा-तिरसा नैं
राबड़ी छाछ घालतो हो।

पण
वी'रा बेटा-पोता नैं कई व्हग्यो ?
हजार वॉट रे 'बल्ब' रे हेठे
भी
वानै नी सूझे
मिनखाँ री कतार नैं
वी घूंदता चालै।
सूझती आँख्या में
सूयो भौंके,
दौड़ता-धावता पगां नैं
रोके-टोके।
खाता-पीता लोगां नैं
लूटे-खसोटे।

[ शीघ्र प्रकाश्य कविता संग्रह 'जामण-जाया' से। ]

सामयिकी
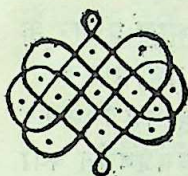
# धर्म प्रवर्तन और धर्म प्रचार

□ डॉ. रमेश भाई सी. लालन

परमात्मा तीर्थंकरदेव महावीर स्वामी ने जिस धर्मचक्र का प्रवर्तन किया, इस दुषम पंचम आरा में आज चतुर्विध संघ मिलकर उसी धर्म की आराधना कर रहा है उसमें पू० आचार्य भगवंतों का, जैन आगमों का और पू० साधु-साध्वी महाराजों का प्रत्यक्ष महान् उपकार है।

वीतराग अरिहंत देव की आज्ञा से धर्म को अलग नहीं किया जा सकता। धर्म व्यक्ति और समाज में आभ्यंतर क्रांति का संचार करता है। आध्यात्मिक और नैतिक जागृति के साथ सर्वसंग परित्याग का आह्वान करता है। अहिंसा, संयम और तप जैन धर्म के प्राण हैं। दान, शील, तप और भाव यह धर्म के चार प्रकार हैं। धर्म आत्मशुद्धि का साधन है। जहाँ दर्शनशुद्धि, ज्ञानवृद्धि और संयमपालन है वहां धर्म प्रवर्तन है। धर्म ऐसा रत्न है जिसका मूल्य हो नहीं सकता। हीरे को जौहरी परख लेता है। बाकी के लिए वह कांच का टुकड़ा है। धर्म की परख भी सभी को नहीं होती। धर्म की यथार्थ प्ररूपणा हो, उसमें धर्म प्रवर्तन है। जैन साधु व्याख्यानवाणी और ज्ञानगोष्ठी का लाभ श्रावक वर्ग को देते हैं वह साधुचर्या का ही एक भाग है। प्रभावक आचार्यों ने राजाओं को प्रतिबोध भूतकाल में किया वह भी धर्म प्रवर्तन का एक प्रकार है। धर्म प्रवर्तन से धर्म की रुचि, जिज्ञासा और भूख व्यक्ति और समाज में बढ़ती है।

प्रश्न हो सकता है कि धर्म प्रवर्तन के लिए क्या धर्म प्रचार आवश्यक है?

साधु समाज में इस प्रश्न को लेकर हलचल दिखाई पड़ती है। धर्म प्रचार के लिए साधुवर्ग विदेश यात्रा, माईक, केसेट, पुस्तक प्रकाशन प्रवृत्ति, दूरदर्शन या आकाशवाणी आदि-आदि को अपनायें तो क्या वह अपने पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति के पालन में आपत्ति को निमंत्रण तो नहीं देते? प्रश्न जटिल और विवादास्पद रूप धारण किये जा रहा है।

धर्म प्रवर्तन शुद्ध स्वरूप में अर्थ की अपेक्षा नहीं करता, उपेक्षा करता है। धर्म प्रचार द्रव्यार्थ के व्यतिरिक्त संभव नहीं लगता। धर्म प्रचार जब राज्याश्रय, भय, लालच, बलात्कार, छद्म, झूठ, कपट आदि के सहारे किया जाता है तो अंत में वह धर्म के प्रति विद्रोह भाव पैदा करता है। प्रचार के बढ़ते चरण

अपने साथ-साथ सूक्ष्म विरोधी प्रचार को लेकर चलते हैं। प्रचार का भूत विवेक को भी भगा देता है। धर्म-प्रचार से धर्म प्रवर्तन श्रेयस्कर है। फिर भी वर्तमान युग को पहचानने में गल्ती नहीं करनी चाहिए। आज प्रचार के माध्यम बढ़े हैं—आकाशवाणी, दूरदर्शन, वीडीयो, ध्वनिवर्धक यंत्र, पत्रिकाएं, अखबार, पुस्तकें, शालाएं और विद्यापीठ आदि-आदि। यदि यह सब मिलकर अधर्म, अनीति और अन्याय का प्रतिपादन करते रहेंगे तो धर्मप्रवर्तन क्या भूतकाल की बात नहीं हो जायेगी? इस दृष्टि से देखा जाय तो धर्मप्रवर्तन के लिए नहीं तो धर्मसंरक्षण के लिए तो जरूर ही धर्म प्रचार आवश्यक है?

जैन साधुओं की मर्यादाओं को देखते हुए उचित होगा कि श्रावक वर्ग के धनवानों और विद्वानों को साथ में मिलकर धर्म प्रचार का कार्य, धर्म संरक्षण का कार्य समझ कर, धर्म प्रचारकों को तैयार करें।

धर्म प्रचार के कार्य में श्रावक वर्ग को पहले सामना करना पड़ेगा आंतरिक विरोध से—संप्रदायवाद से। धर्म प्रचारक को एक बड़ी चुनौती है—वह क्या पसन्द करेगा? जैन धर्म के मूलभूत आचार और तत्त्वों का प्रचार या किसी एक विशेष सम्प्रदाय, गच्छ या फिरके का प्रचार?

धर्म प्रचारक को दूसरी चुनौती है—क्या वह धर्म निरपेक्ष समाजवादी लोकतंत्र में निवृत्तिमूलक आचार और लूक्खे अध्यात्मवाद को संजोते हुए समाज में धर्म पनपा सकता है या उसे मानवता, नैतिकता, चारित्रोत्थान, चिकित्सा, सेवा-सुश्रूषा, शिक्षण, रोजगार आदि में सक्रिय भाग लेना चाहिये? तत्त्वज्ञान और व्रतपच्चक्खाण की गरिमा नहीं समझने वाला कभी जैन हो ही नहीं सकता। हिंसा, शोषण, भ्रष्टाचार, झूठ-फरेब आदि से निवृत्त होना सही माने में धर्म है।

यह सही है कि रूढ़िवाद ने धर्म को पूंजीपतियों के शौक की चीज (Luxury) बना दिया है, इसीलिए साम्यवाद धर्म को प्रतिक्रियात्मक (Reactionary) तत्त्व बतलाता है। समाजवाद में यदि जो धर्म व्यक्ति से ऊंचा उठकर सामाजिक हित की रक्षा का मंत्र न दे सका तो वह दिन दूर नहीं जबकि समाज व्यक्तिगत धार्मिक कर्तव्य में हस्तक्षेप करेगा।

शाकाहार प्रचार, अणुव्रत-आन्दोलन, प्रेक्षाध्यान, सालम्बनध्यान, ज्ञान-सत्र, तत्त्वज्ञान-शिविर, सामायिक स्वाध्याय संघ आदि कार्यक्रमों को देखते हुए लगता है कि यदि धर्म प्रचारक में संघभावना, संगठन और निष्ठा हो तो परिणाम अच्छे निकलेंगे।

—6, Benny's Cot. Plot No. 461-D,
Bhau Daji Road, Bombay-400 019

धारावाहिक उपन्यास 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' भाग २

## तृतीय प्रवास

# स्वार्थ विजय [४]

☐ अनुवादक : **श्री लालचन्द्र जैन**

[ गतांक से आगे ]

रात का समय था, चारों ओर अन्धकार का साम्राज्य था, युवती निशा विश्व की रंगभूमि पर आनन्द से नृत्य कर रही थी, गृहस्थ प्रवृत्ति से निवृत्त होकर शांति प्राप्ति हेतु अपने गृहों का आश्रय ले रहे थे और धन के लोभी पुरुष उस समय भी प्रवृत्ति के वेग में बहते हुए निवृत्ति से विमुख हो रहे थे ।

इस समय दीक्षाकुमारी एक उपाश्रय के द्वार पर आयी । उपाश्रय की भूमि में शांति व्याप्त थी । गुरु के पास प्रतिक्रमण के लिये आये हुए श्रावक एक-एक कर अपने घरों को लौट रहे थे, किन्तु कुछ रागी (भक्त) श्रावक अपने-अपने माने हुए साधुओं के पास बैठ कर उनकी चापलूसी कर रहे थे ।

पवित्र दीक्षाकुमारी ने द्वार से उपाश्रय में प्रवेश किया । स्वयं अदृश्य रहकर उपाश्रय के सभी भागों में घूमने लगी । पहले वह उपाश्रय के जिस भाग में पहुँची, वहाँ एक साधु के पास दो श्रावक बैठे थे । वे सब गुप्त बातचीत कर रहे थे । महादेवी अदृश्य रहकर वहाँ खड़ी हो गई, तब उनमें निम्न बातचीत होने लगी :—

एक श्रावक—"महाराज ! इस समय मैं बहुत दुःखी हूँ, सट्टे के व्यापार में मुझे भारी नुकसान हुआ है । यदि आप कृपा कर किसी गृहस्थ श्रावक से मुझे पाँच सौ रुपयों की सहायता दिलवा सकें तो मेरी लाज बचेगी । मैं आपका सहोदर भाई हूँ, आपके साथ मेरे संसारी सम्बन्ध हैं । अपने पिताजी के जीवित रहने तक तो घर की लाज बचानी ही चाहिये । आपने दीक्षा लेकर अपनी आत्मा का सुधार किया, पर उसके साथ घर का भी सुधार करना चाहिये । इस चातु-

मास में वर्षा अधिक होने से घर की छत कमजोर हो गई है, उसे भी वापस बनवानी पड़ेगी, उसमें भी सौ रुपये खर्च होंगे। प्रति माह घर खर्च के लिये पच्चीस रुपये की ग्रावश्यकता होती है। बड़ी मुश्किल से उधार करके घर का खर्च चलाता हूँ, अतः इस बार ग्राप मुझे पाँच सौ रुपयों की मदद ग्रवश्य करावें। इतने रुपये प्राप्त किये बिना मैं वापस घर नहीं जाऊँगा। ग्राप मेरे भाई हैं, साधु बन गये तो क्या हुआ, खून का सम्बन्ध कहीं टूटता है। महाराज! आपने पढ़ लिख कर बहुत यश प्राप्त किया है। इस नगर में जो बड़े धनी श्रावक रहते हैं, वे ग्रापके भक्त हैं। ग्रापके एक इशारे पर वे हजारों रुपया खर्च करने को तैयार हैं। यदि आप किसी भी गृहस्थ को आज्ञा देंगे तो वह मुझे इस आवश्यकता के समय पाँच सौ रुपया दे देगा। मुझे विश्वास है कि मैं अपना कार्य सिद्ध करके ही लौटूँगा।''

उस श्रावक की बात सुनकर मुनि कुछ भी न बोले, वे विचार में पड़ गये कि किस प्रकार भाई का कार्य सिद्ध हो। इसी बीच वहाँ बैठे दूसरे श्रावक ने नम्रता से कहा—''महाराज! ग्रापने अपने भाई की प्रार्थना सुनी, ग्रब मेरी प्रार्थना सुनें। जिस प्रकार आपका भाई रुपयों की कमी से दुःखी है, उसी प्रकार मैं भी दुःखी हूँ। गत दो वर्ष व्यापार में इतनी शिथिलता रही कि मेरे घर की स्थिति भी गरीबी में ग्रा गई है। मैं ग्रापका संसारी रिश्ते से साला हूँ। ग्राप मेरी बहिन से शादी कर बचपन में ही उसे छोड़ दीक्षा लेने चले गये थे। हमने बहुत कोशिश की आपका पता लगाने की, पर ग्रापके गुरु ने पता नहीं लगने दिया। ग्रन्त में हार कर हम चुप होकर बैठ गये ग्रौर ग्राप दीक्षा लेकर इस स्थिति में ग्राये हैं। ग्रापके घर से भागने के बाद मेरी बहिन बहुत रोई, उसके शोक से हमारा पूरा कुटुम्ब दुःखी था। मेरी युवती बहिन को किसी प्रकार शांति न मिल सकी, पूर्व कर्म के योग से उसके हृदय से संसार की वासना दूर न हो सकी। वह सर्वदा ग्रापके लिये शोक करती, शोक ग्रौर चिन्ता से ग्रन्त में उसे क्षय रोग हो गया और उसी से वह मृत्यु को प्राप्त हुई। महाराज! उसकी ग्रकाल मृत्यु से मेरे माता-पिता को बहुत दुःख हुग्रा। मेरी माँ तो ग्रब भी रोती हुई कहा करती है कि, यदि जमाई दीक्षा नहीं लेता तो मेरी बेटी कभी नहीं मरती, उन्होंने दीक्षा लेकर अपनी ग्रात्मा का सुधार किया होगा, पर उन्हें स्त्री-हत्या का दोष तो लगेगा ही।

''महाराज! मुझे आपके समक्ष यह सब नहीं कहना चाहिये था, पर दुःख से जलते हुए मेरे मुँह से घरबीती निकल ही गई। खैर, बीती ताहि बिसारिये। पर इस समय हमारा कुटुम्ब बहुत दुःखी है, ग्रतः धन से हमारी मदद कर हमें सुखी करें। ग्राप परोपकारी हैं तथा साधुत्व ग्रहण कर आपने बहुत यश कमाया है। मुझे हजारों रुपया नहीं चाहिये, सिर्फ दो सौ रुपया दिलवा

देंगे तो मेरा काम चल जायगा। महाराज! जब मुझे अन्य कहीं से मदद की आशा नहीं रही, तभी इन भाई के साथ आपके पास आया हूँ। इतने वर्षों में मैंने कभी आपके समक्ष हाथ नहीं फैलाया क्योंकि मैं कुटुम्ब का निर्वाह कर सकता था, पर अब बहुत कठिनाई में पड़ने पर ही मैं आपकी शरण में आया हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि आप मुझे निराश नहीं करेंगे।"

अपनी बात कहकर श्रावक चुप हो गया। मुनि भी विचार में पड़ गये। क्षण भर बाद धीमे किन्तु कठोर स्वर में वे बोले, "भाइयो! तुमने जो कुछ कहा, वह तुम्हारी दृष्टि से ठीक है, पर यह काम करवाने में मुझे अनेक मुश्किलें हैं। तुम जानते हो कि श्रावक बहुत चालाक होते हैं। वे मेरा सम्मान करते हैं और मेरी आज्ञा को मानते हैं, पर मेरी आज्ञा में थोड़ा भी स्वार्थ का अंश दिखाई दे जाय तो वे मानने से इन्कार कर देते हैं। जब तक मेरा व्यवहार निःस्वार्थ है, तभी तक वे मेरे भक्त हैं, पर जरा भी स्वार्थ दिखाई दिया तो वे भाग खड़े होते हैं। धर्म, तीर्थ, मंदिर और साधु की सेवा के लिये वे उदारता से धन खर्च करते हैं, पर साधुओं के रिश्तेदारों की मदद करने के लिये वे कभी तैयार नहीं होते। तुम गलत धारणा से मेरे पास आये, यह तुम्हारी भूल है। तुम्हें मुझसे ऐसी व्यर्थ आशा नहीं रखनी चाहिए।"

मुनि के निरुत्साही वचन सुनकर दोनों श्रावक निराश हो गये। उनमें से मुनि के भाई ने उत्तेजित होकर कहा, "महाराज! आप बिना विचारे ऐसा क्यों कहते हैं? मैं तो पहले खर्च कर के फिर आपके पास आया हूँ, अतः खाली हाथ लौट ही नहीं सकता। आप मेरे संसारी भाई हैं इसलिये आप पर मेरा पूर्ण अधिकार है। आपको छोड़कर मैं अन्य किसके पास जाऊँ? हमारे पिताजी ने बहुत आशा के साथ मुझे आपके पास भेजा है। महाराज! जरा सोचें, हमारे पिताजी ने आपको पालपोस कर बड़ा किया और एक हजार रुपया खर्च कर आपका ब्याह किया, यह बात आपको भूलना नहीं चाहिये। जब आप आमदनी कर कुटुम्ब का भरणपोषण करने के योग्य हुए, तब वृद्ध माता-पिता और कुटुम्ब को छोड़कर घर से भाग गये और दीक्षा लेकर साधु बन गये। पीछे कुटुम्ब का क्या होगा? इसका विचार भी नहीं किया। वृद्ध माता-पिता और जवान स्त्री को रोते हुए छोड़कर भागते हुए आपको दया भी नहीं आई। खैर, जो होना था वह तो हो ही गया, अब आपका अच्छा समय आया है, हजारों धनवान् श्रावक आपके चरणों में वन्दन करने आते हैं, अनेक प्रकार के धार्मिक उत्सवों में हजारों रुपया आपके समक्ष खर्च होते हैं, बड़े-बड़े शहरों में आपने महान् प्रतिष्ठा प्राप्त की है, ऐसे श्रेष्ठ समय में भी यदि आप अपने गरीब कुटुम्ब का उद्धार नहीं करेंगे तो कब करेंगे? महाराज! हमने सुना है कि आपके व्याख्यान सुन कर श्रावक और श्राविकाएँ पागल बन जाती हैं, आपके इशारे से वे हजारों रुपये खर्च करते

हैं, आपकी पुस्तकें लिखवाने और आप तथा आपके शिष्यों को पढ़ाने के लिये सौ-सौ रुपया मासिक वेतन वाले ब्राह्मण शास्त्री रखने में हज़ारों रुपया श्रावक खर्च करते हैं। आप जिस नगर में जाते हैं, उस नगर के श्रावक बड़ी धूमधाम से आपका स्वागत करते हैं और आपके आगमन से प्रसन्न होकर लोग आपके लिये प्राण न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं। महाराज ! आपकी ऐसी ख्याति सुनकर फिर हमें आशा क्यों न बँधे ? यहाँ आते हुए हमने मार्ग में गाँव-गाँव में आपकी कीर्ति को सुना है। लोग कह रहे थे कि वर्तमान समय में साधुओं में मुनि स्वार्थविजय बहुत प्रसिद्ध और अत्यन्त विद्वान् हैं। उनकी व्याख्यान शैली इतनी श्रेष्ठ है कि उनके व्याख्यान में हजारों लोग उपस्थित होते हैं और उत्साह से उनकी जय-जयकार करते हैं। हे स्वार्थ विजय मुनि ! इस समय आपको हमारी सहायता अवश्य करनी चाहिये। हमारी मदद में आपका स्वार्थ भी निहित है, अतः आप अपने नाम को यथा नाम तथा गुण सिद्ध करें, साथ ही हमारे स्वार्थ को भी सिद्ध कर हमें कृतार्थ करें।"

इतना कह कर मुनि का भाई चुप हो गया। अब अवसर देखकर मुनि के साले ने भी कुछ उत्तेजित होकर कहा, "महाराज ! आपके भाई ने जो कुछ कहा उसे आपने शांति से सुना है, अब मेरी बात को भी ध्यान से सुनें। मैं भी आपका सम्बन्धी हूँ। मेरे पिताजी ने सिर्फ एक हजार रुपये लेकर आपके साथ मेरी बहिन की शादी की थी। यदि उसे किसी धनवान और ढलती जवानी वाले को दी होती तो हमें कम से कम पाँच हजार रुपये मिलते तथा आज हमें आपके सामने हाथ फैलाने का अवसर ही नहीं मिलता। पर हमने लोभ नहीं किया, आपके कुटुम्ब की भलाई और आप जैसे बुद्धिमान वर को देखकर हमने मात्र एक हजार रुपये में अपनी बहिन आपको दे दी। मुनिराज ! आपको इस बात पर विचार करना चाहिये और हमारे उपकार का बदला हमें चुकाना चाहिये। महाराज ! मेरे दो पुत्रियाँ हुई थीं, उनमें से एक पुत्री की दो हजार रुपये लेकर शादी की थी। किन्तु पूर्व कर्म के योग से व्यापार में बहुत हानि उठानी पड़ी और वह रकम मेरे पास न रह सकी। जब दूसरी पुत्री शादी के योग्य हुई तो हमें उसकी शादी से अधिक लाभ होने की आशा बंधी और मैं अनेक प्रकार के हवाई किले बनाने लगा, किन्तु अचानक उसे ऐसा रोग हुआ कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गई। इससे हमारे कुटुम्ब की आशाओं को बड़ा धक्का लगा और हम बरबाद हो गये।"

कहते-कहते श्रावक व्यथित हो गया और उसके नेत्रों से अश्रु टपकने लगे। इससे मुनि स्वार्थविजय के हृदय में भी दया उत्पन्न हुई और उन्होंने अपने मन में दोनों श्रावकों का कार्य सिद्ध करने का निश्चय किया। उन्होंने शांत स्वर से कहा, "श्रावको ! तुम दोनों मेरे सम्बन्धी हो, तुम्हारा दुःख दूर करने की मेरी

इच्छा हुई है । मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा । यदि श्रावकों में से कोई तुम्हारी मदद करने को तैयार नहीं हुआ तो श्राविकाओं में से किसी को तैयार करूँगा । स्त्रियाँ बहुत भोली और भक्त होती हैं । साधुओं की मनोवृत्ति को पूर्ण करने में वे सदा तत्पर रहती हैं । यद्यपि तुम्हें काफी अधिक रुपये दिलवाने हैं तथा श्राविकाओं के पास इतने रुपये मिलने की गुंजाइश नहीं भी हो सकती है, तथापि कुछ विधवा बहिनों के पास गुप्त धन भी रहता है, अतः उनके द्वारा तुम्हारा कार्य सिद्ध होने की सम्भावना है । अब तुम यहाँ से अमुक गली में रागचन्द्र श्रावक के पास जाओ जो मेरा भक्त है, उसे मेरा नाम बताना और मेरे साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है, वह बताना जिससे वह तुम्हारा आतिथ्य करेगा । यह श्रावक यद्यपि धनवान नहीं है, पर सामान्यतः अच्छी स्थिति वाला है । मुझे जो श्रावक-श्राविकाएँ पुस्तकें लिखवाने या अन्त किसी भी काम के लिये पैसा देते हैं, इसका हिसाब इसी के पास रहता है, इस पैसे पर मेरा ही अधिकार रहता है । यदि वह तुम्हारी मदद नहीं करेगा तो मैं अपने जमा धन में से तुम्हें दिलवा दूँगा । अब तुम चिन्ता रहित होकर जाओ, धर्म के प्रताप से सब अच्छा ही होगा ।"

मुनि स्वार्थविजय के वचन सुनकर वे दोनों श्रावक आनन्दमग्न हो गये और उनके हृदय आशान्वित हो गये । मुनि का भाई आनन्द के आवेश में बोल पड़ा, "महाराज ! आपके जैसे उपकारी पुरुष बहुत कम होते हैं । आपने दीक्षा लेकर हमारे कुल को उज्ज्वल किया है । आपके निर्मल चारित्र से हमारे पूर्वज भी भवसागर से तिर गये हैं । आपकी कृपा से जब मैं पाँच सौ रुपयों से भरी हुई थैली लेकर घर जाऊँगा तो हमारे माता-पिता प्रसन्न हो जायेंगे, आपकी भाभी भी आनन्दमग्न हो जायेगी और आपके भतीजे हृदय से आशीष देंगे कि 'हमारे स्वार्थविजय चाचा की सदा जय हो' ।"

अब मुनि के साले ने कहा, "महाराज ! मेरा कुटुम्ब भी बहुत आनन्दित होगा । जब मैं दो सौ रुपयों से भरी थैली लेकर घर जाऊँगा । तब आपके सास-ससुर इतने खुश होंगे कि जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता । मेरी स्त्री और बच्चे आनन्द से कूदने लगेंगे । मेरे पुत्र कहेंगे, "हमारे स्वार्थविजय फूंफा का भला हो, वे दीर्घायु हों और बार-बार हमें इसी प्रकार मदद करते रहें ।"

दोनों श्रावकों को प्रसन्न देखकर मुनि स्वार्थविजय भी खुशी से फूल उठे । उन्होंने हर्षित होकर कहा, "श्रावको ! जाओ समझ लो अब तुम्हारा कार्य सिद्ध हो ही गया । किसी भी प्रकार मैं तुम्हें आवश्यक रुपये अवश्य दिलवाऊँगा । मैं चाहूँ तो श्रावकों से चाहे जितना रुपया खर्च करवा सकता हूँ । लोभी से लोभी धनवान श्रावक से मैं उसके कान पकड़ कर पैसा निकलवा सकता हूँ । यदि कोई

श्रावक मेरी आज्ञा न माने तो मैं उसे संघ के बाहर निकलवा सकता हूँ। टेढ़े और चालाक श्रावक भी मेरे सामने रस्सी जैसे सीधे हो जाते हैं। जाओ, तुम्हारा कार्य सिद्ध हो चुका समझो।"

मुनि स्वार्थविजय के दृढ़ वचन सुनकर दोनों श्रावक हर्षित होते हुए मुनि को वंदन कर, उनके बताये स्थान पर चले गये।

महेश्वरी दीक्षाकुमारी अदृश्य रहकर स्वार्थविजय और श्रावकों की बातें सुन रही थी। ऐसे अनाचार की बातें प्रत्यक्ष सुनकर महादेवी शोकातुर हो गई। महावीर प्रभु के शासन और चारित्र की ऐसी अधम दशा सुनकर वे अतिशय खिन्न हुई, उनका शरीर काँपने लगा और नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी।

दीक्षाकुमारी ने मन ही मन कहा, "अरे पंचमकाल! तू अपनी क्रूरता इतनी बढ़ा चुका है? क्या तेरी इच्छा चारित्र को प्रलय में डुबोने की है? हे मुनियो! वीर प्रभु के निर्मल चारित्र का सत्यानाश करने पर तुम क्यों तुले हो? हे अधम अनगारो! तुम क्यों मेरे स्वरूप को भ्रष्ट कर रहे हो? तुम्हारे जैसे साध्वाभास क्यों उत्पन्न होते हैं? वीर प्रभु का परिवार चाहे थोड़ा हो, चाहे अल्प विद्वान् हो, चाहे रसीला व्याख्यान देने वाला न हो, पर आचार शुद्ध हो तो बहुत है। अनाचार को बढ़ाने वाला अधिक परिवार किस काम का? वीर शासन को कलंकित करने वाले और अनाचार के मार्ग पर चलने वाले विद्वान् मुनियों की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे मुनियों की विद्या चन्दन का भार ढोने वाले गधे जैसी बेकार है। उनका सूत्रज्ञान भी बोझ ही है। उनके मधुर व्याख्यान मछली के जाल के समान ठगाई के साधन ही हैं। तुम से तो कम पढ़े मोटी बुद्धि वाले सामान्य जानकारी वाले शुद्ध मुनि लाख गुणा अच्छे हैं। इतना ही नहीं, देश विरति वाले, परोपकारी और परहित में अपना हित मानने वाले गृहस्थ श्रावक भी तुम से अच्छे हैं। वे श्रावक पाँच महाव्रतों को अणु व्रत के रूप में पालते हैं, दिखावे के लिये पीले या श्वेत वस्त्र नहीं पहनते, पात्रों में रस पूर्ण आहार नहीं लेते फिर भी अनाचारी और दम्भ से लोगों को ठगने वाले साधुओं से तो अच्छे ही हैं।"

इसके पश्चात् महादेवी ने अदृश्य रहकर निम्न उपदेश उच्च स्वर से दिया, "विषय जितने भी हैं वे संसार के हेतु हैं, अतः जो विषयों की इच्छा रखते हैं, वे प्रमादी बनकर दुःखों को प्राप्त करते हैं। जैसे—मेरी माँ, मेरा पिता, मेरा भाई, मेरी बहिन, मेरी पत्नी, मेरे पुत्र, मेरी पुत्री, मेरे मित्र, मेरे सगे सम्बन्धी, मेरे पहचाने, मेरे साधन, मेरा धन, मेरा खान-पान, मेरे वस्त्र आदि अनेक ममत्व सम्बन्धों में फंसे हुए लोग मृत्युपर्यंत भटकते हुए आरम्भ करते रहते हैं, तथा इसी विषय में दिन रात चिन्ता करते हुए, काल अकाल की कोई परवाह न कर

कुटुम्ब, परिवार और धन में लुब्ध होकर विषयासक्त होकर निर्भयता से लूट मचाते हैं और अनेक प्रकार से छःकाय जीवों की हिंसा करते हैं।"

अचानक इस अदृश्य उपदेश को सुनकर मुनि भयभीत हो गये। चारों ओर देखने लगे पर कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। स्वार्थविजय सोचने लगे, "यह उपदेश कहाँ से आ रहा है? यह तो 'आचारांग सूत्र' के वाक्य हैं। यहाँ मेरे अतिरिक्त कोई मुनि 'आचारांग सूत्र' को नहीं जानता, फिर यह किसने कहे?" विद्वान् मुनि भय से काँपते खड़े हुए और उपाश्रय के अन्य भागों में घूमते हुए अन्य छोटे साधुओं से पूछने लगे। अन्य साधु भी इस अदृश्य उपदेश को सुनकर आश्चर्यान्वित हो रहे थे। सारे साधु एक स्थान पर एकत्रित होकर परस्पर आश्चर्यचकित हो विचार-विमर्श करने लगे।

कुछ देर बाद फिर आकाशवाणी हुई, "अतः बुद्धिमान पुरुष क्षण भर भी प्रमाद किये बिना तत्काल ऐसे अवसर को प्राप्त कर संयम पालन के लिये तत्पर होता है। उम्र और यौवन तेजी से बीत रहे हैं, इसे न समझकर जो असंयम से जीने की भूल कर रहे हैं, वे सब से अधिक प्राप्त करने की इच्छा से छःकाय के जीवों को मारते, काटते, फोड़ते, लूटते, प्राण रहित करते और अनेक प्रकार से त्रास देते रहते हैं।"

आकाशवाणी के समाप्त होने पर मुनि आकाश की ओर देखने लगे और भयभीत होकर चकित होने लगे। स्वार्थविजय ने समझा कि यह किसी देवता की वाणी है, मैंने अपने सम्बन्धियों से जो बातचीत की उसे सुनकर किसी अदृश्य देव ने यह चेतावनी दी है। यह उपदेश आचारांग सूत्र के दूसरे अध्ययन के पहले उद्देशक से है। मुनि सोच ही रहे थे कि दुबारा आकाशवाणी हुई—

"हम अपरिग्रहीं हैं, कहकर कुछ दीक्षित किन्तु आज्ञा-पालन-रहित साधु मुनियों के वेष को भी लज्जित करते हैं, विषयों का सेवन करते हैं और उन्हें प्राप्त करने के उपायों में फँसकर बार-बार मोह में डूबते हैं। वे न इस पार लगते हैं, न उस पार।"

आकाशवाणी सुनकर साधुओं में घबराहट फैल गई। कोई घबरा कर उपाश्रय से बाहर जाने की सोचने लगा, तो कोई अपने भक्त श्रावकों को बुलाकर आकाशवाणी का उपदेश सुनाने की सोचने लगा और कोई यह सन्देह करने लगा कि आज अवश्य कुछ विपरीत कार्य होगा। 'मुझे देव भयंकर दंड देंगे' यह सोच-कर स्वार्थविजय तो विचार शून्य ही हो गये, काँपने लगे और अपने भाई तथा साले का अनुचित पक्ष लेने का प्रायश्चित करने लगे।

इतने में ही महेश्वरी दीक्षाकुमारी एकाएक मुनिमंडल के मध्य प्रकट हो गई। उनके दिव्य तेज से उपाश्रय की भूमि प्रकाशित हो गई। उस प्रभामंडल को देखकर साधु चकाचौंध हो गये और काँपने लगे। उस दिव्य मूर्ति के सामने देखने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। कुछ साधु तो आँखें बन्द कर भय से काँपने लगे। कुछ देर बाद महादेवी ने रोषपूर्ण उग्र स्वर में कहा, "अरे अनाचारी स्वार्थविजय मुनि! अब भय से क्यों काँप रहा है? यदि तुम्हें वास्तव में भय लगता हो तो पहले अपने कर्म के भय को भगाओ। मुझ से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं, मैं तो भयंकर नहीं, शुभंकर हूँ। जिस कर्म से भयभीत होना चाहिये उससे तुम्हें भय क्यों नहीं लगता? जो कर्म तुम्हें भयंकर वेदना के महासागर में डुबोने वाले हैं और अनन्त भव-भ्रमण के चक्कर में फंसा कर दुःख देने वाले हैं, उनसे डरो। यदि तुम्हें कर्म बंध का भय होता तो कभी इस स्थिति में नहीं आते। तुम भक्त श्रावकों के सन्मान गौरव से बहक गये हो। मद और गर्व के अन्धेपन ने तुम्हारे ज्ञान चक्षुओं को अन्धा कर दिया है। उन्माद और प्रमाद तुम्हारे हृदय में व्याप्त हो गया है और तुम्हारी मनोवृत्ति पर अनाचार की मलीनता छा गई है। साधुओ! जरा मननपूर्वक विचार करो कि तुम कौन हो? आर्य देश, उत्तम कुल, निरोग शरीर और आर्हत धर्म की प्राप्ति कितने पुण्यों से होती है? इसमें भी पुण्य-पुंज के एकत्रित होने पर ही चारित्र-रत्न की महान् प्राप्ति होती है, यह जानते हुए भी तुम कैसे इसे भूल जाते हो? अरे स्वार्थविजय! अन्य सभी साधुओं से तुम अधिक अपराधी हो। मैंने अपने ज्ञान से ज्ञान लिया है कि तुम अच्छे विद्वान् हो, शब्दार्थ की व्युत्पत्ति का तुम्हें अच्छा ज्ञान है, फिर भी तुम जागते सोने वाली कहावत चरितार्थ करते हो यह विशेष खेद की बात है। [क्रमशः]

## जिस्म की परीक्षा

□ कमल सोगानी

सरदार भगतसिंह तथा उनके कुछ साथी अपना भोजन बना रहे थे। भट्टी में अंगारे धधक रहे थे। एकाएक राजगुरु ने आग में तपी संडासी पाँच बार अपनी छाती पर चिपका दी। छाती पर जलने के कई निशान पड़ गये लेकिन राजगुरु ने 'सी' तक न की। एक साथी ने डाँटते हुए कहा—"यह क्या कर दिया तुमने? अपने हाथों अपना मांस जला दिया।"

"कुछ नहीं दोस्त, केवल यह देख रहा था कि इसी प्रकार पुलिस द्वारा सताये जाने पर विचलित तो नहीं हो जाऊँगा?"

—स्टेशन रोड, भवानी मंडी (राज.)

धर्मोद्योत :

# गुलाबी नगर जयपुर का ऐतिहासिक चातुर्मास समापन एवं धर्माराधना की लहर

☐ श्री ब्रजमोहन जैन

प्रात: स्मरणीय, बाल ब्रह्मचारी, महामहिम आचार्य प्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० अपने अन्तेवासी शिष्य समुदाय एवं महासती श्री शान्तिकंवरजी म० सा० ठाणा ४ से सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर को इस ऐतिहासिक चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसमें संघ ने तन-मन-धन से सेवा का भारी लाभ उठाया साथ ही धर्माराधना भी अच्छी हुई।

दर्शनार्थी बंधुओं का आवागमन बरसाती झरने की भाँति निरन्तर होता ही रहा एवं संघ द्वारा स्वागत-सत्कार का भावभीना लाभ लिया गया। नवम्बर के तीसरे सप्ताह में सदैव की भाँति देश के कौने-कौने से हजारों की संख्या में श्रद्धालु भक्त अपने आराध्य आचार्य भगवन के चातुर्मास की पूर्णाहुति पर दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

श्री अ० भा० जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर एवं अ० भा० महावीर जैन श्राविका संघ मद्रास के वार्षिक अधिवेशन सानन्द सम्पन्न हुए। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर एवं अ० भा० जैन विद्वत् परिषद् जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आचार्य श्री रत्नचंद्रजी म० स्मृति व्याख्यान माला एवं सामायिक संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया।

दि० २० नवम्बर को परमाराध्य आचार्य प्रवर श्री पूनमचन्दजी

हरिश्चन्द्रजी बडेर के तखतेशाही रोड बंगले से लाल भवन चौड़ा रास्ता पधारे जहाँ हज़ारों की जनमेदिनी ने आपके चातुर्मास के अन्तिम सार-गर्भित प्रवचन का लाभ उठाया।

दि० २१ नवम्बर को ठीक ६-३० बजे लाल भवन में अपने आराध्य आचार्य श्री के चातुर्मास के बिदाई विहार कराने आये स्थानीय एवं समागत आबाल वृद्ध नर-नारियों से सरोबार सुविशाल भव्य जुलूस आगे बढ़ा तब चौड़ा रास्ता भी संकरा प्रतीत होने लगा। ट्राफिक जाम हो गया। जय घोष के नारों से गगन को गुंजाता हुआ, जुलूस आगे बढ़ता हुआ बड़ा ही भव्य प्रतीत हो रहा था। श्री सिरेहमलजी नवलखा के "प्रेम निकेतन" बंगले मोती डूंगरी रोड पर पहुँच कर जुलूस व्याख्यान सभा के रूप में परिणत हो गया।

श्रद्धेय आचार्य श्री के सारभूत आध्यात्मिक प्रवचन का रसास्वादन कर श्रोतागण आनन्द विभोर हो उठे। परिषद् प्रवचनोपरान्त अपने-अपने स्थान को प्रयाण कर गई। यहाँ नवलखा परिवार ने आगन्तुकों के सम्मान का लाभ लिया।

युवक तपस्वी श्री कुशलचन्दजी सा० हीरावत ने चार माह तक अपना व्यवसाय धंधा छोड़कर संवर-साधना के साथ अखण्ड मौन व्रत की साधना आचार्य श्री के सान्निध्य में की। उसका सानन्द पारणा हो गया अर्थात् उन्होंने मौन खोल दी। आपका साधनामय जीवन अनुकरणीय है।

परमाराध्य आचार्य श्री के सान्निध्य में इस माह में निम्न महानुभावों ने सजोड़ आजीवन शील व्रत के नियम किये।

सर्वश्री धर्मीचन्दजी सा० लोढ़ा, किशनगढ़, श्री सूरजमलजी सा० जैन गाडोली (टोंक), श्री मोहनलालजी सा० नवलखा, जयपुर, श्री सूरजमलजी सा० नवलखा, जयपुर, श्री प्रेमराजजी सा० बोगावत, जयपुर तथा श्री माणकचन्दजी सा० कर्णावट, जयपुर ने तीन वर्ष, श्री विनयचन्दजी बम्ब, जयपुर व श्री पूनमचन्दजी सा० चौरडिया ने क्रमशः दो वर्ष एवं श्री गुलाबचन्दजी डागा, जयपुर, श्री मनोहरमल जी बम्ब, जयपुर, श्री बबूतराजजी सिंघवी, जयपुर ने क्रमशः एक वर्ष के शील की सजोड़े प्रतिज्ञा की।

दि० २२ नवम्बर को व्याख्यान प्रिय श्री शुभेन्द्र मुनिजी म० ठाणा ३ का पल्लिवाल क्षेत्र की ओर विहार हुआ। वे अब लालसोट से आगे पधार गये हैं।

परमाराध्य आचार्य श्री जवाहरलाल नेहरू रोड पर श्री गुमानमलजी सा० चौरडिया के बंगले तथा सुबोध महाविद्यालय, रामबाग सर्किल में धर्म ध्यान की पावन गंगा बहाते हुए दिनांक २५ नवम्बर को साधना भवन, बजाज नगर पधारे।

## युवाचार्य श्री मधुकरजी म. संवेदना श्रद्धांजलि सभा

दि० २६ नवम्बर को नासिक (महाराष्ट्र) में श्रमण संघ के युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० के हृदयाघात से अकस्मात देवलोक होने की सूचना मिलते ही संघ में शोक की लहर फैल गई। संघ मंत्री श्री गुमानमलजी सा० चौरड़िया ने २७ नवम्बर को प्रातः ९-३० पर साधना भवन, बजाज नगर में आचार्य प्रवर के सान्निध्य में संवेदना सभा के आयोजन की त्वरित सूचना जारी कर दी। ठीक समय पर भारी उपस्थिति के मध्य व्याख्यान रसिक श्री ज्ञानमुनिजी म० ने युवाचार्य श्री के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। तदुपरान्त सेवाभावी व्याख्याता पं० र० मान मुनिजी म० सा० ने समय की विचित्रता का दिग्दर्शन कराते हुये फरमाया कि आज से पाँच माह पूर्व इसी साधना भवन के प्रांगण में एक सन्त रत्न स्वामी श्री ब्रजलालजी म० की श्रद्धांजलि सभा मनाई गई थी। उस दिन भी अष्टमी और रविवार था, उन्हीं के लघु गुरु भ्राता जिन शासन के उदीयमान नक्षत्र युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० को श्रद्धांजलि भी आज इसी साधना भवन में, अष्टमी और रविवार को देने जा रहे हैं, यह विधि का विधान है, इसे बदला नहीं जा सकता।

तदनन्तर मधुर व्याख्यानी पं० र० श्री हीरा मुनिजी म० सा० ने श्रद्धेय युवाचार्य श्री की चारित्र पर्याय के विषय में सारभूत जानकारी देते हुए साधना के सजग प्रहरी की कमी खटकना जाहिर किया। फिर संघ मंत्री श्री गुमानमलजी चौरड़िया, डॉ० नरेन्द्र भानावत, श्री जवाहरलालजी मुणोत (अमरावती), श्री कन्हैयालालजी लोढ़ा, श्री चुन्नीलालजी ललवाणी, श्री ज्ञानचन्दजी चौरड़िया आदि वक्ताओं ने संवेदना स्वरूप दो शब्द व्यक्त किये।

## आचार्य प्रवर के संवेदनात्मक उद्गार

साधना भवन के सभागार में उपस्थित भारी जनमेदिनी के मध्य श्रद्धेय आचार्य श्री ने काल के स्वभाव का संक्षेप में निरूपण करते हुये फरमाया कि

हमारी इच्छा थी कि यहाँ वालों को रविवार (अवकाश) के व्याख्यान का लाभ लेने का सुअवसर मिले, पर प्रकृति की विचित्र गति एवं समय के फेर ने व्याख्यान के बदले में श्रद्धांजलि स्वरूप दो शब्द कहने को बाध्य कर दिया।

स्था० समाज के उदीयमान नक्षत्र, शान्त स्वभावी, प्रकृति के भद्रिक, श्रमण संघ के युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० के अकस्मात् महाप्रयाण की घटना सुनकर खेद होना स्वाभाविक था, वह हुआ ही।

उनके युवाचार्य बनने पर मैंने इस आशय से प्रमोद व्यक्त किया था कि त्यागी-विरागी पूज्य श्री जयमल्लजी म० की सन्तान अनुशासन में कुछ गति कर सकेगी, समय-समय पर हम भी उनसे कह सकेंगे। आचार्य सम्राट् ने यह समझ कर आगम प्रेमी युवासंत को युवाचार्य बनाया कि यह मुझे सहयोग देगा, लेकिन संयोग देखिये कि आचार्य श्री को सहयोग के बदले वियोग देखना पड़ा।

हम श्रमण संघ से अलग हैं तथापि हमारा श्रमण-संघ के साथ गुणों का सम्बन्ध अब भी बना हुआ है। स्थानकवासी समाज के नाते हम सम्बन्धित हैं, एक हैं। अतः श्रमण संघ से अलग होकर भी उसके सुख में आनन्द का एवं कमी में दुःख का अनुभव करते हैं। जब हम भी कटु अनुभव कर रहे हैं तो श्रमण संघ के आचार्य श्री को कितना खेद हुआ होगा, कह नहीं सकते।

इनके स्वर्गवास से श्रमण संघ के साथ पूरे स्थानकवासी समाज को चोट लगी है। हम तो भूधर वंश परम्परा से भी युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी म० से सम्बन्धित हैं।

गृहस्थ की धन, मकान आदि सम्पत्ति होती है उसी प्रकार हम श्रमणों की सम्पत्ति ज्ञान और क्रिया की साधना है। इसमें जब कमी होती है तब खेद होता है। श्रमण संघ के सन्तों में त्याग पर बल देने वाले नेता संत समय से पहले जा रहे हैं और जब त्याग के रसिक त्यागी चले जाते हैं तो दुःख होना स्वाभाविक है, क्योंकि यही हमारी पूँजी है।

आशा है, आचार्य श्री धैर्य के साथ इस अकस्मात् हुई दुर्घटना से खिन्नता को ज्ञान बल एवं गम्भीरता से सहन करेंगे। आचार्य श्री और युवाचार्य श्री की शिष्य मण्डली के साथ हमारी हार्दिक संवेदना है।

तदुपरान्त चार-चार लोगस्स का श्रद्धांजलि स्वरूप काउसग्ग कर, नियम कराते हुए सभा विसर्जित की गई।

□ □ □

# साहित्य-समीक्षा

☐ **डॉ० नरेन्द्र भानावत**

१. **जैन योग : सिद्धान्त और साधनाः**—आचार्य श्री आत्मारामजी म. सा., सं. प्रवचनभूषण श्री अमरमुनिजी, प्र. आत्म ज्ञानपीठ, मानसा मण्डी (पंजाब) पृ. ४६०, मू. ५०.०० ।

वर्षों पहले आचार्य श्री आत्माराम जी म. ने **'जैनागमों में अष्टांग योग'** ग्रन्थ लिखकर इस भ्रान्त धारणा को दूर किया था कि योग का सम्बन्ध केवल वैदिक परम्परा से है । उन्होंने जैन आगमों में बिखरे पड़े योग-सूत्रों के आधार पर जैन योग साधना पद्धति का शास्त्रीय एवं अनुभूति परक विवेचन-विश्लेषण किया था । प्रस्तुत ग्रन्थ में जैन विभूषण मुनि श्री पदमचन्दजी म. "भण्डारी" के मार्ग-दर्शन में पंडित रत्न श्री अमरमुनिजी ने जैन योग, सिद्धान्त और साधना का व्यापक पर तलस्पर्शी विवेचन किया है । यह ग्रंथ तीन खण्डों में विभाजित है । प्रथम खण्ड **'योग की सैद्धान्तिक विवेचना'** में मानव शरीर और योग का सम्बन्ध बताते हुए योग की परिभाषा, परम्परा और साधना-पद्धति पर प्रकाश डालते हुए जैन योग के वैशिष्ट्य को स्पष्ट किया है । द्वितीय खण्ड **'अध्यात्म योग साधना'** में योग की आधार भूमि श्रद्धा और शील का विवेचन करते हुए गृहस्थ योगी व गृह त्यागी योगी के आचार पर प्रकाश डालते हुए प्रतिमा योग, जयणा योग, परिमार्जन योग, ग्रन्थि भेद योग, तितिक्षा योग, प्रेक्षाध्यान योग, भावना योग, तप योग, ध्यान योग और समाधि योग की विस्तारपूर्वक व्याख्या की है । तृतीय खण्ड **'प्राण साधना'** में प्राण शक्ति के स्वरूप, लेश्या ध्यान साधना, मंत्र शक्ति व नवकार महामंत्र की साधना का विशिष्ट परिचय दिया गया है । मुनि श्री अपने विवेचन और विश्लेषण में योग जैसे गूढ़ विषय को सहज, सरल बनाकर प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं । योग साधना को वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, तात्त्विक, धार्मिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने व अनुभव करने-कराने में यह ग्रंथ विशेष सहायक और मार्गदर्शक है । आज के अशान्त मानस को शान्ति की ओर अग्रसर करने में इस ग्रंथ का विशेष उपयोग किया जा सकता है ।

२. **आचारांग चयनिकाः**— डॉ० कमलचन्द सौगाणी, प्र. राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर-३०२ ००३, पृ. १४० मू. १२.०० ।

अहिंसा और समता जैसे मानवीय मूल्यों को जीवन और समाज में प्रतिष्ठित करने-कराने का प्रेरणादायी ग्रन्थ है आचारांग। इसमें ३२३ सूत्र हैं जो ९ अध्ययनों में विभक्त हैं। डॉ० सौगाणी ने उनमें से ११३ सूत्रों का चयन कर इस चयनिका में उनका मूलानुगामी हिन्दी अनुवाद और अन्त में प्रत्येक सूत्र का व्याकरणिक विश्लेषण इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि अनुवाद पढ़ने के साथ ही शब्दों की विभक्तियां एवं उनके अर्थ सहज समझ में आ जाते हैं। प्रस्तावना में डॉ० सौगाणी ने 'आचारांग' में निहित जीवन मूल्यों की साधना-परक सुन्दर विवेचना की है। यह प्रकाशन आगमों को जन-जन तक पहुँचाने में विशेष सहयोगी बनेगा, ऐसा विश्वास है।

३ **सनातन रहस्यः**—महाराणा भगवतसिंह 'नमः', प्र. राज महल, उदयपुर, पृ. १८०, मू. २५.००।

सनातन संस्कृति में मान्य सृष्टि, संवर्द्धन और संहार में जो कारणभूत शक्तियां हैं—यथा सूर्य, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती तथा दशावतार, उनकी सभ्यता के विकास-क्रम के परिप्रेक्ष्य में धार्मिक, सामाजिक, व्यावहारिक और तात्त्विक धरातल पर सहज, सुन्दर व्याख्या-विवेचना इस ग्रंथ में की गई है। विभिन्न शक्तियों के विग्रह रूप का जो प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट किया गया है, वह विशेष मौलिक और मनोवैज्ञानिक बन पड़ा है। धार्मिक, पौराणिक सन्दर्भों को नवीन दृष्टि से देखने-समझने में यह ग्रंथ विशेष उपयोगी और सहायक है। ग्रन्थ की भाषा और अधिक स्पष्टता और विश्लेषण चाहती है।

४. **काँटों की छायाः**—कविरत्न श्री केवल मुनि, प्र. श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय, पृ. २००, मू. ५.००।

इस पुस्तक में मांसाहार, मद्यपान, धूम्रपान एवं जुआ को मानव मात्र के लिये जहरीले काँटे मान कर, उनकी धार्मिक एवं वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रामाणिक विवेचना की गई है। व्यसनोन्मुख आज की पीढ़ी के लिए यह पुस्तक विवेक की आँख की तरह उपयोगी और मार्गदर्शक है। इसमें डाक्टरों और मनोचिकित्सकों के नवीन प्रयोग और ताजे अनुभव भी संचित हैं।

५. **कथालोक (सन्त कथा विशेषांक)**:—सं. हर्षचन्द्र, प्र. ११९, स्टेट बैंक कॉलोनी, दिल्ली ९, पृ० १५०, मू. ५.००।

अगस्त १९८३ के इस अंक की ५१ रचनाओं में विभिन्न युगों और धर्मों के १०० से अधिक सन्तों की लगभग २०० घटनाएँ इस प्रकार दी गई हैं कि जिनसे सन्तों की अनुभूत वाणी उनके चरित्र और व्यवहार द्वारा मुखरित हुई हैं। आज के शक्ति, सत्ता और सम्पत्ति ग्रस्त जीवन में शांति, सेवा और शील की महक बिखेरने में यह विशेषांक बड़ा उपयोगी और दिशा बोधक है।

**६. तीर्थंकर (समाज सेवा विशेषांक)**:—सं. डॉ० नेमीचन्द जैन, प्र. हीरा भैया प्रकाशन, ६५ पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर, पृ. २०० मू. १५.०० ।

'साहू श्रेयांस प्रसाद जैन अमृत महोत्सव' पर नवम्बर-दिसम्बर १९८३ के संयुक्त अंक के रूप में प्रकाशित यह विशेषांक जहां एक ओर साहू श्रेयांस प्रसाद जैन के सेवाभावी व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालता है वहीं समाज सेवा के सम्बन्ध में गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है। एलाचार्य मुनि विद्यानन्द, आचार्य समन्त भद्र, साहू श्रेयांस प्रसाद जैन, अभयकुमार और शम्भूकुमार कासलीवाल के साथ 'तीर्थंकर' के सम्पादक डॉ. नेमीचन्द जैन की बातचीत का विवरण गूढ़ चिन्तन को सहज, सरल और घरेलू बनाकर प्रस्तुत करता है। यह विधा 'तीर्थंकर' का अपना वैशिष्ट्य है। ☐

# सामूहिक मौत का आनन्द

☐ अनिता जैन

१९२३ में साबरमती में बाढ़ आई हुई थी। बाढ़ का पानी साबरमती आश्रम की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा था। सरदार पटेल ने अहमदाबाद से सवारियां भेजीं और गांधीजी को लिखा—"बापू, आश्रम को पानी में डूबने का खतरा है। आश्रम खाली कर शहर आ जाइये।"

पत्र पाकर गांधीजी ने आश्रमवासियों को प्रार्थना-स्थल पर बुला कर कहा—"देखिये, भगवान् के काल रूप से हम प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर रहे हैं। बाढ़ का बहता हुआ पानी, लगता है, जल्दी ही हम सबको अपनी चपेट में लेगा। जो शहर जाना चाहें, जा सकते हैं। मेरा तो यही फैसला है कि मैं खुद आश्रम के जानवरों तथा पशु-पक्षियों को छोड़कर नहीं जाऊंगा।"

बापू की बात सुनकर कोई भी आश्रमवासी शहर जाने को राजी नहीं हुआ। सभी प्रसन्न भाव से बाढ़ के पानी को देखने लगे। इस पर सवारी लाने वाले व्यक्तियों में से एक ने पूछा—"बापू, मौत सामने खड़ी है, लेकिन एक भी आश्रमवासी के चेहरे पर भय या चिंता की लकीर नहीं है। आखिर ऐसा क्यों? क्या मौत से इन्हें डर नहीं लगता?

बापू ने सहज भाव से उत्तर दिया—"मेरे भाई, यह तो सामूहिक मौत का आनन्द है, इसमें डर कैसा?"

प्रश्नकर्ता बापू और आश्रमवासियों की अटूट आस्था के आगे नतमस्तक था। इसी आस्था का प्रतिफल था कि बाढ़ का पानी आश्रम की सीढ़ियों पर चढ़ने से पहले ही उतरने लगा। कुछ ही घण्टों में पानी पूरे तौर पर उतर चुका था।

द्वारा, श्री कैलाश जैन, एडवोकेट, मनोज मार्ग, भवानी मण्डी

# बाल-कथामृत [२०]

१६ वर्ष तक के बच्चे इस कहानी को पढ़कर इसके साथ दिये गये प्रश्नों के उत्तर १५ दिन में 'जिनवाणी' कार्यालय में भेजें। सही उत्तरदाताओं के नाम 'जिनवाणी' में प्रकाशित किये जायेंगे व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वालों को क्रमश: २५, २० व १५ रुपयों की उपहार राशि भेजी जायेगी।

—सम्पादक

## पाप का फल

□ श्रीमती शान्ति भट्टाचार्य

सेठ बनारसी सम्पन्न व्यापारी था। उसके पास काफी सम्पदा थी पर धन की लोलुपता उसकी बढ़ती जा रही थी। एक तरह से उसे धन कमाने का पागलपन चढ़ गया था।

उसे न तो अपने स्वास्थ्य की चिन्ता थी और न अपने परिवार की।

मनुष्य जानता है कि सही सुख, शांति और सन्तोष धन में नहीं, आत्मा की प्रसन्नता में है। आदमी की आत्मा प्रफुल्लित न रहे तो धन व्यर्थ है। संसार व्यर्थ है।

मगर बनारसी को अपनी पत्नी और बच्चों से भी बात करने की फुरसत नहीं थी। कभी-कभी तो उसे सही वक्त पर भोजन भी नसीब नहीं होता था। उसके घर में क्या कुछ होता है, उससे वह एकदम बेखबर रहता था।

कई महीनों के बाद उसे एक दिन फुर्सत मिली। वह अपने महलनुमा घर में घूमा। घूमते-घूमते उसने कई तब्दीलियां कीं। फिर वह रसोई में पहुँचा तो पागल की तरह चीख़ पड़ा, "यह फूल छाप घी घर में कौन लाया है ? कहां है रसोइया का बच्चा ?"

रसोइया आया। उसके साथ सेठानी भी आई। उसने सेठानी से पूछा—"यह फूल मार्का घी इस घर में कौन लाया ?"

"मैंने मंगवाया। आप भी सोचिये। यह घी अपनी कम्पनी का है। यदि हम दूसरों का बनाया घी खरीदेंगे तो क्या हमारी कम्पनी की बदनामी नहीं होगी।"

वह भड़क उठा, "व्यापार में कैसी बदनामी और कैसी सद्‌नामी ! व्यापार में केवल पैसा कमाने की बुद्धिमानी होती है।……मगर मेरे मना

करने पर भी यह घी घर में लाया क्यों गया ? मैं रसोइये को नौकरी से निकाल दूंगा ।" वह गुस्से में भर गया ।

सेठानी ने शांति से कहा, "यह तो वह बात हुई कि कुम्हार कुम्हारिन से पौच न आये तो गधी के कान खींचे ।"

"ओह !" और सेठ तड़प कर चला गया । थोड़ी देर में उसके बूढ़े नौकर ने सेठानी को एकान्त में ले जाकर कहा, "मुझे सात गुनाह माफ करें तो एक बात बताऊँ ?"

"बताओ ।"

"आपको भगवान् की कसम·······आप किसी को कुछ नहीं कहेंगी ।"

सेठानी झुंझलायी, "अरे बताओ तो सही, खाली पहेलियां बुझा रहा है ।"

नौकर ने एक पल सतर्कता से देखा । फिर कहा, "हमारे फूल छाप घी में पशुओं की चर्बी मिलायी जाती है ।"

"क्या····?" सेठानी की आँखें फट गयीं मानो उन्हें उस पर विश्वास नहीं हो रहा है ।

"हां सेठानीजी·······मैं झूठ नहीं बोलता ।"

अब सेठानी को सेठ की बात समझ में आई । उसको अपने पति और अपने आप पर भयंकर ग्लानि हुई । उसने अपने बेटों को भी यह बात बताई । बेटे समझदार थे । जिनके धर्म में अहिंसा और सत्य का बोलबाला है, वहां इतना जघन्य कृत्य ! उन्हें लगा कि सेठ आदमी नहीं, एक दानव है । एक पूंजी बढ़ाने वाला यंत्र-मानव ।·······बस, उन दो बेटों व माँ ने दूसरे दिन प्रायश्चित स्वरूप २१ दिनों का उपवास रखा और आत्मशुद्धि के लिए जप किया ।

सेठ को भारत सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत बन्द कर दिया गया । सालों वह बन्द रहा, इस बीच में उसका व्यापार चौपट हो गया ।

उसकी पत्नी और बेटे दीक्षा ग्रहण करके संन्यासी हो गये ।

और सेठ पागल ! वह सड़कों पर घूम-घूमकर कह रहा था—"मैं सेठ बनारसी हूं—मैंने घी में मिलावट करके पाप किया·······देखो·······देखो······· दुनिया वालों मैं नष्ट हो गया·······।"

पर इतने जघन्य कृत्य करने वाले के प्रति दुनिया की दृष्टि में अवश्य क्षमा थी पर वाणी में नहीं ।

—आशा-लक्ष्मी, ईदगाह बारी के भीतर, नया शहर, बीकानेर

## अभ्यासार्थ प्रश्न

उपर्युक्त कहानी को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

१. सेठ बनारसी ने अपनी ही कम्पनी में बने फूल मार्का घी को अपने घर में लाने से क्यों मना किया ?
२. 'उन्हें लगा कि सेठ आदमी नहीं, दानव है।' सेठ के बेटों को ऐसा क्यों लगा ?
३. सेठ को "पूंजी बढ़ाने वाला यंत्र-मानव" कहने से क्या तात्पर्य है ?
४. आप सुख, शांति और सन्तोष का निवास किस में मानते हैं ?
५. सेठ की पत्नी और बच्चों ने आत्मशुद्धि के लिए क्या किया ?
६. सेठ को अपने पाप का क्या फल मिला ?
७. यदि आपको पता चले कि आप जिस दुकानदार से खाद्य पदार्थ खरीदते हैं, वह उनमें मिलावट करता है, तो आप क्या करेंगे ?

## उत्तरदाताओं के नाम

'जिनवाणी' के अक्टूबर, ८३ के अंक में श्री राज सौगानी की कहानी **'असली दान की महिमा'** के प्रश्नों के उत्तर हमें निम्नलिखित पाठकों से प्राप्त हुए हैं। सबको धन्यवाद।

**भवानीमण्डी** से आशा सिंघवी, दिलीपकुमार जैन, राजेश मूथा, **अजमेर** से कु. प्रतिभा सीपाणी, **देई** से नरेन्द्रकुमार जिन्दल, रवीन्द्रकुमार जैन, **कोटा** से अनीता चण्डालिया, **नीमच** से. संजय आंचलिया, भीखमचन्द रांका, **बर** से लक्ष्मीचन्द जैन, **पाली** से कुसुमलता सुराणा, राजेन्द्रकुमार धारीवाल, **अरसीकेरा** से विमलाकुमारी चोपड़ा, **अलीगढ़ (टोंक)** से घेवरचन्द जैन भागचन्द जैन, विनोदकुमार जैन, **बंगलौर** से अरुणकुमार, धर्मीचन्द लोढ़ा, सन्तोषकुमारी, **झाल** से पवनराज जैन, **नागपुर** से अंजु जैन, **जयपुर** से कु. सुनीता कर्नावट, शिवकुमार अग्रवाल, सीमा कुचेरिया, विकास जैन, **ब्यावर** से गौतमचन्द बोहरा, **सरवाड़** से सुरेन्द्रकुमार पगारिया, **राणावास** से अशोककुमार, **मथुरा** से मनोजकुमार जैन, **श्री महावीर जैन धार्मिक पाठशाला स्टेशन बजरिया : सवाईमाधोपुर** स कु. दमयन्ती जैन, कु. सुनीता जैन, कु. सावित्री जैन, कु. आशारानी जैन, कु. उर्मिला जैन, कु. बीना जैन, कु. अनीता जैन, नरेन्द्र जैन, मुकेश जैन, राजेन्द्र जैन, कु. चन्दा जैन, कु. इन्द्रा जैन, कु. सीमा श्रीवास्तव, कु. मंजुबाला जैन, सतीश जैन, सुरेन्द्र जैन, प्रवीण जैन, विमल जैन, सुनीलकुमार जैन, और कु. साधना जैन, **बावड़ी** से अशोककुमार कटारिया, **भोपालगढ़** से अजीतराज ओस्तवाल, **सैंथल** से अनिलकुमार जैन, **जोधपुर** से मनोजकुमार सिसोदिया।

(शेष पृष्ठ ५८)

# वैरागी श्री प्रमोद कुमार का परिचय

जिनकी भागवती दीक्षा मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी सं. २०४० गुरुवार दिनांक १५ दिसम्बर सन् १९८३ को आचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० के सान्निध्य में जयपुर नगर में होने जा रही है।
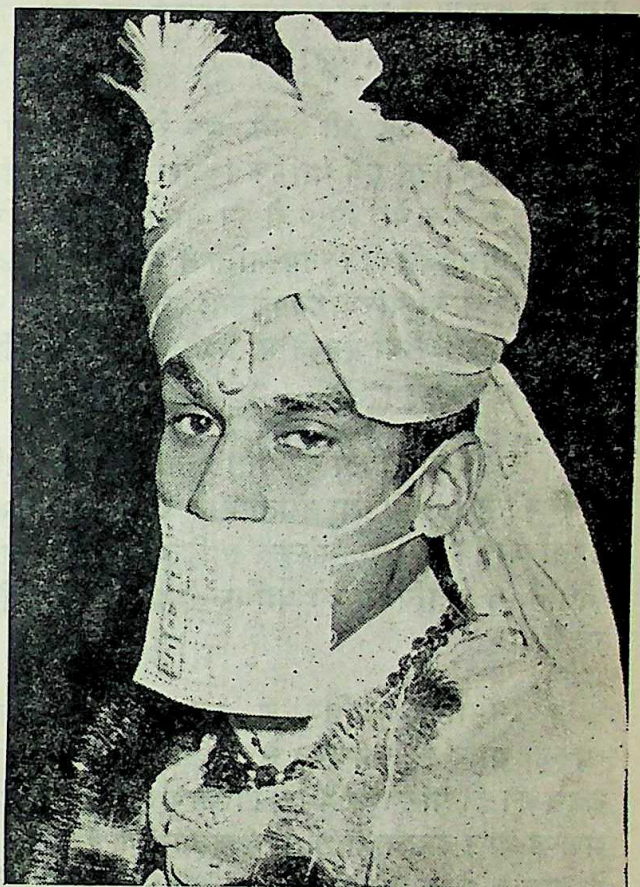
प्रमोद कुमार मेहता का जन्म ११ जून, १९६० को जयपुर नगर में हुआ। इनके पिता श्री सूरजमलजी मेहता एवं माता श्रीमती प्रेमकुमारी मेहता अलवर निवासी हैं। बाल्यावस्था से ही ये बड़े होनहार बालक रहे हैं। अध्ययन में ये प्रति वर्ष कक्षा में उच्च स्थान प्राप्त करते रहे हैं। साथ ही अन्य सांस्कृतिक विधाओं में भी इन्होंने कई पुरस्कार प्राप्त किये हैं—जैसे वाद-विवाद, भाषण-माला, निबन्ध लेखन, सामान्य-ज्ञान प्रतियोगिता तथा एकाभिनय आदि। इनके अन्दर नेतृत्व करने का गुण भी प्रारम्भ से ही विद्यमान है, फलस्वरूप इन्होंने नेहरू बाल संघ व विद्यार्थी परिषद् की अलवर शाखा के संयोजक के रूप में कई वर्षों तक सराहनीय कार्य किया है। व्यावहारिक शिक्षण में बी.काम., एल-एल. बी. तथा सी. ए. (इन्टर) किया है। सी. ए. (इन्टर) में एकाउन्ट्स के पेपर में भारत में अब तक सर्वाधिक अंक प्राप्त किये।

प्रत्येक कार्य को ये बड़ी कुशलता के साथ करते हैं। इनके मृदु व्यवहार, विनयशीलता, सेवा, सरलता आदि गुणों से परिवार के ही नहीं अन्य जो भी व्यक्ति इनके सम्पर्क में आया वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। इन्हीं

गुणों के कारण ये सभी के प्रिय भाजन बन गये। मातृ-सेवा से इन्होंने अपनी माता को सदैव प्रसन्न रखा है।

धर्म के प्रति भी इनमें शुरू से लगन रही है। इनके माता-पिता बड़े सरल, सुसंस्कारित एवं धार्मिक विचार वाले हैं। इनके दादाजी भी बड़े ही धर्मनिष्ठ श्रावक थे। पिताजी का भोपाल वाला परिवार विशेषत: इनके ताऊजी श्री सज्जनसिंहजी की विनय-भक्ति व धर्म-साधना उत्कृष्ट श्रेणी की है। माताजी का जयपुर वाला परिवार विशेषत: इनके नानाजी श्री उमरावमलजी सेठ धर्म-निष्ठ श्रावक हैं तथा इनकी मौसीजी श्री तेजकंवरजी म. सा. २१ वर्षों पूर्व दीक्षा ग्रहण कर चुकी हैं।

इस प्रकार पिता व माता दोनों पक्षों से धार्मिक भावना इन्हें विरासत में मिली है। सबसे लघु भ्राता होने के नाते सभी भाई विशेषत: श्री कमलचन्द्र मेहता जो कि एम. ए., संस्कृत साहित्याचार्य हैं तथा पिछले कई वर्षों से सन्त-सतियों व वैरागियों को धार्मिक शिक्षण करा रहे हैं, इनकी प्रेरणा के स्रोत रहे हैं।

सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर, कल्याण मन्दिर, पच्चीस बोल का थोकड़ा आदि इनने बचपन से ही कंठस्थ कर लिये थे। यह इनकी दृढ़ धार्मिक लगन का ही परिणाम है कि पिछले एक वर्ष से ये परम श्रद्धेय प्रात: स्मरणीय, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, चारित्र-चूड़ामणि, इतिहास मार्त्तण्ड, सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक आचार्य प्रवर १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० की सेवा में जलगाँव से ही साथ-साथ रहे। संयोगवश इस वर्ष संवत्सरी के दिन से ही इनमें तीव्र वैराग्य भावना जागृत हुई और इसी दिन से संसार के भौतिक वैभव को छोड़कर दीक्षा लेने का दृढ़ संकल्प कर लिया, जो दिनांक १५-१२-८३ को मूर्त्त रूप लेने जा रहा है। हम सबकी अमित मंगल कामनाएँ।

---

[पृष्ठ ५६ का शेषांश]

## पुरस्कृत उत्तरदाता

**प्रथम** : कु. प्रियंका लोंग्या द्वारा श्री नरेन्द्रकुमार लोंग्या, विजयवर्गीय मसाला चक्की, जैन नसियां के पास, **टोंक** (राजस्थान)।

**द्वितीय** : महेन्द्रसिंह जैन, S. No. 36, द्वितीय वर्ष एस.टी.सी., **मसूदा** (अजमेर) राजस्थान।

**तृतीय** : रघुनन्दन शर्मा द्वारा श्री सीताराम शर्मा, गौतम निवास, **भवानीमण्डी** (झालावाड़)–३२६५०२

# अध्यात्म पथ की पथिक तीन विरक्ता बहिनें

## जिनकी दीक्षा कोडम्बाकम (मद्रास) में १९ दिसम्बर, १९८३ सोमवार को सम्पन्न हो रही है।

### १. बाल ब्रह्मचारिणी पूर्णिमाबाई

१९ वर्षीय पूर्णिमा बाई का जन्म कांजोपुरम् (तमिलनाडू) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री पारसमलजी बोहरा और माता का नाम श्रीमती छोटीबाई है। वर्तमान में आप बैंगलोर निवासी हैं। आपने मिडिल स्तर तक व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया है। बचपन से ही आपकी विशेष धार्मिक रुचि और वैराग्य भावना रही है। धार्मिक शिक्षण की दृष्टि से आपने दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, तत्त्वार्थ सूत्र, कर्म प्रकृति, नवतत्त्व, पाँच समिति, तीन गुप्ति, २५ बोल, ६७ बोल, ३३ बोल, लघु दण्डक आदि का अभ्यास किया है, आपको कई थोकड़े व स्तोत्र कंठस्थ हैं। आप महासती श्री मैनासुन्दरीजी म. सा. के सान्निध्य में ज्ञानाराधन कर रही हैं।

### २. बाल ब्रह्मचारिणी सविताबाई

१८ वर्षीय सविताबाई का जन्म सिरगुप्पा (कर्नाटक) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री धनराजजी वैद मूथा एवं माता का नाम श्रीमती कान्ताबाई है। बचपन से ही आपकी विशेष धार्मिक रुचि और वैराग्य भावना रही है। धार्मिक शिक्षण की दृष्टि से आपने दशवैकालिक सूत्र, विभिन्न थोकड़ों एवं जैन तत्त्वों का विशेष ज्ञान प्राप्त किया है। आप गत तीन वर्षों से महासतीजी श्री मैनासुन्दरीजी के सान्निध्य में रहकर ज्ञान और क्रिया का विशेष अभ्यास कर रही हैं।

### ३. बाल ब्रह्मचारिणी अंजुबाई

आपका जन्म सवाई माधोपुर जिले की हिण्डौन तहसील में फाजलाबाद नामक गाँव में हुआ। आपके पिता का नाम प्रभुदयालजी पटवारी और माता का नाम श्रीमती ताराबाई जैन है। आपने मिडिल कक्षा तक व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया है। बचपन से ही आपकी विशेष धार्मिक रुचि और वैराग्य भावना रही है। धार्मिक शिक्षण की दृष्टि से आपने सामायिक, प्रतिक्रमण, दशवैकालिक सूत्र, भक्तामर एवं १० से अधिक थोकड़ों का अभ्यास किया है। आप पिछले एक वर्ष से विदुषी साध्वी श्री मैनासुन्दरीजी म. सा. की सेवा में ज्ञानाराधन कर रही हैं।

आपके संयममय जीवन के लिए हम सबकी अमित मंगल कामनाएँ।

संगोष्ठी-विवरण

# सामायिक : समभाव की साधना

□ प्रो० संजीव भानावत

अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में जैन संत आचार्य श्री हस्तीमल जी म०, श्री हीरा मुनि एवं मान मुनि के सान्निध्य में त्रिदिवसीय सामायिक संगोष्ठी १७, १८ व १९ नवम्बर को सम्पन्न हुई जिसमें मद्रास, कलकत्ता, दिल्ली, आगरा, इन्दौर, जलगांव, भोपाल, अलीगढ़ आदि क्षेत्रों के अलावा राजस्थान के लगभग ३५ विद्वानों ने सामायिक-साधना के धार्मिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्षों पर अपने शोध निबन्ध प्रस्तुत किये। संगोष्ठी का संचालन परिषद् के महामंत्री डॉ० नरेन्द्र भानावत ने किया।

डॉ० भानावत ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि सामायिक समभाव पोषक साधना पद्धति है जिसमें साधक ४८ मिनट तक सांसारिक व्यापारों से दूर हटकर समता भाव में रमण करने का अभ्यास करता है। पर यह साधना पद्धति हमारे लिए इतनी परिचित हो गई है कि हम इसका यांत्रिक रूप में उपयोग करते हैं और इसका प्रभाव जीवन-व्यवहार में परिलक्षित नहीं होता है अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम सामायिक के पाठों और उनमें निहित विचारों तथा भावनाओं का अर्थ गहराई के साथ हृदयंगम करें।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध जैन विद्वान् एवं तत्त्वज्ञ श्री श्रीचन्द गोलेछा ने कहा कि सामायिक का अर्थ है अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में समता भाव रखना। विशिष्ट योजना सचिव श्री रणजीतसिंह कूमट ने कहा कि सामायिक साधना का लक्ष्य है अशुभ प्रवृत्ति से शुभ प्रवृत्ति में आना।

आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० ने अपने प्रवचन में कहा कि दुःख का कारण आर्थिक विषमता नहीं, मानसिक विषमता है। सामायिक व्यक्ति को विषमभाव से समभाव में स्थित करती है। श्री हीरा मुनि ने सामायिक को स्व स्वरूप प्राप्ति का साधन बताया तो मान मुनि ने परभाव से स्वभाव में आने के अभ्यास को सामायिक कहा। श्री ज्ञान मुनि ने शुभ चिन्तन की प्रक्रिया के रूप में इसकी विवेचना की।

डॉ० नरेन्द्र भानावत ने अतीत के पापों की आलोचना, वर्तमान के प्रति सजगता और भविष्य के प्रति संकल्पबद्धता को सामायिक नाम दिया तो श्री सज्जननाथ मोदी ने आदर्श नागरिक बनने-बनाने की कला के रूप में सामायिक का विवेचन किया। डॉ० उदय जैन ने सामायिक को समत्व का सूर्योदय बताते हुए समय में ठहर जाने की क्रांति को सामायिक कहा। पं० कन्हैयालाल दक ने जीव और आत्मा की तदाकारता के रूप में सामायिक को देखा तो श्री गुमानमल लोढ़ा ने उत्पीड़ित एवं शोषित व्यक्ति को समाज में समानता के स्तर पर प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न को सच्ची सामायिक कहा।

डॉ० शान्ता भानावत ने आत्म-साक्षात्कार की प्रक्रिया के रूप में, डॉ० सुषमा गांग ने उल्लास प्राप्त करने की कला के रूप में, श्रीमती सुशीला बोहरा ने अहिंसक मनुष्य निर्माण करने की साधना पद्धति के रूप में सामायिक का विवेचन किया।

प्रो० संजीव भानावत ने हिंसा से अहिंसा, कठोरता से कोमलता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया के रूप में सामायिक साधना का प्रतिपादन किया। श्री श्रीचन्द सुराना ने कहा कि हमने सामायिक को अभिव्यक्ति का विषय बना दिया है जबकि बह है अनुभूति का विषय। डॉ० कोकिला सेठी ने सामायिक को आत्मा का विषय मानकर उसकी विवेचना की। श्री विमल गोलेछा ने चित्त को सात्विक रूप में एकाग्र करने की क्रिया को सामायिक बताया। श्री सुभाष कोठारी एवं श्री कृष्णमोहन जोशी ने सामायिक को चरित्र-निर्माण की आधार-शिला बताया।

श्रीमती मंजुला बम्ब एवं कुसुमलता जैन ने आत्मा के उत्थान, पारिवारिक शान्ति एवं तनाव-मुक्ति के लिए सामायिक साधना को उपयोगी बताया।

श्री गुमानमल चोरड़िया, केशरी किशोर नलवाया एवं फूलचन्द व सूरजमल मेहता ने सामायिक साधकों के प्रेरक जीवन-प्रसंगों का वर्णन करते हुए कहा कि मुसीबतों व कठिनाइयों में अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहना सच्ची सामायिक है। विद्वत परिषद् के अध्यक्ष श्री भँवरलाल कोठारी ने विभाव से स्वभाव में आने की साधना के रूप में सामायिक की विवेचना की। जलगांव के विधायक प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सुरेशकुमार जैन ने निःस्वार्थ भाव से सेवा करने को वास्तविक सामायिक बताया तो प्रमुख उद्योगपति श्री भंवरलाल जैन ने स्व को अर्थ के साथ जोड़ने की प्रवृत्ति को सामायिक-साधना में सबसे बड़ी बाधा बताया।

इस अवसर पर आयोजित **"आचार्य श्री रत्नचन्द्र स्मृति व्याख्यानमाला"** के अन्तर्गत **'हम सुखी जीवन कैसे जिएं'** विषय पर विशेष व्याख्यान देते हुए सुप्रसिद्ध चिन्तक डॉ० महेन्द्र सागर प्रचंडिया ने कहा कि ज्ञान के अभाव में जितनी भी क्रियाएं होती हैं वे सुखदायक नहीं होतीं। जब हम अपने निज स्वरूप में आते हैं तभी सुखानुभव करते हैं। जो व्यक्ति दूसरों के सर्टिफिकेट व संस्मरणों पर जी रहा है वह जीवित नहीं है। धर्म, धर्मसभाओं, मन्दिरों, स्थानकों, पुस्तकों आदि में नहीं है, वह तो जीवन के प्रत्येक चरण में है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए न्यायाधिपति श्री गुमानमल लोढ़ा ने कहा कि जो अपने व्यवसाय के प्रति जितना सच्चा और प्रामाणिक है, वह उतना ही सुखी है। सामायिक-साधना सुखी रहने की कला है।

इस अवसर पर प्रो० संजीव भानावत द्वारा सम्पादित **'गजेन्द्र सूक्ति सुधा'** पुस्तक का विमोचन किया गया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री टीकम चन्द हीरावत ने मण्डल की साहित्य, स्वाध्याय, शिक्षा, साधना सम्बन्धी प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। सहमंत्री श्री सुमेरसिंह बोथरा ने सब के प्रति आभार प्रकट किया।

—सहायक प्रोफेसर, पत्रकारिता विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-३०२ ००४

## रूई का टुकड़ा

□ श्री कमल सोगानी

उस दिन बापू का मौन व्रत था। आश्रमवासियों के साथ वे सैर कर रहे थे। रास्ते में करीब दो इंच लम्बा रूई का टुकड़ा पड़ा था। बापू के उस ओर इशारा करने पर एक लड़की ने आगे बढ़कर उसे उठा लिया। कुछ दूर जाने के बाद लड़की ने सोचा कि भला इस रूई का क्या होगा, इसलिए उसने उसे फेंक दिया।

शाम को बापू का मौन टूटा तो उन्होंने लड़की से रूई का टुकड़ा मांगा। लड़की ने सहज ढंग से कह दिया कि उसने तो फेंक दिया, भला उसका क्या होता? गांधीजी बिगड़ कर बोले—'क्या तुम कोई सिक्का इसलिए फेंक दोगी कि वह कम मूल्य का है।'

'नहीं' लड़की ने कहा।

बापू ने कहा-'जरा सोचो तो रूई के उस टुकड़े में कितना परिश्रम छिपा है। मैंने माना कि उसे फेंकने वाले ने गलती की है, लेकिन उससे बड़ी गलती तो तुमने की कि उसके महत्त्व की ओर इशारा करने पर भी तुमने उसे फेंक दिया। उसका मूल्य नहीं समझा। अब जाओ और उसे खोज कर लाओ।'

वह लड़की गई और बड़ी मुश्किल से रूई का वह टुकड़ा ढूँढ़ कर लाई। बापू ने उसका सूत काता।

स्टेशन रोड, भवानी मंडी-३२६५०२ (राज०)

# समाज-दर्शन

## शुभ सूचना

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर की सेवामें विगत एक वर्ष से ज्ञानाराधन में रत विरक्त बन्धु श्री प्रमोदकुमारजी मेहता आत्मज श्री सूरजमलजी मेहता, अलवर निवासी की भागवती दीक्षा जयपुर में कराने का उनके माता-पिता का अत्यधिक आग्रह होने से श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म० सा० ने मार्गशीर्ष शुक्ला १०, गुरुवार तदनुसार १५ दिसम्बर, ८३ को सुखे समाधे जयपुर में दीक्षा देने की स्वीकृति प्रदान की है।

—ब्रजमोहन जैन

## दीक्षा आमन्त्रण पत्र

मान्यवर धर्मप्रेमी सुश्रावक,

सादर जयजिनेन्द्र !

अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सूचित करते हैं कि हमारे असीम पुण्योदय से परम श्रद्धेय आगम महोदधि, सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रखर प्रेरक, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म० सा० की आज्ञानुवर्तिनी परम पूज्या शांत स्वभावी उपप्रवर्तिनीजी श्री १००५ श्री बदन कँवरजी म० सा० की सुशिष्या परम विदुषी आ० बा० ब्र० पूज्या महासतीजी श्री मैनासुन्दरीजी म० सा० आदि ठाणा ३ के सान्निध्य में फाजिलाबाद (सवाई माधोपुर जिला) के निवासी श्रीमान् प्रभुदयालजी पल्लीवाल की सुपुत्री अंजुकुमारी एवं पूर्णिमा बाई व सविता बाई की भागवती दीक्षा सम्वत् २०४० मिगसर सुदी १४ सोमवार, दिनांक १९ दिसम्बर, १९८३ को कोडम्बाक्कम्-बड़पलनी, मद्रास में होने जा रही है। अतः आप से सविनय अनुरोध है कि इस मंगलमय पावन प्रसंग पर आप सपरिवार और समस्त श्री संघ पधारने हेतु आप अपना पूर्व कार्यक्रम सुनियोजित करावें। आप इस पत्र को हमारी मोद भरी मनुहार समझकर अवश्य पधारें और हमें आपके अतिथि सत्कार का लाभ दिरावें।

आपके पधारने की अग्रिम सूचना हमें निम्नलिखित पते पर अवश्य दिरावें।

हम हैं, आपके
**श्री जैन संघ, कोड़म्बाक्कम–वड़पलनी**
मद्रास–२६

सम्पर्क सूत्र—
**शा. पारसमलजी सम्पतराजजी कोठारी,**
नं. २७, पुलीयार कोईल स्ट्रीट, वड़पलनी, मद्रास-६०० ०२६
फोन : ४२१८७५, ४२३२८०

# अ. भा. जैन पत्रकारिता संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी

**जयपुर**—श्री जैन विद्यालय कलकत्ता के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर अ. भा. जैन विद्वत परिषद् एवं श्री जैन विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १३ व १४ जनवरी, १९८४ को कलकत्ता में अ. भा. स्तर पर **जैन पत्रकारिता संगोष्ठी** का आयोजन किया जा रहा है जिसमें जैन पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति, सम्पादन एवं प्रबन्ध सम्बन्धी समस्याएँ, धार्मिक एवं सामाजिक समस्याओं के निवारण में जैन पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका, जैन पत्रों की नीति, सम्पादक, प्रबन्धक व संवाददाता की आचार-संहिता तथा मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठापना में जैन पत्रकारिता की भूमिका विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये जायेंगे व उन पर व्यापक चर्चा होगी। इस संगोष्ठी का संचालन परिषद् के महामंत्री डॉ. नरेन्द्र भानावत करेंगे। इसमें विभिन्न प्रान्तों एवं भाषाओं के लगभग ४० सम्पादकों व पत्रकारों के भाग लेने की सम्भावना है। स्वर्ण जन्यती महोत्सव का मुख्य समारोह १५ जनवरी को है जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् डॉ. दौलतसिंह कोठारी करेंगे।

इस अवसर पर **अ. भा. जैन पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी** का आयोजन किया गया है। सभी जैन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों एवं प्रबन्धकों से निवेदन है कि वे अपनी पत्र-पत्रिकाओं के ताजे अंक तथा विशेषांक निम्नलिखित पते पर भेजने की कृपा करें ताकि प्रदर्शनी में उन्हें रखा जा सके।

**श्री सरदारमल कांकरिया,**
मंत्री, श्री जैन विद्यालय,
१८-डी, सुकेअस लेन, कलकत्ता-७०० ००१
फोन नं. २६४९५७

## पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी को भारत सरकार द्वारा मान्यता एवं उसे प्रदत्त दान शत-प्रतिशत आयकर से मुक्त

हमारे लिए यह प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि जैन विद्या के शोध की दिशा में विगत ४० वर्षों से कार्यरत अद्वितीय संस्था पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान को भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी विभाग ने एक शोध संस्थान के रूप में मान्यता प्रदान की है। साथ ही भारत सरकार के राजस्व विभाग ने पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान की संचालक समिति श्री सोहनलाल जैन विद्या प्रसारक समिति, अमृतसर को शोध संस्थान के हेतु दिये जाने वाले समस्त दानों को आयकर विधान १९६१ के क्लाज ३ के सब-सेक्शन १ के सेक्शन ३५ के अन्तर्गत आयकर से पूर्ण-मुक्ति का आदेश प्रदान किया है। यह उपलब्धि हमारे लिए दो अर्थों में महत्त्वपूर्ण है। प्रथम तो यह कि भारत सरकार ने अपनी समस्त खोजबीन के उपरान्त पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान को एक शोध संस्थान के रूप में स्वीकार कर लिया है। दूसरे अब हमारे दान-दाताओं को संस्थान को अर्थ-संकट से उबारने का एक सुअवसर प्राप्त हुआ है। इस आदेश का लाभ उठाकर यदि दान-दाताओं ने मुक्त-हस्त से दान दिया तो हम शोध संस्थान की शोध गतिविधियों को अधिक उन्नत बना सकेंगे और शोधकार्यों के लिए हमें एक स्थायी आधार मिल सकेगा। अतः हम दान-दाताओं से यह अपेक्षा करते हैं कि वे जैन विद्या के अध्ययन के क्षेत्र में अपनी दान की दिशा को मोड़ें और कर-मुक्ति के इस आदेश का पूरा लाभ उठायें। चूंकि संस्थान को दिया गया यह दान शत-प्रतिशत आयकर से मुक्त है इसलिए उन्हें दान के लाभ के साथ-साथ कर के भार से भी मुक्ति मिलेगी। दान की दिशा निम्न हो सकती है :—

(१) स्थायी शोध छात्रवृत्ति हेतु धनराशि प्रदान कर।

(२) शोध ग्रंथों के प्रकाशन हेतु धनराशि प्रदान कर।

(३) शोध छात्रों के छात्रावासों के निर्माण हेतु धनराशि प्रदान कर।

(४) शोध संस्थान के पुस्तकालय के विकास हेतु धनराशि प्रदान कर।

अतः आपसे अपेक्षा है कि इस स्वर्णावसर का लाभ उठावें।

निदेशक
**श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान,**
आई० टी० आई० रोड, वाराणसी—५

# नेत्र-चिकित्सा शिविर का आयोजन

**श्री कन्हैयालाल हीरावत चेरीटेबल ट्रस्ट जयपुर द्वारा राजस्थान सरकार की भ्रमणशील शल्य चिकित्सा इकाई जयपुर के सहयोग से श्री आनन्द यश जैन छात्रालय फूलिया कलां में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का भव्य आयोजन दिनांक २८ दिसम्बर, १९८३, बुधवार से ४ जनवरी, १९८४, बुधवार तक किया गया है।**

☐ रोगियों की जांच एवं भर्ती—२८ दिसम्बर, १९८३, बुधवार

☐ ऑपरेशन—२९ एवं ३० दिसम्बर, १९८३

इस शिविर में राजस्थान के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सकों द्वारा आँखों की हर प्रकार की बीमारी जैसे सफेद मोतिया बिंद, काला पानी, फूली, पलक बंदी एवं नासूर के ऑपरेशन होंगे। नेत्र सम्बन्धी सभी प्रकार की बीमारी का इलाज मुफ्त किया जायेगा। शिविर में रोगियों के लिए दवाइयाँ, हरी पट्टियाँ, चश्मे भोजन, दूध, चाय, दलिया आदि की सुविधा निःशुल्क होगी। जन्मान्ध एवं माता से गई आँखों के रोगी आने का कष्ट न करें। रोगियों के साथ आने वाले सज्जन भोजन व बिस्तर आदि की व्यवस्था स्वयं करेंगे।

नोट—शिविर अवधि में शासन प्रभाविका, अहिंसा की अभय मूर्ति, साध्वी रत्न महासतीजी श्री यशकंवरजी म० सा० आदि ठाणा के पधारने की सम्भावना है।

# महावीर पुरस्कार, १९८३

दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के जैन विद्या संस्थान का सन् १९८३ का रु० ५,०००/– का महावीर पुरस्कार—

१९८१ से १९८३ के मध्य प्रकाशित/अप्रकाशित हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में लिखित जैन साहित्य से सम्बन्धित किसी भी विषय की कोई भी रचना, चाहे वह पुस्तक हो या चाहे स्वीकृत शोध प्रबन्ध, ३१ मार्च, १९८४ तक आमन्त्रित है।

नियमावली तथा आवेदन पत्र आदि प्राप्त करने के लिए २/– रु० का पोस्टल आर्डर निम्न पते पर आना चाहिये—

**डॉ० गोपीचन्द पाटनी**, संयोजक, जैन विद्या संस्थान,
एस० बी०-१०, बापूनगर, जयपुर–३०२ ००४

# आवश्यक सूचना

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि गत अक्षय तृतीया से महामहिम आचार्य प्रवर स्व. श्री नन्दलालजी म., आचार्य प्रवर स्व. श्री माधवमुनिजी म. एवं आचार्य प्रवर स्व. श्री चम्पालालजी म. का दीक्षा शताब्दि समारोह वर्ष प्रारम्भ हो गया है। जिन नगरों-गांवों में तीनों श्रद्धेय आचार्य प्रवरों का विचरण विशेष रूप से रहा है, पूज्य श्री का साधनाकाल अधिकांश व्यतीत हुआ है, वहां के जिन श्रावक-श्राविकाओं को श्रद्धेय आचार्य प्रवरों के संस्मरण रूप घटनाएँ एवं किसी भी प्रकार की जानकारी ज्ञात हो, अनुभव में हो, तो वह सामग्री अतिशीघ्र निम्न पते पर भेजने-भिजाने का प्रयास करें जिससे कि आचार्य प्रवरों के स्मृति स्वरूप निकलने वाली 'स्मारिका' में उसे सम्मिलित किया जा सके।

**भंवरलाल सूनत**
मंत्री
श्री धर्मदास जैन मित्र मण्डल
नौलाईपुरा, रतलाम (म.प्र.)

# श्री दलाईलामा का पार्श्वनाथ विद्याश्रम में पदार्पण

**वाराणसी**—दिनांक १० नवम्बर, १९८३ को तिब्बती बौद्ध संघ के प्रधान धर्मगुरु श्री दलाईलामा का संस्थान के प्रांगण में पदार्पण हुआ। विराजित मुनिवर्य श्री हुकुमचन्दजी एवं मुनि श्री महिमाप्रभसागरजी ने तथा संस्थान के मंत्री श्री भूपेन्द्रनाथ जैन ने उनका स्वागत एवं अभिनन्दन किया। निदेशक डा. सागरमल जैन ने विद्याश्रम की गतिविधियों का परिचय दिया। विद्वत्वर्य पं. जगन्नाथजी उपाध्याय एवं डा. एन. एच. सामतानी ने क्रमशः विमोचित होने वाले ग्रंथों 'जैन, बौद्ध और गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन' 'Doctoral Dissertations in Jaina and Buddhist Studies' का परिचय दिया। दलाईलामा ने ग्रंथ विमोचित किये।

इस प्रसंग पर बोलते हुए परम पावन दलाईलामाजी ने कहा कि जैन संघ में अहिंसा एवं तपश्चर्या का जितनी कठोरता से पालन किया जाता है, उतना अन्यत्र नहीं देखा जाता है। विश्व में विभिन्न धर्मों की उपस्थिति अपरिहार्य है, आवश्यकता इस बात की है कि उनमें पारस्परिक सद्भाव की वृद्धि हो। आगे उन्होंने यह भी कहा कि चित्त की शांति हेतु धर्म की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, धर्म ही वह आइना है जिसमें हम अपनी तस्वीर देखकर आन्तरिक स्थिरता कायम रख सकते हैं।

दिनांक ११ नवम्बर को पाली और बौद्ध अध्ययन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा 'प्रारम्भिक बौद्ध धर्म एवं महायान' विषय पर आयोजित अखिल भारतीय परिसंवाद संगोष्ठी के तीसरे सत्र का प्रारम्भ प्रात: ९-०० बजे से संस्थान के प्रांगण में हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. के. के. मित्तल, बौद्ध दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की।

इस संगोष्ठी में प्रो. महेश तिवारी, दिल्ली ने 'चित्त विधि' पर, डॉ. भागचन्द्र जैन, नागपुर ने 'जैन साहित्य में महायान बौद्ध धर्म का स्वरूप' पर, डॉ. सागरमल जैन, वाराणसी ने 'महायान सम्प्रदाय की समन्वयात्मक दृष्टि : भगवद्गीता और जैनधर्म के परिप्रेक्ष्य में' पर, डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर ने 'महायान और जैनधर्म' पर, डॉ. गोकुलचन्द जैन ने 'जैन एवं बौद्ध धर्मों में अर्हत् तीर्थंकर और बोधिसत्व की अवधारणा' विषय पर अपने-अपने निबन्धों का वाचन किया। वयोवृद्ध बौद्ध भिक्षु भदन्त आनन्द कौशल्यायन, पं. प्रवर जगन्नाथजी उपाध्याय, प्रो. रामराहुल दिल्ली एवं अन्य अनेक विद्वानों ने परिचर्चा में भाग लिया। देश, विदेश और स्थानीय लगभग १०० विद्वानों की उपस्थिति रही। संगोष्ठी के अन्त में डॉ. सागरमल जैन ने आभार-ज्ञापन किया।

## प्राणिमित्र पीला रामकृष्ण का जयपुर आगमन

**जयपुर**—आन्ध्रप्रदेश जीवरक्षा संघ (गुण्टूर) के सचिव तथा "जीवबन्धु" पत्रिका के सम्पादक श्री पीला रामकृष्ण के जयपुर के आगमन के अवसर पर स्थानीय महावीर इण्टरनेशनल केन्द्र के तत्वावधान में २६ नवम्बर को एक बैठक बुलाई गई। संस्था के प्रधान श्री उमरावमलजी चौरड़िया ने उक्त बैठक की अध्यक्षता की। जयपुर एस. पी. सी. ए. के प्रचार मंत्री श्री चुन्नीलाल ललवानी ने श्री पीला रामकृष्ण का परिचय सभा को कराया और बतलाया कि घर, द्वार व मां-बाप को छोड़कर श्री रामकृष्ण करीब तीस वर्षों से जीव-दया कार्य क्षेत्र में कार्यरत हैं। १९७४ में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति महोदय से आपको "प्राणिमित्र" उपाधि से सम्मानित किया। संस्था के मंत्री श्री एच० एम० सिंघवी ने महावीर इन्टरनेशनल की गतिविधियों से मुख्य अतिथि को अवगत कराया।

मुख्य वक्ता श्री पीला रामकृष्ण ने विश्व में जीवदया संस्थाएँ कैसे कार्य कर रही हैं, उस पर प्रकाश डाला। सभी धर्मों के प्रामाणिक ग्रन्थों का उदाहरण देकर यह बतलाया कि अहिंसा धर्म सिर्फ जैनियों का ही नहीं जन-जन का धर्म है। श्री ललवाणीजी के निवास स्थान पर भी एक बैठक आयोजित कर जीवदया के कार्य को गति प्रदान करने के उपायों पर विचार-विमर्श कर निर्णय लिया गया। डॉ. भानावत से भी उन्होंने भेंट की।

# शोक-श्रद्धांजलि

## युवाचार्य श्री मधुकर मुनिजी का स्वर्गवास

**नासिक**—युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म० 'मधुकर' का यहाँ २६ नवम्बर, १९८३ को अचानक हृदय गति रुक जाने से ६८ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपका जन्म सं० १९७० में मार्गशीर्ष शुक्ला १४ को तिवंरी में हुआ था। आपने सं० १९८० में वैशाख शुक्ला १० को भिणाय में पूज्य स्वामी श्री जोरावरमलजी म० के कर-कमलों में दीक्षा अंगीकृत की। आप आचार्य श्री जयमल्लजी म० सा० की परम्परा के तेजस्वी विशिष्ट सन्त थे। सं० २०३३ में आप उपाध्याय पद पर प्रतिष्ठित किये गये व सं० २०३६ में आचार्य श्री आनन्द ऋषिजी म० सा० ने आपको श्रमण संघ का युवाचार्य घोषित किया। श्रमण संघ को विशेष सुदृढ़ बनाने की दिशा में प्रयत्नशील होने की भावना से ही आपका यह चातुर्मास आचार्य श्री के साथ नासिक में हुआ था।

आपका व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण व आकर्षक था। उसमें मिश्री की मिठास और मधुकर की गुणग्राही दृष्टि का, सरलता और विद्वत्ता का, श्रद्धा और विवेक का अनूठा संगम था। प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, न्याय, व्याकरण, आगम, दर्शन आदि का आपको गहरा ज्ञान था। आप मधुरभाषी, शान्तचेता, प्रसन्न मुद्रा व चिन्तन-मनन, स्वाध्याय-ध्यान में सदा दत्तचित्त रहते थे। समाज में सम्यक् ज्ञान व सत् साहित्य का विशेष प्रचार-प्रसार हो, इस उद्देश्य से आपकी प्रेरणा के फलस्वरूप मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, मुनि श्री ब्रज मधुकर जैन पुस्तकालय, बुक-बैंक, जैन आगम प्रकाशन समिति जैसी महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ स्थापित हुईं। आप कुशल प्रवचनकार, सफल कथा लेखक और आगम-तत्त्व के गूढ़ व्याख्याता थे। आपके निधन से समाज और राष्ट्र का महान् तेजस्वी संत उठ गया है। हम 'जिनवाणी' एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—डॉ० भानावत

**पीपाड़**—यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावक श्री भैंरूलालजी चौधरी का ८० वर्ष की अवस्था में दिनांक २५ अक्टूबर, १९८३ को दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। देहावसान के चार दिन पूर्व से ही आपने संसार से मोहत्याग

कर लिया था। २५ अक्टूबर को सुबह ८.३० बजे आपने स्वेच्छा से स्वयं ही संथारा धारण किया एवं १२.०५ बजे नवकार मन्त्र के श्रवण के साथ देह त्याग किया। आप आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज सा० के अनन्य भक्त थे। आपकी उनमें अटूट श्रद्धा थी। संसार पक्ष में श्री जयन्ति मुनिजी महाराज सा० के आप लघु भ्राता थे। आपके सभी जैन साधुओं के प्रति परम आदर के भाव रहे। जीवन पर्यन्त आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि के साथ लगे रहे। आपके सुपुत्र सर्वश्री भंवरलालजी, बंशीलालजी, सम्पतराजजी चौधरी भी धार्मिक वृत्ति के हैं।

दिवंगत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि एवं शोकविह्वल परिवार के प्रति गहरी संवेदना।

—व्यवस्थापक

# अपनी संस्था का परिचय प्रकाशनार्थ शीघ्र भेजिए

**जयपुर**—अ. भा. जैन विद्वत परिषद् ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत सभी सम्प्रदायों की **जैन संस्थाओं का सर्वेक्षण कार्य हाथ में लिया है।** हमें कई स्थानों से उल्लेखनीय सहयोग मिला है पर अभी भी कई गाँवों व नगरों की जैन संस्थाओं का परिचय हमें प्राप्त नहीं हुआ है। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने गाँव, नगर व क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं का यथा—जैन स्कूल, औषधालय, छात्रावास, धार्मिक पाठशाला, पुस्तकालय, सेवाभावी ट्रस्ट आदि का परिचय—१. संस्था का पूरा नाम व पता, २. स्थापना तिथि व वर्ष, ३. संस्थापक व प्रेरणादाता, ४. वार्षिक बजट, ५. मुख्य प्रवृत्तियाँ आदि का विवरण देते हुए निम्न पते पर अवश्य भेजने की कृपा करें। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। आपके द्वारा भेजी गई सूचनाएँ हमारे लिए विश्वसनीय और उपयोगी सिद्ध होंगी।

कृपया अपने क्षेत्र की संस्थाओं का परिचय शीघ्र भेजें! कहीं ऐसा न हो कि आपसे सम्बद्ध संस्थाओं का परिचय इस महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ में छपने से रह जाय।

सम्पर्क सूत्र—निदेशक, **जैन संस्था सर्वेक्षण प्रोजेक्ट**
सी-२३५ ए, तिलक नगर, जयपुर-३०२ ००४

# साभार-प्राप्ति-स्वीकार

## "जिनवाणी" आजीवन सदस्यता २०१) रु०

**सदस्यता संख्या**

२०२४ श्री लालचन्दजी आनन्द कुमारजी कांकरिया, मद्रास
२०२५ श्री चम्पालालजी पूनमचन्दजी करनावट, बम्बई
२०२६ श्री सागरमलजी जैन, मद्रास
२०२७ श्री कनकमलजी मेहता, जयपुर
२०२८ श्री राजमलजी गौतमचन्दजी ओस्तवाल, भोपालगढ़ (जोधपुर)
२०२९ श्री विजय नाहर, भोपाल
२०३० श्री मनसुखलालजी आनन्दरामजी गुंगले, लोनावला (पूना)
२०३१ श्री भागचन्दजी रूपेशकुमारजी नाहर, जयपुर
२०३२ श्री गौरवकुमारजी नाहर, भोपाल

## (जिनवाणी को भेंट एवं सहायता)

२०१) श्री भंवरलालजी बंशीलालजी सम्पतराजजी चौधरी, पीपाड़, पूज्य पिताजी श्री भैरूलालजी चौधरी ने ८० वर्ष की अवस्था में २५ अक्टूबर ८३ को दिल्ली में संथारा धारण किया एवं नवकार मंत्र के श्रवण के साथ देह त्याग किया उसके स्मरणार्थ भेंट।

१०१) श्री मोहनलालजी फूलचन्दजी बोगावत, अदिलाबाद (आ. प्रदेश), आचार्य श्री के दर्शनार्थ आने की खुशी में भेंट।

१०१) श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेडता सिटी, पूज्य प्रवर्तक श्रमण सूर्य मरुधर केशरी जी म. सा. आदि ठाणा ९ एवं महासतियांजी सज्जन कवंरजी म. सा. आदि ठाणा ६ के चातुर्मास की खुशी में श्रावक संघ की ओर से भेंट।

१०१) श्री जवरीमलजी मोतीलालजी बोगावत, पांढर कवडा (म. रा.), पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी म. सा. के आँख का सफल आपरेशन होने की खुशी में सौ. इचरज बाई जवरीमलजी बोगावत की तरफ से भेंट।

५१) श्री सोनराजजी नेमीचन्दजी कटारिया, तामिलनाडू, चि. विजयकुमारजी के पुत्र रत्न की प्राप्ति की खुशी में भेंट।

५१) श्री चांदमलजी करनावट, उदयपुर, चि. आनन्द के पुत्र रत्न की प्राप्ति की खुशी में भेंट।

३१) श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ, ब्यावर, महासती जी श्री तेजकंवरजी म. सा. ठाणा ७ के ब्यावर चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

२१) श्री सुरेन्द्र कुमारजी देवेन्द्र कुमारजी डागा, टोंक, डागा टेक्सटाइल के भव्य शुभ उद्घाटन के उपलक्ष में भेंट।

२१) श्री गौतमचन्दजी पगारिया, कुशालपुरा, जिनवाणी सहायतार्थ भेंट।

२१) श्री उच्छेवरायजी जैन अध्यापक, अलीगढ़ रामपुरा, तीन दिन के तेले की तपस्या के उपलक्ष में भेंट।

२१) श्री धनरूपचन्दजी नेमीचन्दजी मेहता, पीपाड शहर, गुरुदेव के दर्शनार्थ आने की खुशी में भेंट।

२१) श्री नेमीचन्दजी जितेन्द्रकुमारजी कोठारी, भोपाल, आचार्य श्री के दर्शनार्थ आने की खुशी में भेंट।

११) श्री रामेश्वर प्रसाद जी जैन, ढेहरा, दीपावली के शुभ अवसर पर गुरु म. सा. की सेवा में तेला की तपस्या के उपलक्ष में सप्रेम भेंट।

११) मेसर्स अशोक ड्रेसेज, इन्दौर, श्रीमती ताराबाई मंडलिक के स्वर्गवास की स्मृति में भेंट।

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

### साहित्य प्रकाशन–आजीवन सदस्य ५०१) रु.

**सदस्य संख्या**

१३७. श्री टुकमदासजी प्रतापमलजी गुन्देचा, बारसी (शोलापुर)

१३८. श्री मानमलजी विजयकुमारजी सिंघवी, ब्यावर

१३९. श्री पी. एम. चोरडिया मद्रास

## (सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल भेंट एवं सहायता)

२०१) श्री गुप्त सज्जन द्वारा भेंट।

—व्यवस्थापक

# सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल व अधीनस्थ संस्थाओं की अंकेक्षण रिपोर्ट

हमने श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सम्मिलित स्थिति विवरण तथा श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (मुख्य कार्यालय), जिनवाणी तथा स्वाध्याय संघ के स्थिति विवरण का जो दिनांक ३०-६-८३ तक बनाये गये हैं तथा उपरोक्त संस्थानों के आय-व्यय विवरण जो कि दिनांक ३०-६-८३ को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये बनाये गये हैं, का अंकेक्षण कर लिया है जो कि श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल तथा उसके अधीनस्थ संस्थाओं द्वारा रखी गई लेखा पुस्तकों के अनुसार हैं।

हमने समस्त आवश्यक जानकारी तथा स्पष्टीकरण जो कि हमारे विवेकानुसार परीक्षण के लिए आवश्यक थे, प्राप्त कर लिये हैं। हमें दी गई सूचना तथा स्पष्टीकरण के अनुसार :—

१–श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सम्मिलित तथा उसके अधीनस्थ संस्थानों की स्थिति विवरण मण्डल तथा उसके अधीनस्थ संस्थानों के कारोबार का दिनांक ३०-६-८३ की सही स्थिति प्रदर्शित करते हैं।

२–श्री सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सम्मिलित तथा उसके अधीनस्थ संस्थानों के दिनांक ३०-६-८३ को समाप्त होने वाले वर्ष के आय-व्यय विवरण मण्डल तथा उसके अधीनस्थ संस्थानों के आय-व्यय पर आधिक्य तथा आय पर व्यय का आधिक्य का सही विवरण प्रदर्शित करते हैं।

**वास्ते बी० एम० दासोत एण्ड कम्पनी**
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
**बी० एम० दासोत**

जयपुर,
दिनांक १२ अक्टूबर, १९८३

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

### सम्मिलित स्थिति विवरण दिनांक ३०-६-१९८३ को

| दायित्व | राशि रु० पै० | सम्पत्ति | राशि रु० पै० |
|---|---|---|---|
| **रिजर्व फण्ड** | ६,१८,५०३.११ | भूमि | ८,१६०.०० |
| स्वाध्याय प्रवृत्ति | | भवन (निर्माणाधीन) | ५,७३५.८९ |
| रिजर्व फण्ड | ४५,०००.०० | फर्नीचर एण्ड फिक्सचर्स | १०,७४९.०० |
| साहित्य प्रकाशन रिजर्व फण्ड | ९०,४५६.४० | टेलीफोन प्रतिभूति | ८१०.०० |
| साहित्य प्रकाशन हेतु | | साहित्य स्टाक | ५७,७४१.५५ |
| अग्रिम सहायता | १३,५०५.५२ | आयकर कटौती | १५,७७५.६५ |
| साहित्य प्रकाशन | | विविध लेनदारियाँ | ५१,२२१.७१ |
| आजीवन सदस्यता | ३१,५६३.०० | श्री एस. एस. सुबोध जैन | |
| श्री कर्म सिद्धान्त | | शिक्षा समिति, ज़यपुर | |
| विशेषांक हेतु आयोजन | ८,०००.०० | (किराया प्रतिभूति) | २२०.०० |
| श्री कर्म सिद्धान्त विशेषांक | | सिटी पोस्ट ऑफिस, जयपुर | १००.०० |
| हेतु अग्रिम विज्ञापन | १३,०००.०० | डाक व्यय हेतु अग्रिम | १००.०० |
| अमानत | २,५२१.०० | सावधि जमायें | ७,१६,०००.०० |
| स्तम्भ | ७५०.०० | **रोकड़ शेष तथा बैंक शेष** | |
| विविध देनदारियां | ५० ४५६.४५ | रोकड़ शेष ३०३.४६ | |
| **आय का व्यय पर आधिक्य** | | बैंक शेष ५२,६३६.६३ | ५२,९४०.०९ |
| गत वर्ष का शेष २३,६१५.३८ | | | |
| चालू वर्ष में प्राप्ति ३०,०००.०० | | | |
| ५३,६१५.३८ | | | |
| चालू वर्ष में कमी ७,८९९.९७ | ४५,७१५.४१ | | |
| योग | ९,१९,५३३.८९ | योग | ९,१९,५३३.८९ |

**इन्दर चन्द हीरावत**
उपाध्यक्ष

**पदम चन्द कोठारी**
कोषाध्यक्ष

**टीकम चन्द हीरावत**
मंत्री

इसी दिनांक की रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते **बी० एम० दासोत एण्ड कं०**
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
**बी० एम० दासोत**

जयपुर,
दि० १२ अक्टूबर, १९८३

# सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

## सम्मिलित आय व्यय का विवरण दिनांक १-७-१९८२ से ३०-६-१९८३

| व्यय | राशि रु० पै० | आय | राशि रु० पै० |
|---|---|---|---|
| पुस्तक प्रारम्भिक शेष | ३६,८९२.९४ | **सहायता** | |
| धार्मिक साहित्य खरीद | ६,३७५ ६० | स. प्र. | |
| साहित्य प्रकाशन | ९०,६७०.४८ | | |
| जिनवाणी प्रकाशन | ६८,०५३.२७ | मण्डल ८३,४५७.४८ | |
| वेतन | ३२,७८७.०० | जिनवाणी ९,६०१.०० | |
| भवन किराया | २,६७०.५० | स्वाध्याय | |
| स्टेशनरी | २,०४०.४१ | संघ ४५,४२६.४५ | |
| कागज | ४,०७७.९३ | | |
| यात्रा कन्वेयन्स | ३,२६७.५५ | | १,३८,४८४.९३ |
| विविध व्यय | १,२८०.०७ | पुस्तक बिक्री | १७,९८९.४० |
| फुटकर मजदूरी भाडा व्यय | १,०२३.६५ | ब्याज | ६५,०९६.०४ |
| पार्सल व्यय | १,२७७.९० | | |
| साईकिल रिपेयर व्यय | १६१.०० | पुस्तक स्टाक (अन्तिम) | ५७,७४१.५५ |
| डाक व्यय | ८,५५४.७० | विज्ञापन | १०,१००.०० |
| टेलीफोन एवं तार व्यय | २,४१५.२५ | वार्षिक सदस्यता | ७,३२८.२५ |
| बिजली व्यय | ६५१.९५ | व्यय का आय पर आधिक्य | ७.८९९.९७ |
| टाईपिंग एवं साइक्लोस्टाइल व्यय | ८०२.३० | | |
| बैंक चार्जेज एवं कमीशन | ४९७.६० | | |
| भेंट एवं कमीशन | ९०.०० | | |
| भवन रिपेयर | ५,६४४.५९ | | |
| अंकेक्षण फीस | ६००.०० | | |
| ह्रास | १,१९५.०० | | |
| सामयिक पत्रिकायें | १९५.४० | | |
| पुरस्कार | ३,१०१.५० | | |
| अनुदान | २,३२८.०० | | |
| धर्म प्रचार हेतु व्यय | २७,९८५.५५ | | |
| **योग** | ३,०४,६४०.१४ | **योग** | ३,०४,६४०.१४ |

**इन्दर चन्द हीरावत**
उपाध्यक्ष

**पदम चन्द कोठारी**
कोषाध्यक्ष

**टीकमचन्द हीरावत**
मंत्री

इसी दिनांक की रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते **बी० एम० दासोत एण्ड कं०**
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
**बी० एम० दासोत**

जयपुर,
दि० १२ अक्टूबर, १९८३

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

### स्थिति विवरण दिनांक ३०-६-१९८३ को

| दायित्व | राशि रु० पै० | सम्पत्ति | राशि रु० पै० |
|---|---|---|---|
| रिजर्व फण्ड | २,२४,०१९.५९ | भूमि | ८,१००.०० |
| स्वाध्याय प्रवृत्ति | | भवन (निर्माणाधीन) | ५,७३५.८९ |
| रिजर्व फण्ड | ४५,०००.०० | फर्नीचर एवं फिक्सचर्स | ४,५६९.०० |
| साहित्य प्रकाशन | | पुस्तक स्टाक | ४३,६११.७५ |
| रिजर्व फण्ड | ९०,४५९.४० | आयकर कटौती | १५,७७५.६५ |
| स्वाध्याय संघ | २३,४९६.९७ | जिनवाणी | ४३९.०० |
| जिनवाणी (स्थायी जमा) | ३,१०,०००.०० | विविध लेनदारियां | ३१,५३५.६५ |
| अमानत | २,०००.०० | श्री एस. एस. जैन सुबोध | |
| साहित्य प्रकाशन हेतु | | शिक्षा समिति जयपुर | |
| अग्रिम सहायता | १३,५६५.५२ | (किराया प्रतिभूति) | २००.०० |
| साहित्य प्रकाशन | | सावधि जमायें | |
| आजीवन सदस्यता | ३१,५६३.०० | (फिक्स डिपोज़िट्स) | ७,१६,०००.०० |
| विविध देनदारियां | ४५,४०५.७९ | | |
| | | **रोकड़ तथा बैंक शेष** | |
| **आय का व्यय पर आधिक्य** | | रोकड़ शेष २०६.७३ | |
| गत वर्ष का | | स्टेट बैंक आफ बीकानेर | |
| शेष २५,४५२.७८ | | एण्ड जयपुर (बचत | |
| चालू वर्ष | | खाता) ३६,५७६.३७ | |
| में प्राप्ति ३०,०००.०० | | इण्डियन बैंक | |
| चालू वर्ष में | | मद्रास ९,१४१.७२ | ४५,९२४.८२ |
| आधिक्य ३०,९८८.७१ | ८६,४४१.४९ | | |
| योग | ८,७१,९५१.७६ | योग | ८,७१,९५१.७६ |

**इन्दर चन्द हीरावत**
उपाध्यक्ष

**पदम चन्द कोठारी**
कोषाध्यक्ष

**टीकमचन्द हीरावत**
मंत्री

इसी दिनांक की रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते **बी० एम० दासोत एण्ड कं०**
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
**बी० एम० दासोत**

जयपुर,
दि० १२ अक्टूबर, १९८३

# जिनवाणी

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

### आय व्यय का विवरण दिनांक १-७-१९८२ से ३०-६-१९८३

| व्यय | | राशि रु. पै. | आय | राशि रु. पै. |
|---|---|---|---|---|
| प्रकाशन खर्च | | | वार्षिक सदस्यता | ७,३२८.२५ |
| कागज | ३५,९०३.९७ | | ब्याज | ३२,५६७.१५ |
| छपाई एवं ब्लाक | २७,५९४.३० | | सहायता | ९,००१.०० |
| सम्पादन व्यवस्था | ३,०००.०० | | विज्ञापन | १६,१००.०० |
| लेख पुरस्कार | १,५५५.०० | ६८,०५३.२७ | व्यय का आय पर आधिक्य | २१,९३५.५२ |
| वेतन | | ५,०००.०० | | |
| डाक व्यय | | ५,७६२.५५ | | |
| टेलीफोन एवं तार व्यय | | ८४१.०० | | |
| मजदूरी एवं भाड़ा | | ८९०.६५ | | |
| कमीशन चार्ज | | ४२५.६० | | |
| स्टेशनरी | | ३०४.५५ | | |
| विविध व्यय | | १८९.८० | | |
| टाईपिंग व्यय | | १६.५० | | |
| योग | | ८१,५४३.९२ | योग | ८१,५४३.९२ |

| इन्दर चन्द हीरावत | पदम चन्द कोठारी | टीकम चन्द हीरावत |
|---|---|---|
| उपाध्यक्ष | कोषाध्यक्ष | मंत्री |

इसी दिनांक की रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते बी० एम० दासोत एण्ड कं०
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
बी. एम. दासोत

जयपुर,
१२ अक्टूबर, १९८३

# जिनवाणी
## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर
### स्थिति विवरण दिनांक ३०-६-१९८३ को

| दायित्व | | राशि रु. पै. | सम्पत्ति | | राशि रु. पै. |
|---|---|---|---|---|---|
| **रिजर्व फण्ड** | | | सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल | | |
| गत वर्ष का | | | (स्थायी जमा) | | ३,१०,०००.०० |
| शेष | ३,१०,१९७.९९ | | विविध लेनदारियां | | ५,४६५.०५ |
| चालू वर्ष | | | सिटी पोस्ट आफिस जयपुर | | १००.०० |
| में प्राप्ति | १३,७६७.०० | | डाक व्यय हेतु अग्रिम | | १००.०० |
| | | ३,२३,९६४.९९ | **रोकड़ तथा बैंक शेष** | | |
| श्री कर्म सिद्धान्त विशेषांक | | | रोकड़ शेष | ९६.७३ | |
| हेतु आयोजन | | ८,०००.०० | स्टेट बैंक आफ | | |
| श्री कर्म सिद्धान्त विशेषांक | | | बीकानेर एण्ड | | |
| हेतु अग्रिम विज्ञापन | | १३,०००.०० | | | |
| अमानत | | ५२१.०० | जयपुर | ६,३९०.२९ | ६,४८७.०२ |
| सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल | | ४३९.०० | | | |
| | | | **व्यय का आय पर आधिक्य** | | |
| | | | गत वर्ष का | | |
| | | | शेष | १,८३७.४० | |
| | | | चालू वर्ष | | |
| | | | में कमी | २१,९३५.५२ | २३,७७२.९२ |
| योग | | ३,४५,९२४.९९ | योग | | ३,४५,९२४.९९ |

इन्दर चन्द हीरावत
उपाध्यक्ष

पदम चन्द कोठारी
कोषाध्यक्ष

टीकम चन्द हीरावत
मंत्री

इसी दिनांक की रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते बी० एम० दासोत एण्ड कं०
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
बी. एम. दासोत

जयपुर,
१२ अक्टूबर, १९८३

# स्वाध्याय संघ
## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर
### आय व्यय का विवरण दिनांक १-७-१९८२ से ३०-६-१९८३ तक

| व्यय | | राशि रु. प. | आय | | राशि रु. पै. |
|---|---|---|---|---|---|
| धार्मिक साहित्य | | | सहायता | | ४५,४२६.४५ |
| प्रारम्भिक शेष | | १५,११३.५४ | ब्याज | | १४४.३७ |
| **धार्मिक साहित्य खरीद** | | | | | |
| जोधपुर | ४,९३३.१० | | **धार्मिक साहित्य विक्रय** | | |
| अलवर | १,४४२.५० | | स. माधोपुर | ६०.७५ | |
| | | ६,३७५.६० | जोधपुर | १,१५३.१० | १,२१३.८५ |
| वेतन | | १३,२२०.०० | | | |
| टेलीफोन एवं तार व्यय | | १,५२९.२५ | | | |
| स्टेशनरी | | १,२८६.१६ | **धार्मिक साहित्य अन्तिम शेष** | | |
| विविध व्यय | | ९५७.९२ | सवाई | | |
| सामयिक पत्रिकायें | | १९५.४० | माधोपुर | ६,३९७.९५ | |
| डाक व्यय | | १,४२६.७५ | जोधपुर | ७,४००,२० | |
| प्रिन्टिग व्यय | | १८८.०० | अलवर | ३३१.६५ | १४,१२९.८० |
| भवन किराया | | ३००.०० | | | |
| यात्रा व्यय | | २,८७२.०५ | | | |
| पुरस्कार | | ३,१०१.५० | व्यय का आय पर आधिक्य | | १६,९५३.१० |
| अनुदान | | २,३२८.०० | | | |
| बिजली व्यय | | २८४.९१ | | | |
| विविध व्यय | | १५.०० | | | |
| ह्रास | | ६८८.०० | | | |
| **धर्म प्रचार हेतु व्यय** | | | | | |
| स्था. शिविर | २,६९०.८० | | | | |
| स्वा. शिविर | ६,०१६.६५ | | | | |
| स्वा. सम्मेलन | १,०९६.३० | | | | |
| प्रचार प्रसार | ५,३४१.९० | | | | |
| पर्युषण व्यय | १२,३६७.६५ | | | | |
| पत्राचार व्यय | ४७२.२५ | २७,९८५.५५ | | | |
| योग | | ७७,८६७.६३ | योग | | ७७,८६७.६३ |

**इन्दर चन्द हीरावत**
उपाध्यक्ष

**पदम चन्द कोठारी**
कोषाध्यक्ष

**टीकम चन्द हीरावत**
मंत्री

इसी दिनांक की रिपोर्ट के अनुसार
**वास्ते बी० एम० दासोत एण्ड कं०**
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
**बी. एम. दासोत**

जयपुर,
१२ अक्टूबर, १९८३

# स्वाध्याय संघ

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

### स्थिति विवरण दिनांक ३०-६-१९८३ को

| दायित्व | | राशि | सम्पत्ति | | राशि |
|---|---|---|---|---|---|
| | | रु० पैं० | | | रु० पैं० |
| **रिजर्व फण्ड** | | | फर्नीचर | | ६,१८०.०० |
| गत वर्ष | | | टेलीफोन प्रतिभूति | | ८१०.०० |
| का शेष | ५४,२६७.५३ | | **धार्मिक साहित्य अन्तिम शेष** | | |
| चालू वर्ष में | | | सवाई | | |
| प्राप्ति | १६,२५१.०० | ७०,५१८.५३ | माधोपुर | ६,३९७.९५ | |
| | | | जोधपुर | ७,४००.२० | |
| स्तम्भ | | ७५०.०० | अलवर | ३३१.६५ | १४,१२९.८० |
| विविध देनदारियां | | ५,०५०.६६ | | | |
| | | | सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर | | २३,४९६.९७ |
| | | | विविध लेनदारियां | | १४,२२१.०१ |
| | | | ओरियन्टल बैंक आफ कॉमर्स, ज़ोधपुर | | ४२५.४३ |
| | | | केन्द्रीय सरकारी बैंक लि. सवाईमाधोपुर | | १०२.८२ |
| | | | व्याय का आय पर आधिक्य | | १६,९५३.१६ |
| योग | | ७६,३१९.१९ | योग | | ७६,३१९.१९ |

| इन्दर चन्द हीरावत | पदम चन्द कोठारी | टीकम चन्द हीरावत |
|---|---|---|
| उपाध्यक्ष | कोषाध्यक्ष | मंत्री |

इसी दिनांक को रिपोर्ट के अनुसार
वास्ते बी० एम० दासोत एण्ड कं०
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स
बी० एम० दासोत

जयपुर,
दि० १२ अक्टूबर, १९८३